विपरीतप्रत्यंगिरापुनश्चर्या

डॉ. रामप्रिय पाण्डेय

विपरीतप्रत्यंगिरापुनश्चर्या

डॉ. रामप्रिय पाण्डेय

स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन-वाराणसी

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
598

विपरीतप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या

साङ्गोपाङ्ग-विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणपद्धतिः

लेखक एवं सम्पादक

डॉ० रामप्रिय पाण्डेय

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

© सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण या किसी भी विधि (जैसे-इलेक्ट्रोनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यंत्र में भंडारण, जिससे इसे पुन: प्राप्त किया जा सकता हो, प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

विपरीतप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या

पृष्ठ : 30+769
ISBN : 978-93-85005-31-2

प्रकाशक
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001
दूरभाष : +91 542-2335263
email : chaukhambasurbharatiprakashan@gmail.com
website : www.chaukhamba.co.in

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण 2018 ई.
मूल्य : ₹ 900.00

अन्य प्राप्तिस्थान
चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली नं. 21-ए, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष : +91 11-23286537; 32996391
email : chaukhambapublishinghouse@gmail.com

●

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113, दिल्ली 110007

●

चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001

सम्पादकीय

'पञ्चायतन' के पञ्चदेवों में शक्ति का विशिष्ट स्थान होता है, शक्ति को उमा कहा गया है, यह उमा साक्षात् ब्रह्म ही है। ब्रह्म का अपर पर्याय ही उमा है।

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म में ॐकार में तीन वर्णमातृकाओं का संयुक्त रूप होता है। अकारो विष्णु: (आत्मतत्त्व) उकारो महेश: (ईश्वरतत्त्व) मकारो शक्ति: (परतत्त्व) का वाचक है, इन अकार, उकार तथा मकार के संयोग से ही ॐकार शब्द ध्वनित होता है, अकार, उकार तथा मकार के वर्ण व्यत्यासत्वेन उकार, मकार तथा अकार के संयोजन से उम बनता है तथा स्त्रीलिङ्ग में टाप् करने पर उमा शब्द निष्पन्न होता है जो शक्ति स्वरूपिणी साक्षात् ब्रह्म का ही वाचक है।

उमा ही साक्षात् मूल प्रकृति और परब्रह्म स्वरूपिणी है तथा समस्त चराचर जगत् के प्रबुद्धों, देवदानओं सबकी देवता हैं।

या मूलप्रकृतिः शुद्ध जगदम्बा सनातनी।
सैव साक्षात्परं ब्रह्म सास्माकं देवतापि च॥

उमा ही सच्चिदानन्दविग्रहा, सुनिष्कला, नित्यानन्दमयी, शुद्धा, ज्ञानमयी, नित्या, वाचातीता तथा प्रकृति स्वरूपिणी है।

स्थिता प्रकृतिरेका सा सच्चिदानन्दविग्रहा।
शुद्धाज्ञानमयी नित्या वाचातीता सुनिष्कला॥

समस्त चराचर जगत् में सर्वमयी शक्ति उमा ही है, वे कहाँ कहाँ नहीं है अर्थात् सर्वत्र ही है।

किं नाहं पश्य संसारे यद्वियुक्तं किमस्ति हि।
सर्वमेवाहमित्येवं निश्चयं विद्धि पद्मज॥

इस नामरूपात्मक जगत् में यह उमा ही सर्व रूपोंवाली हैं, समस्त सृष्टि रूप देवी मय है अत: स्वयं उमा ही विश्वरूपिणी हैं।

सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्॥

अखिल ब्रह्माण्डनायिका मातेश्वरी उमा परमेश्वर की प्रधान शक्ति हैं, जो परब्रह्म परमात्मा

के सृष्टि का कल्याण तथा उसकी रक्षा करती हैं, वे ही व्यवहारचतुष्टय के समय विभिन्न रूपों को ग्रहण करती हैं—

एकैव शक्तिः परमेश्वरस्य भिन्नाश्चतुर्धा व्यवहारकाले।
पुरुषेषु विष्णु भोगे भवानी समरे च दुर्गा प्रलये च काली॥

इनकी श्रद्धा-भक्तिपूर्वक आराधना करके मनुष्य अपने जीवन में समस्त कामनाओं की पूर्ति कर आप्तकाम हो जाता है।

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्॥

ये उमा ही कार्य भेद से नव रूपों वाली हो जाती है इनमें द्वितीया भद्रकाली ही विपरीत प्रत्यङ्गिरा के रूप में प्रतिष्ठित है।

काली नवविधा प्रोक्ता सर्वतन्त्रेषु गोपिता।
आद्या दक्षिणकाली सा भद्रकाली तथापरा॥१॥
अन्या श्मशानकाली च कालकाली चतुर्थिका।
पञ्चमी गुह्यकाली च पूर्वं या कथिता मया॥२॥
षष्ठी कामकलाकाली सप्तमी धनकालिका।
अष्टमी सिद्धिकाली च नवमी चण्डकालिका॥३॥
भद्रकालीपरागुह्या विपरीतासमावृता।
प्रत्यङ्गिरासमाख्याता लोककल्याणहेतवे॥४॥

भद्रकाली की उपासना समस्त अभिचारों को विपरीत कर देता है अर्थात् समस्त दुःखों को सुखों में बदल देता है, इनके मन्त्रस्तोत्रादि का पाठ करने से साधक सर्व समर्थ बन जाता है और इस विपरीत काली के प्रभाव से सर्वत्र आनन्द प्राप्त करता है इसमें कोई भी सन्देह नहीं है।

पठनाद्धारणाद्देवि! सृष्टि संहारको भवेत्।
अभिचारादिकाः सर्वा या या साध्यतमाः क्रियाः॥४॥
स्मरणेन महाकाल्या नाशंजग्मुः सुरेश्वरि।
सिद्धविद्या महाकाली यत्रेवेह च मोदते॥५॥

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखन में पद्धति को सरलतम बनाने में बह्वस्थलों में पुनरुक्ति हुई है जो संस्कृत और कर्मकाण्डोपासनादि न जाननेवालों के लिए है जिससे उनको कोई कठिनाई न हो, पिपासु जन इससे लाभान्वित होगें।

श्रावण शुक्ला पञ्चमी सम्बत् २०६९ **रामप्रिय पाण्डेय**

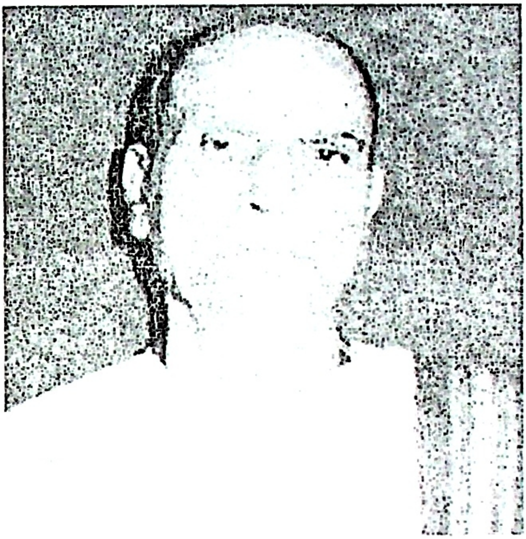

श्रीगुरोः स्तुतिकुसुमाञ्जलिः

काश्यामुपेत्यविधिवत् तपसाबलेन, प्राप्तश्रियः सकलशास्त्रविचारदक्षान्।
अध्यापनेन सततं कृतशास्त्ररक्षान्, श्रीवायुनन्दनबुधान् प्रणमामि नित्यम्॥१॥
पूर्वं नमस्त्रिमुनिशास्त्रविचक्षणाय, साहित्यमर्मविदुषे कृतिने ततश्च।
मीमांसया दलितदुर्व्यसनाय पश्चात्, श्रीवायुनन्दन! महामतये नमस्ते॥२॥
शास्त्राण्यधीत्य बहवः कटुकैर्विवादैर्ग्रस्तान्तरास्तु समयं क्षपयन्ति नित्यम्।
श्रौतप्रभाविलसिता गुरवो मदीयाः श्रीविश्वनाथपदभक्तिजुषः किलासन्॥३॥
साहित्यशास्त्रसुरवृक्षविवर्धनेन, तस्यामृताभफलदानमनोहरेण।
सत्रेण भारतधरा किल यस्य भाति, तस्मै बृहस्पतिनिभाय नमो नमस्ते॥४॥
ये ब्रह्मवंशविभुताकलितान्तरङ्गा, आचारतश्च भृतभूरिविभूतिभङ्गाः।
गङ्गावगाहनशिवार्चनतत्परास्ते, श्रीवायुनन्दनबुधा गुरवो जयन्ति॥५॥
भस्मत्रिपुण्ड्रविलसच्छुभविग्रहाणां, विद्याविलासविगलन्मधुवाग्झराणाम्।
पाण्डेयवर्यविदुषां पदयोर्नतिर्नो, भूयादहर्निशममङ्गलनाशनाय॥६॥
काश्यां विपश्चिदतुलासु सभासु सभ्या, यत्सन्निधौविधृतमौननिभा अभूवन्।
तान् विश्वनाथपदपङ्कजभृङ्गभूतान्, श्रीवायुनन्दनगुरून् सततं स्मरामि॥७॥
जाज्वल्यमाननिजपावनविग्रहेण, लोकोत्तरेण महसा च तपोबलेन।
श्रीविश्वनाथपदमाशुगतं भवन्तं, ध्यात्वा पितः वयमहो कृतिनो भवामः॥८॥

परमपूज्यश्रीपितृचरणगुर्वर्पणमस्तु

।।श्रीः।।

श्रद्धासुमनाञ्जलीः

साहित्योदधिमज्जितोऽतिगहनान् ग्रन्थान् समालोचयन्,
शास्त्राभ्यासपरायणः प्रतिदिनं स्वाध्यायशीलः सुधीः।
शृङ्गारादिरसैः सदार्द्रहृदयो विद्वद्वरेण्याऽग्रणीः,
वन्द्यः पण्डितवायुनन्दनकविर्विश्वेश्वरोपासकः॥१॥
रामे भक्तियुतो यथाऽमितबली वायोः सुतः कीर्तिमान्,
रामाभ्यां समधीतवाननलसः शास्त्रं तथा बुद्धिमान्।
प्राप्नोद् व्याकरणे पटुत्वमचिरं विद्योतितो ज्योतिषा,
सत्संस्कारमथाग्रहीद् द्विजकुलस्याप्यत्र बाल्ये व्रती॥२॥
विद्याम्भोधिनिमज्जनोद्धुरमना सारस्वतः साधकः,
काशीं मुक्तिकरीमुपेत्य विदुषः कालीप्रसादादसौ।
विज्ञातुं समुपस्थितः प्रमुदितः शास्त्रार्थतत्त्वं परं,
पातुं काव्यसुधारसं च रुचिरं श्रेयस्करं दुर्लभम्॥३॥
काश्यां संस्कृतशिक्षणेऽतिनिपुणोऽयं विश्वविद्यालये,
आचार्येति प्रतिष्ठिते गुरुपदे संशोभितोऽभूदहो।
आदर्शञ्च समस्तशिक्षकगणस्यादर्शयन् सुन्दरम्,
छात्राध्यापनतरः समभवद् विजयते वाणीसुतः सात्त्विकः॥४॥
श्रीवायुनन्दन-पाण्डेयं ज्ञानमार्तण्डरूपिणम्।
आचार्यप्रवरं भक्त्या भूयो भूयो नमाम्यहम्॥५॥

श्रद्धासुमनाञ्जलिः श्रीगुर्वर्णणमस्तु

भूमिका

जीव ही माया जनित वृत्तियों के द्वारा आबद्ध होने से पशु संज्ञक होता है, शक्ति के ही कारण पशुत्व की अवधारणा होती है, जीव को पाशविक वृत्तियों के अज्ञानावरण से आच्छादन करने के जो कारक है उनमें मायाशक्ति ही मूल है।

स्वरूपावरणे चास्य शक्तय: सततोद्यता:।
यत: शब्दानुवेधेन न विना प्रत्ययोद्भव:।।

शक्ति ही जीव को बन्धन प्रदान करती है वही अविद्या से ग्रस्त कर संसार के विषयों में आवद्ध कर देती है।

सेयं क्रियात्मिका शक्ति: शिवस्य पशुवर्त्तिनी।
बन्धयित्री स्वमार्गस्था ज्ञाता सिद्ध्युपपादिका।।

विश्वरूप शरीरधारी शिव से जीव अभिन्न है, केवल उसकी मायाशक्ति से स्वरूपाभिव्यक्ति न होने से संकुचित स्वरूपवाला होता है, संकोच भी चिदैक्य रूप से विकसित होने के कारण चिन्मय होता है अत: समस्त जीव विश्वशरीरधारी शिव ही है।

यस्मात् सर्वमयो जीव:. सशरीरीसदाशिव:।

जीव और शिव में अभेद है अर्थात् जो जीव है वही शिव है, अविद्या के कारण संकोच-वश शिव ही जीव संज्ञक होता है।

शिवजीवयोरभेद:. संकोचात् जीवसंज्ञक:।

इस अभेदात्मकता का परिज्ञान ही मुक्ति है तथा इसका अपरिज्ञान ही बन्धन है।

एतत् तत्त्वपरिज्ञानमेव मुक्ति:.........................।
एतत् तत्त्वापरिज्ञानमेव च बन्ध:......................।

बन्धन का संग्राहक विकल्प है, विकल्प का संग्राहक चित्त है और चित्त में रहनेवाली चिति(शक्ति) जब अपने स्वरूप को संकुचित करती है तो उनकी दो प्रकार की अवस्था हो जाती है, प्रथम संकोचावलम्बन, द्वितीय पूर्णव्याप्तावलम्बन। इसी संकोचावलम्बन के कारण ही शिव का विश्वात्मक व्यापक शरीर संकुचित होकर जीव हो जाता है, उसमें उसकी शक्ति भी संकोच को धारण करके अपनी पूर्णव्याप्तावस्था की अविद्या के कारण जीवमय हो जाती है अत: जिस प्रकार शिव विश्वरूप शरीरवाले हैं उसी प्रकार विश्वरूपिणी शक्ति

भी संकुचित चिद्रूप वटबीज के सदृश संकुचित समस्त विश्वरूप होती हैं, इसी कारण कहा गया है कि शिव शरीरी भी है, शरीर भी है एवं समष्टि रूप से समस्त शरीरों का शरीरी आत्मा है।

शक्ति को ही कालिका कहा गया, ये ही भेदोपभेद से अनन्त रूपोंवाली कही गयी हैं, उन्हीं के कारण साक्षात् ब्रह्म ही ब्रह्माविष्णु तथा महेश्वर रूप होकर सृष्टिस्थिति और विनाश करते हैं।

या मूलप्रकृतिः शुद्धा जगदम्बा सनातनी।
सैव साक्षात्परं ब्रह्म सास्माकं देवतापि च॥
अयमेको यथा ब्रह्म तथा चायं जनार्दनः।
तथा महेश्वरश्चाहं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणः॥
एवं हि कोटिकोटीनां नानाब्रह्माण्डवासिनाम्।
सृष्टिस्थितिविनाशानां विधात्री सा महेश्वरी॥

'कल' शब्दसंख्यानयोः, 'कल' विक्षेपे, 'कल' गतौ, 'कल' शब्दे धातुओं से शब्द, विक्षेप, गति के अर्थ में कल धातु से **कलति, कलते, कलयति, कलयते वा सर्वं आत्मनि इति कलः**, जिसका अर्थ होता है जो अपने अन्दर ध्वनि करे, सबकी रचना करे, ज्ञान करे, सिद्ध करे, मुक्त करे उसको कल कहते हैं, स्वार्थ में अण् प्रत्यय करने पर कल ही काल हो जाता है, जो सभी भूतों को प्रेरित करता है, स्पन्दित करता है इत्यादि अर्थ निकलता है अर्थात् जो अपने में ही स्वयं स्फुरित हो, संचरित हो, समस्त भूतों को संचालित करता हो, प्रेरित करता हो, सक्रिय करता हो उसे काल कहते है, यह काल ही पृथिवी तत्त्व प्रधान शरीर में व्याप्त रहता है सदैव वर्तमान रहता है इसका कोई आद्यन्त नहीं है इसी से इसे ईश्वर कहते हैं, भूत वर्तमान भविष्य से अतीत होने के कारण ध्रुव तथा सर्व सामर्थ्यवान होने तथा सबका हित करने एवं सबको अपने में समाहित करने के कारण ही शिव कहते है। काल शब्द समय का भी वाचक है। काल की शक्ति ही काली है। जिसके कारण काल सामर्थ्यवान होता है वही काली है। उसके बिना शिव शवरूप हो जाता है। यह काल ही महत् स्वरूपात्मक होने से महाकाल तथा अनन्त अनादिनिधन अखण्ड नित्य और विभु होने से परमेश्वर है, उसी से समस्त भुवनों की उत्पत्ति होती है वही सर्व प्रथम देवता है।

कलशब्दसंख्यानयोः, कलविक्षेपे, कलगतौ, कलशब्दे इति धातोः कलति, कलते, कलयति, कलयते वा सर्वं आत्मनि इति कलः स्वार्थे अण् कृते कालेति शब्दः).निष्पद्यते, कालयति प्रेरयति सर्वाणि भूतानि अर्थेति काल शब्दोद्बुध्यते। कु पृथिव्यां आत्मनः लाति आयाति व्याप्यति इति कालः। स नित्यः, आद्यन्तविहीनः नित्यवर्तमानकालिकः, ईश्वरः, ध्रुवः, शिवः। धातुनां अनेकार्थत्वात् कालशब्दः

समयवाचकश्च। कालस्य ईः शक्तिः कालिः। शक्तिः सामर्थ्यवचकश्च। कालियुक्तः कालः सर्वसामर्थ्यशालिनः, तद्विहीनः शवरूपः। शक्तियुक्तः शिवः महदात्मकः परमेश्वरात्मकः अनन्तः अनादिनिधनः अखण्डः नित्यः विभुः।

कालोऽश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षोऽजरो भूरिरेताः।
तमारोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा॥१॥
स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत् कालः स ईयते प्रथमो नु देवः।
स एव सम्भुवनान्याभरत् स एव सम्भुवनानि पर्यैत्॥२॥
पिता सन्नभवत् पुत्र एषां तस्माद् वै नान्यत् परमास्ति तेजः।

काल से ही दिवस, पृथिवी उत्पन्न हैं, काल से समस्त भूतादि पोषित हैं, काल ही तप है, काल ज्येष्ठ है, काल ही ब्रह्म में समाहित है, काल ही सभी का ईश्वर है, काल ही समस्त जन्म लेने वालों का पिता हैं, काल ही प्रजा का निर्माण करता है, काल ही स्वयम्भू है।

कालोऽमुं दिवमजनत् काल इमाः पृथिवीरुत।
कालेऽहं भूतं भव्यं पोषितं ह वै तिष्ठते॥१॥
काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम्।
कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजायेत्॥२॥
कालः प्रजा असृजत कालोऽगे प्रजापतिम्।
स्वयम्भू कश्यपः कालात् तपः कालादजायत॥३॥

इस लोक तथा परलोक में जिनसे पुण्य का विधान होता है उसे ही ब्रह्म तथा काल कहते है वही एक मात्र परम देवता है।

इमं च लोकं परमं च लोकं पुण्यांश्च लोकान् विधृतीश्च पुण्याः।
सर्वान् लोकानभिजित्य ब्रह्मणा कालः स इयते परमो नु देवः॥

काल से ही ऋचायें है और उसी से यज्ञ उत्पन्न होता है।

कालाद् ऋचः समभवन् यजुः कालादजायत।

यहीं काल समष्टि और व्यष्टि दो भेदों वाला है, जिससे यह महाकाल और खण्डकाल रूपोंवाला है, खण्डकाल का ही वाचक समय है, जिसका क्षण, दिन, पक्ष, मास, वर्ष, युग और मन्वन्तर स्वरूप है।

नित्यौ जन्यश्च कालौ द्वौ तयोराद्यः परेश्वरः।
सोऽवाङ्मनसगम्योऽपि देही भक्तानुकम्पया॥१॥
निश्चितं कालनानात्वमनादिनिधनं च यत्।
कीर्त्तितं यत्पुरस्तान्मे सुते यश्चात्ति च प्रजाः॥२॥
भूतानामन्तकृत्कालः कालोऽन्यः कलनात्मकः।

यह काल ही मायावी अर्थात् शक्ति सम्पन्न है, यह सर्वज्ञ, स्वतन्त्र, नित्य, अलुप्तशक्ति, अनन्त शक्तिवाला है, सम्पूर्ण जगत् इसके अधीन है।

मायावी सर्वशक्तीशः कालः कालकरः प्रभुः।
करोति कालः सकलं संहरेत् काल एव हि॥१॥
कालः स्थापयते विश्वं कालाधीनमिदं जगत्।

तथा च,

सर्वज्ञतातृप्तिरनादिबोधः स्वतन्त्रतानित्यमलुप्तशक्तिः।
अनन्तशक्तिश्च विभोर्विधिज्ञा आहुः षडङ्गानि महेश्वरस्य॥

इस परमेश्वर महाकाल की कलना शक्ति ही काली है, वह महाकाल के साथ नित्य अत्यन्त अभेदमयी है।

कलयतीति कालि, महाकालस्य ईः शक्ति महाकालिः। सा च नित्य अभेदरूपा। कार्यकारणवसात् भेदरूपाश्च।

महाकाल शिव ही शक्ति महाकाली है, जो शक्ति महाकालि है वही महाकाल है। जिस तरह से चन्द्रिका चन्द्र में ही रहती है उसी प्रकार महाकालशिव तथा महाकालीशिवा भी अभिन्न हैं।

शिवाभिन्ना पराशक्तिः सर्वकर्मशरीरिणी।
वामादीच्छादिभेदेन मिथुनत्रयतां गता॥१॥
न शिवेन विना देवी न देव्या च विना शिवः।
नान्ययोरन्तरं किञ्चिच्चन्द्रचन्द्रिकयोरिव॥२॥

महाकालशिव शक्ति महाकालीशिवा से तथा महाकालीशिवा महाकालशिव से कभी भी भिन्न तथा पृथक् नहीं होती।

न शिवः शक्तिरहितो न शक्तिर्व्यतिरेकिणी।
शक्तिशक्तिमतोर्भेदः शैवे जातु न वर्ण्यते॥

शुद्ध महेश्वर अपने शक्ति के द्वारा ही पर, परापर और अपरा भेदयुक्त अवस्थावाले हैं।

परापर परेशान शशाङ्ककृतशेखर।
योगाधियोगिन् सर्वज्ञ सर्वभूतदयापर॥

इनकी शुद्धशक्ति भी पर, परापर तथा अपरा भेद से विभिन्न भेदमयी तथा विभिन्न रूपोंवाली हैं। ये ही विद्याभेद से तारा, छिन्नमस्ता, त्रिपुरसुन्दरी, बाला, बगला, भैरवी, काली, दक्षिणकाली, कुब्जिका, शबरेश्वरी, अघोरा, राजमातङ्गी, सिद्धिलक्ष्मी, अरुन्धती, अश्वारूढा, भोगवती, नित्यक्लिन्ना, कुक्कुटि, कौमारी, वाराही, चामुण्डा, भुवनेश्वरी, उच्छिष्टचाण्डालिनी, चन्द्रघण्टा, कालसङ्कर्षिणी तथा अपरा भेदोंवाली हैं।

तारा च छिन्नमस्ता च तथा त्रिपुरसुन्दरी।
बाला च बगला चापि त्रिपुरा भैरवी तथा॥१॥
काली दक्षिणकाली च कुब्जिका शबरेश्वरी।
अघोरा राजमातङ्गी सिद्धिलक्ष्मीररुन्धती॥२॥
अश्वारूढा भोगवती नित्यक्लिन्ना च कुक्कुटी।
कौमारी चापि वाराही चामुण्डा चण्डिकापि च॥३॥
भुवनेशी तथोच्छिष्टचाण्डली चण्डघण्टिका।
कालसङ्कर्षणी चापि गुह्यकाली तथाऽपरा॥४॥

शक्ति के बिना किसी अन्य तत्त्व का नाम और स्वरूप नहीं होता है।

शक्त्याविनापरेतत्त्व नाम धाम न विद्यते।
शिवशक्तिमतोर्भेदः शैवे जातु न वर्ण्यते॥

सत् तो परमेश्वर है, चित् उनकी अन्तरङ्ग शक्ति है, इनका स्वरूप आनन्द है, शक्ति के नित्य प्रवाह से ही शिव शक्ति में कोई भेद नहीं है अर्थात् जो शिव है वही शक्ति है तथा जो शक्ति है वही शिव है।

परब्रह्म परमात्मा परमेश्वर भूतभावन विश्वनाथ परमशिव सकल, निष्कल और निष्कलसकल भेद से तीन स्वरूपों वाले है तथा उनकी परमाशक्ति भी परमेश्वर के समान ही सकल, निष्कल तथा निष्कलसकल भेदवाली हैं, निष्कलब्रह्ममहाकाल की निष्कलशक्तिमहाकाली जो प्रधानभूता हैं उन्ही में संयुक्त रहती हैं, वे ही सकलब्रह्मशिव के अंकभूता पराशक्ति भी निष्कलसकलारूपा परापरा स्वरूपिणी तथा सकलारूपा अपरा स्वरूपिणी हैं, ये ही त्रिगुणात्मिका रूपिणी हैं, ये त्रिगुणात्मिका रूपिणी देवी ही इस निखिल संसार की जनिका हैं, सम्पूर्ण संसार इन्हीं में इन्हीं से उत्पन्न होता है, संसार के उत्पन्न होने में ये ही प्रधान कारणभूता हैं, वह शक्ति नित्यरूपा हैं, सम्पूर्ण जगत् उन्हीं का रूप हैं तथा उन्होंने समस्त विश्व को व्याप्त कर रखा है।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्।
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम॥१॥
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याभिधीयते॥२॥

कार्य भेद से गुण संयोग में तत्तद् सकलरूपग्रहण कर विभिन्न रूप में प्रकट होकर तत्तद् कार्य में मूल कारण रूप से व्याप्त है, निष्कलरूपाशक्तिमहाकाली ही कार्य भेद से सकलरूपाभद्रकाली हैं, ये भद्रकाली ही परारूपिणी महाप्रत्यङ्गिरा है, शरीर के समस्त अङ्गों में पूर्णरूपेण व्याप्त होने के कारण ही इन्हें प्रत्यङ्गिरा कहा जाता है तथा विपरीत रतातुरा होने से ही विपरीतप्रत्यङ्गिरा कहते हैं।

वाच्छाभेदाद् द्रव्यभेदाः काष्ठभेदाः भवन्ति हि।
फलं फलानामन्यत् स्यादन्यदन्नस्य पार्वतिः॥

कलिकाल में मनुष्य तप से हीन, वेदादिज्ञान से हीन और अल्पायु होते हैं, अत्यधिक क्लेश के कारण मानसिक तथा शारीरिक रूप से अत्यन्त कमजोर हो गये हैं, वे अपने हित में आध्यात्मिक परिश्रम करने में असमर्थ हैं। वे उपासना करने में अन्यमनस्क हो गये हैं, उपासना में उनका मन नहीं लगता है।

तपःस्वाध्यायहीनानां नृणामल्पायुषामपि।
क्लेशप्रयासाशक्तानां कुतो देहपरिश्रमः॥

कलिकाल में गृहस्थ लोग, साधु, महात्मा समस्त जीव मात्र अत्यन्त कष्ट में युक्त होकर अत्यन्त कुण्ठित होकर आपस में इर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभादि से लिप्सित हो कर अपने समाज के लोगों पर अभिचारादिक व्यवहार कर रहे हैं, मनुष्य अपने पूर्व जनित कृत्यों के फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के कष्टों को प्राप्त करता है, मनुष्यों के इस दुःखमूलक जीवन को विपरीत करके सुखमूलक जीवन के लिए एक मात्र सहायक महामाहेश्वरी भद्रकाली स्वरूपभूता देवी महाप्रत्यङ्गिरा हैं, ये ही इस कलिकाल मनुष्यों को सुखी करने में समर्थ हैं, समस्त स्त्री पुरुषों के हित के लिए तथा बालकों की रक्षा के लिए शुभ फल देने वाली महाप्रत्यङ्गिरा ही हैं।

धारणीया महाविद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदया।
नर-नारीहितार्थाय बालानां रक्षणाय च॥

ये देवी अपने भक्तों का अभीष्ट सिद्ध करने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं, जगत् के समस्त जीवों का निःस्पृह भाव से रक्षा करती हैं।

साधु साधु महाभागे! जन्तूनां हितकारिणी!।
त्वद्वाक्येन सुरारिघ्ने! कथयामि न संशयः॥

यह विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा समस्त ग्रहबाधा, परकृत समस्त अभिचार, समस्त दुष्टों का मर्दन करनेवाली तथा सारे पापों को विनष्ट करनेवाली है, मनुष्यों को समस्त सौभाग्य प्रदान करती और पुष्टि देती हैं। घोर अरण्य में, महाभयानक तूफान में, राजद्वार एवं दुर्भिक्ष आदि महाभय के उपस्थित होने पर इस महाविद्या के स्वयं पाठ करने अथवा अन्यों से पाठ कराने से समस्त कार्य सिद्ध होते हैं।

देवी प्रत्यङ्गिराविद्या सर्वग्रहनिवारिणी।
मर्दिनी सर्वदुष्टानां सर्वपापप्रणाशिनी॥१॥
सौभाग्यजननी देवीं बलपुष्टिकरी तथा।
चतुष्पथेषु घोरेषु वनेषु पवनेषु च॥२॥

राजद्वारेषु दुर्भिक्षे महाभय उपस्थिते।
पठिता पाठिता विद्या सर्वसिद्धिकरी स्मृता॥३॥
लिखित्वा च करे कण्ठे बाहौ शिरसि धारयेत्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो मृत्युं नास्ति कदाचन॥४॥
धारयेद्योगयुक्तो यस्तस्य रक्षा भवेद् ध्रुवम्।
धारिता वाऽर्चिता विद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदिता॥५॥
गृहे चैवाऽष्टसिद्धिश्च देवराक्षसपन्नगाः।
न तस्य पीड़ां कुर्वन्ति ये चाऽन्ये पीडकग्रहाः॥६॥
विद्यानामुत्तमा विद्या पठिता वाऽर्चिता सदा।

योगादि करनेवाला व्यक्ति यदि इस विद्या के यन्त्र तथा मन्त्र को धारण करता है, तो निश्चय ही उसके योग में कोई विघ्न नहीं आते, इस विद्या के प्रभाव से उसकी सदैव ही रक्षा होती है तथा सहज ही सारे कार्य पूरे हो जाते है, यह विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा धारण करने तथा अर्चन पूजन करने से शुभ फल देनेवाली कही गयी है, विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा की आराधना करने से साधक के घर में समस्त कार्य स्वयं ही सिद्ध होतें हैं ये प्रत्यङ्गिरा देवी घोर रूप से सदैव अपने साधक की रक्षा करती है, उपासना करने पर अपने साधक के ही अङ्ग में सदैव निवास करती हैं तथा उसकी सदैव रक्षा करती हैं और अपने भक्तों का सभी प्रकार से कल्याण करती हैं।

अङ्गं अङ्गं प्रत्यङ्गं, प्रत्यङ्गे भवा ईः शक्तिः प्रत्यङ्गी, प्रत्यङ्गी भवा यस्या सा शक्तिः प्रत्यङ्गिरा, विपरीता या प्रत्यङ्गिरा सा विपरीत प्रत्यङ्गिरा।

यस्याऽङ्गस्था महाविद्या प्रत्यङ्गिरा सुभाषिता।
सिद्धा सुसिद्धा नित्या विद्येयं परमा स्मृता॥१॥
श्रीमतां घोररूपेण भाषिता घोररूपिणी।

विधानपूर्वक विपरीतप्रत्यङ्गिरा के अनुष्ठान करने पर साधक के समस्त शत्रु विनष्ट हो जाते हैं, साधक जिस किसी पदार्थ का स्पर्श करता है, जो कुछ भी खाता है, वह सब अमृत हो जाता है, प्रत्यङ्गिरा के साधक की कभी दारुण अथवा अकाल मृत्यु नहीं होती है, इनके उपासना से दूसरे के द्वारा किये गये अभिचार, भूतप्रेतादि, यक्षराक्षसवेतालादि कृत समस्त-दुःखदायी फल सद्यः समाप्त हो जाते हैं, साधक लक्ष्मी तथा वसुधा को प्राप्त करता है, प्राणापहारक शत्रु भी उस साधक के वशीभूत हो जाते है, इस विद्या का अनुष्ठान करनेवाला साधक इस विद्या के प्रभाव से समस्त विद्याओं महाविद्याओं को सहज ही निर्विघ्नतापूर्वक प्राप्त कर लेता है, पूर्व काल में इस विद्या का समुचित अनुष्ठान करके देवताओं ने असुरों पर विजय प्राप्त किया था, इस विद्या के प्रभाव से मूर्ख भी वागीश तथा निर्धन और महादरिद्र भी धनवान हो जाता है।

श्रृणुदेवी! महाविद्यां सर्वसिद्धि प्रदायकम्।
यस्यविज्ञानमात्रेण शत्रुवर्गा लयं गताः॥१॥
विपरीत महाकाली सर्वभूत भयंकरी।
यस्याः प्रसादमात्रेण कम्पंते च जगत्रयम्॥२॥
न च शान्तिप्रदः कोऽपि परमेशो न चैवहि।
देवताः प्रलयं यान्ति किं पुनर्मानवादयः॥३॥
पठनाद्धारणाद्देवि! सृष्टि संहारको भवेत्।
अभिचारादिकाः सर्वा या या साध्यतमाः क्रियाः॥४॥
स्मरणेन महाकाल्या नाशंजग्मुः सुरेश्वरि।
सिद्धविद्या महाकाली यत्रेवेह च मोदते॥५॥
सप्त लक्ष महाविद्या गोपिता परमेश्वरि।
महाकाली महादेवि! शङ्कर श्रेष्ठदेवता॥६॥

साधक विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा की उपसना करके तथा उनके कृपा प्रसाद से परब्रह्म और महेश्वर हो जाता है और अन्यों के द्वारा किये गये समस्त अभिचारिक विषाक्त कृत्यों को नष्ट करके उनसे छुटकारा पा लेता है।

यस्या प्रसाद मात्रेण परब्रह्म महेश्वरः।
कृतिमादि-विषघ्नीषा प्रलयादि निवर्तिका॥

महाप्रत्यङ्गिरा के दर्शन मात्र से महेश्वर भी कम्पायमान हो जाते हैं, उनके निग्रह मात्र से समस्त पृथ्वी लय को प्राप्त हो जाती है।

त्वदङ्घ्रि दर्शनादेव कम्पमानो महेश्वरः।
यस्य निग्रह मात्रेण पृथिवी प्रलयं गता॥

विपरीत महाप्रत्यङ्गिरा की साधना करने से विपरीत महाप्रत्यङ्गिरा के भक्त के भीतर स्वयं दशों महाविद्यायें आश्रय ग्रहण करके वास करती हैं तथा उस साधक की रक्षा करती हैं। विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा के साधक की पूर्व दिशा में भुवनेश्वरी, दक्षिण दिशा में दक्षिण-कालिका, नक्षत्रों की स्वामिनी पश्चिम दिशा में, उत्तर दिशा में भैरवी, ईशान कोण में हमेशा प्रचण्डचण्डिका, अग्नि कोण में बगला देवी, नैर्ऋत्य कोण में मातङ्गी, वायव्य कोण में धूमावती, ऊपर तथा नीचे सुन्दरी तथा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्था और वाम तथा दक्षिण भाग में स्वयं षोडशी त्रिपुरसुन्दरी महाप्रत्यङ्गिरा भद्रकालिका के अंशरूप से साधक के अङ्गों में विद्यमान होकर साधक की रक्षा करती हैं, यही भद्रकाली ही विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा है जिनकी उपसना करके दुःख को सुख में परिवर्तित किया जा सकता है।

दशविद्या यदाज्ञाता दशद्वार समाश्रिता।
प्राचीद्वारे भुवनेशी दक्षिणेकालिका तथा॥१॥

नाक्षत्री पश्चिमें च उत्तरे भैरवी तथा।
ऐशान्यां सततं देवि! प्रचण्डचण्डिका तथा॥२॥
आग्नेयां बगला देवी रक्षः कोणे मातङ्गिनी।
धूमावती च वायव्ये अधश्चोर्ध्वे च सुन्दरी॥३॥
सम्मुखे षोडशी देवी जाग्रत्स्वप्न स्वरूपिणी।
वामभागे च देवेशी महात्रिपुरसुन्दरी॥४॥
अंश रूपेण देवेशी सर्वादेव्याः प्रतिष्ठिताः।
महाप्रत्यङ्गिरा चैव प्रत्यङ्गिरा तथोदिता॥५॥

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा के ही प्रभाव से महाविष्णु कर्त्ता, पालनकर्त्ता और संहार कर्त्ता है।

महाविष्णु यदाज्ञाता भुवनानां महेश्वरि।
कर्त्तापाता च संहर्ता सत्यं सत्यं वदामिते।

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा का साधक वेदशास्त्रादि के गुप्त रहस्यों को जान कर आनन्द प्राप्त करता है और महाकाली की कृपा से भुक्ति तथा मुक्ति दोनों प्राप्त करता है।

भुक्तिमुक्तिप्रदादेवि महाकाली सुनिश्चितम्।
वेदाशास्त्रप्रगुप्ता सा नन्दस्य च दैवतैरपि॥

ये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा भद्रकाली अनन्त सूर्य के प्रकाश के समान आभावाली हैं, सभी जन्तुओं में भयङ्करी है, सर्व मन्त्रमयी है, निगम और आगम का निर्माण करनेवाली है, वे महाप्रलय करनेवाली हैं, विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा का साधक ध्यान, ज्ञान से विहीन हो कर भी उसके मुख से वेदान्त की बातें निकलती हैं।

अनन्तकोटिसूर्याभा सर्वजन्तुभयङ्करी।
ध्यानज्ञानविहीना सा वेदान्तामृतवर्षिणी॥१॥
सर्वमन्त्रमयीकाली निगमाऽगमकारिणी।
निगमाऽगमकारी सा महाप्रलयकारिणी॥२॥

भद्रकाली ही विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा के रूप में प्रतिष्ठित है, जिनकें स्मरण मात्र से साधक के समस्त शत्रु विलय को प्राप्त हो जाते हैं।

यस्याङ्गधर्मलवा च सा गङ्गापरमोदिता।
महाकाली नगेऽनुस्था विपरीता महोदया॥१॥
विपरीता प्रत्यङ्गिरा तत्र काली प्रतिष्ठिता।
साधकस्मरणमात्रेण शत्रूणां विलयङ्गता॥२॥

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा की उपासना करनेवाला साधक शिव के सदृश योगी, विष्णु के समान स्थिर और सबके द्वारा पूज्य हो जाता है।

नाशं जग्मुः नशीं जग्मुः सत्यं सत्यवदामि ते।
परब्रह्म महादेवी पूजनैरीश्वरी भवेत्॥१॥
शिवकोटि समोयोगी विष्णुकोटिसमः स्थिरः।
सर्वैराराधितासावै भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी॥२॥

गुरु द्वारा प्रदत्त विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा मन्त्र को अष्टोत्तरशत जप करने के बाद श्वेत सर्षप के द्वारा शत्रुओं से आत्मरक्षा तक्षण करना चाहिये।

गुरु मन्त्रं शतं जप्त्वा श्वेत सर्षपमानयेत्।
आत्मरक्षा शत्रुनाशं सा करोति तक्षणात्॥

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा की साधना करने पर भक्तों की आयु और यश की वृद्धि होती है, तथा वे कुबेर के समान धनवान होकर समस्त सुखों को प्राप्त कर लेता है।

आयुर्वृर्द्धियशोवृद्धिस्तेजो वृद्धिस्तथैव च।
कुबेर इव वित्ताढ्यः सर्वसौख्यमवाप्नुयात्॥

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा विद्या, कभी भी दूसरे के शिष्यों और शठ के सामने प्रकाशित नहीं करना चाहिये, केवल अपने पुत्र अथवा भक्तियुक्त अपने शिष्य को ही देना चाहिये।

शठाय परशिष्याय न प्रकाश्या कदाचन।
पुत्राय भक्तियुक्ताय स्वशिष्याय तपस्विने॥
प्रदातव्या महाविद्या चात्मवर्गप्रदा यतः।

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा के साधक द्वारा क्रोध करने पर विरोधी देवता भी लय को प्राप्त हो जाते है तो भूतप्रेतादि और मानवों की कोई बात ही नहीं है।

क्रोधादेवगणाः सर्वेलयं यास्यन्ति निश्चितम्।
किं पुनर्मानवा देवि! भूतप्रेतादयो मृता॥

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा के समान कोई विद्या न है न हो सकती है, विपरीत जीवन को अपने अनुकूल बनाने के लिए विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा की उपासना ही श्रेयष्कर होती है।

विपरीता समा विद्या न भूता न भविष्यति।

उपासना में निर्देशित नियमों का अनुपालन अति अनिवार्य है, नियमों के अनुपालन न करने से सिद्धि की हानि होती है।

नियमास्तत्र भुयांसः प्रकर्तव्याः प्रयत्नतः।
अवैधकरणात् सिद्धिहानिः स्यान्नात्र संशयः॥

तन्त्रमन्त्र की साधना से पूर्व कुछ नियमों का अनुपालन कठोरता पूर्वक करना चाहिये। किसी भी मन्त्र के जपानुष्ठान में अङ्ग शुद्धि, सकलीकरण एवं समस्तकर्म विधिविधान पूर्वक ही करना चाहिये, आत्मरक्षा के लिए सकलीकरण की आवश्यकता होती है।

किसी भी मन्त्र की उपासना करते समय उस पर पूर्ण श्रद्धा रखना आवश्यक होता है अन्यथा वांछित फल की प्राप्ति नहीं हो पाती है। मन्त्रों की साधना में शरीर का स्वस्थ एवं पवित्र रहना अत्यन्त आवश्यक है, चित्त शान्त हो तथा मन में किसी प्रकार की ग्लानि न रहे। शुद्ध हवादार पवित्र एवं एकान्त स्थान में ही मन्त्र साधना करनी चाहिये, साधना जब तक पूरी न हो जाये तब तक स्थान परिवर्तन नहीं करना चाहिये।

जिस मन्त्र की साधना के लिए जो विधान वर्णित है उसी के अनुरूप सभी कर्म करना चाहिये अन्यथा परिवर्तित करने से विघ्नबाधाएँ उपस्थित हो जाती है और सिद्धि में सन्देह हो जाता है तथा साधना भी खण्डित हो जाती है, जिसका परिणाम सदैव साधक के प्रतिकूल ही होता है।

मन्त्र के पुरश्चरण में जितनी संख्या निर्धारित है उतनी संख्या में जप करने के पश्चात् ही दशांश हवन, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करना चाहिये। ब्राह्मण भोजन में उन्हीं ब्राह्मणों का चयन करना चाहिये जो पूर्व में विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा की साधना कर लिये हो, यदि किसी कारण ऐसे ब्राह्मण उपलब्ध नहीं हो पाते है तो शुद्ध वैदिक ब्राह्मणों का चयन करना चाहिये, इन नियमों के अनुपालन में त्रुटि होने पर कार्य की सिद्धि में सन्देह हो जाता है। पूजन में जो दिशा निर्देशित है तथा पूजन सामग्री निर्देशित है उन्हीं का प्रयोग करना चाहिये।

काम्यादि प्रयोगों में एक बार में एक ही मन्त्र की साधना करनी चाहिये तथा एक समय केवल एक ही मनोभिलाषा की पूर्ति का सङ्कल्प करना चाहिये, कई अभिलाषाओं को सङ्कल्प में योजन करने से भी कार्य की परिसिद्धि में संन्देह हो जाता है, साधकों को चाहिये कि अपने उपासना को गोपनीय रखे, प्रचार होने पर आलोचना होती है तथा विघ्न उपस्थित होते हैं, उचित ज्ञाता के ही निर्देशन में साधना करनी चाहिये।

ब्रह्मणों को इनकी उपासना सात्विक पदार्थो से ही करनी चाहिये।

द्रव्येण सात्त्विकेनैव ब्राह्मणः पूजयेच्छिवाम्।

किसी भी उपासना में जब तक समस्त विषयों का पूर्ण ज्ञान न हो जाये, तब तक उपासना तथा पुरश्चरण में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए अन्यथा अनर्थ होता है।

न शास्त्रमालोक्य वदेन्नाचरेन्न जपेदपि।
न पश्येन्नोपदिश्याच्च न कुर्यान्नैव साधयेत्।।
गुरूपदेशतो लब्ध्वा जपन्यासार्चनादिकम्।
पश्चात् तत्साधयेत् सर्वं सदा तद्भावभावितः।।

इस संसार में मनुष्य ही एक विचारवान है, लेकिन विवेक का सदुपयोग आज के समय में कोई भी नहीं करता है, सर्वत्र सभी जन भौतिक समृद्धि के लिए दिन-रात प्रयत्नशील

हैं, वे भौतिक प्रयत्नशीलता में इतना व्यस्त हैं कि उन्हें कर्तव्याकर्तव्य का तनिक भी स्मरण नहीं है, आज व्यक्ति किसी भी तरह से, कैसे भी धर्माधर्म का विचार किये बिना ही प्रतिकूल आचरण का आश्रय ग्रहण करके जल्दी-से-जल्दी ही समृद्ध बन जाना चाहता है, वह अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए तरह-तरह के हथकण्डे अपनाता रहता है, अपने अगल-बगल के प्रतिद्वन्दियों को भौतिक संसाधनों के साथ-साथ तन्त्र-मन्त्र का भी सहारा लेकर क्षुद्रतान्त्रिकों (प्रेतादि उपासक, टोनाटोटकादि) का आश्रय लेकर अन्यान्य प्रकार से अपने प्रतिद्वन्दी के अहित की कामना से विभिन्न प्रकार के प्रेतादियुक्त अभिचारादि (षट् कर्म-मारण-मोहन-उच्चाटन-वशीकरण-आकर्षणादि) कराने लगता है, जिसके प्रभाव में आकर अभिचारित व्यक्ति विभिन्न प्रकार से परेशान रहता है, मनुष्य अपने स्वार्थ-साधन में सदैव असत्य भाषण में ही संलिप्त रहता है, सदैव ही अन्यों के अहित चिन्तन में ही अनुरक्त रहता है, मनुष्य युगानुकूल कालुष्य से लिप्त होकर कलुषित हृदय होकर रह गया है, जिससे समस्त समाज ही कष्टों से युक्त हो दुःखग्रस्त हो गया है। इस समस्या से मुक्ति के लिए विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा उपासना मुख्य साधन है।

श्रद्धावान् पुरुष उपासना करके लाभान्वित हो ऐसी विपरीतप्रत्यङ्गिरा की उपासनात्मक पद्धति नहीं थी, इस स्थिति में विद्वानों के आग्रह पर लोककल्याण हेतु श्रीविश्वनाथस्वरूप परम पूज्य सततस्मरणीय स्वपितृचरण स्व० श्रीवायुनन्दन पाण्डेय जी के आशिर्वाद से प्रस्तुत प्रबन्ध का लेखन हुआ, जनसामान्य महादेवी की कृपा प्राप्त कर समस्त कामनाओं की पूर्ति कर सकें, यद्यपि इस ग्रन्थ के लेखन में पूर्ण सतर्कता का व्यवहार किया गया है, फिर भी टंकणादि की त्रुटियां सम्भव है, अतः इस उपासना में उद्यत होने के पूर्व पूर्णतः शिक्षादीक्षा के बाद ही प्रवृत्त होना चाहिये।

विद्वच्चरणचञ्चरीक,

रामप्रिय पाण्डेय

।।श्रीः।।

श्रीगणेशस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः। आचम्य प्राणायामं कृत्वा न्यासं कुर्यात्।

ॐ गं वक्रतुण्डाय नमः दक्षिणहस्ते न्यस्यामि।

ॐ गं शूर्पकर्णाय नमः वामहस्ते न्यस्यामि।

ॐ गं विघ्नेशाय नमः ओष्ठे न्यस्यामि।

ॐ गं गजाननाय नमः सम्पुटे न्यस्यामि।

ॐ गं लम्बोदराय नमः दक्षिणपादे न्यस्यामि।

ॐ गं एकदन्ताय नमः वामपादे न्यस्यामि।

ॐ गं ब्रह्मणस्पतये नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ गं शिवतनुजाय नमः चिबुके न्यस्यामि।

ॐ गं विनायकाय नमः दक्षिणनासिकायां न्यस्यामि।

ॐ गं ज्येष्ठराजाय नमः वामनासिकायां न्यस्यामि।

ॐ गं विकटाय नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ गं कपिलाय नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ गं धरणीधराय नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ गं आशापूरकाय नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ गं महोदराय नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ गं धूमकेतवे नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ गं मयूरेशाय नमः ललाटे न्यस्यामि।

ॐ गं स्वानन्दाय नमः दक्षिणबाहौ न्यस्यामि।

ॐ गं सच्चित्सुखधाम्ने नमः वामबाहौ न्यस्यामि।

सदात्मरूपं सकलादिभूतममायिनं सोऽहमचिन्त्यबोधम्।
अनादिमध्यान्तविहीनमेकं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१॥

अनन्तचिद्रूपमयं गणेशं अभेदभेदादिविहीनमाद्यम्।
हृदि प्रकाशस्य धरं हृदिस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥२॥
समाधिसंस्थं हृदि योगिनां यः प्रकाशरूपेण विभान्तमेतम्।
सदानिरालम्बसमाधिगम्यं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥३॥
स्वबिम्बभावेन विलासयुक्तं प्रत्यक्षमायां विविधस्वरूपम्।
स्ववीर्यकं तत्र ददाति यो वै तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥४॥
त्वदीयवीर्येण समर्थभूतं स्वमायया संरचितञ्च विश्वम्।
तुरीयकं ह्यात्मप्रतीतिसंज्ञं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥५॥
त्वदीयसत्ताधरमेकदन्तं गुणेश्वरं यं गुणबोधितारम्।
भजन्तमत्यन्तमजं त्रिसंस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥६॥
ततस्त्वया प्रेरितनादकेन सुषुप्तिसंज्ञं रचितं जगद् वै।
समानरूपं ह्युभयत्र संस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥७॥
तदेकविश्वं कृपया प्रभूतं द्विभावमादौ तमसा विभान्तम्।
अनेकरूपं च तथैकभूतं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥८॥
ततस्त्वया प्रेरितनादकेन बभूव सूक्ष्मं जगदेक संस्थम्।
सुसात्त्विकं स्वप्नमनन्तमाद्यं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥९॥
तदेव स्वप्नं तपसा गणेशं सुसिद्धरूपं विविधं बभूव।
सदैकरूपं कृपया च तेऽद्य तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१०॥
त्वदज्ञया तेन त्वया हृदिस्थं तथा सुसृष्टं जगदंशरूपम्।
विभिन्नजाग्रन्मयमप्रमेयं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥११॥
विभिन्नजाग्रद्रजसां विभान्तं विलोकितं तत्कृपया स्मृतेन।
बभूव भिन्नं च सदैकरूपं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१२॥
सदेव सृष्टा प्रकृतिस्वभावात्तदन्तरं त्वं च विभाति नित्यम्।
धियः प्रदाता गणनाथ एकं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१३॥
त्वदज्ञया भान्ति ग्रहाश्च सर्वे प्रकाशरूपाणि विभान्ति खे वै।
भ्रमन्ति नित्यं स्वविहारकार्याः तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१४॥
त्वदज्ञया सृष्टिकरो विधाता त्वदज्ञया पालक एव विष्णुः।
त्वदज्ञया संहरको हरोऽपि तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१५॥
यदज्ञया भूमिजलेऽत्र संस्थे यदाज्ञया यः प्रवहन्ति नित्यम्।
स्वतीर्थसंस्थश्च कृतः समुद्रः तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१६॥
यदाज्ञया देवगणा दिविस्था ददन्ति वै कर्मफलानि नित्यम्।
यदाज्ञया शैलगणाः स्थिरा वै तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१७॥

यदाज्ञया शेषधराधरो वै यदाज्ञया मोहप्रदश्च कामः।
यदाज्ञया कालधराऽर्यमा च तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१८॥
यदज्ञया वाति विभाति वायुः यदाज्ञयाऽग्निर्जठरादिसंस्थः।
यदाज्ञयेदं सचराचरं च तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१९॥
यदन्तरे संस्थितमेकदन्तं तदज्ञया सर्वमिदं विभाति।
अनन्तरूपो हृदिबोधकं यः तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥२०॥
सुयोगिनो योगबलेन साध्यं प्रकुर्वते कः स्तवनेन स्तौति।
अतः प्रणामेन सुसिद्धदोऽस्तु तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥२१॥

फलश्रुतिः

एकदन्त उवाच

भवत्कृतं मदीयं यत् स्तोत्रं प्रीतिप्रदं च यत्।
भविष्यति न सन्देहः सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥१॥
यं यमिच्छति तं तं वै दास्यामि स्तोत्रपाठतः।
पुत्रपौत्रादिकं सर्वं कलत्रं धनधान्यकम्॥२॥
गजाश्वादिकमत्यन्तं राज्यभोगादिकं ध्रुवम्।
भुक्तिं मुक्तिञ्च योगं वै लभते शान्तिदायकम्॥३॥
मारणोच्चाटनादीनि राजबन्धादिकं च यत्।
पठतां शृण्वतां नृणां भवेन्न बन्धनादिकम्॥४॥
एकविंशति वारं यः श्लोकानैवेकविंशतीन्।
पठेच्च हृदि मां स्मृत्वा दिनानि त्वेकविंशतीन्॥५॥
न तस्य दुर्लभं किंचित् त्रिषु लोकेषु वै भवेत्।
असाध्यं साधयेन्मर्त्यः सर्वत्र विजयी भवेत्॥६॥
नित्यं यः पठति स्तोत्रं ब्रह्मभूतः स वै नरः।
तस्य दर्शनतः सर्वे देवाः पूता भवन्ति च॥७॥

त्रैलोक्यमोहनं नाम श्रीगणेशस्तोत्रं परिपूर्णम्

⁂

विषय-सूची

सम्पादकीय ३
स्तुतिकुसुमाञ्जलिः ५
श्रद्धासुमनाञ्जलिः ६
भूमिका ७
श्रीगणेशस्तोत्रम् १९
विषयसूची २२
विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापूजनयन्त्रम् २९

तान्त्रिक विधिः

मङ्गलाचरणम् १
सपर्या में आवश्यक कृत्य १
गुरुपूजनम् १
मानसोपचारपूजनम् १
यज्ञभूमिपूजनम् २
तत्त्वशोधनम् २
प्राणायामम् ३
आचमनम् ४
तिलकम् ४
शिखाबन्धनम् ४
समान्यार्घ्यस्थापनम् ५
द्वारदेवतापूजनम् ५
यज्ञभूमिसंस्कारम् ६
देहरक्षान्यासः ८
भूतशुद्धिविधिः १०
बुद्धिशोधनम् १२
अभिमन्त्रणम् १३
अघोरकरम् १३
श्रीगुरुतर्पणम् १३
इष्टदेवतातर्पणम् १३
संवित्स्तवनम् १३
भूतशुद्धिः १४
स्वशरीरे इष्टदेवताप्रतिष्ठाविधिः १५
व्यापकन्यासः १६
त्वगादिन्यासः १६
प्राणशक्तिपीठदेवतान्यासः १७
प्राणशक्तिर्ध्यानम् २२
शिवपुष्पाञ्जलिः ३४
चक्रन्यासः ३५
अन्तर्मातृकान्यासः ३६
चक्रस्थमातृकान्यासः ३६
बहिर्मातृकान्यासः ३७
मातृकान्यासः ३७
अनुलोमसंहारादिक्रमन्यासः ४२
अनुलोमसृष्ट्यादिक्रमन्यासः ४४
अनुलोमस्थित्यादिन्यासः ४६
विलोमसंहारन्यासः ४९
विलोमसृष्टिन्यासः ५१
विलोमस्थितिन्यासः ५४
श्रीमातृकाऋषिन्यासः ५६
श्रीमातृकाछन्दादिन्यासः ५७
श्रीमातृकाबीजवर्णस्वरूपवाहनन्यासः ५९
योगिनीन्यासः ६२
सिद्धपीठन्यासः ७१

आसनन्यासः	७४
श्रीपात्रविशेषार्घ्यपात्रासादनम्	७६
वर्धनीकलशस्थापनम्	७६
वर्धनीकलशाधारचक्रम्	७७
वर्धनीकलशपूजनम्	७९
विशेषार्घ्यसमर्पणम्	८१
पात्रसंस्कारम्	८४
अग्निमण्डलपूजनम्	८६
अग्निकलानांपूजनम्	८७
अर्कमण्डलपूजनम्	८७
अर्ककलानांपूजनम्	८८
सोममण्डलपूजनम्	८८
सोमकलानांपूजनम्	८९
अङ्कुशमुद्रालक्षणम्	९०
गालिनीमुद्रालक्षणम्	९०
धेनुमुद्रालक्षणम्	९१
सकलीकरणमुद्रालक्षणम्	९१
शङ्खमुद्रालक्षणम्	९१
कवचमुद्रालक्षणम्	९४
अस्त्रमुद्रालक्षणम्	९४
मत्स्यमुद्रालक्षणम्	९४
योनिमुद्रालक्षणम्	९४
धेनुमुद्रालक्षणम्	९५
पाद्यपात्रस्थापनम्	९५
आचमनीयपात्रस्थापनम्	९५
तत्त्वशुद्धिः	९६
क्षेत्रकीलनम्	९७
क्षेत्रकीलनाङ्गबलिदानम्	९८
दिग्रक्षणम्	११४
पञ्चगव्यकरणम्	११६
अन्तःपूजनम्	११८
कुण्डलिनीध्यानम्	११८
शिवशिवाध्यानम्	११९
कुण्डलिनिस्तुतिः	१२०
अक्षमालास्तुतिः	१२२
अक्षमालाजपम्	१२४
बाह्यपूजनम्	१३७
प्रधानकलशस्थापनम्	१३७
पीठदेवतास्थापनंपूजनञ्च	१४५
अग्निमण्डलम्	१४७
अर्कमण्डलम्	१४८
सोममण्डलम्	१४९
पीठशक्तिनां पूजनम्	१५१
श्रीष्टविपरीतप्रत्यङ्गिरापूजनम्	१५३
आवाहनीमुद्रालक्षणम्	१५४
पद्ममुद्रालक्षणम्	१५५
स्थापनीमुद्रालक्षणम्	१५५
सन्निधानमुद्रालक्षणम्	१५६
सन्निरोधनमुद्रालक्षणम्	१५६
सम्मुखीकरणमुद्रालक्षणम्	१५७
अवगुंठनमुद्रालक्षणम्	१५७
सकलीकरणमुद्रालक्षणम्	१५८
धेनुमुद्रालक्षणम्	१५९
महामुद्रालक्षणम्	१५९
लेलिहानमुद्रालक्षणम्	१६०
योनिमुद्रालक्षणम्	१६१
महायोनिमुद्रालक्षणम्	१६१
खड्गमुद्रालक्षणम्	१६१
मुण्डमुद्रालक्षणम्	१६२
डमरुमुद्रालक्षणम्	१६२
त्रिशूलमुद्रालक्षणम्	१६२
वरमुद्रालक्षणम्	१६२
अभयमुद्रालक्षणम्	१६३
विपरीतप्रत्यङ्गिरागायत्रीमन्त्रम्	१६३

तत्त्वमुद्रालक्षणम् १७५
अञ्जलिमुद्रालक्षणम् १७६
शिवार्चनम् १७६
अमोघशिवकवचम् १८८
आवरणादिपरिवारार्चनम् १९६
दिव्यगुरुणां पूजनम् १९७
सिद्धौघगुरुणां पूजनम् १९७
मानवौघगुरुणां पूजनम् १९८
प्रथमावरणम् २००
द्वितीयावरणम् २०१
तृतीयावरणम् २०२
चतुर्थावरणम् २०४
ब्राह्मीध्यानम् २०५
वैष्णवीध्यानम् २०५
माहेश्वरीध्यानम् २०५
कौमारीध्यानम् २०५
अपराजिताध्यानम् २०६
वाराहीध्यानम् २०६
नारसिंहीध्यानम् २०६
चामुण्डाध्यानम् २०६
पञ्चमावरणम् २०७
षष्ठावरणम् २०९
सप्तमावरणम् २११
अष्टमावरणम् २१२
नवमावरणम् २१३
वटुकादिपूजनम् २१४
दैनिकबलिदानम् २१५
वटुकबलिदानम् २१६
योगिनीबलिदानम् २१८
गणेशबलिदानम् २१९
क्षेत्रपालबलिदानम् २२१
राजराजेश्वरबलिदानम् २२३
कालबलिदानम् २२५
मृत्युबलिदानम् २२७
दिग्पालादिबलिदानम् २२८
भूतादिबलिदानम् २३०
अखण्डदीपपूजनम् २३२
पुस्तकपूजनम् २३२
तर्पणम् २३३
कर्पूरनीराजनम् २३४
मूलमन्त्रजपम् २३९
मूलमन्त्रप्राणायामम् २४०
मन्त्र कुल्लुका २४०
मन्त्रसेतु २४०
मन्त्रमहासेतु २४०
मन्त्रनिर्वाणम् २४०
मुखशोधनम् २४०
प्राणयोगम् २४०
उद्दीपनम् २४१
मूलमन्त्रम् २४१
मूलमन्त्रार्थम् २४१
बलिपदार्थसंस्कारम् २४२
सहस्रनामार्चनम् २४४
नित्यपठनीयस्तोत्रम् २८१
कालीकवचम् २८१
कालीहृदयम् २८४
श्रीकालीपटलम् २८९
विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरामहामन्त्रम् २९६
प्रयोगार्थमन्त्रम् २९९
मूलमन्त्रम् २९९
सहस्राक्षरामहामन्त्रम् ३००
कालीशतनामस्तवनम् ३०८
सहस्रनामस्तोत्रम् ३१२
श्रीमहाविद्यास्तोम् ३२५

श्रीकर्पूरस्तोत्रम्	३२९
श्रीकालिकाक्षमापनस्तोत्रम्	३३५
श्रीमहादेवीस्तवेन्द्रम्	३४०
ब्रह्मगाथास्तवम्	३४६
श्रीकाल्यष्टकम्	३४८
कालिस्तवनम्	३४९
होमार्थतान्त्रिकाग्निस्थापनम्	३५२
स्थण्डिलयन्त्रम्	३५२
अग्निजिह्वांन्यासः	३५४
सात्त्विकन्यासः	३५४
राजसन्यासः	३५५
तामसन्यासः	३५५
अग्न्यधिष्ठातान्यासः	३५५
मूर्तिन्यासः	३५६
पीठन्यासः	३५७
इष्टशक्तिन्यासः	३५७
वह्निचक्रम्	३५८
पीठदेवताविन्यासम्	३५९
पीठशक्तिनांपूजनम्	३६४
अग्नेर्प्राणप्रतिष्ठा	३६६
अग्न्यावरणार्चनम्	३६६
प्रथमावरणपूजनम्	३६६
द्वितीयावरणपूजनम्	३६७
तृतीयावरणपूजनम्	३६७
चतुर्थावरणपूजा	३६७
पञ्चमावरणपूजनम्	३६८
कुशकण्डिकापात्रासादनञ्च	३६९
ब्रह्मावरणम्	३६९
सप्तजिह्वाहुतिः	३७२
षडङ्गाहुतिः	३७२
अग्निमूर्त्याहुतिः	३७३
दिक्पालाहुतिः	३७३
दिक्पालास्त्राहुतिः	३७३
श्रीष्टदेवताय हवनम्	३७४
प्रथमावरणाहुतिः	३७५
द्वितीयावरणाहुतिः	३७५
गुरुपंक्त्याहुतिः	३७५
रश्मिदेवताहवनम्	३७६
ब्राह्म्याद्याष्टशक्त्याहवनम्	३७७
अष्टभैरवायहवनम्	३७७
योगिनीनां हवनम्	३७७
दशदिक्पालाय हवनम्	३७८
दशदिक्पालायुधायहवनम्	३७८
खड्गाद्यास्त्रायहवनम्	३७९
वटुकाद्याय हवनम्	३७९
मूलमन्त्रहवनम्	३७९
सहस्रनामहवनम्	३७९
क्षमाप्रार्थना	४१६
कुमारीसुवासिनीपूजनम्	४१९
कुमारीस्तोत्रम्	४२३
छागादिबलिदानम्	४३०
पार्श्वपूजनम्	४३०
अङ्गपूजनम्	४३१
बलिगायत्री	४३२
खड्गप्रार्थना	४३२
नीराजनविधिः	४३३
दीपज्योतिपूजनम्	४३३
विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायन्त्रोद्धार	४३६
यन्त्रप्रतिष्ठा	४३६
यन्त्रेदेवीप्राणप्रतिष्ठा	४३६
जपमालासंस्कारम्	४५१
पञ्चगव्यसंस्कारम्	४५१
मातृकाविन्यासः	४५२
मन्त्रसंस्कारम्	४६२

शापोद्धारम् ४६२
उत्कीलनम् ४६२
चेतनीम् ४६२
आह्लादनीम् ४६३
तेजोद्दीपनम् ४६३
मन्त्राभ्यजननम् ४६३
सूतकनिवारणम् ४६३
उभयसूतकत्यागम् ४६३
मन्त्रप्रत्यक्षम् ४६३
प्राणस्थापनम् ४६४
मन्त्रस्पन्दनम् ४६४
मन्त्रदीपनम् ४६४
मन्त्रताडनम् ४६४
मन्त्रनिबोधनम् ४६४
मन्त्राभिषेचनम् ४६४
मन्त्रदाहनम् ४६४
मन्त्रविमलीकरणम् ४६५
मन्त्रपुनर्जीवनम् ४६५
मन्त्रप्रोक्षणम् ४६५
मन्त्राप्यायनम् ४६५
तर्पणम् ४६५
पुनर्दीपनम् ४६६
गोपनम् ४६६
आवश्यक निर्देश ४६७

वैदिकविधिः

स्वस्तितिलकधारणम् ४६८
पञ्चगव्यप्रासनम् ४६८
त्रिराचमनम् ४६८
पवित्रीधारणम् ४६८
पवित्रिकरणम् ४६८
यज्ञभूमिपूजनम् ४६९
शिखास्पर्शनम् ४६९
श्रीगुरुस्मरणम् ४६९
स्वस्तिवाचनम् ४६९
प्रधानसङ्कल्पः ४७२
गणेशाम्बिकापूजनम् ४७३
गणेशाथर्वशीर्षः ४८७
देव्याथर्वशीर्षः ४९०
स्वस्तिकलशस्थापनम् ४९७
स्वस्तिकलशप्रतिष्ठा ४९८
स्वस्तिकलशपूजनम् ४९९
पुण्याहवाचनम् ५०६
पुण्यकारकमन्त्रम् ५०९
अभिषेकम् ५१६
षोडशमातृकास्थापनम् ५१९
षोडशमातृकापूजनम् ५२४
सप्तघृतमातृकास्थापनपूजनञ्च ५३४
आयुष्यमन्त्रम् ५४५
साङ्कल्पिकेनविधिनानान्दिश्राद्धम् ५४६
आचार्यादिवरणम् ५३३
एकतन्त्रेण आचार्यादिवरणम् ५५३
आचार्यवरणम् ५५३
ब्रह्मावरणम् ५५३
उपद्रष्टावरणम् ५५४
गाणपत्यवरणम् ५५४
सदस्यवरणम् ५५५
ऋत्विकवरणम् ५५५
नियमनिवेदनम् ५५५
रक्षोघ्नकर्मम् ५५७
पञ्चगव्यकरणम् ५५९
सर्वतोभद्रपूजनम् ५६०
सर्वतोभद्रदेवानांस्थापनम् ५६०
सर्वतोभद्रदेवानांपूजनम् ५६७
अन्तःपूजनम् ५७५

कुण्डलिनीध्यानम् ५७५
शिवशिवाध्यानम् ५७६
कुण्डलिनीस्तुतिः ५७७
अक्षमालास्तुतिः ५७९
अक्षमालाजपम् ५८१
पीठदेवतापूजनम् ५९५
पीठशक्तिपूजनम् ५९८
इष्टदेवतापूजनम् ६००
प्रधानदेवताप्रतिष्ठा ६०४
अग्न्युत्तारणम् ६०४
दैनिकबलिदानम् ६१५
अखण्डदीपपूजनम् ६३३
पुस्तकपूजनम् ६३५
मूलमन्त्रजपम् ६३७
श्रीप्रत्यङ्गिरामहास्तोत्रम् ६४१
अग्निस्थापनम् ६५४
पञ्चभूः संस्कारम् ६५४
अग्निसंस्कारम् ६५४
ग्रहाणां पूजनम् ६५७
ग्रहमण्डलचक्रम् ६५७
ग्रहमण्डलदेवतास्थापनम् ६५८
ग्रहमण्डलदेवतापूजनम् ६६५
असंख्यातरुद्रपूजनम् ६७३
कुशकण्डिकाविधिः ६८३
हवनप्रकरणम् ६८७
सूर्यादिग्रहाणांहवनम् ६८७
असंख्यातरुद्रायहवनम् ६९०
प्रधानदेवतायहवनम् ६९०
आवाहितदेवतानांहोमम् ६९९
अग्निपूजनम् ७०५
स्विष्टिकृद्धोमः ७०५
भूरादिनवाहुतिः ७०६
कुमारीसुवासिनीपूजनम् ७०७
छागादिबलिदानम् ७१२
नींराजनम् ७१५
दीपज्योतिपूजनम् ७१५
शीतलीकरणम् ७१६
पुष्पाञ्जलिम् ७१७
हवनाङ्गबलिदानम् ७१८
एकतन्त्रेणदिग्पालादिबलिदानम् ७१८
इन्द्राय बलिदानम् ७१८
अग्नये बलिदानम् ७१९
यमाय बलिदानम् ७२०
निर्ऋतये बलिदानम् ७२०
वरुणय बलिदानम् ७२१
वायवे बलिदानम् ७२१
सोमाय बलिदानम् ७२२
ईशानाय बलिदानम् ७२३
ब्रह्मणे बलिदानम् ७२३
अनन्ताय बलिदानम् ७२४
एकतन्त्रेणग्रहादिबलिदानम् ७२५
सूर्याय बलिदानम् ७२५
चन्द्रमसे बलिदानम् ७२६
भौमाय बलिदानम् ७२७
बुधाय बलिदानम् ७२८
बृहस्पतये बलिदानम् ७२८
शुक्राय बलिदानम् ७२९
शनैश्चराय बलिदानम् ७३०
राहवे बलिदानम् ७३१
केतवे बलिदानम् ७३१
एकतन्त्रेणलोकपालादिबलिदानम् ७३२
गणेशाय बलिदानम् ७३३
दुर्गायै बलिदानम् ७३४
वायवे बलिदानम् ७३४

आकाशाय बलिदानम् ७३५
अश्विनीकुमारौ बलिदानम् ७३६
वास्तोस्पतये बलिदानम् ७३६
क्षेत्रपालाय बलिदानम् ७३७
पूर्णाहुतिहवनम् ७४०
वसोद्धारा हवनम् ७४१
अग्नेर्प्रदक्षिणा ७४१
हवनीयभस्मधारणम् ७४२
विभिन्नदानादिसङ्कल्पः ७४३
ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ७४३
यजमानायश्रेयोदानम् ७४३
आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम् ७४३
आचार्याय गोदानदानम् ७४४
ब्रह्मणे वृषभदानम् ७४४
गाणपत्ये अश्वदानम् ७४४
उपद्रष्टागन्त्रीदानम् ७४४
सदस्याणां सुवर्णदानम् ७४४
भूयसीदक्षिणादानम् ७४४
ब्राह्मणभोजनम् ७४५
आवाहितदेवतानामुत्तरपूजनम् ७४६
महागणपतिपूजनम् ७४६
महागौरीपूजनम् ७४६
स्वस्तिकलशदेवतापूजनम् ७४६
षोडशमातृकापूजनम् ७४६
सप्तघृतमातृकापूजनम् ७४७
सर्वतोभद्रदेवतापूजनम् ७४७
प्रधानकलशस्थदेवानां पूजनम् ७४७
विपरीतप्रत्यङ्गिरापूजनम् ७४७
ग्रहमण्डलस्थदेवतापूजनम् ७५२
असंख्यातरुद्रपूजनम् ७५२
आवाहितदेवतानां विसर्जनम् ७५५
आचार्याय प्रधानपीठदानम् ७५६
यजमान-अभिषेकम् ७५७
छायापात्रदानम् ७५८
अपराधक्षमापनम् ७५८
यजमानरक्षाबन्धनम् ७५९
यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम् ७५९
यजमानतिलकम् ७५९
यजमान-आशीर्वादम् ७५९
यजमानपत्नी-आशीर्वादम् ७६०
देवीपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् ७६१
पूजनोपयोगीसामग्रीम् ७६८

* * *

।।श्रीः।।

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापूजनयन्त्रम्

यन्त्रोद्धारम्

विन्दुत्रिकोणसंयुक्तं षट्कोणसमन्वितम्।
कालीपीठे यजेद्देवीं त्रिपञ्चकोणाढ्यकर्णिके।।
अष्टपत्रे षोडशाब्जे वृत्तभूपुरसंयुते।
विपरीतासमाकाली प्रत्यङ्गिरातथोदिता।।

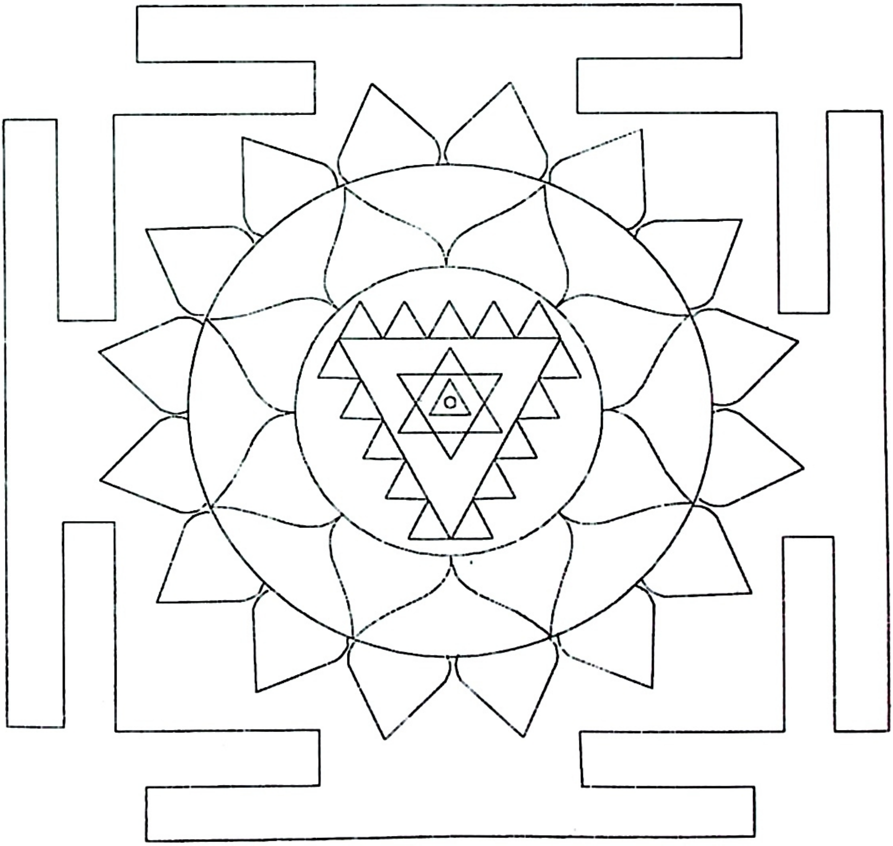

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा भगवती विपरीता महाकाली स्वरूपा हैं अत: इनका कालीपीठ पर ही आवरण पूजन होता है। आवरणस्थ देवता भी परब्रह्मरूपिणी महाकाली के ही अधिकांश है, यद्यपि शास्त्र में बहुत प्रकार के यन्त्र उद्धृत हैं। महाब्रह्मस्वरूपिणी देवी कालिका के ही दक्षिणकाली, काली, महाकाली, भद्रकाली, श्मशानकाली, कामकलाकाली, गुह्यकाली, निशाकाली, कालरात्री आदि भेद हैं, जिसमें भद्रकाली की अवान्तर भेद रक्षाकाली है, ये ही विपरीतप्रत्यङ्गिरा के रूप में प्रतिष्ठित हैं। विपरीतरतातुरा होने के कारण काली को विपरीता कहा जाता है, उपासना करने पर साधक के अङ्गों में स्थित हो जाने के कारण इन्हें प्रत्यङ्गिरा कहा जाता है। काली की लोक में विभिन्न रूपों में आराधना की जाती है। उपासक की हर प्रकार से रक्षा करने के कारण इन्हें रक्षाकाली कहा जाता है तथा समस्त प्राणीमात्र का कल्याण करने के कारण इन्हें भद्रकाली कहा जाता है। ये परारूपिणी कालिका हैं, इनकी आराधना भी कालिका के समान की जाती है। ये सदैव अपने आराधक की सर्वाङ्गीण रक्षा करती हैं । ये महाकाली ही सर्व कल्याणकर्त्तृ सभी प्रकार से रक्षाकर्त्तृ देवी विपरीता ही विपरीतप्रत्यङ्गिरा हैं। इनके सम्प्रदाय क्रम में बहुत भेद होने से अनेक विधियाँ तथा यन्त्र भी अनेक प्रकार के हैं जिसमें विन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-त्रिपञ्चकोणात्म कर्णिका के सहित अष्टदल-षोडशदल तथा एक भूपुरवाला यन्त्रोद्धार है, इसी यन्त्र पर आवरण देवताओं का पूजन होता है, मध्यविन्दु में महाब्रह्मस्वरूपिणी विपरीता देवी का तथा त्रिकोण में काली, महाकाली तथा भद्रकाली, षट्कोण में वाणीब्रह्मा, लक्ष्मीविष्णु, गौरीरुद्र त्रिपञ्चकोणों में काली की पञ्चदश रश्मिदेवियों, अष्टदल में ब्राह्मीवैष्णवी आदि शक्तियों, षोडशदल में स्तम्भिन्यादि शक्तियों के बाद भूपुर में इन्द्रादि दशदिग्पालों के साथ दिग्पालों के वज्रादि आयुधों के बाद माधवादि देवताओं तथा वटुकादि का अर्चन होता है। उपासना में यही चक्र सर्वोपयुक्त है ।

यन्त्रलेखनम्

सर्वप्रथम विन्दु निर्मित करे, पश्चात् एक त्रिकोण का निर्माण करे, त्रिकोण के बाहर षट्कोण, षट्कोण के बाहर तीन पञ्चकोणात्मक त्रिकोण लिखे उसके बाहर त्रिकोणात्मत्रितय लिखकर एक वृत्त की रचना करे, उस वृत्त के ऊपर एक अष्टदल का निर्माण कर उसके बाहर एक षोडशदल निर्मित करके अन्त में एक भूपुर का निर्माण करने पर पूजन यन्त्र होगा।

उपर्युक्त स्वरूपवाला चक्र भोजपत्र या किसी धातु पत्र पर अष्टगन्ध से विधिपूर्वक लिखने के बाद कलश पर स्थापित करके उस पर आवरण देवताओं का आवाहन स्थापन पूजन करना चाहिये।

यन्त्रोद्धारं परिपूर्णम्

❀

।।श्रीः।।

श्रीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या

मङ्गलाचरणम्

शिवोत्सङ्गे समासीनां लालयन्तीं विनायकम्।
विद्याकल्पलताबीजं वन्दे सर्वार्थदां शिवाम्॥

शिव के साथ दिव्यासन पर बैठी हुई, अपने पुत्र गणेश का लालन करती हुई, विद्याकल्पलता के बीजरूप शिवा भगवती पार्वती की सभी प्रकार के अर्थबोध के लिए वन्दना करता हूँ।

सपर्या में आवश्यक कृत्य

गुरु-पूजनम्

प्रातः नित्यस्नानादिकृत्य से निवृत्त होकर गुरु-इष्टदेवता तथा दिक्पालों को नमन कर सन्ध्यावन्दनादि से निवृत्त होकर दीक्षाप्रदायी स्वगुरु का मानसोपचार पूजन करे।

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्,
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरानद्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकम्,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥१॥

श्रीनाथादि तीनों गुरुओं, गणपति, तीनों पीठों के अधिपति भैरवों, मानवौघदिव्यौघ-सिद्धौघों, तीनों वटुकों, दूतीक्रम मण्डलों के समस्त गुरुओं के दोनों चरणों का वन्दन करता हूँ। बयासी तथा चौसठों प्रकार के वीरों तथा पाँच प्रकार के वीरावलियों के साथ मालिनी मन्त्रराज के सहित समस्त गुरुओं के साथ गुरुमण्डल की वन्दना करता हूँ॥१॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥२॥

गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही महादेव महेश्वर शिव हैं, गुरु ही साक्षात् ब्रह्म हैं, इसलिए श्रीगुरु को नमस्कार है॥२॥

मानसोपचारपूजनम्—श्री गुरुदेवाय नमः ध्यायामि। स्वगुरु का नाम पूर्वक ध्यान करे जैसे—**श्रीविश्वनाथाय गुरुदेवाय नमः ध्यायामि।**

ॐ लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।

ॐ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।

ॐ यँ वायवात्मकं धूपं समर्पयामि नमः।

ॐ रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः।

ॐ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

ॐ सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि नमः।

ॐ प॒वित्रै॑स्त्थोव्वैष्ण्ण॒व्यौ॑सवि॒तुर्व्वः॑प्प्रस॒वऽउत्पु॑ना॒म्म्यच्छि॑द्द्रेणप॒वित्रै॑ण॒सूर्य्य॑स्य र॒श्मिभिः॑॥ तस्य॑तेप॒वित्र॑पतेप॒वित्र॑पूतस्य॒यत्का॑मःपु॒नेतच्छ॑केयम्॥

इस मन्त्र से कुशादि निर्मित पवित्री धारण करे।

यज्ञभूमिपूजनम्

पुरश्चरण स्थान पर जाकर द्वार के चौखट पर गन्धाक्षतपुष्प से अभ्यर्चन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भं भद्रकाल्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। दाहिनी चौखट पर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भं भैरवाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। बायें चौखट पर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लं लम्बोदराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ऊपरी चौखट पर पूजन करे।

साधक सर्वप्रथम पाँच वर्ण के रंगे हुए अत्यन्त शुद्ध स्थान में बैठकर पूजा वेदी के बाहर अपने गुरु, इष्ट, देवता तथा दिक्पालों को प्रणाम कर पवित्री धारण करे और आचमन प्राणायाम करने के उपरान्त हाथ में कुशा-निर्मित मोटक लेकर मौन होकर पापशान्ति के लिए महाकाली से प्रार्थना करे।

तत्त्वशोधनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं हूं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ह्रीं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं क्लीं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा। मूल मन्त्र से तीन बार आचमन करे।

ऊपरिलिखित मन्त्रों से आचमन करने के बाद मूल मन्त्र से तीन बार आचमन करे, फिर प्राणायाम में एक बार मन्त्र का मानस जप करते हुए जो नासिका उस समय चल रही हो, उससे वायु को मन्त्र जपकाल तक धीरे-धीरे फेफड़े में भरे तथा चार बार जप करते हुए वायु को रोक कर फिर धीरे-धीरे दो बार जप करते हुए बाहर निकाल दे यथा एक बार मूलमन्त्र जप करके पूरक कर, चार बार जप करके कुम्भक करे, दो बार जप करके रेचन करे। सर्वत्र इसी विधि से प्राणायाम करे। तदनन्तर पापनिवृत्ति के लिए देवी से प्रार्थना करे।

ॐ देवि! त्वत्प्रकृतं चित्तं पापाक्रान्तक भून्मम।
तन्निस्सरन्तु चित्तान्मे पापं हूँ फट् च ते नमः॥१॥

हे चिद्रूपिणी महादेवि! मैं पाप से आक्रान्त हो गया हूँ, हमारे चित्त में प्रकट होकर समस्त पाप जो हमारे चित्त में समाहित हो गये हैं, उन पापों को निकाल दो, हे हूँ फट् स्वरूपिणि! आपको नमस्कार है॥१॥

सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्च च।
एते शुभाऽशुभस्येह कर्मणो नवसाक्षिणः॥२॥

सूर्य-सोम-यम-काल तथा पञ्चमहाभूत पृथ्वि-जल-अग्नि-वायु-आकाश कर्म के नव साक्षी देवताओं को नमस्कार है॥२॥

प्राणायामः

मूल मन्त्र को एक बार पढ़ कर पूरक करे, चार बार पढ़ कर कुम्भक करे, दो बार पढ़ कर रेचन करे, इस प्रकार तीन बार प्राणायाम अवश्य करे।

ॐ वज्रोदके हूँ फट् स्वाहा। मन्त्र से जल नदी कूपादि से ग्रहण करे।

ॐ हूँ स्वाहा। मन्त्र से जल को पूजन गृह में लाये।

ॐ ह्रीं विशुद्ध सर्वपापानि शमयाशेष विकल्पमपनय हूँ फट् स्वाहा। जल शोधन करे।

ॐ ह्रौँ स्वाहा। पैर धोये।

ॐ ऐँ कालिकायै नमः। त्रिराचमन करे।

ॐ ऐँ कपालिन्यै नमः। आचमन करे।

ॐ ऐँ कुल्लायै नमः। फिर मन्त्र से हस्त, पाद प्रोक्षण करे।

ॐ ऐँ कुरुकुल्लायै नमः। हाथ से ओष्ठ को शुद्ध करे।

ॐ ऐँ कुल्लायै नमः। हाथ प्रक्षालित करे।

मूल मन्त्र से दशो अङ्गुलियों को सङ्कुचित करे।

तर्जनी और अङ्गुष्ठ से नासिका को पोंछे।

अनामिका और अङ्गुष्ठ से दोनों कानों को पोंछे।

कनिष्ठिका और अङ्गुष्ठ से नाभि को पोंछे।

हाथ तल से हृदय को पोंछे।

सभी अङ्गुलियों से मस्तक तथा हाथ तक बाहुओं को पोंछे।

आचमनम्—मूल मन्त्र से तीन बार आचमन करे—

ॐ वज्रोदके हूँ फट् स्वाहा। पात्र में जल ग्रहण करे।

ॐ हूँ फट् स्वाहा। हाथ में जल ग्रहण करे।

ॐ ह्रीँ विशुद्धं सर्वपापानिशमयाशेषविकल्पमपनय हूँ फट् स्वाहा। मन्त्र से पाद प्रक्षालन करे।

ॐ ह्रीँ स्वाहा। पुनः आचमन करने के पश्चात् अपने ऊपर तिलकादि लगाये।

तिलकम्

देव्यास्त्रं विलिखेद्भाले कालीबीजं ततो हृदि।
शक्तिं मध्यगतां कृत्वा कूर्चबीजं न्यसेत्सुधी॥

ललाट पर देवी का अस्त्र(त्रिशूल) लिखे, हृदय पर **क्रीँ** बीज लिखे, नाभि पर शक्ति बीज **ह्रीँ** लिखे तथा नाभि के नीचे **हूँ** बीज बुद्धिमान साधक को लिखना चाहिये।

रक्त चन्दन से ललाट, उदर, हृदय, कण्ठ, दक्ष पार्श्व, वाम पार्श्व, दोनों अंस, दोनों पृष्ठ, ककुद, दोनों भुजा, मूर्धा इत्यादि चतुर्दश स्थानों में तिलक करे।

शिखाबन्धनम्

ॐ मणिधरिणि वज्रिणि शिखरिणि सर्वलोकवशंकरि हूँ फट् स्वाहा।

ॐ उर्ध्वकेशे विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये चामुण्डे चाऽपराजिते॥१॥

ऊपर की तरफ उठी हुए केशोंवाली (ऊर्ध्व स्थित शिखा के केशों में रहनेवाली) विरूपाक्षी विरूप नेत्रों (विशेष तृतीय नेत्र)वाली, मांस-रक्त का भोजन करनेवाली, अपराजिता (कभी किसी से पराजित न होनेवाली), चामुण्डा (काली) देवी हमारे शिखा में निवास कर हमें तेजोवान् बनायें॥१॥

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजःसमन्विते।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥२॥

दिव्य तेज से युक्त चिद् स्वरूपिणी महामाया हमारी शिखा में स्थित होकर हमारे तेज की वृद्धि करें॥२॥

समान्यार्घ्य-स्थापनम्

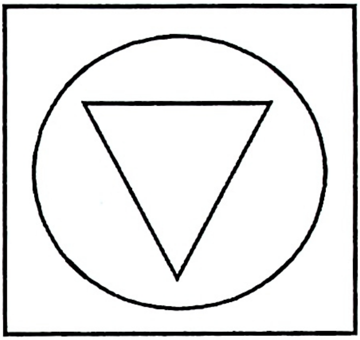

मूल मन्त्र से तीन बार पुन: आचमन करके अपने बाँयें तरफ निर्दिष्ट मण्डल बनाये, फिर अधोलिखित पूजन करे।

ॐ आधारशक्तये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पाक्षतादि से पूजन करे।

ॐ फट्। प्रक्षालित शंखपात्र को मण्डल पर स्थापित करे।

ॐ नमः। शंखपात्र में जल भरे।

अङ्कुशमुद्रा द्वारा अन्तरिक्षस्थ सूर्यमण्डल से तीर्थसहित नदियों का आवाहन करे।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥

इस जल में गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी आदि नदियाँ आकर हमें सान्निध्य प्रदान करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः। शंखपात्र स्थित जल में गन्धपुष्पाक्षतादि छोड़ कर, धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर, मत्स्यमुद्रा से आच्छादित कर, प्रणव से अट्ठारह बार अभिमन्त्रित करे।

द्वारदेवतापूजनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गणपतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के ऊपर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वटुकाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के बाँयें पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षेत्रपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के दक्षिण पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं याँ योगिनीभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के नीचे पूजन करे।

चारों दिशाओं में—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गंगायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के दक्षिण शाखा पर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ यमुनायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के वाम शाखा पर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ लक्ष्म्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के ऊपरी शाखा पर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के नीचली शाखा पर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ कँ चँ टँ तँ पँ यँ शँ ब्रह्माण्याद्यष्टमातृभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

देहली पर पूजन के बाद दाहिने पैर को आगे करके बाँयें पैर से किसी भी शाखा को स्पर्श न करते हुए पूजन गृह में प्रवेश करे।

यज्ञभूमिसंस्कारम्

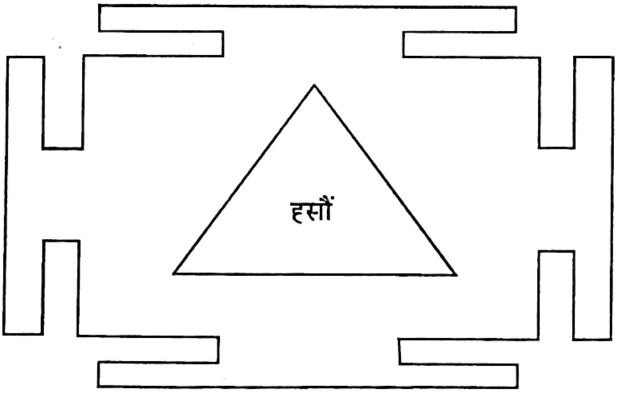

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। पूजास्थान पर जल छिड़के।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पवित्र वज्रभूमे हूँ फट् स्वाहा। भूमि का स्पर्श करते हुए अभिमन्त्रित करे, जहाँ आसन बिछाना हो वहाँ भूमि पर पूजन करके त्रिकोण बनाये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आसुरेखे वज्ररेखे हूँ फट् स्वाहा। त्रिकोण के बाहर चौकोर मण्डल बना कर त्रिकोण के मध्य प्रेत बीज लिख कर गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्सौः प्रेतासनाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के नीचे त्रिकोण के मध्य प्रेत बीज लिख कर गन्धाक्षतपुष्प समर्पित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ आधारशक्तिकमलासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन पर गन्धाक्षतपुष्प समर्पित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनन्ताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विमलासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पद्मासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सर्वप्रथम कुशासन बिछाये अथवा पच्चीस कुशाओं से निर्मित मोटक को शवरूप मानकर बिछाकर उसके ऊपर कम्बलासन बिछा कर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्सौः स्हौः महाप्रेतपद्मासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। पुनः आसन का अर्चन करे।

ॐ पृथ्वीत्वयाधृतालोका देवि त्वं विष्णुनाधृता।
त्वञ्च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरुचासनम्॥

हे पृथ्वि! तुमने समस्त लोकों को धारण किया है तथा तुम्हें विष्णुभगवान् ने धारण किया है, तुम हमें धारण करो और आसन को पवित्र करो।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा भूम्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। सिद्धासन से बैठ कर आसन पर जल छिड़के।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वास्तुपुरुषाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नैर्ऋत्य कोण में वास्तुपुरुष का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। पूर्व दिशा में ब्रह्मा का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धर्माय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। दक्षिण दिशा में धर्म का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्ञानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। पश्चिम दिशा में ज्ञान का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैराग्नाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। उत्तर दिशा में वैराग्न का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐश्वर्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ईशान दिशा में ऐश्वर्य का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अधर्माय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। अग्नि दिशा में अधर्म का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अज्ञानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नैर्ऋत्य कोण में अज्ञान का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अवैराज्ञाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। वायव्य कोण में अवैराज्ञ का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनैश्वर्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ईशान कोण में अनैश्वर्य का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ स्वाहा शरीरं शोधयामि। जल से शरीर का मार्जन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ स्वाहा वाणीं शोधयामि। आचमन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ स्वाहा चित्तं शोधयामि। आचमन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। पुष्प से हृदय पर स्पर्श करे।

देहरक्षान्यासः—मूल मन्त्र से तीन बार न्यास के बाद देह रक्षा न्यास करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गुरुभ्यो नमः दक्षबाहौ न्यस्यामि। दाहिनी भुजा का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गणपतये नमः वामबाहौ न्यस्यामि। वाम भुजा का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुँ दुर्गायै नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वटुकाय नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं याँ योगिनीभ्यो नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षेत्रपालाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ परमात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजन-मनश्चक्षुश्रोत्रतिरस्करणं कुरु-कुरु हूँ फट् स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हसन्ति हसितालापे मातङ्गिपरिचारिके मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हूँ फट् स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नमो भगवति ज्वालामालिनी देवी सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ हूँ फट् स्वाहा। अपने चारों ओर अग्नि की भावना करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं । चारों ओर चुटकी बजा कर दिग्बन्धन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शताभिषेके शताभिषेके पदे हूँ फट् स्वाहा। पुष्प पवित्र करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुष्पकेतुराजार्हत् पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे पुष्पचयावकीर्णे हूँ फट् स्वाहा। जल से पुष्पाभिमन्त्रण करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

पवित्र हो या अपवित्र हो (किसी भी अवस्था में) सभी अवस्था में जो पुण्डरीकाक्ष (भगवान् विष्णु) का स्मरण करता है वह बाहर और भीतर से पवित्र हो जाता है।

सामान्यार्घ्योदक जल से सभी पूजन सामग्रियों का मार्जन करे, पुष्पों के ऊपर धेनुमुद्रा तथा मत्स्यमुद्रा बना कर पुष्प शुद्ध हो गये हैं ऐसी भावना करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ। अपने चारों तरफ जल छिड़के।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूँ फट् स्वाहा। अपने चारों तरफ क्रोधमयी दृष्टि से देख कर विघ्नों का निस्सारण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वविघ्नानुत्सारयोत्सारय हूँ फट् स्वाहा।

ऊपर देख कर अन्तरिक्ष में रहनेवाले, चारों ओर ज़ल छिड़क कर दिशाओं में रहनेवाले तथा बाँयें पैर की एड़ी से तीन बार पृथ्वी पर घात कर भूमि में रहनेवाले भूताप्रेतपिशाचादि तथा विघ्न करनेवालों के साथ समस्त विघ्नों का निस्सारण करे। लावा, रक्त चन्दन, पीला सरसों, तिल, दही, दूर्वा एवं अक्षतादि में से कोई एक पदार्थ लेकर चारों दिशाओं विदिशाओं तथा ऊपर नीचे प्रच्छेप कर रक्षण करे। विशेषतया पिले सरसों से रक्षाकरण करे। पिला सरसों हाथ में लेकर मन्त्र पाठपूर्वक दिशाओं विदिशाओं में प्रक्षेप कर विघ्नों को निष्कासित करे।

पूर्वे—

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

इस स्थान के आश्रित होकर यहाँ सर्वदा निवास बनाये हुए सभी भूत इस स्थान को त्याग करके जहाँ कहीं अन्यत्र चले जायें॥१॥

दक्षिणे—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिता।
ये चाऽत्र विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

जो भूतादि इस भूमि में स्थित हैं, वे सभी यहाँ से चले जायें और जो विघ्न करनेवाले हैं, वे सभी शिव की आज्ञा से नष्ट हो जायें।

पश्चिमे—

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

सभी दिशाओं में जो भूतपिशाचादि हैं, वे सभी यहाँ से बिना किसी प्रकार का हमसे

विरोध किये चले जायें, हमारा सभी से कोई विरोध नहीं है, सभी हमसे कोई विरोध न करें, हम पूजाकर्म प्रारम्भ कर रहे हैं।

उत्तरे—

ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु यावत्कर्म करोम्यहम्॥

जो यहाँ स्थित होकर भूतादि एवं राक्षसादि हैं, वे जबतक हम पुरश्चरणकर्म कर रहे हैं तब तक यहाँ से अन्यत्र कहीं चले जायें।

ऊपर तथा चारों तरफ पीला सरसों छिड़क कर अपने बाँयें तरफ ध्यान करते हुए अपने गुर्वादि का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं परमगुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं परात्परगुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अपने दाहिने तरफ गणेशादि देवताओं का गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गणेशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। देवी को प्रणाम करके करशुद्धि करे।

ॐ हूँ। चन्दनयुक्त पुष्प ग्रहण करे।

ॐ ह्रौं। पुष्प से पूरे हाथ का मर्दन(पूरे हाथ में मले) करे।

ॐ क्लीँ। दक्षिण हाथ में मल कर।

ॐ तत्सत्। बाँयें हाथ से सूंघ कर।

ॐ ह्रौं। अपने सिर के चारों ओर घुमा कर ईशान कोण में पुष्प को फेंक दे।

ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसतिहिंसकाः।
मृत्यु-रोग-भय-क्रोधाः पतन्तु रिपुमस्तके॥

जो हिंसक मेरी हिंसा कर सकते हैं, वे सभी विलय को प्राप्त हो जायें और मृत्यु, रोग, भय, क्रोध आदि सभी हमारे शत्रुओं के मस्तक पर चले जायें।

नाराच मुद्रा से मस्तक के ऊपर चारों ओर घुमाकर फेक कर भूतशुद्धि करे।

भूतशुद्धि-विधिः

भूतशुद्धि प्राणायाम के द्वारा किया जाता है। प्राणायाम करते समय उत्तम विधि का प्रयोग करना ही श्रेयस्कर होता है। सर्वत्र १:४:२ के अनुपात से ही करना चाहिये। मन्त्र

तथा बीजों का २० बार उच्चारण करते हुये पूरक करे, पूरक का चतुर्गुणा उच्चारण करते हुये कुम्भक करे तथा पूरक का दोगुणा उच्चारण करते हुये रेचन करे।

विनियोगः—**अस्य श्रीभूतशुद्धिमन्त्रस्य, श्रीमहाकालभैरवऋषिः, वृहतीछन्दः, श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता, क्लीँ बीजं, ह्रूँ शक्तिः, क्रौँ कीलकं भूतशुद्ध्यर्थे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वृहतीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीँ बीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्थान स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रूँ शक्तिये नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रौँ कीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली के पृष्ठ का स्पर्श करे।

षडङ्गन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूं हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐं कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

व्यापकन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा। मूल मन्त्र से आठ बार व्यापक न्यास करके मूल मन्त्र से ही तीन बार प्राणायाम करे।

बुद्धिशोधनम्

ॐ सिद्धाढ्यं शिवगेहिनी करलसत्पाशाङ्कुशां भैरवीं,
भक्ताभीष्टवरप्रदां सकुशलां संसारबन्धच्छिदाम्।
पीयूषाम्बुधिमन्थनोद्भवरसां संविद्विलासां परां,
वीराराधितपादुकां सुविजयां ध्यायेज्जगन्मोहिनीम्॥

शिव के शरीर में रहनेवाली, हाथों में पाश और अङ्कुश धारण करनेवाली, सिद्धि प्रदान करनेवाली भैरवी, भक्तों को अभिष्ट प्रदान करनेवाली, कुशलता पूर्वक संसार के बन्धनों का छेदन करनेवाली, समुद्र मन्थन से उत्पन्न हुए अमृत रस में सदैव विलास करनेवाली, वीर साधकों के द्वारा नित्य आराध्य जगत् को मोहित करनेवाली सुन्दर संवित् स्वरूपिणी विजया देवी का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भैरव्यै नमः। उपर्युक्त स्वरूप का ध्यान करे।

ॐ संविदे ब्रह्मसम्भूते ब्रह्मपुत्रीसदानघे।
भैरवानन्दतृप्त्यर्थं पवित्राभव सर्वदा॥

हे ब्रह्म पुत्री अनघ संवित् देवि! भैरव के आनन्द की तृप्ति के लिए तथा हमारे ब्रह्मत्व प्राप्ति के लिए सर्वदा पवित्र हो जाओ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्राह्मण्यै नमः। ब्राह्मणी का शोधन करे।

ॐ सिद्धिमूलक्रिये देवि हीनबोधप्रबोधिनि।
राजाप्रजावशङ्करि शत्रुकण्ठनिषूदिनि॥

हे शत्रुकण्ठनिषूदिनि देवि! सिद्धि प्राप्ति के पूर्व क्रियात्मिका रूपिणी, ज्ञान का प्रबोधन करनेवाली हमें सिद्धि प्राप्ति के लिए सर्वदा शुद्ध होकर परमज्ञान प्रदान करो।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षत्रियायै नमः। क्षत्रिया का शोधन करे।

ॐ अज्ञानेन्धनदीप्ताग्नि ज्वालाग्निज्ञानरूपिणि।
आनन्दस्यागमप्रीतिं सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छ मे॥

ज्ञान रूपी ज्वालाग्नि से अज्ञान रूपी इन्धन को दीप्त(जला)करके प्रीति रूपी आनन्द की प्राप्ति के लिए हमें पूर्ण रूप से ज्ञान प्रदान करो।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैश्यायै नमः। वैश्या का शोधन करे।

ॐ नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रदर्शिनी।
त्रैलोक्यविजये मातः समाधिफलदाभव॥

हे त्रैलाक्य में विजय प्राप्त करनेवाली माता! हमारे समाधि रूपी फल सिद्धि के लिए योगमार्ग का प्रदर्शन करनेवाली, हमारे लिए फल प्रदान करनेवाली हो जाओ, तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शूद्रायै नमः। शूद्रा का शोधन करे।

अभिमन्त्रणम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षय आकर्षय सिद्धिं देहि देहि सर्वं मे वशमानय स्वाहा। संवित् ज्ञान शक्ति को अभिमन्त्रित करे।

अघोरकरम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ ह्रीँ लं अः डँ ऐँ महाघोरेशाय नमः। मन्त्र से संवित्(ज्ञान) शक्ति को अभिमन्त्रित कर, फिर मूल मन्त्र से सात बार संवित् शक्ति में इष्टदेवी भगवती विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा का आवाहन करके धेनुमुद्रा तथा योनिमुद्रा प्रदर्शित कर चुटकी बजाते हुए दिग्बन्धन कर, श्रीष्टदेवता का मानसोपचार पूजन करने के बाद सहस्रारचक्र में श्रीगुरु का ध्यान पूजन करे।

श्रीगुरुतर्पणम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ गुरुपादुकाभ्यो नमः तर्पयामि। तीन बार तर्पण करे।

इष्टदेवतातर्पणम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरां तर्पयामि। पाँच बार तर्पण करे।

संवित्स्तवनम्

संविद्देवि गरीयसी गुणमयी वैगुण्यविध्वंसिनी,
मायामोहमदान्धकारशमनी तापत्रयोन्मूलिनी।
वाग्देवी वदनाम्बुजैकरसिका सम्बोधिनी दीपिका,
ब्रह्मज्ञानविवेकसिद्धविजयी विज्ञानमूर्त्यै नमः॥

महानतम गुणोंवाली, समस्त दोषों को समाप्त करनेवाली, मायामोहमद रूपी अन्धकार का शमन करनेवाली, अधिदैविक, अधिभौतिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार के तापों का

उन्मूलन करनेवाली, वाणी की अधीश्वरी वाग्रूपिणी, कमल के आसन पर विराजमान, सम्बोधन को प्रकाशित करनेवाली, ब्रह्मज्ञान रूपी विवेक की सिद्धि प्राप्ति के लिए समस्त विज्ञानमूर्ति संवित् देवी को नमस्कार है।

संविदासवयोर्मध्ये संविदेवगरीयसी।
भयत्राशायनिर्गन्धा विख्यातामोदकारिणी॥

संवित् और आसव के मध्य में समस्त भयों से त्राश करानेवाली, परमशुद्ध आनन्द रूप से विख्यात महान् सवित् देवी को नमस्कार है।

स्तुति कर श्रीगुरु, इष्टदेवता को प्रणाम कर भूतशुद्धि करे।

भूतशुद्धिः

प्राणायाम पूर्वक तथा मन्त्रानुसार यथावत् तत्तद् मन्त्रार्थ भावना करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मूल शृङ्गाटात् सुषुम्नापथेन जीवशिवं परमशिवपदे योजयामि स्वाहा। मूलाधार में कुण्डलिनी शक्ति को जगाकर उसके मुख में जीव को धारण करा कर सुषुम्नापथ के द्वारा ऊर्ध्वद्वादशान्त में परमशिव के साथ समायोजित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ संकोच शरीरं शोषय शोषय स्वाहा। संकोच शरीर का वायु के द्वारा शोषण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ संकोच शरीरं दह दह पच पच स्वाहा। वायु के द्वारा शोषित संकोच शरीर का दाहन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा। ऊर्ध्व द्वादशान्त स्थित शिव के पाद तल से अमृत श्राव कराकर संकोच शरीर के दाहन के बाद भस्मिभूत भस्म में मिलाये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ शाम्भवशरीरं उत्पादयोत्पादय स्वाहा। अमृत मिश्रित भस्म से पिण्ड बनाकर कल्याण मय दिव्यशरीर की उत्पत्ति करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रौँ शिवशक्त्यात्मकं शरीरं कुरु कुरु स्वाहा। उत्पन्न दिव्यशरीर को शिवशक्त्यात्मक बनाये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीँ सोऽहं हंसः अवतर अवतर परमशिवं सुषुम्नापथेन प्रविश मूल शृङ्गाटकं उल्लासयोल्लासय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहं स्वाहा। परमशिव से कुण्डलिनी शक्ति के द्वारा शिव को अपने अङ्ग में धारण करके सुषुम्नापथ के द्वारा मूलाधार कमल पर दिव्य शिव को स्थापित करे।

परब्रह्म के संयोग से शिव के पादतल से टपकते हुऐ अमृतरस कुण्डलिनी शक्ति को ग्रहण करा कर सम्पूर्ण शरीर को सिंचित कर आप्लावित करे। पुनः विपरीत क्रम से सगर्भित कुण्डलिनी शक्ति को आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान होते हुए मूलाधार में स्थापित कर कुलकुण्डलिनी शक्ति के शरीर से ही आत्मशिव का प्रसव करा कर स्थापित कराये तथा मूलकुलकुण्डलिनी शक्ति के ही शरीर से ही समस्त मातृका शक्तियों को प्रकट करा कर तत्तत् पत्रों पर स्थापित कर विधिवत् मानस पूजन करे।

स्वशरीरे इष्टदेवताप्रतिष्ठाविधिः

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः-सामाथर्वणछन्देभ्यः, प्राणशक्तिर्देवता, आँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्रौँ कीलकं मम शरीरे श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता प्रतिष्ठापने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषिभ्यो नमः शिरसि। सिर पर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋग्यजुस्सामाथर्वण छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख भाग का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्राणशक्तिर्देवतायै नमः हृदि। हृदय स्थान पर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ बीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्थान का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः। दोनों पैरों का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रौँ कीलकाय नमः नाभौ। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्राणशक्तिर्देवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे। सिर से पैर तक समस्त अङ्गों का स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नभोवाय्वाग्निर्जलभूम्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः। तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रोत्रत्वक्नयनरसनाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः। मध्यमा अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः। अनामिका अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वक्तव्यआदानगमनविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। कनिष्ठिका का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। करतल-करपृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नभोवाय्वग्निर्जलभूम्यात्मने हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रोत्रत्वक्नयनरसनाघ्राणात्मने शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुम्। दोनों बाहुओं का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वक्तव्यआदानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए घुमा कर हाथ पर ताली बजाये।

व्यापकन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ पादादारभ्यनाभ्यन्तं न्यस्यामि। पैर से नाभि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ नाभ्यादारभ्यहृदयान्तं न्यस्यामि। नाभि से हृदय तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रौँ हृदयादारभ्यमस्तकान्तं न्यस्यामि। हृदय से मस्तक तक स्पर्श करे।

त्वगादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हौं ओजसात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूँ प्राणात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ जीवात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सर्वाङ्गे। लेलिहान मुद्रा से सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

प्राणशक्तिपीठदेवतान्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ मण्डूकाय नमः मूलाधारे न्यस्यामि। योनि प्रदेश पर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि। लिङ्गमूल का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कच्छपाय नमः मणिपूरे न्यस्यामि। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आधारशक्तये नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ प्रकृतये नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कूर्माय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अनन्ताय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पृँ पृथिव्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षीरसमुद्राय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ रत्नद्वीपाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कल्पवृक्षाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ मणिमण्डपाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ स्वर्णसिंहासनाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ धर्माय नमः दक्षिणस्कन्धे न्यस्यामि। दक्षिण स्कन्ध का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्ञँ ज्ञानाय नमः वामस्कन्धे न्यस्यामि। वाम स्कन्ध का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वैराज्ञाय नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ ऐश्वर्याय नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अधर्माय नमः मुखे न्यस्यामि। मुख का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अज्ञानाय नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अवैराज्ञाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अनैश्वर्याय नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कल्पान्तकायानन्ताय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ पद्माय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आनन्दकन्दाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ संविन्नालाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अग्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ वह्निमण्डलाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ धूम्रार्चिषे नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ ऊष्मायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ ज्वलिन्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ ज्वालिन्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ सुश्रियै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ स्वरूपायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ कपिलायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ळँ हव्यवाहनायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ कव्यवाहनायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ सूर्यमण्डलाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ भँ तपिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ बँ तापिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ फँ धूम्रायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ पँ मरीच्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ धँ रुच्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ दँ सुषुम्णायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ थँ भोगदायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ तँ विश्वायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ णँ बोधिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ ढँ धारिण्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ डँ क्षमायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अमृतायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ मानदायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ पूषायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ तुष्ट्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ पुष्ट्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ रत्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ धृत्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ शशिन्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लृँ चण्डिकायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ कान्त्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ ज्योत्स्नायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ श्रियै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ प्रीत्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ अङ्गदायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ पूर्णायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः पूर्णामृतायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सत्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ रजसे नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ तमसे नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आत्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अन्तरात्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ परमात्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्ञँ ज्ञानात्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ मायातत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कलातत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विँ विद्यातत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ परतत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

पीठ देवताओं का न्यास के बाद हृदपद्म में पीठशक्तियों का न्यास करे, हृदय प्रदेश में अष्टपत्रात्मक कमलपत्र का ध्यान करके उनके पत्रों पर क्रमशः न्यास, स्थापन पूजन करे।

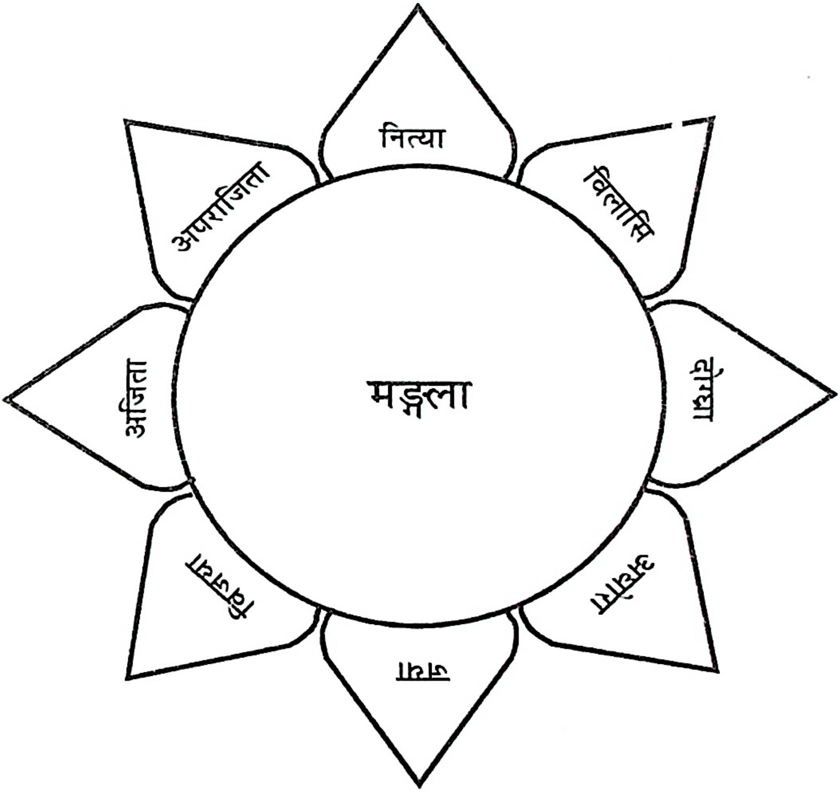

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ जयायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ विजयायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ अजितायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ अपराजितायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ नित्यायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ विलासिन्यै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ दोग्घ्रायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ अघोरायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ मङ्गलायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ क्लीँ क्रीँ ह्रूँ क्रौँ आँ ह्रीँ क्रौँ मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ जयादिशक्तिभ्यो नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ पीठाय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

मध्यकर्णिकायां प्राणशक्तिर्ध्यानम्

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्।
शूलंकपालंदधतींकराब्जैः रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्॥१॥

रक्त के समुद्र में पोत के सदृश अरुण वर्ण के पद्म पर आसीन हाथ में पाश, अंकुश, धनुष, खड्ग, बाण, शूल, कपाल से शोभायमान, रक्तवर्ण तथा तीन नेत्रों वाली प्राणदेवी को प्रणाम॥१॥

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुण-सरोजाधिरूढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्।
विभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥२॥

रक्त के समुद्र में पोत पर उल्लसित, अरुण वर्ण के कमल पर अधिरुढ़, हाथों में

धनुष, दण्ड, इक्षुद्भव, बाण, अंकुश तथा पञ्चबाण धारण की हुई, रक्त बहते हुए कपालों की माला धारण की हुई, उदयकालिका सूर्य के समान वर्ण वाली त्रिनेत्रधारी परादेवी प्राणशक्ति हमारे लिये सुखकारी हो सदा सर्वत्र हमारे हृदय में वास करें तथा सतत शत्रुओं और कालुष्य से रक्षा करें।।२।।

हृदयप्रदेश में अधोलिखित विधि से विन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अन्त: बाह्यक्रम से पञ्चदशत्रिकोण, अष्टदल, षोडशदल तथा एक भूपुर की कल्पना कर लेलिहान मुद्रा से आवरण देवताओं की स्थापना कर अपने इष्टदेवता की प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से विधिवत् प्रतिष्ठापूर्वक स्थापना करके मानस षोडशोपचार विधि से पूजन करके आवरणादि देवताओं का पूजन करे।

प्रथमावरणम्

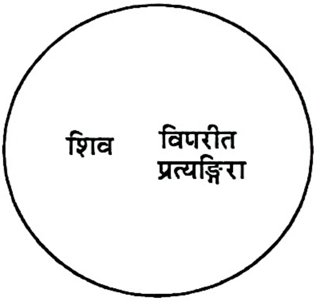

त्रिकोणे कालिकानां विन्यासम्—त्रिकोण में कालिकाओं का विन्यास करे—

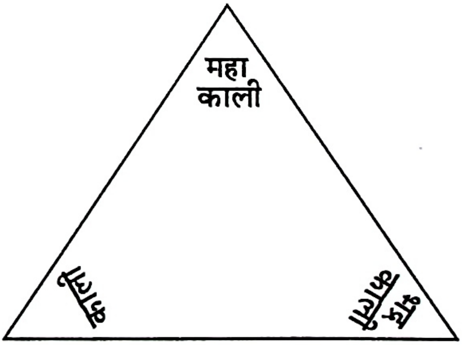

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काल्यै नमः। नीचे कोण में।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकाल्यै नमः। बाँयें कोण में।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भद्रकाल्यै नमः। दाहिने कोण में।

षट्कोणे सपत्नीत्रिदेवविन्यासम्—षट् कोण में सपत्नी त्रिदेवों का विन्यास करे—

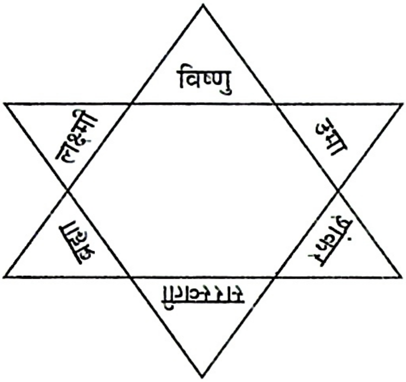

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाण्यै नमः। नीचे के कोण में।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे नमः। बाँयें नीचे कोण में।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लक्ष्म्यै नमः। बाँयें ऊपर कोण में।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विष्णवे नमः। ऊपर के कोण में।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उमायै नमः। ऊपर दाँयें कोण में।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः। नीचे दाँयें कोण में।

दिव्यौघादिगुरुणां विन्यासम्—भूपुर के ईशान कोण में दिव्यौघगुरुओं का विन्यास करे—

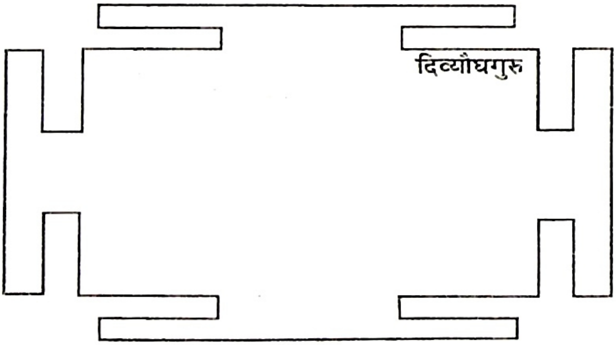

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमहादेव्यम्बानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमहादेवानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीत्रिपुरानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीभैरवानन्दनाथाय नमः।

सिद्धौघादिगुरुणां विन्यासम्—भूपुर के उत्तर दिशा में सिद्धौघ गुरु का विन्यास करे—

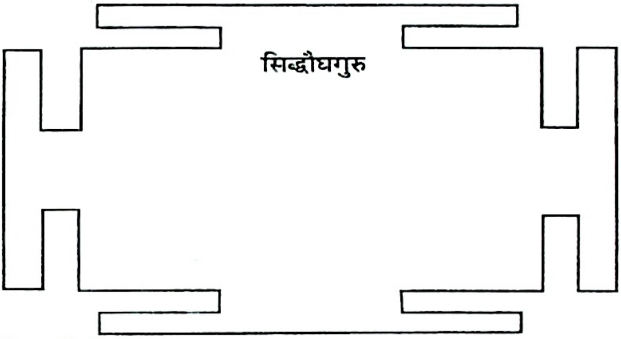

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीब्रह्मानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीपूर्णदेवानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीचलचित्तानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीचलचलानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीकुमारानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीक्रोधानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीवरदानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीस्मरदीपानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमायाम्बायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमायावत्याम्बायै नमः।

मानवौघादिगुरुणां विन्यासम्—वायव्य कोण में मानवौघगुरुओं का विन्यास करे—

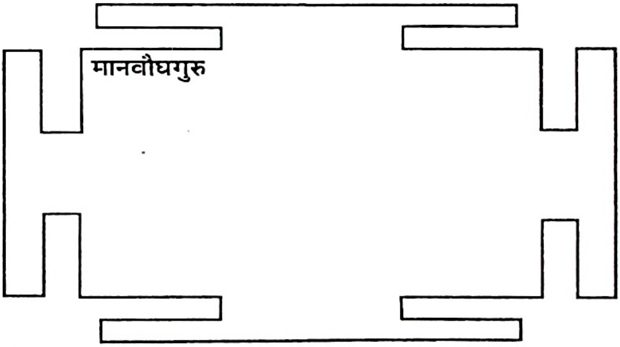

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीविमलानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीकुशलानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमत्सेनानन्दनाथाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीसुधाकरानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीप्रह्लादानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीसनकानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीवसिष्ठानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीबोधानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमीनानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीगोरक्षानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीभोजदेवानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीप्रजापत्यानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमूलदेवानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीरन्तिदेवानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीविघ्नेशरानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीहुताशनानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीसमयानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीसन्तोषानन्दनाथाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीनिजगुरवानन्दनाथाय नमः।

पञ्चदशत्रिकोणे रष्मिदेवतानां विन्यासम्—त्रिकोणों में रष्मिदेवताओं का विन्यास करे—

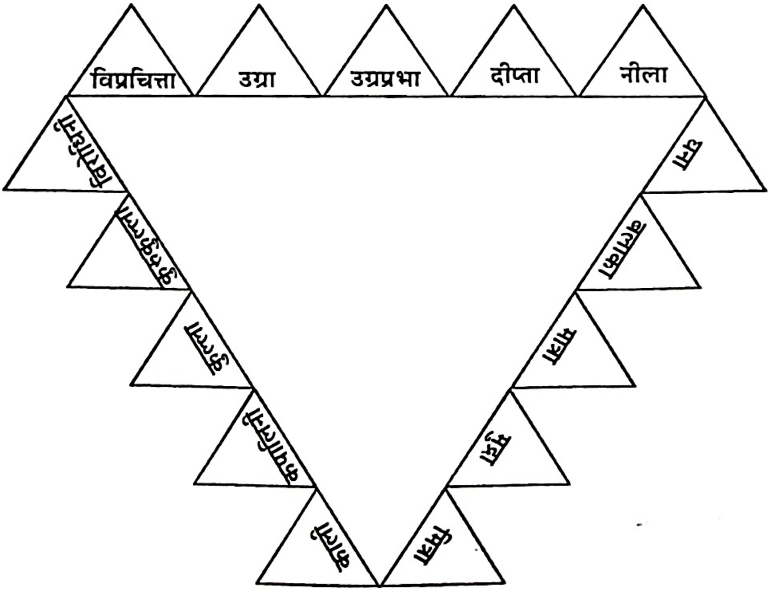
विप्रचित्ता
उग्रा
उग्रप्रभा
दीप्ता
नीला
घना
बलाका
मात्रा
मुद्रा
मिता
काली
कपालिनी
कुल्ला
कुरुकुल्ला
विरोधिनी

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काल्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कपालिन्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुल्लायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुरुकुल्लायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विरोधिन्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विप्रचित्तायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उग्रायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उग्रप्रभायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दीप्तायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नीलायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घनायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बलाकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मात्रायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मुद्रायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मित्रायै नमः।

अष्टपत्रोपरि अष्टशक्तिनां विन्यासम्—अष्टकोणों पर अष्टशक्तियों का विन्यास करे—

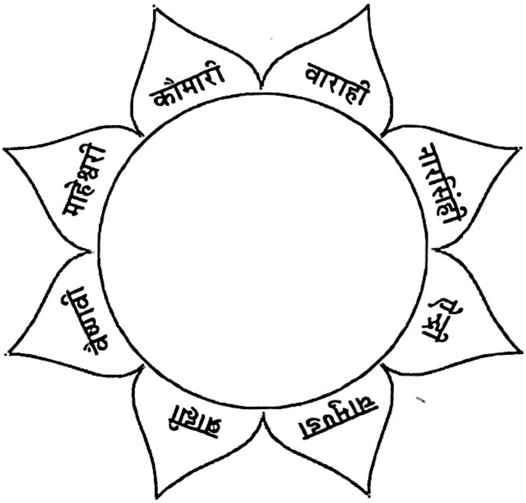

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्राह्म्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैष्णव्यै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं माहेश्वर्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कौमार्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अपराजितायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाराह्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नारसिंह्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐन्द्री नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चामुण्डायै नमः।

अन्तरष्टपत्रोपर्यष्टभैरवाणां विन्यासम्—अन्तः अष्टपत्रों पर भैरवों का विन्यास करे—

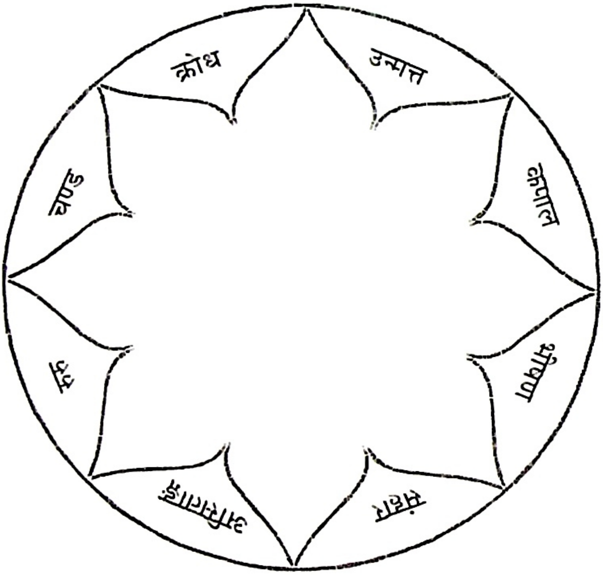

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं असिताङ्गभैरवाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रुरुभैरवाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चण्डभैरवाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रोधभैरवाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उन्मत्तभैरवाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कपालभैरवाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भीषणभैरवाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं संहारभैरवाय नमः।

षोडशपत्रोपरि योगिनीनां विन्यासम्—सोलहपात्रों पर योगिनियों का विन्यास करे—

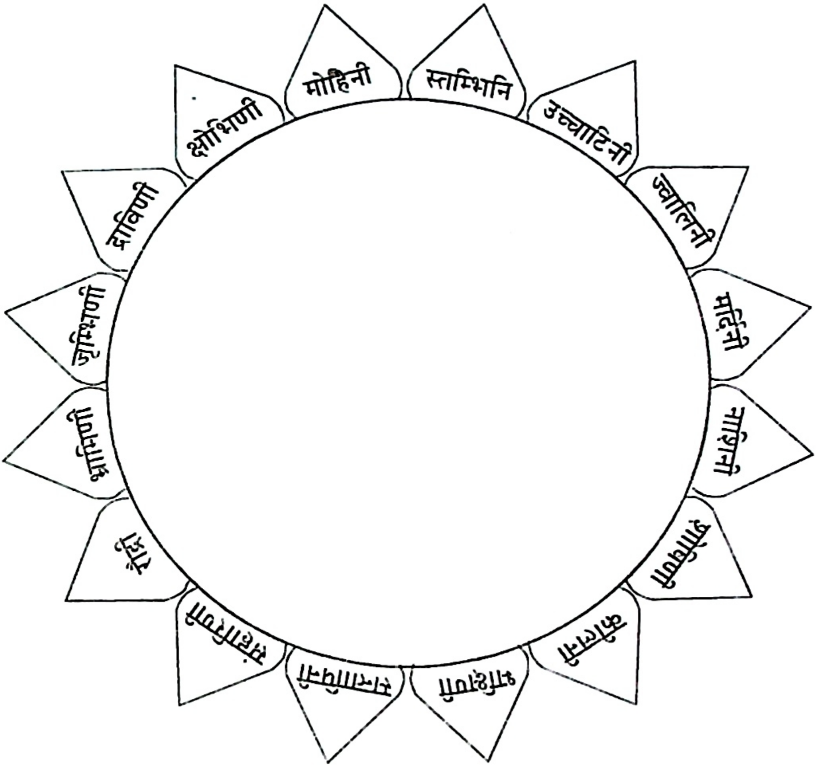
मोहिनी
स्ताम्भिनि
उच्चाटिनी
ज्वालिनी
मर्दिनी
नाशिनी
शोषिणी
कीलनी
भक्षिणी
सन्तापिनी
संहारिणी
रौद्री
भ्रामिणी
जृम्भिणी
द्राविणी
क्षोभिणी

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सन्तापिनीन्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं संहारिण्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रौद्र्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भ्रामिण्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जृम्भिण्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं द्राविण्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षोभिण्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मोहिन्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्तम्भिन्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उच्चाटिनीन्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्वालिन्यै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मर्दिन्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नाशिन्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शोषिण्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कीलन्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भक्षिण्यै नमः।

अष्ट योगिनियों का न्यास करने के बाद दिग्पालों का न्यास करे।

भूपुरे दशदिग्पालानां विन्यासम्—भूपुर में दिग्पालों का विन्यास करे—

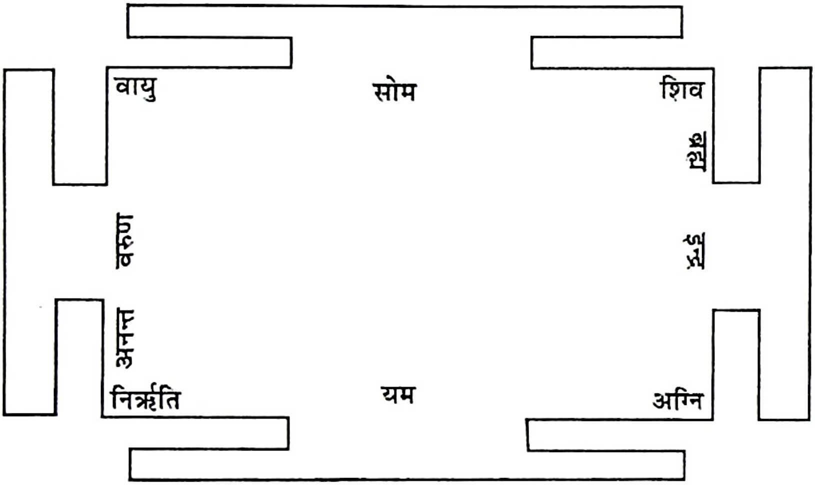

यन्त्र के मध्य भूपुर में पूर्व दिशा में इन्द्र का, भूपुर में अग्नि कोण में अग्नि देवता का, भूपुर में दक्षिण दिशा में यम का, भूपुर में नैर्ऋत्य कोण में निर्ऋति का, भूपुर में पश्चिम दिशा में वरुण का, भूपुर में वायव्य कोण में वायु देवता का, भूपुर में उत्तर दिशा में सोम का, भूपुर में ईशान कोण में ईश्वर का, भूपुर में ईशान और पूर्व दिशा के मध्य में ब्रह्मा का तथा भूपुर में नैर्ऋत्य कोण और पश्चिम दिशा के मध्य में अनन्त का पूजन करके उन्हीं स्थानों पर दिग्पालपत्नियों का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इन्द्राय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यमाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्ऋतये नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरुणाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वायवे नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सोमाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईशानाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनन्ताय नमः।

भूपुरे दशदिग्पालास्त्राणां विन्यासम्—भूपुर में दिग्पालास्त्रों का विन्यास करे—

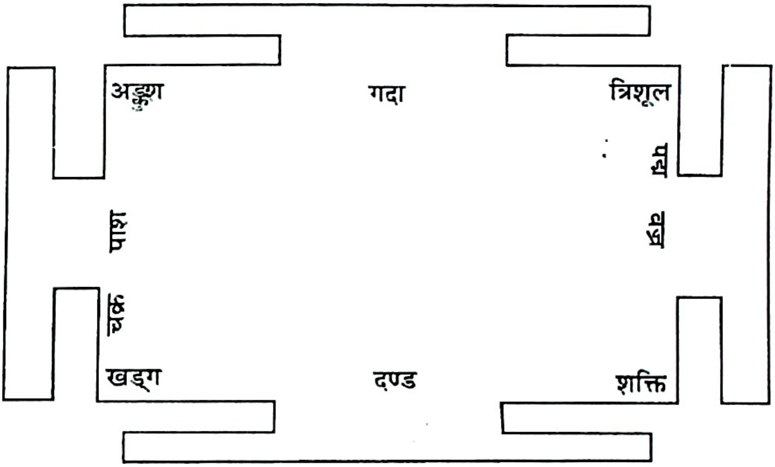

यन्त्र के मध्य भूपुर में पूर्व दिशा में इन्द्र के पास वज्र का, भूपुर में अग्नि कोण में अग्नि देवता के पास शक्ति का, भूपुर में दक्षिण दिशा में यम के पास दण्ड का, भूपुर में नैर्ऋत्य कोण में निर्ऋति के पास खड्ग का, भूपुर में पश्चिम दिशा में वरुण के पास पाश का, भूपुर में वायव्य कोण में वायु देवता के पास अङ्कुश का, भूपुर में उत्तर दिशा में सोम के पास गदा का, भूपुर में ईशान कोण में ईश्वर के पास त्रिशूल का, भूपुर में ईशान और पूर्व दिशा के मध्य में ब्रह्मा के पास पद्म का तथा भूपुर में नैर्ऋत्य कोण और पश्चिम दिशा के मध्य में अनन्त के पास चक्र का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वज्राय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शक्तिये नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दण्डय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खड्गाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाशाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अङ्कुशाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गदाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिशूलाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पद्माय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चक्राय नमः।

भूपूरे चतुःकोणे देव्यास्त्र विन्यासम्—भूपुर के चारों कोणों में देव्यास्त्रों का विन्यास करे—

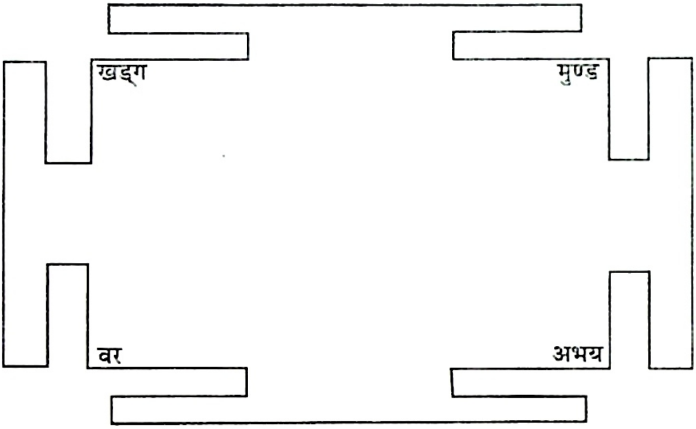
खड्ग
मुण्ड
वर
अभय

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खड्गाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मुण्डाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वराय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अभयाय नमः।

भूपूरे चतुःकोणे वटुकादि विन्यासम्—भूपुर के चारों कोणों में वटुकादि का विन्यास करे—

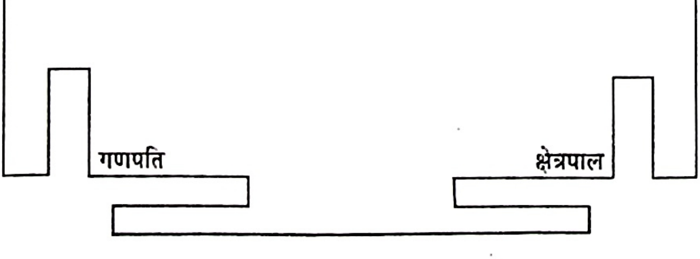
वटुक
योगिनी
गणपति
क्षेत्रपाल

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वटुकाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं योगिनीभ्यो नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गणपतये नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षेत्रपालाय नमः।

मध्ये—भूपुर के मध्य में राजराजेश्वर का विन्यास करे—

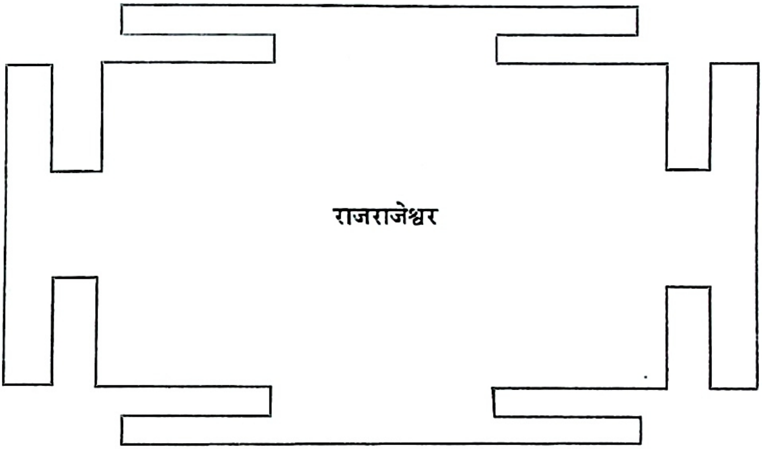

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीराजराजेश्वराय नमः।

मध्यविन्दौ इष्टदेवताप्राणप्रतिष्ठा—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः मम शरीरे कामशिवसहित पराम्बिका श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिराया प्राणा इह प्राणाः। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः मम शरीरे कामशिवसहित पराम्बिका श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिराया जीव इह स्थितः। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः मम शरीरे कामशिवसहित पराम्बिका श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिराया सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्र-जिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

उपर्युक्त मन्त्रों का तीन बार जप करते हुए अपने शरीर में श्रीकामशिव के सहित कामकलाकालिका देवता की प्रतिष्ठा करके अधोलिखित मन्त्र से गर्भाधानादि संस्कार करे।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ मम देहस्था कामशिवसहितकामकलाकालिकादेवतायाः गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

अपनी आत्मा को श्रीशिवसहित विपरीतप्रत्यङ्गिरादेवतास्वरूपी भावना करके मानसोपचार पूजन करे फिर मूल मन्त्र से तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान करके देवी के दक्षिण भाग में शिव का मानसोपचार पूजन कर तीन पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

शिव-पुष्पाञ्जलिः

ॐ हूँ क्षौँ याँ राँ लाँ वाँ आँ क्रौँ ह्रौँ कामशिवभैरवसर्वविघ्नान्नाशय नाशय ह्रौँ श्रीँ हूँ फट् स्वाहा।

मातृकान्यासः

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्यब्रह्माऋषिः, गायत्रीछन्दः, मातृका-सरस्वतीदेवता, हलोबीजानि, स्वराःशक्तयः, विन्दुःकीलकं, श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरा-देवतायाः प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

विनियोग करके जल को तष्टा में डालने के बाद प्राणायाम करे।

प्राणायामः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः। पूरक करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ नमः। कुम्भक करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ ळँ हँ नमः। रेचन करे।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गायत्री छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वतीदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विन्दुः कीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वतीदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

चक्रन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ नमः चतुर्दलकमलात्मकमूलाधारचक्रः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्यप्रदेश स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ नमः षड्दलकमलात्मकस्वाधिष्ठानचक्रः लिङ्गमूले न्यस्यामि। लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ नमः दशदलकमलात्मकमणिपुरचक्रः नाभौ न्यस्यामि। नाभिप्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ नमः द्वादशदलकमलात्मकअनाहतचक्रः हृदये न्यस्यामि। हृदयप्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ नमः षोडशदलकमलात्मकविशुद्धचक्रः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठप्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ क्षँ नमः द्विदलकमलात्मकआज्ञाचक्रः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्यप्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ नमः सहस्रदलकमलात्मकसहस्रारचक्रः कपाले न्यस्यामि। ऊर्ध्व तालु का स्पर्श करे।

अन्तर्मातृकान्यासः

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तसुखदोःयन्मध्यवक्षस्थलां ,
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रसकलामापीनस्तुङ्गस्तनीम् ।
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं व्याख्यां च हस्ताम्बुजे,
विभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

पचास लिपियों में विभक्त, समस्त सुख को प्रदान करनेवाली, जो वक्षस्थल (हृदय) में रहनेवाली, सभी चन्द्रमौली से निबद्ध होकर खिले हुए स्तनोंवाली, आनन्द रूपी अमृत का पान करनेवाली अक्षमाला धारण करनेवाली, हाथ में समस्त ज्ञान की व्याख्याओंवाली पुस्तक को धारण किये हुए, फैले हुए प्रकाश के समान, तीन नेत्रोंवाली, वाणी की देवता, शारदा के रूप में स्थित सरस्वती देवी की वन्दना करता हूँ।

चक्रस्थमातृकान्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः धूम्राभे षोडशदले कण्ठे विशुद्धचक्रे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ नमः द्वादशदले प्रवालसन्निभे हृदयोपर्यनाहते न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः नीलजीमूतसन्निभे दशदले नाभ्योरुपरिमणिपुरे न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ भँ मँ यँ रँ लँ नमः विद्युत्सन्निभे षड्दले लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि। लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ शँ षँ सँ लँ नमः सुवर्णाभे चतुर्दले मूलाधारे न्यस्यामि। गुह्यप्रदेश स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ क्षँ नमः द्विदले चन्द्राभे भ्रूमध्ये आज्ञायां न्यस्यामि। भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ नमः हिमसन्निभे अनन्तचन्द्राभे सहस्रदले कपाले सहस्रारचक्रे न्यस्यामि। शिर स्थित तालु स्पर्श करे।

सहस्रारे हिमसन्निभे सर्ववर्णविभूषिते।
अकखादित्रिरेखासु आलक्षत्रयभूषिते॥

सहस्रार चक्र में चन्द्ररूपी हिम(शीतल)पर्वत के सन्निधान में सभी वर्णों से विभूषित अकार, ककार, खकारादि तीन रेखाओं में विभक्त क्षकार पर्यन्त(अकार से लेकर क्षकार तक) भूषित(व्याप्त) है।

ॐ परबिन्दुभ्यो नमः सहस्रारे न्यस्यामि।

मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा से ब्रह्मरन्ध्र तक विन्दु-चिदात्मक ब्रह्मस्वरूपिणी कुण्डलिनी शक्ति को अपनी आत्मा महाकाल सदाशिव के साथ ध्यान करके उन दोनों के पादतल से टपकते हुए अमृतरस के द्वारा समस्तमातृकाओं का तर्पण करके तृप्त करने के बाद मानसोपचार पूजन करे।

आधारे लिङ्गनाभे प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे,
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश-दशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासन्ते बालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां,
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥

आधार (मूलाधार) के चार पत्रों में वल प्रत्याहार के रूप में, लिङ्ग (स्वाधिष्ठान) के छः पत्रों में बल प्रत्याहार के रूप में, नाभि (मणिपुर) के दश पत्रों में डफ प्रत्याहार के रूप में, हृदय (अनाहत) के द्वादश पत्रों में कठ प्रत्याहार के रूप में, तालुमूल (विशुद्ध)के षोडश पत्रों में समस्त स्वर रूप में, ललाट (आज्ञा) के दो पत्रों में हं, क्षं वर्ण रूप में, सहस्रार में समस्त वर्ण रूप में सभी चक्रकमलदलों की वर्णरूपी वर्णमातृकादेवी की आपको नमस्कार करते हैं, आपको नमस्कार है, आपको पुनः नमस्कार है, आपको बारम्बार नमस्कार है।

बहिर्मातृकान्यासः

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्रीछन्दः, मातृकासरस्वतीदेवता, हलोबीजानि, स्वराः शक्तयः, विन्दुः कीलकं, अखिलाप्तये श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवतायाः प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

मातृकान्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्व-दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधो-दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिण मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ की अंगुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँनमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अंगुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वाम बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

सृष्टि-स्थिति-संहारादि भेद से मातृका न्यास तीन प्रकार का होता है। सम्पूर्ण मातृकाओं को तीन मण्डलों में सृष्टि-स्थिति-संहारादि क्रम से विभक्त करके त्रिविध न्यास करना चाहिए। **स्थितिन्यासः केषांचित् मते हृदयादारभ्यते**। विपरीतक्रम में हृदय से ही स्थिति न्यास करना चाहिये। साधकों को क्रमशः सृष्टि-स्थिति-संहार भेद से तीन प्रकार से मातृका न्यास अवश्य करना चाहिये।

स्थित्यादौ तु गृहस्थानां सृष्ट्यादौ ब्रह्मचारिणाम्।
संहारादौ यतिनाञ्च मातृकान्यासमाचरेत्॥१॥

गृहस्थों को पहले स्थिति क्रम से, ब्रह्मचारियों को सृष्टि क्रम से तथा यतियों को संहार क्रम से मातृका न्यास करना चाहिये॥१॥

नाभावारभ्यते यस्तु हृदये च समाप्यते।
स्थितिन्यासः स विज्ञेयः दृष्टादृष्टफलप्रदः॥२॥

नाभि से आरम्भ करके हृदय पर परिसमाप्ति तक दृष्ट तथा अदृष्ट समस्त फल को देने वाला स्थिति न्यास कहा गया है॥२॥

विद्याकामे योनिबीजाद्यः श्रीकामे रमाद्यस्तथा।
वश्येकामाद्यः स्तम्भने स्थिरमाद्यादि विज्ञेयः॥३॥

विद्या की कामना से योनिबीज आगे करके, श्री की कामना से रमाबीज आगे करके तथा वशीकरण की कामना से कामबीज आगे करके, तथा स्तम्भन की कामना से क्रोधबीज आगे करके न्यास करना चाहिये, इस प्रकार सृष्टिस्थितिसंहार न्यास जानना चाहिये॥३॥

विद्या की कामना से **ऐँ**बीज लगाकर, श्री की कामना से **श्रीँ**बीज लगाकर, वशीकरण की कामना से **क्लीँ**बीज लगाकर, स्तम्भन कार्य में **ह्लीँ**बीज लगाकर अथवा सर्व कामना से त्रितारी **ऐँ ह्लीँ श्रीँ** युक्त करके न्यास करना चाहिये। ब्राह्मण भक्त अपने ब्रह्मत्व की सिद्धि के लिए अपने गुरु के द्वारा वताये हुए बीजों को लगाकर न्यास करे अथवा सम्प्रदाय के अनुसार बीजों का चयन करना चाहिए।

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्रीछन्दः, मातृकासरस्वतीदेवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, विन्दुः कीलकं, अखिलाप्तये श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवतायाः प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ध्यानम्

आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं,
वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयीं पुस्तकं ज्ञानगम्या।
सा वीणां वादयन्तीं स्वकरकरजपैः शास्त्रविज्ञानशब्दैः,
क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना॥१॥

श्वेत हंस(सत्य असत्य का विवेचन करने में समर्थ) पर आरूढ़ गगन में भ्रमण करती हुई, दक्षिण हाथ में अक्षसूत्र धारण की हुई, सुवर्ण के समान बायें हाथ में दिव्यज्ञान प्रदान करनेवाली पुस्तक धारण की हुई, वीणा बजाती हुई, शास्त्र विज्ञान की ज्ञानराशि को दिव्य रूप से जपती (वर्णन तथा विवेचन व उपदेश) हुई भारती हमारे ऊपर प्रसन्न हों।

सिन्दूरकान्तिमसिताभरणां त्रिनेत्रां विद्याक्षसूत्रमृगपोतवरं दधाना।
पार्श्वस्थितांभगवतीमपिकाञ्चनाङ्गीं ध्याये कराब्जधृतपुस्तकवर्णमालाम्॥२॥

सिन्दूर की कान्तिवाले आभूषणों से सुसज्जित, तीन नेत्रोंवाली, विद्यारूपी अक्षमाला धारण करनेवाली, वर प्रदान करनेवाली, सुवर्ण के सदृश अङ्गोंवाली, हाथ में पुस्तक और वर्णमालाओं को धारण करनेवाली सरस्वती देवी का ध्यान करता हूँ।

प्राणायामः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः। पूरक करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ नमः। कुम्भक करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ ळँ हँ नमः। रेचन करे।

श्वास को फेफड़ों में भरने को पूरक, श्वास को भरकर रोकने को कुम्भक तथा श्वास को फेफड़े से निकालने की क्रिया को रेचन कहते हैं।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गायत्रीछन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वतीदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रौं विन्दुः कीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वतीदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अंङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रों और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ अः अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

अनुलोमसंहारादिक्रमन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने नमः हृदयादि वामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्व दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधो दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिण मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिणहाथ की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिणहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जंघा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

अनुलोमसृष्ट्यादिक्रमन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्व दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधो दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिण मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वाम बाहु मूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर की अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर की अङ्गुल्यग्र तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

अनुलोमस्थित्यादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिण मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वामहाथ की अङ्गुलि मूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ की अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर की अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्शकरे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर की अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिणपार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वामपार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने नमः दक्षांशे न्यस्यामि। दक्षांश स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने नमः वामांशे न्यस्यामि। वामांश स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिणनेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वामनेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्व दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधो दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

अनुलोम मातृका क्रम न्यास के बाद विलोम मातृका क्रम न्यास करे।

विलोमसंहारन्यासः

ॐ अक्षस्रजं हरिणपोतमुदग्रटंकं,
विद्याकरैरविरतं दधतीं त्रिनेत्राम्।
अर्द्धेन्दुमौलिभरणामरविन्दवासां ,
वर्णेश्वरीं प्रणमतस्तनभारनमिता॥

अकार से क्षकार तक वर्णों से निःसृत्, हरित वर्ण के पोत सदृश उग्र खड्ग हाथों में सदैव धारण की हुई, विद्या(ज्ञान) धारण करनेवाली, तीन नेत्रोंवाली, अर्द्धचन्द्र को आभूषण के समान धारण की हुई, चन्द्रमा के समान धवल वस्त्र धारण करनेवाली, स्तन के भार से खिली हुई, प्रसन्न मुद्राओंवाली, वर्णों की अधिश्वरी देवी को प्रणाम करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर की अङ्गुल्यग्र तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने नमः दक्षांशे न्यस्यामि। दक्षांश स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वामपार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर की अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिणजानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ की अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिण मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधो दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्व दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वामनेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

विलोमसृष्टिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधो दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्व दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लॄँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर की अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वाम बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिण मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर की अङ्गुल्यग्र तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

विलोमस्थितिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वामपार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर की अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर की अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ की अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वाम बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ की अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिण मणिवन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधो दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्व दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर की अङ्गुल्यग्र तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

श्रीमातृकाऋषिन्यासः

सौन्दर्य-माधुर्य-सुधा-समुद्र-विनिद्र-पद्मासन-सन्निविष्टाम्।
चञ्चद्-विपञ्चीकलनादमुग्धां शुद्धां दधेऽन्तर्विसरत्सुगन्धाम्॥१॥

सौन्दर्य और माधुर्य के अमृत समुद्र में इन्द्रियों(पादादि) को पद्मासन में सन्निविष्ट करके, सदैव चञ्चलायमान कलकल नाद से मुग्ध शुद्ध अन्त:करण में सुगन्धि को फैलाती हुई॥१॥

श्रुतिस्मृतिस्ततपदपद्मगन्धिप्रभामयं वाङ्मयमस्तपारम्।
यत्कोणकोणाभिनिविष्टमिष्टं तामम्बिकां सर्वसितां श्रिताः स्मः॥२॥

श्रुतिस्मृतिरूप में जिनके चरणकमल से नि:सृत् प्रभा के समान सम्पूर्ण वाङ्मय में व्याप्त तथा जो सम्पूर्ण संसार के कोने कोने में व्याप्त है उन अम्बिका भगवती का अपने अभीष्ट की पूर्ति के लिए आश्रय लेता हूँ॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ आँ अर्जुन्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ ईँ भार्गवऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ ऊँ अग्निवेश्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ गौतमऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ ऐँ लौहित्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ औँ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अं अः माण्डव्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ मौद्गायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ गँ घँ ङँ अजऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ योज्ञायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ गोपाल्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ नषकऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ अजऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ काश्यपऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ शुनकऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ सौमनस्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ कारणऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ णँ माण्डव्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ थँ दँ धँ सांकृत्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ पँ फँ कात्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ दाक्षायणऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ व्याघ्रपादऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ शाण्डिल्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ रँ कौण्डिल्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ दाण्डायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ ज्ञातायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ लाट्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ सँ हँ जयऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ क्षँ माण्डव्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

श्रीमातृकाछन्दादिन्यासः

न कान्दिशीकं रवितोऽतिवेलं तं कौशिकं संस्पृहये निशातम्।
सावित्रसारस्वतधामपश्यं शस्यं तपोब्राह्मणमाद्रिये तम्॥१॥

मध्य दिवस के सूर्य के अतिशय प्रकाश में (गायत्री का) तथा मध्य निशा में कौशिकी का ध्यान करनेवाले ब्राहणों के तप से आद्रिभूत सिद्धविद्या श्रीशारदा के तेज को अपने शरीर तथा नेत्रों में प्राप्त करने के लिए॥१॥

श्रीशारदां प्रार्थितसिद्धविद्यां श्रीशारदाम्भोज सगोत्रनेत्राम्।
श्रीशारदाम्भोज निविज्यमानां श्रीशारदाङ्कानुजनि भज़ामि॥२॥

अभीष्ट सिद्धविद्या स्वरूपिणी सरस्वती देवी के तेज को प्राप्त करने के लिए, श्रीशारदा को अपने अङ्गों(हृदय) में धारण के लिए भजन करता हूँ।।२।।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ आँ मध्याछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ ईँ प्रतिष्ठाछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ ऊँ संप्रतिष्ठा छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ ऐँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ औँ वृहतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अं अः दण्डकछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ गँ घँ ङँ त्रिष्टुब्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ जगतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ अतिजगतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ शक्वरीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ शक्वरीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ अतिशक्वरीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ अष्टिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ अत्यष्टिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ धृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ णँ अतिधृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ थँ दँ धँ कृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ पँ फँ अतिकृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ आकृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ विकृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ संकृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ रँ अतिकृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ उत्कृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ दण्डकछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ दण्डकछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ सँ हँ दण्डकछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ क्षँ दण्डकछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

श्रीमातृकाबीजवर्णस्वरूपवाहनन्यासः

चक्राङ्गराजाङ्कितपादपद्मां पद्मालयाऽभ्यर्थितसुस्मितश्रीः।
स्मितश्रिया वर्षितसर्वकामा वामाविधेः पूरयतां प्रियं नः॥१॥

चरण कमल में चक्र के चिह्नों से चिह्नित, पद्मालय में निवास करनेवाली श्रीदेवी, हमारे ऊपर समस्त ऐश्वर्यों की वर्षा करने के लिए, वाममार्ग की विधि से प्रसन्न होनेवाली महादेवी हमारे ऊपर प्रसन्न हों॥१॥

बाहो रमायाः किल कौशिकोऽसौ हंसो भवत्याः प्रथितो विविक्तः।
जगद् विधातुर्महिषिं त्वमस्मान् विधेहि सभ्यान्नहि मातरिभ्यान्॥२॥

अपने बाहु कोशों में हंस धारण करके स्थित हो कर शोभा पाती हुई, जगद् का विधान करनेवाली, हे महामहिषी महादेवी माता शारदा! हमारे ऊपर प्रसन्न होकर हमें प्राप्त हों तथा वर प्रदान करें॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ मृत्युबीजाय स्वर्णवर्णाष्टभुजीचतुर्मुखीकूर्मवाहनायै नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आकर्षणबीजाय श्वेतवर्णकमलासनपाशहस्तहस्तिवाहनायै नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ पुष्टिबीजाय पीतवर्णपरशुधारिणीकच्छपवाहनायै नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ आकर्षणबीजाय श्वेतवर्णमौक्तिकयुक्तहंसवाहनायै नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ बलदायकबीजाय कृष्णवर्णगदाधारिणीकाकवाहनायै नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षकर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ उच्चाटनबीजाय कृष्णवर्णगदाधारिणीकाकवाहनायै नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ स्तम्भनबीजाय रक्तवर्णपाशधारिणीउष्ट्रवाहनायै नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षनासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ मोहनबीजाय रक्तवर्णपाशधारिणीउष्ट्रवाहनायै नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वामनासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लृँ विद्वेषणबीजाय पुष्पवर्णवज्रधारिणीकमलवाहनायै नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षकपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लॄँ उच्चाटनबीजाय पुष्पवर्णवज्रधारिणीकमलवाहनायै नमः वामकपोले न्यस्यामि। वामकपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ वशीकरणबीजाय श्यामवर्णहारभूषणधारिणीचक्रवाकवाहनायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ पुरुषवशीकरणबीजाय नवपुष्पवर्णशूलवज्रधारिणीद्विपदवाहनायै नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ लोकवशीकरणबीजाय पीतवर्णसर्वगतवृषभवाहनायै नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ राजवशीकरणबीजाय तप्तकांचनवर्णपाशधारिणीव्याघ्रवाहनायै नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ पशुवशीकरणबीजाय कुंकुमवर्णरक्तभूषणरिपुनाशकगजवाहनायै नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः मृत्युनाशकबीजाय कुंकुमवर्णद्विभुजखरवाहनायै नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ विषबीजाय नवकुंकुमवर्णशूलवज्रधारिणीगजवाहनायै नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ स्तम्भनबीजाय कृष्णवर्णपाशतोमरधारिणीमेषवाहनायै नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिणकूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गणपतिबीजायारुण वर्णपाशाङ्कुशधारिणीसर्पवाहनायै नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिणमणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ स्तम्भनबीजाय कृष्णवर्णगदाधारिणीउष्ट्रवाहनायै नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ आसुरीबीजाय कृष्णवर्णगदाधारिणीकाकवाहनायै नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण हस्ताङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ चन्द्रबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीकाकवाहनायै नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वाम बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ मृत्युनाशकबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणी काकवाहनायै नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ ब्रह्मबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीकाकवाहनायै नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ चन्द्रबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीकाकवाहनायै नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हस्त अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ मोहनबीजाय कृष्णवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीकाकवाहनायै नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हस्त अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ क्षोभणबीजाय कृष्णवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीक्रौञ्चवाहनायै नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ चन्द्रघातबीजाय उज्वलवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीगजेन्द्रवाहनायै नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ गरुणबीजाय उज्वलवर्णअष्टभुजाकमलधारिणीकमलवाहनायै नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ कुबेरबीजाय ज्वलत् कान्तिवर्णदशबाहुअजवाहनायै नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षपदाङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ असुरबीजाय ज्वलत् कान्तिवर्णविस्तृतदेहबाहुव्याघ्रवाहनायै नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षपादाङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ गुरुशक्तिबीजाय कुंकुमवर्णचतुर्बाहुअलंकृतवृषवाहनायै नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ यमबीजाय पीतवर्ण चतुर्बाहुमहिषवाहनायै नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ दुर्गाबीजाय रक्तवर्णषड्भुजमहिषवाहनायै नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ सूर्यबीजाय रक्तवर्णचतुर्बाहुसिंहवाहनायै नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वामपादाङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ ज्वरनाशकबीजाय रक्तवर्णद्विभुजकाकवाहनायै नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामपादाङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ वरुणबीजाय रक्तवर्णविंशभुजकाकवाहनायै नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्वस्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ विष्णुबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजसिंहवाहनायै नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ ब्रह्मबीजाय अरुणवर्णद्विभुजहंसवाहनायै नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ भद्रकालीबीजाय कृष्णवर्णत्रिहस्तत्रिमुखव्याघ्रवाहनायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ रुद्रबीजाय रक्तवर्णचतुर्मुखविषयुक्तसंवर्तव्याघ्रवाहनायै नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने वायुबीजाय धूम्रवर्णचतुर्मुखमृगवाहनायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने अग्निबीजाय रक्तवर्णचतुर्मुखमेषवाहनायै नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने इन्द्रबीजाय केशरवर्णचतुर्मुखगजवाहनायै नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने वरुणबीजाय श्वेतवर्णद्विबाहुनक्रवाहनायै नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने लक्ष्मीबीजाय हेमवर्णद्विबाहुकमलवाहनायै नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने सूर्यबीजाय कृष्णवर्णद्विभुजहंसवाहनायै नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने वाणीबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजहंसवाहनायै नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ आत्मने आकाशबीजाय श्वेतवर्णत्रिबाहुहंसवाहनायै नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ परमात्मने पृथ्वीबीजाय केशरवर्णचतुर्भुजगजवाहनायै नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने शक्तिबीजाय मणिप्रभावर्णदशबाहुहंसवाहनायै नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

योगिनीन्यासः

कण्ठस्थाने विशुद्धौ नृपदलकमले श्वेतवर्णां त्रिनेत्रां,
हस्तैः खट्वाङ्गखड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्मसन्धारयन्तीम्।
वक्त्रेणैकेन युक्तां पशुजनभयदां पायसान्नैकसक्तां,
त्वक्स्थां वन्देऽमृताद्यैः परिवृतवपुषं शाकिनीं वीरवन्द्याम्॥

कण्ठस्थान के विशुद्धचक्र में नृपदल कमल श्वेत वर्णवाली, तीन नेत्रोंवाली, हाथ में खड्ग तथा महाचर्म धारण की हुई, तीन शिखाओं वाली, एक मुखवाली, पशुजनों को भय प्रदान करनेवाली, अमृत पान करने में आसक्त, अमृतमयी, अमृत शरीरवाली, वीर साधकों द्वारा वन्दित शाकिनी देवी का ध्यान करता हूँ।

ध्यान कर मानसोपचार विधि से पूजन करके न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शाँ शीँ शूँ ह स क्ष म ल व र यूँ शाकिन्यै नमः विशुद्धचक्रे कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ में विशुद्धचक्र पर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अं अः मां रक्ष रक्ष त्वगात्मने नमः। शिर से पैर तक सम्पूर्ण व्यापक स्पर्श करे।

कण्ठस्थित षोडशदल कमलकर्णिका में शाकिनी शक्ति का ध्यान करके वामावर्त परिक्रमा क्रम से शाकिनी की आवरण शक्तियों का न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अमृतायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आकर्षिण्यै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ इन्द्राण्यै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ ईशान्यै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ उमायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ ऊर्ध्वकेश्यै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ ऋद्धिदायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ ॠकारायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऌँ ऌकारायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ ॡकारायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ एकपदायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ ऐश्वर्यात्मिकायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ ओङ्कारायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ औषध्यै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अम्बिकायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः अक्षरायै नमः। विशुद्धचक्र में ध्यान पूर्वक कण्ठ स्पर्श करे।

शाकिनी शक्ति के बाद काकिनी शक्ति का ध्यान करे—

हृत्पद्मे भानुपत्रे द्विवदनलसितां दंष्ट्रिणीं श्यामवर्णाम्,
अक्षं कपालं डमरुमपि भुजैर्धारयन्तीं त्रिनेत्राम्।
रक्तस्थां कालरात्रीप्रभृतिपरिवृतां स्निग्धभक्तैकसक्तां,
श्रीमद्वीरेन्द्रवन्द्यामभिमतफलदां काकिणीं भावयामः॥

हृदय स्थान में द्वादश पत्रोंवाले अनाहत चक्र में दो शरीरवाली, श्याम वर्णवाली, हाथों में अक्षमाला, कपाल, डमरु, धारण की हुई, रक्त में स्थित, कालरात्री के समान, स्निग्ध, भक्ति से प्रसन्न होनेवाली, अमित फल प्रदान करनेवाली, वीर साधकों द्वारा पूजित काकिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काँ कीँ कूँ ह स क्ष म ल व र यूँ काकिण्यै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ मां रक्ष रक्ष असृगात्मने नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

हृदयस्थित द्वादशदल कमलकर्णिका में काकिनी शक्ति का ध्यान करके वामावर्त परिक्रमा क्रम से काकिनी की आवरण शक्तियों का न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कालरात्र्यै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ खण्डितायै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गायत्र्यै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ घण्टाकर्षिण्यै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ ङार्णायै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ चण्डायै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ छायायै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ जयायै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ झङ्कारिण्यै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ ज्ञानरूपायै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ टङ्कहस्तायै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ ठङ्कारिण्यै नमः। अनाहतचक्र में ध्यान पूर्वक हृदय स्पर्श करे।

काकिनी शक्ति के बाद राकिनी शक्ति का ध्यान करे—

दिक्पत्रे नाभिपद्मे त्रिवदनलसितां दंष्ट्रिणी रक्तवर्णां,
शक्तिं दम्भोलिदण्डावराभयमपि भुजैर्धारयन्तीं महोग्राम्।

डामर्याद्यैः परीतां पशुजनभयदां मांसधात्वेकनिष्ठां,
गौडान्नासक्तचित्तां सकलसुखकरीं राकिनीं भावयामः॥

नाभि स्थान में दश पत्रोंवाले मणिपुर चक्र में रक्तवदन, (सत्त्वरजतमात्मक) त्रिवदनलसित, दंष्ट्रिणी, हाथों में अलिपात्र, दण्ड, वर और अभय धारण की हुई, महाउग्र शक्ति, डामरादि विद्याओंवाली, पशुजन को भय प्रदान करनेवाली, मांस और धातु में निष्ठ, गौड रूप से चित्त में आसक्त, समस्त सुख को प्रदान करनेवाली राकिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राँ रीँ रूँ ह स क्ष म ल व र यूँ राकिन्यै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ मां रक्ष रक्ष मांसात्मने नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

नाभि प्रदेशस्थित दशदल कमलकर्णिका में राकिनी शक्ति का ध्यान करके वामावर्त परिक्रमा क्रम से राकिनी की आवरण शक्तियों का न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ डामर्यै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ ढङ्कारिण्यै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ णार्णायै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ तामस्यै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ स्थाण्व्यै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ दाक्षायण्यै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ धात्र्यै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नार्यै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ पार्वत्यै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ फट्कारिण्यै नमः। मणिपूरचक्र में ध्यान पूर्वक नाभि स्पर्श करे।

राकिनी शक्ति के बाद लाकिनी शक्ति का ध्यान करे—

स्वाधिष्ठानाख्यपद्मे रसदललसिते वेदवक्त्रां त्रिनेत्रां,
हस्ताब्जैर्धारयन्तीं त्रिशिखगुणकपालाङ्कुशानात्तगर्वाम्।
मेदोधातुप्रतिष्ठितामलिमुदितां बन्धिनीमुख्ययुक्तां,
पीतां दध्योदनेष्टामभिमतफलदां लाकिनीं भावयामः॥

स्वाधिष्ठान नाम से कहे जानेवाले, छः पत्रों वाले पद्मचक्र पर आसीन, तीन नेत्रोंवाली, चार मुखोंवाली, हाथों में त्रिशिख, गुण, कपाल, अङ्कुश अतिगर्व से धारण की हुई, मेदा

और धातु में प्रतिष्ठित, अलि से प्रसन्न होनेवाली मुख्य रूप से बन्धिनी से युक्त, पीत वर्णवाली, भक्तों को अभिष्ट फल प्रदान करनेवाली लाकिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लाँ लीँ लूँ ह स क्ष म ल व र यूँ लाकिन्यै नमः। स्वाधिष्ठानचक्र में ध्यान पूर्वक लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ भँ मँ यँ रँ लँ मां रक्ष रक्ष मेदात्मने नमः। स्वाधिष्ठानचक्र में ध्यान पूर्वक लिङ्गमूल स्पर्श करे।

लिंगमूलप्रदेशस्थित षड्दल कमलकर्णिका में लाकिनी शक्ति का ध्यान करके वामावर्त परिक्रमा क्रम से लाकिनी की आवरण शक्तियों का न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ बन्धिन्यै नमः। स्वाधिष्ठानचक्र में ध्यान पूर्वक लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ भद्रकाल्यै नमः। स्वाधिष्ठानचक्र में ध्यान पूर्वक लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ महामायायै नमः। स्वाधिष्ठानचक्र में ध्यान पूर्वक लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ यशस्विन्यै नमः। स्वाधिष्ठानचक्र में ध्यान पूर्वक लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ रक्तायै नमः। स्वाधिष्ठानचक्र में ध्यान पूर्वक लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ लम्बोष्ठ्यै नमः। स्वाधिष्ठानचक्र में ध्यान पूर्वक लिङ्गमूल स्पर्श करे।

लाकिनी शक्ति के बाद डाकिनी शक्ति का ध्यान करे—

मूलाधारस्य पत्रे श्रुतिदललसिते पञ्चवक्त्रां त्रिनेत्रां,
धूम्राभामस्थिसंस्थां सृणिमपि कमलं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम्।
बिभ्राणां बाहुदण्डैः सुललितवरदां पूर्वशक्त्यावृतां तां,
मुद्गान्नासक्तचित्तां मधुमदमुदितां डाकिनीं भावयामः॥

चार पत्तोंवाले पद्म मूलाधारचक्र के ऊपर पाँच मुखोंवाली, तीन नेत्रोंवाली, धूम्र आभावाली, सृणि, कमल, पुस्तक और ज्ञानमुद्रा को धारण की हुई, हाथों में दण्ड धारण की हुई, शक्ति से आवृत, आनन्द में आसक्त चित्तवाली, अमृत से प्रसन्न होनेवाली डाकिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डाँ डीँ डूँ ह स क्ष म ल व र यूँ डाकिन्यै नमः। मूलाधारचक्र में ध्यान पूर्वक गुह्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ शँ षँ सँ लँ मां रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मने नमः। मूलाधारचक्र में ध्यान पूर्वक गुह्य स्पर्श करे।

योनिप्रदेशस्थित चतुर्दल कमलकर्णिका में डाकिनी शक्ति का ध्यान करके वामावर्त परिक्रमा क्रम से डाकिनी की आवरण शक्तियों का न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वरदायै नमः। मूलाधारचक्र में ध्यान पूर्वक गुह्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ श्रियै नमः। मूलाधारचक्र में ध्यान पूर्वक गुह्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ षडायै नमः। मूलाधारचक्र में ध्यान पूर्वक गुह्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सरस्वत्यै नमः। मूलाधारचक्र में ध्यान पूर्वक गुह्य स्पर्श करे।

मध्यकर्णिकायाम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ लम्बोदरायै नमः। मूलाधार की मध्य कर्णिका में ध्यान पूर्वक स्पर्श करे।

डाकिनी शक्ति के बाद हाकिनी शक्ति का ध्यान करे—

भ्रूमध्ये बिन्दुपद्मे दलयुग्मकलिते शुक्लवर्णां कराब्जैः,
विभ्राणां ज्ञानमुद्रां डमरुकमलामक्षमालां कपालाम्।
षड्वक्त्रां मज्जसंस्थां त्रिनयनलसितां हंसवत्यादियुक्तां,
हारिद्रांन्नैकसक्तां सकलसुखकरीं हाकिनीं भावयामः॥

भ्रू के मध्य में दो पात्रोंवाले, श्वेत तेज से आवृत, ज्ञान, डमरु, कमल, अक्षमाला, कपाल धारण की हुई, छः मुखोंवाली, तीन नेत्रोंवाली, हंसवती आदि सेविकाओं (हंसादि वृत्ति=ज्ञान) से युक्त हरिद्रा के समान तेजवाली, समस्त सुखों को प्रदान करनेवाली हाकिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हाँ हीँ हूँ ह स क्ष म ल व र यूँ हाकिन्यै नमः। आज्ञाचक्र में ध्यान पूर्वक गुह्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ क्षँ मां रक्ष रक्ष मज्जात्मने नमः। आज्ञाचक्र में ध्यान पूर्वक गुह्य स्पर्श करे।

भ्रूमध्यस्थित द्विदल कमलकर्णिका में हाकिनी शक्ति का ध्यान करके वामावर्त परिक्रमा क्रम से हाकिनी की आवरण शक्तियों का न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ हंसवत्यै नमः। आज्ञाचक्र में ध्यान पूर्वक भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षमावत्यै नमः। आज्ञाचक्र में ध्यान पूर्वक भ्रूमध्य स्पर्श करे।

हाकिनी शक्ति के बाद साकिनी शक्ति का ध्यान करे—

मुण्डव्योमस्थपद्मे दशशतदलके कर्णिकाचन्द्रसंस्थां,
रेतोनिष्ठां समस्तायुधकलितकरां सर्वतो वक्त्रपद्माम्।
आदिक्षान्तार्णशक्तिप्रकरपरिवृतां सर्ववर्णां भवानीं,
सर्वान्नासक्तचित्तां परशिवरसिकां साकिनीं भावयामः॥

मुण्ड में व्योमस्थ सहस्र दलपद्म की कर्णिका में स्थित, चन्द्रमण्डल में तेज से युक्त समस्त आयुधों से सुसज्जित सर्वत्र मुखोंवाली, अकार से क्षकार पर्यन्त समस्त शक्तियों से आवृत, समस्त वर्णोवाली, सभी के चित्त में आसक्तिवाली, परशिव के रस का पान करने वाली साकिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं साँ सीँ सूँ ह स क्ष म ल व र यूँ साकिन्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ लँ हँ क्षँ मां रक्ष रक्ष शुक्रात्मने नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलों में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदल कमल की कर्णिका में साकिनी शक्ति का ध्यान करके दिंशत्यावृत्ति वामावर्त आरोहावरोह क्रम से परिक्रमा पूर्वक समस्तावरण शक्तियों का न्यास करे।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं अँ अमृतायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं आँ आकर्षिण्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं इँ इन्द्राण्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ईँ ईशान्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं उँ उमायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ऊँ ऊर्ध्वकेश्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ऋँ ऋद्धिदायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ॠँ ॠकारायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लृँ लृकारायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लॄँ लॄकारायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ एकपदायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ ऐश्वर्यात्मिकायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ ओङ्कारायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ औषध्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अम्बिकायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः अक्षरायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कालरात्र्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ खण्डितायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गायत्र्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ घण्टाकर्षिण्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ ङार्णायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ चण्डायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ छायायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ जयायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ झङ्कारिण्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ ज्ञानरूपायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ टङ्कहस्तायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ ठङ्कारिण्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ डामर्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ ढङ्कारिण्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ णार्णायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ तामस्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ स्थाण्व्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ दाक्षायण्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ धात्र्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नार्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ पार्वत्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ फट्कारिण्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ बन्धिन्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ भद्रकाल्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ महामायायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ यशस्विन्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ रक्तायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ लम्बोष्ठ्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वरदायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ श्रियै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ षडायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सरस्वत्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ लेम्बोदरायै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ हंसवत्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षमावत्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रस्थित सहस्रदलकमल में ध्यान पूर्वक कपाल स्पर्श करे।

सिद्धपीठन्यासः

सितासितारुणश्यामहरित्पीतान्यनुक्रमात् ।
पुनः क्रमेण देवेशि पञ्चाशत्पीठसञ्चयः॥

श्वेतकृष्णअरुणश्यामहरितपीतादि वर्णों के क्रमशः पचास पीठों का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ कामरूपाय नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ वाराणस्यै नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ नेपालाय नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ पौण्ड्रवर्धनाय नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ पुरस्थिकाश्मीराय नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ कान्यकुब्जाय नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ पूर्णशैलाय नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ अर्बुदाचलाय नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लृँ आम्रातकेश्वराय नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ एकाम्राय नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ त्रिस्रोतसे नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ कामकोटये नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ कैलाशाय नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ भृगुनगराय नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ केदाराय नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः चन्द्रपुष्करिण्यै नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ श्रीपुराय नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ ओङ्काराय नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ जालन्धराय नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिण मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ मालवाय नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ कुलान्तकाय नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ देवीकोटाय नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वाम बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ गोकर्णाय नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ मारुतेश्वराय नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ अट्टहासाय नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अंगुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ विरजायै नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अंगुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ राजगेहाय नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ महापद्माय नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ कोल्हापुराय नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ एलापुराय नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ कालेश्वराय नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ जयन्तिकायै नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ उज्जयिन्यै नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ चित्रायै नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ क्षीरिकायै नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ हस्तिनापुराय नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ उड्डीशाय नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ प्रयागाय नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ षष्ठीशाय नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ मायापुर्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ जलेशाय नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने मलयाय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने श्रीशैलाय नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने मेरवे नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने गिरिवराय नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने महेन्द्राय नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने वामनाय नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने हिरण्यपुराय नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पादाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ आत्मने महालक्ष्मीपुराय नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पादाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ परमात्मने ओड्याणाय नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर की अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने छायाच्छत्राय नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

आसनन्यासः

सद्भक्तकल्पलतिके भुवनैकवन्द्ये,
भूतेशहृत्कमलमग्नकुचाग्रभृङ्गे ।
कारुण्यपूर्णनयने किमुपेक्षसे मां,
सिद्धिं प्रदेहि गिरिजे! क्षुधिताय मह्यम्॥

सद्भक्तों के लिए कल्पलता रूप से समस्त भुवन में वन्द्य, भूतेश के हृदय में सदैव रहनेवाली, करुणा पूर्ण नयनोंवाली हमारी उपेक्षा क्यों कर रही है; सिद्धि की कामना रूपी भूख से पीडित हमें सिद्धि की भिक्षा प्रदान करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शवासनाय नमः पादतलयोः न्यस्यामि। आसन(गुह्य) एवं दोनों पाद तल का स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं देव्यात्मकासनाय नमः पादयोः न्यस्यामि। पैर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चक्रात्मकासनाय नमः जान्वोः न्यस्यामि। जानु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मन्त्रात्मकासनाय नमः ऊरुमूले न्यस्यामि। उरुमूल स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वसिद्धासनाय नमः मूलाधारे न्यस्यामि। मूलाधार स्थान गुह्य प्रदेश स्पर्श करे।

न्यासों की अनिवार्यता—न्यास शब्द का अर्थ होता है स्थापना, शरीर के तत्तद् स्थानों में मातृकादि तथा देवादि का न्यास करने से तत्तद् स्थानों में उनकी स्थापना होती है जिससे उपासक का शरीर देवतुल्य हो जाता है नियम भी है **देवोभुत्वा देवं यजेत्**। इस नियम में न्यास करने से साधक में देवत्व आता है इसलिए न्यास अत्यन्त अनिवार्य है। शब्द ब्रह्म की शक्ति है मातृकायें, इन मातृकाओं से शब्दों की सृष्टि होती है, प्रत्येक शब्द में मातृकायें ही मुख्य कारण है और वे ही सामर्थ्य प्रदान करती है अत: साधक को अनिवार्य रूप से मातृका न्यास करना चाहिये।

मातृकादिन्यासं परिपूर्णम्

⁂

।।श्रीः।।

श्रीपात्रविशेषार्घ्य(शङ्ख)पात्रासादनम्

अपने आगे बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्रात्मक मण्डल मत्स्यमुद्रा के द्वारा निर्माण करके श्रीपात्र तथा विशेषार्घ्य के लिए पात्राधार के रूप में रख कर आधार पूजन करे, आधार पूजन के बाद सुवर्ण, रजत, ताम्र, नारिकेल या किसी भी धातु का श्रीपात्र (कलश) प्रक्षालित कर आधार पर स्थापित करे, श्रीपात्र तथा विशेषार्घ्यपात्रों का संस्कार करके मूल मन्त्र से पूजन कर कर्पूर, गन्धादि वासित जलपूरित कलश गन्धपुष्पाक्षत से अलंकृत करके मण्डल पर स्थापित करके अधोलिखित प्रार्थना तथा आवाहन करे।

वर्धनीकलशस्थापनम्

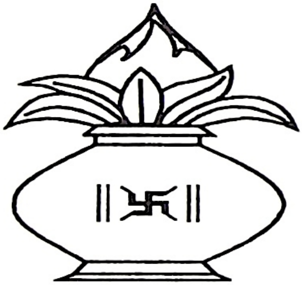

वर्धनीकलशाधारचक्रम्

अपने आगे बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रात्मक मण्डल मत्स्यमुद्रा के द्वारा निर्माण करके श्रीपात्र तथा विशेषार्घ्य के लिए पात्राधार के रूप में रख कर आधार पूजन करे, आधार पूजन के बाद सुवर्ण, रजत, ताम्र, नारिकेल या किसी भी धातु का श्रीपात्र (कलश) प्रक्षालित कर आधार पर स्थापित करे, श्रीपात्र तथा विशेषार्घ्य शंख पात्रों का विधि पूर्वक संस्कार करके, मूलमन्त्र से पूजन कर कर्पूर, गन्धादिवासित जलपूरितकलश गन्धपुष्पाक्षतादि से अलंकृत करके मण्डल पर स्थापित कर अधोलिखित प्रार्थना तथा आवाहन कर कलश का विविधोपचार से पूजन कर उसमें समस्त तीर्थो, नद, नदियों और समुद्रों का आवाहन कर पूजन करने के बाद प्रार्थना करे।

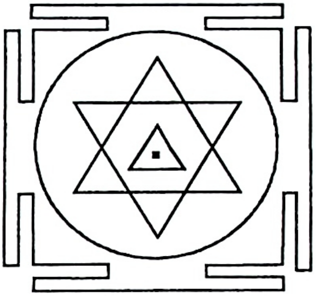

भूमिस्पर्श—**ॐ महीद्यौःपृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्॥ पिपृतानोभरीमभिः॥**

सप्तधान्य विखेरना—**ॐ ओषधयःसमवदन्तसोमेनसहराज्ञा॥ यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि॥**

कलशस्थापन—**ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्विन्दवः॥ पुनरूर्ज्जानिवर्त स्वसानःसहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः॥**

कलश में जल भरना—**ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।**

कलश में गन्ध डाले—**ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥**

कलश में सर्वौषधी डाले—**ॐ याओषधीःपूर्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा॥ मनैनु बब्भ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च॥**

कलश में दूर्वा डाले—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्प्परि॥ एवानो दूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥**

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अश्वत्त्थेवोनिषदनंपर्ण्णेवोव्वसतिष्कृता॥ गोभाजऽ इत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्॥**

कलश में कुश डाले—**ॐ पवित्रेस्त्थोव्वैष्ण्व्यौसवितुर्व्वःप्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः॥**

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्च-पुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिःकविरग्निर्हव्व्यान्न्यक्रमीत्॥ दधद्रत्नानि दाशुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ व्वासोअग्ग्रे व्विश्श्वरूपꣳ संव्व्ययस्वविभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

वरुण ध्यान आवाहन पञ्चोपचार पूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। इस जल में वरुण अपने आयुध, शक्ति तथा परिवार के सहित आकर अवस्थित हों।

ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कला।
सङ्गृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित होता है, उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षी (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकायें स्थित हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तमहाद्वीप, अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं।३॥

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

पृथ्वी जिसमें विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ हैं, समस्त तीर्थ स्थित हैं वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सहिताः तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ, नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्तदुरितों की क्षयकारक हों तथा समस्त पापों को नष्ट करनेवाली हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग स्वरूप होकर कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरितों को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें तथा हमारे यजनकार्य को पूर्णता प्रदान करें॥८॥

प्रतिष्ठा—हाथ सें स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोॅजू॒तिर्ज्जुषता॒माज्ज्यस्य॒बृह॒स्प्पतिर्य्य॒ज्ञमि॒मन्तनो॒त्त्वरिष्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द धातु॥ व्विश्श्वेंदे॒वासऽइ॒हमादयन्ता॒मो३ँम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, हमारे लिए इससे इतर कुछ नहीं है।

वर्धनीकलशपूजनम्

ध्यानम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।**

आसनम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।**

पाद्यम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।**

अर्घ्यम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।**

आचमनम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।**

स्नानीयम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयंजलं समर्पयामि।**

पुनराचमनीयम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।**

पयःस्नानम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।**

दधिस्नानम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।**

घृतस्नानम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।**

मधुस्नानम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।**

शर्करास्नानम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।**

पञ्चामृतस्नानम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृत-स्नानं समर्पयामि।**

शुद्धोदकस्नानम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।**

वस्त्रनिवेदनम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।**

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

उपवस्त्रनिवेदनम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।**

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।**

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।**

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।**

अक्षतसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।**

पुष्पमालासमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।**

दूर्वासमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।**

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।**

सिन्दूरसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।**

धूपसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।**

दीपसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।**

नैवेद्यसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।**

करोद्वर्तनसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।**

ताम्बूलादिसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूगीफलमेलालवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।**

फलादिसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भव-फलानि समर्पयामि।**

दक्षिणासमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।**

नीराजनसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।**

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।**

परिक्रमासमर्पणम्—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।**

विशेषार्घ्यसमर्पणम्

रक्ष रक्ष जलाध्यक्ष रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं पश्चिमाधीश! प्राणीनां जीवनं परम्॥१॥

हे जलाध्यक्ष! हमारी सभी प्रकार से रक्षा करें, हे जीवनदायक! हमारे जीवन की रक्षा करें, हे पश्चिमदिशा के स्वामि! प्राणियों को जीवन प्रदान करनेवाले! हमारी सदैव रक्षा करें॥१॥

विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतम्।
विशेषार्घ्यं प्रदाष्यामि सर्वदा रक्षणं कुरु॥२॥

हे वरुणाद्यावाहित देवता! चन्दन, रजनी पुष्प तथा विविध द्रव्यों से संयुक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ, हमारी सर्वदा रक्षा कीजिये॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

कलशप्रार्थना

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

देवताओं और दानवों के बीच महोदधि समुद्र था, उसी में समुद्रमन्थन से कुम्भ उत्पन्न हुआ, जिसे विष्णुस्वयं धारण किये।।१।।

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठ्ताः।।२।।

हे वरुण! तुम्हारे जल में सभी तीर्थ स्थित है, सभी देवताओं का वास तुम्हारे में है, तुम्हीं सभी भूतों में प्रतिष्ठित हो तथा सभी प्राणों में प्रतिष्ठित हो।।२।।

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः।।३।।

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, रुद्र, वसु, विश्वेदेव तथा पितर हो।।३।।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!।।४।।

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनायें फलवती होती हैं, हे जलोद्भव कुम्भ! (जल से उत्पन्न शरीर) तुम्हारी कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ।।४।।

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा।।५।।

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करनेवाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सान्निध्य प्रदान करे।।५।।

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।६।।

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दरश्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दर मङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले, हे जलाधिनाथ! आपकों बार बार नमस्कार है।।६।।

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव।।७।।

पाश को हाथ में धारण करने वाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करनेवालों के नायक, जबतक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती, तब तक हमें सान्निध्य प्रदान करें।।७।।

प्रार्थनासमर्पणम्—हाथ में जल लेकर प्रार्थना समर्पण करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से जल लेकर पूजन समर्पित करे—

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावहित देवता: प्रीयन्तां न मम॥

जल से अधोलिखित मन्त्र से पूजनोपयुक्त समस्त सामग्री तथा अपने को अभिसिंचित करे।

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
य: स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:॥

ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु॥ ॐ केशव: पुनातु॥ ॐ नारायण: पुनातु॥

किसी भी उपासना में इष्ट पूजन के लिए श्रीपात्र के लिए कलश, अर्घ्य पात्र, विशेषार्घ्य पात्र, आचमनीयादि पात्रों का संस्कार अत्यन्त आवश्यक होता है, बिना संस्कार के तन्त्र प्रक्रिया में कोई भी पूजन नहीं किया जाता है। संस्कार करने से ही पदार्थों में शुद्धता आती है, पात्रों के संस्कार को ही पात्रासादन कहते हैं अत: किसी भी पूजन में पात्रासादन अवश्य करना चाहिए जो तन्त्र में तो विशेष रूप से अनिवार्य ही है।

वर्द्धनीकलशस्थापनं परिपूर्णम्

❀

पात्रसंस्कारम्

ॐ फट्। श्रीपात्र प्रक्षालित करे (श्रीपात्र के लिए कलश रखे)।

ॐ श्रीविपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीपात्रं स्थापयामि। श्रीपात्र स्थापन के बाद मध्य में मूल मन्त्र से देवी का पूजन कर पुनः विलोममातृका का दश बार जप करे।

ॐ क्षँ हँ लँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ ॡँ ऌँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ नमः।

पात्र में दूध, जल, मधु, संविदादि रख कर जल से परिपूर्ण करे।

ॐ यँ नमः। मन्त्र से दोषों का संशोषण करे।

ॐ रँ नमः। मन्त्र से दोषों का दाहन करे।

ॐ वँ नमः। मन्त्र से सम्प्लावन करे।

ॐ नमः। मार्जन कर आधारपात्र पर स्थापित कर कलश का संस्कार करे।

जल में विन्दुत्रिकोणषट्कोणअष्टदलअन्तःअष्टदलबहिरष्टदलचतुरस्त्रभूपुरात्मकचक्र भोजपत्र पर निर्मित करके कलश में डाल कर विन्दु में मूल मन्त्र से देवी का पूजन करके आवरण यन्त्र में परिवार के देवताओं का पूजन करे।

विन्दु में

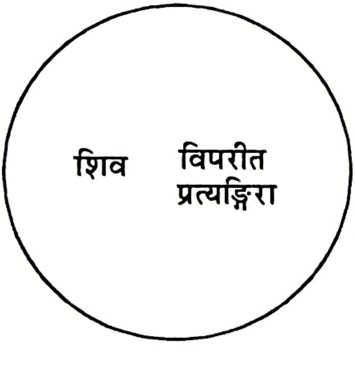

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीँ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हौँ सदाशिवायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

त्रिकोणे

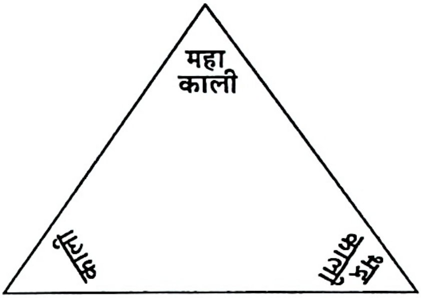

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ॐ क्रीँ कालिकायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं क्लीँ कामकालिकायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ह्रूँ भद्रकालिकायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

षट्कोणे

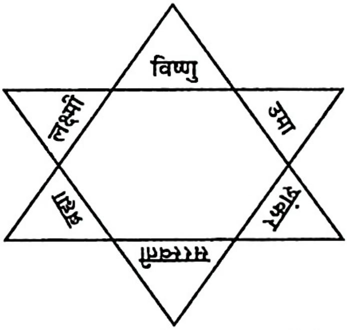

षट् कोणों में वामावर्त परिक्रमा क्रम से सपत्नी त्रिदेवों की स्थापना करे।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं सरस्वत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं लक्ष्म्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विष्णवे नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं उमायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामिं।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं शिवाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

चतुरस्रमण्डले

ब्रह्मादि का पूजन कर भूपुर के चारों कोनों और बीच में पीठों का पूजन करे।

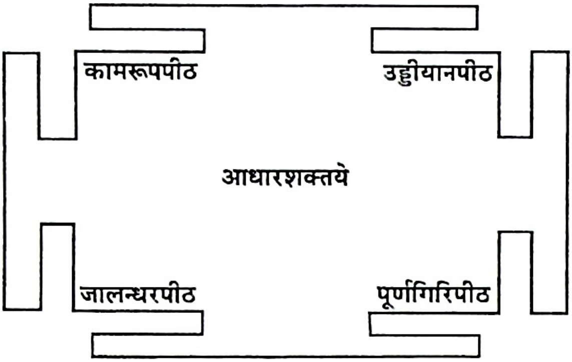
कामरूपपीठ
उड्डीयानपीठ
आधारशक्तये
जालन्धरपीठ
पूर्णगिरिपीठ

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जालन्धरपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कामरूपपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उड्डीयानपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पूर्णगिरिपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आधारशक्तये नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्निमण्डलपूजनम्

पीठों का पूजन करने के बाद क्रमशः तीनों मण्डलों का पूजन करे।

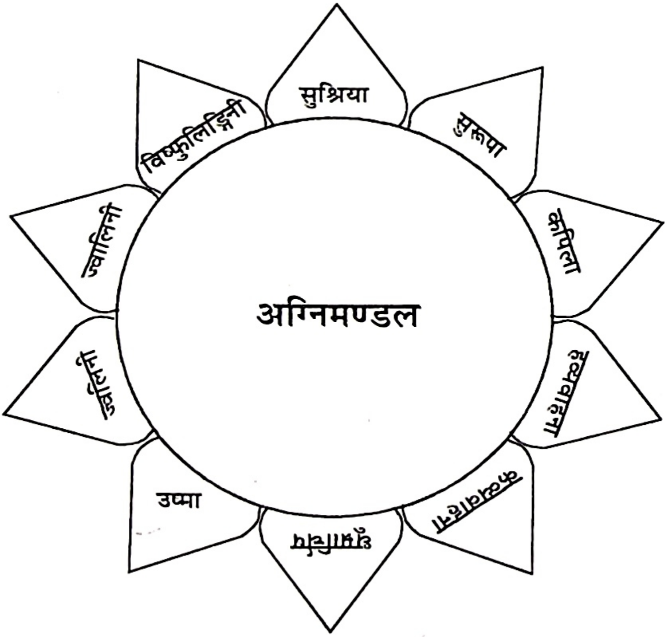
सुश्रिया
सुरूपा
कपिला
हव्यवाहना
कव्यवाहना
धूम्रार्चिष
उष्मा
ज्वलिनी
ज्वालिनी
विष्फुलिङ्गिनी
अग्निमण्डल

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाँ वीँ वूँ ह स क्ष म ल व र यूँ धर्मदशकलात्मने रँ वह्निमण्डलाय विपरीतप्रत्यङ्गिराऽर्घ्यपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्निकलानांपूजनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ धूम्रार्चिषे नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ उष्मायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ ज्वलिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ ज्वालिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ विष्फुलिङ्गिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ सुश्रियै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सुरूपायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ कपिलायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ हव्यवाहनायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ कव्यवाहनायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अर्कमण्डलपूजनम्

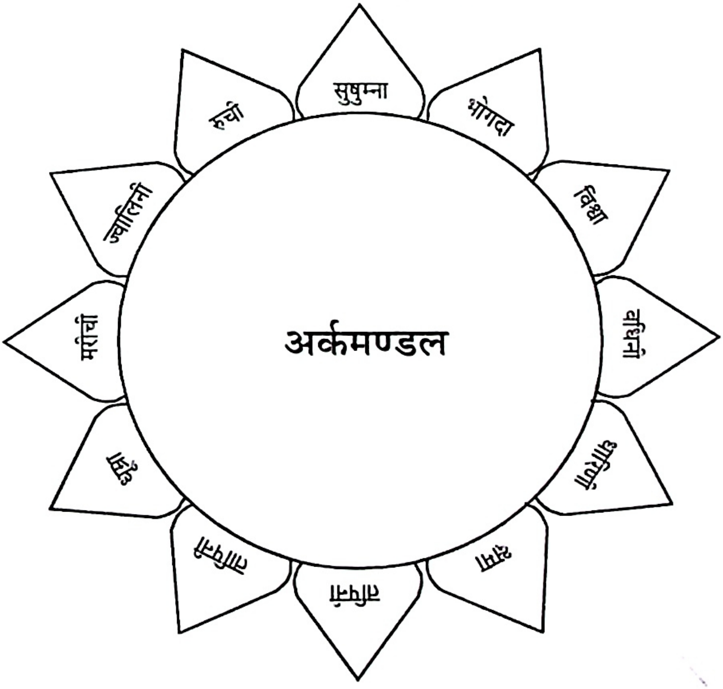

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हाँ हीँ हूँ ह स क्ष म ल व र यूँ वसुप्रदत्तद्वादशकलात्मने मँ अर्कमण्डलाय विपरीतप्रत्यङ्गिराऽर्घ्यपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अर्ककलानांपूजनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ भँ तपिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ बँ तापिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ फँ धूम्रायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ पँ मरीच्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ धँ रुच्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ दँ सुषुम्नायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ थँ भोगदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ तँ विश्वायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ णँ बधिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ ढँ धारिण्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ डँ क्षमायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोममण्डलपूजनम्

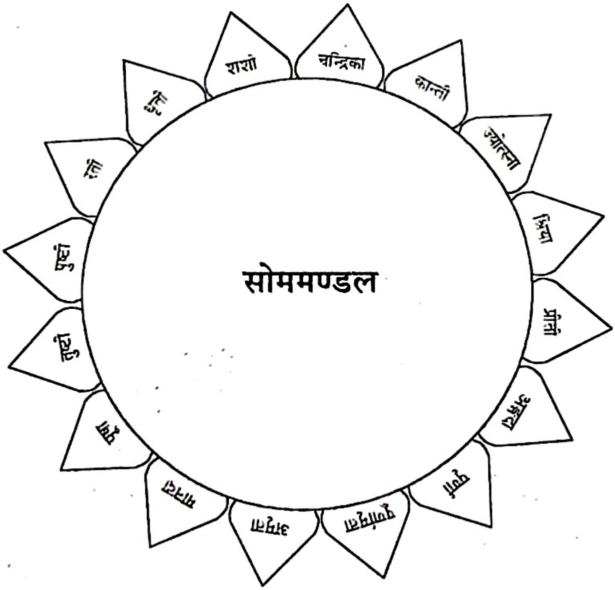
सोममण्डल
शशी
चन्द्रिका
कान्ती
ज्योत्स्ना
श्रिया
प्रीती
अङ्गदा
पूर्णा
पूर्णामृता
अमृता
मानदा
पूषा
तुष्टी
पुष्टी
रती
धृती

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साँ सीँ सू स ह क्ष म ल व र यूँ कामप्रदामृतादिषोडशकलात्मने वँ सोममण्डलाय श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिराऽर्घ्यपात्राय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोमकलानांपूजनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अमृतायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ मानदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ पूषायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ तुष्ट्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ पुष्ट्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ रत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ धृत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ शशिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऌँ चन्द्रिकायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ कान्त्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ ज्योत्स्नायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ श्रियै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ प्रीत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ अङ्गदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ पूर्णायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः पूर्णामृतायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पात्र में कर्पूरादि सुगन्धि छोड़ कर त्रिकोण की तीनों रेखाओं पर क्रमशः पूजन करे।

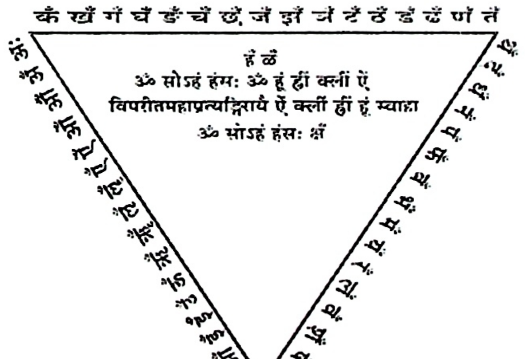
कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ
हँ ळँ
ॐ सोऽहं हंसः ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं
विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा
ॐ सोऽहं हंसः क्षँ

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हँ लँ ॐ सोऽहं हंसः हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्फेँ क्रौँ हूँ क्रीँ क्लीँ स्वाहा ॐ सोऽहं हंसः क्षँ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अङ्कुश मुद्रा के द्वारा अन्तरिक्ष से गङ्गादि नदियों का आवाहन करे।

अङ्कुशमुद्रालक्षणम्

अनामातर्जनीं अङ्गुष्ठेन बद्धयेतत्तथा।
हस्तं ऋजुं कृत्वा उपरि च प्रसारयेत् पुनः॥
मध्यमाञ्च ऋजुं कृत्वा तर्जनीञ्च प्रताडयेत्।
अङ्कुशमुद्राविख्याता विज्ञेया तन्त्रसूरिभिः॥

दक्षिण हाथ के अङ्गुष्ठ से अनामिका तथा तर्जनी को पकड़ करके मध्याङ्गुलि को सीधा ऊपर करके तर्जनी को मोड़ कर मध्यमा के मध्यपर्व में लगा कर ऊपर अन्तरिक्ष की तरफ करने से अङ्कुश मुद्रा बनती है ऐसा तान्त्रिकों ने कहा है।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु॥१॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी आदि दिव्यनदियाँ इस जल में आकर समाहित होकर हमें सान्निध्य प्रदान करे॥१॥

ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करे स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव! तीर्थं देहि दिवाकर॥२॥

ब्रह्माण्ड के उदर में स्थित तीर्थों में जहाँ तक सूर्य की किरणें स्पर्श करती है वहाँ तक के तीर्थों का सान्निध्य हे दिवाकर! प्रदान करे॥२॥

वौषट्। मन्त्र से पुष्प छोड़े।

वषट्। मन्त्र से गालिनी मुद्रा का प्रदर्शन करे।

गालिनी मुद्रालक्षणम्

कनिष्ठिकाङ्गुष्ठकौ युक्तौ करयोरितरेतरम्।
तर्जनी मध्यमानामा संहता भुग्नवर्जिताः॥

दोनों हाथ की कनिष्ठिका और अङ्गुष्ठ दोनों को आपस में मिला कर तथा उलटा करके तर्जनी और मध्यमा को आपस में मिलाने से गालिनी मुद्रा बनती है।

ॐ वँ। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करें, इष्टदेवता का ध्यान-पूजन कर, सकलीकरण करे तथा शङ्खमुद्रा प्रदर्शित करे।

धेनुमुद्रालक्षणम्

अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठानामिका पुनः।
तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता॥

दोनों हाथों की अनामिका एवं कनिष्ठिकाओं को एक दूसरे से मिला कर तर्जनी और मध्यमा को एक दूसरे से मिलाने से धेनुमुद्रा बनती है, इसकी आकृति गाय के थनों जैसी होती है, इसका प्रयोग अमृतीकरण में होता है।

सकलीकरणमुद्रालक्षणम्

देवाङ्गेषु षडङ्गानां न्यासः स्यात्सकलीकृतिः।

देवता के अङ्गों में षड्ङ्ग न्यास करने को ही सकलीकरण मुद्रा कहते है, इसका प्रयोग सकलीकरण के लिए किया जाता है।

शङ्खमुद्रालक्षणम्

वाममुष्ट्यन्तरेऽङ्गुष्ठां निवेश्य सरलाङ्गुलीः।
दक्षिणस्य करस्यैव वामाङ्गुष्ठेन संस्पृशेत्॥
शङ्खमुद्रेयमाख्याता मन्त्रविद्भिरुत्तमा।

वायें हाथ की अङ्गुलियों से अङ्गुष्ठ को पकड़ कर दाहिने हाथ की समस्त अङ्गुलियों को सीधा करके वायें हाथ से मिलाने से जो आकृति बनती है तन्त्रज्ञ विद्वान उसे शङ्खमुद्रा कहते है।

भूपुर के चारो दिशाओं में तथा मध्य में रत्नों का पूजन करे।

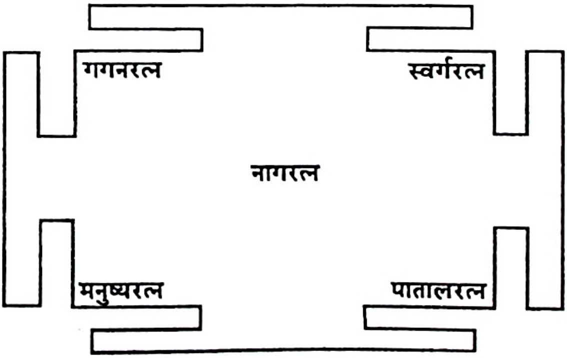

ॐ ग्लूँ गगनरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ स्लूँ स्वर्गरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ प्लूँ पातालरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ म्लूँ मनुष्यरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ न्लूँ नागरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

रत्नानां पूजनानन्तरम्—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा। अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय साँ जँ जँ अमृतेश्वर्यै स्वाहा।

मन्त्र का तीन बार जप करके त्र्यम्बक मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

सुगन्धि पुष्टि का वर्धन करता है अतः उर्वारुक(फुट=ककड़ी नाम का विशेष फल जो पकने पर फट जाता है) के समान हमें मृत्यु से (मोक्ष)मोचन के लिए, उस सुगन्धि से त्र्यम्बक का यजन करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शाँ शीँ शूँ शैँ शौँ शः शुक्रशापविमोचितायै स्वाहा। मन्त्र का दश बार जप करके ध्यान करे।

अखण्डैकवरानन्दकरे परसुधात्मनि।
स्मराच्छन्द स्फुरणामत्र निधेह्यमृतरूपिणी॥१॥

पर मण्डलान्तर्गत आत्मामृत सागर में अखण्डानन्द प्रकाश की किरणावलियों के रूप में कामेच्छा स्फुरणामृत रूप से स्थित॥१॥

सूर्यकोटिप्रतिकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम्॥२॥

सूर्य के समान प्रकाशमान, चन्द्रमा के समान सुशीतल, अट्ठारह भुजाओं वाले, तीन नेत्र वाले पञ्चवक्त्र सदाशिव का ध्यान करता हूँ॥२॥

अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मो परिस्थितम्।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम्॥३॥

अमृत के समुद्र के मध्य में स्थित, ब्रह्मकमल के ऊपर सभी प्रकार के आभूषणों से सुशोभित, वृषभासन पर आरूढ़ नीलकण्ठ सदाशिव का ध्यान करता हूँ॥३॥

कपालखट्वाङ्गधरः घण्टाडमरुंवादिनम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुशलधारिणम्॥४॥

हाथ में कपाल, खट्वा, पाश, अंकुश, गदा, मुशल धारण किये हुए घण्टा तथा डमरु का वादन करने वाले सदाशिव का ध्यान करता हूँ।।४।।

खड्ग-खेटक-पट्टीशं मुद्गरच्छूल-कुन्तिलम्।
विचित्र-खेटकं-मुण्डं वरदाऽभय-मालिनम्।।५।।

सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त, हाथ में खड्ग, खेटक, पट्टीश, मुद्गर, शूल, कुन्तल, मुण्ड, वर तथा अभय से शोभायमान।।५।।

लोहितं देवदेवेशं भावये साधकोत्तमः।
भावयेच्च सुरादेवीं चन्द्रकोट्युतप्रभम्।।६।।

लोहितवर्ण वाले देवताओं के ईश्वर, परमदेव सदाशिव तथा चन्द्रमा के समान प्रकाशमान सुरादेवी (अमृतस्वरूपिणी देवी) के साथ उत्तम साधक ध्यान करते हैं।।६।।

हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्।
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्।।७।।

हिमखण्ड तथा चन्द्रमा के सदृश धवल, पञ्चवक्त्र, तीन नेत्रोंवाले, अट्ठारह भुजाओंवाले, सभी प्रकार का आनन्द प्रदान करने वाले सदाशिव का ध्यान करता हूँ।।७।।

ॐ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवाय फट्।

ॐ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरव्यै वौषट्।

ॐ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवानन्दभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

श्रीपात्रस्थित द्रव्य को बाँयें हाथ के अंगुठे तथा मध्यमाङ्गुलि से वाहर निकाल कर उस द्रव्य पर आनन्दभैरव, आनन्दभैरवी मिथुन का ध्यान पूजन तर्पण करे।

ॐ क्लीँ कुलस्थामृताकारेसिद्धिज्ञानकरे परे।
अमृतत्त्वं निधेह्यत्र वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि।।१।।

ॐ ऐँ (वाग्रूपिणी, ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी ज्ञानशक्ति), **ह्रीँ** (इच्छारूपिणी, इच्छा की अधिष्ठात्री देवी इच्छाशक्ति) **श्रीँ** (श्रीरूपिणी, ऐश्वर्यों की अधिष्ठात्री देवी, श्रीशक्ति) **क्लीँ** (कामरूपिणी, कामनाओं की अधिष्ठात्री कामशक्ति) कुलस्थ(कुल=शक्ति में ही रहने वाली) अमृतस्वरूपिणी, सिद्धि तथा ज्ञान प्रदान करनेवाली, परमण्डलाधिष्ठात्री क्लीस्वरूपिणी हमारे लिए अमृत का प्रवाह करें।।१।।

सौं तद्रूपैकरसाख्यं च दत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि।
भूत्वा कुलामृताकारं मयि विस्फुरणं कुरु।।२।।

ब्रह्म स्वरूपिणी सौं हमें ब्रह्मत्त्व प्रदान कर कुलामृताकार होकर हमारे में अमृतत्व को स्फुरित करो।।२।।

ॐ हंसः तर्पयामि।

अमृतेशी का तर्पण करके मूल मन्त्र से सात बार जप करते हुए कवचमुद्रा से ढककर, अस्त्रमुद्रा से संरक्षित कर मत्स्यमुद्रा से उसके ऊपर ढके तथा योनि एवं धेनु मुद्रा प्रदर्शित करे।

कवचमुद्रालक्षणम्

सव्यहस्तकृतामुष्ठिः दीर्घाऽधोमुखतर्जनी।
अवगुण्ठनमुद्रेयमभितो भ्रामिता भवेत्॥

दाहिने हाथ से बायें हाथ को दीर्घ कर बायें हाथ के अधोमुख तर्जनी को पकड़ कर मुट्ठी बना कर घुमाने से कवचमुद्रा बनती है, जिससे अवगुण्ठन होता है।

अस्त्रमुद्रालक्षणम्

दक्षिणहस्तोपरिकृत्वा हस्तञ्च प्रसारयेत्।
अङ्गुष्ठेन कनिष्ठापरस्परं सन्निवेशयेत्॥
अनामातर्जनीमध्या ऋजुंकृत्वा प्रसारयेत्।
देव्यास्त्रमुद्रा विख्याता देवानां मोदकारिणी॥

दक्षिण हाथ को ऊपर की तरफ करके हाथ को फैला कर अङ्गुष्ठ से कनिष्ठिका को आबद्ध कर अनामिका तर्जनी और मध्यमा अङ्गुलियों को ऊपर की तरफ सीधा पसारने से देवी की अस्त्र मुद्रा बनती है जो देवताओं को प्रसन्नता प्रदान करती है जिसका रक्षा करने में प्रयोग होता है।

मत्स्यमुद्रालक्षणम्

वामहस्तोपरि संस्थाप्य दक्षहस्तं प्रसारयेत्।
सञ्चालयेत् वामाङ्गुष्ठं तथैव वामतर्जनी॥

वामहस्त के ऊपर दक्षिणहस्त को प्रसार कर रखे तथा वामहस्त का अङ्गुष्ठ व दक्षिणहस्त की कनिष्ठिका को फैला कर चालन(हिलाने) करने से मत्स्य जैसी आकृति बनती है।

योनिमुद्रालक्षणम्

मिथः कनिष्ठिके बद्धा तर्जनीभ्यामनामिके।
अनामिकोर्ध्वसंश्लिष्ट दीर्घमध्यमयोरधः॥
अङ्गुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता॥

दोनों कनिष्ठिकाओं को सटा कर उसके ऊपर तर्जनी और मध्यमा को एक दूसरे में आबद्ध करके उसके ऊपर अनामिका को सीधा करके मध्य में रखे तथा उसके ऊपर दोनों अङ्गुष्ठ को मिला कर लगाये इससे योनिमुद्रा बन जायेगी, शक्ति साधना में इस मुद्रा का सर्वत्र प्रयोग होता है।

धेनुमुद्रालक्षणम्

अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठानामिका पुनः।
तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता॥

दोनों हाथों की अनामिका एवं कनिष्ठिकाओं को एक दूसरे से मिला कर, तर्जनी और मध्यमा को एक दूसरे से मिलाने से धेनुमुद्रा बनती है, इसकी आकृति गाय के थनों जैसी होती है, इसका प्रयोग अमृतीकरण में होता है।

श्रीपात्र स्थापन के बाद अर्घ्यपात्र स्थापित कर श्रीपात्र से स्वल्प जल अर्घ्यपात्र में छोड़े।

पाद्यपात्रस्थापनम्

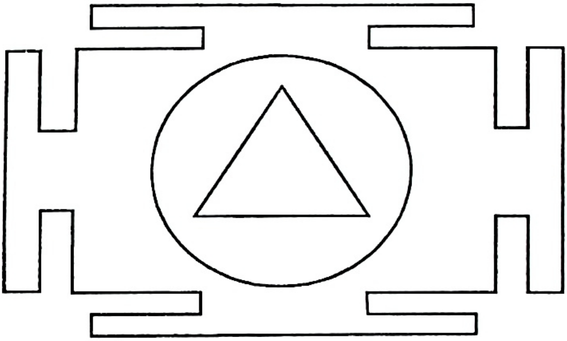

विशेषार्घ्यपात्र के बायें पाद्यपात्र के लिए त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मक आधार रख कर पूजन करे।

ॐ विपरीतप्रत्यङ्गिरापाद्यपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ नमः। जलपूर्ण करे।

ॐ वषट्। पुष्प छोड़े।

ॐ नमः। गन्ध, उशीर, रोचना, श्यामाक, विष्णुकान्ता, पुष्प, दूर्वा डालकर अस्त्रमन्त्र से आठबार अभिमन्त्रितकर पुनः मूलमन्त्र से अभिमन्त्रितकर धेनुमुद्रा प्रदर्शित करना चाहिए।

आचमनीयपात्रस्थापनम्

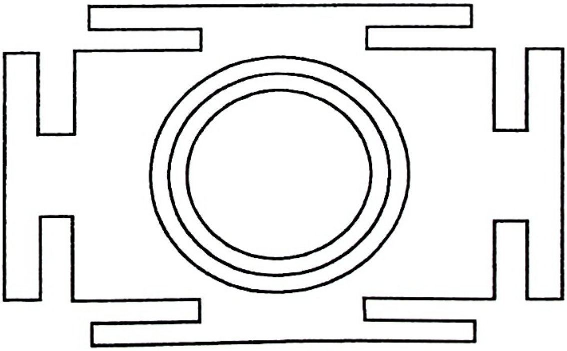

पाद्यपात्र के सन्निकट निर्दिष्टमण्डल वृत्तत्रय तथा भूपुर पर आचमनीय पात्र स्थापित करे।

ॐ विपरीतप्रत्यङ्गिरा आचमनीयपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ नमः। जलपूर्ण करे।

ॐ वषट्। पुष्प छोड़े।

ॐ नमः।

गन्ध, जातीफल, कपूर, कंकोल, लवंग इत्यादि डालकर अस्त्रमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित कर पुनः मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित कर धेनुमुद्रा प्रदर्शित करनी चाहिए। इसी प्रकार मधुपर्क, स्नानीय, आभूषणादि स्थापित कर सभी को श्रीपात्र के जल से मार्जन कर अभिमन्त्रित कर धेनुमुद्रा प्रदर्शित करे। इस प्रकार सभी पदार्थों को संस्कार पूर्वक पवित्र कर लेने के बाद विशेषार्घ्य के जल से अपने सिर पर भैरव तथा भैरवी का तर्पण कर हृदय स्थान पर लेलिहानमुद्रा से (अनामिका एवं अंगुष्ठ को मिलाकर) तीन बार तर्पण कर तत्त्व शुद्धि करे।

तत्त्वशुद्धिः

तत्त्वशुद्ध्यद्यपि कौलिकैराचरणीयमिति वाक्यादवश्यं करणीयम्। कौलिकों को तत्त्वशुद्धि अवश्य करना चाहिए।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्राणापानव्यानोदानसमानाः मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाक्पाणिपादपायूपस्थानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्पर्शरूपरसगन्धशब्दाः मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणवाचांसि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रकृत्यहंकारमनोबुद्धिश्रोत्राणि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।

पात्रासादनविधिं परिपूर्णम्

❀

क्षेत्रकीलनम्

पीपल, गूलर, प्लक्ष, खैर में से किसी भी काष्ठ की वितस्त मात्र कील लेकर सुदर्शनास्त्र की प्रतिष्ठा करके सुदर्शनास्त्र से अष्टोत्तरशत अभिमन्त्रित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् कीले सुदर्शनास्त्र देवतायाः प्राणा इह प्राणाः। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् कीले सुदर्शनास्त्र देवतायाः जीव इह स्थितः। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् कीले सुदर्शनास्त्र देवतायाः सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अस्मिन् कीले सुदर्शनास्त्र देवतायाः गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

ॐ नमः सुदर्शनास्त्राय फट्। १०८ बार अभिमन्त्रित करे।

ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः।
विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु॥१॥

जो यहाँ भूमि, अन्तरिक्ष और दिव्यलोकों में हमारे मन्त्र सिद्धि में विघ्न करनेवाले भूतप्रेतादि हैं।

मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे॥२॥

सभी भूतप्रेतादि इस स्थान को त्याग कर दूर कहीं चले जायें इस क्षेत्र को मैं कीलित कर रहा हूँ जिससे हमें निर्विघ्न सिद्धि प्राप्त हो॥२॥

ॐ नमः सुदर्शनास्त्राय फट्। मन्त्रों के पाठपूर्वक दशों दिशाओं में कीलों को गाड़े। प्रत्येक कीलों का यथोपचार पूजन करने के बाद कीलों दिक्पाल, क्षेत्रपाल, गणपति, योगिनी, वटुक को बलि प्रदान करे।

क्षेत्रकीलनं परिपूर्णम्

❀

क्षेत्रकीलनाङ्गबलिदानम्

वटुकबलिः

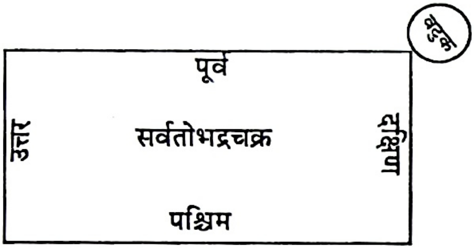

चक्र के ईशानकोण में वटुक के लिए बलि प्रदान करे।

ॐ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। ईशानकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ वँ वटुकबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ वँ वटुकबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ एह्येहि देविपुत्र वटुकनाथकपिलजटा भार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशयनाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ करकलित-कपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुण-तिमिर-नीलः व्याल-यज्ञोपवीती।
क्रतु-समय-सपर्या-विघ्न-विच्छेद-हेतुः ,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥१॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों में कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्थावाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालों वाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित, विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करने वाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ।।१।।

भूतसङ्घनायकं विशालकीर्तिदायकं काशिवासलोकपुण्यपाप शोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे।।१।।

भूतसङ्घ के नायक, विशालकीर्ति प्रदान करनेवाले, काशीवासियों के पुण्यपाप के शोधक, नीतिमार्ग के समर्थक, पुरातन, जगत् के पति, काशीपुरी के स्वामी कालभैरव की स्तुति करता हूँ।।२।।

पुष्पाञ्जलिः

बलिदानेन सन्तुष्टो वटुकः सर्वसिद्धिदः।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेताल-सेवितः।।

बलिदान से सभी सिद्धियों को देने वाले भूतवेतालों से सेवित वटुकभैरव प्रसन्न हो और सदैव हमें शान्ति प्रदान करें।

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन वटुकः प्रीयतां न मम।**

योगिनीबलिः

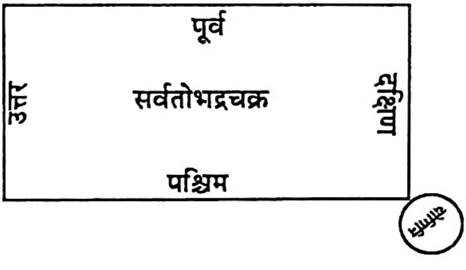

ॐ याँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ याँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। अग्निकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र को अग्नि कोण में रखे।

ॐ याँ योगिनीबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ याँ योगिनीबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ याँ सर्वेभ्यो योगिनीभ्यो फट् सर्ववर्णयोगिनीभ्यो नमः सर्वशक्तिभ्यः त्रिनेत्रसर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ऊर्ध्वब्रह्माण्डतोया दिविगगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोः यत्र कुत्र स्थितो वा।
क्षेत्रे पीङ्गोपपीङ्गे दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः,
प्रीता देव्या सदा नः शुभविधिबलिभिः पातु वीरेन्द्रवन्द्या॥

ऊपर ब्रह्माण्ड में, जल में, पाताल में, द्युलोक में, आकाश में, भूतल पर, निष्कल अवस्था में, स्थल पर, अनल में, सुन्दर शीतल पवन में जहाँ तहाँ रहनेवाली योगिनी वर्ग, क्षेत्र, पीठ, उपपीठ, दिशाओं में रहनेवाली, धूप दीपादि के द्वारा पूजित होकर, प्रसन्न होकर, वीरों के द्वारा पूजित योगिनियाँ प्रसन्न हों और सभी प्रकार का शुभ प्रदान करें।

पुष्पाञ्जलिः

योगिनीयोगमाया च योगिनां सिद्धिदायिनी।
षड्चक्रभेदिनी देवि सर्वविघ्नविनाशिनी॥१॥

योगमायायोगिनी, योगियों को सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करनेवाली, षड्चक्रों का **भेदन** करने वाली, सभी विघ्नों का विनाश करनेवाली॥१॥

योगिनी योगमाया च सर्वभैरवमोहिनी।
सर्ववीर्यमहातेजाः सर्वत्र शुभदायिनी॥२॥

सभी भैरवों को मोहित करने वाली योगमाया योगिनी, सभी प्रकार की बलशालिनी महानतम तेज वाली, सभी हमें शुभ प्रदान करें॥२॥

या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरा परात्पराः।
द्यु-व्योम-भूमिचारिण्यः सर्वाः प्रीतास्तु मे सदा॥३॥

जो कोई योगिनी रौद्र, सौम्या, घोर, परात्परा, द्युव्योमभूमिचारी समस्त योगिनियाँ सभी प्रसन्न होकर हमें शुभता प्रदान करे॥३॥

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वयोगिन्यः प्रीयतां न मम।**

योगिनी बलिदान प्रदान करने के बाद गणेश के लिए बलिदान प्रदान करे।

गणेशबलि:

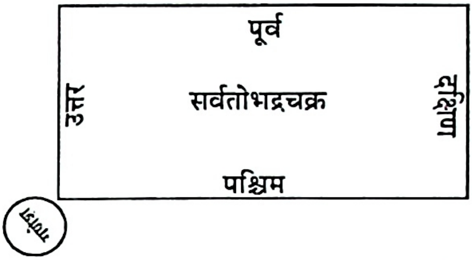

ॐ गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। नैर्ऋत्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ गँ गणेशबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ गँ गणेशबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ गँ गाँ गीँ गूँ गैँ गौँ गः गणेशाय नमः भो गणेश! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ॐ ॐकाररूपं त्र्ययमिति च परं यत् स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेज-सिन्दूर-मूर्तिम्।
योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकलगुणमयं श्रीहरेन्द्रेण सङ्गं,
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति॥१॥

ओंकार त्रय रूप से परमतुरीय जो ब्रह्मरूप, सत्त्वरजतम तीनों गुणों से अतीत रूपोंवाले, मन से भी तेज, सिन्दूर के रूप (वर्ण) वाले, मूर्तिमान्, योगियों के द्वारा वन्द्य, सकल गुणों के खान, ब्रह्मरन्ध्र में रहनेवाले, श्रीहरि के साथ गं गं गं गं बीजरूपी गज मुखवाले व्यापक गणेश का ध्यान करता हूँ॥१॥

विदेहरूपं भवबन्धहारं सदा स्वनिष्ठं स्वसुखप्रदन्तम्।
अमेयसांख्येन च लक्ष्यमीशं गजाननं भक्तियुतं भजामः॥२॥

विदेहरूपवाले, भवसागर के बन्धन को समाप्त करनेवाले, सदा अपने (ब्रह्मभाव) में ही स्थित रहनेवाले, आत्म सुख को प्रदान करनेवाले, माया विहीन, सांख्य के द्वारा बोधगम्य, ईश्वर गजानन का भक्ति पूर्वक भजन करता हूँ।।२।।

कल्पद्रुमाधः स्थितं कामधेनुं चिन्तामणिं दक्षिणपाणिशुण्डम्।
बिभ्राणमत्यद्भुतचित्तरूपं यः पूजयेत् तस्य समस्तसिद्धिः॥३॥

कल्पवृक्ष के समान, कामधेनु के सदृश, कामनाओं की पूर्ति करने में दक्ष, चित्त में अतिअद्भुत रूप से जो पूजन करता है, उसकी समस्त कामनायें सिद्ध होती हैं।।३।।

पुष्पाञ्जलिः

ॐ गजाननाय पूर्णाय सांख्यरूपमयाय ते।
विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः॥१॥

सांख्यरूपमय पूर्ण ब्रह्म गजानन बिना देह के निष्कल भाव से सर्वत्र संस्थित, हे गणेश! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है।।१।।

अमेयाय च हेरम्ब परशुधारकाय ते।
मूषकवाहनायैव विघ्नेशाय नमो नमः॥२॥

माया विहीन, परशु धारण करनेवाले, हेरम्ब, मूषक जिसका वाहन है, सम्पूर्ण विश्व के मालिक आपको नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है।।२।।

अनन्तविभवायैव परेशां पररूपिणे।
शिवपुत्राय देवाय गुहाग्रजाय ते नमः॥३॥

अनन्तविभवों से युक्त, परमेश्वर, परस्वरूपवाले, शिव के पुत्र, गुहाग्रज देवता के लिए नमस्कार है।।३।।

पार्वतीनन्दनायैव देवानां पालकाय ते।
सर्वेषां पूज्यदेहाय गणेशाय नमो नमः॥४॥

पार्वतीनन्दन, देवताओं के पालक, सभी शरीरधारियों में परमपूज्य श्रीगणेश को नमस्कार है।।४।।

स्वानन्दवासिने तुभ्यं शिवस्य कुलदैवत।
विष्ण्वादीनां विशेषेण कुलदेवाय ते नमः॥५॥

अपने आनन्द में वास करनेवाले, शिव के कुल में उत्पन्न, विष्ण्वादि देवताओं में विशेष, कुलदेवता परमपूज्य श्रीगणेश को नमस्कार है।।५।।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।**

गणेश के लिए बलिदान प्रदान करने के बाद क्षेत्रपाल के लिए बलिदान प्रदान करे।

क्षेत्रपालबलिः

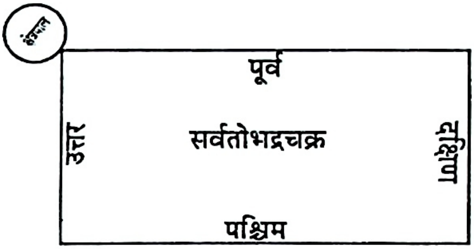

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। वायव्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करके समर्पित करे।

ॐ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय नमः भो स्थानक्षेत्रपाल सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारकौस्तुभधरं शीतांशुचण्डोज्ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥१॥

उदयकालीन सूर्य के समान प्रकाशमान, तीन नेत्रवाले, अङ्गों में रक्त सुगन्धित विविध अङ्गराग का अनुलेपन किये हुए, मन्द मन्द मुस्कान विखेरते हुए मुख मण्डलवाले, वर, अभय, कपाल, शूल हाथों में धारण किये हुए, आकाशीय नील ग्रीवावाले, उदार, कौस्तुभ-मणि धारण किये हुए, शिर पर शीतल द्वितीया का चन्द्र धारण किये हुए, बन्धूक पुष्प के रंग के समान वस्त्र धारण किये हुए, समस्त भय का हरण करनेवाले, 'भैरव देवता का ध्यान करता हूँ॥१॥

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं संहारमूर्ति शुभमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥२॥

यक्षरूप वदनवाले, दशों दिशाओं में भूमि को कम्पित करनेवाले, संहार के मूर्ति चन्द्रबिम्बवाले सुन्दर शुभमुकुट को धारण करनेवाले, जटा जिसके सिर पर स्थित है, दीर्घशरीर वाले, विशाल नखमुखवाले, ऊपर की तरफ उठे हुए विकराल रोमोंवाले, समस्त पापों को स्मरण मात्र से नष्ट करनेवाले, क्षेत्रपाल भैरव को सतत प्रणाम करता हूँ॥२॥

करकलितकपालः कुण्डलिदण्डपाणिः,
तरुण-तिमिर-नीलः व्याल-यज्ञोपवीती।
क्रतु-समय-सपर्या-विघ्न-विच्छेद-हेतुः ,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥३॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों में कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्थावाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालोंवाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित, हमारे विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करनेवाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ॥३॥

पुष्पाञ्जलिः

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं, अनुज्ञां दातुमर्हसि॥१॥

तीक्ष्ण दातोंवाले, महाकाय, कल्पान्त में सृष्टि का संहार करनेवाले, भैरव को नमस्कार है, हे भैरव! हमें पूजन की अनुमति प्रदान करें तथा हमारी सर्वत्र सर्वदा रक्षा करें॥१॥

ॐ यस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे॥२॥

इस क्षेत्र के निवासी क्षेत्रपाल के सेवकगण हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलिदान से सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर हमारी सभी तरफ से रक्षा करें॥२॥

ग्रहभूतपिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये।
दूरादाशु पलायन्ते क्षेत्रेश तव दर्शनात्॥३॥

हे क्षेत्रपाल! त्रिलोक में विचरण करनेवाले ग्रहभूतपिशाचादि आपके दर्शनमात्र से दूर से ही भाग जाते हैं॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।**

क्षेत्रपाल को बलिदान प्रदान करने के बाद राजराजेश्वर के लिए बलिदान प्रदान करे।

राजराजेश्वरबलिः

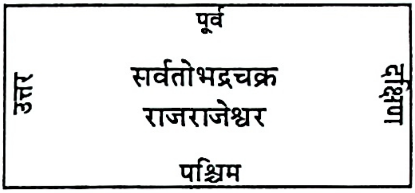

मध्य में राजराजेश्वर को बलि प्रदान करे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। मध्य में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः ह्सौँ स्हौँ राजराजेश्वर! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे,
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं,
संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥१॥

हे मस्तक की जटाओं में चन्द्रमा को धारण करनेवाले! हे कामदेव का दहन करनेवाले! त्रिशूल धारण करनेवाले! हे स्थाणु! हे पर्वतों के ईश्वर! हे गिरिजा के पति! हे महा ईश्वर! हे समस्त भूतों का कल्याण करनेवाले! भूतगणों के मालिक! समस्त भयों का नाश करनेवाले! हमारे नाथ! इस संसार के गहन दुःखों से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥१॥

हे पार्वती हृदयबल्लभ चन्द्रमौले,
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।

हे वामदेव भवरुद्र पिनाकपाणे,
संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥२॥

हे पार्वती के हृदय में निवास करनेवाले! हे चन्द्रमौलि! भूतों के अधिपति! प्रमथादि गणों के नाथ! हे गिरीश! हे वामदेव! हे भव! हे रुद्र! हे पिनाक धनुष को हाथ में धारण करनेवाले! इस संसार के गहन दु:खों से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥२॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र,
लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां,
संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥३॥

हे नीलकण्ठ! हे वृषभध्वज! हे पञ्चवक्त्र! हे लोकों के स्वामी! हे प्रलय काल में भी शेष रहनेवाले! हे प्रमथादि गणों के ईश्वर! हे शर्व! हे धूर्जटि! हे पशुपति! हे गिरिजा के पति! इस संसार के गहन दु:ख से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥३॥

पुष्पाञ्जलि:

गौरीविलास-भुवनाय महेश्वराय,
पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै,
दारिद्र्यदु:खदहनाय नम: शिवाय॥१॥

गौरी के साथ सम्पूर्ण भुवन में विलास करनेवाले, महेश्वर, पाँच मुखोंवाले, शरण में आनेवाले भक्तों की रक्षा करनेवाले, हे शर्व! समस्त जगत् के अधिपति, मैं अपने दु:खदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार करता हूँ॥१॥

भक्तिप्रियाय भयरोगभयापहाय,
उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय,
दारिद्र्यदु:खदहनाय नम: शिवाय॥२॥

भक्ति से प्रसन्न होनेवाले, भय-रोगादि को हटानेवाले, उग्रस्वरूप दुर्गम भवसागर से तरने के लिए, गुणों के द्वारा प्रसिद्धि पानेवाले ज्योतिमय, मैं अपने दु:खदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार करता हूँ॥२॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय,
नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय,
दारिद्र्यदु:खदहनाय नम: शिवाय॥३॥

रघुकुल नाथ श्रीराम को परमप्रिय लगनेवाले तथा वरप्रदान करनेवाले, नाग से प्रेम करनेवाले तथा नरक रूपी महासमुद्र से तारनेवाले, देवताओं के द्वारा सदैव अर्चित, पुण्यों में परमपुण्य स्वरूप महेश्वर का अपने दुःक्षदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए हे शिव! आपको नमस्कार करता हूँ।।३।।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन श्रीराजराजेश्वरः प्रीयतां न मम।**

कालबलिदानम्

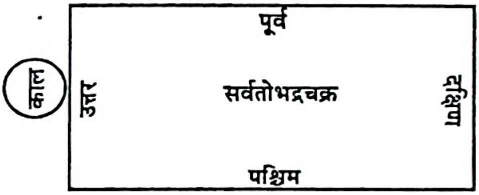

ॐ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से उत्तरदिशा बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ कालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ कालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ कालबलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ कालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ काल! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

एह्येहि दण्डायुधधर्मराज कालाञ्जनाभासविशालनेत्र।
विशालवक्षःस्थलरुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

हे हाथों में दण्डरूपी आयुध धारण करनेवाले धर्मराज! काले-काले अञ्जन के समान विशाल नेत्रोंवाले, विशाल वक्षःस्थलवाले और भयंकर रूपवाले आपको नमस्कार है, हमारी पूजा को ग्रहण करे।

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

कालाय कालरूपाय कालाञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं कालदेव नमोऽस्तु ते॥१॥

काल, कालरूप, काले अञ्जन के समान, प्रभु, दक्षिण दिशा में वास करनेवाले, कालरूपी देव आपको नमस्कार है॥१॥

यमो निहन्तापितृधर्मराजो वैवस्वतो दण्डधरश्च कालः।
प्रेताधिपो दत्तकृपानुसारी कृतान्त एतद्दशभिर्जपन्ति॥२॥

यम, निहन्ता, पितृ, धर्मराज, वैवस्वत, दण्डधारी, काल, प्रेताधिपति नामों को धारण करनेवाले हमारे ऊपर कृपावान् हो तथा हम इस दीनदशा में आपका यजन करते हैं, आप हमारे ऊपर कृपा करें॥२॥

धर्मराजमहाबाहो दक्षिणाधिपतये नमः।
रक्तेक्षणमहाबाहो मम पीड़ां निवारय॥३॥

हे महाबाहु धर्मराज! दक्षिण दिशा के अधिपति आपको नमस्कार है, आप इसी क्षण हमारी पीड़ाओं का निवारण कीजिए॥३॥

मृत्यवे मृत्युरूपाय दक्षिणदिशिकृतावासम्।
यमराजमहाबाहो मम पीड़ां निवारय॥४॥

हे मृत्युरूप मृत्युदेव! दक्षिण दिशा में वास करनेवाले, हे महाबाहु यमराज हमें हमारे पीड़ाओं से निवारण कीजिए॥४॥

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीकालः प्रीयतां न मम।

मृत्युबलिदानम्

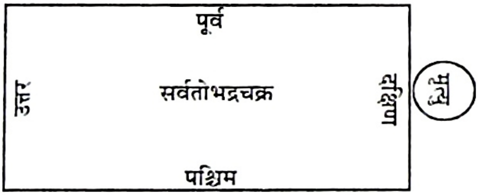

ॐ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से दक्षिणदिशा में बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ मृत्योर्बलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ मृत्योर्बलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ मृत्यु! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समं विग्रह अन्तरूप।
अन्तविरूपे विनियोगकारी मृत्युस्वरूपाय नमो नमस्ते॥

हे अन्तरूप! इस अनन्त संसार रूपी महासमुद्र में फँसे हुए हमारी रक्षा कीजिए, हे अन्तरूप! हे विरूप! विनियोग करनेवाले, हे मृत्युस्वरूप! आपको नमस्कार है।

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

मृत्यवे मृत्युरूपाय अन्ताञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं मृत्युदेव नमोऽस्तु ते॥

हे मृत्यु! हे मृत्युरूप! जीवन का अन्त करनेवाले, घोर अन्धकार के समान, प्रभु, दक्षिण दिशा में रहनेवाले मृत्युदेव आपको नमस्कार है।

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीमृत्युः प्रीयतां न मम।

दिग्पालादिबलिदानम्

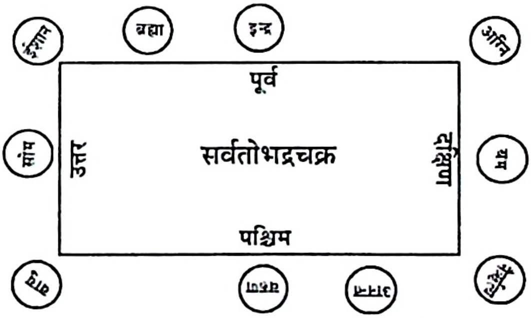

वटुकादि बलिदान के बाद पुरश्चरण गृह अथवा मण्डप के बाहर चारों तरफ दिग्पालों को बलिदान प्रदान करे, पूर्व में इन्द्र, अग्निकोण में अग्नि, दक्षिण में यम, नैर्ऋत्यकोण

में निर्ऋति, पश्चिम में वरुण, वायुकोण में वायु, उत्तर में सोम, ईशानकोण में ईश्वर तथा पूर्व और ईशानकोण के बीच में ब्रह्मा तथा अन्त में नैर्ऋत्यकोण तथा पश्चिम के बीच में अनन्त के लिए बलिदान समर्पित करे।

ऐरावतसमारूढो ब्रज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाभिधो देवस्तस्मादिन्द्राय ते नमः॥

ऐरावत हाथी पर समारूढ़, वज्र हाथ में धारण किये हुए, महाबली, सौ अश्वमेध यज्ञ करनेवाले देवराज इन्द्र आपको नमस्कार है।

ॐ यो मे पूर्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्तं देवराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे आग्नेयगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अग्निस्तं तेजराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे दक्षिणगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा निर्ऋतिस्तं रक्षराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे पश्चिमगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वरुणस्तं जलराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे वायव्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वायुस्तं प्राणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे उत्तरगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा सोमस्तं ताराराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे ईशानगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ईशानस्तं गणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे ऊर्ध्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ब्रह्मास्तं प्रजाराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे अधोगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अनन्तस्तं नागराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

प्रार्थना

इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिः, वरुणवायुसोमेशाः।
ब्रह्मा-अनन्त-सहिताः, प्रसीदन्तु सदा मम॥१॥

इन्द्र-अग्नि-यम-निर्ऋति-वरुण-वायु-सोम-ईशान-ब्रह्मा तथा अनन्त सदा हमारे ऊपर प्रसन्न रहे॥१॥

पायसो-बलिदानेन, सन्तुष्टः सर्वदा भवेत्।
तेषां बलिं प्रयच्छामि, भवन्तु प्रीतिः सर्वदा॥२॥

पायस के बलिदान से प्रसन्न होनेवाले, सर्वदा सन्तुष्टि और प्रसन्नता के लिए बलि समर्पित करता हूँ इस बलिदान से सदैव प्रसन्न होकर हमारी रक्षा करें॥२॥

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन दशदिग्पालाः प्रियन्तां नमम।**

दशदिग्पालादि बलिदान प्रदान के बाद घर के भवन के बाहर जाकर भूतादि बलिदान प्रदान करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान कभी न प्रदान करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान करने से दोष एवं हानि होती है।

भूतादिबलिः

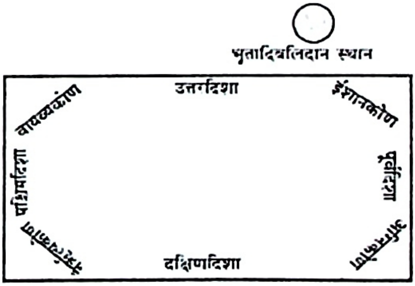

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पीठ के बाहर मण्डल का पूजनकर बलिपात्र रखे।

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन कर वामाङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

भूता ये च विघ्नकर्तारो दिविभूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थ संस्थाश्च शिवयोगेन भाविता॥१॥

जो भूतपिशाचादि विघ्नकरनेवाले द्युलोक-अन्तरिक्षलोक-भूलोक-पाताल में विचरण करनेवाले, सभी शिवयोग से भावित होकर (कल्याण की भावनावाले होकर)॥१॥

क्रूराद्याः शतसंख्यकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्यसंख्यांश्च इन्द्राद्याव्यवस्थिताः॥२॥

सैकडों क्रूर प्रकृतिवाले, पाखण्डादि में रत रहनेवाले, ध्रुवादि सैकड़ों की संख्यावाले, इन्द्रादि रूप में व्यवस्थित रहनेवाले॥२॥

तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम्।
नगरे वाऽथ संग्रामे अटव्यां वै सरित्तटे॥३॥

नगर या संग्राम स्थल में पहाड़ों की ऊँचाईयों पर, नदियों के तट पर रहनेवाले, हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥३॥

वापी कूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे।
नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये॥४॥

वापी, कूप, तडाग, वृक्षादि, श्मशानादि, चौराहों पर रहनेवाले, नानारूप को धरकर रहनेवाले, बहुतरूपोंवाले हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥४॥

यत्र तत्र विचरन्ति भूतप्रेतादि सर्वदा।
ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा॥५॥

हमेशा इधर उधर विचरनेवाले भूत-पिशाचादि सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले हों॥५॥

ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः।
मातरोऽप्युग्रहरूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥६॥

जो रौद्र रूप धारण करके, रौद्र कर्म में लिप्त, रौद्र स्थान में निवास करनेवाले, जो पिशाचिनी मातायें, उग्ररूपोंवाली, सेवकों के अधिपति, सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले हों॥६॥

भूचरा खेचराश्चैव तथा चैवान्तरक्षगा।
ते सर्वे प्रीतमनसाः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्॥७॥

भूमि पर विचरण करनेवाले भूचर, आकाश में रहनेवाले नभचर, सभी हमारी रक्षा करें, वे सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मनवाले होकर हमारी रक्षा करें॥७॥

पुष्पाञ्जलिः—प्रार्थना करने के बाद हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले, बलिं गृहित्वा विधिवत् प्रयुक्तम्।
सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे, अन्यत्रवासं परिकल्पयन्तु॥

जो इस भूतल पर भूतपिशाचादि निवास करते हैं, वे विधिवत् प्रदान किये गये बलि को ग्रहण करके सन्तोष प्राप्त कर स्वेच्छया अन्यत्र अपना वास बनायें अर्थात् हमारे पूजन स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान में अपना निवास बनायें।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः प्रीयतां न मम।**

क्षेत्रकीलनाङ्गबलिदानं परिपूर्णम्

⁂

दिग्रक्षणम्

पुष्पाञ्जलि प्रदान करने के बाद हाथ पैर धोकर आचमन-प्रणायाम करके सङ्कल्पपूर्वक दिग्रक्षण करें।

सङ्कल्प:—ॐ विष्णु:-विष्णु:-विष्णुः श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशे वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्या: पश्चिमे तीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ नामाऽहमस्मिन् श्रीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणे रक्षोघ्नकर्म करिष्ये। पीली सरसों से रक्षोघ्न कर्म करें।

ॐ रक्षोहणंव्वलगहनंव्वैष्ष्णवीमिदमहंतंव्वलगमुत्किरामियंमेनिष्ट्योयममात्योनिचखानेदमहंतंव्वलगमुत्त्किरामियंमैसमानोयमसमानोनिचखानेदमहंतंव्वलगमुत्किरामियंमेसबन्धुर्य्यमसबन्धुर्निचखानेदमहंतंव्वलगमुत्किरामियम्मैसजातोयमसजातोनिचखानोत्कृत्यांकिरामि॥१॥ पूर्वदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ रक्षोहणौवोव्वलगहनःप्प्रोक्षामिव्वैष्ष्णवान्न्रक्षोहणौवोव्वलगहनोऽवनयामिव्वैष्ष्णवान्न्रक्षोहणौवोव्वलगहनोऽवस्तृणामिव्वैष्ष्णवान्न्रक्षोहणौवांव्वलगहनाऽउपदधामिव्वैष्ष्णवीरक्षोहणौ वां व्वलगहनौपर्य्यूहामिव्वैष्ष्णवीव्वैष्ष्णवमसिव्वैष्ष्णवास्स्थ॥२॥ दक्षिणदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ रक्षसांभागोऽसिनिरस्तꣳरक्षऽइदमहꣳरक्षोऽभितिष्ठामीदमहꣳरक्षोऽवबाधऽइदमꣳरक्षोऽधमन्तमोनयामि॥ घृतेनद्यावापृथिवीप्प्रोर्णुवाथांव्वायोव्वेस्तोकानामग्ग्निराज्ज्यस्यव्वेतुस्वाहास्वाहाकृतेऽऊर्ध्वनभसम्मारुतङ्गच्छतम्॥३॥ पश्चिमदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ रक्षोहाव्विश्श्वचर्ष्षणिरभियोनिमयोहते॥ द्रोणेसधस्थमासदत्॥४॥ उत्तरदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

जो भूत-प्रेतादि इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान का परित्याग करके इधर-उधर कहीं पर भी अन्यत्र चले जायें। अग्निकोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

जो भूत-प्रेतादि इस भूमि में स्थित हैं, वो सभी इस स्थान से कहीं पर भी स्वेच्छया अन्यत्र चले जाये, जो भूत-प्रेतादि विघ्न करनेवाले हैं, वे सभी भगवान् शिव की आज्ञा से स्वेच्छया अन्यत्र चले जायें; अन्यथा नष्ट हो जायें। नैर्ऋत्य कोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

इस स्थान की सभी दिशाओं में जो भूत-प्रेतादि पिशाचों का वास है, वे सभी बिना विरोध के इस स्थान का परित्याग करके चले जायें, हम पूजा कर्म का प्रारम्भ कर रहे हैं। वायव्यकोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पुरश्चरणं करोम्यहम्॥

जो कोई भूतगण, राक्षसगण इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान को छोड़कर स्वेच्छया अन्यत्र कहीं चले जायें, जिससे हम निर्विघ्न पुरश्चरण करें। ईशान कोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। ऊपर ऊर्ध्वदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। अधोदिशा भूमि पर नीचें पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

चारो तरफ क्रोध मयी दृष्टि डाल कर, चारों तरफ के विघ्नों का निस्सारण करे तथा तीन बार पैर की एड़ी से भूमि पर प्रहार करके भूमिस्थित विघ्नकर्ताओं से रक्षार्थ विघ्नों का निस्सारण करें।

साधक को अपने साधना स्थल को सुरक्षित रखने के लिए उसको कीलित करे, स्थान को कीलित करने से स्थान की सुरक्षा सुनिश्चित हो जाती है।

दिग्रक्षणं परिपूर्णम्

❀

पञ्चगव्यकरणम्

ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह॥ ब्बृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा॥ इस मन्त्र से गोमूत्र स्थापित करें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ इस मन्त्र से गोमय मिश्रित करें।

ॐ आप्प्यायस्वसमेतुतेव्विश्श्वतःसोमव्वृष्ण्ण्यम्॥ भवाव्वाजस्यसङ्गथे॥ इस मन्त्र से गोदुग्ध मिश्रित करें।

ॐ दधिक्क्राब्ण्णोऽअकारिषञ्जिष्ण्णोरश्श्वस्यव्वाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रणऽ आयूꣳषितारिषत्॥ इस मन्त्र से दही मिश्रित करें।

ॐ तेजोऽसिशुक्क्रमस्य्यऽमृतमसिधामनामाऽसिप्प्रियंदेवानामनाधृष्ट्टन्देवयजनमसि॥ इस मन्त्र से गोघृत मिश्रित करें।

ॐ देवस्यत्त्वासवितुःप्प्रसवेऽश्श्विनोर्ब्बाहुब्भ्यांपूष्ण्णोहस्ताब्भ्याम्॥ इस मन्त्र से कुशोदक मिश्रित करके यज्ञकाष्ठ से आलोडित करें।

ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥ तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयाय जिन्न्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥

पञ्चगव्य निर्माण के बाद अपवित्रः पवित्रोवा० मन्त्र से तीन बार यज्ञभूमि तथा यज्ञसामग्री का मार्जन प्रोक्षण करे फिर अञ्जलि बनाकर दो बार स्वस्त्यवाचन करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

अपवित्र हो या पवित्र हो किसी भी अवस्था में जो पुण्डरीकाक्ष को स्मरण करता है वह शुचि(पवित्र) हो जाता है।

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवाःस्वस्तिनःपूषाव्विश्श्ववेदाः॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्द्दधातु॥ इस मन्त्र का दो बार पाठ करें।

देवाः आयान्तु॥ आवाहनी मुद्रा से। **यातुधानाः अपयान्तु॥** अपगमन मुद्रा से। **विष्णोर्देव भूम्यमिमं रक्षस्व॥**

आवाहनीमुद्रालक्षणम्

हस्तद्वयं प्रसार्यं स्वाभिमुखमञ्जलिकृतं।
आवाहनं च कर्तव्यं मुद्रा आवाहनी मता॥

दोनों हाथों को पसार कर अञ्जलि बनाकर अपने तरफ करके खींचने को आवाहनी मुद्रा कहते हैं इसका देवताओं को बुलाने में तन्त्रशास्त्र के विद्वान प्रयोग करते हैं॥

अपगमनमुद्रालक्षणम्

स्वाभिमुखाञ्जलिना यत् बहिर्गमनं कृतं यत्।
अपगमनमुद्राञ्च विख्याता तान्त्रिका वदेत्॥

अपनी तरफ अञ्जलि को करके बाहर की तरफ करने को ही तान्त्रिक विद्वान अपगमन मुद्रा कहते हैं।

साधना के स्थान को सुरक्षा की दृष्टि से कीलित करने के बाद साधना की भूमि को पवित्र करना अतिअनिवार्य होता है, पवित्र स्थान में ही देवताओं का वास होता है तथा साधना के अनुकूल वातावरण बनता है। साधाना की भूमि को पवित्र करने के लिए पञ्चगव्य से मन्त्रों को पाठ करते हुए भूमि का तथा समस्त पदार्थों का मार्जन करे तथा मार्जन करने के बाद अपनी उपासना की रक्षा के लिए भगवान विष्णु से प्रर्थना करे तथा उनका आवाहन करे और साधना में विघ्न प्रदान करनेवालो को उस स्थान से अपगमन करे, यातुधानों के अपगमन के बाद ही वह स्थान पवित्र रहता है, अन्यथा उपासना के दौरान अपवित्र होने का भय रहता है, अपवित्र स्थान में ही विघ्न कारकों का वास होता है इसलिए पूर्णरूप से पवित्र प्रसन्नतादायी वातावरण बनाने के लिए निश्चय ही पञ्चगव्य का मार्जन करे जिससे स्थानादि की पवित्रता बनी रहती है और पवित्र स्थान में उपासना करने पर साधक का मन भी पवित्र तथा सदैव प्रसन्न रहता है तथा साधना में सिद्धि प्राप्त करता है।

पञ्चगव्यकरणं परिपूर्णम्

⁂

अन्तःपूजनम्

अन्त:पूजन में आचमन कर प्राणायाम करे पश्चात् मूलाधार की कर्णिका में दीप कलिकाकार स्वयम्भू लिङ्गरूपी जीव को साढ़े तीन बार लपेटी हुई कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान पूजन मानसोपचार पूजन करे, क्रमशः सभी चक्रों में ले जाकर सहस्रार में महाकाल के साथ स्थापन-पूजन कर अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप कर समर्पित करे पुनः मूलाधार में लाकर अवस्थित करे।

कुण्डलिनी ध्यानम्

ध्यायेत्कुण्डलिनीं सूक्ष्मां मूलाधारनिवासिनी,
प्रसुप्तभुजगाकारां विद्युत्पटलसन्निभाम्।
तामिष्टदेवतां रूपां सार्द्धत्रिवलयान्वितां,
कोटिसौदामिनीभासां स्वयम्भूलिङ्गवेष्टिनीम्॥

सोई हुई, विद्युत के समान प्रभावाली, भुजग के समान आकृतिवाली, साढ़े तीन वलयवाली, सौदामिनी कोटि की आभावाली, स्वयं भू लिङ्ग को आविष्ट की हुई, इष्टदेवता रूपिणी, मूलाधार निवासिनी, अति सूक्ष्म कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

कलयतीति कलिका, कलिका इव कालिका महाकाल शिवे कलयतीति विचरतीति, शक्तिरूपे वासयतीति कालिका महाकाल कालिका। तडितविद्युताकारा सार्द्धत्रिवलयान्विता परमापराशक्तिः कुण्डलाकृतिरूपा मूलाशक्तिः कुण्डलिनीशक्तिः इति महाकाल कालिका। महाकालकलना शक्तिः कालिका कुण्डलिनि शक्तिः।

सर्वप्रथम गुदा भाग और लिङ्ग मूल के बीच में सीवनी स्थान के ठीक सामने रीढ़ की हड्डी के पुच्छ भाग में ऊपर कन्द स्थान में चतुर्दल कमलात्मक मूलाधार के चारों पत्रों पर वामावर्त क्रम से **वँ शँ षँ सँ** मातृका वर्णो तथा पद्म के मध्य कर्णिका में **ळँ** बीजात्मक पृथ्वीतत्त्व, उसके ऊपर **दीपकलिकाकृति**स्वरूप भूलिङ्गात्मक अङ्गुष्ठप्रवरप्रमाणात्मक जीव को सार्द्धत्रिवलयान्वित अतिसूक्ष्म विद्युताकृतिरूप कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान कर **सोऽहं हंसः** मन्त्र से प्रसुप्तकुण्डलिनीशक्ति को जगाकर मानसोपचार पूजन कर उसके मुख में कमल पत्रों पर स्थित समस्तमातृकावर्णो के सहित पृथ्वीतत्त्वात्मक **ळँ** बीज तथा भूलिङ्ग को धारण कराकर मूलाधार के चार अङ्गुल ऊपर लिङ्गमूल स्थान के ठीक सामने रीढ़ की हड्डी में ही षड्दलात्मक कमल स्वाधिष्ठान चक्र के पत्रों पर वामावर्त क्रम से ही क्रमशः **बँ भँ मँ यँ रँ लँ** मातृका वर्णो के साथ पद्म के मध्य कर्णिका में जलतत्त्वात्मक **वँ** बीज

का ध्यान कर कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर उसके चार अङ्गुल ऊपर नाभि के ठीक सामने रीढ़ की हड्डी में ही दशदलात्मक मणिपुर पद्म के पत्रों पर वामावर्त क्रम से ही **डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ** मातृका वर्णों के सहित कमल के मध्य कर्णिका में अग्नितत्त्वात्मक **रँ** बीज का ध्यान करके समस्त मातृकाओं के सहित अग्निबीज को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर मणिपुर कमल से द्वादशाङ्गुल ऊपर द्वादशदलात्मक अनाहत पद्म के सभी पत्रों पर क्रमश: **कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ** मातृका वर्णों तथा कमल के मध्य वायुतत्त्वात्मक **यँ** बीज का ध्यान करके मातृका वर्णों के सहित वायुबीज को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर अनाहत चक्र के ऊपर षोडशदलात्मक विशुद्ध चक्र के पत्रों पर वामावर्त क्रम से **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः** मातृका वर्णों के सहित चक्र के मध्य कर्णिका में आकाश तत्त्वात्मक **हँ** बीज का ध्यान कर कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर द्वादशाङ्गुल ऊपर भ्रूमध्य में द्विदलात्मक आज्ञा चक्र के पत्रों पर **हँ** तथा **क्षँ** मातृका वर्णों के सहित मध्य कर्णिका में मनोबुद्धितत्त्वात्मक बीज का ध्यान कर कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर आज्ञा चक्र से दो अङ्गुल ऊपर से मूर्धा में सहस्रदलपद्म के समस्त पत्रों पर बीसबार **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ, जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ** तक के मातृका वर्णों का वामावर्त क्रम से, मध्य कर्णिका में केशरों को कल्पवृक्ष के रूप में तथा उन कल्पवृक्षों के मध्य में चिदहङ्कारात्मक परमात्मा सर्वतत्त्वबीजरूपशिव का ध्यान कर समस्त मातृकादि सहित बीज तथा जीव कुण्डलिनी शक्ति का शिव में विलय करा दे और दोनों के एकभावरूप शिवशक्ति का ध्यान कर मानसषोडशोपचार पूजन करके उनके पादतल से टपकते हुए अमृतद्रव से समस्त शरीरादि का सिंचन करे, पुन: शिवशक्त्यैक्य रूप से शक्ति को अलग करके सहस्रार से आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान से क्रमश: मूलाधार पद्म में लाकर उसके मध्य कर्णिका में स्थापित करके शक्ति के शरीर से ही शुद्धकलिकाकार ज्योति को प्रकट कराकर स्थापित कर उस ज्योति को इष्टदेवता के रूप में ध्यान करे, विधिवत् ध्यान करने के बाद इष्टदेवता का सांकल्पिक रूप से षोडशोपचार विधिवत् मानसपूजन करके अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप करके श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा को जप समर्पित करे।

शिवशिवा-ध्यानम्

मेघाङ्गीं विगताम्बरां शवशिवारावां त्रिनेत्रां परां,
कर्णालम्बितबालयुग्मभयदां मुण्डस्रजां मालिनीम्।
वामाधोर्ध्वकराम्बुजे नरशिरः खड्गञ्च सव्येतरे,
दानाभितिविमुक्तकेशनिचयां वन्दे कामकलासदा॥

मेघ जैसी आभावाली, निरावरण, त्रिनेत्र धारण करनेवाली, शिवशिवा जो कानों में लटकते हुए एक जोड़ी बालो (वालशव) को धारण किये हुए, अभय प्रदान करनेवाली, मुण्ड की मालाओं को धारण करनेवाली, उनके बायें तरफ के ऊपर के हाथ में खड्ग तथा नीचे के हाथ में नर का शिर (कपाल) शोभित है, दाहिने तरफ के ऊपर के हाथ से वर तथा नीचे के हाथ से अभय प्रदान करती हुई, खुली हुई केशोंवाली, शिव के सहित विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा की सदा वन्दना करता हूँ।

ॐ स्वागतं देवदेवेशि सन्निधौ भव आत्मनि।
गृहाण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाषिता॥

महादेव की शक्तिरूपिणी देवेशी विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा का स्वागत है, हमारी आत्मा में सन्निधित्व प्रदान करे तथा मानसीपूजा को ग्रहण करके यथार्थ को परिभाषित करे।

कुण्डलिनिस्तुतिः

मूलोन्निद्रभुजङ्गराजसदृशीं यान्तीं सुषुम्नान्तरं,
भित्वाधारसमूहमाशु विलसत्सौदामिनीसन्निभम्।
व्योमाम्भोजगतेन्दुमण्डलगलद्दिव्यामृतौधैः पतिं,
सम्भाव्य स्वगृहागतां पुनरिमां सञ्चिन्तयेत् कुण्डलीम्॥१॥
हंसं नित्यमनन्तमद्वयगुणं स्वाधारतो निर्गता,
शक्तिः कुण्डलिनी समस्तजननी हस्ते गृहीत्वा च तम्।
याता शम्भुनिकेतनं परसुखं तेनानुभूय स्वयं,
यान्ती स्वाश्रममर्ककोटिरूचिरा ध्येया जगन्मोहिनी॥२॥
अव्यक्तं परबिम्बमञ्चितरुचिं नीत्वा शिवस्यालयं,
शक्तिः कुण्डलिनी गुणत्रयवपुर्विद्युल्लतासन्निभा।
आनन्दामृतकन्दगं पुरमिदं चन्द्रार्ककोटिप्रभं,
संवीक्ष्य स्वगृहं गता भगवती ध्येयाऽनवद्या गुणैः॥३॥
मध्ये वर्त्म समीरणद्वयमिथस्सङ्घट्टसङ्क्षोभजं,
शब्दस्तोममतीत्य तेजसि तड़ित्कोटिप्रभाभास्वराम्।
उद्यन्तीं समुपास्महे नवजपासिन्दूरसान्द्रारुणां,
सान्द्रानन्दसुधामयीं परशिवं प्राप्तां परां देवताम्॥४॥
गमनागमनेषु जाङ्घिकी सा,
तनुयाद्योगफलानि कुण्डली।
मुदिता कुलकामधेनुरेषा,
भजतां वाञ्छितकल्पवल्लरीम्॥५॥

आधारस्थितशक्तिबिन्दुनिलयां नीवारशूकोपमां,
नित्यानन्दमयीं गलत्परसुधावर्षैः प्रबोधप्रदैः।
सिक्त्वा षट्सरसीरुहाणि विधिवत्कोदण्डमध्योदितां,
ध्यायेद्भास्वरबन्धुजीवरूचिरां संविन्मयीं देवताम्॥६॥
हृतपङ्केरुहभानुबिम्बनिलयां विद्युल्लतामन्थरां,
बालार्कारुणतेजसा भगवतीं निर्भर्त्सयन्तीं तमः।
नादाख्यां परमर्धचन्द्रकुटिलां संविन्मयीं शास्वतीं,
यान्तीमक्षररूपिणीं विमलधीर्ध्यायेत् विभुं तेजसाम्॥७॥
भाले पूर्णनिशाकरप्रतिभटां नीहारहारत्विषा,
सिञ्चन्तीममृतेन देवममितेनानन्दयन्तीं तनुम्।
वर्णानां जननीं तदीयवपुषा संव्याप्य विश्वं स्थितां,
ध्यायेत्सम्यगनाकुलेन मनसा संविन्मयीमम्बिकाम्॥८॥
मूले भाले हृदि च विलसद्वर्णरूपा सवित्री,
पीनोत्तुङ्गस्तनभरनमन्मध्यदेशा महेशी।
चक्रे चक्रे गलितसुधया सिक्तगात्री प्रकामं,
दद्यादद्य श्रियमविकलां वाङ्मयीदेवता नः॥९॥
आधारबन्धप्रमुखक्रियाभिः,
समुत्थिता कुण्डलिनी सुधाभिः।
त्रिधामबीजं शिवमर्चयन्ती,
शिवाङ्गना वः शिवमातनोतु॥१०॥
निजभवननिवासादुच्चलन्ती विलासैः,
पथि पथि कमलानां चारु हासं विधाय।
तरुणतपनकान्तिः कुण्डली देवता सा,
शिवसदनसुधाभिर्दीपयेदात्मतेजः॥११॥
सिन्दूरपुञ्जनिमभिन्दुकलावतंसं-,
आनन्दपूर्णनयनत्रययशोभिवक्त्रम्।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्रं,
शम्भोः कलत्रममितां श्रियमातनोतु॥१२॥
वर्णैरर्णवषट्दिशारविकलाचक्षुर्विभक्तैः क्रमात्,
सान्तैरादिभिरावृतान् क्षहयुतैष्षट्चक्रमध्यानिमान्।
डाकिन्यादिभिराश्रितान् परिचितान् ब्रह्मादिभिर्दैवतैः,
भिन्दाना परदेवता त्रिजगतां चित्तेषु दत्तां मुदम्॥१३॥

आधाराद् गुणवृत्तशोभिततनुं निर्गत्वरीं सत्वरं,
भिन्दन्तीं कमलानि चिन्मयघनानन्दप्रबोधोद्धुराम्।
सङ्क्षुब्धं ध्रुवमण्डलामृतकरप्रस्यन्दमानामृत,
स्त्रोतः कन्दलिताममन्दतडिदाकारां शिवां भावये॥१४॥
मूलाधारे त्रिकोणे तरुणतरणिभाभास्वरे विभ्रमन्तं,
कामं बालार्ककालानलजरठकुरङ्गाङ्ककोटिप्रभाभम्।
विद्युन्मालासहस्रद्युतिरुचिरलसद्बन्धुजीवाभिरामं ,
त्रैगुण्याक्रान्तबिन्दुं जगदुदयलयैकान्तहेतुं विचिन्त्य॥१५॥
तस्योर्ध्वे विस्फुरन्तीं स्फुअरुचिरतडित्पुञ्जभाभास्वराङ्गी-
मुद्गच्छन्तीं सुषुम्नामनु सरणिशिखामाललाटेन्दुबिम्बम्।
चिन्मात्रां सूक्ष्मरूपां जगदुदयकरीं भावनामात्रगम्यां,
मूलं या सर्वधाम्नां स्फुरति निरुपमा हूँ कृतोदञ्चितोरः॥१६॥
नीता सा शनकैरधोमुखसहस्त्रारारुणाब्जोदरे,
च्योतत्पूर्णशशाङ्कविम्बमधुनः पीयूषधारास्त्रुतिम्।
रक्तां मन्त्रमयीं निपीय च सुधानिःष्यन्दरूपा विशेद्,
भूयोऽप्यात्मनिकेतनं पुनरपि प्रोत्थाय पीत्वा विशेत्॥१७॥
योऽभ्यस्यत्यनुदिनमेवमात्मनोऽन्तः ,
बीजांशं दुरितजरापमृत्युरोगान्।
जित्वाऽसौ स्वयमिव मूर्तिमाननङ्गः,
सञ्जीवेच्चिरमतिनीलकेशजालः ॥१८॥

तत्तद् अभिष्ट मुद्राओं को प्रदर्शित कर अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप कर देवी को समर्पित करे।

अक्षमाला स्तुतिः

श्रीगायत्रीं त्रयीं विद्यां प्रणम्य परमेश्वरीम्।
अक्षमालास्तुतिं दिव्यां करोमि सुखदां सताम्॥१॥

सत्वात्मक, रजात्मक, तमात्मक तीनों रूपवाली परमेश्वरी श्रीगायत्री को प्रणाम करता हूँ, अक्षमाला की दिव्यस्तुति करता हूँ जो सदैव समस्त सुख प्रदान करनेवाली है॥१॥

अथाऽव्यक्ताऽऽदिशक्तिर्या महादेवीन्दिरेश्वरीम्।
उमोर्ध्वकेशी ऋग्वेदा 'ऋ'रूपा ऋद्धिदायिनी॥२॥

व्यक्त, अव्यक्त इन्दिरेश्वरी शक्ति स्वरूपिणी महादेवी, उर्ध्वकेशी ऋग्वेद रूपी उमा समस्त ऋद्धि प्रदान करे॥२॥

ऌप्तधार्माऽस्ति 'ऌ'नाली त्वेकाक्षरविहारिणी।
ऐन्द्रीह्योङ्काररूपा या चौपासनफलप्रदा॥३॥

ऌधर्म स्वरूपिणी ऌनामवाली, एकाक्षर में रहनेवाली, ओङ्कार रूपिणी ऐन्द्री का उपासना का फल प्रदान करे॥३॥

अण्डमध्यस्थिता देवीं 'अ:'कारमनुरूपिणी।
षोडशीं लोकपूज्यां तां सर्वदा संस्मराम्यहम्॥४॥

ब्रह्माण्ड मण्डल में स्थित रहनेवाली, मनुरूपिणी अ:कार, लोकपूज्या षोडशी देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥४॥

ततोव्यञ्जनवर्णस्थां कमलो खगवाहनाम्।
गङ्गां च धर्मदां देवीं 'ङ'क्षरां प्रणमाम्यहम्॥५॥

समस्त व्यञ्जन वर्णों में रहनेवाली, खग जिसका वाहन है, धर्म को प्रदान करनेवाली, गङ्गा स्वरूपिणी ङकार रूपी कमला देवी को प्रणाम करता हूँ॥५॥

चण्डिकां सततं वन्दे देवीं छन्दोऽनुगां पराम्।
जयन्तीं क्षणनिर्घोषां 'ञ'रूप वृषवाहनाम्॥६॥

छन्द स्वरूपिणी, ञकार रूप, वृष जिसका वाहन है, प्रत्येक क्षण में घोष करनेवाली जयन्ती पराचण्डिका देवी की सतत वन्दन करता हूँ॥६॥

टङ्कवर्णान्वितां दिव्यां 'ठ-ठ'शब्दनिनादिनीम्।
डमरूभूषणां देवीं ढक्काहस्तां नमाम्यहम्॥७॥

टङ्क वर्ण रूपिणी, ठ-ठ शब्द का घोष करनेवाली, हाथों में ढक्का तथा डमरु धारण करनेवाली, दिव्य देवी को नमस्कार करता हूँ॥७॥

'ण'वर्णरूपिणीं दिव्यां तप्तकाञ्चनभूषणाम्।
थावरां सततं वन्दे दण्डकारण्यवासिनीम्॥८॥

तपे हुए सोने के समान दिव्य आभूषणों से सुसज्जित णवर्ण स्वरूपिणी, दण्डकारण्य में वास करनेवाली, स्थावर रूपी देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥८॥

धर्मशीलां नदीरूपां परब्रह्मात्मिकां तथा।
फलदां बहुनेत्रां च भवानीं प्रणतोऽस्म्यहम्॥९॥

नदी स्वरूपी, धर्मशीला, तीन नेत्रों, बहुनेत्रोंवाली, समस्त फल को प्रदान करनेवाली, परब्रह्मात्मिका भवानी देवी को सतत नमन करता हूँ॥९॥

मालिनीं तां महामायां पञ्चविशतिवर्णिकाम्।
नत्वा पुन: स्मराम्यत्र यक्षवर्णात्मिकाद्भुताम्॥१०॥

पञ्चविंशति वर्णवाली, महामाया मालिनी देवी, अद्भुत् यकार क्षकार वर्णात्मिका, अक्षरस्वरूपिणी देवी का सतत ध्यान पूर्वक नमन करता हूँ॥१०॥

यक्षिणीं योगमायां तां रमां लक्ष्मीं सुखप्रदाम्।
वरदां शारदां दिव्यां षण्मुखीं च सरस्वतीम्॥११॥

यक्षिणी, योगमाया स्वरूपिणी रमा, लक्ष्मी, शारदा, षण्मुखी कार्तिकी, सरस्वती स्वरूपिणी वर प्रदान करनेवाली, अक्षमाला स्वरूपिणी देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥११॥

हरिरुद्रप्रियां देवीं क्षमाशीलां नवात्मिकाम्।
पञ्चाशद्वर्णरूपां तां स्मरामि सर्वदा शुभाम्॥१२॥

विष्णु तथा रुद्र की परम प्रिया क्षमाशीला नव अक्षरोंवाली, पञ्चाशत वर्ण रूपोंवाली, सर्वदा शुभ करनेवाली, अक्षमाला देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥१२॥

यस्यस्मरणमात्रेण प्रसन्नां वर्णमात्रिका।
सम्भूयात् सा सदा लोके सर्वमङ्गलकारिणी॥१३॥

जिसके स्मरण मात्र से वर्णमात्रिका प्रसन्न हो जाती हैं तथा लोक में सदा सभी प्रकार का मङ्गल प्रदान करनेवाली हो जाती है उन अक्षमाला देवी का सतत स्मरण करता हूँ॥१३॥

नेत्रद्वयखयुग्मेऽब्दे श्रीद्विजेन्द्रविनिर्मिता।
ज्येष्ठमासेऽत्र काश्यां वै प्रोद्गता साऽक्षमालिका॥१४॥

दो नेत्रोंवाली, युग्म खकार तथा अब्द स्वरूपिणी, शिव के द्वारा निर्मित अक्षमाला का ज्येष्ठ मास में काशी में जो इस अक्षमाला स्तोत्र का पाठ करता है॥१४॥

इति रत्नमयीं देवीं गायत्रीतुष्टिकारिणीम्।
स्तुतिं पठन्नरो नित्यं ब्रह्मसायुज्यमाप्नुयात्॥१५॥

और गायत्री को तुष्टि प्रदान करनेवाली, रत्नमयी अक्षमाला देवी का जो भक्त पाठ करता है वह ब्रह्मसायुज्य(ब्रह्मत्व) को प्राप्त करता है॥१५॥

अक्षमालाजपविधि:

जप के लिए अक्षमाला का ही प्रयोग किया जाता है, इसी माला का अन्त:पूजनादि, ध्यानादि क्रम में प्रयोग किया जाता है, इस माला का ज्ञान किसी भी परमात्म साधक के लिए अति अनिवार्य है, बिना अक्षमाला ज्ञान के मानसविधि में जप नहीं हो सकता है, बाह्यजपादि उन उपासकों के लिए है, जो साधक तन्त्रविधि से दीक्षा नहीं लेते हैं, उनको अक्षमालादि का ज्ञान नहीं होता है, उन सम्प्रदायों में अक्षमाला का प्रतीक रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करते हैं, जिसका समयी कृत्यों में प्रयोग ही नहीं किया जा सकता है, अत: यहाँ केवल अक्षमाला का ही प्रयोग होगा।

अकारादारभ्य क्षकारपर्यन्तमक्षमालाम्। अर्थात् अकार से प्रारम्भ करके क्षकार

तक मातृकाओं से मन्त्र युक्त कर मन्त्र जपने को ही अक्षमाला में जप कहते हैं। सर्वप्रथम विशुद्धचक्र के पत्रों पर स्थित अकार से अ:कार तक के **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः** समस्त वर्णों का ध्यान करते हुए पुन: अनाहत में ककार से प्रारम्भ करके क्रमश: ठकार **कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ** तक फिर मणिपुर में डकार से फकार **डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ** तक स्वाधिष्ठान में बकार से लकार **बँ भँ मँ यँ रँ लँ** तक फिर मूलाधार में वकार से सकार **वँ शँ षँ सँ** तक जपने के पश्चात् मूलाधार के मध्य कर्णिका में **ळं** बीज, स्वाधिष्ठान में **वं** बीज, मणिपुर में **रं** बीज, अनाहत में **यं** बीज, विशुद्ध में **हं** बीज, जप करते हुए पुन: विपरीत क्रम से जप करते हुए आकाशतत्त्वात्मक **हँ** बीज, वायुतत्त्वात्मक **यँ** बीज, अग्नितत्त्वात्मक **रँ** बीज, जल तत्त्वात्मक **वँ** बीज तथा भूतत्त्वात्मक **ळँ** बीज से युक्त कर जप के पश्चात् मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, तथा विशुद्धचक्र के पत्रों पर स्थित वर्णों के साथ जप करते हुए, अकार तक आये तथा आज्ञा चक्रस्थित उसी दल के मध्यकर्णिका में स्थित हकारात्मक शिवयुक्त क्षकारात्मक इष्टदेवी विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता को जप समर्पण करे यथा आगे निर्देश किया गया है—

विशुद्ध चक्र के पत्रों पर अः प्रत्याहार के वर्ण

विशुद्धचक्र के पत्रों पर स्थित अकार से अ:कार तक के **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः** समस्त वर्णों का ध्यान करते हुए जप करे।

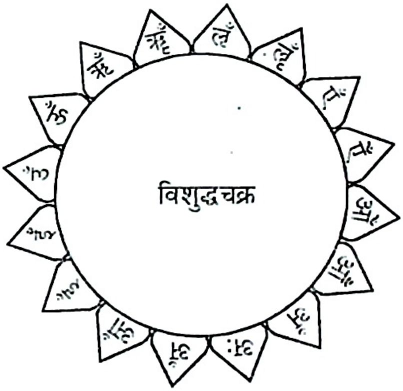

ॐ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ आँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ इँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ ईँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ उँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ ऊँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऋँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ॠँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऌँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ॡँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ एँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऐँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ओँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ औँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ अः ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

अनाहत चक्र के पत्रों पर कठ प्रत्याहार के वर्ण

अनाहतचक्र में ककार से प्रारम्भ करके क्रमशः ठकार **कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ** तक के वर्णों के साथ संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी का स्वरूप ध्यान पूर्वक जप करे।

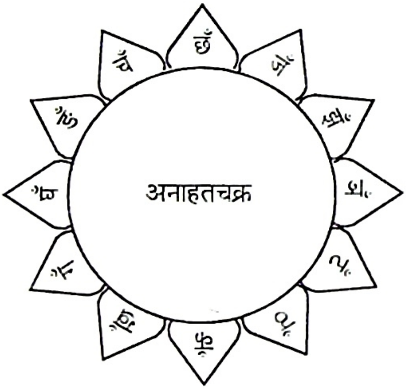

ॐ कँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ खँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ गँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ घँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ङँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ चँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ छँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ जँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ झँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ञँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ टँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ठँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मणिपूर चक्र के पत्रों पर डफ प्रत्याहार के वर्ण

मणिपुर में डकार से फकार **डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ** तक के वर्णों के साथ संयुक्त करके प्रत्येक वर्णों में देवी का स्वरूप ध्यान पूर्वक जप करे।

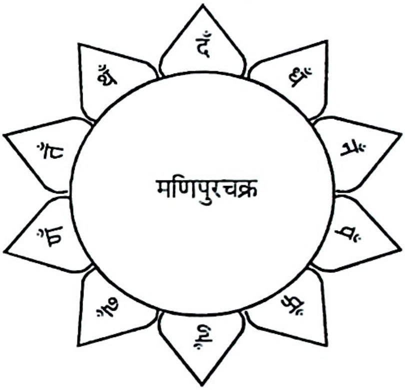

ॐ डँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ढँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ णँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ तँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ थँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ दँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ धँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ नँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ पँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ फँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

स्वाधिष्ठान चक्र के पत्रों पर बल प्रत्याहार के वर्ण

स्वाधिष्ठान में बकार से लकार **बँ भँ मँ यँ रँ लँ** तक के वर्णों के साथ संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी का स्वरूप ध्यानपूर्वक जप करे।

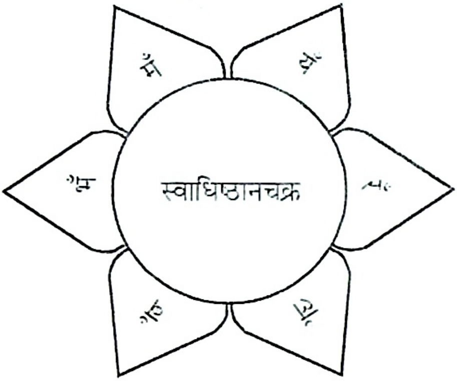

ॐ बँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ भँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ मँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ यँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ रँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ लँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मूलाधार चक्र के पत्रों पर वस प्रत्याहार के वर्ण

मूलाधार में वकार से सकार **वँ शँ षँ सँ** तक के वर्णों के साथ संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी का स्वरूप ध्यानपूर्वक जप करे।

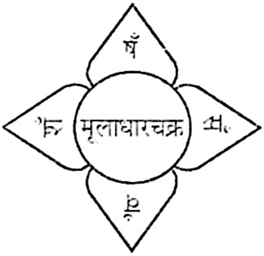

ॐ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ शँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ सँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मूलाधार की कर्णिका में लँ बीज

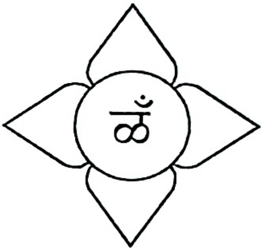

ॐ लँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

स्वाधिष्ठान की कर्णिका में वँ बीज

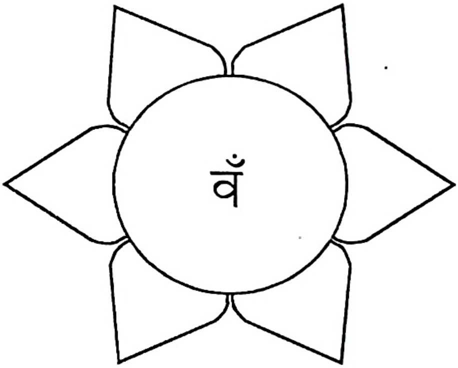

ॐ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मणिपूर की कर्णिका में रँ बीज

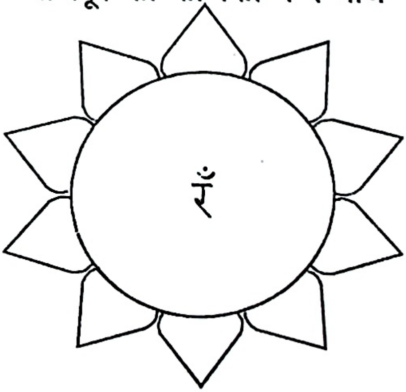

ॐ रँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

अनाहत की कर्णिका में यँ बीज

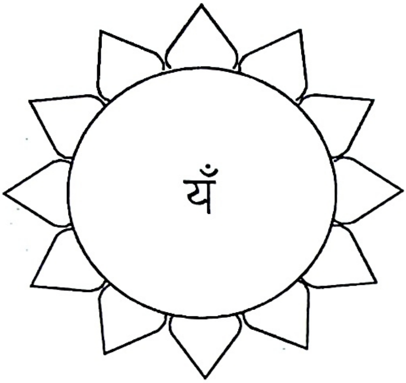

ॐ यँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

विशुद्ध की कर्णिका में हँ बीज

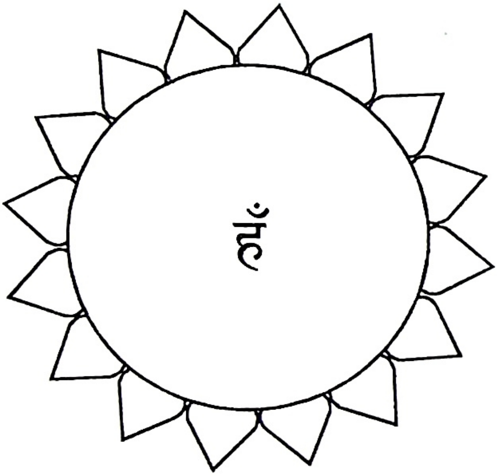

ॐ हँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

आज्ञाचक्र के पत्र पर हकार वर्ण

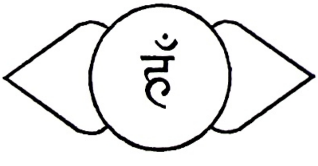

ॐ हँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

आज्ञाचक्र में हकार के साथ जप करके क्षकार सुमेरु की परिक्रमा करके पुन: विपरीत क्रम से जप करे।

पुनः आज्ञाचक्र के पत्र पर हकार वर्ण

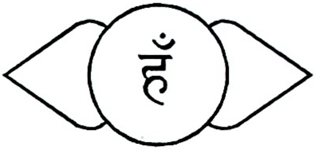

ॐ हँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

विशुद्ध की कर्णिका में हँ बीज

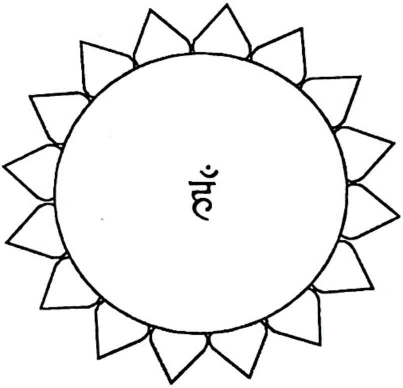

ॐ हँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

अनाहत की कर्णिका में यँ बीज

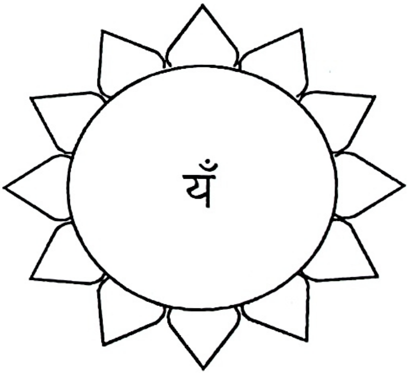

ॐ यँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मणिपूर की कर्णिका में रँ बीज

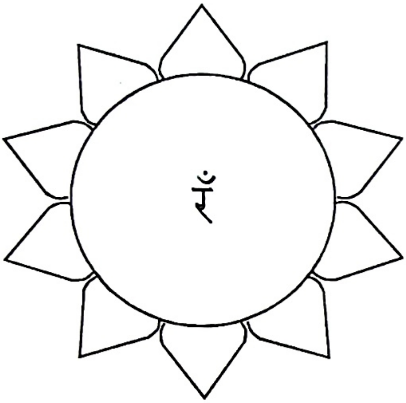

ॐ रँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

स्वाधिष्ठान की कर्णिका में वँ बीज

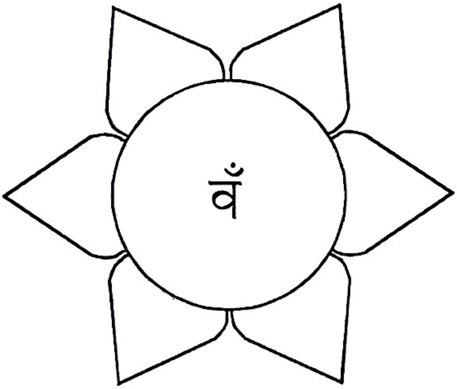

ॐ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मूलाधार की कर्णिका में लँ बीज

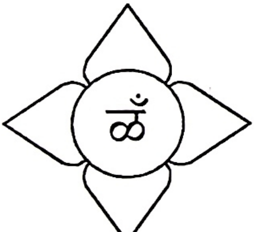

ॐ लँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

पुनः मूलाधार चक्र के पत्रों पर वस प्रत्याहार के वर्ण

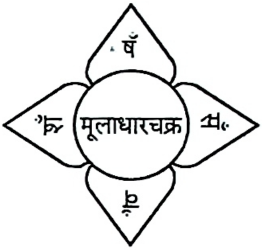

ॐ सँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ शँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

पुनः स्वाधिष्ठान चक्र के पत्रों पर बल प्रत्याहार के वर्ण

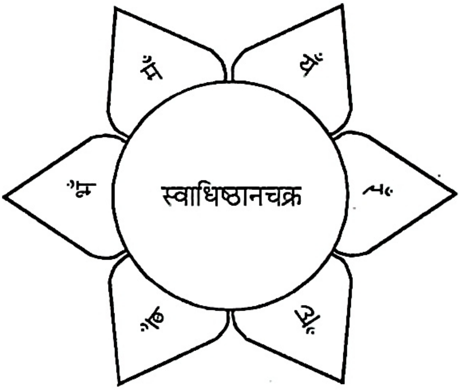

ॐ लँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ रँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ यँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ मँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ भँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ बँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

पुनः मणिपूर चक्र के पत्रों पर डफ प्रत्याहार के वर्ण

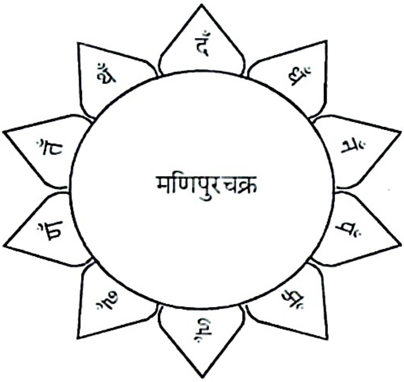

ॐ फँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ पँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ नँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ धँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ दँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ थँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ तँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ णँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ढँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ डँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

पुनः अनाहत चक्र के पत्रों पर कठप्रत्याहार के वर्ण

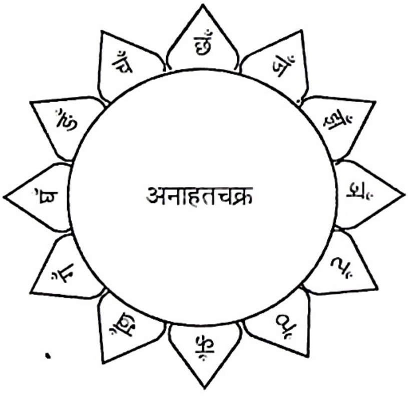

ॐ ठँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ टँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ञँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ झँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ जँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ छँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ चँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ङँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ घँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ गँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ खँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ कँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

पुनः विशुद्ध चक्र के पत्रों पर अः प्रत्याहार के वर्ण

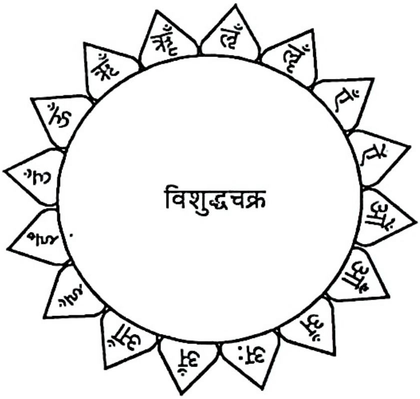

ॐ अः ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ औँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ओँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऐँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ एँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ लॄँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ लृँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ॠँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऋँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऊँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ उँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ईँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ इँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ आँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

सम्पूर्ण जप आज्ञा चक्रस्थित क्षकारात्मक भगवती को समर्पण करे तथा पिण्ड में जप के पश्चात् इसी प्रकार सहस्त्रार स्थित पत्रों पर जप कर महादेवी को जप समर्पण करे।

ॐ स्वागतं देवदेवेशि सन्निधौ भव कालिके।
गृहाण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाषिताम्॥

हे ईश्वरि! मानसी पूजा ग्रहण कर हमें सान्निध्यत्त्व प्रदान कर यथार्थ का दर्शन करायें॥

अक्षमालाजपविधिं परिपूर्णम्

❀

बाह्यपूजनम्

वाह्यपूजनक्रमेप्रधानकलशस्थापनम्

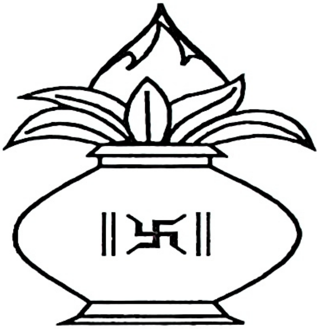

ॐ फट्। पात्र प्रच्छालित करे।

ॐ यँ नमः। मन्त्र से दोषों का संशोषण करे।

ॐ रँ नमः। मन्त्र से दोषों का दाहन करे।

ॐ वँ नमः। मन्त्र से सम्प्लावन करे।

ॐ नमः। जल से मार्जन कर आधारपात्र पर स्थापित कर कलश संस्कार करे।

भूमिस्पर्श—**ॐ महीद्यौः पृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्।। पिपृतानोभरीमभिः।।**

सप्तधान्य विखेरना—**ॐ ओषधयः समवदन्तसोमेनसहराज्ञा।। यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि।।**

कलशस्थापन—**ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्विन्दवः।। पुनरूर्ज्जानिवर्त स्वसानःसहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः।।**

कलश में जल भरना—**ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिवरुणस्यऽऋतसदनमसिवरुणस्यऽऋतसदनमासीद।**

कलश में गन्ध डाले—**ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्न्यक्ष्मादमुच्यत।।**

कलश में सर्वौषधी डाले—**ॐ याओषधीःपूर्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा।। मनैनु बभ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च।।**

कलश में दूर्वा डाले—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्पपरि॥ एवानो दूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥**

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अश्वत्त्थेवोनिषदनंपर्ण्णेवोव्वसतिष्कृता॥ गोभाजऽ इत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्॥**

कलश में कुश डाले—**ॐ पवित्रैस्त्थोव्वैष्ष्णव्व्यौसवितुर्व्वःप्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पवित्रैणसूर्य्यस्यरश्मिभिः॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः॥**

कलश में पुंगीफल डाले—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्यायाश्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिःकविरग्ग्निर्हव्व्यान्न्यक्क्रमीत्॥ दधद्रत्नानि दाशुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमां अस्म्मैदेवायहविषाविधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः॥ व्वासोअग्ग्ने व्विश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वव्विभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ व्वस्न्नेवव्विक्क्रीणावहाऽ इषमूर्ज्जꣳशतक्क्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्यायाश्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

वरुण ध्यान आवाहन पञ्चोपचार पूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्न्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। इस जल में वरुण अपने आयुध, शक्ति तथा परिवार के सहित आकर अवस्थित हों।

ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कला।
सङ्गृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित होता है, उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षी (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकायें स्थित हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तमहाद्वीप, अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं।३॥

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ हैं, पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सहिताः तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ, नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्तदुरितों के लिए क्षयकारक हों तथा समस्त पापों को नष्ट करने वाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग स्वरूप होकर कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरितों को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें तथा हमारे यजनकार्य की पूर्णता प्रदान करें॥८॥

प्रतिष्ठा—हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो॑जू॒ति॑र्जुषता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्स्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्ट्टं॒य्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु॥ विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, हमारे लिए इससे इतर कुछ नहीं है।

कलशपूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर वरुणादि देवताओं का ध्यान करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर, ध्यानकर आसन समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयंजलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पयः पात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण के बाद नैवेद्य देवता के सामने रख करके धूपदीप प्रज्वलित करके धूप दिखाये।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेला-लवङ्गादिसहित ताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फल लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्‌गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

आरती करने के बाद हाथ धोकर दोनों हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प ग्रहण कर परिक्रमा कर देवता को समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

रक्ष रक्ष जलाध्यक्ष रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं पश्चिमाधीश! प्राणीनां जीवनं परम्॥१॥

हे जलाध्यक्ष! हमारी सभी प्रकार से रक्षा करें-रक्षा करें, हे जीवनदायक! हमारे जीवन की रक्षा करें। हे पश्चिम दिशा के स्वामी! प्राणियों को जीवन प्रदान करनेवाले! हमारी रक्षा करें॥१॥

विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतं।
विशेषार्घ्यं प्रदाप्यामि सर्वदा रक्षणं कुरु॥२॥

हे वरुणादि आवाहित देवता! चन्दन, रजनी पुष्प तथा विविध द्रव्यों से संयुक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ हमारी सर्वदा रक्षा कीजिये॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

कलशप्रार्थना—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

हे कुम्भ! देवताओं और दानवों के बीच समुद्रमन्थन हुआ तब तुम उत्पन्न हुए, तुम्हें स्वयं विष्णु ने धारण किया था॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

तुम्हारे जल में सभी तीर्थों की प्रतिष्ठा है, तुममें सभी देवताओं का वास है, तुमसे ही सभी प्राणि प्रतिष्ठित हैं, तुममें ही सभी के प्राण प्रतिष्ठित है॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनायें फलवान होती है, हे जलोद्भव कुम्भ! तुम्हारी कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करनेवाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सांनिध्य प्रदान करें॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दर श्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दरमङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले, हे जलाधिनाथ! आपको बार-बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

पाश को हाथ में धारण करनेवाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करनेवालों के नायक, जब तक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती तब तक सांनिध्य प्रदान करें॥७॥

प्रार्थनासमर्पणम्—हाथ में जल लेकर प्रार्थना समर्पण करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से जल लेकर पूजन समर्पित करे।

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावहित देवताः प्रीयन्तां न मम॥

कलशपूजनं परिपूर्णम्

⁂

वाह्यपूजनक्रमेपीठदेवतास्थापनंपूजनञ्च

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ मण्डूकाय नमः मण्डूकशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कालाग्निरुद्राय नमः कालाग्निरुद्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कच्छपाय नमः कच्छपशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आधारशक्तये नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ प्रकृतये नमः प्रकृतिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कूर्माय नमः कूर्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अनन्ताय नमः अनन्तशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पृथिव्यै नमः पृथ्वीशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षीरसमुद्राय नमः क्षीरसमुद्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रत्नद्वीपाय नमः रत्नद्वीपशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कल्पवृक्षाय नमः कल्पवृक्षशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मणिमण्डपाय नमः मणिमण्डपशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः स्वर्णसिंहासनशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धर्माय नमः धर्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्ञानाय नमः ज्ञानशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैराज्ञाय नमः वैराज्ञशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐश्वर्याय नमः ऐश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अधर्माय नमः अधर्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अज्ञानाय नमः अज्ञानशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अवैराज्ञाय नमः अवैराज्ञशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनैश्वर्याय नमः अनैश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कल्पान्तकारायानन्ताय नमः कल्पान्तकारायअनन्तशक्ति-श्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पद्माय नमः पद्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आनन्दकन्दाय नमः आनन्दकन्दशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं संविन्नालाय नमः संविन्नालशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विकारमयकेशरेभ्यो नमः विकारमयकेशरशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः प्रकृत्यात्मकपत्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः पञ्चाशद्वर्णकर्णिकाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

पूजन करके कलाओं सहित वह्नि-अर्क-सोममण्डलों का पूजन करे।

अग्निमण्डलम्

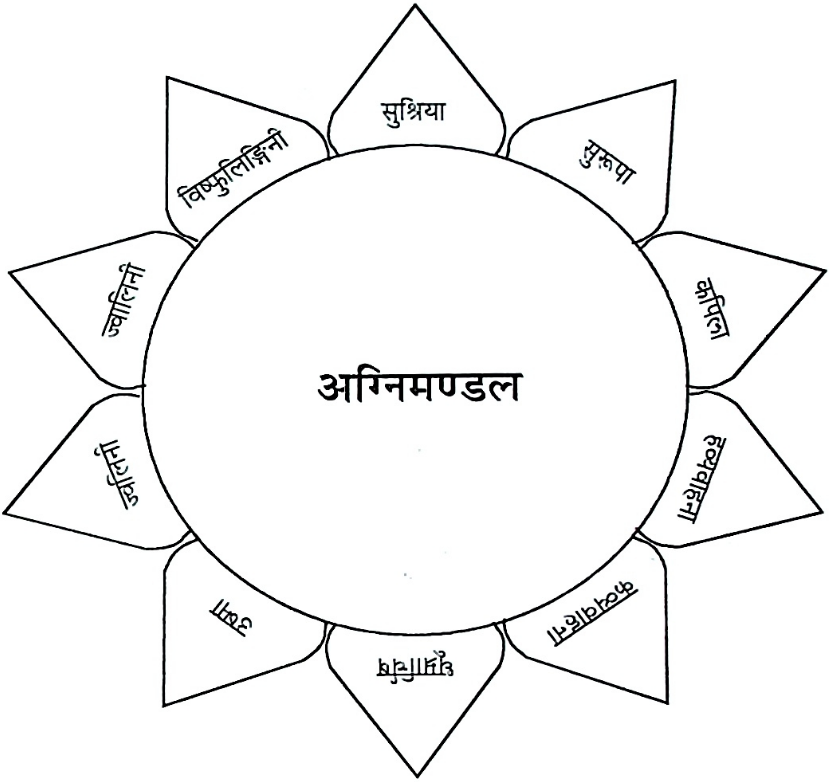
सुश्रिया
सुरूपा
कपिला
हव्यवाहा
कव्यवाहा
धूम्रार्चि
ऊष्मा
ज्वलिनी
ज्वालिनी
विस्फुलिङ्गिनी
अग्निमण्डल

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाँ वीँ वूँ ह स क्ष म ल व र यूँ धर्म दशकलात्माने रँ अग्निमण्डलाय नमः अग्निमण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ धूम्रार्चिषे नमः धूम्रार्चिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ ऊष्मायै नमः ऊष्माशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ ज्वलिन्यै नमः ज्वलिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः विस्फुलिङ्गिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ सुश्रियै नमः सुश्रियाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सुरूपायै नमः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ कपिलायै नमः कपिलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ळँ हव्यवाहनायै नमः हव्यवाहनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ कव्यवाहनायै नमः कव्यवाहनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

अर्कमण्डलम्

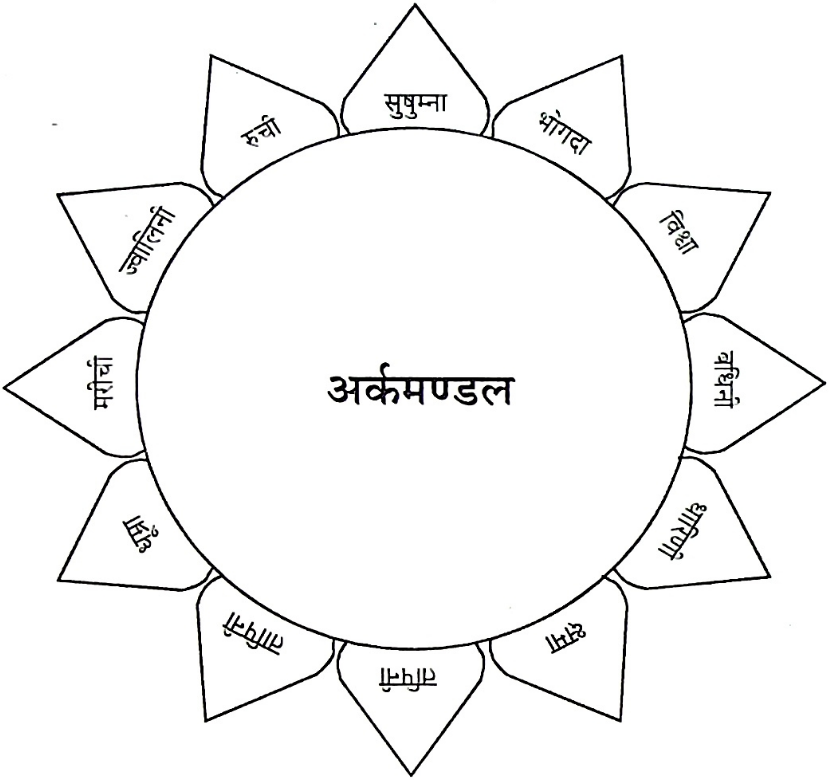

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हाँ हीँ हूँ ह स क्ष म ल व र यूँ वसुप्रदत्तद्वादशकलात्मने मँ सूर्यमण्डलाय नमः सूर्यमण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ भँ तपिन्यै नमः तपिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ बँ तापिन्यै नमः तापिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ फँ धूम्रायै नमः धूम्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ पँ मरीच्यै नमः मरीचिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ धँ रुच्यै नमः रुचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ, दँ सुषुम्णायै नमः सुषुम्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ थँ भोगदायै नमः भोगदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ तँ विश्वायै नमः विश्वाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ णँ बोधिन्यै नमः बोधिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ ढँ धारिण्यै नमः धारिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ डँ क्षमायै नमः क्षमाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

वह्नि और अर्क मण्डलों तथा उनकी कलाओं के पूजन के बाद सोम मण्डल का पूजन करने के बाद सोम कलाओं का वामावर्त्त क्रम से पूजन करे।

सोममण्डलम्

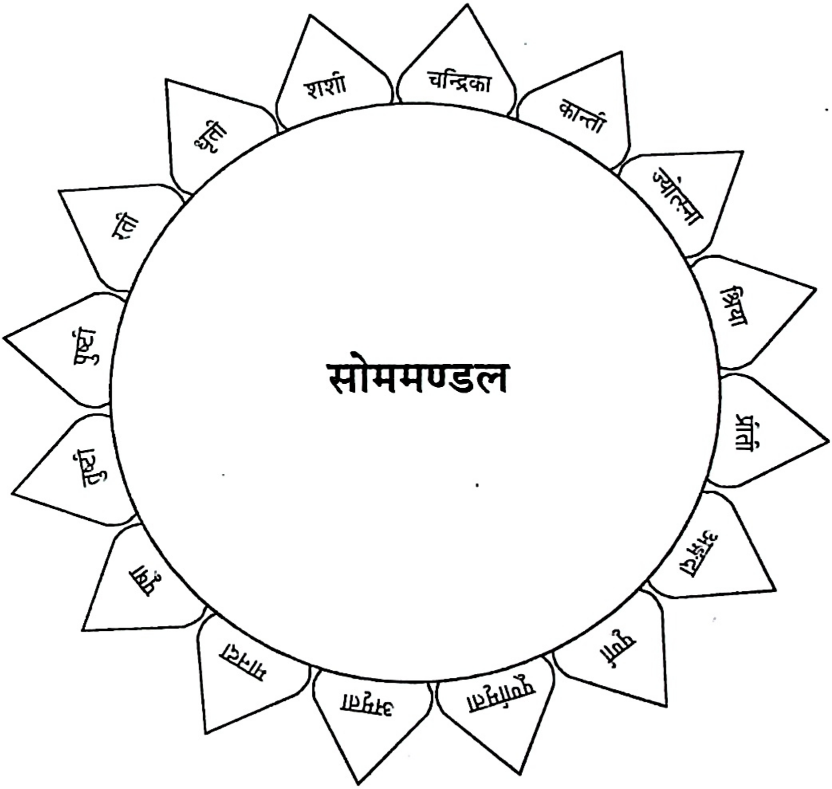
सोममण्डल
चन्द्रिका
कान्ती
ज्योत्स्ना
श्रिया
प्रीती
अङ्गदा
पूर्णा
पूर्णामृता
अमृता
मानदा
पूषा
तुष्टी
पुष्टी
रती
धृती
शशी

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साँ सीँ सू स ह क्ष म ल व र यूँ कामप्रदामृतादिपोडशकलात्मने वँ सोममण्डलाय सोममण्डलाय नमः सोममण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अमृतायै नमः अमृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ मानदायै नमः मानदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं इँ पूषायै नमः पूषाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ईँ तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं उँ पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ऊँ रत्यै नमः रतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ऋँ शशिन्यै नमः शशिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ॠँ धृत्यै नमः धृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ऌँ चन्द्रिकायै नमः चन्द्रिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ॡँ कान्त्यै नमः कान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं एँ ज्योत्स्नायै नमः ज्योत्स्नाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ऐँ श्रियै नमः श्रियाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ओँ प्रीत्यै नमः प्रीतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं औँ अङ्गदायै नमः अङ्गदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं अँ पूर्णायै नमः पूर्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं अः पूर्णामृतायै नमः पूर्णामृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं सँ सत्त्वाय नमः सत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं रँ रजसे नमः रजःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं तँ तमसे नमः तमःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं आँ आत्मने नमः आत्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं अँ अन्तरात्मने नमः अन्तरात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं पँ परमात्मने नमः परमात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं ज्ञाँ ज्ञानात्मने नमः ज्ञानात्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं माँ मायातत्त्वाय नमः मायातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं कँ कलातत्वाय नमः कलातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विँ विद्यातत्वाय नमः विद्यातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं पँ परतत्वाय नमः परतत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

वह्नि, अर्क और सोम मण्डलों के पूजन के बाद अष्टदल बनाकर जया, विजया, अजिता, अपराजिता, नित्या, विलासिनी, दोग्ध्रा, अघोरा, मङ्गलादि शक्तियों का आवाहन स्थापन करके पूजन करे।

वाह्यपूजनक्रमेपीठशक्तिनां पूजनम्

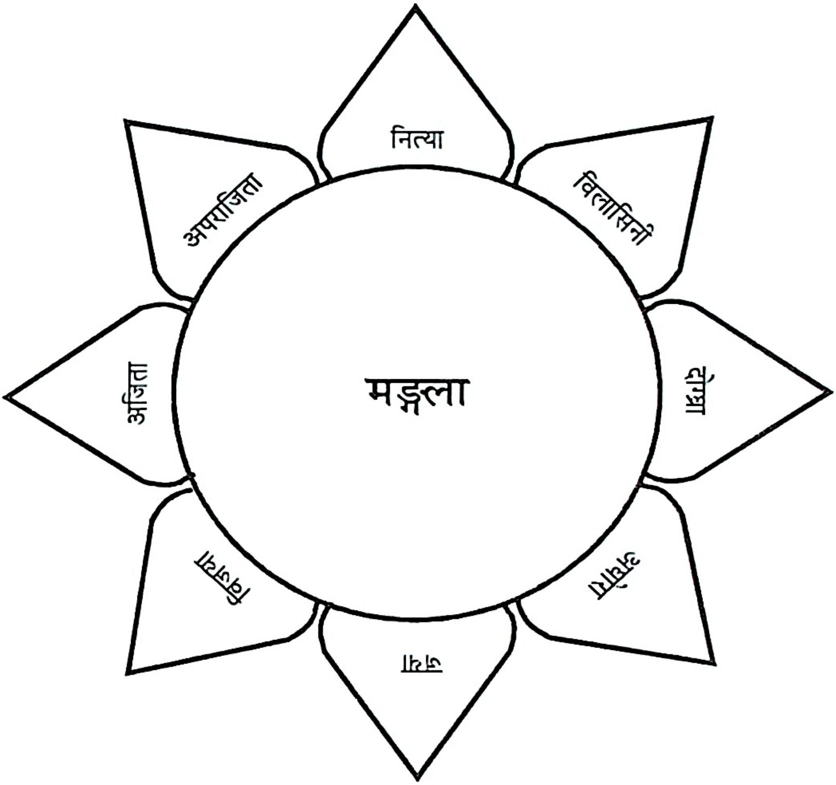
नित्या
विलासिनी
दोग्ध्री
अघोरा
जया
विजया
अजिता
अपराजिता
मङ्गला

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौं आधार शक्तिभ्यो नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौं जयाशक्तिभ्यो नमः जयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौं विजयाशक्तिभ्यो नमः विजयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौं अजिताशक्तिभ्यो नमः अजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौं अपराजिताशक्तिभ्यो नमः अपराजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौं नित्याशक्तिभ्यो नमः नित्याशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ विलासिनीशक्तिभ्यो नमः विलासिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ दोग्ध्राशक्तिभ्योनमः दोग्ध्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ अघोराशक्तिभ्यो नमः अघोराशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ मङ्गलाशक्तिभ्यो नमः मङ्गलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ कामकलाकालिकायोगपीठात्मने नमः विपरीतप्रत्यङ्गिराशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः प्रेतासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्।
शूलं कपालं दधतीं कराब्जैः रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्॥१॥

रक्त के समुद्र में पोत के सदृश अरुण वर्ण के पद्म पर आसीन हाथ में पाश-अंकुश-धनुष-खड्ग-बाण-शूल-कपाल से शोभायमान, रक्तवर्ण तथा तीन नेत्रोंवाली प्राणदेवी को प्रणाम॥१॥

पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषूच्छूलं हस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥२॥

हाथों में पाशचापसृक्कपालशूल धारण किये हुए रक्त वर्णवाली रक्तवर्ण के कमल के आसन पर बैठी हुई प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥२॥

मानसोपचार पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतप्रत्यङ्गिरायोगपीठात्मने नमः विपरीतप्रत्यङ्गिरा योगशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ सर्वशक्तिकमलासनाय नमः कमलासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पीठदेवतापूजनं परिपूर्णम्

* * *

वाह्यपूजनक्रमेविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायन्त्रपूजनम्

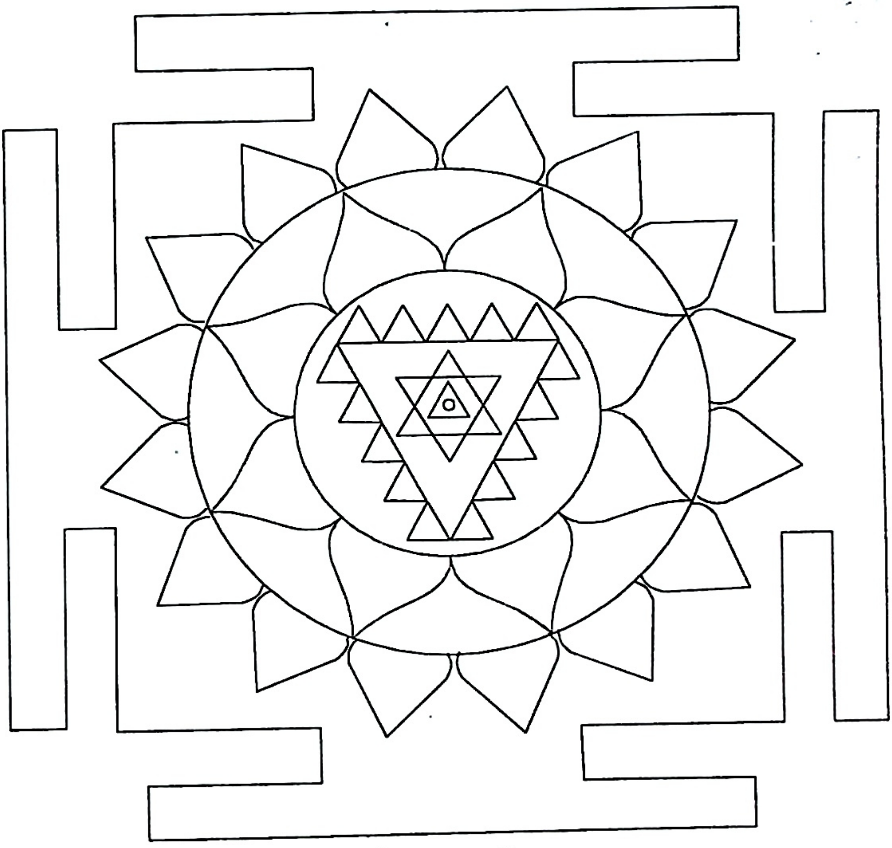

श्रीष्टविपरीतमहाप्रत्यङ्गिराध्यानम्

यन्त्रस्थ विन्दु में देवी का ध्यान करे—

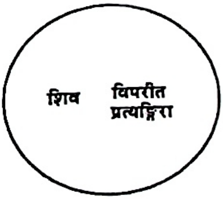
शिव
विपरीत प्रत्यङ्गिरा

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ध्यायामि ध्यानोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ध्यान करके यन्त्र पर पुष्प चढ़ाये।

आवाहनम्

आवाहनीमुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे—

ॐ अत्मसंस्थामजां शुद्धां त्वां देवी परमेश्वरी।
आरण्यमिह हव्यांशं मूर्त्त्यामावाहयाम्यहम्॥

हे देवि परमेश्वरि! आत्मा के भीतर रहने वाली, परमशुद्धा, अजा, अभावों में पूर्ति करने वाली विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा देवी के मूर्तिस्वरूप का आवाहन करते हैं।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इहागच्छ, आवाहयामि आवाहनार्थे पुष्पं निवेदयामि। आवाहनी मुद्रा के द्वारा पुष्प निवेदन करे।

अनिवार्य निर्देश—यन्त्र तथा मूर्ति में आवाहन न करे, अन्यत्र पूजन में आवाहनी मुद्रा के द्वारा आवाहन अवश्य करे।

आवाहनीमुद्रालक्षणम्

अनामामूलसंलग्नां अङ्गुष्ठाग्राञ्जलिरीरिता।
देवाह्वानकारी चैषा मुद्रावाहनसंज्ञिका॥

अनामिका अङ्गुली के मूल में अङ्गुष्ठाग्र भाग का संयोजन करके अञ्जलि का स्वरूप बनाकर देवताओं के आवाहन में प्रयोग की जानेवाली आकृति को विद्वान् लोग आवाहनीमुद्रा कहते हैं।

आसनम्

पद्ममुद्रा के द्वारा पुष्प रूपी आसन समर्पित करे—

ॐ सर्वान्तर्यामिन्यै देवि सर्वबीजमये शुभे।
स्वात्मस्थायै परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम्॥

हे देवि परमेश्वरि! सभी प्राणियों में बीजरूप से निवास करनेवाली, सभी शुभों को प्रदान करनेवाली, सर्वान्तर्यामी, पर स्थान में अपने आत्मारूप परमशुद्ध आसन का चिन्तन पूर्वक समर्पण करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा आसनं समर्पयामि, आसनार्थे पुष्पं निवेदयामि। हाथों से पद्ममुद्रा बनाकर उसमें विविध प्रकार के रंग विरंगें पुष्प समर्पित करे।

पद्ममुद्रालक्षणम्

करोतु सम्मुखीकृत्यसंहतावुन्नताङ्गुली।
तलारन्तमिलिताङ्गुष्ठौ कुर्यादेषाब्जमुद्रिका॥

दोनों हाथों को आगे की तरफ करके हथेली तथा अङ्गुलियों को भीतर की तरफ झुके हुए तथा अङ्गुष्ठ को तल में मिला देने से जो आकृति बनती है, उसे तन्त्रागम ज्ञाता विद्वान् पद्ममुद्रा कहते हैं।

स्थापनम्

स्थापनीमुद्रा द्वारा पुष्प समर्पित करे, गुरुप्रदत्त यन्त्र पर प्रतिष्ठा न करे—

ॐ देवि त्वं भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव॥१॥

हे देवि परमेश्वरि! अपने आवरण (परिवार) सहित भक्ति द्वारा प्रसन्न होने वाली, जब तक हम पूजन करते हैं तब तक यहाँ स्थिर रह कर हमारा पूजन ग्रहण करें॥१॥

तवायं महिमामूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वगां प्रभो।
भक्तिस्नेहसमाकृष्टो दीपवत् स्थापयाम्यहम्॥२॥

तुम्हारी सर्वज्ञ महिमामयी मूर्ति भक्ति और प्रेमपूर्वक आवाहित करके दीपकलिकाकृति के समान स्थापित करता हूँ॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय स्थापनं समर्पयामि स्थापनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। स्थापनी मुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे।

स्थापनीमुद्रालक्षणम्

अनामामूलसंलग्नां अङ्गुष्ठाग्राञ्जलिरीरिता।
अधोमुखि कृता सैव स्थापनीति निगद्यते॥

अनामिका अङ्गुलि के मूल में अङ्गुष्ठाग्र का संयोजन करके अञ्जलिस्वरूप बनाकर अधोमुख करने पर देवताओं के स्थापन के लिए स्थापनी नाम की मुद्रा कही जाती है।

प्रतिष्ठा

स्थापनीमुद्रा द्वारा पुष्प समर्पित करे—

ॐ अस्मिन्वरानने देवि सुखासीनाक्षरात्मिके।
सुप्रतिष्ठिता स्थापिता त्वं नमामि परमेश्वरि॥

हे अक्षरात्मिका! वर प्रदान करनेवाली महादेवि! सुखपूर्वक आसन पर प्रतिष्ठित स्थापित हो जाओ, हे परमेश्वरि! तुम्हें नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इहागच्छ इहागच्छ इहप्रतिष्ठिता भव, प्रतिष्ठोपचारार्थे पुष्पं निवेदयामि। स्थापनी मुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे।

सन्निधानम्

सन्निधानमुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे—

ॐ अनन्याशक्तिदेवेशि मूर्तिशक्तिरियं प्रभो।
सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्परे॥

अनन्त शक्तियों की स्वामिनी, देवी परमाशक्ति भक्तों पर अनुग्रह करने में तत्पर रहनेवाली इस मूर्ति में प्रविष्ट होकर हमें सान्निध्य प्रदान करो।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इह सन्निधेहि सन्निधानार्थे अक्षतान् निवेदयामि। सन्निधान मुद्रा के द्वारा देवी के सम्मुख पुष्प समर्पित करे।

सन्निधानमुद्रालक्षणम्

आश्लिष्ठमुष्ठियुगला प्रोन्नताङ्गुष्ठयुग्मका।
सन्निधाने समुद्दिष्टा मुद्रेयं तन्त्रवेदिभिः॥

दोनों हाथों से अलग अलग मुष्ठिका बनाकर दोनों मुष्ठिकाओं को आपस में अङ्गुलियों के तरफ से मिला कर निर्मित आकृति को देवताओं के सन्निधान के लिए प्रयोग करते हैं।

सन्निरोधनम्

सन्निरोधनमुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ आज्ञया तव देवेशि कृपाम्भोधे गुणाम्बुधः।
आत्मनाचैकदृप्तां त्वां संरुणद्धि महेश्वरी॥

हे देवेशि! आपके गुणों के ज्ञाता भक्त, आपके कृपा प्रसाद के लिए, आपकी आज्ञा से अपनी आत्मा में ऐक्यभाव से ध्यान करते हैं अत: आप आत्मा को सम्पूर्ण रूप से आच्छादित करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इह सन्निरुध्यस्व सन्निरोधनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। सन्निरोधन मुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे।

सन्निरोधनमुद्रालक्षणम्

आश्लिष्ठमुष्ठियुगला प्रोन्नताङ्गुष्ठयुग्मका।
अङ्गुष्ठगर्भिणी सैव सन्निरोधे समीरिता॥

दोनों हाथों से अलग अलग अंगुष्ठ को भीतर की तरफ रख कर मुष्ठिका बनाकर दोनों मुष्ठिकाओं को आपस में अङ्गुलियों के तरफ से मिलाकर निर्मित आकृति को देवताओं के सन्निरोधन के लिए प्रयोग करते हैं। विद्वान् इसे सन्निरोधनमुद्रा के नाम से कहते है।

सम्मुखीकरणम्

सम्मुखीकरणमुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ आज्ञाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधकस्य च।
मम ऊनं भवेद् कृत्यं तदाप्याभिमुखी भव॥

साधकों का मन दुर्बोध से ग्रस्त होकर विकल हो जाता हैं उस दुर्मनःस्थिति को समाप्त करने तथा अपने सान्निध्य के लिए हमारे सम्मुख हों।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इह सम्मुखि भव सम्मुख्यार्थे अक्षतान् निवेदयामि। सम्मुखिकरण मुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे।

सम्मुखीकरणमुद्रालक्षणम्

कनिष्ठिकामूलाङ्गुष्ठसंयोज्यासरलाञ्जलिः ।
हृदि बद्धाञ्जलिमुद्रा सन्मुखीकरणे मता॥

कनिष्ठिका के मूल में अङ्गुष्ठ को समावेशित करके समस्त अङ्गुलियों को सीधा करके अञ्जलि की आकृति से देवताओं का सम्मुखीकरण होता है, तन्त्रशास्त्र के विद्वान् इसे सम्मुखीकरणमुद्रा कहते हैं।

अवगुंठनम्

भ्रामितमुद्रा के द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ विपरीतप्रत्यङ्गिरा! जीव-रक्षिणीमेव च।
अवगुंठनपूजार्थं सुहृदया सदा भव॥

जीवों की रक्षा करनेवाली विपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता की पूजा के लिए अवगुण्ठन कर रहा हूँ, हमारे ऊपर सदा प्रसन्न हों।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतपरप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इह अवगुंठयामि अवगुंठनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। भ्रामित मुद्रा के द्वारा अक्षत समर्पित करे।

अवगुंठन(भ्रामित)मुद्रालक्षणम्

सव्यहस्तकृतामुष्टिः दीर्घाधोमुखतर्जनी।
अवगुण्ठनमुद्रेयममितो भ्रामिता भवेत्॥

दाहिने हाथ को मुष्ठि की आकृति बनाते हुए तर्जनी अङ्गुलि को सीधा करके नीचे की तरफ करके देवताओं के चारो तरफ घुमाने से भ्रामिती करण होता है। विद्वज्जन इस आकृति को अवगुंठन या भ्रामितमुद्रा कहते हैं।

सकलीकरणम्

सकलीकरणमुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ दशपीयूषवर्षिण्या पूरयेद्यज्ञविष्ठरम्।
मूर्तौदा यज्ञसम्पूर्तौ स्थिरा भव महेश्वरी॥

दशवर्षावच्छिन्न(दशवर्ष की कन्याओं) के द्वारा काते गये सूत से आपके लिए यज्ञविष्ठर निर्माण किया गया है, यज्ञ के सम्पूर्ति के लिए मूर्ति में प्रविष्ठ होकर हे महेश्वरी! स्थिर हो जायें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय सकलीकरणार्थे अक्षतान्निवेदयामि। षडङ्गन्यासात्मक सकलीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे।

ॐ हूं हृदयाय नमः। अक्षत निवेदन करे।

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। अक्षत निवेदन करे।

ॐ ऐं शिखायै वषट्। अक्षत निवेदन करे।

ॐ विपरीतप्रत्यङ्गिरायै कवचाय हुम्। अक्षत निवेदन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतप्रत्यङ्गिरायै नेत्रत्रयाय वौषट्। अक्षत निवेदन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अस्त्राय फट्। अक्षत निवेदन करे।

सकलीकरणमुद्रालक्षणम्

देवाङ्गेषु षडङ्गानां न्यासः स्यात्सकलीकृतिः।
लेलिहाना कृतान्यासः देवताप्रीतिदायिनी॥

देवताओं के हृदय, शिर, शिखा, भुजा, नेत्र तथा चारो तरफ लेलिहानमुद्रा से तत्तद् स्थानों पर षडङ्ग न्यास करने को विद्वान् लोग सकलीकरण कहते हैं।

अमृतीकरणम्

धेनुमुद्रा के द्वारा अमृतीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ स्वभक्तवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणार्पिते।
स्वतेजःपुञ्जरेणाशु वेष्टिता भव सर्वतः॥

अपने भक्त के वाणी, मन, चक्षु, श्रोत्र, जिह्वा, घ्राण में अपने तेज:पुञ्ज से सर्वतः आवेष्टित (व्याप्त)करके स्थिर हों।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय अमृतीकरणं समर्पयामि अमृतीकरणार्थे अक्षतान् निवेदयामि। धेनु मुद्रा के द्वारा अमृतीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे।

धेनुमुद्रालक्षणम्

अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठानामिका पुनः।
तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिताः॥

दोनों हाथों की अनामिका का कनिष्ठिका के साथ तथा मध्यमा का तर्जनी के साथ आपस में संयोजन करने से जो आकृति बनती है उसे तन्त्र के ज्ञाता धेनुमुद्रा कहते है।

परमीकरणम्

महामुद्रा के द्वारा परमीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ समुद्भूतं सुसौन्दर्यं सौन्दर्यारुणविग्रहम्।
दिव्यतेजस्सुसम्पन्ना शक्त्यक्षरात्मरूपिणी॥

दिव्यतेज से सुसम्पन्न अक्षरात्मिकारूपिणी, सौन्दर्य से उत्पन्न सौन्दर्यरूपिणी, हमारे हृदय में परमात्मभाव से अवस्थित हों।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतपरप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय परमीकरणं समर्पयामि परमीकरणार्थे अक्षतान् निवेदयामि। महा मुद्रा के द्वारा परमीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे।

परमीकरणमहामुद्रालक्षणम्

अन्योन्यग्रथिताङ्गुष्ठौ प्रसारितकराङ्गुलिः।
महामुद्रेयमुदिता परमीकरणे बुधैः॥

दोनों हाथों के अङ्गुष्ठ को आपस में ग्रथित(मिला) करके शेष सभी अङ्गुलियों को सरल करके प्रसारित करने से जो आकृति निर्मित होती है तन्त्रज्ञ विद्वान् इसे महामुद्रा कहते है।

स्वागतम्

स्वागतमुद्रा के द्वारा स्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये।
तस्यै ते परमेशानी आगतं स्वागतं तथा॥

समस्त देवता अपने कामनाओं की पूर्ति के लिए जिनके दर्शन की सदैव इच्छा करते हैं उन परम ईश्वरी विपरीतप्रत्यङ्गिरादेवी का आगमनार्थ स्वागत करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय

सपरिवाराय स्वागतं समर्पयामि स्वागतार्थे अक्षतान् निवेदयामि। स्वागत मुद्रा के द्वारा स्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे।

सुस्वागतम्

सुस्वागतमुद्रा के द्वारा सुस्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवनञ्च मे।
आगता भव देवेशि सुस्वागतमिदं पुनः॥

भक्तों का जीवन जिसके आगमन से सफल हो जाता है और समस्त कामनायें पूरी हो जाती हैं तथा भक्त अनुगृहीत हो जाते हैं उनके आगमन पर सुस्वागत करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय सुस्वागतं समर्पयामि सुस्वागतार्थे अक्षतान्निवेदयामि। सुस्वागत मुद्रा के द्वारा सुस्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे।

प्राणस्थापनम्

लेलिहानमुद्रा के द्वारा प्राणस्थापन करे—

ॐ सञ्चरन्ति भूताः सर्वे जीवने प्रवहन्ति च।
अरुणाभासुषुम्नाशक्तिः प्राणान् स्थापयाम्यहम्॥

जिनकी कृपा से सभी भौतिक सांसारिक प्राणियों का जीवन चलता रहता हैं उन अरुण आभावाली सुषुम्ना में प्रवाहित होनेवाली, परम प्रकाशमान तडित विद्युताकारा प्राणशक्ति की स्थापना करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय प्राणान्स्थापयामि प्राणान्स्थापनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। लेलिहान मुद्रा के द्वारा प्राणस्थापन करे।

सुवर्णादि प्रतिमा पर अग्न्युत्तारण पूर्वक लेलिहानमुद्रा से प्राणस्थापन करे—

लेलिहानमुद्रालक्षणम्

तर्जनीमध्यमानामाः समाः कुर्यादधोमुखीः।
अनामायां क्षिपे द्वामूर्ध्वकृत्त्वा कनिष्ठिकाम्॥१॥

तर्जनी-मध्यमा-अनामिका अंगुलियों को बराबर सीधा करके अधोमुख कर अनामिका को अङ्गुष्ठ से संयोजित करने से लेलिहान नामक मुद्रा बनती हैं इसे जीव न्यास में प्रयोग किया जाता है॥१॥

लेलिहानामुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता।
तस्योर्ध्वमुखं कृत्त्वा च तत्त्वाख्यमुद्रामुच्यते॥२॥

लेलिहानमुद्रा को ऊर्ध्वमुख करने से निर्मित आकृति को तन्त्रशास्त्र के ज्ञाता विद्वान तत्त्वाख्यमुद्रा कहते है।।२।।

अष्टमुद्राप्रदर्शनम्

तत्तद् मुद्राओं से निर्दिष्ट मुद्राओं का प्रदर्शन करे—

ॐ योनिमुद्रामहायोनिः डमरुं खड्गमुण्डं च।
वराऽभयत्रिशूलञ्च दर्शयामि महाशिवे।।

हे महाशिवे! योनिमुद्रा, महायोनिमुद्रा, डमरु, खड्ग, मुण्ड, वर, अभय, त्रिशूल मुद्राओं को तत्तद् मुद्राओं से प्रदर्शित करे।

योनिमुद्रालक्षणम्

मिथः कनिष्ठिके बद्ध्वा तर्जनीभ्यामनामिके।
अनामिकोर्ध्वसंश्लिष्ट दीर्घमध्यमयोरधः।।
अङ्गुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता।।

दोनों हाथों के अनामिका और तर्जनी अंगुलि को आपस में ग्रथित करके उसके ऊपर मध्यमायुगल अङ्गुलि को स्थापित करे तथा कनिष्ठिका अङ्गुलियुगल को नीचे से संश्लिष्ट करने से योनिमुद्रा बनती है।

योनिमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा योनिमुद्रां प्रदर्शयामि।

महायोनिमुद्रालक्षणम्

तर्जन्यनामिके मध्ये कनिष्ठे च क्रमादपि।
करयोर्योजयेच्चैव कनिष्ठामूलभेदतः।।
अङ्गुष्ठाग्रं तु निःक्षिप्य महायोनिः प्रकीर्तिताः।
अधोमुखीमिमां कृत्वा दर्शयेद् बीजपूर्वकम्।।

दोनों हाथों के अनामिका और तर्जनी अङ्गुलि को आपस में ग्रथित करके उसके ऊपर मध्यमायुगल अङ्गुलि को स्थापित करे, उसके ऊपर उसी तरह से कनिष्ठिका अङ्गुलियुगल को स्थापित करने से महायोनिमुद्रा बनती है।

महायोनिमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा महायोनिमुद्रां प्रदर्शयामि।

खड्गमुद्रालक्षणम्

कनिष्ठेऽनामिके बद्ध्वा स्वाङ्गुष्ठेनैव दक्षतः।
श्लिष्टाङ्गुली तु प्रसृत्ये संदृष्टे खड्गमुद्रिका।।

अङ्गुष्ठ से कनिष्ठिका और अनामिका को आबद्ध करके तर्जनी और मध्यमा को सीधा करने से जो आकृति बनती है, उसे विद्वान लोग खड्‌गमुद्रा कहते हैं।

खड्‌गमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा खड्‌गमुद्रां प्रदर्शयामि।

मुण्डमुद्रालक्षणम्

मुण्डोभयहस्तेन विधायोर्ध्वंसमुन्नयेत्।
मुद्रामुण्डाभिधाख्याता सर्वविघ्नविनाशिनी॥

दोनों हाथ की मुष्ठिका बनाकर एक दूसरे से सटाकर हाथ को ऊपर की तरफ स्थापित करने पर सभी विघ्नों का विनाश करनेवाली मुण्डमुद्रा बनती है।

मुण्डमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मुण्डमुद्रां प्रदर्शयामि।

डमरुमुद्रालक्षणम्

बद्धमुष्ठिकृतं हस्तं चालयेत्स्वयमेव च।
डमरुमुद्राविख्याता दुष्टानां भयकारिणी॥

दोनों हाथ की मुष्ठिका बनाकर एक के ऊपर दूसरा स्थापित कर चलाने से दुष्टों को भयाक्रान्त करनेवाली डमरुमुद्रा बनती है।

डमरुमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा डमरुमुद्रां प्रदर्शयामि।

त्रिशूलमुद्रालक्षणम्

अङ्गुष्ठेकनिष्ठान्तु बद्धाश्लिष्टाङ्गुलित्रयम्।
प्रसारयेच्च त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता॥

अंगुष्ठ को कनिष्ठिका से आबद्ध करके शेष सभी अंगुलियों को सीधा रखने पर त्रिशूल संज्ञावाली मुद्रा बनती है।

त्रिशूलमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा त्रिशूलमुद्रां प्रदर्शयामि।

वरमुद्रालक्षणम्

ऊर्ध्वं प्रसारितं हस्तं आशीर्वादात्मकं तथा।
मुद्रावरदविख्याता भक्तानां सिद्धिदायिनी॥

दक्षिण हाथ को ऊपर की तरफ सीधा करके आशीर्वादात्मक रूप की आकृति भक्तों को सिद्धि प्रदान करनेवाली, वर नामक मुद्रा बनती है।

वरमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा वरमुद्रां प्रदर्शयामि।

अभयमुद्रालक्षणम्

अधोमुखं प्रसारितं दक्षहस्तं प्रदर्शयेत्।
मुद्रामभयविख्याता भक्तानां भयहारिणी॥

दक्षिण हाथ को नीचे की तरफ प्रसारने से भक्तों के भय को नष्ट करनेवाली, अभय नामक मुद्रा बनती है।

अभयमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अभयमुद्रां प्रदर्शयामि।

क्रमशः समस्त मुद्राओं को दिखाकर विपरीतप्रत्यङ्गिरा गायत्री का जप करे।

विपरीतप्रत्यङ्गिरागायत्रीमन्त्रम्

ॐ विपरीतायै विद्महे प्रत्यङ्गिरायै धीमहि तन्नोऽघोरा प्रचोदयात्॥ १०८ जप कर देवी को समर्पित करे।

अङ्गपुष्पाञ्जलिम्

ॐ नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरि॥

ॠतुओं के अनुसार उत्पन्न तरह तरह के सुगन्धित पुष्पों से संगृहित पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वरि! ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा पादयोः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। दोनो पैरों पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा जान्वोः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। दोनों जानुओं पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा नाभ्यां पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। नाभि पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा हृदये पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। हृदय पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मस्तके पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि। मस्तक पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

पाद्यम्

ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः।
तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

आपके पाद के क्षणमात्र के सम्पर्क में आने से परमानन्द हो जाता हैं, उस चरण रज के प्राप्ति की लिए शुद्ध पाद्यपदार्थ समर्पित है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा पादयोः पाद्यं समर्पयामि। गन्ध उशीर गोरोचन श्यामक विष्णुकान्ता कमल एवं दुर्वायुक्त जल अनामिका और अङ्गुष्ठ को मिलाकर यन्त्रस्थित भगवती के युगल चरणों में समर्पित करे।

अर्घ्यम्

ॐ निधीनां सर्वदेवानां त्वमनर्घ्यगुणा ह्यसि।
शवोपरिस्थिते देवी! गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

सभी देवताओं में, सभी निधियों में केवल तुम ही गुणवान् हो, शव के ऊपर आसीन हे देवि! आपको नमस्कार है, इस अर्घ्य को ग्रहण कीजिए।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। हाथ में अर्घ्य प्रदान करे।

आचमनम्

ॐ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने।
आचमनं कल्पयामीशी शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥

वेदों में उल्लिखित ज्ञान के लिए, देवताओं में देवत्व के लिए तथा शुद्धियों में शुद्धि के लिए हे ईश्वरि! आचमन समर्पित है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

हीनोन्नत समस्ताङ्गुलियों से आचमन मुद्रा के द्वारा चन्दन, पुष्प, जाती, कर्पूर, कंकोल, लवङ्ग चूर्ण जल में मिलाकर मुख में आचमन निवेदन करे।

मधुपर्कम्

ॐ सर्वकालुष्यहीनायै परिपूर्णसुखात्मने।
मधुपर्कमिदं देवि! कल्पयामि प्रसीद मे॥

सभी प्रकार के कालुष्य को समाप्त करने के लिए, पूर्णसुखासन पर आसीन हे देवि! आपको मधुपर्क समर्पित है, इसे ग्रहण करके प्रसन्न हो।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मुखे मधुपर्कं समर्पयामि। ताम्र

धातु के अर्घ्यपात्र में मधु, घृत, शर्करा युक्त मधुपर्क देवि के सम्मुख तत्त्वाख्यमुद्रा से (ऊर्ध्वमुख अनामिका, मध्यमा तथा अङ्गुष्ठ से) मधुपर्क निवेदन करे।

स्नानीयजलम्

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी दिव्यनदियों का दिव्यजल स्नान के लिए समर्पित है, हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा स्नानीयं जलं समर्पयामि।

स्नानाङ्गाचमनीयजलम्

ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वाऽपि यस्या स्मरणमात्रत:।
शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम्॥

जीव शुद्ध हो या अशुद्ध हो, किसी भी अवस्था में, जिसके स्मरण मात्र से ही जीव शुद्ध हो जाता है, उसी शुद्धता के लिए पुन: आचमनीय जल समर्पित है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा स्नानाङ्गाचमनीयं जलं समर्पयामि।

पुनरर्घ्यम्

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादुशीतलम्।
अर्घ्यं समर्पयाम्येदं कामार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

कपूर के सुगन्धि से सुगन्धित, दुध के समान स्वादवाला, समस्त कामनाओं की पूर्ति के लिए शीतल अर्घ्य रूप जल समर्पित करता हूँ प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा पुनरिदमर्घ्यं समर्पयामि। जल, कुश, अक्षत, तिल, व्रीहि, यवाज्य, पुष्पमिश्रित अर्घ्य शिर पर सर्वाङ्गुलि से निवेदन करे।

उद्वर्तनम्

ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकमातर्महाशये।
सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम्॥

सर्व लोकों में परमशुद्धात्मा, हे लोकमाता! उत्तमस्निग्ध पदार्थ स्निग्धता के लिए समर्पित है, इस स्निग्धपदार्थ को ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा उद्वर्तनं समर्पयामि। हरिद्रादि द्रव्य, तैल, चन्दन, दध्यादि संयुक्त पुष्प, परागादि निर्मित उद्वर्तन अधोमुखाङ्गुलि से निवेदित करे।

शुद्धस्नानीयजलम्

ॐ परमानन्द बोधाविध निमग्न निजमूर्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमिश्वरि॥

परमानन्द स्वरूप आत्ममूर्ति स्वरूपिणी आपको साङ्गोपाङ्ग स्नान के लिए शुद्ध जल समर्पित है, हे महेश्वरि! ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा शुद्धस्नानीयमिदं जलं समर्पयामि। स्नानीय मुद्रा से स्नानोदक प्रदान करे।

वस्त्रम्

ॐ मया चित्रपदच्छन्नं निजगुह्योरुतेजसे।
निवारणाय अविज्ञान वासस्ते कल्पयाम्यहम्॥

हमारा चित्त विभिन्न अज्ञान से आच्छन्न हो गया है, उसका आप अपने तेज से निवारण करके विज्ञान का प्रकाश करने के लिए हे देवि! वस्त्र समर्पित करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतामहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा इदं वासः समर्पयामि। वासमुद्रा से प्रदान करे।

यज्ञोपवीतम्

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण त्रिगुणेरि॥

नव तन्तुओं से निर्मित, त्रिगुण (त्रिरावृत्ति वाला) देवतामय यज्ञ में पहने जानेवाला उपवीत मैं आपको समर्पित करता हूँ, हे महादेवि! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा इदं यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उत्तरीयम्

ॐ यामाश्रित्य महादेवो जगत्संहारकः सदा।
तस्यै ते परमेशान्यै कल्पयाम्युत्तरीयकम्॥

जिस शक्ति का आश्रय ग्रहण करके महादेव इस जगत् का संहार करते हैं, उसी शक्ति की कामना से हे परमेशानि! आपको उत्तरीय प्रदान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा इदं वासः समर्पयामि।

पुष्पसारम्

ॐ जननीचम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः।
सुरभिगन्धमिदं च चतुःसमं सपदि सर्वमिदं परिगृह्यताम्॥

हे जननि! चम्पकादि पुष्पों के तैलों से निर्मित सुन्दर सुगन्धित, वस्त्रादि पर लगाने योग्य पुष्पसार आपके प्रीत्यर्थ समर्पित है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा इदं पुष्पसारं समर्पयामि।

आभूषणम्

ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानाशक्त्याश्रिते शिवे।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते॥

स्वभाव से ही अनुकूल, सुन्दर अङ्गोंवाली, समस्त शक्तियों की आश्रयभूता, हे शिवे! आपके अर्चन के लिए विभिन्न प्रकार के चित्रविचित्र आभूषण समर्पित हैं।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा इदं आभूषणं समर्पयामि।

मातृका वर्णों से मूल मन्त्र को पुटित करके देवता के अङ्गों में न्यास करे।

विन्यासम्

ॐ भावमन्त्रार्थसंयुक्तं वर्णस्वरसमन्वितम्।
मातृकारूपिणि देवि! विन्यासं परिकल्पितम्॥१॥

वाक्यार्थ से युक्त स्वर तथा व्यञ्जनवर्णों से निर्मित मन्त्रस्वरूपिणी हे देवि! मातृका विन्यास समर्पित है॥१॥

सर्वलिपिसमायुक्तामभिनवरूपधारिणीम्।
अज्ञानान्धकारनाशाय विन्यासं परिकल्पितम्॥२॥

समस्त लिपियों से समायुक्त होकर अभिनव रूप धारण करनेवाली, हमारे अज्ञान रूपी अन्धकार के नाश के लिए विन्यास कर रहा हूँ॥२॥

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः शिरसे विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः मुखे विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ

झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः कण्ठे विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः हृदये विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः नाभौ विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः जान्वोः विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः जङ्घयोः विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः पादौ विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं

क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वाङ्गं विन्यसामि।

चन्दनम्

ॐ परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि॥

सौभाग्य और परमानन्द से परिपूर्ण दिग्दिगन्तरों में सुगन्धि से व्याप्त, सुन्दर सुगन्ध से युक्त चन्दन समर्पित है, हे परमेश्वरि! कृपापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा चन्दनं समर्पयामि। सभी अङ्गुलियों से लेप करे।

अक्षतम्

ॐ अक्षतान्धवलान्देवि सुवर्णरौप्यमयीकृतान्।
गृहाण जगदीशानि प्रसीद परमेश्वरि॥

धवल अक्षतों को सुवर्ण रंग से अलंकृत करके हे संसार की ईश्वरि! आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करके प्रसन्न होईये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अक्षतं समर्पयामि।

पुष्पम्

ॐ तुरीयवनसम्भूतं नानागुणमनोहरम्।
आमन्द्रसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम्॥

हे देवि! तुरीय वन से उत्पन्न विभिन्न गुणों से युक्त सुन्दर मनोहर आनन्दस्वरूपी उत्तम पुष्प को ग्रहण कीजिये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा एतानि ऋतुकालोद्भवपुष्पाणि वौषट्। विभिन्न प्रकार के पुष्पों को समर्पित करे।

पुष्पमालाम्

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादिनी वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

माली के द्वारा निर्मित, सुगन्धित पुष्पों की माला आपके लिए लाया हूँ, हे देवि! इसे ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा पुष्पमालां समर्पयामि। दोनों हाथों से पुष्पमाला समर्पित करे।

दूर्वाम्

ॐ दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण जगदीश्वरि॥

अमृततुल्य, मङ्गल प्रदान करने वाले हरे हरे सुन्दर दूर्वा के नूतन अङ्कुर, आपके पूजा के लिए लाया हूँ, हे देवि! प्रसन्नतापूर्वक इसे ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। तत्त्वाख्य मुद्रा से दूर्वा समर्पित करे।

विल्वपत्रम्

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं त्रितया युतम्।
त्रिजन्मपापसंहारं विल्वपत्रं शिवार्पणम्॥

भगवान् शिव के तीन नेत्रों के समान तीन पत्रोंवाले, तीन जन्मों के पापों को नष्ट करनेवाले, विल्वपत्रों को शिव की प्रसन्नता के लिए हे देवि! आपको समर्पित है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा विल्वपत्राणि समर्पयामि। तत्वाख्य मुद्रा से विल्वपत्र समर्पित करे।

नानापरिमलद्रव्यम्

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्च्चितां देवीमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥

शान्ति प्रदान करनेवाला अबीर-गुलाल चन्दनादि से निर्मित विभिन्न सुगन्धित द्रव्य आपको शान्ति प्रदान करने के लिए समर्पित है॥१॥

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥२॥

नाना प्रकार के दिव्य द्रव्यों से निर्मित उत्तम अबीर नाम का सुगन्धित सुरुचिकर चूर्ण समर्पित है, हे देवि! ग्रहण करें, यह आपको शान्ति प्रदान करे॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। तत्त्वाख्य मुद्रा से अबीर समर्पित करे।

सिन्दूरम्

ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्व शोभायमान रक्तसिन्दूर, सभी सौभाग्य तथा सुख का वर्धन करनेवाला है, सभी प्रकार के शुभ की कामना के लिए सिन्दूर समर्पित करता हूँ, हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा सिन्दूरं समर्पयामि। तत्वाख्य मुद्रा से सिन्दूर समर्पित करे।

कुङ्कुमम्

ॐ कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनाऽर्चिते देवि! प्रसीद परमेश्वरि॥

दिव्यकान्ति को प्रदान करनेवाला, समस्त कामिनियों को प्रसन्नता प्रदान करनेवाला, दिव्यकुङ्कुम आपको प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वरि! इसे ग्रहण करके प्रसन्न होइये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा कुङ्कुमं समर्पयामि।

धूपसंस्कारम्

ॐ फट्। धूप पात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ यँ। षोडश बार जप कर दोषों का संशोषण करे।

ॐ रँ। वाम हस्ततल को दक्ष हस्तपृष्ठ पर रख कर निवेशन करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ नमः। मण्डल का अभ्यर्चन करे।

धूपाभिमन्त्रणम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा। आठबार जप कर अभिमन्त्रण करे।

घण्टापूजनम्

ॐ पराऽपरालसन्देवी! सर्वानन्दकारिणीम्।
विघ्नविच्छेदनार्थाय सुघण्टावादनं शुभम्॥

परम आनन्द करनेवाली पर और अपर से उल्लसित देवी समस्त विघ्नों के विच्छेदन के लिए शुभ घण्टा का वादन करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा जयध्वनिमातः स्वाहा।

धूपदानम्

ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न वनस्पतियों के रसों से निर्मित गन्धों में अत्युत्तम गन्धयुक्त धूप सभी देवताओं को सुगन्धि प्रदान करने के लिए है, हे देवि! अपको समर्पित है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै एष धूपं समर्पयामि। शङ्ख के जल का प्रक्षेप करके बाँयें हाथ से घण्टा वादन करते हुए धूप मुद्रा से देवता के नाभि प्रदेश पर धूप का आघ्रापन करे तथा पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

दीपदानम्

दीपसंस्कारम्—

ॐ फट्। दीपक का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ यँ। द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। वामहस्ततल को दक्षहस्तपृष्ठ पर रख कर निवेशन करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ नमः। दीपक का अभ्यर्चन करे।

दीपसमर्पणम्

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
सबाह्यभ्यन्तरज्ज्योतीर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के अन्धकार को समाप्त करने वाला, सुन्दर प्रकाशवान् महादीप बाहर तथा भीतर व्याप्त दीपज्योति हे देवि! आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै दीपं समर्पयामि। प्रज्वलित दीप निवेदन करे।

नैवेद्यसंस्कारम्

विविध प्रकार का नैवेद्य साज्य शर्करापायसादि का परिष्कार करके त्रिकोण वृत्त युक्त चतुरस्र मण्डल पर स्थापित करे तथा सर्व दोषों का निषेचन करे।

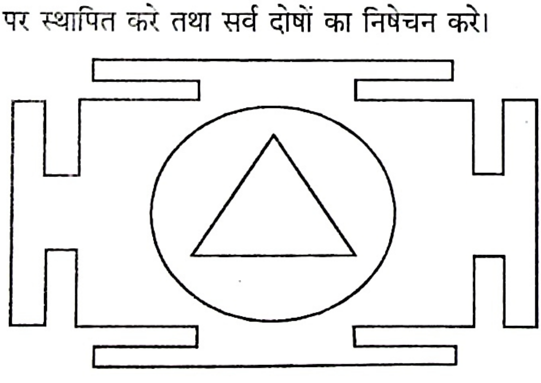

ॐ यँ। षोडश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ फट्। चक्रमुद्रा से अभिरक्षण करे।

ॐ नमः। मण्डल का अभ्यर्चन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा। आठ बार जप कर अभिमन्त्रण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा जयध्वनिमातः स्वाहा। धेनुमुद्रा दिखाकर गन्धाक्षत से नैवेद्य का पूजन करके तत्त्वाख्य मुद्रा से देवी को घण्टा बजाते हुए नैवेद्य समर्पित करके भोजन के तत्तत् मुद्राओं का प्रदर्शन करे।

नैवेद्यसमर्पणम्

ॐ सत्पात्रसिद्धं सहविर्विधानेकभक्ष मम।
निवेदयामि देवेशि कृपया त्वं गृहाण तत्॥

शुद्धसत्पात्र में विधानपूर्वक पकाये हुए हवि का मैं निवेदन करता हूँ, हे देवेशि! इसे कृपया ग्रहण कीजिए।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै नैवेद्यमिदं समर्पयामि। ग्रासमुद्रा से समर्पित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा प्राणाय स्वाहा। प्राणमुद्रा दिखाये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अपानाय स्वाहा। अपानमुद्रा दिखाये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा व्यानाय स्वाहा। व्यानमुद्रा दिखाये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा उदानाय स्वाहा। उदानमुद्रा दिखाये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा समानाय स्वाहा। समानमुद्रा दिखाये।

पानीयंजलम्

ॐ समस्तदेवदेवेशि सर्वप्राप्तिकरं परम्।
अखण्डानन्दसम्पूर्णा गृहाण जलमुत्तमम्॥

परमशुद्धि प्रदान करनेवाला, समस्त देवीदेवताओं को अखण्ड आनन्द प्रदान करनेवाला शुद्ध जल आपको प्रदान करता हूँ, इसे ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै पानीयं जलं समर्पयामि। चुलुक मुद्रा से पानीय प्रदान करे।

उद्वर्तनम्

ॐ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं दिव्यं गृहाण महामाहेश्वरी॥

मलयपर्वत पर उत्पन्न होनेवाला दिव्यचन्दन कस्तूरी आदि के गन्धों से युक्त दिव्य उद्वर्तन प्रदान करता हूँ, हे देवि! इसे ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा उद्वर्तनकं समर्पयामि।

ताम्बूलसंस्कारम्

पूगीफलादि से युक्त ताम्बूल का परिष्कार करके त्रिकोण वृत्तयुक्त चतुरस्र मण्डल पर स्थापित कर सर्व दोषों का निषेचन करे।

ॐ यँ। षोडश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ फट्। चक्रमुद्रा से अभिरक्षण करे।

ॐ नमः। ताम्बूल का अभ्यर्चन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा। आठ बार जप कर अभिमन्त्रण करे।

ताम्बूलसमर्पणम्

ॐ एलालवङ्गकर्पूरनागवल्लिदलैर्युतम्।
पुंगभागेरितं देवि ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

लवङ्ग, इलायची, कर्पूर, सुपाड़ी, विभिन्न पदार्थो तथा पान के पत्ते से युक्त ताम्बूल वीटिका आंपको समर्पित है, हे देवि! प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै ताम्बूलं समर्पयामि। तत्त्वख्यमुद्रा द्वारा देवी के सम्मुख ताम्बूल वीटिका समर्पित करे।

ऋतुफलम्

ॐ यद्यत्फलं सुविमलं मधुरं सुपक्वं,
तच्छ्रीफलादि तव तुष्टायार्पितञ्च।
तेन प्रसीद गणनायक जन्मलाभं,
कालिकेऽत्र देवि वरदे कुरुतं फलाढ्यम्॥

सुपक्व, मधुर, सुविमल श्रीफलादि जो जो फल आपके तुष्टि के लिए अर्पित है, उनसे आप प्रसन्न होकर जिस तरह से गणनायक को जन्म दी थीं उसी प्रकार से हमें भी वर प्रदान कर फलवान बनायें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गयै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै ऋतुकालोद्भव फलं समर्पयामि। अनामिका अंगुष्ठ से देवी को ताम्बूल समर्पित करे।

नीराजनम्

चन्द्रादित्यौ च धरिणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥

चन्द्रमा, सूर्य, विद्युत् तथा अग्नि सभी की ज्योतियों को ग्रहण करके आपकी आरती करता हूँ प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गयै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै नीराजनं समर्पयामि। हाथों में पुष्प लेकर तत्त्वमुद्रा से नीराजन समर्पित करे।

तत्त्वमुद्रालक्षणम्

तर्जनीमध्यमानामाः समाः कुर्यादधोमुखी।
अनामायां क्षिपे द्धामूर्ध्वंकृत्त्वा कनिष्ठिकाम्॥१॥

तर्जनी-मध्यमा-अनामिका अंगुलियों को बराबर सीधा करके अधोमुख कर अनामिका को अङ्गुष्ठ से संयोजित करने से लेलिहान नामक मुद्रा बनती है, इसे जीवन्यास में प्रयोग किया जाता है॥१॥

लेलिहानाममुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता।
तस्योर्ध्वमुखं कृत्त्वा च तत्त्वाख्यमुद्रामुच्यते॥२॥

लेलिहा नामक इस मुद्रा का जीव न्यास में प्रयोग किया जाता है, लेलिहान मुद्रा को ऊर्ध्व मुख करने से निर्मित तत्त्वाख्य मुद्रा तन्त्रागम शास्त्र के ज्ञाता विद्वान् लोग कहते हैं, इसका देवताओं को पदार्थ समर्पण में प्रयोग होता है॥२॥

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ मन्दारपारिजातादिपाटलीकेतकानि च।
जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाणेशानि शोभने॥

मन्दार, पारिजात, पाटली, केतकी, जाती तथा चम्पकादि के पुष्पों को आपके लिए लाया हूँ, हे शोभने! ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ नानासुगन्धिसंयुक्तं यथाकालोद्भवं तथा।
मया पुष्पाञ्जलिर्दत्ता गृहाण परमेश्वरी॥

ऋतुओं के अनुसार उत्पन्न होने वाले विभिन्न प्रकार के गन्धों से युक्त पुष्पाञ्जलि समर्पित करता हूँ, हे देवि! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण कीजिए।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि। अञ्जलिमुद्रा से देवी को पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

अञ्जलिमुद्रालक्षणम्

सर्वाङ्गुलिः ऋजुं कृत्त्वा प्रसार्यञ्च संयोजयेत्।
हस्तद्वयोः संयोज्यञ्च अञ्जलिमुद्रामुच्यते॥

सभी अङ्गुलियों को सीधा करके हथेली को पसार कर दोनों हाथों को आपस में सटाने से जो आकृति बनती है, उसे अञ्जलिमुद्रा कहते हैं।

दाहिने हाथ से लेलिहानमुद्रा बनाकर पूजन करे तथा बाँयें हाथ से तत्त्वमुद्रा बनाकर तर्पण करे।

वाह्यपूजनक्रमेशिवार्चनम्

देवी के दक्षिण भाग में महाकाल का पूजन करे—

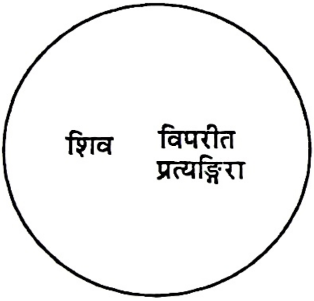

ॐ अञ्जनाद्रिनिभं देवं पिङ्गकेशं द्विबाहुकम्।
आकाशमम्बरं दिव्यं सर्पभूषणभूषितम्॥

अञ्जन के समान श्यामल कान्तिवाले, पिङ्गकेश तथा दो भुजाओंवाले, आकाश को दिव्य वस्त्र के रूप में धारण किये हुए, सर्प का आभूषण पहने हुए महाकाल को नमस्कार है।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर शिव का ध्यान करे—

जय शम्भो विभो रुद्र स्वयम्भो जय शङ्करः।
जयेश्वरः जयेशान जयसर्वज्ञ कामदः॥

शम्भु, विभु, रुद्र, स्वयम्भु, शङ्कर, जयेश्वर, ईशान, सर्वज्ञ, कामद नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर, ध्यानकर आसन समर्पित करे—

नीलकण्ठ जय श्रीद श्रीकण्ठ जय धूर्जटेः।
अष्टमूर्तेऽनन्तमूर्ते महामूर्ते जयानघः॥

नीलकण्ठ, श्रीद, श्रीकण्ठ, धूर्जटि, अष्टमूर्ति, अनन्तमूर्ति, महामूर्ति और अनघ नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

जय पापहरानङ्ग निःसङ्गाभङ्गनाशकः।
जय त्वं त्रिदशाधार त्रिलोकेश त्रिलोचनः॥

पापहर, अनङ्ग, निःसङ्ग, अभङ्ग, नाशक, त्रिदशाधार, त्रिलोकेश, त्रिलोचन, नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

जय त्वं शिवशङ्कर त्रिलोकेश त्रिलोचनः।
देव त्वं त्रिपथाधार त्रिमार्ग त्रिभिरूर्जितः॥

शिवशङ्कर, त्रिलोकेश, त्रिलोचन, त्रिपथाधार, त्रिमार्ग और त्रिभिरूर्जित नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

अर्घ्याङ्गाचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

शशिशेखर शूलेश पशुपाल शिवाप्रियः।
शिवात्मकः शिवः श्रीद सुहृच्छ्रीशतनो जय॥

शशिशेखर, शूलेश, पशुपालक, शिवाप्रिय, शिवात्मक, शिव, श्रीद और सुहृच्छ्रीशतन नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः अर्घ्याङ्गाचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

सर्व सर्वेश भूतेश गिरिश त्वं गिरीश्वरः।
जयोग्ररूप भीमेश भव भर्ग जय प्रभो॥

सर्व, सर्वेश, भूतेश, गिरिश, गिरीश्वर, जयोग्ररूप, भीमेश, भव, भर्ग और प्रभु नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

स्नाङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

जय दक्षाऽध्वरध्वंसिन्नन्धकध्वंसकारकः।
रुण्डमालिन् कपालिस्त्वं भुजङ्गनिजभूषणः॥

दक्षाऽध्वरध्वंस, अन्धकध्वंसकारक, रुण्डमालिन्, कपालि, और भुजङ्गनिजभूषण नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः स्नाङ्गचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयः पात्र लेकर समर्पित करे—

दिगम्बर दिशांनाथ व्योमकेश चितांपतेः।
जयाधार निराधार भस्माधार धराधरः॥

दिगम्बर, दिशानाथ, व्योमकेश, चितांपति, जयाधार, निराधार, भस्माधार तथा धराधार नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि, पयःस्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

देवदेवमहादेव देवतेशादिदैवतः।
वह्निवीर्य जयस्थाणो जयायोनिजसम्भवः॥

देवदेव, महादेव, देवतेशादिदैवत, वह्निवीर्य, जयस्थाणु, जय, अयोनिज, सम्भव, नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि, दधिस्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

भवशर्वमहाकाल भस्माङ्ग सर्पभूषणः।
त्र्यम्बकस्थपते वाचांपते भो जगतांपतेः॥

भव, शर्व, महाकाल, भस्माङ्ग, सर्पभूषण, त्र्यम्बक, पति, वाचांपति और जगत्पति नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि, घृतस्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

शिपिविष्टविरूपाक्षः जयलिङ्गवृषध्वजः।
नीललोहित पिङ्गाक्षः जय खट्वाङ्गमण्डनः॥

शिपिविष्ट, विरूपाक्ष, जयलिङ्ग, वृषध्वज, नीललोहित, पिङ्गाक्ष और खट्वाङ्गमण्डन नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि, मधुस्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

कृत्तिवासअहिर्बुध्न्यः मृडानीशजटाम्बुभृत्।
जगद् भ्रातर्जगन्मातर्जगत्तातजगद्गुरोः॥

कृत्तिवास,अहिर्बुध्न्य, मृडानीश, जटाम्बुभृत्, जगद्भ्राता, जगन्माता, जगत्तार और जगद्गुरु नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

पञ्चवक्त्रमहावक्त्रकालवक्त्रगजास्यभृत् ।
दशबाहोमहाबाहोमहावीर्यमहाबलः ॥

पञ्चवक्त्र, महावक्त्र, कालवक्त्र, गजास्य, भृत्, दशबाहु, महाबाहु, महावीर्य और महाबल नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि, मिलितपञ्चमृतस्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

अघोरघोरवक्त्रत्वं सद्योजातं उमापते।
सदानन्दमहानन्द नन्दमूर्तेजयेश्वरः॥

अघोरघोरवक्त्र, सद्योजात, उमापति, सदानन्द, महानन्द, नन्दमूर्ति और जयेश्वर नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

गङ्गाधरं शशिकिशोरधरं त्रिलोकी,
रक्षाधरं निखिलचन्द्रधरं त्रिधारम्।

भस्मावधूलनधरं गिरिराजकन्या,
दिव्यावलोकनधरं वरदं प्रपद्ये॥

गङ्गाधर, शशिकिशोरधर, त्रिलोकी, रक्षाधर, निखिलचन्द्रधर, त्रिधार, भस्मावधूलनधर, गिरिराजकन्या, दिव्यावलोकनधर और वरद नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

काशीश्वरं सकलभक्तजनार्तिहारं,
विश्वेश्वरं प्रणतपालनभव्यभारम्।
रामेश्वरं विजयदानविधानधीरं,
गौरीश्वरं वरदहस्तधरं नमामः॥

काशीश्वर, सकलभक्तजनार्तिहार, विश्वेश्वर, प्रणतपालन, भव्यभार, रामेश्वर, विजयदान, विधान, धीर, गौरीश्वर और वरदहस्तधर नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः वस्त्रङ्गाचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

गङ्गोत्तमाङ्कलितं ललितं विशालं,
तं मङ्गलं गरलनीलगलं ललामम्।
श्रीमुण्डमाल्यवलयोज्ज्वलमञ्जुलीलं ,
लक्ष्मीश्वरार्चितपदाम्बुजमाभजामः ॥

गङ्गोत्तमाङ्कलित, ललित, विशाल, मङ्गल, गरलनीलगल, ललाम, श्रीमुण्डमाल्यवलय, उज्ज्वलमञ्जुलील और लक्ष्मीश्वरार्चितपदाम्बुज नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

दारिद्र्यदुःखदहनं कमनं सुराणां,
दीनार्तिदावदहनं दमनं रिपूणाम्।
दानं श्रियां प्रणमनं भुवनाधिपानां,
मानं सतां वृषभवाहनमामनामः॥

दारिद्र्यदुःखदहन, देवताओं की पूर्ण कामना, दीनार्तिदावदहन, रिपूओं का दमन करनेवाले, श्री का दान करनेवाले, प्रणमन, भुवनाधिप, मान, सत्, वृषभवाहन और अनाम नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः उपवस्त्रङ्गाचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

श्रीकृष्णचन्द्रशरणं रमणं भवान्याः,
शाश्वत्प्रपन्नभरणं धरणं धरायाः।
संसारभारहरणं करुणं वरेण्यं,
सन्तापतापकरणं करवै शरण्यम्॥

श्रीकृष्णचन्द्रशरण, भवानी में रमण करनेवाले, शाश्वत्प्रपन्नभरण, धरा को धारण करनेवाले, संसारभारहरण, करुणावरेण्य, सन्तापतापकरण, करव और शरण्य नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

चण्डापिचण्डिलवितुण्डधृताभिषेकं ,
श्रीकार्तिकेयकलनृत्यकलावलोकम् ।
नन्दीश्वरास्यवरवाद्यमहोत्सवाढ्यं ,
सोल्लासहासगिरिजेगिरिशन्तमीडे ॥

चण्ड, चण्डिल, वितुण्डधृत, अभिषेक, श्रीकार्तिकेयकलनृत्यकलावलोक, नन्दीश्वर के मुख से निकलनेवाले संगीत और वाद्य में रुचि रखनेवाले और गिरिजा के साथ उल्लास पूर्वक हास प्रहास करनेवाले नामोंवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः यज्ञोपवीताङ्गचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से चन्दन लेकर समर्पित करे—

श्रीमोहिनीनिविडरागभरोपगूढ ,
योगेश्वरेश्वरहृदम्बुजवासरासम् ।
सम्मोहनं गिरिसुताञ्चित चन्द्रचूड़ं
श्रीविश्वनाथमधिनाथमुर्पमिनित्यम् ॥

श्री तथा मोहिनी से निकलनेवाले गूढ उपराग को ग्रहण करनेवाले, योगेश्वरेश्वर के हृदय कमल में वास करनेवाले, सम्मोहन, गिरिसुताञ्चित, चन्द्रचूड़, श्रीविश्वनाथ और अधिनाथादि नामों से नित्यपूजित महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

सत्यं ब्रवीमि परलोहितं ब्रवीमि,
सारं ब्रवीम्युपनिषद् हृदयं ब्रवीमि।
संसारमुल्बणमसारमवाप्य जन्तोः,
सारोऽयमीश्वरपदाम्बुरुहस्य सेवा॥

सत्य कहता हूँ, परलोहित कहता हूँ, सार कहता हूँ, उपनिषद् को हृदय में धारण करके कहता हूँ, संसारमुल्बण, समस्त जन्तुओं के सार स्वरूप को कहता हूँ, ईश्वर के पाद कमल के सेवा का सार कहता हूँ, ऐसे महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ये नाऽर्चयन्ति गिरिशं समये प्रदोषे,
ये नाऽर्चितं शिवमपि प्रणमन्ति चाऽन्ये।
एतत् कथां श्रुतिपुटैर्न पिबन्तिमूढाः,
ते जन्मजन्मसु भवन्ति नरादरिद्राः॥

जो प्रदोष काल में गिरिजा के ईश का अर्चन नहीं करते, जो शिव का अर्चन नहीं करते, जो शिव को प्रणाम नहीं करते, शिव के चरित्र को जो मूढ लोग कानों से नहीं सुनते, वे सभी नर जन्मजन्मान्तर तक दरिद्र होते है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ये वै प्रदोषसमये परमेश्वरस्य,
कुर्वन्त्यनन्यमनसोंऽघ्रिसरोजपूजाम् ।
नित्यं प्रवृद्धधनधान्यकलत्रपुत्राः,
सौभाग्यसम्पदधिकास्त इहैव लोके॥

जो लोग प्रदोष काल में परमेश्वर का अपने मन में ध्यान लगाकर पूजन करते, उनके धनधान्यकलत्रपुत्रों का नित्य वर्धन होता है, वे इस लोक में अधिकाधिक सौभाग्य सम्पदा प्राप्त करते हैं।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

कैलासशैलभुवने त्रिजगज्जनित्रीं,
गौरीं निवेश्य कनकार्चितरत्नपीठे।
नृत्यं विधातुमभिवच्छति शूलपाणौ,
देवाः प्रदोषसमये नु भजन्ति सर्वे॥

कैलासशैलभुवन में, त्रिजगज्जननी गौरी का निवेशन सुवर्ण रचित रत्नपीठ पर, नित्य शूलपाणि सदाशिव के साथ जो देवता प्रदोष काल में भजन करते हैं उन्हें कभी किसी की कमी नहीं होती है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

वाग्देवीधृतवल्लकीशतमुखोवेणुं दधत् पद्मजः,
तालोन्निद्रकरो रमा भगवती गेयप्रयोगान्विता।
विष्णुःसान्द्रमृदङ्गवादनपटुर्देवाः समन्तात्स्थिताः,
सेवन्ते तमनुप्रदोषसमये देवं मृडानीपतिम्॥

वाग्देवी अपने सैकड़ों अनन्त हाथों में वेणु धारण पूर्वक वादन करती हुई, पद्मजा भगवती रमा सुमधुर कण्ठों से ताल पूर्वक चरित्र गान करती हुई, विष्णु हाथों में वृहद् पटुता से मृदङ्गादि वादन पूर्वक धारण किये हुए स्थित होकर, मृडानीपति सकल कामरूप शिव का प्रदोष काल में सेवन करते हैं।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

गन्धर्वयक्षपतगोरगसिद्धसाध्य ,
विद्याधराऽमरवराप्सरसां गणांश्च।
येंऽन्ये त्रिलोकनिलयाः सहभूतवर्गाः,
प्राप्ये प्रदोषसमये हरपार्श्वसंस्थाः॥

गन्धर्व, यक्षपति, गोरखादि सिद्धों से साध्य, विद्याधर, अमरवराप्सराओं और नित्य सेवा में संलग्न गणों, जो अन्य त्रिलोक में समस्त भूतवर्ण सभी प्रदोष काल होने पर हर के पास उपस्थित होकर शिवशङ्कर महादेव का स्तुति गान करते हैं।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

अतः प्रदोषे शिव एक एव,
पूज्योऽथ नान्ये हरिपद्मजाद्याः।
तस्मिन् महेशे विधिनेज्यमाने,
सर्वे प्रसीदन्ति सुराधिनाथाः॥

प्रदोष काल में एक शिव ही हरि कमलादि के द्वारा पूजित होते हैं, इसलिए प्रदोष काल में विधिपूर्वक समस्त कामरूप महादेव का पूजन करके सभी देवादि प्रसन्न होते हैं अतः महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः दीपज्योतिः समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

शिवंशान्तंशुद्धं प्रकटमकलङ्कं श्रुतिनुतं,
महेशानं शम्भुं सकलसुरसंसेव्यचरणम्।
गिरीशं गौरीशं भवभयहरं निष्कलमजं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

शिव, शान्त, शुद्ध, प्रकटमकलङ्क, श्रुतिनुत, महेशान, शम्भु, सकलसुरसंसेव्यचरण, गिरीश, गौरीश, भवभयहर, निष्कलमज और प्रणतजनतापोपशमन महादेव को नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवःस्वः कामशिवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा।। ॐ अपानाय स्वाहा।। ॐ समानाय स्वाहा।। ॐ उदानाय स्वाहा।। ॐ व्यानाय स्वाहा।। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

सदासेव्यं भक्तेर्हृदि हृदि वसन्तं गिरिशय-
मुमाकान्तं क्षान्तं करधृतपिनाकं श्रमहरम्।
त्रिनेत्रं पञ्चास्यं दशभुजमनन्तं शशिधरं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्।।

जनों को अपने हृदय में भक्ति पूर्वक गिरिश सदाशिव उमाकान्त, हाथ में पिनाक धारण करनेवाले, क्षान्त, श्रम का हरण करनेवाले, त्रिनेत्र, पञ्चास्य, दशभुज, अनन्त, शशिधर, प्रणतजनतापोपशमन महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

चिताभस्मालिप्तं भुजगमुकुटं विश्वसुखदं,
धनाध्यक्षस्याङ्गं त्रिपुरवधकर्तारमनघम्।
करोटीखट्वाङ्गेह्युरसि च दधानं सृतिहरं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्।।

चिताभस्मालिप्त, भुजगमुकुट, विश्वसुखद, धनाध्यक्षस्याङ्ग, त्रिपुरवधकर्ता, अनघ, करोटीखट्वाङ्ग धारण किये हुए, सृतिहर, प्रणतजनतापोपशमन महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूगीफलमेलालवङ्गादिनागवल्लीयुक्तं ताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फल लेकर समर्पित करे—

सदोत्साहं गङ्गाधरमचलमानन्दकरणं,
पुरारातिं भातं रतिपतिहरं दीप्तवदनम्।
जटाजूटैर्जुष्टं रसमुखगणेशानपितरं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्।।

सदोत्साह पूर्वक अचल आनन्द करनेवाले गङ्गाधर, पुराराति, सुन्दर, रति के पति का हरण करनेवाले, दीप्तवदन, जटाजूट से युक्त मुख से अमृतमयी वाणी का वर्षण करनेवाले, गणेश के पिता ईशान, प्रणतजनतापोपशमन महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

वसन्तं कैलासे सुरमुनिसभायां हि नितरां,
ब्रुवाणं सद्धर्मं निखिलमनुजानन्दजनकम्।
महेशानी साक्षात् सनकमुनि देवर्षिसहिता,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

सम्पूर्ण सृष्टि के मनुष्यों के आनन्द के जनक, साक्षात् महामाहेश्वरी और सनकादि मुनियों और देवर्षियों के सहित कैलास पर देवताओं और मुनियों के साथ सभा में नित्य विराजमान, अपने आधे शरीर में उमा को धारण किये हुए, प्रणतजनतापोपशमन महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः कृतायाः पूजायाः षाड्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीश!।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश!॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने॥
कोकिलकूजति खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता॥
क्रीडां रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

बिबुधबधुर्वहु नृत्यति हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते सप्तस्वरसहिता॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नादयते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्वलितां।

चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक ताम्॥
तां तां लुप चुप तां तां डमरूं वादयते।
अङ्गुष्ठाङ्गुलिनादं लासकतां कुरुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
कपूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्॥
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्।
डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
मुण्डैः रचयति मालां पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम्॥
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा वेद ऋचां पठते॥
अतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा।
रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा॥
संगितमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥१॥
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों में पुष्प लेकर समर्पित करे—

शिवां स्वे वामाङ्गे गुहगणपतिं दक्षिणभुजे,
गले कालं व्यालं जलधिगरलं कण्ठविवरे।

ललाटे श्वेतेन्दुं जगदपि दधानं च जठरे,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

अपने वाँयें तरफ के आधे शरीर में अति गोपनीय शिवा को धारण किये हुए, दक्षिण भुजा से गणपति को लिये हुए, गले में समुद्र से निकले हुए भयंकर कालकूट विष को धारण किये हुए, ललट में सफेद चन्द्रमा को धारण किये हुए, सम्पूर्ण संसार को अपने जठर में धारण किये हुए महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पम्—दोनों हाथों से पुष्प ग्रहण कर परिक्रमा करके समर्पित करे—

सुराणां दैत्यानां बहुलमनुजानां बहुविध,
तपःकुर्वाणानां झटिति फलदातारमखिलम्।
सुरेशं विघ्नेशं जलनिधिसुताकान्तहृदयं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

बहुत प्रकार के मनुष्यों, देवताओं, दैत्यों, नित्य तप में संलग्न तपश्वियों से सेवनीय, तुरन्त फल प्रदान करनेवाले, सुरेश, विघ्नेश, रत्नों के भण्डार समुद्र की सुता कमलाकान्त के हृदय में रहनेवाले महादेव को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

प्रार्थना—हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना पूर्वक समर्पण करे—

वसानं वैयाघ्रीं मृदुललितां कृत्तिमजरां,
वृषारूढं सृष्ट्यादिषु कमलजाद्यात्मवपुषम्।
अतर्क्यं निर्मायं तदपि फलदं भक्तसुखदं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

व्याघ्र चर्म को धारण करनेवाले, प्रसन्नता से शोभित, अजरअमर, वृष पर आरूढ़, सृष्टि के आदि में रहनेवाले, आत्म स्थान स्थित कमल में रहनेवाले, भक्तों को फल प्रदान करनेवाले महादेव को नमस्कार है।

पूजनसमर्पणम्—**अनया पूजया साम्बसदाशिवः प्रीयन्तां न मम॥**

वाह्यपूजनक्रमेश्रीशिवपूजनं परिपूर्णम्

❀

अमोघशिवकवचम्

विनियोगः—**अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीसदाशिवरुद्रोदेवता, श्रीँ ह्रीँ क्लीँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, वँ कीलकं सदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे—

ॐ श्री ह्रीं क्लीं ब्रह्मर्षये नमः शिरसि।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं श्रीसदाशिवरुद्राय नमः हृदि।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं ह्रीँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं वँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं श्रीसदाशिवरुद्राय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे—

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे—

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः।

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने शिखायै वषट्।

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हुम्।

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट्।

शङ्करध्यानम्

वजदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिन्दमम्।
सहस्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्॥

कठोर दाँतोंवाले, तीन नेत्र से युक्त, कण्ठ में विष तथा हजारों तेज उग्र किरणों से युक्त उमापति शम्भु की वन्दना करते है।

अथापरं सर्वपुराणगुह्यं निःशेषपापौघहरं पवित्रम्।
जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं वक्ष्यामि शैवं कवचं हितायते॥

समस्त पुराणों में गोपनीय, सभी पापों की समस्त राशि को नष्ट करनेवाले, परम पवित्र, जय प्रदान करनेवाले, सभी विपत्तियों से छुटकारा दिलानेवाले, भक्तों के हित के लिए अमोघकवच कहता हूँ।

कवचम्

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापीनमीश्वरम्।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम्॥१॥

विश्वव्यापी ईश्वर महादेव को नमस्कार हैं, यह शिवमय वर्म सभी मनुष्यों की रक्षा करता है॥१॥

शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्॥२॥

शुद्ध होकर, शुद्ध स्थान में जाकर, शुद्ध आसन स्थापित करके, जितेन्द्रिय होकर, प्राणायाम करके, इस अव्यय शिवकवच का चिन्तन (पाठ) करना चाहिये॥२॥

हृत्पुण्डरीकान्तरसन्निविष्टं स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत्परानन्दमयं महेशम्॥३॥

हृदय में पुण्डरीक के तेज से सन्निविष्ट, अपने तेज से व्याप्त आकाश में शान्त, अतीन्द्रिय, सूक्ष्म-अनन्त और सबसे आदि परानन्दमय महेश्वर का ध्यान करता हूँ।।३।।

ध्यानावधूताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेताः।
षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेन कुर्यात्कवचेन रक्षाम्।।४।।

समस्त कर्म के बन्धन से मुक्त करनेवाले, चिर स्थिर, चिदानन्द में निमग्न चित्त, षड्क्षर के न्यास में समाहित आत्मरूप शिव कवच के द्वारा हमारी रक्षा करें।।४।।

मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा संसारकूपे पतितं गभीरे।
तन्नाम दिव्यं परमन्त्रमूलं धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम्।।५।।

समस्त देवताओं के आत्मरूप शिवशङ्कर हमारी रक्षा करें, हम इस भयंकर संसार-रूपी कूप में गिरे हुए है, आपका दिव्य नाम जो परमन्त्र का मूल है उसे अपने कल्याण के लिए हृदय में ध्यान पूर्वक जप करता हूँ, जो सभी दुःखों को नष्ट करनेवाला है।।५।।

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिर्ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः स ईश्वरः पातु भयादशेषात्।।६।।

हे विश्वमूर्ति ज्योतिर्मय आनन्दघन चिदात्मा! आप सभी तरफ से हमारी रक्षा करें। अणुओं से भी सूक्ष्म आपकी एक शक्ति है वह ईश्वर रूप हमें सभी भयों से रक्षा करें।।६।।

यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं पायात्स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः।
योऽपांस्वरूपेण नृणां करोति संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः।।७।।

सम्पूर्ण सृष्टि में ईश्वर, भू, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र और यजमानादि अष्टमूर्ति रूप से व्याप्त है, उसमें जो भू रूप से सम्पूर्ण पृथ्वी में व्याप्त हैं वे क्षितिमूर्ति हमारी रक्षा करें तथा जो जल रूप में मनुष्यों को जीवन प्रदान करने का कार्य करते हैं, वह जलमूर्ति हमारी सर्वत्र रक्षा करे।।७।।

कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात्।।८।।

जो कल्प के अन्त होने पर सम्पूर्ण भुवन को दग्ध करके अपनी भूरिलीला करते हुए नृत्य करते हैं वे महाकाल रुद्र हमारी रक्षा करें, आपका स्वरूप हमारी सम्पूर्ण दावाग्नि-तूफानों और तापों से रक्षा करे।।८।।

प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्त्रम्।।९।।

तपे हुए सोने के समान जिनकी आभा है, ज्ञान, वर, अभय और कुठार जिसके हाथों में हैं, जो चार मुखोंवाले हैं तथा तीन नेत्र हैं, वे पूर्व में स्थित होकर हमारी रक्षा करें।।९।।

कुठारवेदाङ्कुशपाशशूलकपालढक्काक्षगुणान् दधानः।
चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम्।।१०।।

जो हाथों में कुठार, ज्ञान, अङ्कुश, पाश, शूल, कपाल, ढक्का, अक्षमाला, तथा धनुष धारण करनेवाले हैं, चार मुखों, तीन नेत्रोंवाले, नील वर्णवाले शङ्कर अघोररूप दक्षिण दिशा में स्थित होकर यमराज से हमारी रक्षा करें॥१०॥

कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकावभासो वेदाक्षमालावरदाभयाङ्कः।
त्र्यक्षश्च चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम्॥११॥

शिशिर ऋतु के चन्द्रमा के सदृश, शङ्ख के समान धवल, स्फटिक के समान जिनकी प्रभा (आभा) है, जिनके अङ्गों में वेद (ज्ञान), अक्षमाला, वर तथा अभय स्थित हैं, तीन आँख तथा चार मुख जिनके हैं, वे सद्योजात शिव पश्चिम दिशा में स्थित होकर हमारी रक्षा करें॥११॥

वराक्षमालाभयटङ्कहस्त सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः।
त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः॥१२॥

वर, अक्षमाला, अभय, धनुष हाथ में धारण किये हुए, नील कमल के समान ही जिनकी आभा है, तीन नेत्र और चार मुखोंवाले महारुद्र उत्तर दिशा में अवस्थित होकर उत्तर दिशा से हमारी रक्षा करें॥१२॥

वेदाभयेष्टाङ्कुशपाशटङ्ककपालढक्काक्षकशूलपाणिः ।
सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः॥१३॥

वेद (ज्ञान), अभय, अङ्कुश, पाश तथा धनुष, बाण तथा कपाल, डमरु, अक्षमाला, त्रिशूल हाथ में धारण करनेवाले, श्वेत प्रभावाले, पाँच मुखोंवाले, परम प्रकाशरूप ईशान रुद्र ऊपर से हमारी रक्षा करें॥१३॥

मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिर्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः।
नेत्रे ममाव्याद्भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः॥१४॥

हमारे मूर्द्धा की अव्ययात्मा हमारी रक्षा करें, चन्द्रमौलि हमारे भाल की रक्षा करें, जिनके मस्तक पर तीननेत्र है वे मेरी सर्वदा सर्वत्र रक्षा करें, हमारे नेत्रों की भगनेत्रहारी रक्षा करें, हमारी नासिका की सदा विश्वनाथ रक्षा करें॥१४॥

पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः कपोलमव्यात्सततं कपाली।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः॥१५॥

हमारे कानों की रक्षा श्रुतिगीतकीर्ति करें, कपोल की हमेशा कपाली रक्षा करें, मुख की सदैव पञ्चवक्त्र रक्षा करें, वेदजिह्वा हमारी जिह्वा की सदैव रक्षा करें॥१५॥

कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहुर्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात्॥१६॥

हमारे कण्ठ की गिरीश नीलकण्ठ रक्षा करें, दोनों हाथों की पिनाकपाणि सदैव रक्षा

करें, बाहुमूल की अव्यय धर्मबाहु रक्षा करें, वक्ष:स्थल की दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने वाले रक्षा करें॥१६॥

ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी।
हेरम्बतातो मम पातु नाभिं पायात् कटी धूर्जटिरीश्वरो मे॥१७॥

हमारे उदर (पेट) की गिरीन्द्रधन्वा रक्षा करें, हमारे मध्य की मदनान्तकारी रक्षा करें, हेरम्ब के पिता भगवान् शङ्कर हमारे नाभि की रक्षा करें, हमारे कमर की धूर्जटि ईश्वर रक्षा करें॥१७॥

ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात्।
जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात् पादौ ममाव्यात् सुरवन्द्यपादः॥१८॥

हमारे दोनों ऊरुओं की कुबेर के मित्र महारुद्र रक्षा करें, हमारे दोनों जानुओं की जगदीश्वर भगवान् शङ्कर रक्षा करें, हमारे दोनों जङ्घाओं की पुङ्गवकेतु रक्षा करें, हमारे दोनों पैरों की देवताओं के द्वारा वन्दितपाद भगवान् शङ्कर रक्षा करें॥१८॥

महेश्वरः पातु दिनादि यामे मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः।
त्रयम्बकः पातु तुरीययामे वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे॥१९॥

दिन के आदि अर्थात् प्रात: काल में महेश्वर हमारी रक्षा करें, दिन के मध्य में वामदेव हमारी रक्षा करें, अर्धरात्रि में त्रयम्बक महादेव रक्षा करे तथा सायंकाल वृषभध्वज रक्षा करें॥१९॥

पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे।
गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम्॥२०॥

रात्रि के प्रारम्भ काल में शशिशेखर हमारी रक्षा करें, रात्रि में गङ्गाधर रक्षा करें, गौरीपति रात्रि के अवसान काल में रक्षा करें, भगवान् महामृत्युञ्जय सर्वत्र रक्षा करें॥२०॥

अन्तःस्थितं रक्षतु शङ्करो मां स्थाणुः सदा पातु बहिःस्थितं माम्।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात्॥२१॥

हमारे अन्त: में स्थित होकर शङ्कर हमारे भीतर रक्षा करें, हमारे बाहर सदैव स्थाणु रक्षा करें, उसके बाद पशुपति रक्षा करें, हमारे नजदीक सदैव सदाशिव रक्षा करें॥२१॥

तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः।
वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः शयानम्॥२२॥

हमारे सदा सर्वत्र व्याप्त रहकर भुवननाथ रक्षा करें, हमारे पैरों में सदैव प्रमथाधिनाथ वास करके रक्षा करें, हमारे निषण्ण की वेदान्त के द्वारा ज्ञातव्य वाले भगवान् सदाशिव रक्षा करें, शयनकाल में अव्यय शिव हमारी रक्षा करें॥२२॥

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः।
अरण्यवासादिमहाप्रवासे पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः॥२३॥

मार्ग में नीलकण्ठ हमारी रक्षा करें, पत्थरों से युक्त दुर्गम पहाड़ों पर त्रिपुरारि रक्षा करें, वन में निवास के समय मृगादि शिकारियों से उदारशक्ति सदैव रक्षा करें।।२३।।

कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः।
घोरारिसेनार्णवदुर्निवारमहाभयाद्रक्षतु वीरभद्रः।।२४।।

कल्प के अन्त होने पर संहार करने में पटु महारुद्र हमारे ऊपर पड़नेवाले समस्त प्रकोपों से रक्षा करें, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जो कोश रूप से व्याप्त हैं, वे मार्ग में चलते समय रक्षा करें, घोर सेनानियों से घिर जाने पर महाभय से वीरभद्र रक्षा करें।।२४।।

पात्वश्वमातङ्गघटावरूथसहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम् ।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां छिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया।।२५।।

हजारों-लाखों-करोड़ों मतङ्गों के घटाओं के घिर जाने पर, सैकड़ों अक्षौहिणी सेनानियों से घिर जाने पर, महारुद्र अपने कठोर कुठार की धार से हमारी रक्षा करें।।२५।।

निहन्तु दस्यून्प्रलयानलार्चिर्ज्वलत्त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य।
शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान्संत्रासयत्वीशधनुः पिनाकम्।।२६।।

दस्युओं से घिरने पर प्रलयकाल में प्रयोग किये जानेवाले त्रिशूल से त्रिपुरान्तक रुद्र हमारी रक्षा करें, शार्दूल, सिंह, ऋक्ष, वृकादि हिंसकों से संत्रास के समय शिव अपने पिनाक धनुष से हमारी रक्षा करें।।२६।।

दुःस्वप्नदुःशकुनदुर्गतिदौर्मनस्य दुर्भिक्षदुर्व्यसनदुःसहदुर्यशांसि।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिव्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः।।२७।।

दुःस्वप्न, दुःशकुन, दुर्गति, दौर्मनस्य, दुर्भिक्ष, दुर्व्यसन, दुःसह, दुर्यश, उत्पात, तापादि, विषादि, ग्रहादि से उत्पन्न समस्त व्याधियों से जगत् के अधीश्वर भगवान् शङ्कर हमारी सदैव रक्षा करें।।२७।।

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सकलतत्त्वविहाराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्त्तिभञ्जनाय सकलजगद्भयङ्कराय सकललोकैकशङ्कराय शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरुपमाय नीरूपाय निराभासाय निष्प्रपञ्चाय निष्कलङ्काय निर्द्वन्द्वाय निस्सङ्गाय निर्मलाय निराभासाय निरामयाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय जय जय महरुद्र-महारौद्र-भद्रावतार-दुःखदावदारण-महाभैरव-कालभैरव कल्पान्तभैरव-कपालमालाधर-खट्वाङ्ग-खड्ग-चर्म-पाशाङ्कुश-डमरु-शूल-चाप-बाण-गदा-शक्ति-भिन्दिपाल-तोमर-मुसल-मुद्गर-पट्टिश-परशु-परिघ-भुशुण्डि-शतघ्नी-चक्राद्यायुध-भीषणकर-सहस्रमुख-दंष्ट्राकराल-विकटाट्टहास-विस्फारित

ब्रह्माण्डमण्डल-नागेन्द्रकुण्डल-नागेन्द्रहार-नागेन्द्रवलय-नागेन्द्रचर्मधर-मृत्युञ्जय त्र्यम्बक-त्रिपुरान्तक-विरूपाक्ष-विश्वेश्वर-विश्वरूप-वृषभवाहन-विषभूषण-विश्वतोमुख-सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभयं अपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चौरभयं मारय मारय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः संताडय संताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्ड-वेताल-मारीगण-ब्रह्मराक्षसान् सन्त्रासय सन्त्रासय मामभयं कुरु कुरु वित्रस्तं ममाश्वासयाश्वासय नरकभयान्मामुद्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्यायाप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते॥ १०८ पाठ करे।

फलश्रुतिः

ऋषभ उवाच

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया।
सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम्॥२८॥

सभी शरीरधारियों के लिए रहस्यस्वरूप इस वरदायी शिवकवच का वर्णन हमने किया, यह सभी बाधाओं को दूर करनेवाला है॥२८॥

यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम्।
न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात्॥२९॥

जो इस अति उत्तम कवच को सदा धारण (पाठ) करता है, उसको भगवान् शम्भु की कृपा से कभी कोई भय नहीं होता है॥२९॥

क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतोऽपि वा।
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति॥३०॥

क्षीणायु होने पर भी, शरीर में रोग व्याप्त होने की दशा में भी जो नियमित इस कवच का पाठ करता है, उसे हमेशा सुख ही होता है तथा वह दीर्घायु होता है॥३०॥

सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम्।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते॥३१॥

जो भक्त इस कवच को धारण (पाठ) करता है, नियमित पाठ करता है, उसकी सभी प्रकार की दरिद्रता का शमन होता है तथा सभी प्रकार के सौभाग्य का वर्धन होता है, वह शैव हो जाता है और देवताओं का भी पूज्य हो जाता है॥३१॥

महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपपातकैः।
देहान्ते शिवमाप्नोति शिववर्मानुभावतः॥३२॥

इस कवच का नियमित पाठ करनेवाला शिवभक्त महापातकों-उपपातकों के संघों से छूट जाता है तथा शरीर छूटने पर इस शिवकवच के प्रभाव से शिव के लोक की प्राप्ति करता है।

त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम्।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि॥३३॥

हे वत्स! तुम भी श्रद्धापूर्वक मेरे द्वारा प्रदत्त इस अति-उत्तम शिव कवच को धारण करों और श्रेयोवान हो जाओं।

अनेन शिवकवचपाठाख्येन साम्बसदाशिवमहारुद्रः प्रीयन्तां न मम।

अमोघशिवकवचं परिपूर्णम्

❀

वाह्यपूजनक्रमेआवरणादिपरिवारार्चनम्

परिवार्चनादेशः—**ॐ संविचन्मयपरे देवि परामृतचरुप्रिये।**
अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते॥

हे सतोगुणात्मक चिन्मय परदेवता! परमण्डल से द्रवीभूत होने वाले अमृतद्रव से प्रेम करनेवाली, अपने परिवार के अर्चन के लिए अनुज्ञा प्रदान करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अनुज्ञां देहि महेश्वरि। पुष्पाञ्जलि प्रदान करके दाँयें हाथ से पूजन तथा बाँयें हाथ से तर्पण करे।

सर्व प्रथम भूपुर के वायव्यकोण में मानवौघ, उत्तर में सिद्धौघ, ईशान में दिव्यौघ गुरुओं का पूजन करे।

महादेवी महादेवस्त्रिपुरश्चैव भैरवः।
दिव्यौघागुरवः प्रोक्ता सिद्धौघान्कथयामि ते॥१॥

महादेवी, महादेव, भैरव दिव्यौघ गुरु कहे गये हैं॥१॥

ब्रह्मानन्द पूर्णदेवश्चलचित्ताश्चलाचलः।
कुमारः क्रोधनश्चैव वरदः स्मरदीपनः॥२॥

ब्रह्मानन्द, पूर्णदेव, चलचित्त, चलाचल, कुमार, क्रोध, वरद, स्मरदीपन सिद्धौघ गुरु कहे गये हैं॥२॥

माया मायावती चैव मानवौघाच्छ्रुणुष्व मे।
विमलः कुशलश्चैव वसिष्ठो बोध एव च॥३॥

माया, मायावती सिद्धौघ गुरु कहे गये है, विमल, कुशल, वसिष्ठ और बोध मानवौघ गुरु कहे गये हैं॥३॥

मीनो गोरक्षकश्चैव भोजदेवः प्रजापतिः।
मूलदेवो रन्तिदेवो विघ्नेश्वर हुताशन॥४॥

मीन, गोरक्ष, भोजदेव, प्रजापति, मूलदेव, रन्तिदेव, विघ्नेश्वर और हुताशन मानवौघ गुरु कहे गये हैं॥४॥

समयानन्दसन्तोषी कालिका गुरवस्तथा।
आनन्दनाथशब्दान्ते गुरवः सर्वसिद्धिदाः॥५॥

समयानन्द, सन्तोष ये सभी कालिका सम्प्रदाय के गुरु कहे गये हैं सभी के नाम के अन्त में आनन्दनाथ जोड़ कर उच्चारण करना चाहिये॥५॥

स्त्रियोऽपि गुरुरूपाश्चेदम्बान्ताः परिकीर्तिताः।

स्त्री यदि गुरु हो तो उनके नाम के अन्त में अम्बा शब्द अन्त में योजन कर श्रीपादुकां योजन करना चाहिये।

तत्रादौ भूपुरे दिव्यगुरुणां पूजनम्

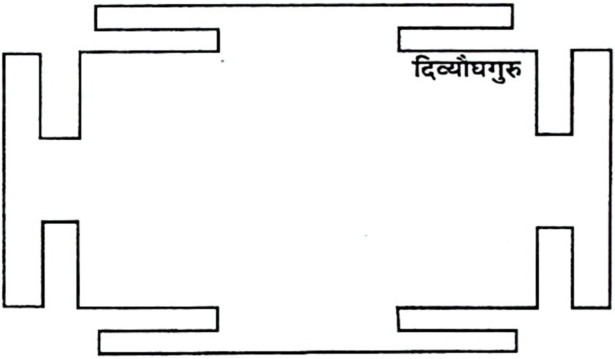

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीमहादेव्यम्बानन्दनाथाय नमः श्रीमहादेव्यम्बानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीमहादेवानन्दनाथाय नमः श्रीमहादेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीत्रिपुरानन्दनाथाय नमः श्रीत्रिपुरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीभैरवानन्दनाथाय नमः श्रीभैरवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

भूपुरे सिद्धौघगुरुणां पूजनम्

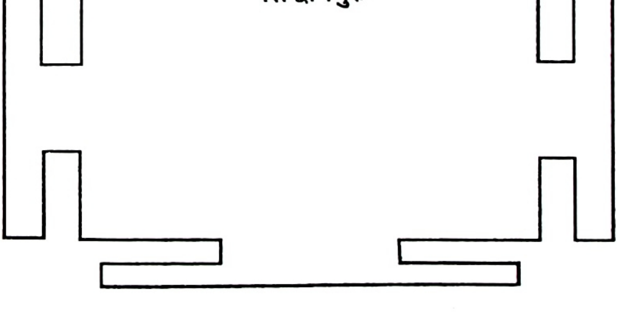

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीब्रह्मानन्दनाथाय नमः श्रीब्रह्मानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीपूर्णदेवानन्दनाथाय नमः श्रीपूर्णदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीचलचित्तानन्दनाथाय नमः श्रीचलचित्तानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीचलाचलानन्दनाथाय नमः श्रीचलाचलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीकुमारानन्दनाथाय नमः श्रीकुमारानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीक्रोधानन्दनाथाय नमः श्रीक्रोधानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीवरदानन्दनाथाय नमः श्रीवरदानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीस्मरदीपानन्दनाथाय नमः श्रीस्मरदीपानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

भूपुरे मानवौघगुरुणां पूजनम्

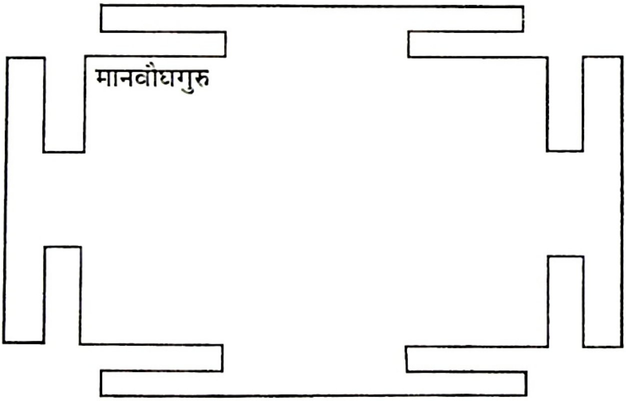

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीमायाम्बायै नमः श्रीमायाम्बानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीमायावत्यम्बायै नमः श्रीमायावत्यम्बानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीविमलानन्दनाथाय नमः श्रीविमलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीकुशलानन्दनाथाय नमः श्रीकुशलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीमत्सेनानन्दनाथाय नमः श्रीमत्सेनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीसुधाकरानन्दनाथाय नमः श्रीसुधाकरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीप्रह्लादानन्दनाथाय नमः श्रीप्रह्लादानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीसनकानन्दनाथाय नमः श्रीसनकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीवसिष्ठानन्दनाथाय नमः श्रीवसिष्ठानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीबोधानन्दनाथाय नमः श्रीबोधानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीमीनानन्दनाथाय नमः श्रीमीनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीगोरक्षानन्दनाथाय नमः श्रीगोरक्षानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीभोजदेवानन्दनाथाय नमः श्रीभोजदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीप्रजापत्यानन्दनाथाय नमः श्रीप्रजापत्यानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीमूलदेवानन्दनाथाय नमः श्रीमूलदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीरन्तिदेवानन्दनाथाय नमः श्रीरन्तिदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीविघ्नेशरानन्दनाथाय नमः श्रीविघ्नेशरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीहुताशनानन्दनाथाय नमः श्रीहुताशनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीसमयानन्दनाथाय नमः श्रीसमयानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीसन्तोषानन्दनाथाय नमः श्रीसन्तोषानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

निज गुरु के नाम के आगे आनन्दनाथ शब्द जोड़ कर पूजन करना चाहिये यथा यदि रामप्रिय नाम है तो श्रीरामप्रियानन्दनाथाय नमः श्रीरामप्रियानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि वाक्य का प्रयोग करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीनिजगुरवानन्दनाथाय नमः श्रीनिजगुरवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः गुरुदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः गुरुदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

एताः गुरुदेवतापूजनेन श्राविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

प्रथमावरणं त्रिकोणे

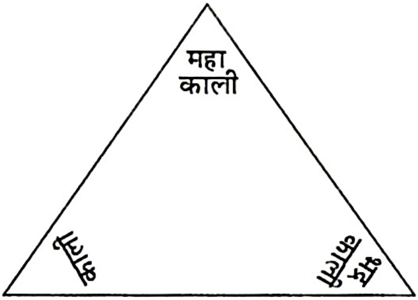

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा काल्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा महाकाल्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा भद्रकाल्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः प्रथमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

एताः प्रथमावरणदेवतापूजनेन श्राविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

हे शरणागत वत्सले परदेवि! हमारे समस्त कामनाओं की पूर्ति करें, भक्तिपूर्वक प्रथम-आवरण का अर्चन समर्पित करता हूँ।

द्वितीयावरणं षट्कोणे

ब्रह्माच्युतरुद्राणां तथा वाणीलक्ष्मीपार्वती।
अङ्गक्रमादावरणे च शक्तिर्देवीकालिका।।

ब्रह्माविष्णुरुद्रों का वाणीलक्ष्मीपार्वती के सहित कालिका के आवरणाङ्ग में पूजन करना चाहिये।

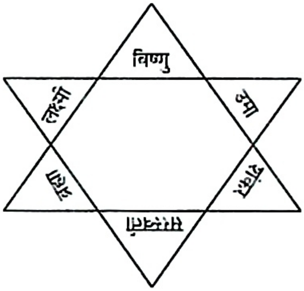

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा सरस्वत्यै नमः सरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ब्रह्मणे नमः ब्रह्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा विष्णवे नमः विष्णुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा उमायै नमः उमाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा शिवाय नमः शिवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः द्वितीयावरणदेवताः साङ्गः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिता सन्तु।

एताः द्वितीयावरणदेवतापूजनेन श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनिमुद्रा प्रदर्शन करके तृतीयावरण देवताओं का पूजन करे। पञ्चत्रिकोणों में रश्मिदेवताओं का पूजन करे।

तृतीयावरणं पञ्चदशत्रिकोणे **रश्मिदेवतानां पूजनम्**

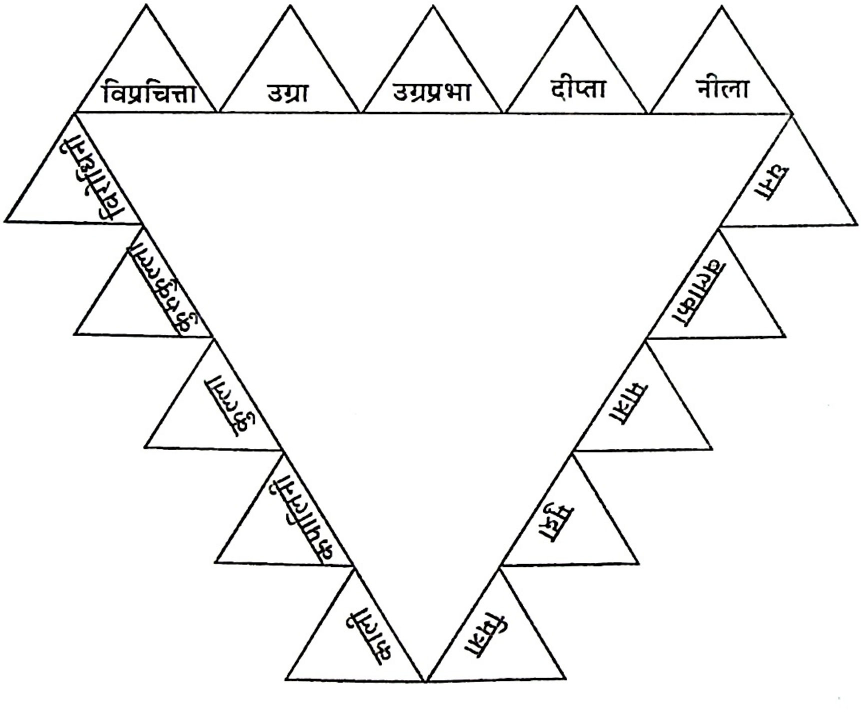
विप्रचित्ता
उग्रा
उग्रप्रभा
दीप्ता
नीला
घना
बलाका
मात्रा
मुद्रा
मिता
काली
कपालिनी
कुल्ला
कुरुकुल्ला
विरोधिनी

सर्वाः श्यामा असिकराः मुण्डमालाविभूषिताः।
तर्जनी वामहस्तेन धारायन्त्यश्च सस्मिताः॥१॥

हाथों में खड्ग धारण की हुई मुण्डमालाओं से विभूषित, बायें हाथ से पृथ्वी धारण की हुई समस्त श्यामाओं का ध्यान करता हूँ॥१॥

उद्यद्घनाघनाश्लिष्यज्जवाकुसुमसन्निभम् ।
मत्तकोकिलनेत्राभां पक्वजम्बूफलप्रभाम्॥२॥

पूर्ण रूप से खिले हुए, घनघोर रूप से आपस में गुंथे हुए जवाकुसुम पुष्प की माला को धारण की हुई, मत्त(मदमस्त) कोकिल के नेत्र के समान, पके हुए जामुन के फल की कान्तिवाली महादेवी कालिका के रश्मि देवियों का ध्यान करता हूँ॥२॥

पञ्चदशत्रिकोणों में रश्मिदेवताओं का पूजन करे।

प्रथमत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा काल्यै नमः कालीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

द्वितीयत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा कपालिन्यै नमः कपालिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

तृतीयत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा कुल्लायै नमः कुल्लाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

चतुर्थत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा कुरुकुल्लायै नमः कुरुकुल्लाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

पञ्चमत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा विरोधिन्यै नमः विरोधिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

षष्ठत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा विप्रचित्तायै नमः विप्रचित्ताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सप्तमत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा उग्रायै नमः उग्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अष्टमत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा उग्रप्रभायै नमः उग्रप्रभाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

नवमत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा दीप्ताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

दशमत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा नीलायै नमः नीलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

एकादशत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा घनायै नमः घनाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

द्वादशत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा बलाकायै नमः बलाकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

त्रयोदशत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मात्रायै नमः मात्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

चतुर्दशत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मुद्रायै नमः मुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

पञ्चदशत्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मित्रायै नमः मित्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः तृतीयावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

एताः तृतीयावरणदेवतापूजनेन श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनिमुद्रा प्रदर्शन कर चतुर्थावरण देवताओं का पूजन करे।

चतुर्थावरणं अष्टकोणे अष्टशक्तिनां पूजनम्

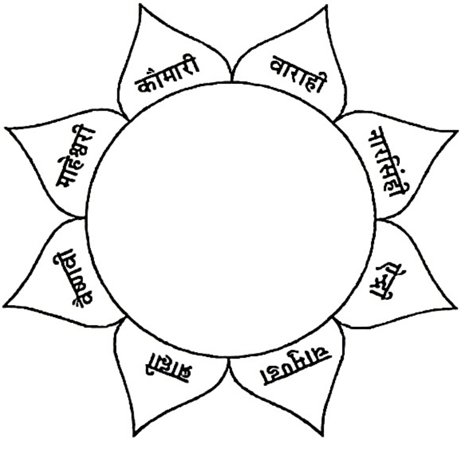

ब्राह्मी ध्यानम्

दण्डं कमण्डलुं पश्चादक्षसूत्रं महाभयम्।
बिभ्रती कनकच्छायां ब्राह्मी कृष्णाजिनोज्ज्वलाम्॥

हाथों में दण्ड, कमण्डलु और अक्षमाला धारण की हुई, महाभय का नाश करनेवाली, सुवर्ण के समान कान्तिवाली, उज्ज्वल चमकदार कृष्णाजिन धारण की हुई ब्राह्मी का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

वैष्णवी ध्यानम्

चक्रं घण्टां कपालं च शङ्खञ्च दधतीं करैः।
तमालश्यामला ध्येया वैष्णवीविभ्रमोज्ज्वलाम्॥

चक्र, घण्टा, कपाल और शङ्ख को हाथों में धारण की हुई, ताम्र के समान उज्ज्वल कान्तिवाली वैष्णवी का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा वैष्णव्यै नमः वैष्णवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

माहेश्वरी ध्यानम्

शूलं परश्वधं क्षुद्रं दुन्दुभीं नृकरोटिकाम्।
वहन्ती हिमसङ्काशा ध्येया माहेश्वरी शुभा॥

हाथों में शूल और परशु धारण की हुई धीरे धीरे दुन्दुभी नाद तथा नृत्य करती हुई हिम के समान शुभ माहेश्वरी का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

कौमारी ध्यानम्

अङ्कुशं दण्डखट्वाङ्गौ पाशं च दधतीकरैः।
बन्धूकपुष्पसङ्काशा कुमारी कामदायिनी॥

हाथों में अङ्कुश, दण्ड, खट्वाङ्ग और पाश धारण की हुई, बन्धूक पुष्प के समान, समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाली कुमारी का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा कौमार्यै नमः कौमारीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अपराजिता ध्यानम्

अक्षस्रजं बीजपरं कपालं दधती करैः।
वहन्ती हेमसङ्काशा मोहलक्ष्मीः अपराजिता॥

अकार से क्षकार तक के वर्णों से उत्पन्न परम बीजों से गुम्फित माला तथा कपाल को सिर पर धारण की हुई मोहलक्ष्मी अपराजिता का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अपराजितायै नमः अपराजिताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

वाराही ध्यानम्

मुशलं करवालं च खेटकं दधती हलम्।
करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालघनच्छविः॥

मुशल, करवाल, खेटक और हल धारण की हुई, संहार काल के बादल के समान छविवाली वाराही का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा वाराह्यै नमः वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

नारसिंही ध्यानम्

शङ्खं च चक्रं च गदां च पद्मं दधती करैः।
नीलाम्बरीसमा ध्येया नारसिंही समीरिता॥

शङ्ख, चक्र, गदा तथा पद्म हाथों में धारण की हुई, नीलाम्बरी के समान कान्तिवाली नारसिंही का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा नारसिंह्यै नमः नारसिंहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

चामुण्डा ध्यानम्

शूलं कृपाणं नृशिरः कपालं दधती करैः।
मुण्डस्रङ्मण्डिता ध्येया चामुण्डा रक्तविग्रहा॥

शूल, कृपाण, नरशिर और कपाल हाथों में और मुण्डों की मालाओं को धारण की हुई रक्त कान्तिवाली चामुण्डा का ध्यान करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा चामुण्डायै नमः चामुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः चतुर्थावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

एताः चतुर्थावरणदेवतापूजनेन श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनिमुद्रा प्रदर्शन करके पञ्चमावरण देवतापूजन करे।

पञ्चमावरणं अन्त:अष्टकोणे **अष्टभैरवपूजनम्**

ग्रहभूतपिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये।
दूरादाशु पलायन्ते भैरव तव दर्शनात्॥

हे भैरव! त्रिलोक में विचरण करनेवाले ग्रहभूतपिशाचादि आपके दर्शनमात्र से दूर से ही भाग जाते हैं।

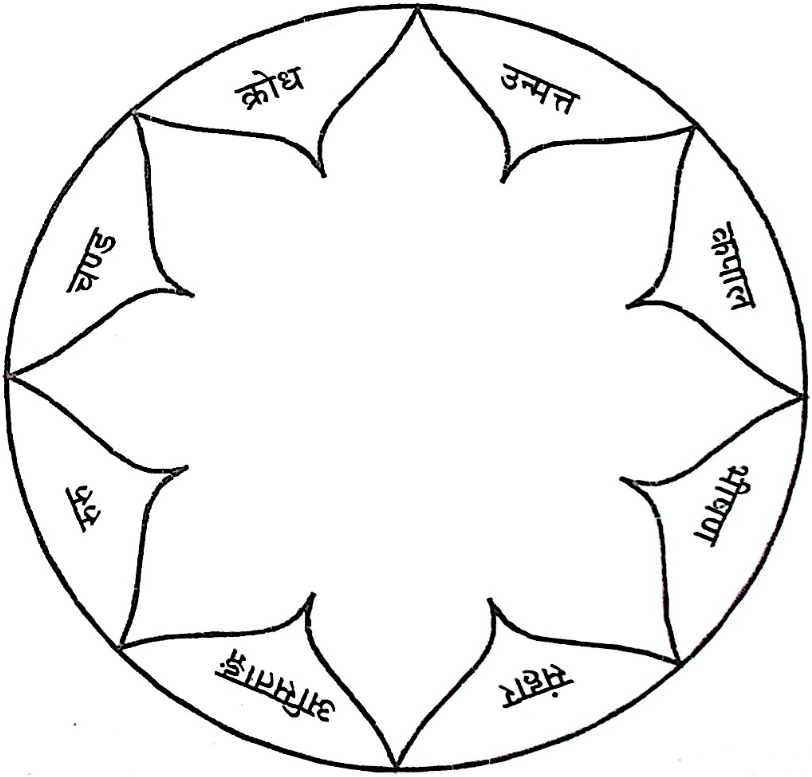

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा कपालभैरवाय नमः कपालभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा संहारभैरवाय नमः संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः पञ्चमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः पञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

एताः पञ्चमावरणदेवतापूजनेन श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिराप्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान करने के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित कर योगिनियों का पूजन करे।

सन्तापिनी संहारिणी रौद्री भ्रामणी तथा।
जृम्भिणी द्राविणी चैव क्षोभिणी मोहिनी तथा॥१॥
स्तम्भिन्योच्चाटिनी चैव ज्वालिनी मर्दिनीस्तथा।
नाशिनी शोषिणी देवि कौलिनी भक्षिणीस्तथा॥२॥
एतास्युः योगिनीश्चैव विपरीतासदापरा।
पूजयेत् सर्वलोकानां प्रत्यङ्गिरास्तुदेवता॥३॥

षष्ठावरणे षोडशपात्रोपरि अष्टयोगिनीनां पूजनम्

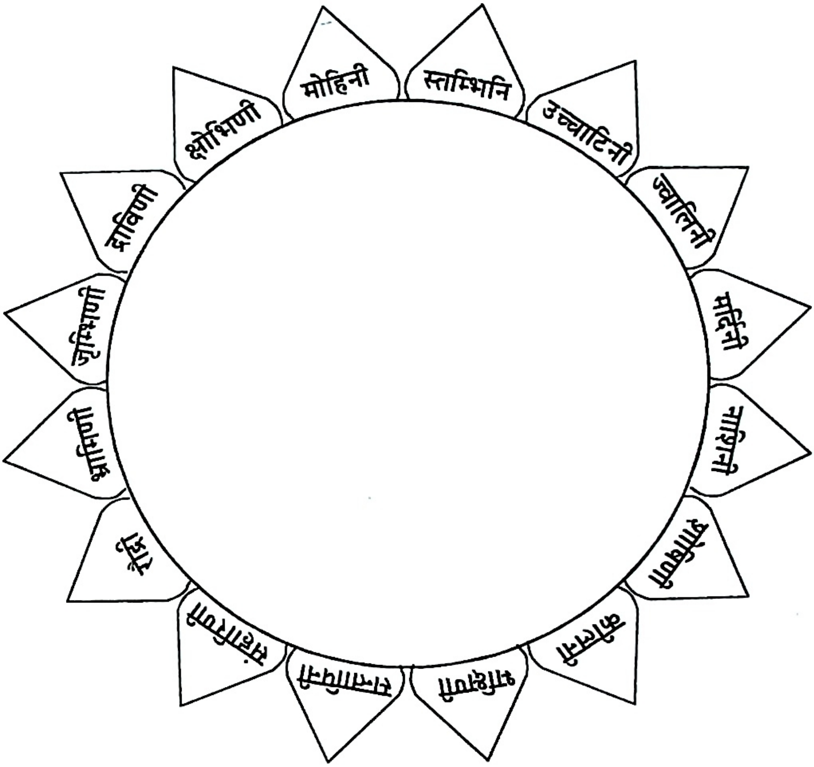
मोहिनी
स्ताम्भिनि
उच्चाटिनी
ज्वालिनी
मर्दिनी
नाशिनी
शोषिणी
कीलनी
भक्षिणी
सन्तापिनी
संहारिणी
रौद्री
भ्रामिणी
जृम्भिणी
द्राविणी
क्षोभिणी

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीसन्तापिन्यै नमः श्रीसन्तापिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा संहारिण्यै नमः संहारिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा रौद्र्यै नमः राद्रीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा भ्रामिण्यै नमः भ्रामणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा जृम्भिण्यै नमः जृम्भिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा द्राविण्यै नमः द्राविणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा क्षोभिण्यै नमः क्षोभिणी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मोहिन्यै नमः मोहिनीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा स्तम्भिनि शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा उच्चाटिन्यै नमः उच्चाटिनी-शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मर्दिन्यै नमः मर्दिनीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा नाशिन्यै नमः नाशिनीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा शोषिण्यै नमः शोषिणीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा कीलिन्यै नमः कीलनीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा भक्षिण्यै नमः भक्षिणीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः षष्ठावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः षष्ठावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

एताः षष्ठावरणदेवतापूजनेन श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्॥

योगिनीयों के पूजन के बाद भूपुर में दशदिग्पालों का पूजन करे।

सप्तमावरणे भूपुरे दशदिक्पालानांपूजनम्

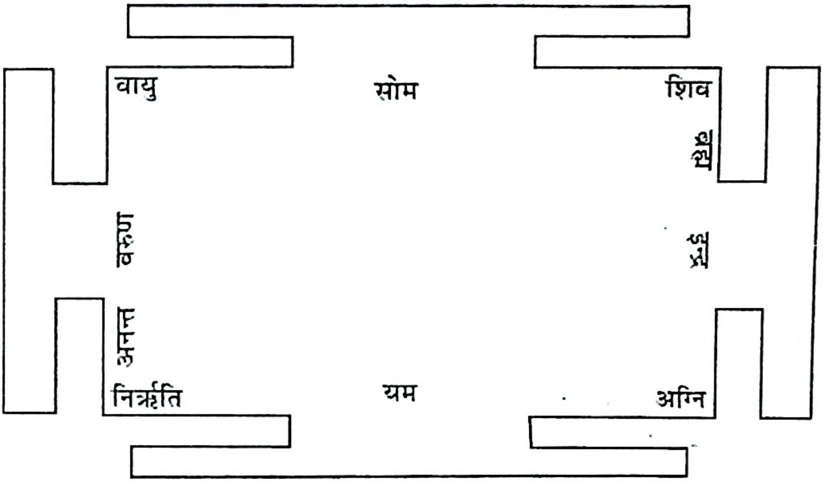

इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिः, वरुणवायुसोमेशाः।
ब्रह्मा-अनन्त-सहिताः, प्रसीदन्तु सदा मम॥१॥

इन्द्र-अग्नि-यम-निर्ऋति-वरुण-वायु-सोम-ईशान-ब्रह्मा तथा अनन्त सदा हमारे ऊपर प्रसन्न रहे॥१॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अग्नये नमः अग्निश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा यमाय नमः यमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा निर्ऋतये नमः निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा वरुणाय नमः वरुणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा वायवे नमः वायुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा सोमाय नमः सोमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ईशानाय नमः ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ब्रह्मणे नमः ब्रह्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अनन्ताय नमः अनन्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—एताः सप्तमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

एताः सप्तमादेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

एताः सप्तमावरणदेवतापूजनेन श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

अष्टमावरणं भूपुरे दिक्पालास्त्रपूजनम्

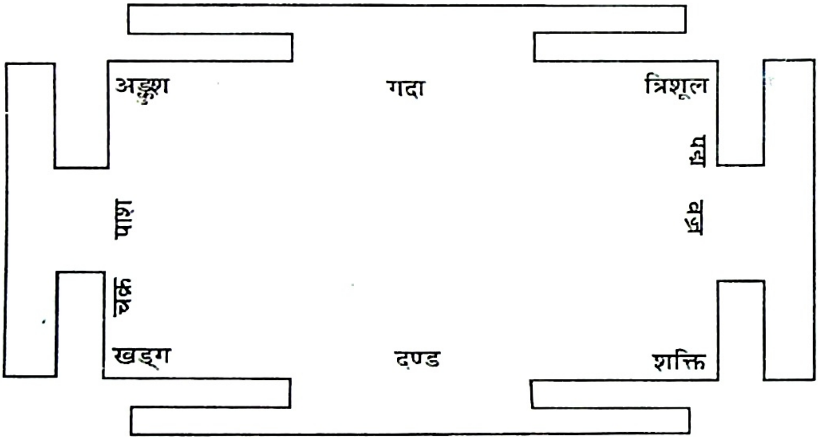

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा वज्राय नमः वज्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा शक्त्यै नमः शक्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा दण्डाय नमः दण्डशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा खड्गाय नमः खड्गशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा पाशाय नमः पाशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अंकुशाय नमः अंकुशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा गदाय नमः गदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा त्रिशूलाय नमः त्रिशूलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा पद्माय नमः पद्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा चक्राय नमः चक्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः अष्टमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः अष्टमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

एताः अष्टमावरणदेवता पूजनेन श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥

अष्टमावरण में विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा देवी के अस्त्रों का उनके स्थानों भूपुर के चारों कोणों पर पूजन करे।

नवमावरणं भूपुरचतु:कोणे देव्यास्त्रपूजनम्

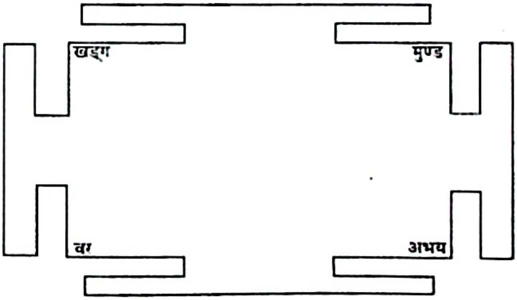

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा खड्गाय नमः खड्गश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मुण्डाय नमः मुण्डश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा वराय नमः वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अभयाय नमः अभयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः नवमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः नवमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

एताः नवमावरणदेवतापूजनेन श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनिमुद्रा प्रदर्शन करके नवमावरण देवतापूजन करे।

तत्रैव **वटुकादिपूजनम्**

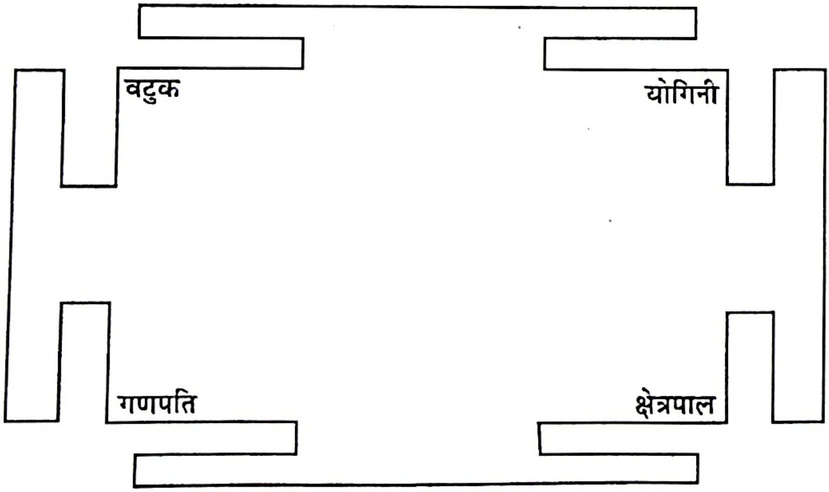

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा वटुकाय नमः वटुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा योगिनीभ्यो नमः योगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा गणपतये नमः गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीराजराजेश्वराय नमः राजराजेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः वटुकादिदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः वटुकादिदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

एताः वटुकादिदेवतापूजनेन श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥
अनेनपूजनेनाथ पाद्यगन्धादिभिर्युतां।
समर्पयामिदेवेशि समस्ताभरणान्विता॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनिमुद्रा प्रदर्शन करके वटुकादि बलिदान करे।

वाह्यपूजनक्रमेदैनिकबलिदानम्

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोः राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यश्रीव्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटक विराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशि स्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु

यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीइष्टदेवताविपरीतप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणसिद्धये नारिकेलबलिदानं करिष्ये।

ॐ नारिकेलबलिमण्डलाय नमः। नारिकेल बलि मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ नारिकेलबलिमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नारिकेल बलि मण्डल पर गन्धाक्षतपुष्प छोड़े।

ॐ नारिकेलदेयबलये नमः। नारिकेलबलि को मण्डल पर स्थापित करे।

ॐ नारिकेलदेयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नारिकेल बलि पर गन्धाक्षतपुष्प छोड़े।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा हुं फट्। नारिकेलबलि पूजन के बाद वीरासन मुद्रा से एक हाथ से एक ही बार में बलि का स्फोटन करे।

ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः नारिकेलदेयबलिं तुभ्यं समर्पयामि। हाथ में जल लेकर नारिकेल बलि समर्पित करे।

नारिकेल बलि पूजन के बाद वीरासन मुद्रा से एक हाथ से एक ही बार में बलि का स्फोटन करे, स्फोटन के बाद नारिकेल जल से प्रधानदेवता और शक्तियों के लिए कम से कम नौ बार तर्पण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा विपरीतप्रत्यङ्गिरां तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चरकीं तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विदारीं तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पूतनां तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पापराक्षसीं तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा स्फोटितनारिकेलदेयबलिं समर्पयामि।

वटुकादिबलिदानम्—नारिकेल बलिदान के बाद वटुकादि बलिदान करे—

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोः राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यश्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटक विराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे**

अमुककरणे अमुकराशि स्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणसिद्धये चतुर्दिक्षु वटुकादिदेवताभ्यो पायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।

वटुकबलिदानम्

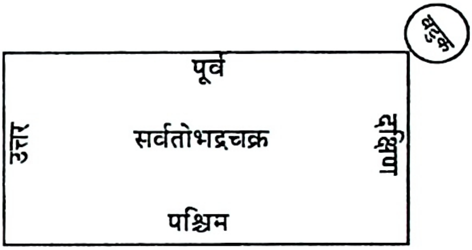

चक्र के ईशानकोण में वटुक के लिए बलि प्रदान करे।

ॐ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। ईशानकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ वँ वटुकबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ वँ वटुकबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ एह्येहि देविपुत्र बटुकनाथकपिलजटा भार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशयनाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

**ॐ करकलित-कपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुण-तिमिर-नीलः व्याल-यज्ञोपवीती।
क्रतु-समय-सपर्या-विघ्न-विच्छेद-हेतुः ,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥**

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों में कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्थावाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालोंवाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित, विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करनेवाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ।

पुष्पाञ्जलिः

बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः॥

बलिदान से सभी सिद्धियों को देनेवाले, भूतवेतालों से सेवित बटुकभैरव प्रसन्न हो और सदैव हमें शान्ति प्रदान करें।

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन बटुकः प्रीयतां न मम।**

योगिनीबलिदानम्

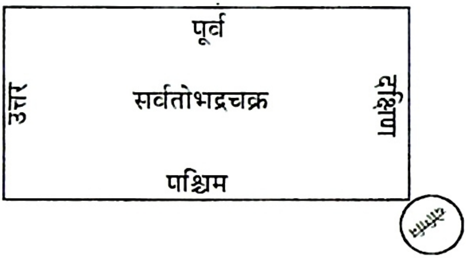

ॐ याँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ याँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। अग्निकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र को अग्नि कोण में रखे।

ॐ याँ योगिनीबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ याँ योगिनीबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ याँ सर्वेभ्यो योगिनीभ्यो फट् सर्ववर्णयोगिनीभ्यो नमः सर्वशक्तिभ्यः त्रिनेत्र-सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ऊर्ध्वब्रह्माण्डतोया दिविगगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोः यत्र कुत्र स्थितो वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठे दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः,
प्रीता देव्या सदा नः शुभविधिबलिभिः पातु वीरेन्द्रवन्द्या॥

ऊपर ब्रह्माण्ड में, जल में, पाताल में, द्युलोक में, आकाश में, भूतल पर, निष्कल अवस्था में, स्थल पर, अनल में, सुन्दर शीतल पवन में जहाँ तहाँ रहनेवाली योगिनी वर्ग, क्षेत्र, पीठ, उपपीठ, दिशाओं में रहनेवाली, धूप दीपादि के द्वारा पूजित होकर, प्रसन्न होकर, वीरों के द्वारा पूजित योगिनियाँ प्रसन्न हों और सभी प्रकार से हमें शुभ प्रदान करें।

पुष्पाञ्जलिः

योगिनीयोगमाया च योगिनां सिद्धिदायिनी।
षड्चक्रभेदिनी देवि सर्वविघ्नविनाशिनी॥१॥

योगमायायोगिनी, योगियों को सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करनेवाली, षड्चक्रों का भेदन करनेवाली, सभी विघ्नों का विनाश करनेवाली॥१॥

योगिनी योगमाया च सर्वभैरवमोहिनी।
सर्ववीर्यमहातेजाः सर्वत्र शुभदायिनी॥२॥

सभी भैरवों को मोहित करनेवाली योगमाया योगिनी, सभी प्रकार की बलशालिनी महानतम तेजोंवाली, सभी हमें शुभ प्रदान करे॥२॥

या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरा परात्पराः।
द्यु-व्योम-भूमिचारिण्यः सर्वाः प्रीतास्तु मे सदा॥३॥

जो कोई योगिनी रौद्र, सौम्या, घोर, परात्परा, द्युव्योमभूमिचारी समस्त योगिनियाँ सभी प्रसन्न होकर हमें शुभता प्रदान करे॥३॥

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वयोगिन्यः प्रीयतां न मम।**

गणेशबलिदानम्

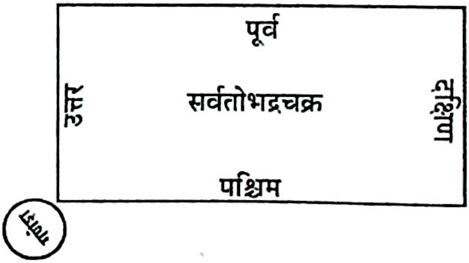

ॐ गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। नैर्ऋत्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ गँ गणेशबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ गँ गणेशबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ गँ गाँ गीँ गूँ गैँ गौँ गः गणेशाय नमः भो गणेश! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ॐ ॐकाररूपं त्र्ययमिति च परं यत् स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेज-सिन्दूर-मूर्तिम्।
योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकलगुणमयं श्रीहरेन्द्रेण सङ्गं,
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति॥१॥

ओंकार त्रय रूप से परमतुरीय जो ब्रह्मरूप, सत्त्वरजतम तीनों गुणों से अतीत रूपोंवाले, मन से भी तेज, सिन्दूर के रूप(वर्ण)वाले, मूर्तिमान्, योगियों के द्वारा वन्द्य, सकल गुणों के खान, ब्रह्मरन्ध्र में रहनेवाले, श्रीहरि के साथ गं गं गं गं बीजरूपी गज मुखवाले व्यापक गणेश का ध्यान करता हूँ॥१॥

विदेहरूपं भवबन्धहारं सदा स्वनिष्ठं स्वसुखप्रदंतम्।
अमेयसांख्येन च लक्ष्यमीशं गजाननं भक्तियुतं भजामः॥२॥

विदेह रूपवाले, भवसागर के बन्धन को समाप्त करनेवाले, सदा अपने (ब्रह्मभाव) में ही स्थित रहनेवाले, आत्म सुख को प्रदान करनेवाले, माया विहीन, सांख्य के द्वारा बोधगम्य, ईश्वर गजानन का भक्ति पूर्वक भजन करता हूँ॥२॥

कल्पद्रुमाधः स्थितं कामधेनुं चिन्तामणिं दक्षिणपाणिशुण्डम्।
विभ्राणमत्यद्भुतचित्तरूपं यः पूजयेत् तस्य समस्तसिद्धिः॥३॥

कल्पवृक्ष के समान, कामधेनु के सदृश, कामनाओं की पूर्ति करने में दक्ष, चित्त में अतिअद्भुत रूप से जो पूजन करता है, उसकी समस्त कामनायें सिद्धि होती हैं॥३॥

पुष्पाञ्जलिः

ॐ गजाननाय पूर्णाय सांख्यरूपमयाय ते।
विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः॥१॥

सांख्यरूपमय पूर्ण ब्रह्म गजानन बिना देह के निष्कल भाव से सर्वत्र संस्थित, हे गणेश! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है॥१॥

अमेयाय च हेरम्ब परशुधारकाय ते।
मूषकवाहनायैव विघ्नेशाय नमो नमः॥२॥

माया विहीन, परशु(फरसा) धारण करनेवाले, हेरम्ब, मूषक जिसका वाहन है, सम्पूर्ण विश्व के मालिक आपको नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है॥२॥

अनन्तविभवायैव परेशां पररूपिणे।
शिवपुत्राय देवाय गुहाग्रजाय ते नमः॥३॥

अनन्तविभवों से युक्त, परमेश्वर, परस्वरूपवाले, शिव के पुत्र, देवताओं के गुहाग्रज देवता गणेश के लिए नमस्कार है॥३॥

पार्वतीनन्दनायैव देवानां पालकाय ते।
सर्वेषां पूज्यदेहाय गणेशाय नमो नमः॥४॥

पार्वतीनन्दन, देवताओं के पालक, सभी शरीरधारियों में परमपूज्य श्रीगणेश को नमस्कार है।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।**

क्षेत्रपालबलिदानम्

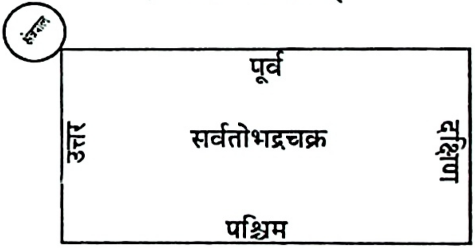

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। वायव्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करके समर्पित करे।

ॐ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय नमः भो स्थानक्षेत्रपाल सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्त्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारकौस्तुभधरं शीतांशुचण्डोज्ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥१॥

उदयकालीन सूर्य के समान प्रकाशमान, तीन नेत्रवाले, अङ्गों में रक्त अङ्गराग का अनुलेपन किये हुए, मुस्कराते हुए मुख मण्डलवाले, वर, अभय, कपाल, शूल हाथों में धारण किये हुए, नील ग्रीवावाले, उदार, कौस्तुभमणि धारण किये हुए, शिर पर शीतल चन्द्र धारण किये हुए, बन्धूक पुष्प के रंग के समान वस्त्र धारण किये हुए, अत्यन्त विशाल लेकिन अपने भक्तों के लिए अतिशय सौम्य रूपों को धारण करनेवाले, समस्त भय का हरण करनेवाले, क्षेत्रपाल देवता का ध्यान करता हूँ॥१॥

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं संहारमूर्तिं शुभमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥२॥

यक्षरूप वदनवाले, दशों दिशाओं में भूमि को कम्पित करनेवाले, संहार के मूर्ति चन्द्र बिम्बवाले सुन्दर शुभमुकुट को धारण करनेवाले, जटा जिसके सिर पर स्थित है, दीर्घ शरीरवाले, विशाल नख तथा मुखवाले, ऊपर की तरफ विकराल रोमोंवाले, समस्त पापों को स्मरण मात्र से नष्ट करनेवाले, क्षेत्रपाल भैरव को सतत प्रणाम करता हूँ॥२॥

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्य॥३॥

त्रिलोक के स्वामी, द्वितीया के चन्द्रकला को धारण करनेवाले, मुण्डमाला पहने हुए, महेश्वर, दिगम्बर, पीत केशवाले, हाथ में डमरु, शूल, खड्ग, पाश और अभय धारण

करनेवाले, तथा नाग, घण्टा, कपाल हाथ में सुशोभित, विशाल दाँतोंवाले, दिव्य आभूषणों से सुसज्जित, त्रिनेत्र तथा नाना मणियों से जटित किंकिणी और नूपूर धारण किये हुए बटुक भैरव का ध्यान करता हूँ॥३॥

पुष्पाञ्जलिः

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं, अनुज्ञां दातुमर्हसि॥१॥

तीक्ष्ण दातोंवाले, महाकाय, कल्पान्त में सृष्टि का संहार करनेवाले, भैरव को नमस्कार है, हे भैरव! हमें पूजन की अनुमति प्रदान करें तथा हमारी सर्वत्र सर्वदा रक्षा करें॥१॥

ॐ यस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे॥२॥

इस क्षेत्र के निवासी क्षेत्रपाल के सेवकगण हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलिदान से सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर हमारी सभी तरफ से रक्षा करें॥२॥

ग्रहभूतपिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये।
दूरादाशु पलायन्ते क्षेत्रेश तव दर्शनात्॥३॥

हे क्षेत्रपाल! त्रिलोक में विचरण करनेवाले ग्रहभूतपिशाचादि आपके दर्शनमात्र से दूर से ही भाग जाते हैं॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।**

राजराजेश्वरबलिदानम्

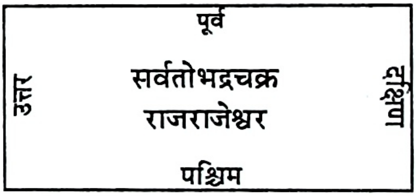

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। मध्य में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः ह्स्राँ स्हौँ राजराजेश्वर! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे,
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं,
संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥१॥

हे मस्तक की जटाओं में चन्द्रमा को धारण करनेवाले! हे कामदेव का दहन करनेवाले! त्रिशूल धारण करनेवाले! हे स्थाणु! हे पर्वतों के ईश्वर! हे गिरिजा के पति! हे महा ईश्वर! हे समस्त भूतों का कल्याण करनेवाले! भूतगणों के मालिक! समस्त भयों का नाश करनेवाले! हमारे नाथ! इस संसार के गहन दुःखों से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥१॥

हे पार्वती हृदयवल्लभ चन्द्रमौले,
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भवरुद्र पिनाकपाणे,
संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥२॥

हे पार्वती के हृदय में निवास करनेवाले! हे चन्द्रमौलि! भूतों के अधिपति! प्रमथादि गणों के नाथ! हे गिरीश! हे वामदेव! हे भव! हे रुद्र! हे पिनाक धनुष को हाथ में धारण करनेवाले! इस संसार के गहन दुःखों से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥२॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र,
लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां,
संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥३॥

हे नीलकण्ठ! हे वृषभध्वज! हे पञ्चवक्त्र! हे लोकों के स्वामि! हे प्रलय काल में भी शेष रहनेवाले! हे प्रमथादि गणों के ईश्वर! हे शर्व! हे धूर्जटि! हे पशुपति! हे गिरिजा के पति! इस संसार के गहन दुःख से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥३॥

पुष्पाञ्जलिः

गौरीविलास-भुवनाय महेश्वराय,
पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।

शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥१॥

गौरी के साथ सम्पूर्ण भुवन में विलास करनेवाले, महेश्वर, पाँच मुखोंवाले, शरण में आने वाले भक्तों की रक्षा करनेवाले, हे शर्व! समस्त जगत् के अधिपति, मेरे दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार है॥१॥

भक्तिप्रियाय भयरोगभयापहाय,
उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥२॥

भक्ति से प्रसन्न होनेवाले, भय-रोगादि को हटानेवाले, उग्रस्वरूप दुर्गम भवसागर से तरने के लिए, गुणों के द्वारा प्रसिद्धि पानेवाले ज्योतिमय, मेरे दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार है॥२॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय,
नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥३॥

रघुकुल नाथ श्रीराम को परमप्रिय लगनेवाले तथा वरप्रदान करनेवाले, नाग से प्रेम करनेवाले तथा नरक रूपी महासमुद्र से तारनेवाले, देवताओं के द्वारा सदैव अर्चित, पुण्यों में परमपुण्य स्वरूप महेश्वर मेरे दुःक्षदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए हे शिव! आपकों नमस्कार है॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन श्रीराजराजेश्वरः प्रीयतां न मम।**

कालबलिदानम्

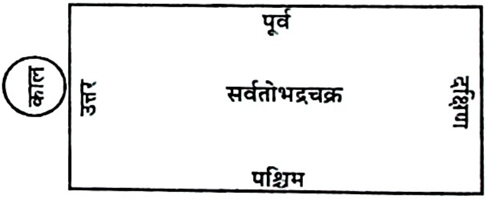

ॐ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से उत्तरदिशा में बलि पात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ कालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ कालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ कालबलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ कालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ काल! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

एह्येहि दण्डायुधधर्मराज कालाञ्जनाभासविशालनेत्र।
विशालवक्षःस्थलरुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

हे हाथों में दण्डरूपी आयुध धारण करनेवाले धर्मराज! काले-काले अञ्जन के समान विशाल नेत्रोंवाले, विशाल वक्ष:स्थलवाले और भयंकर रूपवाले आपको नमस्कार है, हमारी पूजा को ग्रहण करे।

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

कालाय कालरूपाय कालाञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं कालदेव नमोऽस्तु ते॥१॥

काल, कालरूप, काले अञ्जन के समान, प्रभु, दक्षिण दिशा में वास करनेवाले, कालरूपी देव आपको नमस्कार है॥१॥

यमो निहन्तापितृधर्मराजो वैवस्वतो दण्डधरश्च कालः।
प्रेताधिपो दत्तकृपानुसारी कृतान्त एतद्दशभिर्जपन्ति॥२॥

यम, निहन्ता, पितृ, धर्मराज, वैवस्वत, दण्डधारी, काल, प्रेताधिपति नामों को धारण करनेवाले हमारे ऊपर कृपावान् हों तथा हम इस दीनदशा में आपका यजन करते हैं, आप हमारे ऊपर कृपा करें॥२॥

धर्मराज महाबाहो दक्षिणाधिपतये नमः।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीड़ां निवारय॥३॥

हे महाबाहु धर्मराज! दक्षिण दिशा के अधिपति आपको नमस्कार है, आप इसी क्षण हमारी पीड़ाओं का निवारण कीजिए॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीकालः प्रीयतां न मम।

मृत्युबलिदानम्

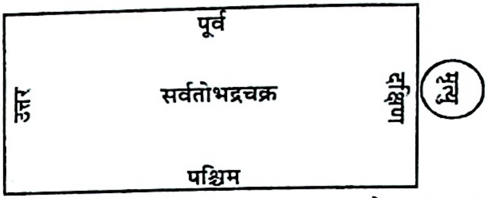

ॐ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से दक्षिणदिशा में बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से दक्षिणदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ मृत्योर्बलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ मृत्योर्बलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ मृत्यु! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समं विग्रह अन्तरूप।
अन्तविरूपे विनियोगकारी मृत्युस्वरूपाय नमो नमस्ते॥

हे अन्तरूप! इस अनन्त संसार रूपी महासमुद्र में फँसें हुए हमारी रक्षा कीजिए, हे अन्तरूप! हे विरूप! विनियोग करनेवाले, हे मृत्युस्वरूप! आपको नमस्कार है।

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

मृत्यवे मृत्युरूपाय अन्ताञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं मृत्युदेव नमोऽस्तु ते॥

हे मृत्यु! हे मृत्युरूप! जीवन का अन्त करनेवाले, घोर अन्धकार के समान, प्रभु, दक्षिण दिशा में रहनेवाले मृत्युदेव आपको नमस्कार है।

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे।

अनेन बलिदानेन श्रीमृत्युः प्रीयतां न मम।

दिग्पालादिबलिदानम्

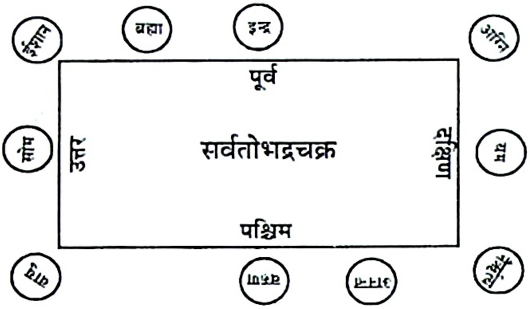

वटुकादि बलिदान के बाद पुरश्चरण गृह अथवा मण्डप के बाहर चारों तरफ दिग्पालों को बलिदान प्रदान करे, पूर्व में इन्द्र, अग्निकोण में अग्नि, दक्षिण में यम, नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋति, पश्चिम में वरुण, वायुकोण में वायु, उत्तर में सोम, ईशानकोण में ईशान तथा पूर्व और ईशानकोण के बीच में ब्रह्मा तथा अन्त में नैर्ऋत्यकोण तथा पश्चिम के बीच में अनन्त के लिए बलिदान समर्पित करे।

ऐरावतसमारूढो ब्रज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाभिधो देवस्तस्मादिन्द्राय ते नमः॥

ऐरावत हाथी पर समारूढ़, वज्र हाथ में धारण किये हुए, महावली, सौ अश्वमेध यज्ञ करनेवाले देवराज इन्द्र आपको नमस्कार है।

ॐ यो मे पूर्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्तं देवराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। पूर्व में इन्द्र के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ यो मे आग्नेयगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अग्निस्तं तेजराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। अग्नि कोण में अग्नि के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ यो मे दक्षिणगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। दक्षिण में यम के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा निर्ऋतिस्तं रक्षराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। नैर्ऋत्य कोण में निर्ऋति के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ यो मे पश्चिमगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वरुणस्तं जलराजो भञ्जयतु

खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। पश्चिम में वरुण के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ यो मे वायव्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वायुस्तं प्राणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। वायव्य कोण में वायु के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ यो मे उत्तरगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा सोमस्तं ताराराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। उत्तर में सोम के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ यो मे ईशानगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ईशानस्तं गणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। ईशान कोण में ईश्वर के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ यो मे ऊर्ध्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ब्रह्मास्तं प्रजाराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। ईशान और पूर्व के बीच में ब्रह्मा के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ यो मे अधोगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अनन्तस्तं नागराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। नैर्ऋत्य और पश्चिम के बीच में अनन्त के लिए बलिदान प्रदान करे।

प्रार्थना

इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिः, वरुणवायुसोमेशाः।
ब्रह्मा-अनन्त-सहिताः, प्रसीदन्तु ममोपरि॥१॥

इन्द्र-अग्नि-यम-निर्ऋति-वरुण-वायु-सोम-ईशान-ब्रह्मा तथा अनन्त सदा हमारे ऊपर प्रसन्न रहे॥१॥

पायसो-बलिदानेन, सन्तुष्टः सर्वदा भवेत्।
तेषां बलिं प्रयच्छामि, भवन्तु प्रीतिः सर्वदा॥२॥

पायस के बलिदान से प्रसन्न होनेवाले, सर्वदा सन्तुष्टि और प्रसन्नता के लिए बलि समर्पित करता हूँ इस बलिदान से सदैव प्रसन्न होकर हमारी रक्षा करें॥२॥

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥३॥

भानु, शशि, भूमिसुत, बुध, गुरु, शुक्र, शनि,राहु तथा केतु सभी ग्रहों के साथ सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा, पालन कर्त्ता विष्णु तथा त्रिपुर का अन्त करनेवाले शिवशङ्कर हमें शान्ति प्रदान करनेवाले हों॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन दशदिग्पालाः प्रियन्तां नमम।**

दशदिग्पालादि बलिदान प्रदान के बाद घर के भवन के बाहर जाकर भूतादि बलिदान प्रदान करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान कभी न प्रदान करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान करने से दोष होता है।

भूतादिबलिदानम्

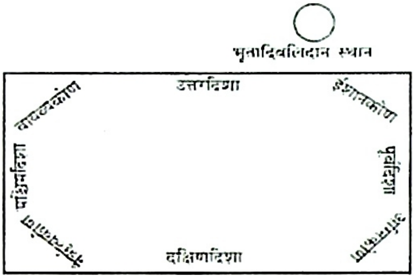

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पीठ के बाहर मण्डल का पूजन कर बलिपात्र रखे।

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन कर वामाङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलि द्रव्य पूजन कर संकल्प करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

भूता ये च विघ्नकर्तारो दिविभूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थ संस्थाश्च शिवयोगेन भाविता॥१॥

जो भूतपिशाचादि विघ्न करनेवाले द्युलोक-अन्तरिक्षलोक-भूलोक-पाताल में विचरण करनेवाले, सभी शिवयोग से भावित होकर (कल्याण की भावना वाले होकर)॥१॥

क्रूराद्याः शतसंख्यकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्यसंख्यांश्च इन्द्राद्याव्यवस्थिताः॥२॥

सैकडों क्रूर प्रकृतिवाले, पाखण्डादि में रत रहनेवाले, ध्रुवादि सैकड़ों की संख्यावाले, इन्द्रादि रूप में व्यवस्थित रहनेवाले॥२॥

तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम्।
नगरे वाऽथ संग्रामे अटव्यां वै सरित्तटे॥३॥

नगर या संग्राम स्थल में पहाड़ों की ऊँचाईयों पर, नदियों के तट पर रहनेवाले, हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥३॥

वापी कूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे।
नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये॥४॥

वापी, कूप, तडाग, वृक्षादि, श्मशानादि, चौराहों पर रहनेवाले, नानारूप को धरकर रहनेवाले, बहुत रूपोंवाले हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥४॥

यत्र तत्र विचरन्ति भूतप्रेतादि सर्वदा।
ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा॥५॥

हमेशा इधर उधर विचरने वाले भूत-पिशाचादि सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मनवाले हों॥५॥

ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः।
मातरोऽप्युग्रहरूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥६॥

जो रौद्र रूप धारण करके, रौद्र कर्म में लिप्त, रौद्र स्थान में निवास करनेवाले, जो पिशाचिनी मातायें उग्ररूपोंवाली, सेवकों के अधिपति, सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मनवाले हों॥६॥

भूचरा खेचराश्चैव तथा चैवान्तरक्षगा।
ते सर्वे प्रीतमनसाः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्॥७॥

भूमि पर विचरण करनेवाले भूचर, आकाश में रहनेवाले नभचर, सभी हमारी रक्षा करें, वे सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मनवाले होकर हमारी रक्षा करें॥७॥

पुष्पाञ्जलिः—प्रार्थना करने के बाद हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले, बलिं गृहित्वा विधिवत् प्रयुक्तम्।
सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे, अन्यत्रवासं परिकल्पयन्तु॥

जो इस भूतल पर भूतपिशाचादि निवास करते हैं, वे विधिवत् प्रदान किये गये बलि को ग्रहण करके सन्तोष प्राप्त करके, अन्यत्र अपना वास बनायें अर्थात् हमारे पूजन स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान में अपना निवास बनायें।

बलिदानसमर्पणम्---**अनेन बलिदानेन सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलि प्रदान करने के बाद हाथ पैर धोकर प्राणायामादि करके आगे का कार्य करे।

बटुकादिबलिदानं परिपूर्णम्

* * *

अखण्डदीपपूजनम्

ॐ सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वस्तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरः ज्योतिः दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥१॥

सभी प्रकार के अन्धकार को समाप्त करनेवाले, महादीप्त बाहर-भीतर सुन्दर प्रकाश के लिए, यह प्रदीप जलाये हैं, यथाविधि पूजन ग्रहण करके प्रसन्न होकर हमें प्रकाशित करें॥१॥

भो दीपरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्ताव त्त्वं सुस्थिरो भव॥२॥

हे देवरूप दीप! आप कर्म के साक्षी और विघ्नों का नाश करनेवाले हैं, जबतक हमारे कर्म (यज्ञ) की परिसमाप्ति नहीं हो जाती, तब तक आप विधिपूर्वक स्थिर रहे॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा दीपस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अखण्डदीपपूजनं परिपूर्णम्

* * *

पुस्तकपूजनम्

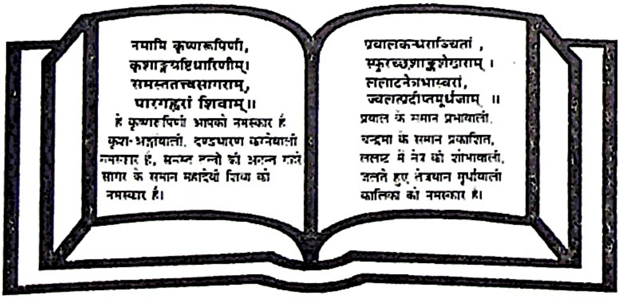

नमामि कृष्णरूपिणीं,
कुशाङ्कयष्टिधारिणीम्।
समस्ततत्त्वसागराम्,
पारगह्वरां शिवाम्॥
हे कृष्णरूपिणी आपको नमस्कार है
कृश-भङ्गवाली, दण्डधारण करनेवाली
नमस्कार है, समस्त तत्त्वों की अनन्त गहरे
सागर के समान महादेवी शिवा को
नमस्कार है।

प्रवालकन्धराञ्चितां,
स्फुरच्छशाङ्कशेखराम्।
ललाटनेत्रभास्वरां,
ज्वलत्प्रदीप्तमूर्धजाम्॥
प्रवाल के समान प्रभावाली,
चन्द्रमा के समान प्रकाशित,
ललाट में नेत्र की शोभावाली,
जलते हुए तेजवान मूर्धावाली
कालिका को नमस्कार है।

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥१॥

जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधादि देवियों को नमस्कार है॥१॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥२॥

श्रीदेवी को नमस्कार है, महादेवी को नमस्कार है, शिवा को नमस्कार है, प्रकृति देवी को नमस्कार है, भद्रा तथा नियति देवी को सतत प्रणाम है॥२॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥३॥

सफेद वर्णवाली, परब्रह्मचिन्तनरूपिणी, सर्वप्रथम रहनेवाली, जगत् में व्याप्त रहनेवाली, वीणा-पुस्तक धारण करनेवाली, अभय प्रदान करनेवाली, बुद्धि की जड़ता को हरनेवाली, हाथ में स्फटिक की माला लिए हुए, पद्मासन पर विराजमान बुद्धि प्रदान करनेवाली, परमेश्वरी भगवती शारदा की वन्दना करता हूँ॥३॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा॥४॥

जो कुन्देन्दुसदृश, तुषार (ओस) के समान सफेद हार धारण की हुई, सफेद शुद्ध वस्त्र को धारण की हुई, हाथों में वीणा, वरमुद्रा और दण्ड धारण की हुई, सफेद कमल पर बैठी हुई, ब्रह्मा-विष्णु-शङ्कर जैसे देवताओं से वन्दित देवी भगवती सरस्वती हैं, वे हमारी बुद्धि की जड़ता को नष्ट करें॥४॥

ॐ वाङ्मयमूर्तिस्वरूपिणीसरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

तर्पणम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा श्रीमत् विपरीतप्रत्यङ्गिरां तर्पयामि। मधु, कर्पूर, मिश्रित जल से द्वादशबार घण्टा बजाते हुए अष्टोत्तरशत तर्पण करे, उसके पश्चात् नीराजन करे।

कर्पूरनीराजनम्

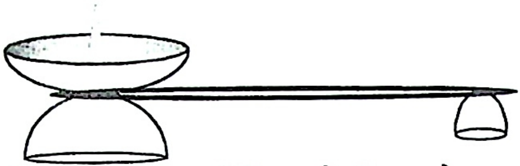

नीराजनसमर्पणम्—(आरती)—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो विद्युदग्निश्च तारकाः।
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिः दीपमाला नमो नमः॥

ज्योति ही रवि, चन्द्र, विद्युत्, अग्नि, ताराओं में व्याप्त है, सभी ज्योतियों में प्रकाश स्वरूपी दीपमाला को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा दीपमालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

जगजननी जय! जय ! मा! जगजननी जय! जय!।
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!॥
तू ही सत्-चित्, सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
मैया सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा॥

सत्य सनातन सुन्दर,
सत्य सनातन सुन्दर, पर-शिव सुर-भूपा॥१॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
आदि अनादि अनामय, अविचल अविनाशी॥
मैया अविचल अविनाशी॥

अमल अनन्त अगोचर,
अमल अनन्त अगोचर, अज आनन्दराशी॥२॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी॥
मैया अकल कलाधारी॥

कर्त्ता विधि भर्त्ता,
कर्त्ता विधि भर्त्ता, हरि हर संहारकारी॥३॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
तू विधि वधू, रमा तू, तू उमा महामाया॥
मैया तू उमा महामाया॥

मूल प्रकृति विद्या तू,

मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी जाया॥४॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
राम कृष्ण तू, सीता व्रजरानी राधा॥
मैया सीता व्रजरानी राधा॥

तू वाच्छा कल्पद्रुम,
तू वाच्छा कल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा॥५॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
दश विद्या नव दुर्गा नाना शास्त्रकरा॥
मैया नाना शास्त्रकरा॥

अष्टमातृका योगिनि,
अष्टमातृका योगिनि, नव-नव, रूप धरा॥६॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू॥
मैया महाविलासिनि तू॥

तू ही श्मशानविहारिणि,
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डव लासिनि तू॥७॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
सुर मुनि मोहिनि, सौम्या तू शोभाऽऽधारा॥
मैया सौम्या तू शोभाऽऽधारा॥

विवसन विकट स्वरूपा,
विवसन विकट स्वरूपा, प्रलयमयी धारा॥८॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
तू ही स्नेह सुधामयि, तू अति गरल मना॥
मैया तू अति गरल मना॥

रत्नविभूषित तू ही,
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थितना॥९॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
मूलाधारनिवासिनि, इह पर सिद्धिप्रदे॥
मैया इह पर सिद्धिप्रदे॥

कालातीता काली,
कालातीता काली, कमला तू वरदे॥१०॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।

शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी॥
मैया नित्य अभेदमयी॥
भेदप्रदर्शिनि वाणी,
भेदप्रदर्शिनि वाणी, विमले! वेदत्रयी॥११॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
हम अति दीन दुःखी, मा! विपत जाल घेरे॥
मा! विपत जाल घेरे॥
हैं कपूत अति कपटी,
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥१२॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
निज स्वभाव वश, जननी! दयादृष्टि कीजै॥
मैया! दयादृष्टि कीजै॥
करुणा कर करुणमयि!
करुणा कर करुणमयि! चरण शरण दीजै॥१३॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि॥

कर्पूर के समान गौर, करुणा के अवतार, भवानी के सहित शिव हमारे हृदय में वास करें।

ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं च यत्।
आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण जगदीश्वरि॥१॥

कर्पूर से युक्त बत्ती को जलाकर दिव्य आरती करता हूँ, हे जगदीश्वरि! इसे ग्रहण करें॥१॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितं।
आरार्तिक्यमहं कुर्मः पश्य मे वरदो भव॥२॥

केले के वृक्ष से उत्पन्न कर्पूर से आरती करता हूँ, हे महादेवि! कृपापूर्वक दृष्टि से देखकर वर प्रदानकर्त्ता बनें॥२॥

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥३॥

चन्द्र, सूर्य तथा भूमि स्थित विद्युत स्वरूपी अग्नि सभी आपकी ही ज्योति हैं उन्हें ही आपके आरती के रूप में समर्पित है॥३॥

चक्षुर्दं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारकम्।
आरार्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरी॥४॥

सम्पूर्ण लोकों में नेत्र प्रदान करनेवाली, अन्धकार की निवारक, हे परमेश्वरि! भक्ति पूर्वक आरती करता हूँ कृपा पूर्वक ग्रहण कीजिए।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

विशाल-शैल-कन्दरान्तराल-वास-शालिनीं ,
त्रिलोक-पालिनी-कपालिनी-मनोरमामिमाम् ।
उमामुपासितां सुरैरुपास्महे महेश्वरीं,
परां गणेश्वरप्रसूं नगेश्वरस्य नन्दिनीम्॥१॥

विशाल पर्वत की गुफा में निवास करनेवाली, त्रिलोक का पालन करनेवाली, कपालिनी (कपाल-शिर:भाग में निवास करनेवाली), मन में रमण करनेवाली, देवताओं के द्वारा उपासित महेश्वरी परादेवी गणेश की माता, पर्वतराज हिमालय की पुत्री महादेवी उमा की उपासना करता हूँ॥१॥

देवान् विहाय सकलानथ कर्म सर्वं,
लब्ध्वाजनुर्नकृतवांस्तव देवि! पूजाम्।
मातर्नमामि सततं मनसा च वाचा,
देहेन पादकमलं शरणागतोऽहम्॥२॥

सभी देवताओं और सकल कर्मों का परित्याग करके, यह जन्म पाकर भी हे देवि! आपकी पूजा नहीं की, हे माता! आपको सतत मन तथा वाणी से नमन करता हूँ, तथा शरीर से नमन करता हूँ, हे माता! आपके चरणकमलों में नमन करता हूँ, हम आपकी शरण में आये हैं॥२॥

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां सर्वदा मातः! सर्वपापहरा भव॥३॥

हम पाप रूप हैं, हम पाप कर्म करने वाले हैं, पाप कर्म करते करते पापात्मा हो गये हैं, हमसे ही पाप सम्भावित है, अत: हे माता! आप हमारी रक्षा कीजिए, आप हमारे समस्त पापों को हरण करनेवाली होकर हमारी सदा सर्वत्र रक्षा करें॥३॥

पुष्पाञ्जलिम्—प्रार्थना करके समन्त्रक पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि प्रदान करने के बाद परिक्रमा करे।

परिक्रमा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणापदे पदे॥१॥

किसी भी प्रकार के जन्मजन्मान्तर में किये हुए सभी पाप एक-एक कदम पर देव प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते है॥१॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥२॥

पूजन करने के बाद एक-एक कदम जो पूजनकर्ता देव की परिक्रमा करता है, वह निश्चय ही अश्वमेधादि यज्ञों का फल प्राप्त करता है। अत: हमारे जन्मजन्मान्तरकृत समस्त पापों के क्षय के लिए आपकी परिक्रमा करता हूँ॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्—**अनेन पूजनेन श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।**

वाह्यपूजनविधि: परिपूर्ण:

⁂

उद्दीपनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ॐ। हृदय पर दस बार जप करे।

मूलमन्त्रम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा। मूल मन्त्र जप करे।

मूलमन्त्रार्थम्

ॐ (तार)—दीर्घऊकार—सदाशिव, ँ—(नाद) लोकनायक पापघातक। **भावार्थ**—सदाशिव हमारे पापों को नष्ट करें।

हूं (क्रोधबीज)—**ह**—आकाशतत्त्वात्मक सर्वव्यापक सदाशिव, **र**—अनन्ततेजोमय ब्रह्म, **ऊ**—उमेश महाकालभैरव, ं—(अनुस्वार) व्यापक। **भावार्थ**—अनन्ततेजोमय सर्वव्यापक परमेश्वर महाकालभैरव हमारे दुःखों का विनाश करें।

ह्रीं (भुवनेश्वरीबीज)—**ह**—सर्वव्यापक, **र**—अनन्ततेजोमयी, ं—(अनुस्वार)—स्थूलब्रह्मस्वरूपिणी, **ई**—(दीर्घ ईकार)—महामाया। **भावार्थ**—अनन्ततेजोमयी सर्वव्यापक स्थूलब्रह्मस्वरूपिणी महामाया हमारे पापों को नष्ट करें।

क्लीं (कामबीज)—**क**—महाकाल की कलना शक्ति, **ल**—सर्वस्थूल, **ई**—महामाया, —(अनुस्वार) व्यापक। **भावार्थ**—परमतेजोमयी सदाशिव की सर्वव्याप्त स्थूला शक्ति हमारे समस्त कामनाओं की पूर्ति करें।

ऐं(वाग्भवबीज)—**ऐ**—वाग् बीज, ं—अनुस्वार—स्थूल व्यापक। **भावार्थ**—सर्वस्थूल व्यापक वाणी की अधीश्वरी हमारे दुःखों को समाप्त करें।

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै—सम्बोधन—नामरूप। **भावार्थ**—स्थूलरूप से समस्त अंङ्गों में व्याप्त विपरीत रतातुरा भद्रकाली महाप्रत्यङ्गिरा।

स्वाहा(पल्लव)—देवी तृप्ति प्रदायक।

भावार्थ—ॐकार स्वरूपी सदाशिव हमारे पापों को नष्ट करें, अनन्ततेजोमय सर्वव्यापक परमेश्वर महाकालभैरव हमारे दुःखों का विनाश करें, अनन्ततेजोमयी सर्वव्यापक स्थूलब्रह्मस्वरूपिणी महामाया हमारे पापों को नष्ट करें, परमतेजोमयी सर्वव्याप्त स्थूलशक्ति समस्त कामनाओं की पूर्ति करें, वाणी की अधीश्वरी हमारे दुःखों को समाप्त करें, सर्व स्वरूपिणी विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा स्थूलरूप से समस्त अंङ्गों में व्याप्त हो कर हमारी रक्षा करें।

मालाप्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं कवचाय हूम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतप्रत्यङ्गिरायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

श्रीष्टध्यानम्

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥

मूलमन्त्रप्राणायामम्—पूरक, कुम्भक, रेचक विधि से प्राणायाम करे—

मन्त्र कुल्लुका

ॐ क्रीँ हूँ स्त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ फट्। सिर पर दस बार जप करे।

मन्त्रसेतु

ॐ । ॐकार का हृदय पर दस बार न्यास करे।

मन्त्रमहासेतु

क्रीँ। कालिका मूलबीज का कण्ठस्थित विशुद्ध चक्र पर दस बार न्यास करे।

मन्त्रनिर्वाणम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्सौँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ। दस बार सिर पर न्यास करे।

मुखशोधनम्

क्रीँ क्रीँ क्रीँ ॐ क्रीँ क्रीँ क्रीँ। बोल कर दस बार जप करे।

प्राणयोगम्

ह्रीँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ह्रीँ। श्वास-प्रश्वास के साथ दस बार जप करे।

उद्दीपनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ॐ। हृदय पर दस बार जप करे।

मूलमन्त्रम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा। मूल मन्त्र जप करे।

मूलमन्त्रार्थम्

ॐ (तार)—दीर्घऊकार—सदाशिव, ँ—(नाद) लोकनायक पापघातक। **भावार्थ**—सदाशिव हमारे पापों को नष्ट करें।

हूं (क्रोधबीज)—**ह**—आकाशतत्त्वात्मक सर्वव्यापक सदाशिव, **र**—अनन्ततेजोमय ब्रह्म, **ऊ**—उमेश महाकालभैरव, ं—(अनुस्वार) व्यापक। **भावार्थ**—अनन्ततेजोमय सर्वव्यापक परमेश्वर महाकालभैरव हमारे दुःखों का विनाश करें।

ह्रीं (भुवनेश्वरीबीज)—**ह**—सर्वव्यापक, **र**—अनन्ततेजोमयी, ं—(अनुस्वार)—स्थूलब्रह्मस्वरूपिणी, **ई**—(दीर्घ ईकार)—महामाया। **भावार्थ**—अनन्ततेजोमयी सर्वव्यापक स्थूलब्रह्मस्वरूपिणी महामाया हमारे पापों को नष्ट करें।

क्लीं (कामबीज)—**क**—महाकाल की कलना शक्ति, **ल**—सर्वस्थूल, **ई**—महामाया, —(अनुस्वार) व्यापक। **भावार्थ**—परमतेजोमयी सदाशिव की सर्वव्याप्त स्थूला शक्ति हमारे समस्त कामनाओं की पूर्ति करें।

ऐं(वाग्भवबीज)—**ऐ**—वाग् बीज, ं—अनुस्वार—स्थूल व्यापक। **भावार्थ**—सर्वस्थूल व्यापक वाणी की अधीश्वरी हमारे दुःखों को समाप्त करें।

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै—सम्बोधन—नामरूप। **भावार्थ**—स्थूलरूप से समस्त अंङ्गों में व्याप्त विपरीत रतातुरा भद्रकाली महाप्रत्यङ्गिरा।

स्वाहा(पल्लव)—देवी तृप्ति प्रदायक।

भावार्थ—ॐकार स्वरूपी सदाशिव हमारे पापों को नष्ट करें, अनन्ततेजोमय सर्वव्यापक परमेश्वर महाकालभैरव हमारे दुःखों का विनाश करें, अनन्ततेजोमयी सर्वव्यापक स्थूलब्रह्मस्वरूपिणी महामाया हमारे पापों को नष्ट करें, परमतेजोमयी सर्वव्याप्त स्थूलशक्ति समस्त कामनाओं की पूर्ति करें, वाणी की अधीश्वरी हमारे दुःखों को समाप्त करें, सर्व स्वरूपिणी विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा स्थूलरूप से समस्त अंङ्गों में व्याप्त हो कर हमारी रक्षा करें।

मालाप्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥

सर्व शक्ति स्वरूपिणी माहामाया माला! चतुवर्ग की सिद्धि के लिए न्यास करता हूँ, हमारे लिए सिद्धि प्रदायी हो जाओं॥१॥

ॐ अविघ्नं कुरु मालेत्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥२॥

हे माला! हमारे जप को निर्विघ्न करें, मैं आपको दक्षिण हाथ में ग्रहण करता हूँ, हमारे ऊपर प्रसन्न होकर जप काल में हमें सिद्धि प्रदान करें॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अक्षमालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

माला का यथोपचार पूजन करके दक्षिण हाथ मध्यमा अङ्गुलि के मध्य पर्व पर स्थापित कर, हाथ को हृदय प्रदेश में स्थापित करके, प्रत्येक गुटिका को सरकाते हुए, सुमेरु अलङ्घनपूर्वक, हृत्पद्म में विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा देवता का तथा सहस्रार में श्रीगुरु का ध्यान करते हुए, जिह्वा में मन्त्र को दीपशिखावत भावना करते हुए, सहस्रार से अमृतस्राव पूर्वक अमृत पान करते हुए न्यूनतम एक सहस्र अथवा विहित सङ्ख्या जप करे।

जप के पश्चात् माला को सिर पर रखकर माला का प्रार्थनापूर्वक विसर्जन करे।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा॥

हे माले! तुम सभी देवताओं को प्रसन्नता और शुभ प्रदान करनेवाली हो, हे भद्रे! हमारा कल्याण करो तथा हमें यश और बल सर्वदा प्रदान करो।

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः। सिर से माला को हाथ में लेकर।

माला का पुनः पूजन करके मालाधार पर माला को स्थापित करके मूल मन्त्र से पूरक, कुम्भक, रेचनपूर्वक प्राणायाम के बाद ऋष्यादि न्यास करके देवी के वाम कर में जप का समर्पण करे।

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

गुह्य से भी अतिगुह्य गोप्य से भी गोप्य, हे देवि! हमारे जप को ग्रहण कर हमें हमारे कार्यसिद्धिरूपी कृपाप्रसाद प्रदान करें।

जप के बाद अपने बाँयें चतुरस्र मण्डल बनाकर किसी पात्र में माषान्न, शाक, आज्य, पायस अपूपादि पदार्थ रख कर देवी को बलि प्रदान करे।

बलिपदार्थसंस्कारम्

ॐ यँ। षोडश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ फट्। चक्रमुद्रा से अभिरक्षण करे।

ॐ फट्। बलिपदार्थ का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ नमः। बलिपदार्थ का अभ्यर्चन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा। आठ बार जप कर अभिमन्त्रण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतप्रत्यङ्गिरा एष बलिर्न मम। नैर्ऋत्य दिशा में बलि प्रदान करे।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ पद्मे पद्मे महापद्मे पद्मावति महायक्षाधिपतये मयानीतमिमं बलिं गृह्ण गृह्ण सर्वदुष्टान् ग्रस ग्रस मम सर्वशान्तिं कुरु कुरु परविद्यां चाकृष्याकृष्य मम विघ्नान् छिन्धि छिन्धि हुँ फट् स्वाहा। काम्य प्रयोगों में अर्धरात्रि को बलि प्रदान करे।

समर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतप्रत्यङ्गिरा अनेन बलिदानेन विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा प्रीयन्तां न मम।

मूलमन्त्रजपं परिपूर्णम्

❀

सहस्रनामार्चनम्

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रद मासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेपु सर्वेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं श्रीइष्टदेवताविपरीतप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थ दिव्यसहस्रनामावलिभिः पुष्पादिसमर्पणं करिष्ये।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरासहस्रनाममन्त्रस्य श्रीमहाकालऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता हूंबीजं ह्रींशक्तिः क्लींकीलकं विपरीतप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थे पुष्पादि समर्पणे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ सद्यः छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरैर्विभ्रतीम्,
घोरास्या शिरसास्रता सुरुचिरामुन्मत्तकेशावलीम्।
सृक्काऽसृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालंकृतीम्,
श्यामाङ्गींकृतमेखलां शवकरे देवीं भजेत्कालिकाम्॥

अधोलिखित प्रत्येक मन्त्रों से एक एक गन्धाक्षतपुष्प, केवल पुष्प, किसमिस अथवा कोई भी ऋतुफल, रोली, हल्दी इत्यादि किसी पदार्थ से कामनानुसार विहित पदार्थों में से कोई भी पदार्थ अथवा रुपये का सिक्का इत्यादि से भगवती के यन्त्र विग्रह पर समर्पित करे।

विभिन्न कामनाओं के विभिन्न पदार्थ शास्त्र में वर्णित हैं। उनके अनुसार सहस्र पदार्थों से भगवती का अर्चन करे।

१. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतप्रत्यङ्गिरायै नमः।

२. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शशिशेखरायै नमः।

३. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सममासायै नमः।
४. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धर्मिण्यै नमः।
५. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समस्तसुरशीमुख्यै नमः।
६. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुमुख्यै नमः।
७. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वसम्पत्तिजनन्यै नमः।
८. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समधायै नमः।
९. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सिन्धुसेविन्यै नमः।
१०. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शम्भुसीमन्तिन्यै नमः।
११. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सोमाराध्यायै नमः।
१२. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वसुधारसायै नमः।
१३. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रसायै नमः।
१४. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रसवत्यै नमः।
१५. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेलायै नमः।
१६. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वन्यायै नमः।
१७. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वनमालिन्यै नमः।
१८. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वनजाक्ष्यै नमः।
१९. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वनचर्यै नमः।
२०. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वन्यै नमः।
२१. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वनविनोदिन्यै नमः।
२२. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेगिन्यै नमः।
२३. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेगदायै नमः।
२४. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेगबलस्थानायै नमः।
२५. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बलाधिकायै नमः।
२६. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कलायै नमः।
२७. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कलाप्रियायै नमः।
२८. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कौलिकोमलायै नमः।
२९. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालकामिन्यै नमः।
३०. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कमलायै नमः।

३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कमलावत्यै नमः।
३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कमलस्थायै नमः।
३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुलीनायै नमः।
३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुटिलायै नमः।
३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कान्तायै नमः।
३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कोकिलायै नमः।
३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुलभाषिण्यै नमः।
३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कीरकेलिकलायै नमः।
३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काल्यै नमः।
४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कपालिन्यै नमः।
४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालिकायै नमः।
४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं केशिन्यै नमः।
४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुशावर्त्तायै नमः।
४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कौशाम्ब्यै नमः।
४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं केशवप्रियायै नमः।
४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काश्यै नमः।
४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काशापहायै नमः।
४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काशीशयायै नमः।
४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काशायै नमः।
५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं केशदायिन्यै नमः।
५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुण्डल्यै नमः।
५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुण्डलीस्थायै नमः।
५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुण्डलाङ्गयै नमः।
५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुण्डलाङ्गदमण्डितायै नमः।
५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुशापाश्यै नमः।
५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुमुदिन्यै नमः।
५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुमुदप्रीतिवर्द्धिन्यै नमः।
५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुन्दप्रियायै नमः।

५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुन्दरुच्यै नमः।

६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुरङ्गायै नमः।

६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुरङ्गमदमर्दिन्यै नमः।

६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुरङ्गनयनायै नमः।

६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुन्दायै नमः।

६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुरुवृन्दाभिनन्दिन्यै नमः।

६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुशुम्भायै नमः।

६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुसुमायै नमः।

६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं किञ्चित्क्वणक्त्यै नमः।

६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं किणिकायै नमः।

६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कट्व्यै नमः।

७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कठोरायै नमः।

७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं करणायै नमः।

७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कण्ठायै नमः।

७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कौमुद्यै नमः।

७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कम्बुकण्ठिन्यै नमः।

७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कपर्दिन्यै नमः।

७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कपटिन्यै नमः।

७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कठिन्यै नमः।

७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालकण्ठिकायै नमः।

७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं किंबृहस्तायै नमः।

८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुमार्यै नमः।

८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुरुन्दायै नमः।

८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुसुमप्रियायै नमः।

८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुञ्जरस्थायै नमः।

८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुञ्जरतायै नमः।

८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुम्भिकुम्भस्तनद्वयायै नमः।

८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुम्भिगायै नमः।

८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं करभोरव्यै नमः।
८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कदलीदलायै नमः।
८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कदलीदलशालिन्यै नमः।
९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुपितायै नमः।
९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कठोरस्थायै नमः।
९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कङ्काल्यै नमः।
९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कन्दशेखरायै नमः।
९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एकान्तवासिन्यै नमः।
९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं किञ्चित्कम्पमानशिरोरुहायै नमः।
९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कादम्बर्यै नमः।
९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कदम्बस्थायै नमः।
९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुङ्कुम्यै नमः।
९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रेमधारिण्यै नमः।
१००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुटुम्बिन्यै नमः।
१०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रियायुक्तायै नमः।
१०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रतवे नमः।
१०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रतुकर्यै नमः।
१०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रियायै नमः।
१०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कात्यायन्यै नमः।
१०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कृत्तिकायै नमः।
१०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कार्तिकेयप्रवर्तिन्यै नमः।
१०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कामपत्न्यै नमः।
१०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कामधात्र्यै नमः।
११०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कामेश्यै नमः।
१११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कामवन्दितायै नमः।
११२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कामरूपायै नमः।
११३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कामगत्यै नमः।
११४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कामाक्ष्यै नमः।

११५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काममोहितायै नमः।
११६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खड्गिन्यै नमः।
११७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खेचर्यै नमः।
११८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खञ्जायै नमः।
११९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खञ्जरीटेक्षणायै नमः।
१२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खलायै नमः।
१२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खरगायै नमः।
१२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खरनासायै नमः।
१२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खरास्यायै नमः।
१२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खेलनप्रियायै नमः।
१२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खड्गिन्यै नमः।
१२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खेचर्यै नमः।
१२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खट्वायै नमः।
१२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खरखट्वाङ्गधारिण्यै नमः।
१२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खलखण्डिन्यै नमः।
१३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विख्यातायै नमः।
१३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खण्डितायै नमः।
१३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खाण्डव्यै नमः।
१३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्थिरायै नमः।
१३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खण्डप्रियायै नमः।
१३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खण्डखाद्यायै नमः।
१३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सेन्दुखण्डायै नमः।
१३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खञ्जन्यै नमः।
१३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गङ्गायै नमः।
१३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गोदावर्यै नमः।
१४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गौर्यै नमः।
१४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गोमत्यै नमः।
१४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गौतम्यै नमः।

१४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गयायै नमः।
१४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गौगज्यै नमः।
१४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गगनायै नमः।
१४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गारुण्यै नमः।
१४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गरुणध्वजायै नमः।
१४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गीतायै नमः।
१४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गीतप्रियायै नमः।
१५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गोत्रायै नमः।
१५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गोत्रक्षयकर्यै नमः।
१५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गदायै नमः।
१५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गिरिभूपालदुहितायै नमः।
१५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गोगायै नमः।
१५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गोकुलवर्द्धिन्यै नमः।
१५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घनस्तन्यै नमः।
१५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घनरुच्यै नमः।
१५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घनोर्व्यै नमः।
१५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घननिःस्वलायै नमः।
१६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घूत्कारिण्यै नमः।
१६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घूतकर्यै नमः।
१६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घुघूकपरिवारितायै नमः।
१६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घण्टानादप्रियायै नमः।
१६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घण्टायै नमः।
१६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घनाघोटप्रवाहिन्यै नमः।
१६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घोररूपायै नमः।
१६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घोरायै नमः।
१६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घूनिप्रीत्यै नमः।
१६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घनाञ्जन्यै नमः।
१७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घृताच्यै नमः।

१७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घनमुष्टायै नमः।
१७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घटायै नमः।
१७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घण्टायै नमः।
१७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घटामृतायै नमः।
१७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घटास्यायै नमः।
१७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घटनाद्यायै नमः।
१७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घातपातनिवारिण्यै नमः।
१७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चञ्चरीकायै नमः।
१७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चकोर्यै नमः।
१८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चामुण्डायै नमः।
१८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चीरधारिण्यै नमः।
१८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चातुर्यै नमः।
१८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चपलायै नमः।
१८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चारुश्चलायै नमः।
१८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चेलायै नमः।
१८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चलाचलायै नमः।
१८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चतुश्चिरन्तनायै नमः।
१८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चाकाचियायै नमः।
१८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चामीकरच्छव्यै नमः।
१९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चापिन्यै नमः।
१९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चपलायै नमः।
१९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चम्वै नमः।
१९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चितितायै नमः।
१९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चिन्तामण्यै नमः।
१९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चितायै नमः।
१९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चातुर्वर्णमय्यै नमः।
१९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चञ्चचौरायै नमः।
१९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चापायै नमः।

१९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चमत्कृत्यै नमः।
२००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चक्रवर्त्यै नमः।
२०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वधूचक्रायै नमः।
२०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चक्राङ्गायै नमः।
२०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चक्रमोदिन्यै नमः।
२०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चेतश्चर्यै नमः।
२०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चित्तवृत्तिरचेतायै नमः।
२०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चेतनप्रदायै नमः।
२०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चपिर्यायै नमः।
२०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चम्पकप्रीत्यै नमः।
२०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चण्ड्यै नमः।
२१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चण्डालवासिन्यै नमः।
२११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चिरञ्जिवित्वदायै नमः।
२१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चित्तायै नमः।
२१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तरुमूलनिवासिन्यै नमः।
२१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छुरिकायै नमः।
२१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छत्रमध्यस्थायै नमः।
२१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छिद्रायै नमः।
२१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छेदनकर्य्यै नमः।
२१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छिदायै नमः।
२१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छुन्छुन्दर्यै नमः।
२२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पलप्राप्त्यै नमः।
२२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छुदर्य्यै नमः।
२२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छुदरीभनिभस्वनायै नमः।
२२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छालिन्यै नमः।
२२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छलवच्छिन्नायै नमः।
२२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छिटिकायै नमः।
२२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छेककृत्यै नमः।

२२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छद्मिन्यै नमः।
२२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छान्दस्यै नमः।
२२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छायायै नमः।
२३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छायाकृत्यै नमः।
२३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छाद्यै नमः।
२३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयायै नमः।
२३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयदायै नमः।
२३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जात्यै नमः।
२३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जम्भिण्यै नमः।
२३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जामलायुतायै नमः।
२३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जवापुष्पप्रियायै नमः।
२३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जायायै नमः।
२३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जाप्यायै नमः।
२४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अजाप्यायै नमः।
२४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जगज्जनन्यै नमः।
२४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जम्बूप्रियायै नमः।
२४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयस्थायै नमः।
२४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जङ्गमायै नमः।
२४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जङ्गमप्रियायै नमः।
२४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जन्त्व्यै नमः।
२४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जन्तुप्रधानायै नमः।
२४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जरत्कर्णायै नमः।
२४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जरद्गवायै नमः।
२५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जातप्रियायै नमः।
२५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जीवनस्थायै नमः।
२५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जीमूतसदृशच्छव्यै नमः।
२५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जन्यायै नमः।
२५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जनहितायै नमः।

२५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जायायै नमः

२५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जम्भ्यै नमः।

२५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जम्भिलशालिन्यै नमः।

२५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयदायै नमः।

२५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयवद्धाहायै नमः।

२६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्वालिन्यै नमः।

२६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्वरहायै नमः।

२६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्वर्यै नमः।

२६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झञ्झनीलमय्यै नमः।

२६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झञ्झायै नमः।

२६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झणत्कारायै नमः।

२६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अचलायै नमः।

२६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झिण्टीशायै नमः।

२६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झस्यकृत्यै नमः।

२६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झम्पायै नमः।

२७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यमत्तासनिवारिण्यै नमः।

२७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टङ्ककारायै नमः।

२७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टङ्कधरायै नमः।

२७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टङ्काराकारणाटव्यै नमः।

२७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठकुरायै नमः।

२७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठीत्कृत्यै नमः।

२७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठिण्ठीरयै नम।

२७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अवसनावृत्तायै नमः।

२७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठण्ठायै नमः।

२७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नीलमय्यै नमः।

२८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठण्ठाठणत्कारकराङ्गसायै नमः।

२८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डाकिन्यै नमः।

२८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डामरायै नमः।

२८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डिण्डिमध्वन्यै नमः।
२८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डिण्डिमध्वनिनादिन्यै नमः।
२८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढक्कायै नमः।
२८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढक्काप्रियस्वनायै नमः।
२८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढक्कारायै नमः।
२८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तपिन्यै नमः।
२८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तापिन्यै नमः।
२९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तरुण्यै नमः।
२९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तुन्दिलायै नमः।
२९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तुन्दायै नमः।
२९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तामस्यै नमः।
२९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तपःप्रियायै नमः।
२९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ताम्रायै नमः।
२९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ताम्राम्बरायै नमः।
२९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ताल्यै नमः।
२९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तालीदलविभूषिण्यै नमः।
२९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तुरङ्गायै नमः।
३००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्वरितायै नमः।
३०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तोतायै नमः।
३०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तोतलादिन्यै नमः।
३०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तादिन्यै नमः।
३०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तुलायै नमः।
३०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तापत्रयहरायै नमः।
३०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तारायै नमः।
३०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तालकेश्यै नमः।
३०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तमालिन्यै नमः।
३०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तमालदलायै नमः।
३१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तमालदलवच्छायायै नमः।

३११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तालस्वनवत्यै नमः।
३१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तम्यै नमः।
३१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तामस्यै नमः।
३१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तमिस्रायै नमः।
३१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तीव्रायै नमः।
३१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तीव्रपराक्रमायै नमः।
३१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तटस्याग्रायै नमः।
३१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लतैलाक्तायै नमः।
३१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तारिण्यै नमः।
३२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तपनद्युत्यै नमः।
३२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तिलोत्तमायै नमः।
३२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तिलककृत्तायै नमः।
३२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तारकायै नमः।
३२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तारकादेशशेखरायै नमः।
३२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तिलपुष्पायै नमः।
३२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तिलपुष्पप्रियायै नमः।
३२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तारायै नम।
३२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तारकेशकुटुम्बिन्यै नमः।
३२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्थाणुपत्न्यै नमः।
३३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्थितिकर्यै नमः।
३३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्थलस्थायै नमः।
३३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्थलवर्द्धिन्यै नमः।
३३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्थित्यै नमः।
३३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्थैर्यायै नमः।
३३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वविष्ठायै नमः।
३३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्थावत्यै नमः।
३३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्थूलविग्रहायै नमः।
३३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दन्तिन्यै नमः।

३३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दण्डिन्यै नमः।
३४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दीनायै नमः।
३४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दरिद्रायै नमः।
३४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दीनवत्सलायै नमः।
३४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं देव्यै नमः।
३४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दैत्यदामिन्यै नमः।
३४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दन्तभूषणायै नमः।
३४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दयावत्यै नमः।
३४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दमवत्यै नमः।
३४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दमदायै नमः।
३४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दाडिमस्तन्यै नमः।
३५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दन्दशूकनिभायै नमः।
३५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दैत्यदारिण्यै नमः।
३५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं देवताननायै नमः।
३५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दोलाक्रीडायै नमः।
३५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दोलाक्रीडादलायै नमः।
३५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दम्पत्यै नमः।
३५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं देवतामय्यै नमः।
३५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दशादीपस्थितायै नमः।
३५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दोषायै नमः।
३५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दोषहायै नमः।
३६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दोषकारिण्यै नमः।
३६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुर्गायै नमः।
३६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुर्गतिशमन्यै नमः।
३६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुर्गमायै नमः।
३६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुर्गवासिन्यै नमः।
३६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुर्गन्धनाशिन्यै नमः।
३६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुःस्थायै नमः।

३६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुःस्वप्नशमनकारिण्यै नमः।
३६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुर्वारायै नमः।
३६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुन्दुभिध्वनायै नमः।
३७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दूरगायै नमः।
३७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दूरवासिन्यै नमः।
३७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दरदायै नमः।
३७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दरहायै नमः।
३७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दात्र्यै नमः।
३७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दयादायै नमः।
३७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुहितायै नमः।
३७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दशायै नमः।
३७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धुरन्धरायै नमः।
३७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धुरीणायै नमः।
३८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धौरेय्यै नमः।
३८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धनदायिन्यै नमः।
३८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धीरायै नमः।
३८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अधीरायै नमः।
३८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धरित्र्यै नमः।
३८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धर्मदायै नमः।
३८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धीरमानसायै नमः।
३८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धनुर्धरायै नमः।
३८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धमन्यै नमः।
३८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूर्त्तायै नमः।
३९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूर्त्तपरिग्रहायै नमः।
३९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूमवर्णायै नमः।
३९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूमपानायै नमः।
३९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूमलायै नमः।
३९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूममोदिन्यै नमः।

३९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नलीन्यै नमः।
३९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कन्दान्यै नमः।
३९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नीरन्दायै नमः।
३९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नन्दिन्यै नमः।
३९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नन्दबालिकायै नमः।
४००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नवीनायै नमः।
४०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नर्मदायै नमः।
४०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नर्मयै नमः।
४०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नेम्यै नमः।
४०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नियमायै नमः।
४०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निश्चयायै नमः।
४०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्मलायै नमः।
४०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निगमाचारायै नमः।
४०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निम्नगायै नमः।
४०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नग्निकायै नमः।
४१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निम्यै नमः।
४११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नालायै नमः।
४१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निरन्तरायै नमः।
४१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निघ्न्यै नमः।
४१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्लोपायै नमः।
४१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्गुणायै नम।
४१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नत्यै नमः।
४१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नीलग्रीवायै नमः।
४१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नीरीहायै नमः।
४१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निरञ्जनजन्यै नमः।
४२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नव्यै नमः।
४२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नवनीतप्रियायै नमः।
४२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नार्यै नमः।

४२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नरकार्णवतारिण्यै नमः।
४२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नारायण्यै नमः।
४२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निराकारायै नमः।
४२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निपुणायै नमः।
४२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निपुणप्रियायै नमः।
४२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निशायै नमः।
४२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निद्रायै नमः।
४३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नरेन्द्रस्थायै नमः।
४३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनमितायै नमः।
४३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नमितापिच्वे नमः।
४३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्गुण्डिकायै नमः।
४३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्गुण्डायै नमः।
४३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्मांसायै नमः।
४३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नासिकाभिधायै नमः।
४३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पताकिन्यै नमः।
४३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पताकायै नमः।
४३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पलप्रीत्यै नमः।
४४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यशश्विन्यै नमः।
४४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पीनायै नमः।
४४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पीनस्तनायै नमः।
४४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं (रुद्र)पत्न्यै नमः।
४४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पवनाशनशायिन्यै नमः।
४४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं परायै नमः।
४४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पराकलायै नमः।
४४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाकायै नमः।
४४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाककृत्यायै नमः।
४४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रतिप्रियायै नमः।
४५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पवनस्थायै नमः।

४५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुपवनायै नमः।
४५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तापस्यै नमः।
४५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रीतिवर्द्धिन्यै नमः।
४५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पशुवृद्धिकर्यै नमः।
४५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुष्ट्यै नमः।
४५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पोषण्यै नमः।
४५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुष्पवर्द्धिन्यै नमः।
४५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुष्पिण्यै नमः।
४५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुस्तककरायै नमः।
४६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुन्नागतलवासिन्यै नमः।
४६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुरन्दरप्रियायै नमः।
४६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रीत्यै नमः।
४६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुरमार्गनिवासिन्यै नमः।
४६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पेशायै नमः।
४६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाशकरायै नमः।
४६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाशबन्धहायै नमः।
४६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पांशुलायै नमः।
४६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पश्व्यै नमः।
४६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पटपटाशायै नमः।
४७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं परशुधारिण्यै नमः।
४७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काशिन्यै नमः।
४७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पापघ्न्यै नमः।
४७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पति (शिव) पत्न्यै नमः।
४७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पतितायै नमः।
४७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अपतितायै नमः।
४७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पिशाच्यै नमः।
४७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पिशाचघ्न्यै नमः।
४७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पिशितासनायै नमः।

४७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पिशिताशनतोषितायै नमः।

४८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पानदायै नमः।

४८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पानपात्रायै नमः।

४८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पानदानकरोद्यतायै नमः।

४८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पूषायै नमः।

४८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रसिद्ध्यै नमः।

४८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पीयूषायै नमः।

४८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पूर्णायै नमः।

४८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पूर्णमनोरथायै नमः।

४८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पतद्गर्भायै नमः।

४८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पतद्गात्रायै नमः।

४९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पौनायै नमः।

४९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुन्यायै नमः।

४९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पिवापुरायै नमः।

४९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पङ्किलायै नमः।

४९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पङ्कमग्नायै नमः।

४९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पादीपायै नमः।

४९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पञ्जरस्थितायै नमः।

४९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पञ्चमायै नमः।

४९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पञ्चयामायै नमः।

४९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पञ्चतायै नमः।

५००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मञ्चमप्रियायै नमः।

५०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पञ्चमुद्रायै नमः।

५०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुण्डरीकायै नमः।

५०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पिङ्गलायै नमः।

५०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पिङ्गललोचनायै नमः।

५०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रियङ्गवै नमः।

५०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मञ्जर्यै नमः।

५०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पिण्ड्यै नमः।
५०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पण्डितायै नमः।
५०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाण्डुरप्रभायै नमः।
५१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रेतासनायै नमः।
५११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रियालुस्थायै नमः।
५१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाण्डुघ्न्यै नमः।
५१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पीत्तसापहायै नमः।
५१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फलिन्यै नमः।
५१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फलदात्र्यै नमः।
५१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फलश्रीयै नमः।
५१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फणिभूषणायै नमः।
५१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फूत्कारकारिण्यै नमः।
५१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्फारायै नमः।
५२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फुल्लायै नमः।
५२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फुल्लम्बुजासनायै नमः।
५२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फिरङ्गहस्तायै नमः।
५२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्फितमत्यै नमः।
५२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्फित्यै नमः।
५२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्फितिकरस्थायै नमः।
५२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बनमालायै नमः।
५२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बलारात्यै नमः।
५२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बलिन्यै नमः।
५२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बलवर्द्धिन्यै नमः।
५३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेणुवाद्यायै नमः।
५३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वनचर्यै नमः।
५३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वीरायै नमः।
५३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वीजनय्यै नमः।
५३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विद्यायै नमः।

५३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विद्याप्रदायै नमः।
५३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विद्याबोधिन्यै नमः।
५३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेददायिन्यै नमः।
५३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बुधमात्रे नमः।
५३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बुद्धायै नमः।
५४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वनमालावत्यै नमः।
५४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरायै नमः।
५४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरदायै नमः।
५४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वारुण्यै नमः।
५४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वीणायै नमः।
५४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वीणावादनतत्परायै नमः।
५४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विनोदिन्यै नमः।
५४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विनोदस्थायै नमः।
५४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैष्णव्यै नमः।
५४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विष्णुवल्लभायै नमः।
५५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विद्यायै नमः।
५५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैद्यायै नमः।
५५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चिकीत्सायै नमः।
५५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विवशायै नमः।
५५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विश्वविश्रुतायै नमः।
५५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वितन्द्रायै नमः।
५५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विह्वलायै नमः।
५५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेलायै नमः।
५५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विरावायै नमः।
५५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विरतिज्वरायै नमः।
५६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विविधार्ककरायै नमः।
५६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वीरायै नमः।
५६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बिम्बोष्ठ्यै नमः।

५६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बिम्बवत्सलायै नमः।
५६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विन्ध्यस्थायै नमः।
५६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वारवन्द्यायै नमः।
५६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरीयानपरायै नमः।
५६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वित्त्यै नमः।
५६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेदान्तवेद्यायै नमः।
५६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बोधायै नमः।
५७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेदायै नमः।
५७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विजयप्रदायै नमः।
५७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विरोधवर्धिन्यै नमः।
५७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वन्द्यायै नमः।
५७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वन्ध्याबन्धिनिवारिण्यै नमः।
५७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भयन्यै नमः।
५७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भगमालायै नमः।
५७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भवान्यै नमः।
५७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भयभाविन्यै नमः।
५७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भीमायै नमः।
५८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भीमाननायै नमः।
५८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भौम्यै नमः।
५८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भङ्गुरायै नमः।
५८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भीमदर्शनायै नमः।
५८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भिल्लीकायै नमः।
५८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भल्लधरायै नमः।
५८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भीरवे नमः।
५८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भेरुण्डायै नमः।
५८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भयापहायै नमः।
५८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भगसर्पिण्यै नमः।
५९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भगायै नमः।

५९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भगरूपायै नमः।
५९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भगालयायै नमः।
५९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भगासनायै नमः।
५९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भगामोदायै नमः।
५९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भेर्यै नमः।
५९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डङ्कारङ्गिन्यै नमः।
५९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भीषणायै नमः।
५९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भीषणरावायै नमः।
५९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भगवत्यै नमः।
६००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भूषणायै नमः।
६०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भारद्वाजायै नमः।
६०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भोगदात्र्यै नमः।
६०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भवघ्न्यै नमः।
६०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भूत्यै नमः।
६०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भूतिभूषणायै नमः।
६०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भूतिदायै नमः।
६०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भूमिदात्र्यै नमः।
६०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भूपतित्वप्रदायिन्यै नमः।
६०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भ्रमर्यै नमः।
६१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भ्रामर्यै नमः।
६११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नीलायै नमः।
६१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भूपालमुकुटस्थितायै नमः।
६१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भूपालस्थितायै नमः।
६१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मतायै नमः।
६१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मनोहरमनायै नमः।
६१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मानिन्यै नमः।
६१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मोहिन्यै नमः।
६१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मह्यै नमः।

६१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्म्यै नमः।

६२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मदक्षीबायै नमः।

६२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मदीयायै नमः।

६२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मदीरालयायै नमः।

६२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मदोद्धतायै नमः।

६२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मन्दगस्थायै नमः।

६२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं माधव्यै नमः।

६२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मधुमन्दिन्यै नमः।

६२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मेधायै नमः।

६२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मेधकर्यै नमः।

६२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मेध्यायै नमः।

६३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मध्यायै नमः।

६३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मध्यवयस्थितायै नमः।

६३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मद्यपायै नमः।

६३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मांसलायै नमः।

६३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मत्स्यमोदिन्यै नमः।

६३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मैथुनोद्धतायै नमः।

६३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मुद्रायै नमः।

६३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मुद्रावत्यै नमः।

६३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मातृकायै नमः।

६३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मायायै नमः।

६४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महिमायै नमः।

६४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मायामहिममन्दिरायै नमः।

६४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महामायायै नमः।

६४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाविद्यायै नमः।

६४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महामार्यै नमः।

६४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महेश्वर्यै नमः।

६४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महादेववध्वै नमः।

६४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मान्यायै नमः।
६४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मधुरायै नमः।
६४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वीरमण्डलायै नमः।
६५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मेदस्विन्यै नमः।
६५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एकश्रियै नमः।
६५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महिषासुरमर्दिन्यै नमः।
६५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मण्डपस्थायै नमः।
६५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मठस्थायै नमः।
६५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मदिरागमगर्वितायै नमः।
६५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मोक्षदायै नमः।
६५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मुण्डमालायै नमः।
६५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मालायै नमः।
६५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मालाविलासिन्यै नमः।
६६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मातङ्गिन्यै नमः।
६६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मतङ्गायै नमः।
६६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मतङ्गतनयायै नमः।
६६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मधुस्त्रावायै नमः।
६६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मधुरसायै नमः।
६६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मधूककुसुमप्रियायै नमः।
६६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यामिन्यै नमः।
६६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यामिनीनाथायै नमः।
६६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यामिनीनाथभूषायै नमः।
६६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यावकरञ्जितायै नमः।
६७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यवाङ्कुरायै नमः।
६७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यावाङ्कुरप्रियायै नमः।
६७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मायायावन्यै नमः।
६७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यौवनाधिपायै नमः।
६७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यमघ्न्यै नमः।

६७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यमकन्यायै नमः।
६७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यजमानस्वरूपिण्यै नमः।
६७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यज्ञायै नमः।
६७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यज्वायै नमः।
६७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यजुर्यज्वायै नमः।
६८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यशोपिकरायै नमः।
६८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यशोपिकरकारिण्यै नमः।
६८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यज्ञसूत्रप्रदायै नमः।
६८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्येष्ठायै नमः।
६८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यज्ञकर्मकर्यै नमः।
६८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यशस्विन्यै नमः।
६८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यकारस्थायै नमः।
६८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यूपस्तम्भनिवासिन्यै नमः।
६८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रञ्जितायै नमः।
६८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राजपत्न्यै नमः।
६९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रमायै नमः।
६९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रवेरण्यै नमः।
६९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रजोवत्यै नमः।
६९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रजश्चित्रायै नमः।
६९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रजन्यै नमः।
६९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रजनीपत्यै नमः।
६९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रागिन्यै नमः।
६९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राज्यनीराज्यायै नमः।
६९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राज्यायै नमः।
६९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राज्यदायै नमः।
७००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राज्यवर्धिन्यै नमः।
७०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राजन्वत्यै नमः।
७०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राजनीत्यै नमः।

७०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रजतवासिन्यै नमः।
७०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रमण्यै नमः।
७०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रमणीयायै नमः।
७०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रामायै नमः।
७०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रामावत्यै नमः।
७०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रत्यै नमः।
७०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रेतोवत्यै नमः।
७१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रतोत्साहायै नमः।
७११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रोगहृद्यै नमः।
७१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निरोगकारिण्यै नमः।
७१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रङ्गायै नमः।
७१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रङ्गवत्यै नमः।
७१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रागायै नमः।
७१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रागज्ञायै नमः।
७१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रागकृद्यै नमः।
७१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रणायै नमः।
७१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रञ्जिकायै नमः।
७२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अरञ्जिकायै नमः।
७२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रञ्जायै नमः।
७२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रञ्जिन्यै नमः।
७२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रक्तलोचनायै नमः।
७२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रक्तचर्मधरारञ्जायै नमः।
७२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रक्तस्थायै नमः।
७२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रक्तवादिन्यै नमः।
७२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रम्भायै नमः।
७२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रम्भफलप्रीत्यै नमः।
७२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रम्भोरवे नमः।
७३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राघवप्रियायै नमः।

७३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रङ्गवृन्दगणायै नमः।
७३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मधुररोदस्यै नमः।
७३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रोदसीग्रहायै नमः।
७३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रोधकृत्यै नमः।
७३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रोधहन्त्र्यै नमः।
७३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रोगभृद्यै नमः।
७३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रोगशमिन्यै नमः।
७३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वन्दीस्तुतायै नमः।
७३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बन्धबन्धूककुसुमायै नमः।
७४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वन्दितायै नमः।
७४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वन्दितमात्रे नमः।
७४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बिन्दुरायै नमः।
७४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैन्दवीविद्यायै नमः।
७४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विङ्क्यै नमः।
७४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विङ्ककपालायै नमः।
७४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विङ्कायै नमः।
७४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विङ्कस्थायै नमः।
७४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विङ्कवत्सलायै नमः।
७४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वदर्यै नमः।
७५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विलग्नायै नमः।
७५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विप्रायै नमः।
७५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विध्यै नमः।
७५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विधिकर्यै नमः।
७५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विधायै नमः।
७५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्खिन्यै नमः।
७५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्खवलयायै नमः।
७५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्खमालायै नमः।
७५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शम्यै नमः।

७५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्खपात्राऽशन्यै नमः।
७६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शृङ्गायै नमः।
७६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्खग्रीवायै नमः।
७६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्खप्रभायै नमः।
७६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शम्भ्व्यै नमः।
७६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शरावत्यै नमः।
७६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्यामायै नमः।
७६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्यामाङ्गायै नमः।
७६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्यामलोचनायै नमः।
७६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शमशानस्थायै नमः।
७६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शमशानायै नमः।
७७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शमशानस्थलायै नमः।
७७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शमशानस्थलभूषणायै नमः।
७७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शमदायै नमः।
७७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शमहन्त्र्यै नमः।
७७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शाकिन्यै नमः।
७७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्कुशेखरायै नमः।
७७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शान्त्यै नमः।
७७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शान्तिप्रदायै नमः।
७७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शेषायै नमः।
७७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शेषस्थायै नमः।
७८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शेषदायिन्यै नमः।
७८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शेषमुख्यै नमः।
७८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शोषिण्यै नमः।
७८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शीर्यै नमः।
७८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शौर्यै नमः।
७८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शौर्यायै नमः।
७८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शरायै नमः।

७८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिर्यै नमः।
७८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शापहनीशायै नमः।
७८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शापहान्यै नमः।
७९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शशम्पायै नमः।
७९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शपथदायिन्यै नमः।
७९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शृगिण्यै नमः।
७९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शृङ्गपलभुक्त्यै नमः।
७९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्कर्यै नमः।
७९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्करचिकायै नमः।
७९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्कायै नमः।
७९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्कापहायै नमः।
७९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्कापहासंस्थायै नमः।
७९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शाश्वत्यै नमः।
८००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शीतलायै नमः।
८०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवायै नमः।
८०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवस्थायै नमः।
८०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शवभुक्तायै नमः।
८०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शवासनायै नमः।
८०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शाववर्णायै नमः।
८०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवोदर्यै नमः।
८०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शायिन्यै नमः।
८०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शावशयनायै नमः।
८०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिशपायै नमः।
८१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिशुपालिन्यै नमः।
८११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शवकुण्डलिन्यै नमः।
८१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शैवायै नमः।
८१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्करायै नमः।
८१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिशिरायै नमः।

८१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिशिराशिरायै नमः।
८१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शवकाञ्च्यै नमः।
८१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शवश्रीकायायै नमः।
८१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शवमालायै नमः।
८१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शवाकृत्यै नमः।
८२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शयन्यै नमः।
८२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शङ्क्व्यै नमः।
८२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुवाशक्त्यै नमः।
८२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शन्तनवे नमः।
८२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शीलदायिन्यै नमः।
८२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सिन्धुवासिन्यै नमः।
८२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सिन्धुगायै नमः।
८२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वत्यै नमः।
८२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सिन्ध्व्यै नमः।
८२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुन्दर्यै नमः।
८३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुन्दराननायै नमः।
८३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुदर्शनायै नमः।
८३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साध्व्यै नमः।
८३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सिद्ध्यै नमः।
८३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सिद्धिदात्र्यै नमः।
८३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सिद्धायै नमः।
८३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सिद्धसरस्वत्यै नमः।
८३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सन्तत्यै नमः।
८३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सम्पत्यै नमः।
८३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सम्पदायै नमः।
८४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं संविद्रूपायै नमः।
८४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरतिदयिन्यै नमः।
८४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सपत्न्यै नमः।

८४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरसायै नमः।
८४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सारायै नमः।
८४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वतिकर्यै नमः।
८४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वधायै नमः।
८४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरःसमायै नमः।
८४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समनायै नमः।
८४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समाराध्यायै नमः।
८५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समस्तदायै नमः।
८५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समिद्धायै नमः।
८५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समदायै नमः।
८५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समायै नमः।
८५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सम्मोहायै नमः।
८५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समदर्शनायै नमः।
८५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समित्यै नमः।
८५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समिधायै नमः।
८५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सीमायै नमः।
८५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सावित्र्यै नमः।
८६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सविधायै नमः।
८६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सत्यै नमः।
८६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सवतायै नमः।
८६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आसवनादायै नमः।
८६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आसवनायै नमः।
८६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समरायै नमः।
८६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सम्यै नमः।
८६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सिमिरायै नमः।
८६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सततायै नमः।
८६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साध्व्यै नमः।
८७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुध्यै नमः।

८७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुधीचिन्त्यै नमः।
८७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सहायिन्यै नमः।
८७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हंस्यै नमः।
८७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हंसगत्यै नमः।
८७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हंसायै नमः।
८७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हंसोज्वलायै नमः।
८७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निचोलुयुक्यै नमः।
८७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हलिन्यै नमः।
८७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हलदायै नमः।
८८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हालायै नमः।
८८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हरश्रीयै नमः।
८८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हरवल्लभायै नमः।
८८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हेलायै नमः।
८८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हेलावत्यै नमः।
८८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हेषायै नमः।
८८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रेषस्थायै नमः।
८८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रेषवर्धिन्यै नमः।
८८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हन्तायै नमः।
८८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हन्त्यै नमः।
८९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हतायै नमः।
८९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हत्याहायै नमः।
८९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हन्ततापहारिण्यै नमः।
८९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हङ्कार्यै नमः।
८९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हन्तकृद्यै नमः।
८९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हन्तकृद्धङ्काहायै नमः।
८९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हीयै नमः।
८९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं होतायै नमः।
८९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हाहालयै नमः।

८९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हताहतायै नमः।
९००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हेमप्रदायै नमः।
९०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हंसवत्यै नमः।
९०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हार्यै नमः।
९०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हातर्यै नमः।
९०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सम्मतायै नमः।
९०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं होर्यै नमः।
९०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं होत्र्यै नमः।
९०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं होलिकायै नमः।
९०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं होमायै नमः।
९०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं होमहविर्यै नमः।
९१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हारिण्यै नमः।
९११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हरिण्यै नमः।
९१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हरिणीनेत्रायै नमः।
९१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हिमाचलनिवासिन्यै नमः।
९१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लम्बोदर्यै नमः।
९१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लम्बकर्णायै नमः।
९१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लम्बिकायै नमः।
९१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लम्बविग्रहायै नमः।
९१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लीलायै नमः।
९१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लोलावत्यै नमः।
९२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लोलायै नमः।
९२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ललन्यै नमः।
९२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ललितायै नमः।
९२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लतायै नमः।
९२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ललमायै नमः।
९२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लोचनायै नमः।
९२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लोच्यायै नमः।

९२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लोलाक्ष्यै नमः।

९२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लक्षणायै नमः।

९२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ललायै नमः।

९३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लम्पत्यै नमः।

९३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लुम्पत्यै नमः।

९३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लम्पायै नमः।

९३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लोपामुद्रायै नमः।

९३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लघुमानायै नमः।

९३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लघुमध्यगाथै नमः।

९३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ललन्तिकायै नमः।

९३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लम्बिकायै नमः।

९३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लम्बायै नमः।

९३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लघिमायै नमः।

९४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लघुमध्यमायै नमः।

९४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लघीयस्यै नमः।

९४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लघुदर्यै नमः।

९४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लूतायै नमः।

९४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लूतनिवारिण्यै नमः।

९४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लोमभृदायै नमः।

९४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लोमलोप्तायै नमः।

९४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लुलुत्यै नमः।

९४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लुलुसंयत्यै नमः।

९४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लुलायस्था नमः।

९५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चलहार्यै नमः।

९५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लङ्कापुर्यै नमः।

९५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुरन्दर्यै नमः।

९५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लक्ष्म्यै नमः।

९५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लक्ष्मीप्रदायै नमः।

९५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लक्ष्म्यायै नमः।

९५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लक्षबलप्रदायै नमः।

९५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मतिप्रदायै नमः।

९५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षुणायै नमः।

९५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षुपायै नमः।

९६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षणायै नमः।

९६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षीणायै नमः।

९६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षमायै नमः।

९६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षान्त्यै नमः।

९६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षणावत्यै नमः।

९६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षामायै नमः।

९६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षामोदर्यै नमः।

९६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षीमायै नमः।

९६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षौमभृत्यै नमः।

९६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षत्रियाङ्गनायै नमः।

९७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षयायै नमः।

९७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षमाकर्यै नमः।

९७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षीरायै नमः।

९७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षीरदायै नमः।

९७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षीरसागरायै नमः।

९७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षेमङ्कर्यै नमः।

९७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षयङ्कर्यै नमः।

९७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षयतत्क्षणदायै नमः।

९७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षत्यै नमः।

९७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षुरन्त्यै नमः।

९८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षुद्रिकायै नमः।

९८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षुद्रायै नमः।

९८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षुत्क्षामायै नमः।

९८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अक्षरायै नमः।
९८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अक्षरपातकायै नमः।
९८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अङ्गस्थायै नमः।
९८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अङ्गनिवासिन्यै नमः।
९८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अङ्गधारिण्यै नमः।
९८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुरनिवासिन्यै नमः।
९८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुरान्तकायै नमः।
९९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दारिद्र्यहरणायै नमः।
९९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शत्रुनिशूदिन्यै नमः।
९९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शत्रुमर्दिन्यै नमः।
९९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शत्रुमदविनासिन्यै नमः।
९९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शत्रुशोककर्यै नमः।
९९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महामाहेश्वर्यै नमः।
९९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालप्रियायै नमः।
९९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालनिरतायै नमः।
९९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालमनोहरायै नमः।
९९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालाह्लादकर्यै नमः।
१०००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवशक्त्यै नमः।
१००१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवप्रियायै नमः।
१००२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवप्राणवल्लभायै नमः।
१००३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महेश्वराह्लादकर्यै नमः।
१००४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वशोकहरायै नमः।
१००५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भक्ताशोककर्यै नमः।
१००६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेणुनादकर्यै नमः।
१००७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेणुनादलहर्यै नमः।
१००८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वेणुनादप्रवाहिन्यै नमः।

समर्पणम्—अनेन सहस्त्रार्चनेन श्रीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरा प्रीयतां न मम।

विपरीतप्रत्यङ्गिरासहस्रनामस्तोत्रमन्त्रार्चनं परिपूर्णम्

* * *

नित्यपठनीयस्तोत्रम्

कालीकवचम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीकालिकवचस्य भैरवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता शत्रुसंहारार्थे पाठे विनियोगः।**

ध्यानम्

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां लोलजिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्॥१॥

तीन नेत्रोंवाली, लोलजिह्वा, बहुत रूपोंवाली, पूर्णचन्द्र के समान मुखोंवाली, महामाया काली का ध्यान करना चाहिये॥१॥

नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसङ्घविदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं अभयं वरदं तथा॥२॥

नीलोत्पल पद्म के पत्रों के समान श्याम, शत्रुओं के समुदाय को नष्ट करनेवाली, हाथ में नरमुण्ड, खड्ग, अभय तथा वरमुद्राओं को धारण की हुई महामाया काली का ध्यान करना चाहिये॥२॥

निर्भयां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम्।
साट्टहासाननां देवीं सर्वदां च दिगम्बरीम्॥३॥

निर्भय, रक्तवदनवाली, विकराल दाँतोंवाली, विशाल घोर रूपवाली, नित्य अट्टहास में निमग्न तथा सदा सर्वदा दिगम्बर महामाया काली का ध्यान करना चाहिये॥३॥

शवासनस्थितां कालीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
एवं ध्यात्वा महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥४॥

शवासन पर आरूढ तथा मुण्ड की माला से विभूषित महामाया काली का समस्त कामनाओं के लिए ध्यान करना चाहिये॥४॥

अथ कवचम्

ॐ कालिका घोररूपाख्या सर्वकामफलप्रदा।
सर्वदेवस्तुता देवि! शत्रुनाशं करोतु मे॥५॥

घोर रूपवाली कालिका सभी कामनाओं की पूर्ति करनेवाली हैं, सभी देवताओं से स्तुत देवी काली हमारे समस्त शत्रुओं का नाश करें॥५॥

ॐ ह्रीँ ह्रीँ रूपिणी चैव ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ रूपिणी तथा।
ह्राँ ह्रीँ क्षैँ क्षौँस्वरूपा सा सदा शत्रून्विदारयेत्॥६॥

ह्रीं ह्रीं रूपोंवाली, ह्रां ह्रीं ह्रूं रूपोंवाली तथा ह्रां ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपोंवाली महामाया काली सदैव हमारे समस्त शत्रुओं को नष्ट करें॥६॥

श्रीँ ह्रीँ ऐँ रूपिणीदेवी भवबन्धविमोचिनी।
ह्रूँ रूपिणी महाकाली रक्षाऽस्मान्देवी सर्वदा॥७॥

श्रीं ह्रीं ऐं रूपोंवाली देवी जो भवबन्धन का विमोचन करनेवाली हैं तथा ह्रूँ रूपिणी महाकाली देवी सदा सर्वदा हमारी रक्षा करें॥७॥

यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः।
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शङ्करप्रियाम्॥८॥

हे शङ्कर की परम प्रिया कालिका! जैसे आपने पूर्वकाल में शुम्भ दैत्य का वध किया, निशुम्भ महासुर का वध किया उसी प्रकार हमारे वैरियों को नष्ट करने के लिए आपकी वन्दना करता हूँ॥८॥

ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका।
कौमार्यैन्द्री च चामुण्डा खादन्तु मम विद्विषः॥९॥

ब्राह्मी, शैवी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, कौमारी, ऐन्द्री, चामुण्डा रूपोंवाली महामाया महाकालिका हमारे कालुष्य को तुरन्त नष्ट करें॥९॥

सुरेश्वरी घोररूपा चण्डमुण्डविनाशिनी।
मुण्डमालावृताङ्गी च सर्वतः पातु मां सदा॥१०॥

भयंकर रूपोंवाली सुरेश्वरी, चण्डमुण्ड का विनाश करनेवाली, अङ्गों में मुण्ड की माला धारण करनेवाली हमारी सभी तरफ से रक्षा करें॥१०॥

क्रीँ ह्रूँ ह्रीँ कालिके घोरे दंष्ट्रेव रुधिरप्रिये।
रुधिरापूर्णवक्त्रेण रुधिरेणावृतस्तनी॥११॥

क्रीं ह्रूं ह्रीं रूपावाली हे कालिके! रुधिर से प्रसन्न होनेवाली! भयंकर दांतोंवाली, सम्पूर्ण मुख में रक्त लगी हुई, रक्त से आवृत शरीरवाली महामाया महाकालिका हमारी सदा सर्वदा सर्वत्र रक्षा करें॥११॥

अथ मन्त्रः

ॐ क्रीँ कालिके मम शत्रून् खादय खादय हिंसय हिंसय मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटयोच्चाटय द्रावय द्रावय शोषय शोषय स्वाहा। ॐ क्रीँ ह्रूँ ह्रीँ कालिकायै मदीयशत्रून् समर्पयामि स्वाहा।

ॐ जय जय किरि किरि किटि किटि कट कट मर्द मर्द मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंस ध्वंस भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानान् चामुण्डे सर्वजनान् राज्ञो राजपुरुषान् स्त्रियो मम वश्यान् कुरु कुरु तनु तनु धान्यं धनं मेऽश्वान् गजान् रत्नानि दिव्यकामिनीपुत्रान् राज्यश्रियं देहि देहि रक्ष रक्ष क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः स्वाहा।

फलश्रुतिः

इत्येतत्कवचं दिव्यं कथितं शम्भुना पुरा।
ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति शत्रवः॥१॥

इस कवच को पूर्व काल में स्वयं शम्भु ने ही कहा है, इसका जो नियमित पाठ करता है उसके समस्त शत्रु निश्चित ही नष्ट होते हैं, यह ध्रुव सत्य है॥१॥

वैरिणं प्रलयं यान्ति व्याधिता वा भवन्ति हि।
बलहीना पुत्रहीना शत्रवस्तस्य सर्वदा॥२॥

कालिका के भक्त के समस्त वैरियों का प्रलय (नष्ट) हो जाता है, अथवा उनकी समस्त व्याधियाँ निश्चय पूर्वक नष्ट हो जाती हैं, उसके समस्त शत्रु बल तथा पुत्र से हीन हो जातें हैं॥२॥

सहस्रपठनात्सिद्धिः कवचस्य प्रसादतः।
कार्याणि सर्वसिद्ध्यन्ति यथा शङ्करभाषितम्॥३॥

इस कवच का एक हजार पाठ करने से शत्रु विनाश सम्बन्धित समस्त कार्यों की सिद्धि होती है, अन्य सभी कार्यों की पूर्ति भी होती है, यह स्वयं भगवान् शङ्कर ने दृढ़ निश्चय पूर्वक कहा है॥३॥

श्मशानाङ्गारमादाय चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः।
पादोदकेन पिष्ट्वा तल्लिखेल्लोहशलाकया॥४॥

श्मशान से अग्नि लाकर उसका प्रयत्नपूर्वक चूरा करके, अपने पैर के धोवन के जल में पीस करके उससे लोहे की कलम से शत्रु का चित्र बनाये॥४॥

भूमौ शत्रून् हीनरूपानुत्तरा शिरसस्तथा।
हस्तं दत्त्वा तु हृदये कवचं तु स्वयं पठेत्॥५॥

भूमि पर शत्रु के चित्र को उत्तर पैर, दक्षिण सिर करके बनाकर उसके हृदय पर हाथ रखकर स्वयं कवच का पाठ करे॥५॥

शत्रोः प्राणप्रतिष्ठां तु कुर्यान्मन्त्रेण मन्त्रवित्।
हन्यादस्त्रप्रहारेण शत्रोः गच्छ यमच्छयम्॥६॥

शत्रु की प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से करके, उस चित्र को कवच पाठ करते हुए, अस्त्र से प्रताड़ित करते हुए हनन करे तो शत्रु शीघ्र ही यमलोक को चला जाता है॥६॥

ज्वलदङ्गारतापेन भवन्ति ज्वरिता भृशम्।
प्रोञ्छनैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम्॥७॥

शत्रु के उस चित्र को जलती हुई अग्नि में तपाने से शत्रु तुरन्त ही भयंकर ज्वर से ग्रस्त हो जाता है तथा शत्रु के बायें पैर का प्रोक्षण करने से वह शत्रु शीघ्र ही दरिद्र हो जाता है॥७॥

वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम्।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्रपौत्रादिवृद्धिदम्॥८॥

यह कवच वैरियों को नष्ट करनेवाला तथा समस्त जीवों को वश में करनेवाला है तथा पाठ करनेवाले को पुत्रपौत्रादि की वृद्धि तथा परम ऐश्वर्य प्रदान करनेवाला है॥८॥

प्रभातसमये चैव पूजाकाले च यत्नतः।
सायंकाले तथा पाठात्सर्वसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्॥९॥

प्रात:काल सूर्योदय के समय, पूजाकाल में यत्नपूर्वक तथा सायंकाल में जो इसका त्रिकाल पाठ करता है, उसे अवश्य ही समस्त कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है॥९॥

शत्रूरुच्चाटनं याति देशाद्वा विच्युतो भवेत्।
पश्चात्किङ्करतामेति सत्यं सत्यं न संशयः॥१०॥

त्रिकाल पाठ करनेवाले भक्तों के समस्त शत्रुओं का उच्चाटन हो जाता है और वह शत्रु देश से विच्युत हो जाता है और बाद में भिक्षु हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है, यह सत्य, पूर्ण सत्य ही है॥१०॥

शत्रुनाशकरे देवि! सर्वसम्पत्करे शुभे।
सर्वदेवस्तुते देवि! कालिके त्वां नमाम्यहम्॥११॥

हे शुभे! यह कवच समस्त शत्रुओं का नाश करनेवाला है तथा सभी सम्पत्ति को प्रदान करने वाला है, सभी देवताओं से स्तुत देवी, हे कालिके! तुम्हें मैं नमस्कार करता हूँ॥११॥

इस प्रकार से कवच का पाठ करके देवि को पाठ समर्पित करे।

अनेन कवचपाठाख्येन विपरीतप्रत्यङ्गिरा प्रीयतां न मम।

कालीकवचं परिपूर्णम्

❀

श्रीकालिहृदयम्

विनियोग:—ॐ **अस्य श्रीकालिकाहृदयस्त्रोत्रमन्त्रस्य श्रीमहाकालऋषिः उष्णिक्छन्दः महाकालमहिषीकालिदेवता हूंबीजं ह्रींशक्तिः क्लींकीलकं विपरीतप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।**

ध्यानम्

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां लोलजिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्॥१॥

तीन नेत्रोंवाली, लोलजिह्वा, बहुत रूपोंवाली, पूर्णचन्द्र के समान मुखोंवाली, महामाया काली का ध्यान करना चाहिये॥१॥

नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसङ्घविदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं अभयं वरदं तथा॥२॥

नीलोत्पल पद्म के पत्रों के समान श्याम, शत्रुओं के समुदाय को नष्ट करनेवाली, हाथ में नरमुण्ड, खड्ग, अभय तथा वरमुद्राओं को धारण की हुई महामाया काली का ध्यान करना चाहिये॥२॥

विभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्रालीघोररूपिणीम्।
अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदाञ्च दिगम्बराम्॥३॥

निर्भय, रक्त वर्ण से विभूषित वदनवाली, विकराल दाँतोंवाली, विशाल घोर रूपवाली, नित्य अट्टहास में निमग्न तथा सदा सर्वदा दिगम्बर महामाया काली का ध्यान करना चाहिये॥३॥

शवासनस्थितां कालीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
अथ ध्यात्वा महाकालीं ततस्तु हृदयं पठेत्॥४॥

शवासन पर आरूढ़ तथा मुण्ड की माला से विभूषित महामाया काली का समस्त कामनाओं के लिए ध्यान करने के बाद हृदय का पाठ करना चाहिये॥४।

ॐ कालिका घोररूपाख्या सर्वकामफलप्रदा।
सर्वदेवस्तुता देवि! शत्रुनाशं करोतु मे॥५॥

घोर रूपवाली कालिका सभी कामनाओं की पूर्ति करनेवाली हैं, सभी देवताओं से स्तुत देवी काली हमारे समस्त शत्रुओं का नाश करें॥५॥

ह्रीँ ह्रीँ रूपिणी श्रेष्ठा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा।
तव स्नेहान्मया ख्यातं न देयं यस्य कस्यचित्॥६॥

तीनों लोकों में दुर्लभ श्रेष्ठ ह्रीँ ह्रीँ रूपिणी देवी आपके स्नेह से हमने ख्याति प्राप्त किया इसे किसी को नहीं देना चाहिये॥६॥

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके।
यस्य विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति॥७॥

निशामय परा भगवती का ध्यान कहता हूँ जिसके जानने मात्र से जीव मुक्त हो जाता है॥७॥

नागयज्ञोपवीताञ्च चन्द्रार्द्धकृतशेखराम्।
जटाजूटाञ्च सञ्चित्य महाकालसमीपगाम्॥८॥

नाग(पवित्रक) यज्ञोपवीत(यज्ञ में पहने जानेवाला त्रिसूत्र) धारण किये हुए, शिर पर चन्द्र को धारण किये हुए, जटाजूट युक्त महाकाल के समीप ही॥८॥

एवं न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वन्ति मानवाः।
प्राप्नुवन्ति च ते मोक्षं सत्यं सत्यं वरानने॥९॥

समस्त न्यासों को जो मनुष्य करता है वह निश्चय ही मोक्ष प्राप्त करता है, हे वरानने! यह सत्य सत्य वचन है॥९॥

यन्त्रं शृणु परं देव्याः सर्वार्थसिद्धिदायकम्।
गोप्याद् गोप्यतरं गोप्यं गोप्याद्गोप्यतरं महत्॥१०॥

सर्वार्थ सिद्धि दायक परदेवी का यन्त्र कहता हूँ ध्यान पूर्वक सुनें यह गोप्य से भी गोप्यतर है इसलिये इसे अधिकतम गोप्य से भी गोप्य रखना चाहिये॥१०॥

त्रिकोणं पञ्चकं चाऽष्टकमलं भूपूरान्वितम्।
मुण्डपक्तिञ्च ज्वालाञ्च कालीयन्त्रंसुसिद्धिदम्॥११॥

पाँच त्रिकोण, अष्ट पत्रोंवाला कमल भूपुर से अन्वित करके मुण्ड पक्ति और ज्वालाओं से युक्त समस्त सिद्धियों को प्रदान करनेवाली काली का यन्त्र है॥११॥

मन्त्रं तु पूर्वकथितं धारयस्वसदाप्रिये।
देव्या दक्षिणकाल्यस्तु नाममालां निशामय॥१२॥

पूर्व कथित काली यन्त्र साधक को सदैव धारण करना चाहिये, उसके बाद निशामय दक्षिणकाली के नाम की माला का जप करना चाहिये॥१२॥

काली दक्षिणकाली च कामकला परात्मिका।
मुण्डमालाविशालाक्षीसृष्टिसंहारकारिका ॥१३॥

काली, दक्षिणकाली, कामकलाकाली, परात्मिकाकाली, मुण्डमालाकाली, विशालाक्षीकाली, सृष्टिकारिकाकाली, संहारकारिकाकाली नामों में नमः लगाकर जप करना चाहिये॥१३॥

स्थितिरूपामहामायायोगनिद्राभगात्मिका ।
भागसर्पिः पानरता भगोद्योता भगाङ्गजा॥१४॥

स्थितिरूपाकाली, महामायाकाली, योगनिद्राकाली, भगात्मिकाकाली, भागसर्पिकाली, पानरताकाली, भगोद्योताकाली भगाङ्गजाकाली नामों में नमः लगाकर जप करना चाहिये॥१४॥

आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका।
प्रेतवाहासिद्धिः लक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती॥१५॥

आद्याकाली, सदाकाली, नवाकाली, घोराकाली, महातेजाकाली, करालिकाकाली,

प्रेतवाहाकाली, सिद्धिकाली, लक्ष्मीकाली, अनिरुद्धाकाली, सरस्वतीकाली नामों में नमः लगाकर जप करना चाहिये।।१५।।

एतानि नाम माल्यानि ये पठन्ति दिने दिने।
तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं सत्यं महेश्वरि।।१६।।

इन नामों के माला को जो प्रतिदिन पाठ करता है उसके दास का मैं दास हो जाता हूँ, हे महेश्वरि! यह सत्य और सत्य है।।१६।।

कालीं कालहरां देवीं कङ्कालबीजरूपिणीम्।
कालरूपां कलातीतां कालिकादक्षिणां भजे।।१७।।

काली, कालहरादेवी, कङ्काल, बीजरूपिणी, कालरूपा, कलातीता, कालिकादक्षिणा का भजन करना चाहिये।।१७।।

कुण्डगोलप्रियां देवीं स्वयम्भूकुसुमे रताम्।
रतिप्रियां महारौद्रीं कालिकां प्रणमाम्यहम्।।१८।।

कुण्डगोलप्रियादेवी, स्वयम्भू, कुसुम मे रत, रतिप्रिया, महारौद्री, कालिका को प्रणाम करता हूँ।।१८।।

दूतीप्रियां महादूतीं दूतीं योगेश्वरीं पराम्।
दूतीयोगोद्भवरतां दूतीरूपां नमाम्यहम्।।१९।।

दूतीप्रिया, महादूती, दूती, योगेश्वरी, परा, दूतीयोगोद्भवा, रता, दूतीरूपा को नमस्कार है।।१९।।

क्रीँमन्त्रेण जलं जप्त्वा सप्तधा सेचनेन तु।
सर्वे रोगा विनश्यन्ति नात्र कार्या विचारणा।।२०।।

क्रीँ मन्त्र से जल को सात बार अभिमन्त्रित करके मार्जन करने से सभी रोग समाप्त हो जाते है इस विषय में कोई विचार नहीं करना चाहिये।।२०।।

क्रीँ स्वाहान्तैर्महामन्त्रैः चन्दनं साधयेत्ततः।
तिलकं क्रियते प्राज्ञैर्लोको वश्यो भवेत् सदा।।२१।।

क्रीँ से स्वाहा तक महामन्त्र से चन्दन को आठ बार अभिमन्त्रित करने के बाद जो साधक तिलक करता है उसके वश में सदा प्राज्ञलोग हो जाते हैं।।२१।।

क्रीँ हूँ ह्रीँमन्त्रजप्तेन चाऽक्षतैः सप्तभिः प्रिये।
महाभयविनाशश्च जायते नात्र संशयः।।२२।।

हे प्रिये! क्रीँ हूँ ह्रीँ मन्त्र से सात बार अक्षत् अभिमन्त्रित करने से महाभय का विनाश हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं है।।२२।।

क्रीँ ह्रीँ हूँ स्वाहा मन्त्रेण श्मशानाग्निञ्च मन्त्रयेत्।
शत्रोर्गृहे प्रतिक्षिप्वा शत्रोर्मृत्युर्भविष्यति।।२३।।

क्रौं ह्लौं हूँ स्वाहा मन्त्र से श्मशान की अग्नि को अभिमन्त्रित करके शत्रु के गृह में फेंक देने से निश्चय ही शत्रु सद्यः मर जाता है॥२३॥

ह्लूँ ह्लीँ क्रीँ चैवोच्चाटने पुष्पं संशोध्य सप्तधा।
रिपूणां चैव चोच्चाटनयत्येव न संशयः॥२४॥

हूँ ह्लौं क्रौं मन्त्र से सात बार पुष्प को अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में फेंक देने से शत्रु का निश्चय ही उच्चाटन हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं है॥२४॥

आकर्षणे च क्रीँ क्रीँ क्रीँ जप्त्वाक्षतं प्रतिक्षिपेत्।
सहस्रयोजनस्था च शीघ्रमागच्छति प्रिये॥२५॥

हे प्रिये! अक्षत् को क्रौं क्रौं क्रौं मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर फेंकने से किसी का भी आकर्षण होता है चाहे वह सहस्र योजन दूर ही क्यों न हो॥२५॥

क्रीँ क्रीँ क्रीँ ह्लूँ ह्लूँ ह्लीँ ह्लीँ च कज्जलं शोधितं तथा।
तिलकेन जगन्मोहं सप्तधा मन्त्रमाचरेत्॥२६॥

क्रौं क्रौं क्रौं हूँ हूँ ह्लौं ह्लौं मन्त्र से कज्जल को सातबार अभिमन्त्रित करके तिलक लगाने से समस्त संसार के प्राणियों का मोहन होता है॥२६॥

हृदयं परमेशानि सर्वपापहरं परम्।
अश्वमेधादि दानानां कोटिकोटिगुणोत्तरम्॥२७॥

हे परम ईशानि! यह काली का हृदय सभी पापों को नष्ट कर देता है और अश्वमेंधादि महायज्ञ और करोड़ों गुना दान करने से जो फल प्राप्त होता है उससे भी ज्यादा से ज्यादा और अधिकाधिक फल प्राप्त होता है॥२७॥

कन्यादानादिदानानां कोटिकोटिगुणं फलम्।
दूतियागादियागानां कोटिकोटिफलं स्मृतम्॥२८॥

कन्या दान करने से जो फल प्राप्त होता है उससे भी ज्यादा फल काली के हृदय पाठ करने से प्राप्त हो जाता है तथा दूतियाग और महायज्ञों के फल से भी अधिकाधिक फल प्राप्त हो जाता है॥२८॥

गङ्गादिसर्वतीर्थानां फलं कोटिगुणं स्मृतम्।
एकधा पाठमात्रेण सत्यं सत्यं मयोदितम्॥२९॥

गङ्गादि सभी तीर्थों को करने से जो फल प्राप्त होता है उतना फल तो काली के हृदय का एक पाठ करने से काली के भक्त को मिल जाता है यह मेरे द्वारा कहे गये सत्य और परम सत्य वचन हैं॥२९॥

कौमारी स्वेष्टरूपेण पूजां कृत्वा विधानतः।
पठेत्स्तोत्रं महेशानि! जीवन्मुक्तः स उच्यते॥३०॥

अपने आत्म रूप से विधान पूर्वक काली का पूजन करके इसके हृदय का जो साधक पाठ करता है वह शरीर रहते हुए ही जीवन मुक्त हो जाता है॥३०॥

रजस्वला भगं दृष्ट्वा पठेत् एकाग्रमानसः।
लभते परमं स्थानं देविलोके वरानने॥३१॥

हे वरानने! एकाग्र होकर परम परिपूर्ण तेजो मयी कालिका का तेज रूप से ध्यान करके जो भक्त काली के हृदय का पाठ करता है वह परम स्थान देवी के लोक को प्राप्त करता है॥३१॥

महादुःखे महारोगे महासङ्कटके दिने।
महाभये महाघोरे पठेत्स्तोत्रं महोत्तमम्॥३२॥

महादुःख उपस्थित होने पर, महारोग की अवस्था में, महासंङ्कट उपस्थित होने के दिन, महाघोर महाभय की उपस्थिति पर, इस काली के हृदय का जो साधक पाठ करता है वह निश्चय ही इनसे मुक्त होकर निर्भय हो जाता है॥३२॥

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं गोपयेत्मातृजारवत्।

हे देवि! मैं सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, पुनः सत्य कहता हूँ इस काली के इस हृदय को मातृजार के समान अतिशय गोपनीय रखना चाहिये।

श्रीकालिकाहृदयं परिपूर्णम्

⁂

श्रीकालीपटलम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीकालीपटलस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहाकालऋषिः उष्णिक्छन्दः श्रीकामकलाकालिदेवता हूंबीजं ह्रींशक्तिः क्लींकीलकं श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीत्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।**

अथ कालीं मनून्वक्ष्ये सद्योवाक् सिद्धिदायकम्।
आराधितैर्यैः सर्वेष्टं प्राप्नुवन्ति जना भुवि॥१॥

सर्व प्रथम काली का मनु विधान कहता हूँ जो तुरन्त ही वाक् सिद्धि प्रदान करने वाला है, जिसकी आराधना करके इस संसार में कालिका का साधक अपने समस्त कामनाओं को प्राप्त कर लेता है॥१॥

ब्रह्मरेफौ वामनेत्र चन्द्रारूढ़ौ मनुर्मतः।
एकाक्षरो महाकाल्याः सर्वसिद्धिप्रदायकः॥२॥

सर्व प्रथम ब्रह्म बीज (कं ब्रह्म) क्कार को रेफ (र्) अग्नि बीज से युक्त कर वाम नेत्र पर न्यास किया जाने वाला वर्ण दीर्घ ईकार ई शक्ति बीज तथा चन्द्र विन्दु ँ नाद से युक्त

करने पर एक अक्षर वाला ब्रह्म संज्ञक समस्त सिद्धियों को प्रदान करनेवाला महाकाली का मनु क्+र्+ई+ँ=क्रीँ बीज कहलाता है।।२।।

बीजं दीर्घयुतश्चक्री पिनाकी नेत्रसंयुतः।
क्रोधीशो भगवान् स्वाहा खण्डार्णो मन्त्र ईरितः।।३।।

पिनाकी अर्थात् आकाश तत्त्वात्मक हकार को पुनः रकार, दीर्घ ईकार तथा नाद से युक्त करने पर ह्+र्+ई+ँ=ह्रीँ माया बीज तथा हकार रकार दीर्घ उकार तथा नाद युक्त करने पर ह्+र्+ऊ+ँ=ह्रूँ क्रोध बीज ये अलग अलग कालिका के ब्रह्म संज्ञक बीज हैं।।३।।

कालीकूर्चं तथा लज्जा त्रिवर्णो मनुरीरितः।
हूंफट् ततश्च पञ्चार्णः स्वाहान्तः सप्तवर्णकः।।४।।

काली बीज क्रीँ तथा लज्जा बीज ह्रीँ एवं क्रोध बीज ह्रूँ यह तीन वर्णो वाला क्रीँ ह्रीँ ह्रूँ कालिका का मनु कहलाता है। इसी मनु के अन्त में हुं फट् जोड़ देने पर पाँच अक्षरों वाला क्रीँ ह्रीँ ह्रूँ हुं फट् ब्रह्मसंज्ञक मन्त्र (विद्या) कहलाता है, तथा इसी के अन्त में स्वाहा लगा देने पर सात अक्षरों क्रीँ ह्रीँ ह्रूँ हुं फट् स्वाहा वाला मन्त्र (विद्या) बन जाता है।।४।।

कूर्चद्वयं त्रयं काल्या मायायुग्मं च दक्षिणे।
कालिके पूर्वबीजानि स्वाहामन्त्रो वशीकृतः।।५।।

दो कूर्च बीज अर्थात् ह्रूँ ह्रूँ तीन काली बीज अर्थात् क्रीँ क्रीँ क्रीँ दो माया बीज ह्रीँ ह्रीँ के बाद दक्षिणे कालिके पद योजन करके पूर्व बीजों से युक्त करने के बाद स्वाहा लगाने से समस्त लोकों में सबको वश में करने वाला ह्रूँ ह्रूँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ ह्रीँ ह्रीँ दक्षिणे कालिके ह्रूँ ह्रूँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ ह्रीँ ह्रीँ स्वाहा मन्त्र (विद्या) होता है।।५।।

विशेष—यही महामन्त्र सृष्टि स्थिति लय भेद से तीन प्रकार का होता है यथा बीजों को सृष्टि क्रम से स्थापित करने पर क्रीँ क्रीँ क्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रूँ स्थिति ह्रीँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रूँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ तथा लय क्रम में ह्रूँ ह्रूँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ ह्रीँ ह्रीँ यह आरोहक्रम सृष्टिस्थितिलय क्रम हुआ, इसी को अवरोह(विपरीत क्रम) से स्थापित करने पर ह्रूँ ह्रूँ ह्रीँ ह्रीँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ सृष्टिक्रम ह्रीँ ह्रीँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ ह्रूँ ह्रूँ स्थितिक्रम तथा क्रीँ क्रीँ क्रीँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रीँ ह्रीँ लयक्रम होता है। इसी बाइस अक्षर के महामन्त्र को शिरः पल्लव संयुक्त करने पर जप योग्य हो जाता है।

मन्त्रराजः पुनः प्रोक्तः बीजसप्तकमुत्सृजेत्।
तिथिवर्णो महामन्त्र उपास्थि पूर्ववन्मता।।६।।

अब पुनः मन्त्रराज को कहते हैं सर्व प्रथम सात बीजों से युक्त करने पर पन्द्रह वर्णों का महामन्त्र ह्रूँ ह्रूँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ ह्रीँ ह्रीँ दक्षिणे कालिके स्वाहा उपास्थि संज्ञक है।।६।।

न चाऽत्र सिद्धि साध्यादि शोधनं मनसाऽपि वा।
न यत्नातिशयः कश्चित् पुरश्चर्यानिमित्तकः।।७।।

इस महामन्त्रों के लिए सिद्धिसाध्यादि शोधन की आवश्यकता नहीं होती, इस महामन्त्र के लिए सिद्ध, साध्य, सुसाध्य और अरि आदि शोधन को मन से भी नहीं सोचना चाहिये, यदि भाग्य वश कहीं से किसी तरह प्राप्त हो जाये तो यत्नपूर्वक पुरश्चरण करना चाहिये।।७।।

विद्याराज्ञी स्मृतेरेव सिद्ध्यष्टकमवाप्नुयात्।
भैरवाऽस्य ऋषिश्छन्दः उष्णिक्काली तु देवता।।८।।

इस विद्याराज्ञी के स्मरण मात्र से आठों प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती है। इस महाविद्या के भैरव ऋषि हैं, उष्णिक् छन्द हैं, तथा महाकालिका देवता हैं।।८।।

बीजं माया दीर्घवर्म शक्तिरुक्ता मनीषिभिः।
षड्दीर्घाढ्याद्यबीजेन विद्यायाऽङ्गमीरितम्।।९।।

इस महाविद्या के मूल बीज ही क्रीँ बीज, माया ह्रीँ बीज ही शक्ति, तथा वर्म हूँ बीज कीलक मन्त्र शास्त्र के ज्ञाताओं ने बताया है, महाविद्या के मूल बीज को ही दीर्घादि स्वर युक्त कर क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः से हृदयाद्यङ्ग न्यास करना चाहिये।।९।।

मातृकान् पञ्चधा भुक्त्वा वर्णान्दशदशक्रमात्।
हृदयभुजयोः पादद्वये मन्त्रो प्रविन्यसेत्।।१०।।

मातृका वर्णों को पाँच विभाग करके मन्त्र के वर्णों से संयुक्त कर दश दश बार से हृदय, भुजा, दोनों पैरों में व्यापक न्यास करना चाहिये।।१०।।

व्यापकं मनुना कृत्वा ध्यायेच्चेतसि कालिकाम्।

इस प्रकार से महामन्त्र का व्यापकन्यास करके साधक अपने चित्त में महाकालिका का ध्यान करे।

ॐ सद्यः छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीम्,
घोरांस्या शिरसास्रता सुरुचिरामुन्मत्तकेशावलीम्।
सृक्काऽसृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालंकृतीम्,
श्यामाङ्गींकृतमेखलां शवकरे देवि भजेत्कालिकाम्।।

पूर्णरूप से तुरन्त का कटा हुआ शिर, कृपाण, अभय और वर को हाथों में धारण की हुई, घोर मुखोंवाली, शिर से लटकते हुए चारों तरफ फैले हुए सुन्दर सुन्दर केशोवली को धारण करनेवाली, मुख के दोनों किनारों से रक्त प्रवाहित होता हुआ, श्मशान में वास करनेवाली, कानों में शव का अलङ्कार धारण की हुई, श्यामल अङ्गोंवाली, शव के हाथों से बनाई हुई मेखला को धारण की हुई कालिका का ध्यान तथा भजन करता हूँ।

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं जुहुयात्तद्दशांशतः।
प्रसूनैः करवीरोत्थैः पूजायन्त्रमथोच्यते।।११।।

इस प्रकार से देवी का ध्यान करके मन्त्र वर्ण की संख्या को एक लाख गुणित कर

जप करके उसका दशांश करवीर(कनईल) पुष्प से हवन करना चाहिये, तथा अब पूजा का यन्त्र वर्णन करता हूँ॥११॥

आदौ षट्कोणमारच्य त्रिकोणं पञ्चकं ततः।
पद्माष्टकदलं वाह्ये भूपुरं तत्र पूजयेत्॥१२॥

सबसे पहले षट्कोण की रचना करे फिर पाँच त्रिकोणों की रचना करे तदुपरान्त अन्दर बाहर से अष्टदल पद्म तथा बाहर भूपुर की रचना करके पूजन करे॥१२॥

जयाख्या विजया पश्चादजिता चापराजिता।
नित्याविलासिनी चाऽपि दोग्ध्रा घोरा च मङ्गला॥१३॥

यन्त्र में जया, विजया, अजिता, अपराजिता, नित्या, विलासिनी, दोग्घ्रा, घोरा और मङ्गला का पूजन करना चाहिये॥१३॥

पीठशक्तयः एताः स्युः कालिकायोगपीठतः।
आत्मनो हृदयान्तोऽयं मायादि पीठमन्त्रकः॥१४॥

ये सभी कालिका योग पीठ की पीठ शक्तियाँ हैं जिनका अपने हृदय में मायादि पीठ मन्त्रों से पूजन करना चाहिये॥१४॥

अस्मिन्पीठे यजेद्देवीं शवरूपशिवस्थिताम्।
महाकालरतासक्तां शिवाभिर्दिक्षु वेष्टिताम्॥१५॥

इसी पीठ पर शवरूपी शिव पर देवी का पूजन करना चाहिये, समस्त दिशाओं तथा सभी ओर से शिवाओं के द्वारा घिरी हुई महाकाल के साथ रति में आसक्त देवी का पूजन करना चाहिये॥१५॥

अङ्गानि पूर्वमाराध्य षट्पत्रेषु समर्चयेत्।
कालीकपालिनीकुल्लाकुरुकुल्लाविरोधिनीम् ॥१६॥

महादेवी कालिका के अङ्गभूत अपनी अपनी शक्तियों के सहित ब्रह्माविष्णुशिवादि देवताओं का पूजन करना चाहिये, पश्चात् कालीकपालिनीकुल्लाकुरुकुल्लाविरोधिनी आदि का पूजन करना चाहिये॥१६॥

विप्रचित्तां तु सम्पूज्य नवकोणेषु पूजयेत्।
उग्रामुग्रप्रभां दीप्तां नीलां घनां बलाकिकाम्॥१७॥

विप्रचित्ता, उग्रा, उग्रप्रभा, दीप्ता, नीला, घना, तथा बलाका आदि शक्तियों का पूजन करना चाहिये॥१७॥

मात्रामुद्रा तथा मित्रा पूज्या कोणेषु मातरः।
पद्मस्याष्टसु नेत्रेषु ब्राह्मी नारायणी तथा॥१८॥

मात्रा, मुद्रा तथा मित्रा आदि मातृ शक्तियों का पूजन करने के बाद तीन अष्ट पत्रों के कोणों पर ब्राह्मी, नारायणी आदि का पूजन करना चाहिये॥१८॥

माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चाऽपराजिता।
वाराही नारसिंही च पुनरेताश्च भूपुरे॥१९॥

माहेश्वरी, चामुण्डा, अपराजिता, वाराही और नारसिंही आदि शक्तियों के पूजन के बाद भूपुर में पूजन करना चाहिये॥१९॥

भैरवीं महदाद्यन्तां सिंहाद्यां धूम्रपूर्विकाम्।
भीमोन्मत्तादिकां चाऽपि वशीकरणभैरवीम्॥२०॥

भैरवी, महाभैरवी, सिंहभैरवी, धूम्रभैरवी, भीमभैरवी, उन्मत्तभैरवी और वशीकरणभैरवी का पूजन करना चाहिये॥२०॥

मोहनाद्यां समाराध्य शक्रादिन्यायुधान्यपि।
एवमाराधिता काली सिद्धा भवति मन्त्रिणाम्॥२१॥

मोहनादि भैरवियों के पूजन के बाद भूपुर में शक्रादि दश दिग्पालों को अपने शक्तियों तथा आयुधो के साथ पूजन करना चाहिये, इस प्रकार से आराधना करने से काली का मन्त्र सिद्ध हो जाता है॥२१॥

ततः प्रयोगान्कुर्वीत महाभैरवभाषितान्।
आत्मनोऽर्थं परस्यार्थं क्षिप्रसिद्धिप्रदायकान्॥२२॥

काली का मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद साधक महाभैरव के द्वारा बताये गये प्रयोगों को अपने तथा अपने हितैषियों के लिये करे तो तुरन्त ही सिद्धि मिलती है॥२२॥

स्त्रीणां प्रहारं निन्दाञ्च कौटिल्यञ्चाऽप्रियं वचः।
आत्मनाहितमन्विच्छन्कालीभक्तो विवर्जयेत्॥२३॥

स्त्रियों पर प्रहार, उनकी निन्दा, उनके साथ कुटिलता, उनके साथ अप्रिय वचन अपना हित चाहने वाले साधकों को कभी नहीं करना चाहिये॥२३॥

सुदृशो मदनावासं तस्या यः प्रजपेन्मनुम्।
अयुतं सोऽचिरादेव वाक्पतेः समतामियात्॥२४॥

शयन कक्ष(मूलाधार) में काली के मनु का जो एक अयुत जप करता है वह साधक वाक्पति बृहस्पति के बराबरी का हो जाता है॥२४॥

दिगम्बरो मुक्तकेशः श्मशानस्थो जितेन्द्रियः।
जपेदयुतमेतस्य भवेयुः सर्वकामनाः॥२५॥

दिगम्बर होकर, मुक्त केश, श्मशान में, जितेन्द्रिय हो कर जो साधक इस मन्त्र का एक अयुत जप करता है उसकी समस्त कामना सिद्ध हो जाती है॥२५॥

शवहृदयमारुह्य निर्वासाः प्रेतभूतगः।
अर्कपुष्पसहस्रेणाभ्यक्तेन स्वीयरेतसा॥२६॥

निर्वस्त्र होकर, प्रेत भूमि में, शव के हृदय पर आरूढ़ होकर, एक हजार अर्क पुष्प से अभ्यक्त करके अपने रेत से युक्त करके जो साधक पूजन करता है।।२६।।

देवीं यः पूजयेद्भक्त्या जपन्नेकैकशो मनुम्।
सोचिरेणैव कालेन धरणी प्रभुतां व्रजेत्।।२७।।

देवी को जो साधक भक्ति से युक्त होकर पूजन करके एक एक मनु का जप करता है वह चिरकाल तक इस भूमि में अधिकार पूर्वक वास करता है।।२७।।

रजःकीर्णं भगं नार्या ध्यायन्योऽयुतमाजपेत्।
स कवित्वेन रम्येण जनान् मोहयति ध्रुवम्।।२८।।

रज से आकीर्ण नारी के भग का ध्यान करता हुआ जो साधक मन्त्र का एक अयुत जप करता है वह कवित्व प्राप्त करके लोगों को निश्चय ही मोह लेता है।।२८।।

त्रिपञ्चारे महापीठे शवस्य हृदि संस्थिताम्।
महाकालेन देवेन नारयुद्धं प्रकुर्वीतम्।।२९।।

त्रिपञ्चारवाले महापीठ पर शव के हृदय में संस्थित होकर महाकाल के साथ नार युद्ध करती हुई देवी का जो साधक ध्यान करता है।।२९।।

तां ध्यायन् स्मेरवदनां विदधत्सुरतं स्वयम्।
जपेत् सहस्रमपि यः स शङ्करसमो भवेत्।।३०।।

उन स्मेर वदन देवी का ध्यान करते हुए स्वयं सुरत होकर जो साधक मन्त्र का सहस्र जप करता है वह साधक शङ्कर के समान हो जाता है।।३०।।

अस्थिलोमत्वचायुक्तं मांसं मार्जारमेषयोः।
उष्ट्रस्य महिषस्यापि बलिं यस्तु समर्पयेत्।।३१।।

मार्जार, मेष, ऊँट, महिष का अस्थिलोमत्वचायुक्त मांस का जो साधक देवी को बलि प्रदान करता है।।३१।।

भूताष्टभ्यो मध्यरात्रे वश्याः स्युः सर्वजन्तवः।
विद्या लक्ष्मी यशः पुत्रै सुचिरं सुखमेधते।।३२।।

बलि प्रदान कर्त्ता साधक आठों याम तथा मध्यरात्रि में सभी जन्तु उसके वश में हो जाते हैं तथा विद्या, लक्ष्मी, यश, पुत्रपौत्रों के साथ सुख पूर्वक रहता है।।३२।।

यो हविष्याशी नरो दिवा देवीं स्मरन्जपेत्।
नक्तं निधुवनासक्तो लक्षं स स्याद्धरापतिः।।३३।।

जो साधक मनुष्य हविष्यान्न भक्षण करके दिन में देवी का ध्यान करते हुए लक्ष जप करता है वह धरापति(राजा) हो जाता है।।३३।।

रक्ताम्भोजैर्भवेन् मन्त्री धनैर्जयति वित्तपम्।
बिल्वपत्रैर्भवेद्राज्यं रक्तपुष्पैर्वशीकृतिः।।३४।।

रक्त कमल से यजन करने पर मन्त्री होता है, धन से यजन करने पर वित्त बढ़ता है, विल्वपत्र से यजन करने पर राज्य की प्राप्ति होती है, रक्त पुष्प से अभ्यर्चन करने पर वशीकरण होता है।।३४।।

असृजा महिषादीनां कालिकां यस्तु तर्पयेत्।
तस्या स्युरचिरादेव करस्था: सर्वसिद्धय:।।३५।।

महिषादि की बलि प्रदान करने के बाद उनके रक्त से जो साधक कालिका का तर्पण करता है सभी सिद्धियाँ उसके हाथों में रहती हैं।।३५।।

यो लक्षं प्रजपेन्मन्त्रं शवमारुह्य मन्त्रवित्।
तस्य सिद्धो मनु: सद्य: सर्वेप्सितफलप्रद:।।३६।।

जो साधक शव पर आरूढ़ होकर देवी का ध्यान करते हुए जप करता है उसका मन्त्र सिद्ध होकर समस्त कामनाओं की पूर्ति करता है।।३६।।

तेनाऽश्वमेधप्रमुखैर्यारिष्ट्वा सुजन्मना।
दत्तं दानं तपस्तप्तं पूजयेद्यस्तु कालिकाम्।।३७।।

साधक के द्वारा कालिका के लिए दिया गया दान, तप, पूजन सभी अश्वमेधादि प्रमुख यज्ञों के समान फल प्रदान करते हैं।।३७।।

ब्रह्मा विष्णु शिवो गौरी लक्ष्मीर्गणपति रवि:।
पूजिता: सकला देवा य: कालीं पूजयेत्सदा।।३८।।

साधक को केवल काली के पूजन करने से ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गौरी, लक्ष्मी, गणेश, सूर्य समस्त देवता पूजित हो जाते हैं और काली के साधक पर सदैव प्रसन्न रहते हैं।।३८।।

श्रीकालिकापटलाख्यं मन्त्राद्युद्धारकं परिपूर्णम्

❀

अथ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरामहामन्त्रम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरास्तोत्रमहामन्त्रस्य महाकालभैरवऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः श्रीमहाब्रह्मस्वरूपिणीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता हूंबीजं ह्रींशक्तिः क्लींकीलकं मम सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालभैरवऋषये नमः शिरसि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमहाब्रह्मस्वरूपिणीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूंबीजाय नमः गुह्ये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रींशक्तये नमः पादयोः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लींकीलकाय नमः नाभौ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमहाब्रह्मस्वरूपिणीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हृदयाय नमः।

ॐ हूं शिरसे स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं शिखायै वषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं कवचाय हुम्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥

ध्यान करने के बाद स्तोत्र का पाठ करे—

महेश्वर उवाच

श्रृणुदेवि! महाविद्यां सर्वसिद्धि प्रदायकम्।
यस्यविज्ञानमात्रेण शत्रुवर्गा लयं गताः॥१॥
विपरीत महाकाली सर्वभूत भयंकरी।
यस्याः प्रसादमात्रेण कम्पते च जगत्रयम्॥२॥
न च शान्तिप्रदः कोऽपि परमेशो नचैवहि।
देवताः प्रलयं यान्ति किं पुनर्मानवादयः॥३॥
पठनाद्धारणाद्देवि! सृष्टि संहारको भवेत्।
अभिचारादिकाः सर्वा या या साध्यतमाः क्रियाः॥४॥
स्मरणेन महाकाल्या नाशंजग्मुः सुरेश्वरि।
सिद्धविद्या महाकाली यत्रेवेह च मोदते॥५॥
सप्तलक्ष महाविद्या गोपिता परमेश्वरि।
महाकाली महादेवि! शङ्कर श्रेष्ठदेवता॥६॥
यस्या प्रसाद मात्रेण परब्रह्म महेश्वरः।
कृतिमादिविषघ्नीषा प्रलयादि निवर्तिका॥७॥
त्वदङ्घ्रि दर्शनादेव कम्पमानो महेश्वरः।
यस्यनिग्रह मात्रेण पृथिवी प्रलयं गता॥८॥
दशविद्या यदाज्ञाता दशद्वार समाश्रिता।
प्राचीद्वारे भुवनेशी दक्षिणेकालिका तथा॥९॥
नाक्षत्री पश्चिमे च उत्तरे भैरवी तथा।
ऐशान्यां सततं देवि! प्रचण्डचण्डिका तथा॥१०॥
आग्नेयां बगला देवी रक्षः कोणे मातङ्गिनी।
धूमावती च वायव्ये अधश्चोर्ध्वे च सुन्दरी॥११॥
सम्मुखे षोडशी देवी जाग्रत्स्वप्नस्वरूपिणी।
वामभागे च देवेशी महात्रिपुरसुन्दरी॥१२॥

अंशरूपेण देवेशी सर्वादिव्याः प्रतिष्ठिताः।
महाप्रत्यङ्गिरा चैव प्रत्यङ्गिरा तथोदिता॥१३॥
महाविष्णु यदाज्ञाता भुवनानां महेश्वरि।
कर्तापाता च संहर्ता सत्यं सत्यं वदामिते।१४॥
भुक्तिमुक्तिप्रदादेवि महाकाली सुनिश्चितम्।
वेदाशास्त्रप्रगुप्ता सा नन्दस्यच दैवतैरपि॥१५॥
अनन्तकोटिसूर्याभा सर्वजन्तु भयङ्करी।
ध्यानज्ञानविहिना सा वेदान्तामृत वर्षिणी॥१६॥
सर्वमन्त्रमयी काली निगमाऽगम कारिणी।
निगमाऽगमकारी सा महाप्रलयकारिणी॥१७॥
यस्याङ्घधर्मलवा च सा गङ्गापरमोदिता।
महाकाली नगेऽनुस्था विपरीता महोदया॥१८।
विपरीता प्रत्यङ्गिरा तत्र काली प्रतिष्ठिता।
साधकस्मरणमात्रेण शत्रूणां निगमाऽगमाः॥१९॥
नाशं जग्मुः नशीं जग्मुः सत्यं सत्यवदामि ते।
परब्रह्ममहादेवी पूजनैरीश्वरी भवेत्॥२०॥
शिवकोटि समोयोगी विष्णुकोटिसमः स्थिरः।
सर्वैराराधितासावै भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी॥२१॥
गुरु मन्त्रं शतं जप्त्वा श्वेत सर्षपमानयेत्।
आत्मरक्षा शत्रुनाशं सा करोति तक्षणात्॥२२॥
ऋषिः न्यासादिकं कृत्वा सर्षसपैर्मारणं चरेत्।
सन्तपिनी संहारिणी रौद्री च भ्रामिणि तथा॥२३॥
जृम्भिणी द्राविणी चैव क्षोभिणी मोहिनी ततः।
स्तम्भिनी चांऽश रूपस्ताः शत्रुपक्षे नियोजिता॥२४॥
प्रेरिताः साधकेद्रेण दुष्टशत्रुप्रमर्दिकाः।
वृणोति य इमां विद्यां शृणोति च सदाऽर्पिताम्॥२५॥
यावत्कृत्यादि शत्रूणां तत्क्षणादेवनश्यति।
मारणं शत्रूवर्गाणां रक्षणाय चात्मपरम्॥२६॥
आयुर्वृर्द्धिशो वृद्धिस्तेजो वृद्धिस्तथेव च।
कुबेर इव वित्ताढ्यः सर्वसौख्यमवाप्नुयात्॥२७॥
वाय्यवादिनामुपसमनं विषमज्वरनाशनम्।
परवित्तहरा सा वै परप्राणहरा तथा॥२८॥

पर क्षोभादिककरा तथा सम्पत्करा शुभा।
स्मृति मात्रेण देवेशि! शत्रुवर्गाः लयं गताः॥२९॥
इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यं दुर्लभा दैवतैरपि।
शठाय परशिष्याय न प्रकाश्या कदाचन॥३०॥
पुत्राय भक्तियुक्ताय स्वशिष्याय तपस्विने।
प्रदातव्या महाविद्या चतुर्वर्गप्रदा यतः॥३१॥
विनाध्यानैर्विनाजापैर्विनापूजा विधानतः।
विनाषोढा विनाज्ञानैर्मोक्षसिद्धिः प्रजायते॥३२॥
पर नारि हरा विद्या पर रूप हरा तथा।
वायुश्चद्रः स्तम्भकरा मैथुनानन्दसंयुता॥३३॥
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेत्भक्तितः सदा।
मम कोटिसमो देवेशि! मम कोटिसमो भवेत्॥३४॥
क्रोधादेव गणाः सर्वेलयं यास्यन्ति निश्चितम्।
किं पुनर्मानवा देवि! भूतप्रेतादयो मृता॥३५॥
विपरीता समाविद्या न भूता न भविष्यति।
पठनान्ते परब्रह्म विद्या स भास्करा तथा॥३६॥
मातृका पुटितं देवि! दशधा प्रजपेत्सुधीः।
वेदादि पुदिता देवि! मातृकानन्तरूपिणी॥३७॥
तथा हि पुटितां विद्यां प्रजपेत्साधकोत्तमः।
मनोजित्वा जपेल्लोकं भोगं रोगं तथा यजेत्॥३८॥
दीनतां हीनतां जित्वा कामिनीं निर्वाण पद्धतिम्।

प्रयोगार्थमन्त्रम्

ॐ हूं स्फारय स्फारय मारय मारय शत्रुवर्गान्नाशयन्नाशय स्वाहा॥

मूलमन्त्रम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा॥

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरास्तोत्रमहामन्त्रस्य महाकालभैरव-ऋषिः स्त्रिष्टुप्छन्दः श्रीमहाब्रह्मस्वरूपिणीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता हूंबीजं ह्रींशक्तिः क्लींकीलकं मम सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालभैरवऋषये नमः शिरसि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमहाब्रह्मस्वरूपिणीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदये।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूंबीजाय नमः गुह्ये।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रींशक्तये नमः पादयोः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लींकीलकाय नमः नाभौ।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमहाब्रह्मस्वरूपिणीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ हूं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हृदयाय नमः।
ॐ हूं शिरसे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं शिखायै वषट्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं कवचाय हुम्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥

सहस्राक्षरामहामन्त्रम्

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमो विपरीत महाप्रत्यङ्गिरायै सहस्रानेककार्य लोचनायै कोटिविद्युज्जिह्वायै महाव्यापिन्यै संहाररूपायै जन्म शान्ति सफल कारिण्यै ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रादि परिवारास्य भाविभूतभवच्छत्रुन्दारापत्यान् संहारय संहारय महाप्रभावं दर्शय दर्शय हिलि हिलि किलि किलि मिलि मिलि चिलि चिलि भूरि

भूरि विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ध्वंसय ध्वंसय प्रध्वंसय प्रध्वंसय ग्रासय ग्रासय पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय वित्रासय वित्रासय मारय मारय विमारय विमारय भ्रामय भ्रामय विभ्रामय विभ्रामय द्रावय द्रावय विद्रावय विद्रावय हूँ हूँ फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे हूँ लँ ह्रीँ लँ क्लीँ लँ ॐ लँ फट् फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवाराय यावच्छत्रून्देवता पितृ-पिशाच-नाग-गरुण-किन्नर-नरलोक-पातालान् समन्त्रान् सौषधान् सायुधान् ससहायान्पाणौ छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि निकृन्तय निकृन्तय छेदय छेदय उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय तेषां साहंकारादि धर्मान् कीलय कीलय घातय घातय नाशय नाशय विपरीत प्रत्यङ्गिरे स्फ्रैँ स्फैँत्कारिणी ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्र परिवारकस्य शत्रूणां सर्व विद्याः कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय मुखं कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय नेत्राणि कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय दन्तान्कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय जिह्वां कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय पादौ कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय गुह्यं कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय सकुटुम्बानां कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्नानं कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय सं प्राणान्कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! सपत्नी ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वतो रक्षां कुरु कुरु फट् फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! ममात्मनः सपत्नी पुत्रपौत्र सपरिवारस्य भूतभविष्यवर्तमान शत्रूणामुच्चाटनमुच्चाटनं कुरु कुरु फट् फट् स्वाहा। ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ वँ वँ वँ वँ वँ वँ वँ लँ लँ लँ लँ लँ लँ लँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ यँ यँ यँ यँ यँ यँ यँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमो भगवति विपरीत-महाप्रत्यङ्गिरे! दुष्ट चाण्डालिनी त्रिशूलवज्रांकुश शक्ति शूल धनुः शरपाश धारिणी शत्रु रुधिर चर्म मेदो मांसाऽस्थि मज्जा शुक्र मेहन वसा वाक् प्राण मस्तक हेत्वादि

भक्षिणी परब्रह्मशिवे ज्वालादायिनी मालिनी शत्रूच्चाटन मारण क्षोभण स्तम्भन मोहन द्रावण जृम्भण भ्रामण रौद्रण सन्तापन यन्त्रमन्त्रतन्त्रार्याग पुरश्चरण भूतशुद्धि पूजाफल परमनिर्वाण हारण कारिणी कपाल खट्वाङ्ग परशुधारिणी मामत्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य भूत भविष्य वर्तमान शत्रून् ससहायान् सवाहनान् हन हन रण रण दह दह दम दम धम धम पच पच मथ मथ लङ्घय लङ्घय खादय खादय चर्वय चर्वय व्यथय व्यथय ज्वारय ज्वारय मूकं कुरु कुरु ज्ञानं हर हर हूँ हूँ फट् फट् स्वहा। हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! फट् फट् स्वाहा। ममात्मनः सपत्नीपुत्र-पौत्रपरिवारस्य शत्रूणां कृत मन्त्रयन्त्रतन्त्रहवन कृतौषध विषचूर्ण शस्त्राद्यभिचार सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते करिष्यति वा तान् सर्वान् हन हन स्फारय स्फारय सर्वतो रक्षां कुरु कुरु हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा। हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्र सपरिवास्य शत्रवः अभिचाराः कुर्वन्ति करिष्यन्ति शत्रुश्च कारयामास कारयन्ति कारयिष्यन्ति याऽन्यां कृत्यान्तैः सा धर्मं तास्तां विपरीतां कुरु कुरु नाशय नाशय मारय मारय श्मशान स्थानं कृत्यादिकां क्रियां भाविभूतभवशत्रूणां शवत्कृत्यादिकां क्रियां विपरीतां कुरु कुरु तान् डाकिनी मुखे हारय हारय भीषय भीषय त्राशय त्राशय परमशमनरूपेण हन हन धर्मावच्छिन्नं निर्वाणं हर हर तेषामिष्टदेवानां शासय शासय क्षोभय क्षोभय प्राणादि मनोबुद्ध्यहंकार क्षुत्तृषाकर्षण लयन आवागमन मारणादिकं नाशय नाशय हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ फट् फट् स्वाहा।

ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्र सपरिवास्य शत्रूणां कृत समस्ताभिचारं तेषां इष्ट सहितं नाशय नाशय मारय मारय खादय खादय ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ फट् फट् स्वाहा।

अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ ङँ घँ गँ खँ कँ ञँ झँ जँ छँ चँ णँ ढँ डँ ठँ टँ नँ धँ दँ थँ तँ मँ भँ बँ फँ पँ क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य स्थाने समस्त शत्रूणां कृत्यान् विपरीतान् कुरु कुरु तेषां मन्त्रयन्त्रतन्त्रार्चन श्मशानारोहणभूमिस्थान भस्मप्रक्षेपण पुरश्चरण होमाभिषेकादिकान् कृत्यान् दूरी कुरु कुरु हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! सपत्नि ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वतः सर्वेभ्यो रक्ष रक्ष हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! फट् फट् स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! सपत्नी

ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य शत्रूणां विपरीत क्रियां नाशय नाशय त्रुटिं कुरु कुरु तेषामिष्टदेवतादि विनाशं कुरु कुरु तेषां सिद्धिमपनयोपनय विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! शत्रुमर्दिनी भयङ्करी शत्रूणां नानाकृत्या मर्दिनि ज्वालिनी महाघोरतरे त्रिभूवन भयङ्करी सपत्नी ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य चक्षुः श्रोत्राणि पादौ सर्वतः सर्वेभ्यः सर्वदा सर्वत्र रक्षां कुरु कुरु हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ वसुन्धरे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य स्थानं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ महालक्ष्मी ममात्मनः सपत्निपुत्रपौत्रपरिवारस्य पादौ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ चण्डिके ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य जङ्घे रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ प्रचण्ड चण्डिका ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य जानुं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ चामुण्डे ममात्मनः सपत्नि पुत्रपौत्र परिवारस्य गुह्यं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ इन्द्राणी ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य नाभीं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नारसिंही ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य बाहुं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ वाराही ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य हृदयं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ वैष्णवी ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य कण्ठं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ कौमारी ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य वक्त्रं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ माहेश्वरी ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य शिरो रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ब्रह्माणी ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य मानसं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य छिद्रं सर्व गात्राणि रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

ॐ सन्तापिनी स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् सन्तापय सन्तापय हूँ फट् स्वाहा। ॐ संहारिणी स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् संहारय संहारय हूँ फट् स्वाहा। ॐ रौद्री स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्व शत्रून् रौद्रय रौद्रय हूँ फट् स्वाहा। ॐ भ्रामिणी स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्व शत्रून् भ्रामय भ्रामय हूँ फट् स्वाहा। ॐ जृम्भिणी स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् जृम्भय जृम्भय हूँ फट् स्वाहा। ॐ द्राविणी स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्व शत्रून् द्रावय द्रावय हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्षोभिणी स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् क्षोभय क्षोभय हूँ फट् स्वाहा। ॐ मोहिनी स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः

सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् मोहय मोहय हूँ फट् स्वाहा। ॐ स्तम्भिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय हूँ फट् स्वाहा। ॐ उच्चाटिनी स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् उच्चाटयोच्चाटय हूँ फट् स्वाहा। ॐ ज्वालिनी स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् ज्वालयोज्वालय हूँ फट् स्वाहा। ॐ मर्दिनी स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् मर्दय मर्दय हूँ फट् स्वाहा। ॐ नाशिनी स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् नाशय नाशय हूँ फट् स्वाहा। ॐ शोषिणी स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् शोषय शोषय हूँ फट् स्वाहा। ॐ कीलनी स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा। ॐ भक्षिणी स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् भक्षय भक्षय हूँ फट् स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥१॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥२॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥३॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ पँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥४॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ

नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥५॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥६॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥७॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥८॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥९॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥१०॥

हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ ॥१॥ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ ॥२॥ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ

हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ ॥३॥ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ ॥४॥ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वेभ्यः सर्वतः सर्वदा रक्षां कुरु कुरु। मरण-भयापनय पापापनय त्रिजगतां पररूपवित्तायुर्मे देहि देहि दापय दापय साधकत्वं प्रभुत्वं च सततं देहि देहि विश्व रूपे धनं पुत्रान्देहि देहि मां परिवारस्य पश्येत् मां देहिनः सर्वे हिंसकाः प्रलयं यान्तु सपरिवारस्य मम शत्रूणां बल बुद्धि हानिं कुरु कुरु तान् स सहायकान् तेषामिष्ट देवतान् संहारय संहारय तस्य उपचारं अपनयो अपनयो ब्रह्मास्त्रादिनि व्यर्थी कुरु कुरु ॐ हूँ हूँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ठः ठः फट् फट् स्वाहा।

मालामहामन्त्रं परिपूर्णम्

⁂

कालीशतनामस्तवनम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीकालीशतनामस्तवस्य श्रीमहाकालऋषिः** गायत्रीछन्दः **श्रीकालीदेवता हूंबीजं ह्रींशक्तिः क्लींकीलकं श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवताकृपाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालऋषये नमः शिरसि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीकालीदेवतायै नमः हृदये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूंबीजाय नमः गुह्ये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रींशक्तये नमः पादयोः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लींकीलकाय नमः नाभौ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीकालीदेवता नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ हृदयाय नमः।

ॐ हूं शिरसे स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं शिखायै वषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं कवचाय हुम्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—हाथों में पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥१॥
ॐ सद्यः छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं विभ्रतीम्,
घोरास्या शिरसास्रता सुरुचिरामुन्मत्तकेशावलीम्।
सृक्काऽसृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालंकृतीम्,
श्यामाङ्गींकृतमेखलां शवकरे देवि भजेत्कालिकाम्॥२॥

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां लोलजिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाभ्॥३॥
नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसङ्घविदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं अभयं वरदं तथा॥४॥
निर्भयां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम्।
साट्टहासाननां देवीं सर्वदां च दिगम्बरीम्॥५॥
शवासनस्थितां कालीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
एवं ध्यात्वा महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥६॥

शतनामस्तोत्रम्

काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी।
कालरात्रिः कालिका च कालभैरवपूजिता॥१॥
कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीयस्वभाविनी।
कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्मप्रकाशिनी॥२॥
कस्तूरीरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी।
ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका॥३॥
कुलकान्ता करालास्या कामार्ता च कलावती।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिका॥४॥
कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता।
कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जरेश्वरगामिनी॥५॥
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी।
कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता॥६॥
काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशाङ्गी कला तथा।
क्रींरूपा कुगम्या च कमला कृष्णपूजिता॥७॥

कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीवनी॥८॥
कुलस्त्रीकीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका।
कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्द्धिनी॥९॥
कुन्ती च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी॥१०॥
कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता।
कुमारीरर्चनरता कुमारीव्रतधारिणी॥११॥
कङ्काली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा।
कपालखट्वाङ्गधरा कालभैरवरूपिणी॥१२॥
कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलासवासिनी।
कात्यायनी कार्यकारी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी॥१३॥
कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी।
कठिनी काकिनी क्रीडा कुत्सिता कलहप्रिया॥१४॥
कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी।
कुम्भस्तनी कटाक्षा काव्या कोकनदप्रिया॥१५॥
कान्तारवासिनी कान्तिः कठिना कृष्णवल्लभा।
अथ ते कथितं देवि! गुह्याद्गुह्यतरं परम्॥१६॥

फलश्रुतिः

प्रपठेद्य इदं नित्यं कालीनामशताष्टकम्।
त्रिषु लोकेषु देवेशि! तस्याऽसाध्यं न विद्यते॥१७॥

जो इस अष्टोत्तरशतनामावली का नित्य पाठ करता है, उसके लिये तीनों लोकों में कोई कार्य असाध्य नहीं रहता है॥१७॥

प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि।
यः पठेत्परया भक्त्या कालीनामशताष्टकम्॥१८॥

प्रातः, मध्याह्न, सायं और रात्रि में जो परम भक्तिपूर्वक पाठ करता है॥१८॥

कालिका तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा।
शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः॥१९॥

उसके शरीर में कालिका स्वयं अपना निवास बनाती है। शून्यघर में, श्मशान में, पर्वत के तट पर, जल के मध्य में॥१९॥

वह्निमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये।
शताष्टकं जपेन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम्॥२०॥

अग्नि के मध्य में, संग्राम में तथा प्राण संकट में पड़ने पर इस शताष्टक का जो जप करता है तो उसके संकटों का क्षेम शमन हो जाता है।।२०।।

कालीं संस्थाप्य विधिवत्स्तुत्वा नामशताष्टकैः।
साधकः सिद्धिमाप्नोति कालिकाया प्रसादतः॥२१॥

विधिवत् काली की स्थापना करके पूजा कर अष्टोत्तरशत नाम का पाठ करने से साधक कालिका के प्रसाद से सिद्धि प्राप्त करता है। इसमें कोई भी संशय नहीं है।।२१।।

अष्टोत्तरशतनाममालाजपं परिपूर्णम्

❀

विपरीतप्रत्यङ्गिरासहस्रनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि साम्प्रतं त्वत्पुरःसरम्।
सहस्रनामपरमं प्रत्यङ्गिरायाः सिद्धये॥१॥

हे देवि! तुम्हारे सामने सर्वसिद्धि प्रदाता प्रत्यङ्गिरा का परमगुह्य सहस्रनाम कहते हैं॥१॥

सहस्रनामपाठेन सर्वत्र विजयी भवेत्।
पराभवो न चास्यास्ति सभायां व्यसने रणे॥२॥

जो इस सहस्रनाममहास्तोत्र का पाठ करता है, वह सर्वत्र विजयी होता है तथा उसका सभा में पराभव कभी नहीं होता है॥२॥

तथा तुष्टा भवेद्देवि! प्रत्यङ्गिरायाः पाठतः।
यथा भवति देवेशि साधकः शिव एव हि॥३॥

प्रत्यङ्गिरा सहस्रनाम के पाठ से श्रीप्रत्यङ्गिरा देवी सदा ही तुष्ट रहती हैं, साधक पर देवेशि के प्रसन्न होने से शिव भी सदैव प्रसन्न रहते हैं॥३॥

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः।
सकृत्पाठेन जायन्ते प्रसन्ना यत्परा भवेत्॥४॥

सहस्रों अश्वमेधयज्ञ, करोड़ों वाजपेय यज्ञ का फल इस देवि प्रत्यङ्गिरा के सहस्रनाम का पाठ करनेवाले को प्राप्त हो जाता है॥४॥

भैरवोऽस्य ऋषिश्छन्दोऽनुष्टुप्देवी समीरिता।
प्रत्यङ्गिराविनियोगः स्यात्सर्वसम्पत्तिहेतवे॥५॥

इस सहस्रनाम के भैरव ऋषि हैं, अनुष्टुप्छन्द है, प्रत्यङ्गिरा देवता हैं, सभी सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए विनियोग करना चाहिए॥५॥

सर्वकार्येषु संसिद्धिः सर्वसम्पत्तिदा भवेत्।
एवं ध्यात्वा पठेद्देवीं यदीच्छेदात्मनो हितम्॥६॥

सभी कार्यों की सिद्धि के लिए, सभी प्रकार की सम्पत्ति के लिए प्रत्यङ्गिरा देवि का ध्यानार्चन करने के बाद सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए॥६॥

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरासहस्रनामस्तोत्रस्य भैरवऋषिः,**

अनुष्टुप्छन्दः, श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता, ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, श्रीँ कीलकं श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीतये पुरश्चरण सिद्धये च पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वामदेवऋषये नमः शिरसि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीँ कीलकाय नमः नाभौ।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीष्टदेवताप्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ हूं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीहतमहाप्रत्यङ्गिरायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हृदयाय नमः।
ॐ हूं शिरसे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं शिखायै वषट्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं कवचाय हुम्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—दोनों हाथों में फूल लेकर ध्यान करे—

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥

क्षकारवर्ण में समाहित, क्षकारवर्णात्मिका, सुषुम्ना के कोटर में अक्षरूप से विद्यमान, श्यामल वर्णवाली, मुक्त केशवाली, अट्टहास करनेवाली, अतृप्त, एक ग्रास में ही सम्पूर्ण जगत् को खाँ जाऊगीं इस प्रकार से उद्घोष करती हुई, हाथों में जलती हुई अग्निशिखा तथा पाश धारण की हुई, जम्बूफल के समान चमकते हुए दाँतोंवाली भद्रकाली हमारे दुःख रूपी भय का सदैव नाश करें।

ॐ देविप्रत्यङ्गिरा सेव्या शिरसा शशिशेखरा।
सममासा धर्मिणी च समस्तसुरशीमुखी॥८॥
सर्वसम्पत्तिजननी समधासिन्धुसेविनी।
शम्भुसीमन्तिनी सोमाराध्या च वसुधारसा॥९॥
रसा रसवतीं वेला वन्या च वनमालिनी।
वनजाक्षी वनचरी वनीवनविनोदिनी॥१०॥
वेगिनी वेगदावेगबलस्थानबलाधिका।
कलाकलाप्रिया कौलिकोमला कालकामिनी॥११॥
कमला कमलास्या च कमलस्था कमलावती।
कुलीना कुटिलाकान्ता कोकिलाकुलभाषिणी॥१२॥
कीरकेलिः कलाकाली कपालिन्यपिकालिका।
केशिनी च कुशावर्त्ता कौशाम्बी केशवप्रिया॥१३॥
काशीकाशापहाकाशीशं काशाकेशदायिनी।
कुण्डलीकुण्डलीस्था च कुण्डलाङ्गदमण्डिता॥१४॥
कुशापाशीकुमुदिनी कुमुदप्रीतिवर्धिनी।
कुन्दप्रियाकुन्दरुचिः कुरङ्गमदमादिनी॥१५॥
कुरङ्गनयनाकुन्दा कुरुवृन्दाभिनन्दिनी।
कुसुम्भकुसुमा किञ्चित्क्वणत्किं किणिकाकटुः॥१६॥
कठोराकरणाकण्ठा कौमुदीकम्बुकण्ठिनी।
कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कालकण्ठिका॥१७॥
किंबृहस्ताकुमारी च कुरुन्दाकुसुमप्रिया।
कुञ्जरस्थाकुञ्जरता कुम्भिकुम्भस्तनद्वया॥१८॥
कुम्भिगा करभोरुश्च कदलीदलशालिनी।
कुपिता कोठरस्था च कङ्कालीकन्दशेखरा॥१९॥
एकान्तवासिनी किचित् कम्पमानशिरोरुहा।
कादम्बरीकदम्बस्था कुङ्कुमीप्रेमधारिणी॥२०॥
कुटुम्बिनीप्रियायुक्ता क्रतुःक्रतुकरीक्रिया।
कात्यायनी कृत्तिका च कार्तिकेयप्रवर्तिनी॥२१॥

कामपत्नीकामधात्री कामेशी कामवन्दिता।
कामरूपा कामगतिः कामाक्षी काममोहिता॥२२॥
खड्गिनी खेचरी खञ्जा खञ्जरीटेक्षणा खला।
खरगाखरनासा च खरास्याखेलनप्रिया॥२३॥
खड्गिनी खेचरीखट्वा खरखट्वाङ्गधारिणी।
खलखण्डिनीति विख्याता खण्डिताखण्डवीस्थिरा॥२४॥
खण्डप्रियाखण्डखाद्या सेन्दुखण्डा च खञ्जनी।
गंगागोदावरीगौरी गोमत्यादि च गौतमी॥२५॥
गयागौगजीगगना गारुडीगरुडध्वजा।
गीतागीतप्रियागोत्रा गोत्रक्षयकरी गदा॥२६॥
गिरिभूपालदुहिता गोगागोकुलवर्धिनी।
घनस्तनी घनरुचिर्घनोरुर्घननिःस्वना॥२७॥
घूत्कारिणी घूतकरी घुघूकपरिवारिता।
घण्टानादप्रियाघण्टा घनाघोटप्रवाहिनी॥२८॥
घोररूपा च घोरा च घूनीप्रीतिर्घनाञ्जनी।
घृताची घनमुष्टिश्च घटाघण्टाघटामृता॥२९॥
घटास्या घटनाद्यैश्च घातपातनिवारिणी।
चञ्चरीका चकोरी च चामुण्डा चीरधारिणी॥३०॥
चातुरी चपला चारुश्चला चेलाचलाचला।
चतुश्चिरन्तना चाकचिक्या चामीकरच्छविः चापिनी॥३१॥
चपलाचम्पूश्चितिताः चिन्तामणिश्चिता।
चातुर्वर्ण्यमयी चञ्चच्चौरा चापा चमत्कृतिः॥३२॥
चक्रवर्तिवधूश्चक्रा चक्राङ्गा चक्रमोदनी।
चेतश्चरी चित्तवृत्तिरचेता चेतनप्रदा॥३३॥
चपिर्या चम्पकप्रीतिश्चण्डी चण्डालवासिनी।
चिरञ्जिवीत्वदाचित्ता तरुमूलनिवासिनी॥३४॥
छुरिकाछत्रमध्यस्था छिद्राछेदकरी छिदा।
छुच्छुन्दरीपलप्रातिं छुदरीभनिभस्वना॥३५॥
छालिनी छलवच्छिन्ना छिटिकाछेककृत्तथा।
छद्मिनीछान्दसी छायाछायाकृच्छ्रादिरित्यपि॥३६॥
जया च जयदा जातिजृम्भिनीजामलायुता।
जवापुष्पप्रियाजाया जाप्याजाप्यजगज्जनिः॥३७॥

जम्बूप्रियाजयस्था च जङ्गमाजङ्गमप्रिया।
जन्तुजन्तुप्रधाना च जरत्कर्णाजरद्गवा॥३८॥
जातप्रियाजीवनस्था जीमूतसदृशच्छविः।
जन्याजनहिताजाया जम्भजम्भीलशालिनी॥३९॥
जयदाजयवद्वाहा ज्वालिनीज्वरहाज्वरी।
झञ्झनीलमयी झंझा झणत्कारकराचला॥४०॥
झिण्टीशाझस्यकृत्झम्पा यमत्रासनिवारिणी।
टङ्कारस्थाटङ्कधरा टङ्काराकारणाटवी॥४१॥
ठकुराठीत्कृतिश्चैव ठिण्ठीरवसनावृता।
ठण्ठानीलमयी ठण्ठाठणत्कारकराङ्गसा॥४२॥
डाकिनीडामरा चैव डिण्डिमध्वनिनादिनी।
ढक्काप्रियस्वना ढक्का तपिनीतापिनी तथा॥४३॥
तरुणी तुन्दिला तुन्दा तामसी च तपः प्रिया।
ताम्राताम्राम्बरातालीतालीदलविभूषिणी॥४४॥
तुरङ्गा त्वरिता तोता तोतलानादिनीतुला।
तापत्रयहरा तारा तालकेशी तमालिनी॥४५॥
तमालदलवच्छाया तालस्वनवती तमी।
तामसी च तमिस्त्रा च तीव्रातीव्रपराक्रमा॥४६॥
तटस्याग्रलतैलाक्ता तारिणी तपनद्युतिः।
तिलोत्तमा तिलककृत्तारकादेशशेखरा॥४७॥
तिलपुष्पप्रियातारा तारकेशकुटुम्बिनी।
स्थाणुपत्नीस्थितिकरी स्थलस्थास्थलवर्द्धिनी॥४८॥
स्थितिस्थैर्यास्थविष्ठा च स्थावतिः स्थूलविग्रहा।
दन्तिनी दण्डिनी दीना दरिद्रा दीनवत्सला॥४९॥
देवि देववधूर्दैत्यदमिनी दन्तभूषणा।
दयावती दमवती दमदा दाडिमस्तनी॥५०॥
दन्दशूकनिभा दैत्यदारिणी देवतानना।
दोलाक्रीडादलायुश्च दम्पती देवतामयी॥५१॥
दशदीपस्थिता दोषा दोषहा दोषकारिणी।
दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गमा दुर्गवासिनी॥५२॥
दुर्गन्धनाशिनीदुःस्था दुःस्वप्नशमकारिणी।
दुर्वारादुन्दुभिध्वाना दूरगा दूरवासिनी॥५३॥

दरदादरहादात्री दयादादुहितादशा।
धुरन्धराधुरीणा च धौरेयीधनदायिनी॥५४॥
धीराऽधीराधरित्री च धर्मदा धीरमानसा।
धनुर्धरा च धमनी धूर्त्ताधूर्त्तपरिग्रहा॥५५॥
धूमवर्णाधूमपाना धूमलाधूममोदिनी।
नलिनीकन्दनीरन्दा नन्दिनीनन्दबालिका॥५६॥
नवीनानर्मदानर्मी नेमिर्नियमनिश्चया।
निर्मला निगमाचारा निम्नगा नग्निका निमिः॥५७॥
नाल निरन्तरा निघ्नी निर्लोपा निर्गुणा नतिः।
नीलग्रीवा निरीहा च निरञ्जनजनी नवी॥५८॥
नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी।
नारायणी निराकारा निपुणा निपुणप्रिया॥५९॥
निशा निद्रा नरेन्द्रस्था नमितानामितापि च।
निर्गुण्डीका च निर्गुण्डा निर्मांसा नासिकाभिधा॥६०॥
पताकिनी पताका च पलप्रीतिः यशश्विनी।
पीना पीनस्तना पत्नी पवनाशनशयिनी॥६१॥
परा पराकलापाका पाककृत्यरतिप्रिया।
पवनस्था सुपवना तापसी प्रीतिवर्द्धिनी॥६२॥
पशुवृद्धिकरी पुष्टिः पोषणी पुष्पवर्द्धिनी।
पुष्पिणी पुस्तककरा पुन्नागतलवासिनी॥६३॥
पुरन्दरप्रिया प्रीतिः पुरमार्गनिवासिनी।
पेशा पाशकरा पाशबन्धहा पांशुला पशुः॥६४॥
पटपटाशा परशुधारिणी काशिनी तथा।
पापघ्नी पतिपत्नी च पतिताऽपतिताऽपि च॥६५॥
पिशाची च पिशाचघ्नी पिशिताशनतोषिता।
पानदा पानपात्रा च पानदानकरोद्यता॥६६॥
पूषा प्रसिद्धिः पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा।
पतद्गर्भा पतद्गात्रा पौनःपुन्यपि वा पुरा॥६७॥
पङ्किला पङ्कमग्ना च पादीपापञ्जरस्थिता।
पञ्चमा पञ्चयामा च पञ्चतापञ्चमप्रिया॥६८॥
पञ्चमुद्रा पुण्डरीका पिङ्गला पिङ्गललोचना।
प्रियङ्गुमञ्जरी पिण्डी पण्डिता पाण्डुरप्रभा॥६९॥

प्रेतासना प्रियालुस्था पाण्डुघ्नी पित्तसापहा।
फलिनी फलदात्री च फलश्री फणिभूषणा॥७०॥
फूत्कारिणीस्फारा फुल्लफुल्लाम्बुजासना।
फिरङ्गहा स्फीतमतिः स्फितिः स्फितिकरस्तथा॥७१॥
वनमालया बलारातिर्बलिनी बलवर्द्धिनी।
वेणुवाद्यावनचरी वीराबीजनयी अपि॥७२॥
विद्या विद्याप्रदाऽविद्या बोधिनी वददायिनी।
बुधमाता च बुद्धा च वनमालावती वरा॥७३॥
वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा।
विनोदिनी विनोदस्था वैष्णवी विष्णुवल्लभा॥७४॥
विद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्वविश्रुता।
वितन्द्रा विह्वला वेला विरावा विरतिज्वरा॥७५॥
विविधार्ककरा वीरा बिम्बोष्ठी बिम्बवत्सला।
विन्ध्यस्था वारवन्द्या च वरीयानपरा च वित्॥७६॥
वेदान्तवेद्या बोधा च वेदस्य विजयप्रदा।
विरोधवर्धिनी वन्द्या वन्ध्याबन्धिनिवारिणी॥७७॥
भयिनी भगमाला च भवानी भयभाविनी।
भीमा भीमानना भैमी भङ्गुरा भीमदर्शना॥७८॥
भिल्ली भल्लधरा भीरु भेरुण्डिभ्यः भयापहा।
भगासर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया॥७९॥
भगासना भगामोदा भेरीडङ्काररञ्जिनी।
भीषणा भीषणारावा भगवत्यपि भूषणा॥८०॥
भारद्वाजी भोगदात्री भवघ्नीभूतिभूषणा।
भूतिदा भूमिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी॥८१॥
भ्रमरी भ्रामरी नीला भूपालमुकुटस्थिता।
मतामनोहरमना मानिनी मोहिनीमही॥८२॥
महालक्ष्मीर्मदक्षीबा मदीयामदिरालया।
मदोद्धता मन्दगस्था माधवी मधुमन्दिनी॥८३॥
मेधा मेधकरी मेध्या मध्या मध्यवयस्थिता।
मद्यपा मांसला मत्स्यमोदिनी मैथुनोद्धता॥८४॥
मुद्रा मुद्रावती माता मायामहिममन्दिरा।
महामाया महाविद्या महामारी महेश्वरी॥८५॥

महादेववधूर्मान्या मधुरा वीरमण्डला।
मेदस्विनीमेकश्री: महिषासुरमर्दिनी॥८६॥
मण्डपस्था मङ्गस्था च मदिरागमगर्विता।
मोक्षदा मुण्डमाला च माला मालाविलासिनी॥८७॥
मातङ्गिनी च मतङ्गी मतङ्गतनयाऽपि च।
मधुस्राव मधुरसा मधूककुसुमप्रिया॥८८॥
यामिनी यामिनीनाथभूषा यावकरञ्जिता।
यवाङ्कुरप्रिया मायायावनी यौवनाधिपा॥८९॥
यमघ्नी यमकन्या च यजमानस्वरूपिणी।
यज्ञा यज्वा यजुर्यज्वा यशोपिकरकारिणी॥९०॥
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञकर्मकरी तथा।
यशस्विनी यकारस्था यूपस्तम्भनिवासिनी॥९१॥
रञ्जिता राजपत्नी च रमा रेखा रवेरणी।
रजोवती रजश्चित्रा रजनीरजनीपति:॥९२॥
रागिनी राज्यनीराज्या राज्यदा राज्यवर्धिनी।
राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी॥९३॥
रमणीरमणीया च रामारामावतीरती।
रेतोवती रतोत्साहा रोगहृद्रोगकारिणी॥९४॥
रङ्गारङ्गवती रागा रागज्ञारागकृद्रणा।
रञ्जिकाऽरञ्जिकारञ्ज्ञा रञ्जिनी रक्तलोचना॥९५॥
रक्तचर्मधरा रञ्ज्ञा रक्तस्था रक्तवादिनी।
रम्भा रम्भफलप्रीती रम्भोरू राघवप्रिया॥९६॥
रङ्गवृन्द्रगणमधुर रोदसी रोदसीग्रहा।
रोधकृद्रोधहन्त्री च रोगभृद्रोगशयिनी॥९७॥
बन्दीबन्दीस्तुता बन्धबन्धूककुसुमाधरा।
वन्दितावन्दितामाता विन्दुरा वैन्दवीविधा॥९८॥
विङ्की विङ्ककपलाविङ्का विङ्कस्थाविङ्कवत्सला।
वदिर्विलग्नाविप्रा च विधिर्विधिकरीविधा॥९९॥
शङ्गिनीशङ्गवलया शङ्गमालावतीशमी।
शङ्गपात्राऽशनीशङ्गा शङ्गग्रीवाशशिप्रभा॥१००॥
शंभ्वी शरावती श्यामा श्यामाङ्गी श्यामलोचना।
श्मशानस्था श्मशाना च श्मशानस्थलभूषणा॥१०१॥

शमदा शमहन्त्री च शाकिनी शङ्कुशेखरा।
शान्ति शान्तिप्रदा शेषा शेषस्था शेषदायिनी॥१०२॥
शेमुषी शोषिणी शीरी शौरिः शौर्याशिरा शिरिः।
शापहा शापहानीश शम्पाशपथदायिनी॥१०३॥
शृङ्गिणी शृङ्गपलभुक्शङ्करी शाङ्करी च या।
शङ्काशङ्कापहासंस्था शाश्वती शीतला शिवा॥१०४॥
शिवस्था शवभुक्ता वा शाववर्णा शिवोदरी।
शायिनी शावशयना शिंशपा शिशुपालिनी॥१०५॥
शवकुण्डलिनी शैवा शङ्करा शिशिराशिरा।
शवकाञ्चि शवश्रीका शवमाला शवाकृतिः॥१०६॥
शयनी शङ्कुवाशक्तिः शन्तनु:शीलदायिनी।
सिन्धु:सरस्वतीसिन्धुः सुन्दरी सुन्दरानना॥१०७॥
साधु:सिद्धिः सिद्धिदात्री सिद्धा सिद्धसरस्वती।
सन्तति:सम्पदा सम्पत्संवित्सरतिदायिनी॥१०८॥
सपत्नीसरसासारा सरस्वतिकरी स्वधा।
सर:समासमाना च समाराध्यासमस्तदा॥१०९॥
समिद्धासमदासमा सम्मोहा समदर्शना।
समिति:समिधासीमा सावित्रीसविधासती॥११०॥
सवताऽसवनादाः आसवनासमरासमी।
सिमिरासततासाध्वी सुधीचिन्त्यसहायिनी॥१११॥
हंसी हंसगतिर्हंसा हंसोज्ज्वलनिचोलुयुक्।
हलिनी हलदा हाला हरश्री हरवल्लभा॥११२॥
हेलाहेलावती ह्येषा ह्रेपस्था ह्रेषवर्द्धिनी।
हन्ताहन्तिः हर्ताहत्याहा हन्ततापहारिणी॥११३॥
हङ्कारी हन्तकृद्धङ्काहीहा होता हताहता।
हेमप्रदा हंसवती हारी हातरिसम्मता॥११४॥
होरी होत्री होलिका च होमा होमोहविर्हरिः।
हारिणी हरिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी॥११५॥
लम्बोदरी लम्बकर्णा लम्बिका लम्बविग्रहा।
लीलालोलावतीलोला ललनी लालितालता॥११६॥
ललामलोचनालोच्य लोलाक्षीलक्षणालला।
लम्पतीलुम्पतीलम्पा लोपामुद्राललन्तिनी॥११७॥

लन्तिकालम्बिकालम्बा लघिमालघुमध्यमा।
लघीयसी लघुदयी लूतालूतनिवारिणी॥११८॥
लोमभृल्लोमलोप्ता च लुलुतीलुलुसंयती।
लुलायस्था चलहारी लङ्कापुरपुरन्दरी॥११९॥
लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदा लक्ष्म्या लक्षबलमतिप्रदा।
क्षुण्णाक्षुपाक्षणाक्षीणा क्षमाक्षान्तिः क्षणावतीः॥१२०॥
क्षामा क्षामोदरी क्षीमा क्षौमभृत्क्षत्रियाङ्गना।
क्षयाक्षमाकरीक्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा॥१२१॥
क्षेमङ्करी क्षयकरी क्षयतत्क्षणदाक्षतिः।
क्षुरन्ती क्षुद्रिकाक्षुद्रा क्षुत्क्षामाक्षरपातका॥१२२॥

फलश्रुतिः

मातुः सहस्रनामेदं सर्वकामप्रदायकम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं स एव स्यान्महेश्वरः॥१२३॥

प्रत्यङ्गिरा माता का यह सहस्रनाम भक्तों की समस्त कामनाओं को प्रदान करनेवाला है, जो भक्तजन प्रयत्नपूर्वक इस सहस्रनाम का नित्य पाठ करता है वह महेश्वर के समान हो जाता है।।१२३।।

अनाचान्तः पठेन्नित्यं दरिद्रो धनदो भवेत्।
मूकः स्याद्वाक्पतिर्देवि रोगी नीरोगतां व्रजेत्॥१२४॥

अनवरत नियमित पाठ करनेवाला दरिद्र भी धनवान् हो जाता है। मूक व्यक्ति भी वाणीवान् हो जाता है। मूर्ख व्यक्ति बुद्धिमान् तथा तर्कवान् हो जाता है। यदि रोगी व्यक्ति इस सहस्रनाम का पाठ करता है, तो वह निरोगी हो जाता है।।१२४।।

अपुत्रः पुत्रमाप्नोति त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
वन्ध्यापि सूते तनयान् गावश्च बहुदुग्धदाः॥१२५॥

पुत्रहीन व्यक्ति इस सहस्रनाम का पाठ करता है, तो पुत्रवान् हो जाता है और तीनों लोकों की ख्याति पाता है। यदि वन्ध्या स्त्री पाठ करती है, तो वह भी पुत्र प्राप्त करती है और बहुत दूध देनेवाली गायें प्राप्त करती हैं, राजा भी उसके दास के समान वश में हो जाते हैं।।१२५।।

राजानः पादनम्राः स्युस्तस्य दासा इव स्फुटाः।
अरयः संक्षयं यान्ति मनसा संस्मृता अपि॥१२६॥

इस सहस्र नाम का पाठ करनेवाले साधक के सामने समस्त राजकर्मी दास के समान उससे व्यवहार करने लग जाते हैं, यदि कोई मन से भी सहस्रनाम पाठ करनेवाले प्रत्यङ्गिरा भक्त से शत्रुता सोचते हैं, तो वह तुरन्त ही नष्ट हो जाते हैं।।१२६।।

दर्शनाद् देवता यं ते नरा नार्योऽपि तद्वशाः।
कर्त्ता हन्ता त्वयं वीरो जायते नात्र संशयः॥१२७॥

सहस्त्रनाम पाठ करने वाले प्रत्यङ्गिरा भक्त के वश में देवतादि और समस्त नारियाँ हो जाती हैं, वह वीर पुरुष हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है॥१२७॥

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
दुरितं न च तस्यास्ते नास्ति शोकः कदाचन॥१२८॥

सहस्त्रनाम पाठ करने वाला साधक जो जो कामना करता है, उसे उसे तुरन्त निश्चय ही प्राप्त कर लेता है, उसके साथ कभी भी दुरित नहीं होता तथा उसे शोक कभी नहीं प्राप्त होता है॥१२८॥

चतुष्पथेऽर्द्धरात्रौ च यः पठेत्साधकोत्तमः।
एकाकी निर्भयो धीरो दशावर्तं स्तवोत्तमम्॥१२९॥

चौराहे के चतुष्पथ पर अर्द्धरात्रि में जो साधकोत्तम एकान्त में निर्भय होकर गम्भीरतापूर्वक इस सहस्त्रनाम का दशावृत्ति पाठ करता है, वह साधक श्रीप्रत्यङ्गिरा भगवती की कृपा से समस्त कामनाओं को प्राप्त करता है॥१२९॥

मनसा चिन्तितं कार्यं तस्य सिद्धिर्न संशयः।
विना सहस्त्रनाम्ना यो जपेन्मन्त्रं कदाचन॥१३०॥

सहस्त्रनाम का पाठ करनेवाला साधक मन से जो भी चिन्तन करता है। वह कार्य अवश्य हीं सम्पन्न हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है। बिना सहस्त्रनाम पाठ के कदाचिद् यदि कोई प्रमादवश मन्त्र जप करता है॥१३०॥

न सिद्धो जायते तस्य मन्त्रः कल्पशतैरपि।
कुजवारे श्मशाने च मध्याह्ने यो जपेदथ॥१३१॥

वह कभी सिद्धि नहीं प्राप्त कर पाता है, चाहे वह सैकड़ों कल्प तक जप करता रहे। अतः अपना हित चाहनेवाले साधक को सहस्त्रनाम का अवश्य पाठ करना चाहिये। मङ्गल वार को श्मशान में मध्याह्न में जाकर जो सौ बार जप करता है॥१३१॥

शतावर्त्या सजपेत् कर्त्ता हर्त्ता नृणामिह।
रोगान्तं घोरनिशायान्ते पठितामसि संस्थितः॥१३२॥

मङ्गलवार को श्मशान में मध्याह्न में जाकर जो सौ बार जप(पाठ) करता है, वह मनुष्य अपने शत्रुओं को निश्चय ही नष्ट कर देता है और मध्यरात्रि में पाठ करने से रोग को नष्ट कर देता है॥१३२॥

सद्यः नीरोगतामेति यदि स्यान्निर्भयस्तदा।
अर्द्धरात्रे श्मशाने वा शनिवारे जपेन्मनुम्॥१३३॥

शनिवार के दिन अर्द्धरात्रि में सहस्रनाम पाठकर्त्ता निश्चय ही नीरोग तथा निर्भय हो जाता है॥१३३॥

अष्टोत्तरसहस्रं तद्दशवारं जपेत्ततः।
सहस्रनाम चैतद्धि तदा याति स्वयं शिवा॥१३४॥

जो भक्त विधिपूर्वक प्रत्यङ्गिरा देवी पूजन करके इस अष्टोत्तरसहस्रनाम का दश बार पाठ करता है, उसकी महादेवी शिवा स्वयं रक्षा करती है॥१३४॥

महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी।
तदा यदि न भीतिः स्यात्ततो द्रोहीति वा भवेत्॥१३५॥

इस सहस्रनाम का पाठ करनेवाले के लिए सभी यदि द्रोही हो जायें और घोर भयंकर तूफान, भयंकर ध्वनि होने पर भी भय नहीं होता है॥१३५॥

तदा पशुबलिं दद्यात्स्वयं गृह्णाति चण्डिका।
यथेष्टं च वरं दत्त्वा याति प्रत्यङ्गिरा शिवा॥१३६॥

विधिवत् पूजन करके सहस्रनाम का पाठ करके बलि प्रदान करने पर चण्डिका स्वयं बलि ग्रहण करती हैं और भगवती प्रत्यङ्गिरा शिवा उस साधक को उसका अभीष्ट वर प्रदान करके कृतार्थ करती हैं॥१३६॥

रोचनागुरु-कस्तुरी-कर्पूरमदचन्दनः ।
कुङ्कुमप्रथमाभ्यां तु लिखितं भूर्जपत्रके॥१३७॥

गोरोचन, अगुरु, कस्तुरी, कर्पूर, मद, चन्दन, कुंकुम सभी को समान भाग में मिला करके भोजपत्र पर देवी का यन्त्र लिख करके॥१३७॥

शुभनक्षत्रयोगे तु कृत्रिमाकृतसक्रियः।
कृतसम्पातना सिद्धिर्धारयेद्दक्षिणे करे॥१३८॥

शुभ नक्षत्र, शुभ योग में सिद्ध करके दाहिने हाथ में धारण करता है, तो प्रहास में कृत्रिम कार्य भी करने पर सत्य हो जाता है॥१३८॥

सहस्रनाम स्वर्णस्थं कण्ठे वापि जितेन्द्रियः।
तदा यन्त्रे नमेन्मन्त्री क्रुद्धा संम्रियते नरः॥१३९॥

सहस्रनाम को शुभनक्षत्रयोग में लिख करके सुवर्ण में भर करके कण्ठ में धारण करने तथा जितेन्द्रिय रहने से क्रोध करने मात्र से ही शत्रु मर जाता है॥१३९॥

यस्मै ददाति यः स्वस्ति स भवद्धनदो यमः।
दुष्टश्वापदजन्तूनां न भीः कुत्रापि जायते॥१४०॥

सहस्रनाम को धारण करनेवाले साधक का कुबेर तथा यमादि सभी देवता भला ही करते है, तो दुष्टादि जन्तुओं की क्या बात, अर्थात् साधक को कभी भी भय नहीं होता है॥१४०॥

बालकानामिमां रक्षां गर्भिणीनामपि ध्रुवम्।
मोहनं स्तम्भनाकर्षमारणोच्चाटनानि च॥१४१॥

यह विद्या बालकों की रक्षा करती है, गर्भिणियों की तो निश्चय ही रक्षा करती है, मोहन, स्तम्भन, आकर्षण, उच्चाटन इत्यादि परकृत्य॥१४१॥

यन्त्रधारणतो नूनं जायन्ते साधकस्य तु।
नीलवस्त्रे विलिखितं ध्वजायां यदि तिष्ठति॥१४२॥

प्रत्यङ्गिरायन्त्र को धारण करनेवाले साधक की कभी हानि नहीं करते हैं। नीले वस्त्र में धारण यन्त्र को लिख करके यदि ध्वजा पर लगाया जाता है॥१४२॥

तदा नष्टा भवत्येव प्रचण्डा परिवाहिनी।
एतज्जप्तं महाभस्म ललाटे यदि धारयेत्॥१४३॥

तो संग्राम में प्रचण्ड शत्रुओं का समुदाय होने पर भी साधक उनको नष्ट कर देता है। यदि इसका जप करके अभिमन्त्रित भस्मादि का यदि तिलक धारण करता है, तो॥१४३॥

तद्दर्शनत एव स्युः प्राणिनस्तस्य किङ्कराः।
राजपत्न्योऽपि वशगाः किमन्याः परयोषितः॥१४४॥

तिलक करने वाले साधक को देख करके राजपत्नी भी वश में हो जाती है, अन्य स्त्रियों की तो बात ही क्या, वे तो तुरन्त ही वश में हो जाती हैं॥१४४॥

एतज्जप्तं पिबेत्तोयं मासैकेन महाकविः।
पण्डितश्च महादीक्षो जायते नात्र संशयः॥१४५॥

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को एक मास तक पीता है, तो वह महाकवि और महापण्डित तथा महादीक्षित हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं हैं॥१४५॥

शक्तिं सम्पूज्य देवेशि पठेत्स्तोत्रं वरं शुभम्।
इह लोके सुखं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत्॥१४६॥

प्रत्यङ्गिरा शक्ति का विधिवत् पूजन करके इस सहस्रनामस्तोत्र का पाठ जो साधक करता है, वह शुभ वर प्राप्त करता है इस लोक में जबतक रहता है, तबतक समस्त भोगों को भोगता है और पर लोक में भी समस्त सुख पाता है॥१४६॥

इदं नामसहस्रं तु प्रत्यङ्गिरामनोहराम्।
गोप्यं गुप्ततमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत्॥१४७॥

यह प्रत्यङ्गिरा का मनोहर सहस्रनाम गोपनीयों में भी परमगोपनीय है, इसको अपने योनि के समान गुप्त रखना चहिये॥१४७॥

श्रीरुद्रयामलतन्त्रे दशविद्यारहस्ये प्रत्यङ्गिरासहस्रनामस्तोत्रं परिपूर्णम्

❀

महाविद्यास्तोम्

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करे।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥१॥

चार भुजाओंवाली, महादेवी, नाग (पवित्रकसंज्ञक) यज्ञोपवीत को धारण की हुई, महा विशाल शरीरवाली, विकराल मुखवाली, सिद्धों एवं विद्याधरादिकों से सेवित तथा गणों से युक्त॥१॥

मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥२॥

मुण्डमालावली को धारण की हुई, खुले हुए केशवाली, हास्य मुखवाली महादेवी का सभी कामनाओं की सिद्धि के लिए ध्यान करता हूँ॥२॥

शिव उवाच

दुर्लभं तारिणीमार्गं दुर्लभं तारिणीपदम्।
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं दुर्लभं शवसाधनम्॥३॥

इस संसार में तारणी का मार्ग अतिदुर्लभ है, तारिणी का पद जानना भी अतिदुर्लभ है, मन्त्रों के अर्थ भी जानना अतिदुर्लभ है तथा शवसाधन भी अतिदुर्लभ है॥३॥

श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम्।
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम्॥४॥

श्मशान का साधन करना, योनि का साधन करना, ब्रह्म का साधन करना, क्रियायोग का साधन करना, भक्ति का साधन करना तथा मुक्ति का साधन करना इस संसार में अत्यन्त दुर्लभ तथा दुरूह है॥४॥

तव प्रसादाद् देवेशि! सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः।
नमस्ते चण्डिके चण्डि! चण्डमुण्डविनाशिनी!॥५॥

हे देवताओं की ईश्वरि! आप के ही प्रसाद पूर्वक कृपा से सभी सिद्ध लोग समस्त सिद्धि पाते हैं, चण्ड-मुण्ड असुरों का संहार करनेवाली चण्डिका, महामहाचण्डी देवी आपको नमस्कार है॥५॥

नमस्ते कालिके! काली महाभयविनाशिनि!।
शिवे रक्ष जगद्धात्रि! प्रसीद हरवल्लभे!॥६॥

हे कालिकादेवि! कालरूपी महाभय का विनाश करनेवाली, आपको नमस्कार है, हे शिव की अर्धाङ्गिनि! हे जगत् को धारण करनेवाली भगवती शिवे! रक्षा करो, हे हर की वल्लभा! प्रसन्न होकर, हमारी रक्षा कीजिये॥६॥

प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्।
जगत् क्षोभकरी विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्॥७॥

जगत् का धारण तथा पालन करनेवाली, आपको प्रणाम है। जगत् का संहार करने वाली महाविद्यारूपिणी देवी, जगत् की सृष्टि करनेवाली महादेवी आपको प्रणाम है॥७॥

करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्।
हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्॥८॥

हे महादेवि! कराल, विकट, घोर, मुण्डमाला से विभूषित, हर के द्वारा अर्चित, हर के द्वारा आराधित, हर की प्राणवल्लभा देवी आपको नमस्कार है॥८॥

गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालङ्कारभूषिताम्।
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्॥९॥

हे गौरि! गुरु (भगवान् शङ्कर) की प्रिया, गौर वर्णवाली, विभिन्न आभूषणों से विभूषित, हरि की प्रिया, महामाया, ब्रह्म की पूजिता आपको नमस्कार है॥९॥

सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्।
मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिङ्गशोभिताम्॥१०॥

साधनाओं से सिद्ध होनेवाली, सिद्धों की ईश्वरी, सिद्धविद्याधरगणों से युक्त, मन्त्रों को सिद्धि प्रदान करनेवाली, योनिसिद्धि प्रदान करनेवाली, लिङ्ग (निष्कलरूप) से सुशोभित महादेवी आपको नमस्कार है॥१०॥

प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्।
उग्रामुग्रमयीमुग्र तारामुग्रगणैर्युताम्॥११॥

सभी दुर्गति का नाश करनेवाली, उग्रों में उग्र तथा उग्रताराओं से और उग्र गणों से युक्त हे महामाया दुर्गादेवि! आपको नमस्कार है॥११॥

नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्।
श्यामाङ्गीं श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्॥१२॥

हे नीला देवि! नीलप्रभा से विभूषित श्यामा, नीलसुन्दरी देवी को नमस्कार है, श्याम वर्ण के अङ्गोंवाली, श्याम घटाओं के सदृश, श्याम वर्ण से विभूषित देवी आपको नमस्कार है॥१२॥

प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्।
विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्॥१३॥

जगत् को धारण करनेवाली, सभी साधनों की साधिका, विश्व की ईश्वरी, महा विशाल, विकट तथा भयङ्कर नाद करनेवाली देवी आपको नमस्कार है॥१३॥

आद्यामाद्या गुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम्।
श्रीदुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्॥१४॥

हे आद्या महामाया! आदि गुरु, आदिनाथ भगवान् शङ्कर से प्रपूजित श्रीदुर्गा, धन प्रदान करनेवाली, धनदा देवी, अन्नपूर्णा, कमलदलनिवासिनी, देवताओं की स्वामिनी आपको नमस्कार है॥१४॥

प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्।
त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्॥१५॥

हे चन्द्रशेखर शङ्कर की वल्लभा! सम्पूर्ण जगत् को धारण करनेवाली देवी, त्रिपुरसुन्दरी अबलागण से विभूषित बाला भगवती को प्रणाम है॥१५॥

शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्।
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्॥१६॥

हे शिव को दूत बनानेवाली शिवदूति! शिव की आराध्या, शिव की ध्येया, सनातनी सुन्दरी, तारिणी सभी शिवागणों से विभूषित देवी को नमस्कार है॥१६॥

नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्।
सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम्॥१७॥

हे नारायणी! विष्णु की पूज्या ब्रह्म-विष्णु-हर की प्रिया, सभी सिद्धि को प्रदान करनेवाली, नित्या (सदासर्वदा रहनेवाली) अनित्य गुणोंवाली देवी आपको नमस्कार है॥१७॥

सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम्।
दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्॥१८॥

सगुण तथा निर्गुण रूपोंवाली, सभी सिद्धि को प्रदान करने वाली, दिव्य रूपोंवाली दिव्य सिद्धि को प्रदान करनेवाली, महाविद्या-महामहेश्वरी आपको नमस्कार है॥१८॥

महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्॥१९॥

महेश की भक्ति से भक्तिमान्, महा ईश्वरी महाकाल के द्वारा विधिपूर्वक पूजित, जगत् को धारण करनेवाली, शुम्भासुर का संहार करनेवाली देवी आपको सतत नमस्कार है॥१९॥

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्।
भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्॥२०॥

हे रक्त प्रिया! रक्त वर्णवाली, रक्तबीज असुर का संहार करनेवाली, सम्पूर्ण भुवन की अधिष्ठात्री, भुवनों में व्याप्त भैरवी देवी, लोलजिह्वावाली देवताओं की ईश्वरी आपको सतत नमस्कार है॥२०॥

चतुर्भुजां दशभुजां अष्टादशभुजां शुभाम्।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्॥२१॥

चारभुजा-दशभुजा-अट्ठारह भुजाओं से शोभायमान, त्रिपुर की ईश्वरी, विश्वनाथ की प्रिया, विश्व की ईश्वरी शिवा आपको प्रणाम है॥२१॥

अट्टहासां अट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।
कमलां छिन्नभालां च मातङ्गीं सुरसुन्दरीम्॥२२॥

मुख से सदैव अट्टहास करनेवाली, अट्टहास को प्रेम करनेवाली, धूम्रासुर का विनाश करनेवाली, कमला, छिन्नमस्तिका, मातङ्गी तथा त्रिपुरसुन्दरी रूपिणी आपको नमस्कार है॥२२॥

षोडशीं विजयां भीमां धूम्रां च बगलामुखीम्।
सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्॥२३॥

षोडशी, विजया, भीमा, धूम्रा, बगलामुखी, समस्त सिद्धियों को देनेवाली, सभी मन्त्रों का शोधन करनेवाली महादेवी आपको नमस्कार है॥२३॥

प्रणमामि जगत्तारां सारां च मन्त्रसिद्धये।
इत्येवं च वरारोहं स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्॥२४॥

जगत् को तारनेवाली, सभी मन्त्रों की सारभूता मन्त्रसिद्धि प्रदान करनेवाली आपको प्रणाम है, वर को प्रदान करनेवाली देवी सभी सिद्धियों को प्रदान करनेवाला आपका स्तोत्र सभी सिद्धियों को देनेवाला है॥२४॥

पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि!।
कुजवारे चतुर्दश्यां अमायां जीववासरे॥२५॥

चतुर्दशी के दिन मङ्गलवार होने पर तथा अमावस्या को गुरुवार होने पर इस स्तोत्र का पाङ्ग करने से निश्चय ही बाधाओं तथा दुःखों से छुटकारा मिल जाता है॥२५॥

शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्।
त्रिपक्षे मन्त्रसिद्धिः स्यात् स्तोत्रपाठाद्धि शङ्करि!॥२६॥

हे शङ्करि! शुक्रवार को अर्धरात्रि में इस स्तोत्र का पाठ करने से निश्चय ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। तीन पक्ष (पैंतालिस दिन) तक इसका पाठ करने से मन्त्र की अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है॥२६॥

चतुर्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा।
निशामुखे पठेत् स्तोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्॥२७॥

चतुर्दशी को शनिवार या मङ्गलवार पड़ने पर निशामुख (अर्धरात्रि) में इस स्तोत्र का पाठ करने से अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है॥२७॥

केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा।
जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद् भुजङ्गिनी॥२८॥

केवल पाठ करने मात्र से ही उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है तथा सतत निश्चय ही भुजङ्गिनी चण्डी देवी (कुण्डलिनी) जाग्रत् होती है।।२८।।

अनेन स्तोत्र पाठाख्येन महाविद्याकालिका प्रीयतां न मम।

मुण्डमालातन्त्रेमहाविद्यास्तोत्रं परिपूर्णम्

❋

कर्पूरस्तोत्रम्

विनियोग:—**ॐ अस्यश्रीकालिकाकर्पूरस्तवराजस्य श्रीमहाकालऋषिः उष्णिक्छन्दः श्रीकालिकादेवता क्रीँबीजं ह्रीँशक्तिः हूँकीलकं श्रीकालिकादेवताप्रीत्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।**

कर्पूरं मध्यमाऽन्त्यस्वरपररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तं,
बीजं ते मातरेतत्त्रिपुरहवधु त्रिष्कृतं ये जपन्ति।
तेषां गद्यानि पद्यानि च मुखकुहरादुल्लसन्त्येव वाचः,
स्वच्छन्दं ध्वान्तधाराधररुचिरुचिरे सर्वसिद्ध्यङ्गतानाम्॥१॥

हे माता! हे त्रिपुर हरवधु! हे कृष्णमेध के समान काले वर्णवाली भगवती, कर्पूर शब्द के मध्य एवं अन्त्य व्यञ्जन(पकार एवं रकार) तथा उसमें युक्त स्वर (पकार के मध्य अकार तथा रकार के अकार को अलग करके अवशिष्ट ककार में रकार युक्त करके उसमें चन्द्रविन्दु (सानुनासिक अनुस्वार) संयुक्त कर वामाक्षि दीर्घ ईकार से युक्त करने पर निर्मित क्रीँ इस मन्त्र को जो क्रीँ क्रीँ क्रीँ तीन बार जप करते है उनके मुख विवर से अनायास ही गद्य और पद्य का स्वच्छन्द स्फुरण होने लगता है और उनमें अणिमादि सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।।१।।

ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतो बीजमन्यन्महेशि!,
द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जनो वारमेकं कदाचित्।
जित्वा वाचामधीशं धनदमपि चिरं मोहयन्नम्बुजाक्षी,
वृन्दञ्चन्द्रार्धचूडे प्रभवति स महाघोररावावतंसे॥२॥

हे महेशि!, हे चन्द्रार्धचूडे, हे महाभयानक बाल शव का कर्णाभूषण धारण करनेवाली, हे भगवति! ईशान(हकार) उसमें चन्द्रविन्दु(सानुनासिक अनुस्वार) तथा वाम श्रवण उकार युक्त करने पर निर्मित हूँ का दो बार अर्थात् हूँ हूँ जो उच्चारण करता है वह मूर्ख भी शास्त्रार्थ में बृहस्पति तथा धन में कुबेर को भी पीछे कर देता है और समस्त सुन्दरियों को मोहने में समर्थ हो जाता है।।२।।

ईशो वैश्वानरस्थः शशधरविलसद् वामनेत्रेण युक्तो,
बीजं ते द्वन्द्वमन्यद्विगलितचिकुरे कालिके ये जपन्ति।

द्वेष्टारं घ्नन्ति ते च त्रिभुवनमभितो वश्यभावं नयन्ति,
सृक्कद्वन्द्वास्त्रधाराद्वयधरवदने दक्षिणे कालिकेति॥३॥

ईश(हकार), वैश्वानर(र्), को शशधर, सानुनासिक अनुस्वार एवं वाम नेत्र दीर्घ ईकार से युक्त करने पर जो ह्रीँ निर्मित होता है उसका जो साधक दो बार अर्थात् ह्रीँ ह्रीँ का उच्चारण करता है वे अपने समस्त शत्रुओं का बध कर देता है तथा हे विस्रस्त केशोंवाली, हे ओष्ट प्रान्तों में निरवच्छिन्न रक्त की दो धाराओं को धारण करनेवाले मुखोंवाली, हे दक्षिणकालिके माता! बहुत क्या कहें, इस मन्त्र का जप करनेवाला साधक त्रिलोकी को अपने वश में कर लेता है॥३॥

ऊर्ध्वं वामे कृपाणं करकमलतले छिन्नमुण्डं ततोऽधः,
सव्येऽभीतिः वरं च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिके च।
जप्त्वैतन्नामवर्णन्तव मनुविभवं भावयन्तस्तदर्थम्,
तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितवदने सिद्धयः त्र्यम्बकस्य॥४॥

हे प्रकटित वदने!(विस्तृत मुखोंवाली) हे त्रिजगदघहरे! तीनों लोकों के पापं को नष्ट करनवाली, हे माता! ऊपर के बायें हाथ में कृपाण तथा नीचे के बायें हाथ में छिन्न मुण्ड तथा ऊपर के दाहिने हाथ में अभय एवं नीचे के दाहिने हाथ में वर मुद्राओं को धारण करनेवाली, तुम्हारे रूप का जो साधक मन्त्र का जप करते हुए ध्यान करता है वे शिव के आठों अणिमादि सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है॥४॥

वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरतिललितं तत्त्रयं कूर्चयुग्मम्,
लज्जाद्वन्द्वञ्च पश्चात्स्मितमुखि तदधष्ठद्वयं योजयित्वा।
मातर्ये त्वां जपन्ति स्मरहरमहिले भावयन्ते स्वरूपम्,
ते लक्ष्मीलास्यलीलाकमलदलदृशः कामरूपा भवन्ति॥५॥

हे मन्द मुस्कानोंवाली, हे स्मरहरमहिले!(शिवप्रिये), वर्ग का आदि अक्षर ककार उसे वह्नि रेफ से युक्त कर उस पर विधुरतिललित ईकार तथा सानुनासिक अनुस्वार की मात्रा लगाकर क्रीँ मन्त्र के तीन बार उच्चारण करने के पश्चात् कूर्चयुग्म हूँकार द्वय तथा लज्जाद्वन्द्व ह्रीँकार के पश्चात् दो ठ उसके पश्चात् स्वाहा लगाकर अर्थात् क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ठः ठः स्वाहा इस मन्त्र का जो लोग तुम्हारा ध्यान करते हुए जप करते हैं वे अपनी दृष्टि के प्रक्षेप मात्र से लक्ष्मी को जहाँ तहाँ नचाते रहते हैं तथा इच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ हो जाते हैं॥५॥

प्रत्येकं वा द्वयं वा त्रयमपि च परं बीजमत्यन्तगुह्यम्,
त्वन्नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जपन्ति।
तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वस्त्रशुभ्रांशुविम्बे,
वाग्देवीं दिव्यमुण्डस्रगतिशयलसत्कण्ठिपीनस्तनाढ्ये॥६॥

हे मुण्ड माला से विभूषित कण्ठवाली! हे पीन स्तनोंवाली भगवति कालिके! क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ इन सात अक्षरो वाले बीज मन्त्र के प्रथम भाग क्रीँ क्रीँ क्रीँ अथवा दो भाग क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ अथवा तीनों भाग क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ अथवा क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ के साथ तुम्हारा नाम दक्षिणे कालिके लगाकर जो लोग इस परम गुह्य मन्त्र का जप करते हैं उनके नेत्रारविन्द में लक्ष्मी विहार करती है तथा चन्द्रमण्डल के सदृश उनके मुख में वाग्देवी निवास करती है।।६।।

गतासूनां बाहुप्रकरकृतिकाञ्चीपरिलसन्,
नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवनविधात्रीं त्रिनयनाम्।
श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि महाकालसुरतः,
प्रसक्तां त्वां ध्यायन् जननि जडचेता अपि कविः।।७।।

हे मातः! श्मशान में शय्या पर शव के हाथों की बनी हुई करधनी को नितम्ब स्थल पर धारण करनेवाली, वस्त्र रहित, त्रिलोक की सृष्टि में समर्थ, तीन नेत्रोंवाली, शव के हृदय पर महाकालशिव के साथ सुरत में प्रसक्त तुम्हारे इस रूप को जड़ प्रकृति का महामूर्ख भी ध्यान करे तो वह महाकवि हो जाता है।।७।।

शिवाभिर्घोराभिः शवनिवहमुण्डस्थिनिकरे,
परं सङ्कीर्णायां प्रकटितचितायां हरवधुम्।
प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरिसुरते नातियुवतीं,
सदा त्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः।।८।।

हे माता! घोर शिवाओं से व्याप्त तथा मुर्दो के मुण्ड एवं हड्डियों से युक्त श्मशान में जलती हुई चिता के मध्य में प्रविष्ट हुई शान्त चित्तवाली, विपरीत रति से सन्तुष्ट होनेवाली, युवतिरूप से सम्पन्न तुम्हारे रूप का जो लोग ध्यान करते हैं उनका पराभव कभी नही होता है।।८।।

वदामस्ते किं वा जननि! वयमुच्चैर्जडधियो,
न धाता नापीशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम्।
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माननमिते,
तदेतत् क्षन्तव्यं न खलु पशुरोषः समुचितः।।९।।

हे माता! ब्रह्मा, विष्णु तथा सदाशिव भी तुम्हारे जिस परम तत्त्व को नहीं जानते, फिर उसे मेरे जैसा महामन्द मति भला किस प्रकार जान सकता है? फिर भी हे भगवति! तुम्हारी भक्ति ही तुम्हारी स्तुति के लिए विवश करती है अतः मेरे इस अपराध को क्षमा करो, क्योंकि मेरे जैसे अज्ञ जीवों पर तुम्हारा क्रोध करना उचित नहीं है।।९।।

समन्तादापीनस्तनजघनदृग्यौवनवती ,
रतासक्तो रक्तं यदि जपति भक्तस्तव मनुम्।

विवासास्त्वां ध्यायन्गलितचिकुरस्तस्य वशगाः,
समस्ताः सिद्धौघा भुवि चिरतरं जीवति कविः॥१०॥

हे भगवति! रात्रि के समय वस्त्ररहित एवं बिखरे केशोंवाला जो भक्त पीन स्तन एवं पीन जघनवाली युवती के साथ संभोग करता हुआ तुम्हारा ध्यान कर तुम्हारे मन्त्र का जप करता है उसके वश में सभी सिद्धियाँ होती हैं और वह साधक कवि एवं चिरञ्जिवी होता है॥१०॥

समाः स्वस्थीभूतां जपति विपरीतां यदि सदा,
विचिन्त्य त्वां ध्यायन्नतिशयमहाकालसुरताम्।
तदा तस्य क्षोणीतलविहरमाणस्य विदुषः,
कराम्भोजे वश्या हरवधु महासिद्धिनिवहः॥११॥

हे शिवप्रिये! महाकाल से विपरीत रति में प्रसक्त तुम्हारे रूप का ध्यान करता हुआ जो भक्त तुम्हारे मन्त्र का संवत्सर पर्यन्त अथवा सदैव जप करता है, समस्त पृथ्वी तल में विहार करनेवाले उस विद्वान् भक्त के हाथ में समस्त महासिद्धियाँ वशीभूत हो जाती हैं॥११॥

प्रसूते संसारं जननि! जगतीं पालयति च,
समस्तं क्षित्यादि प्रलयसमये संहरति च।
अतस्त्वां धाताऽपि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि,
महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौति भवतीम्॥१२॥

हे माता! समस्त संसार को आप उत्पन्न करती हैं, पालन करती हैं एवं संहार करती हैं, इसलिए ब्रह्मा, तीनों लोकों के पति विष्णु और शङ्कर भी आपकी सदैव स्तुति करते है, जब ये तीनों देव आपके एक एक अंश की स्तुति करते हैं तो मैं सर्व शक्ति सम्पन्न आपकी किस प्रकार स्तुति करने में समर्थ हो सकता हूँ॥१२॥

अनेके सेवन्ते भवदधिकगीर्वाणनिवहान्,
विमूढास्ते मातः! किमपि नहि जानन्ति परमम्।
समाराध्यामाद्यां हरिहरविरञ्च्यादि विबुधैः,
प्रपन्नोऽस्मि स्वैरं रतिरसमहानन्दनिरताम्॥१३॥

हे माता! अनेक लोग देवताओं को तुम्हारे से अधिक जान कर उनकी सेवा करते हैं, वे लोग महामूर्ख हैं, कुछ भी नहीं जानते हैं अतः यह उनकी दुर्बुद्धि है, पर मैं तो ब्रह्मा, विष्णु और शिवादि देवताओं से समाराधन के योग्य आदि एवं रति रस रूप महान् आनन्द में निरत आपकी शरण में स्वच्छन्द होकर आया हूँ॥१३॥

धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगनं,
त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालिसकलम्।

स्तुतिः का ते मातर्निजकरुणया मामगतिकम्,
प्रसन्ना त्वां भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः॥१४॥

हे माता! तुम पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश रूपवाली हो, इस प्रकार हे गिरीशमणि, हे कालिके! हे संसार के सभी पदार्थ भी तुम्हीं हो, मैं तुम्हारी स्तुति करने में किस प्रकार समर्थ हो सकता हूँ, हे माता! अशरण मुझ पर करुणा करके तुम प्रसन्न हो जाओ, जिससे मेरा जन्म इस संसार में न हो॥१४॥

श्मशानस्थः स्वस्थो गलितचिकुरा दिक्पटधरः,
सहस्रं त्वर्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम्।
जपस्तत् प्रत्येकं मनुमपि तव ध्याननिरतो,
महाकाली! स्वैरं स भवति धरित्री परिवृढः॥१५॥

हे माता! श्मशान में निवास करता हुआ, विवस्त्र एवं विखरित केशोंवाला होकर जो भक्त स्वस्थ चित्त से अपने वीर्य से युक्त हजार अर्क पुष्पों से ध्यान करता हुआ तुम्हारे प्रति पुष्प मन्त्र द्वारा हजार आहुति प्रदान करता है वह इस पृथ्वी तल का राजा बन जाता है॥१५॥

गृहे सम्मार्जन्या परिगलितवीर्यं हि चिकुरं,
समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने।
समुच्चार्य प्रेम्णा मनुमपि सकृत् कालिसततं,
गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत्कविवरः॥१६॥

हे कालि! मङ्गलवार के दिन जड़ से केश को उखाड़ कर संमार्जनी के साथ अपने वीर्य से उसे युक्त कर तुम्हारे मन्त्र का उच्चारण कर प्रेम के साथ एक बार भी चिता में हवन कर देता है तो वह साधक मस्त हाथी पर सवार हो जाता है तथा सत्कवि और राजा हो जाता है॥१६॥

स्वपुष्पैराकीर्णं कुसुमधनुषो मन्दिरमहो,
पुरो ध्यायन्ध्यायन् यदि जपति भक्तस्तव मनुम्।
स गन्धर्व श्रेणी पतिरपि कवित्वामृत् नदी,
न दीनः पर्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति॥१७॥

जो भक्त ऋतु से युक्त योनि का ध्यान करता हुआ भक्ति पूर्वक तुम्हारे मन्त्र का जप करता है वह गाने में गन्धर्वों का पति हो जाता है, एवं कविता रूप अमृत नदियों का वह समुद्र के समान पति हो जाता है, तथा मरण काल में वह भगवती महाकालिका के परम पद को प्राप्त कर लेता है॥१७॥

त्रिपञ्चारे पीठे शवशिवहृदि स्मेरवदना,
महाकालेनोच्चैर्मदनरसलावण्यनिरताम् ।
समासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दानिरतो,
जनो यो ध्यायेत्त्वामपि जननि! स स्यात्स्मरहरः॥१८॥

हे माता! पञ्चदश कोण के पीठ में शवरूपी शिव के हृदय पर महाकाल के साथ रत्यानन्द में आसक्त एवं मन्द हास से युक्त मुखवाली, तुम्हारे रूप का ध्यान स्वयं एकाग्र मन से जो भक्त रात्रि में स्वयं रत्यानन्द में आसक्त होकर करते हैं वे भक्त साक्षात् शिव हो जाते हैं।।१८।।

सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्जारमसिते!,
परं वौष्ट्रं मैषं नरमहिषयोश्छागमपि वा।
बलिं ते पूजायामपि वितरतां मत्स्यवसतां,
सतां सिद्धिः सर्वा प्रतिपदमपूर्वा प्रभवति।।१९।।

हे असिते! तुम्हारी पूजा में मार्जार, उष्ट्र, मेष, नर, महिष एवं छाग के लोम एवं हड्डियों के सहित मांस की बलि स्वच्छन्दता से करनेवाले मनुष्यों को प्रतिदिन अपूर्व सिद्धि प्राप्त होती है।।१९।।

वशी लक्षं मन्त्रं प्रजपति हविश्याशनरतो,
दिवा मातर्युस्मच्चरणकमलध्याननिरतः।
परं नक्तं नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुः,
जपेल्लक्षं सम्यक्स्मरहरसमानः क्षितितले।।२०।।

हे माता! जो साधक हविष्यान्न भोजन करके दिन में तुम्हारे चरण कमल का ध्यान करता हुआ तुम्हारे मन्त्र का एक लाख जप करता है तथा रात्रि में भी नंगा होकर रतिक्रीडा में आसक्त होकर तुम्हारे मन्त्र का एक लाख जप करता है वह साधक इस पृथ्वी तल पर निश्चय ही शिव के समान हो जाता है।।२०।।

इदं स्तोत्रं मातस्तव मनु समुद्धारणजपं,
स्वरूपाख्यं पादाम्बुजयुगलपूजाविधियुतम्।
निशार्धे वा पूजासमयमधि वा यस्तु पठति,
प्रलापस्तस्याऽपि प्रसरति कवित्वामृतरसः।।२१।।

हे माता! जो मन्त्रोद्धार पूर्वक तुम्हारे युगलचरणों की सविधि पूजा एवं ध्यान करते हुए इस स्वरूपाख्य स्तोत्र का पाठ महानिशा में अथवा पूजा के समय करता है उनके मुख विवर से निकला हुआ अनर्थक प्रलाप भी कवित्वरूप अमृतरस से परिपूर्ण रहता है।।२१।।

कुरङ्गाक्षी वृन्दे तमनुसरति प्रेमतरलं,
वशस्तस्य क्षोणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः।
रिपुः कारागारं कलयति च तं केलिकलया,
चिरं जीवन्मुक्तः प्रभवति स भक्तः प्रतिजनुः।।२२।।

हे माता! इस स्तोत्र का पाठ करनेवाले साधक के पीछे पीछे तरुणी वृन्दों का समूह प्रेम रस से उन्मत्त होकर चलता है। कुबेर के समान धनी राजा भी उसके वश में हो जाते

हैं तथा प्रतापी शत्रु भी कारागार में विलाप करते हैं। वह भक्त केलिकला से युक्त होकर बहुत कालपर्यन्त जीवित रहता है और जीता हुआ भी वह जीवन मुक्त हो जाता है॥२२॥

श्रीकर्पूरस्तवराजं परिपूर्णम्

❀

कालिकाक्षमापनस्तोत्रम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीकालिकाक्षमापनस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहाकालऋषिः उष्णिक्छन्दः श्रीकालिकादेवता क्रीँबीजं ह्रीँशक्तिः हूँकीलकं श्रीकालिकादेवताप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।**

प्राग्देहस्थो यदाऽहं तव चरणयुगलं नाश्रितो नार्चितोऽहम्,
तेनाद्यै कीर्तिवर्गैः जठरदहनैर्बाद्ध्यर्यमानो बलिष्ठैः।
क्षिप्त्वा जन्मान्तरान्नः पुनरिह भविता क्वाश्रयः क्वाऽपि सेवा,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥१॥

पूर्व में देह धारण (जन्म लेने) करने पर हमने तुम्हारे चरण युगल का आश्रय नहीं लिया और न ही अर्चनादि ही किया, जिससे प्रारम्भिक कर्मफल से जठर के बलवान् घोरतम ताप में पड़ गया, पुन: जठर से गिरकर इस जन्म को प्राप्त किया, इस जन्म में भी किसका आश्रय लें, किसकी सेवा करें, अत: प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥१॥

बाल्ये बालाऽभिलाषैर्जडितजडमतिर्बाललीलाप्रसक्तो,
न त्वां जानामि मातः! कलिकलुषहरां भोगमोक्षप्रदात्रीम्।
नाचारो नैव पूजा न च यजन कथा न स्मृतिर्नैव सेवा,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥२॥

इस जन्म में भी पूर्व में बाल्यकाल में बाल्यकालिक अभिलाषाओं में ही ग्रस्त रहा, कालुष्य का हरणकर भोग और मोक्ष को प्रदान करनेवाली माता तुम्हे जानता ही नहीं था, तुम्हारे आचार और पूजा तथा तुम्हारे यजन की बात, तुम्हारा ध्यान और सेवा जानता ही नहीं था, अत: प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥२॥

प्राप्तोऽहं यौवनं चेद् विषधरसदृशैरिन्द्रियैर्दंष्ट्रगात्रो,
नष्टप्रज्ञः परस्त्री परधनहरणे सर्वदा साऽभिलाषः।
त्वत्पादाम्भोजयुग्मं क्षणमपि मनसा नतोऽहं कदाऽपि,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥३॥

जब हमने यौवनावस्था प्राप्त की तब विषधर के सदृश इन्द्रियों के मुखस्थित दाँतों में

फँसा रहा (इन्द्रिय भोग में सदैव लगा रहा) तथा बुद्धि को नष्ट करके दूसरे का धन तथा दूसरे की स्त्री हरणादि की सदा सर्वदा अभिलाषा करता रहा, तुम्हारे चरण का क्षण मात्र ध्यान कभी भी हमने नहीं किया, अत: प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।३।।

प्रौढा भिक्षाभिलाषी सुतदुहितकलत्रादिमन्नादिचेष्टः,
क्व प्राप्स्ये कुत्र यामीत्यनुदिनमनिशं चिन्तया भग्नदेहः।
न ते ध्यानं न चास्था न च भजनविधिर्नामसङ्कीर्तनं वा,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।४।।

प्रौढा अवस्था आने पर घूम-घूमकर भिक्षा माँगने की अभिलाषा करनेवाला हो गया, पुत्रदुहिता, कलत्रादि तथा अन्नादि प्राप्ति की चेष्टा में लगा रहा, हमने तुम्हारा कभी कोई ध्यानादि नहीं किया तथा तुम्हारे प्रति कोई आस्था भी कभी नहीं की, कभी तुम्हारा भजन, कीर्तनादि भी नहीं किया, अत: प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालस्वरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।४।।

वृद्धत्वे बुद्धिहीनः कृशविवशतनुः श्वासकासातिसारैः,
कर्मानर्होऽक्षिहीनः प्रगलितदशनः क्षुत्पिपासाभिभूतः।
पश्चात्तापेन दग्धो मरणमनुदिनं ध्येयमात्रं न चाऽन्यत्,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।५।।

वृद्धावस्था आने पर बुद्धिहीन, अत्यन्त कृश शरीरवाला, वात-पित्त-कफ तथा अतिसारादि रोगों से ग्रस्त हो गया, कार्य करने में भी अक्षम, तथा आँखों से हीन तथा दाँतों से विहीन, भूख और प्यास से ग्रस्त होकर तड़पनेवाला होकर पश्चात्ताप की अग्निज्वाला में दग्ध होता हुआ मरण-दिन के भय से ग्रस्त होने पर आपके सिवाय कोई ध्येय नहीं है, अत: प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।५।।

कृत्वा स्नानं दिनादौ क्वचिदपि सलिलो न कृतं नैव पुष्पं,
ते नैवेद्यादिकं च क्वचिदपि न कृतं नाऽपि भावो न भक्तिः।
न न्यासो नैव पूजा न च गुणकथनं नाऽपि चाऽर्चा कृतास्ते,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।६।।

दिन के प्रात: काल में कभी स्नान नहीं किया, कभी आपके लिए सुन्दर कोमल फूल भी नहीं लाया, कभी आपके लिए भोग भी नहीं लाया, कभी आपके प्रति भाव भक्ति भी नहीं किया, कभी आपकी न्यास पूजा आपके स्तोत्रपाठ तथा अर्चना भी नहीं किया, अत: प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूपकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।६।।

जानामि त्वां न चाऽहे भवभयहरणीं सर्वसिद्धिप्रदात्रीम्,
नित्यानन्दोदयाढ्यं त्रितयगुणमयीं नित्यशुद्धोदयाढ्यम्।

मिथ्याकर्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीडितो दुःखसङ्घैः,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥७॥

सर्व सिद्धि को प्रदान करनेवाली, भवभय का हरण करनेवाली माता तुम्हें जाना तक नहीं, नित्य आनन्द और दया की वर्षा करनेवाली, तीन गुणों (सत्त्व-रज-तम) में अभिव्यक्त नित्य शुद्ध, दया का वर्षण करनेवाली, कभी तुम्हारी सेवा की अभिलाषा नहीं की, हमेशा असत्य कर्म में लगा रहा तथा दुःखों के समुदाय में फँसा रहा, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥७॥

कालाभ्रां श्यामलाङ्गीं विगलितचिकुरां खड्गमुण्डाभिराभां,
त्रासत्राणेष्टदात्रीं कुणपगण शिरोमालिनीं दीर्घनेत्राम्।
संसारस्यैकसारं भवजननहरा भावितो भावनाभिः,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥८॥

मेघ के समान कृष्ण वर्णवाली, श्यामल अङ्गोंवाली, बिखरे हुए बालोंवाली, हाथों में खड्ग और मुण्ड धारण करनेवाली, दुःखों से सदैव छुटकारा करानेवाली, कुणपगण को शिर पर धारण करनेवाली, दीर्घ नेत्रोंवाली, संसार की एक मात्र सारभूता, भव सागर में जन्ममृत्यु के बन्धन से छुटकारा दिलानेवाली, भावनाओं में भावित महादेवी, ध्यान मात्र से ही प्रसन्न होनेवाली माता हमने आपकी सेवा कभी नहीं की अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥८॥

ब्रह्माविष्णु तथेशः परिणमति सदा त्वत्पदाम्भोजयुग्मम्,
भाग्याभावान्न चाऽहं भवजननि भवत्पादयुग्मं भजामि।
नित्यं लोभप्रलोभैः कृतवशमतिः कामुकस्त्वां प्रयाचे,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥९॥

आपके दोनों चरण में ब्रह्माविष्णु तथा महेश सभी नित्य प्रणाम करते हैं, भाग्य से हीन होकर हमने आपकी चरण युगल की कभी सेवा नहीं की, मैं अत्यन्त कामुक तथा काम, क्रोध तथा लोभादि के अधीन बुद्धि वाला हूँ, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥९॥

रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुषयुततनुः कामनाभोगलुब्धः,
कार्याऽकार्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसङ्घैर्विहीनः।
क्व ध्यानं ते क्व चाऽर्चा क्व च मनु जपन्नैवकिञ्चित्कृतोऽहं,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥१०॥

मैं राग-द्वेष से मदोन्मत्त, पापी, कालुष्ययुक्त शरीरवाला, निरन्तर कामादि भोगों में लिप्त, कार्याकार्य(करने योग्य न करने योग्य)विवेक से अनभिज्ञ, अकुलीन, अपने स्वजन (कुटुम्ब)से रहित हूँ, इसीलिए तो आपका ध्यान, पूजन, जपतपादि से हीन हूँ, अतः हे

प्रकटितवदनकामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।१०।।

रोगी दुःखी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पापचेताः,
निद्रालस्यप्रसक्तः सुजठरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा।
किं ते पूजाविधानं त्वयि क्व च मनुमिति क्वानुरागः क्व चास्था,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।११।।

मैं रोगी, दुःखी, दरिद्र, दूसरों के अधीन, व्यभिचारी, पापी, निद्रा, आलस्य से युक्त, एकमात्र अपना उदर-पोषण करने में ही लगा रहता हूँ, इसलिए आपके पूजन में मेरी बुद्धि आपके प्रति प्रेम, अनुराग, भक्ति तथा आस्था नहीं है, अतः हे प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप माता महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।११।।

मिथ्याव्यामोहरागैः परिवृतमनसः क्लेशसङ्घान्वितस्य,
क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरणविरहिणः पापकर्मप्रवृत्तेः।
दारिद्र्यस्य क्व धर्मः क्व च जननिरुचिः क्व स्थितः साधुसङ्गैः,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१२।।

मिथ्या असत्य व्यामोहादि राग में पड़े हुए चित्तवाले क्लेशसमूह से पीडित, क्षुधा, निद्रा तथा आलस्य से पीड़ित, आपके ध्यान से हीन, पाप कर्म में प्रवृत्त, हे जननि! ऐसे मुझ दरिद्र का न तो कोई धर्म है, न आपसे प्रेम ही है और न सज्जनों की सङ्गति ही है, अतः हे प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप माता महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।१२।।

मातस्तातस्य देहज्जननिजङ्गरगः संस्थितस्त्वद्वशेऽहं,
त्वं हर्ता कारयित्री करणगुणमयी कर्महेतुस्वरूपा।
त्वं बुद्धिश्चित्तसंस्थाऽप्यहमति भवती सर्वमेतत्क्षमस्व,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१३।।

हे माता! पिता के देह द्वारा माता के उदर गर्भ में स्थित होने से आपके ही अधीन मायाग्रस्त हूँ, आप ही जगत् की हर्ता, जगत् की सृष्टि करनेवाली, त्रिगुणोंवाली कर्म की हेतुभूतरूपा हैं, यद्यपि आप मेरे बुद्धि, चित्त में स्थित हैं, तथापि आपको मैं पहचान नहीं सका, अतः हे माता! प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।१३।।

त्वं भूमिस्त्वं जलञ्च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा,
त्वञ्चाऽऽकाशं मनश्च प्रकृतिरसि महत्पूर्विका पूर्वरूपा।
आत्मा त्वञ्चाऽसि मातः! परमसि भवती त्वत्परन्नैव किञ्चित्,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१४।।

हे माता! आप ही भूमिरूप हैं, आप ही जलरूप हैं, आप ही अग्निरूप हैं, आप ही

वायुरूप हैं तथा आप ही आकाशरूप हैं, आप ही मनरूप हैं, आप ही प्रकृतिरूप हैं, आप ही महद्‌रूप हैं, आप ही पूर्व तथा उत्तररूप हैं, आप ही पहले थीं तथा बाद में भी आप ही हैं, आप ही आत्मारूप हैं, आप ही परस्थान स्थित पररूप हैं, आप ही सबसे परे हो परन्तु आपसे परे कुछ भी नहीं है, अत: हे माता! प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।१४।।

त्वं काली त्वञ्च तारा त्वमसि गिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वम्,
त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि भुवना त्वं तु लक्ष्मीः शिवा त्वम्।
धूमामातङ्गिनीस्त्वं त्वमसि च बगला मङ्गलादिस्तवाख्या,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१५।।

हे माता! काली, तारा, पार्वती, सुन्दरी, भैरवी, दुर्गा, छिन्नमस्तिका, भुवनेश्वरी, लक्ष्मी, शिवा, धूमावती, मातङ्गिनी, बगला, मङ्गला आपकी ही आख्यायें (विभूतियाँ) हैं अर्थात् आप ही के स्वरूप हैं, अत: हे माता! प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।१५।।

स्तोत्रेणाऽनेन देवीं परिणमति जनो यः सदा भक्तियुक्तो,
दुष्कृत्या दुर्गसङ्घं परितरति शतं विघ्नतां नाशमेति।
नाधिर्व्याधिः कदाचिद्भवति यदि पुनः सर्वदा सापराधः,
सर्वं तत्कामरूपे त्रिभुवनजननी क्षामये पुत्रबुध्या।।१६।।

जो साधक श्रद्धाभक्तिपूर्वक देवी के इस स्तोत्र का निरन्तर पाठ करता है, उसके समस्त दुष्कर्म तथा सैकड़ों विघ्न स्वत: नष्ट हो जाते हैं, उसे कभी भी आधि-व्याधि नहीं होती है। साधक सदा अपराधी होने पर भी कामरूपा, कराला भगवति कालिका त्रैलोक्यजननी माँ उसे अपना पुत्र समझकर, उसके समस्त अपराधों को क्षमा कर देती हैं तथा समस्त तापों-पापों को नष्ट कर देती हैं।।१६।।

ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा,
निष्पापी निष्कलङ्को कुलपतिकुशलः सत्यवाग्धार्मिकश्च।
नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगणविमुखः सत्पथाचारशीलः,
संसाराब्धिं सुखेन प्रतरति गिरिजापादयुग्मावलम्बात्।।१७।।

इस स्तोत्र के जाननेवाले साधक ज्ञानी, वक्ता, कवीश्वर, दयालु, दानी, धनपति, पाप-कलंक से रहित, सत्यवादी, धार्मिक, अपने कुल की रक्षा करने में कुशल कुलपति, नित्यानन्दरूप, दया की वर्षा करनेवाले, पशुबुद्धि से रहित, सन्मार्ग का आश्रय लेने वाले होते हैं, जो साधक गिरिजा पार्वती के सेवक होते हैं, वे इस संसाररूपी समुद्र को अनायास ही पार कर जाते हैं।।१७।।

वन्देऽहं कालिका देवि! सर्वज्ञानकरे शुभे।
रक्ष मां जगत् कारिणि पाहि मां जगदम्बिके॥१८॥

हे कालिका देवि! आपकी ध्यान, पूजन तथा स्तोत्र वन्दना करता हूँ, सभी प्रकार का शुभ और ज्ञान प्रदान करनेवाली, जगत् का निर्माण करनेवाली हे माता कालिका! संसार के समस्त दु:खों से हमारी हमारी रक्षा करे, जगत् को उत्पन्न करनेवाली, हे माता! हमारा पालन करें॥१८॥

इस प्रकार से क्षमापनस्तव पाठ करके देवि को पाठ समर्पित करे।

अनेन स्तोत्रपाठाख्येन विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

क्षमापनस्तव: परिपूर्णम्

⁂

महादेवीस्तवेन्द्रम्

नमामि ते कालिपदारविन्दं त्वामाश्रयामि प्रणमामि नित्यम्।
ध्यायामि गायामि वदामि नित्यमेवं कुरु त्वं मम चित्तवृत्तिम्॥१॥

हे कालिके! आपको नित्य ही नमस्कार है, आपके चरणकमलों में नित्य ही प्रणाम करता हूँ, उसी का नित्य ध्यान करता हूँ, नित्य उसकी वन्दन करता हूँ, नित्य उसका गुणगान करता हूँ, आप नित्य ही हमारे चित्त में वास करें तथा हमारे ऊपर कृपा करें॥१॥

सीमन्तिनीसुन्दरि! कान्तिकम्रा कादम्बरी घूर्णितनेत्रपद्मा।
कदम्बमालाञ्छितकेशपाशा कलावती कौलिकचक्रमध्ये॥२॥

हे महाकालिके! सीमन्तिनीसुन्दरी, नम्रकान्तिवाली, कादम्बरी, नेत्र कमल में सदैव घूमनेवाली, कदम्ब के फूलों से गुथे हुए केशपाशोंवाली, कौलिक चक्र के मध्य में सदैव कलना करनेवाली, आपको शतश: नमस्कार है॥२॥

कन्दर्पदर्पोदरदीर्घबाहू कुमुद्वती बान्धवचारुनेत्रा।
कलाकलापा कलहंसनादा कलावती कामकलाविलासा॥३॥

हे कालिके! कन्दर्पदर्प (सर्वोच्चाभिमान) जिसके भीतर भरा है, बड़ी-वड़ी नेत्रोंवाली, कमल को धारण करनेवाली, बान्धवों, भक्तों की आखों को अच्छी लगनेवाली, कलाओं के रूप में विकसित होनेवाली, कलहंस का नाद करनेवाली, कलाओंवाली, कामकला में विलास करनेवाली, तुमको नित्य नमस्कार है॥३॥

यत्रैव सङ्ग: कुलसुन्दरीणां तत्रैव गङ्गा यमुना च तत्र।
वाराणसी मोक्षकरी तथा च तत्रैव गङ्गाम्बुधिसङ्गमश्च॥४॥

हे कालिके! जहाँ कुलसुन्दरियों के बीच तुम्हारा स्थान है वहीं गङ्गा-यमुना है, वहीं

वाराणसी तीर्थ है, वही मोक्ष करनेवाली है, वहीं गङ्गाजल का सङ्गम है, वहीं अमृत प्रवाह है, तुमको नित्य नमस्कार है।।४।।

पादारविन्दं कुलसुन्दरीणां देशान्तरे भावितसिद्धमार्गे।
विहारलोकस्तरुणानुभावं गृहान्धकूपे विमलं विभाति॥५॥

हे कालिके! तुम्हारा जो कुलसुन्दरियों के बीच पादारविन्द है वही अन्यत्र मार्गों सम्प्रदायों में सिद्धि का मार्ग है, तुम्हारा लोक में विहार करनेवाला यौवन युक्त भाव है, वहीं इस गृह (शरीर) में स्थित अन्धकूप में विमल लगता है, तुमको नित्य नमस्कार है।।५।।

कुरङ्गनेत्रातिकुरङ्गनेत्रा शिवाभवानीति शिवाभवानिः।
मृगेन्द्रमध्याति मृगेन्द्रमध्या गौरीति गौरीति वचस्तु भूयात्॥६॥

हे कालिके! तुम कुरङ्गनेत्रों में अतिकुरङ्गनेत्रोंवाली हो, तुम्हीं शिवाओं में (शक्तियों) भवानियों (स्त्रीयों) में शिवा (कलिका) और भवानी (पार्वती) रूप हो, मृगेन्द्रों के मध्य मृगेन्द्रमध्या हो, तुम्हे ही गौरी, महागौरी नामों से बार-बार कहा जाता है, तुमको नित्य नमस्कार है।।६।।

त्वं तारिणी नारकहारिणी त्वं त्वं कालिकातारणकारिका त्वम्।
वैरोचिनी दुःखविमोचिनी त्वं त्वं भैरवी त्वं भुवनेश्वरी त्वम्॥७॥

हे कालिके! तुम्हीं संसार के भवसागर से तारनेवाली हो, तुम्हीं नरक का हरण करने (नरक से बाहर निकालने) वाली हो, तुम्हीं तारनेवाली कालिका हो, तुम्हीं भैरवी हो, तुम्हीं भुवनेश्वरी हो, तुमको नित्य नमस्कार है।।७।।

दिगम्बरी पीनपयोधरा सा स्मराभिलाषा परिमुक्तकेशा।
सदा शिवाङ्कस्थितिरर्चिता सा श्यामाभिरामा परिपूर्णकामा॥८॥

हे कालिके! तुम दिगम्बरी पीनपयोधरा हो, काम की अभिलाषा करनेवाली, खुले हुए केशोंवाली हो, सदैव शिव के ही अङ्ग में रहनेवाली हो, श्यामल प्रकाश वाली हो, समस्त कामनाओं की परिपूर्णता करनेवाली हो, तुमको नित्य नमस्कार है।।८।।

श्री सुन्दरीणां चरणारविन्दं विना न मन्ये न च पूजयामि।
न च जल्पयामो न च कल्पयामो न चाश्रयामो न च देवमन्यम्॥९॥

हे कालि! श्रीस्वरूपिणी त्रिपुरसुन्दरी के चरण-कमलों का कभी कोई ध्यान नहीं किया, न कभी मान ही दिया और न कभी पूजन ही किया, हे त्रिपुरसुन्दरीस्वरूपिणी कालिके! तुम्हारे बिना कोई जप नहीं है न ही कोई पूजा की कल्पना ही की जा सकती है, तुम्हारे बिना कोई आश्रय नहीं है, तुम्हारे अतिरिक्त कोई देव भी नहीं है, तुमको नित्य नमस्कार है।।९।।

जपावली यावकजालवर्णा सौदामिनी दाडिमबीजवर्णा।
सुवर्णकाञ्ची परिबद्धमध्या सिद्धार्चिता सिद्धमयी विभाति॥१०॥

हे कालिके! तुम ही जपकाल की अक्षमाला में वर्णरूपा हो, तुम ही सौदामिनी हो,

तुम ही दाडिमफल में बीज के वर्णवाली हो, तुम ही सुवर्ण की आभा से युक्त हो कर मध्य में रहनेवाली हो, तुम ही सिद्धमयी तथा सिद्धों के द्वारा अर्चित हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥१०॥

कादम्बरी पानपरायणानां कुलाङ्गनानां वदनारविन्दम्।
ध्यानं ममैतत् स सदैव भूयात् तद्भावनाभावितभूरिभक्तिः॥११॥

हे कालिके! तुम कादम्बरी हो, तुम अमृतपानपरायणा हो, तुम ही कुलाङ्गनाओं में प्रभारूप से विराजमान हो, सदैव तुम्हारा ही रूप हमें ध्यान में प्रत्यक्ष हो, तुम्हारी ही भावना से भावित भक्ति से ओतप्रोत रहूँ, तुमको नित्य नमस्कार है॥११॥

त्वमेव बुद्धिश्च त्वमेव वृद्धिस्त्वमेव सिद्धिश्च त्वमेव ऋद्धिः।
प्रमात्मिका त्वं परमात्मिका त्वं प्रमाणमाता परमेश्वरी त्वम्॥१२॥

हे कालिके! तुम ही बुद्धि हो, तुम ही वृद्धि हो, तुम ही सिद्धि हो, तुम ही ऋद्धि हो, तुम ही प्रमारूपिणी हो, तुम ही परमात्मिका हो, तुम ही प्रमाण हो, तुम ही माता हो, तुम ही परमेश्वरी हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥१२॥

त्वं कार्तिकी कौतुकमूर्तिराद्या मयूरपृष्टार्पितपादपद्मा।
चन्द्रानना चारुचकोरनेत्रा किं स्तौमि मातस्तव पादपद्मे॥१३॥

हे कालिके! तुम ही कार्तिकी हो, तुम ही आद्या कौतुकरूपी मूर्ति हो, तुम ही मयूर के पीठ पर चिन्हित चरण कमल हो, तुम्हारे मुखकमल चन्द्रमा के सदृश हैं, तुम्हारे नेत्र सदैव अच्छे लगनेवाले हैं, हे माता! तुम्हारे चरणकमल के अतिरिक्त किसका पूजन करे, तुमको नित्य नमस्कार है॥१३॥

अत्युग्रदन्ताग्रधृता च नित्यं घोरानना घोरगभीरनादा।
संहारनिस्तारविधानकर्त्री वाराहि मातः स्तव एव सर्वम्॥१४॥

हे कालिके! तुम अति उग्र दाँतों को धारण करनेवाली हो, घोर आननवाली हो, घोर गम्भीर नाद करनेवाली हो, तुम संहार, निस्तार तथा विधान करनेवाली हो, हे माता! तुम वाराही रूपिणी हो, तुम्हारा ही सब स्तवन करते हैं, तुमको नित्य नमस्कार है॥१४॥

कालस्त्वमेव त्वमपीह काष्ठा त्वमेव चात्मा च मनस्त्वमेव।
श्रीब्रह्मशक्तिः खलुसत्यरूपा ज्योतिःस्वरूपा जगतः करोषि॥१५॥

हे कालिके! तुम ही काल हो, तुम ही काष्ठ के सदृश जड़रूप हो, तुम ही आत्मा हो, तुम ही मनरूप हो, तुम ही श्री हो, तुम ही ब्रह्म हो, तुम ही शक्ति हो, तुम ही ब्रह्मशक्ति हो, तुम ही सत्यरूप हो, तुम ही ज्योतिस्वरूपा हो, इस संसार में तुम ही प्रकाश करनेवाली हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥१५॥

त्वं वैष्णवी विष्णुस्वरूपिणी त्वं त्रैलोक्यरक्षाकरणैकदक्षा।
खगेन्द्ररूढा घननीलवर्णा विश्वेशरक्षानिलया त्वमेव॥१६॥

हे कालिके! तुम वैष्णवी तथा विष्णुस्वरूपिणी हो, तुम ही इस तीनों लोकों की रक्षा करने में समर्थ हो, तुम ही गरुड़ पर आरूढ़ हो, तुम ही मेघ के समान नील वर्णवाली हो, तुम ही विश्वेश की निलया, सृष्टि की रक्षा करनेवाली हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥१६॥

नानाकलाकेलिकुलालसङ्गी पीनस्तनी चन्द्रमुखी कदाचित्।
न विस्मरामो न च विस्मरामो न विस्मरामः कलहंसनादाम्॥१७॥

हे कालिके! तुम ही नाना प्रकार की कलाओं से केलि करनेवाली सङ्गी हो, तुम ही पीन स्तनवाली हो, तुम ही कहीं पर चन्द्रमुखी रूप से स्थित हो, तुम्हारे यह कलहंस नाद कभी विस्मरण न हो, कभी विस्मरण न हो, कभी भी विस्मरण न हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥१७॥

गतिस्त्वमेवासि गतिस्त्वमेव मतिस्तवमेवासि मतिस्त्वमेव।
धृतिस्त्वमेवासि धृतिस्त्वमेव श्रुतिस्त्वमेवासि श्रुतिस्त्वमेव॥१८॥

हे कालिके! तुम ही गतिरूप हो, तुम ही गति हो, तुम ही मतिरूप हो, तुम ही मति हो, तुम ही धृतिरूप हो, तुम ही धृति हो, तुम ही श्रुतिरूप हो, तुम ही श्रुति हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥१८॥

तमाललालाञ्छितमुण्डमाला काली करालाननलोलजिह्वा।
विमर्दयन्ति जगदादिमाता प्रचण्डचण्डासुरमुण्डखण्डान्॥१९॥

हे कालिके! तुम लालिमायुक्त मुण्डमाला को धारण करके शोभायमान हो, तुम ही काली हो, तुम ही कराल आननवाली हो, तुम लोल जिह्वा हो, हे आदि माता! इस जगत् का तुम ही विमर्दन करती हो, तुम ही प्रचण्डचण्डा (छिन्नमस्तिका) हो, तुम ही असुरों का मुण्ड छेदन करनेवाली चामुण्डा हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥१९॥

चतुर्भुजाप्याष्टभुजा त्वमेव षड्बाहुका षोडशहस्तयुक्ता।
सहस्त्रहस्ता शतपाणिवल्ली त्वं कालिके दशहस्तकासि॥२०॥

हे कालिके! तुम ही चार भुजाओंवाली हो, तुम ही आठ भुजाओंवाली हो, तुम ही सहस्त्रों हाथोंवाली हो, तुम ही शतपाणिवल्ली (सौ हाथों वाली) हो, तुम ही दश हाथों वाली कालिका हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२०॥

युगोऽपि वर्षः कल्पाश्च मासो नक्तं दिवा त्वं प्रलयो मुहूर्तम्।
त्वं कालरात्री विरला त्वमेव राकार्णवी कालमयी च काली॥२१॥

हे कालिके! तुम ही युग, वर्ष, कल्प, मासरूप हो, तुम ही रात्रि, दिवा तथा मुहूर्तरूपिणी हो, तुम ही प्रलय करनेवाली हो, तुम ही कालरात्रि हो, तुम ही विरला हो, तुम ही आकार धारण करनेवाली हो, तुम ही कालमयी हो और तुम ही काली हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२१॥

वर्णेश्वरी त्वं पुरवासिनी त्वं पुरान्तका त्वं परिपूर्णता त्वम्।
त्वमुग्रतारैकजटा त्वमेव सुसम्मुखी नीलसरस्वती च॥२२॥

हे कालि! तुम ही वर्णों की ईश्वरी हो, तुम ही शरीरों में निवास करनेवाली हो, तुम ही शरीरों का अन्त करनेवाली हो, तुम ही परिपूर्णता हो, तुम ही उग्रतारा हो, तुम ही एकजटातारा हो, तुम ही सुमुखी हो, तुम ही नीलसरस्वती रूपिणी हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२२॥

सर्पासना सर्पविभूषणैका धूमावती त्वं भवसीति मातः।
मातङ्गिनी त्वं बगला च माता त्वमेव काली करवालिनी च॥२३॥

हे कालिके! तुम सर्पासना हो, सर्परूप से विभूषित हो, तुम ही धूमावती हो, तुम ही मातङ्गिनी हो, तुम ही बगला हो, तुम ही करवालिनी काली हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२३॥

आधारलग्नं खलु मेरुदण्डं तद्धामयुक्तापि च पिङ्गला च।
इडा च दक्षेषु निरन्तरेषु सुषुम्नमध्या ग्रथितार्चकस्य॥२४॥

हे कालिके! तुम मेरुदण्ड के मूलाधार में निवास करनेवाली हो, तुम्हारा ही वाम धामयुक्त पिङ्गला हो, दक्षिण भाग में इडा रूप से निरन्तर प्रवाहित होती हो, तुम ही मध्य में सुषुम्ना रूप से ग्रथित होकर भक्तों की अर्चना ग्रहण करती हो अर्थात् तुम ही इडा-पिङ्गला-सुषुम्ना में प्रवाहित होती हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२४॥

चित्रान्तरस्था खलुवज्रनाड़ी मृणालतन्त्वर्धसुशूकसूक्ष्मा।
तन्मध्यगा येन विसूक्ष्मरूपा सा ब्रह्मनाड़ी तदनन्तरेऽपि॥२५॥

हे कालिके! तुम ही अन्तस्थ चित्रा नाड़ी और वज्रा नाड़ी स्वरूपिणी हो, तुम ही मृणलतन्तु के समान अतिसूक्ष्मा हो, उसमें भी मध्य में रहनेवाली जो अतिसूक्ष्म रूप है, वह ब्रह्मनाड़ी तुम ही हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२५॥

सहस्त्रपत्राम्बुजमेयगात्रा सुधासुरापानरतिप्रयुक्ता।
त्वं सर्व जीवा जननीस्वरूपा ब्रह्मस्वरूपा भवदेहमध्या॥२६॥

हे कालिके! तुम ही इस शरीर के अन्त:करण के चिदाकाश में, सहस्रार में सहस्र पत्रों के स्वरूप हो, तुम सुधारूपिणी हो, सुरा के पान में सदैव रतिप्रीति रखनेवाली हो, अमृतपान में सदैव उद्यत रहनेवाली हो, तुम सभी जीवों की जननीस्वरूपा हो, तुम ही भव के शरीर में रहनेवाली ब्रह्मस्वरूपा हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२६॥

त्वं कुण्डलिन्यर्ककोटीन्दुदीप्ता कोटीन्दुकान्तिर्भुजगप्रमाणा।
आधारयुक्ता कुलकुण्डसुप्ताप्यर्धस्वयम्भूवदनप्रकाशी॥२७॥

हे कालिके! तुम सूर्य-चन्द्र के समान दीप्त कुण्डलिनी स्वरूपिणी हो, तुम ही चन्द्र की कान्ति के समान सर्पाकृतिवाली हो, तुम मूलाधार में रहनेवाली हो, तुम शरीररूपी कुण्ड

के मूलाधार में सोई हुई हो, तुम ही स्वयंभू लिङ्गस्वरूपी शिवशरीर के आधे भाग में प्रकाश करनेवाली हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२७॥

कात्यायनी कामकला जयन्ती सावित्री पूर्णा मधुमांसलुब्धा।
त्वमेव पूर्णा वनदुर्गका च कामात्मिका कामवती त्वमेव॥२८॥

हे कालिके! तुम कात्यायनी हो, तुम कामकला हो, तुम जयन्ती हो, तुम ही सावित्री हो, तुम ही पूर्णा हो, तुम ही मधुरस तथा मांस का लोभ करनेवाली हो, तुम ही वनदुर्गा हो, तुम ही कामात्मिका, कामवती हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२८॥

गणेश्वरः षड्वदनः कुबेरो धनेशपुत्रो रविजो जयन्तः।
त्वं चित्रगुप्तश्च सुकर्मकर्ता यतीश्वरी देवमयी त्वमेव॥२९॥

हे कालिके! तुम ही गणेश्वर, षड्वदन(कार्तिकेय), कुबेर, धनेशपुत्र, रविपुत्र, जयन्त, चित्रगुप्त, सुकर्मकर्ता, यतीश्वरी तथा देवमयी हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२९॥

त्वमेव सर्वासि वदामि तत्त्वं त्वमेव सर्वस्तवकस्त्वमेव।
लिङ्गोऽप्यलिङ्गो यत एव सर्वे यतस्ततः सर्वमयी त्वमेव॥३०॥

हे कालिके! तुम ही सर्वमयी तत्त्वस्वरूपिणी हो, सभी तुम्हारा ही स्तबक है, सभी लिङ्गों-अलिङ्गों में तुम ही हो, जहाँ-तहाँ सर्वत्र तुम ही हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥३०॥

इदं स्तवेन्द्रं नित्यं च देव्या भक्त्यैकचिह्नं सततं पठेद् यः।
पिकस्वरः सर्वजनानुरागी दाता पुनीतो गुरुदेवभक्तः॥३१॥

यह देवी का स्तवेन्द्र भक्तिपूर्वक जो सतत मुक्त कण्ठ होकर मधुर स्वर से पाठ करता है, वह संसार में सभी लोगों को प्रिय, दातापुनीत तथा गुरुदेव का भक्त होता है॥३१॥

विघ्ने गणेशो भयदुर्गनाशो भोगी सुखी पूरितलोकभर्ता।
सदामुदः सर्वगणेश्वरोऽपि दयाचितो रत्नयुतश्चिरायुः॥३२॥

उस पाठकर्ता के विघ्नों का गणेश तथा भयों का दुर्गा नाश करती है, वह समस्त भोगों का भोग करनेवाला तथा सबकी पूर्ति करनेवाला भर्ता होता है, सदैव ही प्रसन्न तथा सेवकों से युक्त होता है, दया करनेवाला, सभी रत्नों से युक्त, चिरायु होता है॥३२॥

शतावधानो रणकालरुद्रो लोकाभिरामो भुवि सर्वदा सः।
जिह्वाग्रवाणीं युवतीं सृजन्तीं सुशीलयन्तीं परलोकविद्यः॥३३॥

वह शतावधान, रण में महाकालरुद्र होता है, वह लोक में लोकाभिराम होकर सर्वदा विचरण करता है, उसके जिह्वा के अग्रभाग में वाणी (सरस्वती) का निवास होता है, वह युवतियों से युक्त होता है तथा सुशील परलोक का जानकार होता है॥३३॥

महादेवीस्तवेन्द्रं परिपूर्णम्

❁

ब्रह्मगाथास्तवः

नमामि कृष्णरूपिणी कृशाङ्गयष्टिधारिणीम्।
समस्ततत्त्वसागरामपारगह्वरां शिवाम्॥१॥

हे कृष्णरूपिणी आपको नमस्कार है, कृश-अङ्गोंवाली, यष्टि (दण्ड) धारण करनेवाली नमस्कार है, समस्त तत्त्वों की अनन्त गहरे सागर के समान महादेवी शिवा को नमस्कार है॥१॥

प्रवालकन्धराञ्चितां स्फुरच्छशाङ्कशेखराम्।
ललाटनेत्रभास्वरां ज्वलत्प्रदीप्तमूर्धजाम्॥२॥

प्रवाल के समान प्रभावाली, चन्द्रमा के समान प्रकाशित, ललाट में नेत्र की शोभावाली, जलते हुए तेजवान मूर्धावाली कालिका को नमस्कार है॥२॥

महेशकश्यपार्चितां सनत्कुमारसंस्तुताम्।
सुरासुरेन्द्रवन्दितां यथार्थनिर्मिताद्भुताम्॥३॥

महेश तथा कश्यपादि ऋषियों के द्वारा अर्चित सनत्कुमारादि के द्वारा संस्तुत सुर तथा असुरों से वन्दित यथार्थ निर्मित अद्भुत देवी कालिका को नमस्कार है॥३॥

अतर्क्यचारुवेष्टितां विकारदोषवर्जिताम्।
मुमुक्षुभिर्विचेष्टितां विशेषतत्त्वशोचिताम्॥४॥

अतर्क्य, चारुवेष्टित, विकारादि दोषों से वर्जित, मुमुक्षुओं की चेष्टाओंवाली, विशेष तत्त्वोंवाली कालिका देवी को नमस्कार है॥४॥

नरास्थिनिर्मितस्रजं मृगेन्द्रवाहनाग्रजाम्।
प्रदुष्टसत्त्वभीषणां सदोदितैकलक्षणम्॥५॥

नरास्थिनिर्मित मालिका धारण करनेवाली, मृगेन्द्र (सिंह) वाहना, अग्रजा, प्रदुष्टसत्त्वभीषण (भयंकर काला), सदा उदित लक्षणोंवाली कालिका को नमस्कार है॥५॥

सुलक्षणां विलक्षणां भुजङ्गहारहारिणीम्।
कपालखड्गधारिणीं सुधार्मिकोपकारिणीम्॥६॥

सुन्दर लक्षणोंवाली, विशेष लक्षणोंवाली, सर्प के हार को धारण करनेवाली, कपालखड्ग धारण करनेवाली, सद्धर्म करनेवालों का उपकार करनेवाली कालिका को नमस्कार है॥६॥

सुरेन्द्रवैरिघातिनीं कुठारचापपाशिनीम्।
कृतान्तकामवासिनीं सुधाकपालमालिनीम्॥७॥

सुरेन्द्र के शत्रुओं का घात करनेवाली, कुठार-चाप-पाश धारण करनेवाली, कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, कामवासिनी, सुधाकपाल की मालाओं को धारण करनेवाली कालिका को नमस्कार है॥७॥

श्मशानभूमिवासिनीं सुनित्यकल्पशाखिनीम्।
द्विजेन्द्रवृन्दतारिणीं सहस्रसूर्यसन्निभाम्॥८॥

श्मशानभूमि में वास करनेवाली, सुन्दर नित्य कल्पों का निर्माण करनेवाली, द्विज वृन्द को तारनेवाली, सहस्रों सूर्य की प्रभावाली कालिका को नमस्कार है॥८॥

धनञ्जयैकवत्सलामशुद्धकालचञ्चलाम्।
सुनित्यतृप्तिमुज्ज्वलां प्रतापिनीं प्रजावतीम्॥९॥

धनञ्जयैकवत्सला, अशुद्धकालचञ्चला, सुन्दर नित्य तृप्तिप्रदायिनी, उज्वला, प्रतापिनी, प्रजावती कालिका को नमस्कार है॥९॥

नमामि मातरं सखीं सुकर्मकारणे गतिम्।
हरप्रियां च पार्वतीमनन्तशक्तिसम्पदाम्॥१०॥

हे माता! सुन्दर कर्म करने में गतिशील सखी भाव युक्त, हर की प्रिया, अनन्त शक्ति की सम्पदा पार्वती देवी को नमस्कार है॥१०॥

यशः-सुभुक्ति-मुक्तिदां नमोऽस्तु ते पराम्बिके।
शिवे द्विजेऽभयात्मिके जयेश्वरि त्रिलोचने॥११॥

यश-सुन्दर भुक्ति तथा मुक्ति देनेवाली हो, पराम्बिका हो, त्रिलोचना हो, जयेश्वरी हो, हे शिवे! द्विजमात्र को अभय प्रदान करनेवाली कालिका आपको नमस्कार है॥११॥

प्रसीद देवि पाहि मां जपन्ति च स्मरन्ति च।
स्तुवन्ति यं नरेश्वरा भवन्त्वमोघवाञ्छिताः॥१२॥

जो व्यक्ति तुम्हारा जप करता है, ध्यान करता है, स्तुति करता है, वह नरेश्वर अमोघ कामनाओं को भी पूरा कर लेता है॥१२॥

सदैव ते भवद्विषो नराः परे शिवेऽधुना।
प्रसीद मां करोमि किं नितान्तमोहितात्मना॥१३॥

इस युग में इस भवसागर में सभी जन कालुष्ययुक्त हो गये हैं, सभी शिवा से विमुख हो गये हैं, हे भगवति! मैं नितान्त मोहित चित्तवाला हूँ, क्या करूँ कि? आप प्रसन्न होइये॥१३॥

वृथा विचेष्टितस्य मे कुरु प्रसादमच्युतम्।
यदाश्रयोऽहमम्बिके लभेम सद्गतिं पराम्॥१४॥

हमारी समस्त चेष्टाएँ सभी वृथा हो गयी हैं, हमारे ऊपर अपना अच्युतकृपाप्रसाद का वर्षण करो, हम जिसका आश्रय ग्रहण करके हे अम्बिके! परम सद्गति को प्राप्त करें॥१४॥

इमां स्तुतिं मयेरितां पठन्ति देवि साधकाः।
न ते पुनः सुदुस्तरे पतन्ति मोहसागरे॥१५॥

इस मेरे द्वारा की गयी स्तुति का जो देवी का साधक नित्य पाठ करता है, वह फिर से कभी भी इस दुस्तर मोह के सागर में नहीं पड़ता है॥१५॥

काल्यष्टकम्

गलद् रक्तमुण्डावली कण्ठमाला महाघोररावा सुदंष्ट्रा कराला।
विवस्त्रा श्मशानालया मुक्तकेशी महाकालकामाकुला कालिकेयम्॥१॥

गले में रक्त प्रवाहित होते हुए मुण्डावली की कण्ठमाला धारण किये हुए, महाघोर राव (घोष) करनेवाली, बड़े-बड़े सुन्दर दाँतोंवाली, बिना वस्त्र धारण किये हुए दिगम्बरी, श्मशान में रहनेवाली, खुले हुए केशोंवाली, महाकाल के साथ कामासक्त कामकला में निपुण, कालिका को नमस्कार है॥१॥

भुजे वामयुग्मे शिरोऽसी दधाना वरं दक्षयुग्मेऽभयं वै तथैव।
सुमध्याऽपि तुङ्गस्तनभारनम्रा लसद्रक्तसृक्कद्वया सुस्मितास्या॥२॥

दोनों बायीं भुजाओं में शिर तथा खड्ग धारण किये हुए तथा दोनों दाहिने भुजाओं में वर तथा अभय मुद्रा धारण किये हुए, मध्य में भी सुन्दर स्तन उठे भार से झुके हुए, मुख से बहते हुए रक्त की धारा से शोभायमान कालिका को नमस्कार है॥२॥

शवद्वन्द्वकर्णावतंसा सुकेशी लसत्प्रेतपाणिप्रयुक्तैककाञ्ची।
शवाकारमञ्चाधिरूढा शिवाभिश्चतुर्दिक्षु शब्दायमानाऽभिरेजे॥३॥

सुन्दर केशोंवाली, कर्ण में दो शवों को कर्णाभूषण के रूप में धारण किये हुए, प्रेत के हाथों से निर्मित करधनी कमर में धारण किये हुए, शवाकार मञ्च पर आरूढ़, चारों दिशाओं में शिवाओं से युक्त, शब्दों से गुञ्जायमान कालिका को नमस्कार है॥३॥

विरञ्चाधिदेवास्त्रयस्तेगुणास्त्रीन् समाराध्य कालीं प्रधाना बभूवुः।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥४॥

ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों देवता जिसके तीन गुण स्वरूप है, तीनों देवता प्रधान रूप से काली की ही आराधना करते हैं, हे कालिके! तुम अनादि, सुरादि, मखादि, भवादि हो, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥४॥

जगन्मोहनीयं तु वाग्वादिनीयं सुहृत्योषिर्णी शत्रुसंहारणीयम्।
वचः स्तम्भनीयं किमुच्चाटनीयं स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥५॥

हे कालिका! तुम जगत् का मोहन करनेवाली हो, तुम ही वाणी रूप से वन्दनीय हो, तुम सुहृदय में रहनेवाली हो, तुम ही शत्रुओं का संहार करती हो, तुम ही वाणी का स्तम्भन करती हो, तुम ही उच्चाटन करती हो, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥५॥

इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली मनोजांस्तु कामान् यथार्थं प्रकुर्यात्।
कथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥६॥

तुम ही स्वर्ग प्रदान करनेवाली हो, समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाली कल्पवल्ली हो, तुम ही कामनाओं से मन को विजय दिलानेवाली हो, तुम ही यथार्थ को प्रकट करनेवाली हो,

तुम्हारी कथाओं से सभी नित्य कृतार्थ होते हैं, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं।।६।।

सुरापानमत्ते! सुभक्तानुरक्ते! लसत्पूतचित्ते! सदाविर्भवस्ते।
जपध्यानपूजासुधाधौतपङ्काः स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।७।।

हे कालिका! तुम सुरापान में सदैव मत्त रहनेवाली हो, सुन्दर भक्तो में अनुरक्त रहनेवाली हो, तुम्हारा पवित्र चित्त में सदा आविर्भाव होता है, जप, ध्यान, पूजा सभी अमृत सागर के कमल हैं, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं।।७।।

चिदानन्दकन्दं हसन्मन्दमन्दं शरच्चन्द्रकोटिप्रभापुञ्जबिम्बम्।
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतमानं स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।८।।

हे कालिका! मन्द-मन्द हास्य करती हुई चिदानन्दकन्द शरदकाल के चन्द्रमा के समान प्रभापुञ्जवाली मुनियों-कवियों के हृदय में द्योतमान, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं।।८।।

महामेघकाली सुरक्ताऽपि शुभ्रा कदाचिद्विचित्राकृतिर्योगमाया।
न बाला न वृद्धा न कामातुराऽपि स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।९।।

महामेघ के समान काली सुरक्त-शुभ्र, कभी-कभी विचित्र आकृतियोंवाली योगमाया, न बाला, न वृद्धा, न कामातुरा ही हो, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं।।९।।

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं मया लोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत्।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात् स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।१०।।

इस लोक में, मेरे हृदय में महागुप्त भाव को प्रकाशित करो, आप के ध्यान करने में चपलतायुक्त भाववाला मैं हूँ, हे कालिके! मेरे अपराधों को क्षमा करो, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं।।१०।।

यदि ध्यानयुक्तः पठेद्यो मनुष्यस्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।
गृहे चाष्टसिद्धिर्मृते चापि मुक्तिः स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।११।।

इस महास्तोत्र का यदि ध्यानयुक्त होकर जो मनुष्य पाठ करता है, वह पूरे संसार में विशाल होकर रहता है, घर में अष्टसिद्धियों को प्राप्त करता है तथा मरने के बाद मुक्ति प्राप्त करता है, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं।।११।।

काल्यष्टकं परिपूर्णम्

❀

कालिस्तवनम्

उल्लसद्दनुजवृन्दखेदिनी भूरिदुःखभवभीतिभेदिनी।
कण्ठलम्बितकपालमालिका मङ्गलं मम करोतु कालिका।।१।।

बढ़े हुए दानव-दलों को खेद पहुँचानेवाली, दुःख-समुदाय को नष्ट करनेवाली, कण्ठ

में लम्बायमान (लटकती हुई) कपाल (नरमुण्ड) की माला धारण की हुई कालिका हमारा सर्वदा मङ्गल करें॥१॥

शोणितार्द्रगजचर्मवासिनी मत्तभैरवमहाट्टहासिनी।
दैत्यबाहुकृतकाञ्चिनालिका मङ्गलं मम करोतु कालिका॥२॥

रक्त से रञ्जित गजचर्म धारण करनेवाली, मदमत्तभैरव के साथ महा अट्टहास करनेवाली, दैत्यों के बाहुओं की करधनी बनाकर धारण करनेवाली कालिका हमारा सर्वदा मङ्गल करें॥२॥

मेरुमन्दरविन्ध्यवासिनी संस्मृतासि दुरितौघनाशिनी।
या द्विजेति च कुमारिका मङ्गलं मम करोतु कालिका॥३॥

सुमेरु-मन्दराचल और विन्ध्याचल पर्वत पर निवास करनेवाली, स्मरण करने मात्र से ही समस्त दुरितौघ का नाश करनेवाली, जो द्विज जातियों में कुमारिका नाम से विख्यात हैं, वे कालिका हमारा सर्वदा मङ्गल करें॥३॥

चण्डमुण्डवधकेलिकारिका रक्तबीजरणदर्पहारिका।
कायकान्तिजितमेघमालिका मङ्गलं मम करोतु कालिका॥४॥

चण्डमुण्ड असुरों का खेल-खेल में वध करनेवाली, रक्तबीज असुर का दर्प हरण करनेवाली, जिनकी काया की कान्ति मेघ के समान है, वे कालिका हमारा सदा-सर्वदा मङ्गल करें॥४॥

आदिशक्ति कमला सनातनी कामक्रोधवरशूलदण्डिनी।
ब्रह्मचित्तसरसे मुरालिका मङ्गलं मम करोतु कालिका॥५॥

सनातनी भगवती आदिशक्ति कमला नामवाली, कामक्रोध का नाश करनेवाली, हाथों में त्रिशूल और दण्ड धारण करनेवाली, ब्रह्म के चित्त में आनन्द का प्रवाह करनेवाली कालिका हमारा सदा-सर्वदा मङ्गल करें॥५॥

अदिशक्ति मनसा सनातनी सम्मतासि गिरिकूटवासिनी।
पाहि मां भवने कुमारिका मङ्गलं मम करोतु कालिका॥६॥

सनातनी आदिशक्ति मनसा नाम धारिणी देवी, पर्वत के शिखर पर निवास करनेवाली, भवन में कुमारिका नाम धारण करनेवाली हमारी रक्षा-पालन करे तथा हमारा सदा सर्वदा मङ्गल करें॥६॥

राजसे सकलसर्गसज्जने सात्त्विकी च जगतां सुलक्षणे।
तामसी च जगतां सुरोलिका मङ्गलं मम करोतु कालिका॥७॥

राजस गुण के रूप में सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण करनेवाली, सात्त्विक रूप से सम्पूर्ण जगत् का हित करनेवाली, तामस गुण रूप से जगत् का लय करनेवाली कालिका हमारा सदा सर्वदा मङ्गल करें॥७॥

भक्तिनम्रमुनियक्षदेवता सिद्धकिन्नरसमूहसेविता।
शुम्भदैत्यमकरन्दकालिका मङ्गलं मम करोतु कालिका॥८॥

जिसे मुनि-यक्ष-देवता भक्ति पूर्वक नमन करते हैं, सिद्धों-किन्नरों का समूह जिनकी सेवा करता है, शुम्भ दैत्य का विनाश करके आनन्द देनेवाली कालिका हमारा सदा सर्वदा मङ्गल करें॥८॥

कालिस्तोत्रं परिपूर्णम्

❀

होमार्थतान्त्रिकाग्निस्थापनम्

सर्वप्रथम मूल मन्त्र से आचमन करके, कराङ्गन्यास के पश्चात् स्थण्डिल अथवा कुण्ड में अग्निस्थापनादि कृत्य करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा। निरीक्षण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं हूं अस्त्राय फट्। सम्प्रोक्षण करे(बहार दे)।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रूँ। तीन कुशाओं से सन्ताडित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ। स्रुवमूल अथवा कुशमूल से प्रागग्रोत्तरोत्तर क्रम से प्रादेश मात्र की तीन रेखा खींचे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ। प्रोक्षण करने के पश्चात् प्रत्येक रेखा पर गन्धाक्षत पुष्प चढ़ाये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मुकुन्दाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईशानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पुरन्धराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैवश्वताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

कुण्ड अथवा स्थण्डिल के मध्य में त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुर्द्वारात्मक भूपुर का निर्माण करे, कुशा बिछा कर तीन बार व्याहृतित्रय का उच्चारण कर अग्नि अरणी के द्वारा उत्पन्न अथवा कन्या या सुवासिनी द्वारा प्रदत्त या सूर्यकिरणों से उत्पन्न अग्नि लाकर संस्कार करे।

स्थण्डिलयन्त्रम्

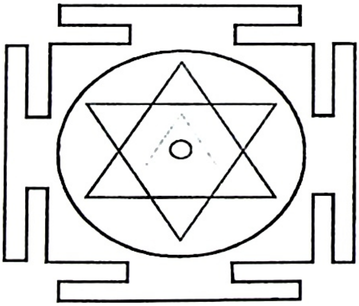

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रौं ॐ। त्रिकोण के मध्य में लिखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयादि पीठशक्तिभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कामेश्वरी-कामेश्वर-योगपीठात्मने नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये योगपीठात्मने नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वागीश्वरी ऋतुस्नातां समस्ताभरणन्विताम्।
वागीश्वरेण संयुक्तां नमाम्यखिलसिद्धये॥

समस्त आभूषणों से सुसज्जित ऋतुकाल के बाद स्नान की हुई कामेश्वरी देवी का कामेश्वर के साथ अपने समस्त सिद्धियों के लिए नमन करता हूँ।

कामोन्मत्त शिव तथा ऋतुमती देवी को ध्यान कर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा विपरीतप्रत्यङ्गिराशक्त्यै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रूँ सदाशिव ह्रौं महादेवाय शिवाय नमः।

शिव-शक्ति पूजन के बाद दोनों के संयोग से गर्भस्थ वह्नि का ध्यान पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फट्। अग्नि को लाकर कुण्ड के बाहर रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रूँ। ज्वलित अग्नि से किञ्चित् क्रव्यादंश भाग वायव्य कोण में निकाल दे, शेष अग्नि में देवांश की परिकल्पना करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं हूं फट्। सम्प्रोक्षण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नमः। अभ्यर्चन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ। द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ। षोडश बार जप कर सन्दहन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ। मत्स्य मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रूँ। भ्रूमध्य विन्दुस्थ अग्नि से प्रज्वलित अग्नि का एक्य करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ वह्नि चैतन्यं परिकल्पयामि। वह्नि चैतन्य भावन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रूँ वह्नि चैतन्यं ते नमः। चैतन्यता संयोजित कर मूल मन्त्र से दशधा अभिमन्त्रित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूँ। अवगुण्ठन कर योनि एवं धेनु मुद्रा का प्रदर्शन कर अग्नि ग्रहण कर कुण्ड की तीन परिक्रमा करके ध्यान करते हुए कुण्ड में अग्नि स्थापित करे।

ध्यानम्

शय्यागतां ऋतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीम्।
देवेन भज्यमानान्तां संस्मरेद्योनिमण्डले॥

ध्यान करके जानु से धरातल पर स्पर्श कर मूल मन्त्रोच्चारपूर्वक आत्मा में शिव बीज का ध्यानपूर्वक देवी योनि(कुण्ड) में छोड़े।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रीँ वागीश्वरीवागीश्वराभ्यां नमः। आज्याचमनीय प्रदान कर वह्निरूपी देवता का देवी गर्भ धारण ध्यान कर गर्भ रक्षार्थ काष्ठ छोड़े।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वाज्ञा आज्ञापय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ ह्रीँ ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हूँ फट् स्वाहा। ज्वालिनी मुद्रा से वह्नि प्रज्वलित करके अग्नि की प्रार्थना करे।

अग्नेर्प्रार्थना

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये विपरीतप्रत्यङ्गिरा नामासि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा। अग्नि का नामकरण करे।

पूजन करके प्रादेशमात्र समिधा का अग्नि में तूष्णी(मौन)हवन करने के पश्चात् तान्त्रिक विधि से गणेशादि वन्दन, दिग्बन्धन, भूतशुद्धि, प्राणायाम, मातृकान्यास, मूलन्यास करके स्वदेह में वह्निजिह्वा न्यास करे।

अग्निजिह्वान्यासः

सात्त्विक न्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्प्रूँ हिरण्यायै नमः लिङ्गे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ष्प्रूँ गगनायै नमः पायौ न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्प्रूँ रक्तायै नमः मूर्ध्निः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं व्प्रूँ कृष्णायै नमः वक्त्रे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ल्प्रूँ सुप्रभायै नमः घ्राणे न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं र्प्रूँ बहुरूपायै नमः नेत्रे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं य्प्रूँ अतिरिक्तायै नमः सर्वाङ्गे न्यसामि।

राजस न्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्प्रूँ पद्मरागायै नमः लिङ्गे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ष्प्रूँ सुवर्णायै नमः पायौ न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्प्रूँ भद्रलोहितायै नमः मूर्ध्निः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं व्प्रूँ लोहितायै नमः वक्त्रे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ल्प्रूँ श्वेतायै नमः घ्राणे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं र्प्रूँ धूमिन्यै नमः नेत्रे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं य्प्रूँ करालिकायै नमः सर्वाङ्गे न्यसामि।

तामस न्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्प्रूँ विश्वमूर्त्यै नमः लिङ्गे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ष्प्रूँ स्फुलिङ्गिन्यै नमः पायौ न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्प्रूँ धूम्रवर्णायै नमः मूर्ध्निः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं व्प्रूँ मनोजवायै नमः वक्त्रे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ल्प्रूँ लोहितायै नमः घ्राणे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं र्प्रूँ करालायै नमः नेत्रे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं य्प्रूँ कालिकायै नमः सर्वाङ्गे न्यसामि।

अग्न्यधिष्ठाता न्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्प्रूँ अमर्त्याय नमः लिङ्गे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ष्प्रूँ पित्रे नमः पायौ न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्प्रूँ गन्धर्वाय नमः मूर्ध्निः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं व्प्रूँ यक्षाय नमः वक्त्रे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ल्प्रूँ नागाय नमः घ्राणे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं र्प्रूँ पिशाचाय नमः नेत्रे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं य्प्रूँ राक्षसाय नमः सर्वाङ्गे न्यसामि।

विनियोग:—**ॐ अग्निमन्त्रस्य भृगुऋषिः गायत्रीछन्दः अग्निर्देवता रँ बीजं स्वाहा शक्तिः अग्नियजने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भृगुऋषये नमः शिरसि न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गायत्री छन्दसे नमः मुखे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्निर्देवतायै नमः हृदये न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ बीजाय नमः गुह्ये न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वाहा शक्तये नमः पादयोः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये नमः सर्वाङ्गे न्यसामि।

षडङ्गन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूम्रव्यापिने कवचाय हूम् न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धनुर्धराय अस्त्राय फट् न्यसामि।

कराङ्गन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सहस्रार्चिषे अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वस्तिपूर्णाय तर्जनीभ्यां नमः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उत्तिष्ठपुरुषाय मध्यमाभ्यां नमः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूम्रव्यापिने अनामिकाभ्यां नमः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सप्तजिह्वाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धनुर्धराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यसामि।

मूर्तिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये जातवेदसे नमः मूर्ध्नि न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये सप्तजिह्वाय नमः दक्षांसे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये हव्यवाहनाय नमः दक्षपार्श्वे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये अश्वोदरजाय नमः दक्षकट्याम् न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये वैश्वानराय नमः लिङ्गे न्यसामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये कौमारतेजसे नमः वामकट्याम् न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये विश्वमुखाय नमः वामपार्श्वे न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये देवमुखाय नमः वामांसे न्यसामि।

पीठन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पीतायै नमः न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्वेतायै नमः न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अरुणायै नमः न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कृष्णायै नमः न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूम्रायै नमः न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तीव्रायै नमः न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्फुलिङ्गिन्यै नमः न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रुचिरायै नमः न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्वालिन्यै नमः न्यसामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ वह्नेर्योगपीठात्मने नमः न्यसामि।

इष्टशक्तिन्यासः

इष्टशक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैः दोर्थैर्दोर्भिर्धारयन्तं जपाभम्।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः॥

उच्च वेदी पर स्वस्तिकाकार इष्टशक्ति के रूप में दोर्धी दोर्भि ध्यान जप में हिम कल्प के कमल पर आसीन जटाजूट धारी बद्धमौली वह्नि का ध्यान करता हूँ।

देवता को अपनी आत्म इष्ट को अग्निरूपी मानकर मानसोपचार पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ आत्ममूर्तये वह्नये नमः।

गन्धादि से पूजन करके सामान्यार्घ्य जल से मेखला परिसिंचन करके परिस्तरण करे, एक मेखलावाले कुण्ड में मेखला के नीचे, दो तथा तीन मेखला वाले कुण्ड में द्वितीय मेखला पर परिस्तरण करे, परिस्तरण में कुशाओं को कुण्ड के दक्षिण और उत्तर में पूर्वाग्र तथा पूर्व तथा पश्चिम में उत्तराग्र रखे; पश्चात् पूर्व को छोड़ कर दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर में एक हाथ का पलाश खण्ड रक्त वस्त्र वेष्टित करके रख कर उसपर दक्षिण में ब्रह्मा, पश्चिम में विष्णु तथा उत्तर में रुद्र की स्थापना कर उन पर गन्धाक्षतपुष्प समर्पित कर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विष्णवे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पुनः द्वितीय क्रम में पूर्ववत् वामा ज्येष्ठा रौद्री की स्थापना करके मध्य योनि में अम्बिका की स्थापना करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वामायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्येष्ठायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रौद्र्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अम्बिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ वह्नये नमः परिकल्पितासनं समर्पयामि।

अग्नि को कुण्ड के मध्य में आसन प्रदान करके चतुर्द्वारात्मक, वृत्तत्रय, अष्टदल, षड्कोणात्मक भावना(ध्यान)कर आधारशक्त्यादि वह्निमण्डलान्त पीठ पूजा करे।

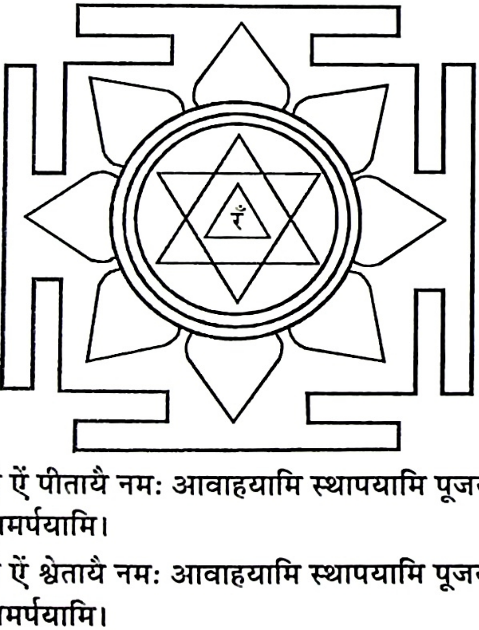

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पीतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्वेतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अरुणायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कृष्णायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूम्रायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तीव्रायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्फुलिङ्गिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रुचिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्वालिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मध्ये

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ वह्नेर्योगपीठात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पीठदेवताविन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ मण्डूकाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कालाग्निरुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कच्छपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आधारशक्तये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ प्रकृतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कूर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अनन्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पृथिव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षीरसमुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रत्नद्वीपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कल्पवृक्षाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मणिमण्डपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्ञानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैराग्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐश्वर्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अधर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अज्ञानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अवैराग्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनैश्वर्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कल्पान्तकारायानन्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पद्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आनन्दकन्दाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं संविन्नालाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विकारमयकेशरेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पूजन करके कलाओं सहित वह्न्यर्कसोममण्डलों का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दशकलात्माने रँ अग्निमण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ धूम्रार्चिषे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ ऊष्मायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ ज्वलिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ ज्वालिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ सुश्रियै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सुरूपायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ कपिलायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ळँ हव्यवाहनायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ कव्यवाहनायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं द्वादशकलात्मने मँ सूर्यमण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ भँ तपिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ बँ तापिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ फँ धूम्रायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ पँ मरीच्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ धँ रुच्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ दँ सुषुम्णायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ थँ भोगदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ तँ विश्वायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ णँ बोधिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ ढँ धारिण्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ डँ क्षमायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षोडशकलात्मने वँ सोममण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अमृतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ मानदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ पूषायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ तुष्ट्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ पुष्ट्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ रत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ शशिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ धृत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऌँ चन्द्रिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ कान्त्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ ज्योत्स्नायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ श्रियै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ प्रीत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ अङ्गदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ पूर्णायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः पूर्णामृतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सत्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ रजसे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ तमसे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आत्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अन्तरात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ परमात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्ञाँ ज्ञानात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं माँ मायातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कलातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विँ विद्यातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ परतत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पीठशक्तिनांपूजनम्

पीठों के बाद पीठशक्तियों का पूजन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विजयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अजितायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अपराजितायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नित्यायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विलासिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दोग्घ्रयै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अघोरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मङ्गलायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयादिशक्तिभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्,
शूलं कपालं दधतं कराब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवि।
पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषूच्छूलं हस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्,
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥

मानसोपचार पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ वह्नियोगपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा वह्नेर्मूर्तिं परिकल्पयामि आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्निमूर्ति कल्पित कर अधोलिखित मन्त्र से आवाहन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा भगवान अग्नि इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ आवाहिता भव, संस्थापितो भव।

आवाहनी तथा संस्थापनी मुद्रा का प्रदर्शन करे।

अग्नेर्प्राणप्रतिष्ठा

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः रँ वह्नेः प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः रँ वह्नेः जीव इह स्थितः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः रँ वह्नेः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ रँ वह्नेः गर्भानादि पञ्चदश सन्स्कारान्सम्पादयामि।

ॐ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा इदं पाद्यार्घ्याचमनीयं स्नानीयं पुनराचमनीयं जलगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यफलताम्बूल-दक्षिणाद्युपचारं समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नि श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

पूजन के बाद तीन बार मूलमन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

अग्न्यावरणार्चनम्

प्रथमावरणपूजनम्—पूर्वोक्त यन्त्र के मध्य में पूजन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्प्रूँ हिरण्यायै नमः लिङ्गे पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ष्प्रूँ गगनायै नमः पायौ पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्प्रूँ रक्तायै नमः मूर्ध्निः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं व्रूँ कृष्णायै नमः वक्त्रे पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ल्रूँ सुप्रभायै नमः घ्राणे पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं र्रूँ बहुरूपायै नमः नेत्रे पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं य्रूँ अतिरिक्तायै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

द्वितीयावरणपूजनम्—षट्कोणों में पूजन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सहस्रर्चिषे हृदयाय नमः पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूम्रव्यापिने कवचाय हूम् पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धनुर्धराय अस्त्राय फट् पूजयामि।

तृतीयावरणपूजनम्—अष्टपत्रों में पूजन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये जातवेदसे नमः मूर्ध्नि पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये सप्तजिह्वाय नमः दक्षांसे पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये हव्यवाहनाय नमः दक्षपार्श्वे पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये अश्वोदरजाय नमः दक्षकट्याम् पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये वैश्वानराय नमः लिङ्गे पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये कौमारतेजसे नमः वामकट्यां पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये विश्वमुखाय नमः वामपार्श्वे।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये देवमुखाय नमः वामांसे।

चतुर्थावरणपूजा—भूपुर में पूजन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इन्द्राय नमः पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये नमः पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यमाय नमः पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्ऋतये नमः पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरुणाय नमः पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वायवे नमः पूजयामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सोमाय नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईशानाय नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनन्ताय नमः पूजयामि।

पञ्चमावरणपूजनम्—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वज्राय नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शक्त्यै नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दण्डाय नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खड्गाय नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाशाय नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अंकुशाय नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गदाय नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिशूलाय नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पद्माय नमः पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चक्राय नमः पूजयामि।

ॐ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा साङ्गाय सपरिवाराय सावरणाय सायुधाय सशक्तिकाय वह्नये श्रीपादुकां पूजयामि।

अग्निस्थापनं परिपूर्णम्

⁂

कुशकण्डिकापात्रासादनञ्च

अपने बाँयें भाग में पूर्व की तरफ मुख करके कुशाओं को बिछा कर उसके ऊपर अस्त्र मन्त्र से प्रच्छालित स्रुक-स्रुवा, प्रणीता-प्रोक्षणी, स्फ्रे, आज्यपात्र, चरुपात्रादि को अधोमुख करके रखे, सभी पात्रों को पवित्र करके पुनः प्रच्छालन करके नमः मन्त्र से सामान्यार्घ्य जल से सम्प्रोक्षण करे।

ॐ हूँ फट्। सभी पात्रों को प्रच्छालित करे।

ॐ नमः। सामान्यार्घ्य जल से सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ह्रीँ। शुद्ध जल प्रोक्षणी पात्र में रखे।

ॐ ह्रीँ। प्रोक्षणी पात्र के जल में क्रम से विम्बत्रय का अभ्यर्चन करे।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु॥

शङ्खमुद्रा द्वारा अन्तरिक्ष में सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन करे।

ॐ हूँ फट्। अङ्कुश मुद्रा से संरक्षण करे।

ॐ हूँ फट्। कवच मुद्रा से अवगुण्ठन करे।

ॐ ह्रीँ। गन्धपुष्पाक्षतपवित्रादि छोड़े।

ॐ हूँ। हाथ से ढक कर अभिमन्त्रित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं। प्रणीता पात्र को सामान्यार्घ्योदक से परिपूर्ण करे।

ॐ क्लीँ क्रीँ हूँ क्रौँ स्फ्रैँ। प्रणीता पात्र के जल से प्रोक्षणी पात्र का सिंचन करे।

ॐ क्लीँ क्रीँ हूँ क्रौँ स्फ्रैँ। प्रणीता पात्र के जल से प्रोक्षणी पात्र को परिपूर्ण करे।

ॐ क्लीँ क्रीँ हूँ क्रौँ स्फ्रैँ। प्रोक्षणी पात्र के जल से यागद्रव्यों का प्रोक्षण करे।

ब्रह्मा-वरणम्

अपने दक्षिण भाग में कुशासन पर ब्रह्मा को आसन दे कर उपविष्ट करे।

ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्माऽहं श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता यज्ञकर्माङ्गभूतेऽस्मिन् होमकर्मणि अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्माणं भवन्तं अहं वृणे।

ब्रह्मा प्रतिवचन कहे—**वृतोस्मि**।

वासोलङ्कारादि से ब्रह्मा का पूजन करके स्रुक् स्रुव का संस्कार करे।

ऊर्ध्वमुख स्रुक् स्रुव को ग्रहण करके अधोमुख कर अग्नि में प्रतपन कर बाँयें हाथ में दोनों को धारण कर दाहिने हाथ से कुश लेकर उस कुश के अग्र भाग से स्रुक् स्रुव के अग्र भाग का मध्य से मध्य का तथा मूल से मूल भाग का शोधन करके प्रोक्षणी के जल से सम्प्रोक्षण कर वह्नि में प्रतपन करके कुशाओं को अग्नि में प्रक्षेप कर स्वदक्षिण भाग में कुशाओं के ऊपर स्रुक् स्रुव को रख कर आज्य संस्कार करे।

ॐ हूँ फट्। आज्य पात्र से दोषों का निसेचन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं। प्रोक्षणी के जल से सम्प्रोक्षण करे।

ॐ यँ। सन्ताडन करे।

ॐ हूँ। अभ्युक्षण करके संस्कारचतुष्टय करके कुण्ड से अग्न्याङ्गार लेकर वायुकोण में स्थापित कर उपर आज्य स्थापित करे।

ॐ नमः। आज्य में तपाये।

ॐ हूँ। घृताक्त कुशत्रय अथवा समिधात्रय लेकर अग्नि में छोड़े।

ॐ अस्त्राय फट्।

मुष्टिमात्र प्रज्वलित कुशाओं को लेकर अग्नि की प्रदक्षिणा करके प्रदर्शित कर अग्नि में छोड़े।

पुनः अङ्गार के ऊपर रखे आज्य पात्र को अपने सामने रखे, उस अङ्गार को अग्नि में प्रक्षेपित कर मार्जन करके जल से हाथ धोकर प्रादेश मात्र की पवित्री लेकर पृथक् पृथक् दोनों हाथ में लेकर अस्त्राय फट् मन्त्र से वह्नि के सम्मुख लाकर उत्प्लावन कर पवित्री को स्थानान्तर में रखे, पुनः उसी प्रकार से कुशद्वय लेकर नमः मन्त्र के द्वारा आत्मसम्मुख घृत का सम्प्लावन करके कुशद्वय तथा पूर्वस्थापित पवित्रद्वय को अग्नि में छोड़े।

ॐ अस्त्राय फट्। वह्नि के सम्मुख लाये।

ॐ नमः। आत्मसम्मुख घृत का सम्प्लावन कर पश्चात् प्रादेश मात्र सदग्रन्थि कुशद्वय आज्य पात्र में छोड़ कर आज्य के दक्षिण भाग में शुक्लपक्ष, वाम भाग में कृष्ण पक्ष, का चिन्तन कर, वाम में इडा नाड़ी तथा दक्षिण में पिङ्गला नाड़ी की भावना कर दोनों के मध्यभाग में सुषुम्ना का चिन्तन कर हवन करे।

ॐ नमः। मन्त्र से दाहिने भाग से आज्य ग्रहण करे।

ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम। अग्नि के दक्षिण लोचन में हवन कर सम्पात भाग दक्षिण में छोड़े।

ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम। अग्नि के वाम लोचन में हवन कर सम्पात भाग वाम में छोड़े।

ॐ नमः। मध्य भाग से आज्य ग्रहण करे।

ॐ अग्निषोमाभ्यां स्वाहा इदं अग्निषोमाभ्यां न मम। अग्नि के ललाट लोचन में हवन कर सम्पात भाग वहीं पूर्ववत् मध्य भाग में छोड़े। हवन ध्यानपूर्वक करे।

ॐ अग्नये स्विष्टिकृते स्वाहा इदं अग्नये स्विष्टिकृते न मम। अग्नि के मुख में हवन कर सम्पात भाग वहीं पूर्ववत् मध्य भाग में छोड़ कर पञ्चाहुति प्रदान करे।

ॐ स्वाहा।

ॐ भूः स्वाहा।

ॐ भुवः स्वाहा।

ॐ स्वः स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

ॐ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा। आहुतित्रय प्रदान कर अग्नि का षोडश संस्कार करे।

ॐ अग्नेः गर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा।

संस्कार में सर्वत्र आज्य से आठ आहुति प्रदान करे।

ॐ अग्नेः पुंसवनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ अग्नेः सीमान्तोन्नयनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ अग्नेः जातकर्म सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ अग्नेः नालच्छेदनं सम्पादयामि स्वाहा।

मन्त्र से आज्य सम्प्लुत पञ्च समिधा का हवन करे।

ॐ अग्नेः सूतकं शोधयामि स्वाहा।

ॐ अग्नेः त्वं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरानामासि स्वाहा।

नामकरण में अपने इष्टदेवता के नाम से नामकरण करे।

ॐ अग्नेः नामकरणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ अग्नेः निष्क्रमणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ अग्नेः अन्नप्राशनं सम्पादयामि स्वाहा।

साकल्य की आहुति प्रदान करे।

ॐ अग्नेः चूडाकरणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ अग्नेः उपनयनं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ अग्नेः महानाग्न्यव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ अग्नेः महाव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ अग्नेः उपनिषद्व्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ अग्नेर्गर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ अग्नेः गोदानव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ अग्नेः समावर्तनं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ अग्नेः विवाहं सम्पादयामि स्वाहा।

मूलाग्र घृतसम्प्लुत समिधा लेकर कामेश्वर-कामेश्वरी को तीन आहुति प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ कामेश्वर-कामेश्वरीभ्यां स्वाहा।

कामेश्वर-कामेश्वरी का हवन करने के बाद पञ्चोपचार से पूजित करके स्वहृदय से उद्वासित करे पश्चात् सप्तजिह्वादि आवरण देवताओं के लिए आहुति प्रदान करे।

सप्तजिह्वाहुतिः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्प्रूँ हिरण्यायै नमः स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ष्प्रूँ गगनायै नमः स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्प्रूँ रक्तायै नमः स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं व्प्रूँ कृष्णायै नमः स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ल्प्रूँ सुप्रभायै नमः स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं र्प्रूँ बहुरूपायै नमः स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं य्प्रूँ अतिरिक्तायै नमः स्वाहा।

षडङ्गाहुतिः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सहस्रार्चिषे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वस्तिपूर्णाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उत्तिष्ठपुरुषाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धूम्रव्यापिने स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सप्तजिह्वाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धनुर्धराय स्वाहा।

अग्निमूर्त्याहुतिः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये जातवेदसे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये सप्तजिह्वाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये हव्यवाहनाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये अश्वोदरजाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये वैश्वानराय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये कौमारतेजसे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये विश्वमुखाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये देवमुखाय स्वाहा।

दिक्पालाहुतिः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इन्द्राय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यमाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्ऋतये स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरुणाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वायवे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सोमाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईशानाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनन्ताय स्वाहा।

दिक्पालास्त्राहुतिः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वज्राय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शक्त्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दण्डाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खड्गाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाशाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अंकुशाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गदायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिशूलाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पद्माय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चक्राय नमः।

स्रुचि में चार स्रुवा आज्य लेकर स्रुचि के ऊपर स्रुवा रख शृङ्गाग्र पर पुष्प रख कर खड़े होकर वौषडन्त अग्नि मन्त्र से आहुति प्रदान करे।

ॐ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय साङ्गाय सपरिवाराय सावरणाय सायुधाय सशक्तिकाय वह्नये वौषट्।

गणपति मन्त्र का दश विभाग करके दश आहुति प्रदान करे।

१—ॐ स्वाहा।

२—ॐ श्रीँ स्वाहा।

३—ॐ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा।

४—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ स्वाहा।

५—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ स्वाहा।

६—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ स्वाहा।

७—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये स्वाहा।

८—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये वरवरद स्वाहा।

९—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये वरवरद सर्वजनं मे स्वाहा।

१०—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

पूरे मन्त्र से चार आहुति प्रदान करके अग्नि में देवी के पीठदेवताओं का गन्धार्चन करके आहुति प्रदान करे।

ॐ मण्डूकादि सर्वमङ्गलायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

श्रीष्टदेवताय हवनम्

ॐ सद्यः छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरैर्विभ्रतीम्,
घोरास्या शिरसास्रता सुरुचिरामुन्मत्तकेशावलीम्।
सृक्काऽसृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालंकृतीम्,
श्यामाङ्गीं कृतमेखलां शवकरे देवी भजेत्कालिकाम्॥

ध्यान कर अग्नि में इष्टदेवता की भावना कर आवाहन करके आवाहनादि दश मुद्राओं को प्रदर्शित कर मूल मन्त्र से यथाविहित संख्या में आहुति प्रदान करके आवरण देवताओं को आहुति प्रदान करे।

प्रथमावरणाहुतिः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काल्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कामकाल्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भद्रकाल्यै स्वाहा।

द्वितीयावरणाहुतिः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वत्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लक्ष्म्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विष्णवे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उमायै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय स्वाहा।

गुरुपंक्त्याहुतिः

दिव्यौघाय—
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महादेव्यम्बाशक्त्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महादेवानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिपुरानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भैरवानन्दनाथाय स्वाहा।

सिद्धौघाय—
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पूर्णदेवानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चलचित्तानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चलचलानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुमारानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरदानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्मरदीपानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मायाम्बायै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मायावत्यम्बायै स्वाहा।

मानवौघाय—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विमलानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुशलानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मत्सेनानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुधाकरानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रह्लादानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सनकानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वसिष्ठानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बोधानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मीनानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गोरक्षनाथानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भोजदेवानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रजापत्यानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मूलदेवानन्दनाथाय नमः स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रन्तिदेवानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विघ्नेश्वरानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हुताशनानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समयानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सन्तोषानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वगुरवानन्दनाथाय स्वाहा।

रश्मिदेवताहवनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काल्यम्बादेव्यै स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कपालिन्यम्बादेव्यै स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुल्लाम्बादेव्यै स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुरुकुल्लाम्बादेव्यै स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विरोधीन्यम्बादेव्यै स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विप्रचित्ताम्बादेव्यै स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उग्राम्बादेव्यै स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उग्रप्रभाम्बादेव्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दीप्ताम्बादेव्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नीलाम्बादेव्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घनाम्बादेव्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बलाकाम्बादेव्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मात्राम्बादेव्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मुद्राम्बादेव्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मित्राम्बादेव्यै स्वाहा।

ब्राह्म्यादि अष्टशक्त्याहवनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्राह्म्यम्बायै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैष्णव्यम्बायै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं माहेश्वर्यम्बायै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कौमार्यम्बायै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अपराजितायै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाराह्यम्बायै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नारसिंह्यम्बायै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चामुण्डाऽम्बायै स्वाहा।

अष्टभैरवायहवनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं असिताङ्गभैरवाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रुरुभैरवाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चण्डभैरवाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रोधभैरवाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उन्मत्तभैरवाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कपालिभैरवाय नमः स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भीषणभैरवाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं संहारभैरवाय स्वाहा।

योगिनीनां हवनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीसन्तापिन्यै स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं संहारिण्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रौद्र्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भ्रामिण्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जृम्भिण्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं द्राविण्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षोभिण्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मोहिन्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्तम्भिनि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उच्चाटिन्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्वालिन्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मर्दिन्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नाशिन्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शोषिण्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कीलिन्यै स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भक्षिण्यै स्वाहा।

दशदिक्पालायहवनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इन्द्राय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यमाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्ऋतये स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरुणाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वायवे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सोमाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईशानाय स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनन्ताय स्वाहा।

दशदिक्पालायुधायहवनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वज्राय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शक्त्यै स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दण्डाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खड्गाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाशाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अङ्कुशाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गदाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिशूलाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पद्माय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चक्राय स्वाहा।

खड्गाद्यास्त्राय हवनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खड्गाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कपालाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डमर्वे स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिशूलाय स्वहा।

वटुकाद्याय हवनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वटुकाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं योगिनीभ्यो स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गणपतये स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षेत्रपालाय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राजराजेश्वराय स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यन्त्रस्थसमस्तदेवताभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रूं क्ष्रौं याँ राँ लाँ वाँ आँ क्रौं महाकालभैरव सर्वविघ्नान्नाशय नाशय ह्रीँ श्रीँ फट् स्वाहा। विहित संख्या का दशांश हवन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा। मूल मन्त्र से अयुत आहुति प्रदान करे अथवा मूल मन्त्र में सहस्रनाम का योजन कर अयुत हवन करे।

१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै देवि प्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शशिशेखरायै स्वाहा।

३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सममासायै स्वाहा।

४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धर्मिण्यै स्वाहा।
५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समस्तसुरशीमुख्यै स्वाहा।
६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सुमुख्यै स्वाहा।
७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सर्वसम्पत्तिजनन्यै स्वाहा।
८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समधायै स्वाहा।
९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सिन्धुसेविन्यै स्वाहा।
१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शम्भुसीमन्तिन्यै स्वाहा।
११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सोमाराध्यायै स्वाहा।
१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वसुधारसायै स्वाहा।
१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रसायै स्वाहा।
१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रसवत्यै स्वाहा।
१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेलायै स्वाहा।
१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वन्यायै स्वाहा।
१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वनमालिन्यै स्वाहा।
१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वनजाक्ष्यै स्वाहा।
१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वनचर्यै स्वाहा।
२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वन्यै स्वाहा।
२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वनविनोदिन्यै स्वाहा।
२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेगिन्यै स्वाहा।
२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेगदायै स्वाहा।
२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेगबलस्थानायै स्वाहा।
२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बलाधिकायै स्वाहा।
२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कलायै स्वाहा।
२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कलाप्रियायै स्वाहा।
२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कौलिकोमलायै स्वाहा।
२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कालकामिन्यै स्वाहा।
३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कमलायै स्वाहा।
३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कमलावत्यै स्वाहा।

३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कमलस्थायै स्वाहा।
३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुलीनायै स्वाहा।
३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुटिलायै स्वाहा।
३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कान्तायै स्वाहा।
३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कोकिलायै स्वाहा।
३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुलभाषिण्यै स्वाहा।
३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कीरकेलिकलायै स्वाहा।
३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै काल्यै स्वाहा।
४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कपालिन्यै स्वाहा।
४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कालिकायै स्वाहा।
४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै केशिन्यै स्वाहा।
४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुशावर्त्तायै स्वाहा।
४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कौशाम्ब्यै स्वाहा।
४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै केशवप्रियायै स्वाहा।
४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै काश्यै स्वाहा।
४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै काशापहायै स्वाहा।
४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै काशीशयायै स्वाहा।
४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै काशायै स्वाहा।
५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै केशदायिन्यै स्वाहा।
५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुण्डल्यै स्वाहा।
५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुण्डलीस्थायै स्वाहा।
५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुण्डलाङ्गायै स्वाहा।
५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुण्डलाङ्गदमण्डितायै स्वाहा।
५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुशापाश्यै स्वाहा।
५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुमुदिन्यै स्वाहा।
५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुमुदप्रीतिवर्द्धिन्यै स्वाहा।
५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुन्दप्रियायै स्वाहा।
५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुन्दरुच्यै स्वाहा।

६०. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुरङ्गायै स्वाहा।
६१. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुरङ्गमदमर्दिन्यै स्वाहा।
६२. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुरङ्गनयनायै स्वाहा।
६३. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुन्दायै स्वाहा।
६४. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुरुवृन्दाभिनन्दिन्यै स्वाहा।
६५. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुशुम्भायै स्वाहा।
६६. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुसुमायै स्वाहा।
६७. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै किञ्चित्क्वणक्त्यै स्वाहा।
६८. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै किणिकायै स्वाहा।
६९. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कट्वै स्वाहा।
७०. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कठोरायै स्वाहा।
७१. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै करणायै स्वाहा।
७२. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कण्ठायै स्वाहा।
७३. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कौमुद्यै स्वाहा।
७४. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कम्बुकण्ठिन्यै स्वाहा।
७५. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कपर्दिन्यै स्वाहा।
७६. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कपटिन्यै स्वाहा।
७७. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कठिन्यै स्वाहा।
७८. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कालकण्ठिकायै स्वाहा।
७९. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै किंबृहस्तायै स्वाहा।
८०. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुमार्यै स्वाहा।
८१. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुरुन्दायै स्वाहा।
८२. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुसुमप्रियायै स्वाहा।
८३. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुञ्जरस्थायै स्वाहा।
८४. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुञ्जरतायै स्वाहा।
८५. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुम्भिकुम्भस्तनद्वयायै स्वाहा।
८६. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुम्भिगायै स्वाहा।
८७. ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै करभोरव्यै स्वाहा।

८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कदलीदलायै स्वाहा।
८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कदलीदलशालिन्यै स्वाहा।
९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुपितायै स्वाहा।
९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कठोरस्थायै स्वाहा।
९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कङ्काल्यै स्वाहा।
९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कन्दशेखरायै स्वाहा।
९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै एकान्तवासिन्यै स्वाहा।
९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै किञ्चित्कम्पमानशिरोरुहायै स्वाहा।
९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कादम्बर्यै स्वाहा।
९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कदम्बस्थायै स्वाहा।
९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुङ्कुम्यै स्वाहा।
९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै प्रेमधारिण्यै स्वाहा।
१००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुटुम्बिन्यै स्वाहा।
१०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै प्रियायुक्तायै स्वाहा।
१०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्रतवे स्वाहा।
१०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्रतुकर्यै स्वाहा।
१०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्रियायै स्वाहा।
१०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कात्यायन्यै स्वाहा।
१०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कृत्तिकायै स्वाहा।
१०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कार्तिकेयप्रवर्तिन्यै स्वाहा।
१०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कामपत्न्यै स्वाहा।
१०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कामधात्र्यै स्वाहा।
११०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कामेश्यै स्वाहा।
१११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कामवन्दितायै स्वाहा।
११२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कामरूपायै स्वाहा।
११३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कामगत्यै स्वाहा।
११४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कामाक्ष्यै स्वाहा।
११५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै काममोहितायै स्वाहा।

११६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खड्गिन्यै स्वाहा।
११७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खेचर्यै स्वाहा।
११८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खञ्जायै स्वाहा।
११९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खञ्जरीटेक्षणायै स्वाहा।
१२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खलायै स्वाहा।
१२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खरगायै स्वाहा।
१२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खरनासायै स्वाहा।
१२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खरास्यायै स्वाहा।
१२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खेलनप्रियायै स्वाहा।
१२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खड्गिन्यै स्वाहा।
१२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खेचर्यै स्वाहा।
१२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खट्वायै स्वाहा।
१२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खरखट्वाङ्गधारिण्यै स्वाहा।
१२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खलखण्डिन्यै स्वाहा।
१३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विख्यातायै स्वाहा।
१३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खण्डितायै स्वाहा।
१३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खाण्डव्यै स्वाहा।
१३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्थिरायै स्वाहा।
१३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खण्डप्रियायै स्वाहा।
१३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खण्डखाद्यायै स्वाहा।
१३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सेन्दुखण्डायै स्वाहा।
१३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै खञ्जन्यै स्वाहा।
१३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गङ्गायै स्वाहा।
१३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गोदावर्यै स्वाहा।
१४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गौर्यै स्वाहा।
१४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गोमत्यै स्वाहा।
१४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गौतम्यै स्वाहा।
१४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गयायै स्वाहा।

१४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गौगज्यै स्वाहा।
१४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गगनायै स्वाहा।
१४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गारुण्यै स्वाहा।
१४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गरुणध्वजायै स्वाहा।
१४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गीतायै स्वाहा।
१४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गीतप्रियायै स्वाहा।
१५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गोत्रायै स्वाहा।
१५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गोत्रक्षयकर्यै स्वाहा।
१५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गदायै स्वाहा।
१५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गिरिभूपालदुहितायै स्वाहा।
१५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गोगायै स्वाहा।
१५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै गोकुलवर्द्धिन्यै स्वाहा।
१५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घनस्तन्यै स्वाहा।
१५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घनरुच्यै स्वाहा।
१५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घनोर्व्यै स्वाहा।
१५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घननि:स्वलायै स्वाहा।
१६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घूत्कारिण्यै स्वाहा।
१६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घूतकर्यै स्वाहा।
१६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घुघूकपरिवारितायै स्वाहा।
१६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घण्टानादप्रियायै स्वाहा।
१६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घण्टायै स्वाहा।
१६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घनाघोटप्रवाहिन्यै स्वाहा।
१६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घोररूपायै स्वाहा।
१६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घोरायै स्वाहा।
१६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घूनिप्रीत्यै स्वाहा।
१६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घनाञ्जन्यै स्वाहा।
१७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घृताच्यै स्वाहा।
१७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घनमुष्टायै स्वाहा।

१७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घटायै स्वाहा।

१७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घण्टायै स्वाहा।

१७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घटामृतायै स्वाहा।

१७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घटास्यायै स्वाहा।

१७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घटनाद्यायै स्वाहा।

१७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै घातपातनिवारिण्यै स्वाहा।

१७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चञ्चरीकायै स्वाहा।

१७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चकोर्यै स्वाहा।

१८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चामुण्डायै स्वाहा।

१८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चीरधारिण्यै स्वाहा।

१८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चातुर्यै स्वाहा।

१८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चपलायै स्वाहा।

१८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चारुश्चलायै स्वाहा।

१८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चेलायै स्वाहा।

१८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चलाचलायै स्वाहा।

१८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चतुश्चिरन्तनायै स्वाहा।

१८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चाकाचियायै स्वाहा।

१८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चामीकरच्छव्यै स्वाहा।

१९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चापिन्यै स्वाहा।

१९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चपलायै स्वाहा।

१९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चम्प्वै स्वाहा।

१९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चितितायै स्वाहा।

१९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चिन्तामण्यै स्वाहा।

१९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चितायै स्वाहा।

१९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चातुर्वर्णमय्यै स्वाहा।

१९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चञ्चचौरायै स्वाहा।

१९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चापायै स्वाहा।

१९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चमत्कृत्यै स्वाहा।

२००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चक्रवर्त्यै स्वाहा।
२०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वधूचक्रायै स्वाहा।
२०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चक्राङ्गायै स्वाहा।
२०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चक्रमोदिन्यै स्वाहा।
२०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चेतश्चर्यै स्वाहा।
२०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चित्तवृत्तिरचेतायै स्वाहा।
२०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चेतनप्रदायै स्वाहा।
२०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चपिर्यायै स्वाहा।
२०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चम्पकप्रीत्यै स्वाहा।
२०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चण्ड्यै स्वाहा।
२१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चण्डालवासिन्यै स्वाहा।
२११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चिरञ्जिवित्वदायै स्वाहा।
२१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चित्तायै स्वाहा।
२१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तरुमूलनिवासिन्यै स्वाहा।
२१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छुरिकायै स्वाहा।
२१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छत्रमध्यस्थायै स्वाहा।
२१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छिद्रायै स्वाहा।
२१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छेदनकर्य्यै स्वाहा।
२१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छिदायै स्वाहा।
२१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छुन्छुन्दर्यै स्वाहा।
२२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पलप्राप्त्यै स्वाहा।
२२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छुदर्य्यै स्वाहा।
२२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छुदरीभनिभस्वनायै स्वाहा।
२२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छालिन्यै स्वाहा।
२२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छलवच्छिन्नायै स्वाहा।
२२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छिटिकायै स्वाहा।
२२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छेककृत्यै स्वाहा।
२२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छद्मिन्यै स्वाहा।

२२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छान्दस्यै स्वाहा।
२२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छायायै स्वाहा।
२३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छायाकृत्यै स्वाहा।
२३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै छाद्यै स्वाहा।
२३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जयायै स्वाहा।
२३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जयदायै स्वाहा।
२३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जात्यै स्वाहा।
२३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जम्भिण्यै स्वाहा।
२३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जामलायुतायै स्वाहा।
२३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जवापुष्पप्रियायै स्वाहा।
२३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जायायै स्वाहा।
२३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जाप्यायै स्वाहा।
२४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अजाप्यायै स्वाहा।
२४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जगज्जनन्यै स्वाहा।
२४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जम्बूप्रियायै स्वाहा।
२४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जयस्थायै स्वाहा।
२४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जङ्गमायै स्वाहा।
२४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जङ्गमप्रियायै स्वाहा।
२४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जन्त्व्यै स्वाहा।
२४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जन्तुप्रधानायै स्वाहा।
२४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जरत्कर्णायै स्वाहा।
२४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जरद्गवायै स्वाहा।
२५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जातप्रियायै स्वाहा।
२५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जीवनस्थायै स्वाहा।
२५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जीमूतसदृशच्छव्यै स्वाहा।
२५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जन्यायै स्वाहा।
२५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जनहितायै स्वाहा।
२५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जायायै नमः

२५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जम्भ्यै स्वाहा।
२५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जम्भिलशालिन्यै स्वाहा।
२५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जयदायै स्वाहा।
२५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै जयवद्धाहायै स्वाहा।
२६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ज्वालिन्यै स्वाहा।
२६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ज्वरहायै स्वाहा।
२६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ज्वर्यै स्वाहा।
२६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै झञ्झनीलमय्यै स्वाहा।
२६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै झञ्झायै स्वाहा।
२६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै झणत्कारायै स्वाहा।
२६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अचलायै स्वाहा।
२६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै झिण्टीशायै स्वाहा।
२६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै झस्यकृत्यै स्वाहा।
२६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै झम्पायै स्वाहा।
२७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यमत्तासनिवारिण्यै स्वाहा।
२७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै टङ्ककारायै स्वाहा।
२७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै टङ्कधरायै स्वाहा।
२७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै टङ्काराकारणाटव्यै स्वाहा।
२७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ठकुरायै स्वाहा।
२७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ठीत्कृत्यै स्वाहा।
२७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ठिण्ठीरयै नम।
२७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अवसनावृत्तायै स्वाहा।
२७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ठण्ठायै स्वाहा।
२७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नीलमय्यै स्वाहा।
२८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ठण्ठाठणत्कारकराङ्कसायै स्वाहा।
२८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै डाकिन्यै स्वाहा।
२८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै डामरायै स्वाहा।
२८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै डिण्डिमध्वन्यै स्वाहा।

२८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै डिण्डिमध्वनिनादिन्यै स्वाहा।
२८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ढक्कायै स्वाहा।
२८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ढक्काप्रियस्वनायै स्वाहा।
२८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ढक्कारायै स्वाहा।
२८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तपिन्यै स्वाहा।
२८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तापिन्यै स्वाहा।
२९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तरुण्यै स्वाहा।
२९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तुन्दिलायै स्वाहा।
२९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तुन्दायै स्वाहा।
२९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तामस्यै स्वाहा।
२९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तपःप्रियायै स्वाहा।
२९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ताम्रायै स्वाहा।
२९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ताम्राम्बरायै स्वाहा।
२९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ताल्यै स्वाहा।
२९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तालीदलविभूषिण्यै स्वाहा।
२९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तुरङ्गायै स्वाहा।
३००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै त्वरितायै स्वाहा।
३०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तोतायै स्वाहा।
३०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तोतलादिन्यै स्वाहा।
३०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तादिन्यै स्वाहा।
३०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तुलायै स्वाहा।
३०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तापत्रयहरायै स्वाहा।
३०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तारायै स्वाहा।
३०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तालकेश्यै स्वाहा।
३०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तमालिन्यै स्वाहा।
३०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तमालदलायै स्वाहा।
३१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तमालदलवच्छायायै स्वाहा।
३११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तालस्वनवत्यै स्वाहा।

३१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तम्यै स्वाहा।
३१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तामस्यै स्वाहा।
३१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तमिस्रायै स्वाहा।
३१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तीव्रायै स्वाहा।
३१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तीव्रपराक्रमायै स्वाहा।
३१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तटस्याग्रायै स्वाहा।
३१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लतैलाक्तायै स्वाहा।
३१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तारिण्यै स्वाहा।
३२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तपनद्युत्यै स्वाहा।
३२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तिलोत्तमायै स्वाहा।
३२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तिलककृत्तायै स्वाहा।
३२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तारकायै स्वाहा।
३२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तारकादेशशेखरायै स्वाहा।
३२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तिलपुष्पायै स्वाहा।
३२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तिलपुष्पप्रियायै स्वाहा।
३२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तारायै नम।
३२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तारकेशकुटुम्बिन्यै स्वाहा।
३२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्थाणुपत्न्यै स्वाहा।
३३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्थितिकर्यै स्वाहा।
३३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्थलस्थायै स्वाहा।
३३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्थलवर्द्धिन्यै स्वाहा।
३३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्थित्यै स्वाहा।
३३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्थैर्यायै स्वाहा।
३३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वविष्ठायै स्वाहा।
३३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्थावत्यै स्वाहा।
३३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्थूलविग्रहायै स्वाहा।
३३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दन्तिन्यै स्वाहा।
३३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दण्डिन्यै स्वाहा।

३४०.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दीनायै स्वाहा।
३४१.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दरिद्रायै स्वाहा।
३४२.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दीनवत्सलायै स्वाहा।
३४३.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै देव्यै स्वाहा।
३४४.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दैत्यदामिन्यै स्वाहा।
३४५.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दन्तभूषणायै स्वाहा।
३४६.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दयावत्यै स्वाहा।
३४७.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दमवत्यै स्वाहा।
३४८.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दमदायै स्वाहा।
३४९.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दाडिमस्तन्यै स्वाहा।
३५०.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दन्दशूकनिभायै स्वाहा।
३५१.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दैत्यदारिण्यै स्वाहा।
३५२.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै देवताननायै स्वाहा।
३५३.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दोलाक्रीडायै स्वाहा।
३५४.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दोलाक्रीडादलायै स्वाहा।
३५५.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दम्पत्यै स्वाहा।
३५६.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै देवतामय्यै स्वाहा।
३५७.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दशादीपस्थितायै स्वाहा।
३५८.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दोषायै स्वाहा।
३५९.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दोषहायै स्वाहा।
३६०.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दोषकारिण्यै स्वाहा।
३६१.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दुर्गायै स्वाहा।
३६२.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दुर्गतिशमन्यै स्वाहा।
३६३.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दुर्गमायै स्वाहा।
३६४.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दुर्गवासिन्यै स्वाहा।
३६५.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दुर्गन्धनाशिन्यै स्वाहा।
३६६.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दुःस्थायै स्वाहा।
३६७.ॐ हूं ह्लीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दुःस्वप्नशमनकारिण्यै स्वाहा।

३६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दुर्वारायै स्वाहा।
३६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दुन्दुभिध्वनायै स्वाहा।
३७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दूरगायै स्वाहा।
३७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दूरवासिन्यै स्वाहा।
३७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दरदायै स्वाहा।
३७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दरहायै स्वाहा।
३७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दात्र्यै स्वाहा।
३७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दयादायै स्वाहा।
३७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दुहितायै स्वाहा।
३७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दशायै स्वाहा।
३७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धुरन्धरायै स्वाहा।
३७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धुरीणायै स्वाहा।
३८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धौरेय्यै स्वाहा।
३८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धनदायिन्यै स्वाहा।
३८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धीरायै स्वाहा।
३८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अधीरायै स्वाहा।
३८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धरित्र्यै स्वाहा।
३८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धर्मदायै स्वाहा।
३८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धीरमानसायै स्वाहा।
३८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धनुर्धरायै स्वाहा।
३८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धमन्यै स्वाहा।
३८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धूर्त्तायै स्वाहा।
३९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धूर्त्तपरिग्रहायै स्वाहा।
३९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धूमवर्णायै स्वाहा।
३९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धूमपानायै स्वाहा।
३९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धूमलायै स्वाहा।
३९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै धूममोदिन्यै स्वाहा।
३९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नलीन्यै स्वाहा।

३९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कन्दान्यै स्वाहा।
३९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नीरन्दायै स्वाहा।
३९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नन्दिन्यै स्वाहा।
३९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नन्दबालिकायै स्वाहा।
४००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नवीनायै स्वाहा।
४०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नर्मदायै स्वाहा।
४०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नर्मयै स्वाहा।
४०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नेम्यै स्वाहा।
४०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नियमायै स्वाहा।
४०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निश्चयायै स्वाहा।
४०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निर्मलायै स्वाहा।
४०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निगमाचारायै स्वाहा।
४०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निम्नगायै स्वाहा।
४०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नग्निकायै स्वाहा।
४१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निम्यै स्वाहा।
४११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नालायै स्वाहा।
४१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निरन्तरायै स्वाहा।
४१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निघ्न्यै स्वाहा।
४१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निर्लोपायै स्वाहा।
४१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निर्गुणायै नम।
४१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नत्यै स्वाहा।
४१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नीलग्रीवायै स्वाहा।
४१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नीरीहायै स्वाहा।
४१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निरञ्जनजन्यै स्वाहा।
४२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नव्यै स्वाहा।
४२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नवनीतप्रियायै स्वाहा।
४२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नार्यै स्वाहा।
४२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नरकार्णवतारिण्यै स्वाहा।

४२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नारायण्यै स्वाहा।
४२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निराकारायै स्वाहा।
४२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निपुणायै स्वाहा।
४२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निपुणप्रियायै स्वाहा।
४२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निशायै स्वाहा।
४२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निद्रायै स्वाहा।
४३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नरेन्द्रस्थायै स्वाहा।
४३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अनमितायै स्वाहा।
४३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमितापिच्वे स्वाहा।
४३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निर्गुण्डिकायै स्वाहा।
४३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निर्गुण्डायै स्वाहा।
४३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निर्मांसायै स्वाहा।
४३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नासिकाभिधायै स्वाहा।
४३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पताकिन्यै स्वाहा।
४३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पताकायै स्वाहा।
४३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पलप्रीत्यै स्वाहा।
४४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यशश्विन्यै स्वाहा।
४४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पीनायै स्वाहा।
४४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पीनस्तनायै स्वाहा।
४४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै (रुद्र)पत्न्यै स्वाहा।
४४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पवनाशनशायिन्यै स्वाहा।
४४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै परायै स्वाहा।
४४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पराकलायै स्वाहा।
४४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पाकायै स्वाहा।
४४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पाककृत्यायै स्वाहा।
४४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रतिप्रियायै स्वाहा।
४५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पवनस्थायै स्वाहा।
४५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सुपवनायै स्वाहा।

४५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तापस्यै स्वाहा।
४५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै प्रीतिवर्द्धिन्यै स्वाहा।
४५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पशुवृद्धिकर्यै स्वाहा।
४५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुष्ट्यै स्वाहा।
४५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पोषण्यै स्वाहा।
४५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुष्पवर्द्धिन्यै स्वाहा।
४५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुष्पिण्यै स्वाहा।
४५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुस्तककरायै स्वाहा।
४६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुन्नागतलवासिन्यै स्वाहा।
४६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुरन्दरप्रियायै स्वाहा।
४६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै प्रीत्यै स्वाहा।
४६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुरमार्गनिवासिन्यै स्वाहा।
४६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पेशायै स्वाहा।
४६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पाशकरायै स्वाहा।
४६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पाशबन्धहायै स्वाहा।
४६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पांशुलायै स्वाहा।
४६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पश्च्यै स्वाहा।
४६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पटपटाशायै स्वाहा।
४७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै परशुधारिण्यै स्वाहा।
४७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै काशिन्यै स्वाहा।
४७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पापघ्न्यै स्वाहा।
४७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पति (शिव) पत्न्यै स्वाहा।
४७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पतितायै स्वाहा।
४७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अपतितायै स्वाहा।
४७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पिशाच्यै स्वाहा।
४७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पिशाचघ्न्यै स्वाहा।
४७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पिशितासनायै स्वाहा।
४७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पिशिताशनतोषितायै स्वाहा।

४८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पानदायै स्वाहा।
४८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पानपात्रायै स्वाहा।
४८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पानदानकरोद्यतायै स्वाहा।
४८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पूषायै स्वाहा।
४८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै प्रसिद्ध्यै स्वाहा।
४८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पीयूषायै स्वाहा।
४८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पूर्णायै स्वाहा।
४८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पूर्णमनोरथायै स्वाहा।
४८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पतद्गर्भायै स्वाहा।
४८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पतद्गात्रायै स्वाहा।
४९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पौनायै स्वाहा।
४९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुन्यायै स्वाहा।
४९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पिवापुरायै स्वाहा।
४९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पङ्किलायै स्वाहा।
४९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पङ्कमग्नायै स्वाहा।
४९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यंङ्गिरायै पादीपायै स्वाहा।
४९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पञ्जरस्थितायै स्वाहा।
४९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पञ्चमायै स्वाहा।
४९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पञ्चयामायै स्वाहा।
४९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पञ्चतायै स्वाहा।
५००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मञ्चमप्रियायै स्वाहा।
५०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पञ्चमुद्रायै स्वाहा।
५०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुण्डरीकायै स्वाहा।
५०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पिङ्गलायै स्वाहा।
५०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पिङ्गललोचनायै स्वाहा।
५०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै प्रियङ्गवे स्वाहा।
५०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मञ्जर्यै स्वाहा।
५०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पिण्ड्यै स्वाहा।

५०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पण्डितायै स्वाहा।
५०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पाण्डुरप्रभायै स्वाहा।
५१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै प्रेतासनायै स्वाहा।
५११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै प्रियालुस्थायै स्वाहा।
५१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पाण्डुघ्न्यै स्वाहा।
५१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पीत्तसापहायै स्वाहा।
५१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै फलिन्यै स्वाहा।
५१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै फलदात्र्यै स्वाहा।
५१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै फलश्रीयै स्वाहा।
५१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै फणिभूषणायै स्वाहा।
५१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै फूत्कारकारिण्यै स्वाहा।
५१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्फारायै स्वाहा।
५२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै फुल्लायै स्वाहा।
५२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै फुल्लम्बुजासनायै स्वाहा।
५२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै फिरङ्गहस्तायै स्वाहा।
५२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्फितमत्यै स्वाहा।
५२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्फित्यै स्वाहा।
५२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्फितिकरस्थायै स्वाहा।
५२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बनमालायै स्वाहा।
५२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बलारात्यै स्वाहा।
५२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बलिन्यै स्वाहा।
५२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बलवर्द्धिन्यै स्वाहा।
५३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेणुवाद्यायै स्वाहा।
५३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वनचर्यै स्वाहा।
५३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वीरायै स्वाहा।
५३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वीजनय्यै स्वाहा।
५३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विद्यायै स्वाहा।
५३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विद्याप्रदायै स्वाहा।

५३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विद्याबोधिन्यै स्वाहा।
५३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेददायिन्यै स्वाहा।
५३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बुधमात्रे स्वाहा।
५३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बुद्धायै स्वाहा।
५४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वनमालावत्यै स्वाहा।
५४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वरायै स्वाहा।
५४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वरदायै स्वाहा।
५४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वारुण्यै स्वाहा।
५४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वीणायै स्वाहा।
५४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वीणावादनतत्परायै स्वाहा।
५४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विनोदिन्यै स्वाहा।
५४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विनोदस्थायै स्वाहा।
५४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वैष्णव्यै स्वाहा।
५४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विष्णुवल्लभायै स्वाहा।
५५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विद्यायै स्वाहा।
५५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वैद्यायै स्वाहा।
५५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चिकीत्सायै स्वाहा।
५५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विवशायै स्वाहा।
५५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विश्वविश्रुतायै स्वाहा।
५५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वितन्द्रायै स्वाहा।
५५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विह्वलायै स्वाहा।
५५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेलायै स्वाहा।
५५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विरावायै स्वाहा।
५५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विरतिज्वरायै स्वाहा।
५६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विविधार्ककरायै स्वाहा।
५६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वीरायै स्वाहा।
५६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बिम्बोष्ठ्यै स्वाहा।
५६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बिम्बवत्सलायै स्वाहा।

५६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विन्ध्यस्थायै स्वाहा।
५६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वारवन्द्यायै स्वाहा।
५६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वरीयानपरायै स्वाहा।
५६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वित्त्यै स्वाहा।
५६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेदान्तवेद्यायै स्वाहा।
५६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बोधायै स्वाहा।
५७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेदायै स्वाहा।
५७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विजयप्रदायै स्वाहा।
५७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विरोधवर्धिन्यै स्वाहा।
५७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वन्द्यायै स्वाहा।
५७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वन्ध्याबन्धिनिवारिण्यै स्वाहा।
५७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भयन्यै स्वाहा।
५७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भगमालायै स्वाहा।
५७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भवान्यै स्वाहा।
५७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भयभाविन्यै स्वाहा।
५७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भीमायै स्वाहा।
५८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भीमाननायै स्वाहा।
५८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भौम्यै स्वाहा।
५८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भङ्गुरायै स्वाहा।
५८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भीमदर्शनायै स्वाहा।
५८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भिल्लीकायै स्वाहा।
५८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भल्लधरायै स्वाहा।
५८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भीरवे स्वाहा।
५८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भेरुण्डायै स्वाहा।
५८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भयापहायै स्वाहा।
५८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भगसर्पिण्यै स्वाहा।
५९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भगायै स्वाहा।
५९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भगरूपायै स्वाहा।

५९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भगालयायै स्वाहा।
५९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भगासनायै स्वाहा।
५९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भगामोदायै स्वाहा।
५९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भेर्यै स्वाहा।
५९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै डङ्काररञ्जिन्यै स्वाहा।
५९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भीषणायै स्वाहा।
५९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भीषणरावायै स्वाहा।
५९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भगवत्यै स्वाहा।
६००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भूषणायै स्वाहा।
६०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भारद्वाजायै स्वाहा।
६०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भोगदात्र्यै स्वाहा।
६०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भवघ्न्यै स्वाहा।
६०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भूत्यै स्वाहा।
६०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भूतिभूषणायै स्वाहा।
६०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भूतिदायै स्वाहा।
६०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भूमिदात्र्यै स्वाहा।
६०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भूपतित्वप्रदायिन्यै स्वाहा।
६०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भ्रमर्यै स्वाहा।
६१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भ्रामर्यै स्वाहा।
६११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नीलायै स्वाहा।
६१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भूपालमुकुटस्थितायै स्वाहा।
६१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भूपालस्थितायै स्वाहा।
६१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मतायै स्वाहा।
६१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मनोहरमनायै स्वाहा।
६१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मानिन्यै स्वाहा।
६१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मोहिन्यै स्वाहा।
६१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मह्यै स्वाहा।
६१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महालक्ष्म्यै स्वाहा।

६२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मदक्षीबायै स्वाहा।
६२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मदीयायै स्वाहा।
६२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मदीरालयायै स्वाहा।
६२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मदोद्धतायै स्वाहा।
६२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मन्दगस्थायै स्वाहा।
६२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै माधव्यै स्वाहा।
६२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मधुमन्दिन्यै स्वाहा।
६२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मेधायै स्वाहा।
६२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मेधकर्यै स्वाहा।
६२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मेध्यायै स्वाहा।
६३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मध्यायै स्वाहा।
६३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मध्यवयस्थितायै स्वाहा।
६३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मद्यपायै स्वाहा।
६३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मांसलायै स्वाहा।
६३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मत्स्यमोदिन्यै स्वाहा।
६३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मैथुनोद्धतायै स्वाहा।
६३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मुद्रायै स्वाहा।
६३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मुद्रावत्यै स्वाहा।
६३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मातृकायै स्वाहा।
६३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मायायै स्वाहा।
६४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महिमायै स्वाहा।
६४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मायामहिममन्दिरायै स्वाहा।
६४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महामायायै स्वाहा।
६४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महाविद्यायै स्वाहा।
६४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महामार्यै स्वाहा।
६४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महेश्वर्यै स्वाहा।
६४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महादेववध्वै स्वाहा।
६४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मान्यायै स्वाहा।

६४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मधुरायै स्वाहा।
६४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वीरमण्डलायै स्वाहा।
६५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मेदस्विन्यै स्वाहा।
६५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै एकश्रियै स्वाहा।
६५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महिषासुरमर्दिन्यै स्वाहा।
६५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मण्डपस्थायै स्वाहा।
६५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मठस्थायै स्वाहा।
६५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मदिरागमगर्वितायै स्वाहा।
६५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मोक्षदायै स्वाहा।
६५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मुण्डमालायै स्वाहा।
६५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मालायै स्वाहा।
६५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मालाविलासिन्यै स्वाहा।
६६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मातङ्गिन्यै स्वाहा।
६६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मतङ्गायै स्वाहा।
६६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मतङ्गतनयायै स्वाहा।
६६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मधुस्त्रावायै स्वाहा।
६६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मधुरसायै स्वाहा।
६६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मधूककुसुमप्रियायै स्वाहा।
६६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यामिन्यै स्वाहा।
६६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यामिनीनाथायै स्वाहा।
६६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यामिनीनाथभूषायै स्वाहा।
६६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यावकरञ्जितायै स्वाहा।
६७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यवाङ्कुरायै स्वाहा।
६७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यावाङ्कुरप्रियायै स्वाहा।
६७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मायायावन्यै स्वाहा।
६७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यौवनाधिपायै स्वाहा।
६७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यमघ्न्यै स्वाहा।
६७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यमकन्यायै स्वाहा।

६७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यजमानस्वरूपिण्यै स्वाहा।
६७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यज्ञायै स्वाहा।
६७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यज्वायै स्वाहा।
६७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यजुर्यज्वायै स्वाहा।
६८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यशोपिकरायै स्वाहा।
६८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यशोपिकरकारिण्यै स्वाहा।
६८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यज्ञसूत्रप्रदायै स्वाहा।
६८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ज्येष्ठायै स्वाहा।
६८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यज्ञकर्मकर्यै स्वाहा।
६८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यशस्विन्यै स्वाहा।
६८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यकारस्थायै स्वाहा।
६८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै यूपस्तम्भनिवासिन्यै स्वाहा।
६८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रञ्जितायै स्वाहा।
६८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै राजपत्न्यै स्वाहा।
६९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रमायै स्वाहा।
६९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रवेरण्यै स्वाहा।
६९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रजोवत्यै स्वाहा।
६९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रजश्चित्रायै स्वाहा।
६९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रजन्यै स्वाहा।
६९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रजनीपत्यै स्वाहा।
६९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रागिन्यै स्वाहा।
६९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै राज्यनीराज्यायै स्वाहा।
६९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै राज्यायै स्वाहा।
६९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै राज्यदायै स्वाहा।
७००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै राज्यवर्धिन्यै स्वाहा।
७०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै राजन्वत्यै स्वाहा।
७०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै राजनीत्यै स्वाहा।
७०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रजतवासिन्यै स्वाहा।

७०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रमण्यै स्वाहा।
७०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रमणीयायै स्वाहा।
७०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रामायै स्वाहा।
७०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रामावत्यै स्वाहा।
७०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रत्यै स्वाहा।
७०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रेतोवत्यै स्वाहा।
७१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रतोत्साहायै स्वाहा।
७११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रोगहृद्यै स्वाहा।
७१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निरोगकारिण्यै स्वाहा।
७१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रङ्गायै स्वाहा।
७१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रङ्गवत्यै स्वाहा।
७१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रागायै स्वाहा।
७१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रागज्ञायै स्वाहा।
७१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रागकृद्यै स्वाहा।
७१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रणायै स्वाहा।
७१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रञ्जिकायै स्वाहा।
७२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अरञ्जिकायै स्वाहा।
७२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रञ्जायै स्वाहा।
७२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रञ्जिन्यै स्वाहा।
७२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रक्तलोचनायै स्वाहा।
७२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रक्तचर्मधरारञ्जायै स्वाहा।
७२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रक्तस्थायै स्वाहा।
७२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रक्तवादिन्यै स्वाहा।
७२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रम्भायै स्वाहा।
७२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रम्भफलप्रीत्यै स्वाहा।
७२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रम्भोरवे स्वाहा।
७३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै राघवप्रियायै स्वाहा।
७३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रङ्गवृन्दगणायै स्वाहा।

७३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मधुररोदस्यै स्वाहा।
७३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रोदसीग्रहायै स्वाहा।
७३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रोधकृत्यै स्वाहा।
७३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रोधहन्त्र्यै स्वाहा।
७३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रोगभृद्यै स्वाहा।
७३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै रोगशमिन्यै स्वाहा।
७३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वन्दीस्तुतायै स्वाहा।
७३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बन्धबन्धूककुसुमायै स्वाःहा।
७४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वन्दितायै स्वाहा।
७४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वन्दितमात्रे स्वाहा।
७४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै बिन्दुरायै स्वाहा।
७४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वैन्दवीविद्यायै स्वाहा।
७४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विङ्क्यै स्वाहा।
७४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विङ्ककपालायै स्वाहा।
७४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विङ्कायै स्वाहा।
७४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विङ्कस्थायै स्वाहा।
७४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विङ्कवत्सलायै स्वाहा।
७४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वदर्यै स्वाहा।
७५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विलग्नायै स्वाहा।
७५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विप्रायै स्वाहा।
७५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विध्यै स्वाहा।
७५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विधिकर्यै स्वाहा।
७५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै विधायै स्वाहा।
७५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्खिन्यै स्वाहा।
७५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्खवलयायै स्वाहा।
७५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्खमालायै स्वाहा।
७५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शम्यै स्वाहा।
७५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्खपात्राऽशन्यै स्वाहा।

७६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शृङ्गायै स्वाहा।
७६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्खग्रीवायै स्वाहा।
७६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्खप्रभायै स्वाहा।
७६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शम्भ्व्यै स्वाहा।
७६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शरावत्यै स्वाहा।
७६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै श्यामायै स्वाहा।
७६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै श्यामाङ्गायै स्वाहा।
७६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै श्यामलोचनायै स्वाहा।
७६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै श्मशानस्थायै स्वाहा।
७६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै श्मशानायै स्वाहा।
७७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै श्मशानस्थलायै स्वाहा।
७७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै श्मशानस्थलभूषणायै स्वाहा।
७७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शमदायै स्वाहा।
७७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शमहन्त्र्यै स्वाहा।
७७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शाकिन्यै स्वाहा।
७७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्कुशेखरायै स्वाहा।
७७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शान्त्यै स्वाहा।
७७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शान्तिप्रदायै स्वाहा।
७७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शेषायै स्वाहा।
७७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शेषस्थायै स्वाहा।
७८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शेषदायिन्यै स्वाहा।
७८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शेषमुख्यै स्वाहा।
७८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शोषिण्यै स्वाहा।
७८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शीर्यै स्वाहा।
७८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शौर्यै स्वाहा।
७८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शौर्यायै स्वाहा।
७८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शरायै स्वाहा।
७८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिर्यै स्वाहा।

७८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शापहनीशायै स्वाहा।
७८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शापहान्यै स्वाहा।
७९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शशम्पायै स्वाहा।
७९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शपथदायिन्यै स्वाहा।
७९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शृगिण्यै स्वाहा।
७९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शृङ्गपलभुक्त्यै स्वाहा।
७९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्कर्यै स्वाहा।
७९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्करचिकायै स्वाहा।
७९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्कायै स्वाहा।
७९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्कापहायै स्वाहा।
७९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्कापहासंस्थायै स्वाहा।
७९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शाश्वत्यै स्वाहा।
८००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शीतलायै स्वाहा।
८०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिवायै स्वाहा।
८०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिवस्थायै स्वाहा।
८०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शवभुक्तायै स्वाहा।
८०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शवासनायै स्वाहा।
८०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शाववर्णायै स्वाहा।
८०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिवोदर्यै स्वाहा।
८०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शायिन्यै स्वाहा।
८०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शावशयनायै स्वाहा।
८०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिशपायै स्वाहा।
८१०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिशुपालिन्यै स्वाहा।
८११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शवकुण्डलिन्यै स्वाहा।
८१२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शैवायै स्वाहा।
८१३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्करायै स्वाहा।
८१४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिशिरायै स्वाहा।
८१५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिशिराशिरायै स्वाहा।

८१६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शवकाञ्चै स्वाहा।
८१७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शवश्रीकायायै स्वाहा।
८१८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शवमालायै स्वाहा।
८१९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शवाकृत्यै स्वाहा।
८२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शयन्यै स्वाहा।
८२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शङ्कुयै स्वाहा।
८२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै कुवाशक्त्यै स्वाहा।
८२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शन्तनवे स्वाहा।
८२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शीलदायिन्यै स्वाहा।
८२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सिन्धुवासिन्यै स्वाहा।
८२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सिन्धुगायै स्वाहा।
८२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सरस्वत्यै स्वाहा।
८२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सिन्ध्व्यै स्वाहा।
८२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सुन्दर्यै स्वाहा।
८३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सुन्दराननायै स्वाहा।
८३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सुदर्शनायै स्वाहा।
८३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै साध्व्यै स्वाहा।
८३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सिद्ध्यै स्वाहा।
८३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सिद्धिदात्र्यै स्वाहा।
८३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सिद्धायै स्वाहा।
८३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सिद्धसरस्वत्यै स्वाहा।
८३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सन्तत्यै स्वाहा।
८३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सम्पत्यै स्वाहा।
८३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सम्पदायै स्वाहा।
८४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै संविद्रूपायै स्वाहा।
८४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सरतिदयिन्यै स्वाहा।
८४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सपत्न्यै स्वाहा।
८४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सरसायै स्वाहा।

८४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सारायै स्वाहा।
८४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सरस्वतिकर्यै स्वाहा।
८४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वधायै स्वाहा।
८४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सरःसमायै स्वाहा।
८४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समनायै स्वाहा।
८४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समाराध्यायै स्वाहा।
८५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समस्तदायै स्वाहा।
८५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समिद्धायै स्वाहा।
८५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समदायै स्वाहा।
८५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समायै स्वाहा।
८५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सम्मोहायै स्वाहा।
८५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समदर्शनायै स्वाहा।
८५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समित्यै स्वाहा।
८५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समिधायै स्वाहा।
८५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सीमायै स्वाहा।
८५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सावित्र्यै स्वाहा।
८६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सविधायै स्वाहा।
८६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सत्यै स्वाहा।
८६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सवतायै स्वाहा।
८६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आसवनादायै स्वाहा।
८६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आसवनायै स्वाहा।
८६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै समरायै स्वाहा।
८६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सम्यै स्वाहा।
८६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सिमिरायै स्वाहा।
८६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सततायै स्वाहा।
८६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै साध्व्यै स्वाहा।
८७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सुध्यै स्वाहा।
८७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सुधीचिन्त्यै स्वाहा।

८७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सहायिन्यै स्वाहा।
८७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हंस्यै स्वाहा।
८७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हंसगत्यै स्वाहा।
८७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हंसायै स्वाहा।
८७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हंसोज्वलायै स्वाहा।
८७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै निचोलुयुक्यै स्वाहा।
८७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हलिन्यै स्वाहा।
८७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हलदायै स्वाहा।
८८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हालायै स्वाहा।
८८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हरश्रीयै स्वाहा।
८८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हरवल्लभायै स्वाहा।
८८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हेलायै स्वाहा।
८८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हेलावत्यै स्वाहा।
८८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हेषायै स्वाहा।
८८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ह्रेषस्थायै स्वाहा।
८८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ह्रेषवर्धिन्यै स्वाहा।
८८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हन्तायै स्वाहा।
८८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हन्त्यै स्वाहा।
८९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हतायै स्वाहा।
८९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हत्याहायै स्वाहा।
८९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हन्ततापहारिण्यै स्वाहा।
८९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हङ्कार्यै स्वाहा।
८९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हन्तकृद्यै स्वाहा।
८९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हन्तकृद्धङ्काहायै स्वाहा।
८९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हीयै स्वाहा।
८९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै होतायै स्वाहा।
८९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हाहालयै स्वाहा।
८९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हताहतायै स्वाहा।

१००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हेमप्रदायै स्वाहा।

१०१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हंसवत्यै स्वाहा।

१०२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हार्यै स्वाहा।

१०३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हातर्यै स्वाहा।

१०४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सम्मतायै स्वाहा।

१०५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै होर्यै स्वाहा।

१०६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै होत्र्यै स्वाहा।

१०७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै होलिकायै स्वाहा।

१०८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै होमायै स्वाहा।

१०९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै होमहविर्यै स्वाहा।

११०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हारिण्यै स्वाहा।

१११.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हरिण्यै स्वाहा।

११२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हरिणीनेत्रायै स्वाहा।

११३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै हिमाचलनिवासिन्यै स्वाहा।

११४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लम्बोदर्यै स्वाहा।

११५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लम्बकर्णायै स्वाहा।

११६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लम्बिकायै स्वाहा।

११७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लम्बविग्रहायै स्वाहा।

११८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लीलायै स्वाहा।

११९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लीलावत्यै स्वाहा।

१२०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लोलायै स्वाहा।

१२१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ललन्यै स्वाहा।

१२२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ललितायै स्वाहा।

१२३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लतायै स्वाहा।

१२४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ललमायै स्वाहा।

१२५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लोचनायै स्वाहा।

१२६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लोच्यायै स्वाहा।

१२७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लोलाक्ष्यै स्वाहा।

१२८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लक्षणायै स्वाहा।
१२९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ललायै स्वाहा।
१३०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लम्पत्यै स्वाहा।
१३१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लुम्पत्यै स्वाहा।
१३२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लम्पायै स्वाहा।
१३३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लोपामुद्रायै स्वाहा।
१३४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लघुमानायै स्वाहा।
१३५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लघुमध्यगाथै स्वाहा।
१३६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ललन्तिकायै स्वाहा।
१३७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लम्बिकायै स्वाहा।
१३८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लम्बायै स्वाहा।
१३९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लघिमायै स्वाहा।
१४०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लघुमध्यमायै स्वाहा।
१४१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लघीयस्यै स्वाहा।
१४२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लघुदर्यै स्वाहा।
१४३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लूतायै स्वाहा।
१४४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लूतनिवारिण्यै स्वाहा।
१४५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लोमभृदायै स्वाहा।
१४६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लोमलोप्तायै स्वाहा।
१४७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लुलुत्यै स्वाहा।
१४८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लुलुसंयत्यै स्वाहा।
१४९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लुलायस्था स्वाहा।
१५०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै चलहार्यै स्वाहा।
१५१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लङ्कापुर्यै स्वाहा।
१५२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुरन्दर्यै स्वाहा।
१५३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लक्ष्म्यै स्वाहा।
१५४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लक्ष्मीप्रदायै स्वाहा।
१५५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लक्ष्म्यायै स्वाहा।

९५६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै लक्षबलप्रदायै स्वाहा।
९५७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै मतिप्रदायै स्वाहा।
९५८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षुणायै स्वाहा।
९५९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षुपायै स्वाहा।
९६०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षणायै स्वाहा।
९६१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षीणायै स्वाहा।
९६२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षमायै स्वाहा।
९६३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षान्त्यै स्वाहा।
९६४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षणावत्यै स्वाहा।
९६५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षामायै स्वाहा।
९६६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षामोदर्यै स्वाहा।
९६७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षीमायै स्वाहा।
९६८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षौमभृत्यै स्वाहा।
९६९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षत्रियाङ्गनायै स्वाहा।
९७०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षयायै स्वाहा।
९७१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षमाकर्यै स्वाहा।
९७२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षीरायै स्वाहा।
९७३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षीरदायै स्वाहा।
९७४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षीरसागरायै स्वाहा।
९७५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षेमङ्कर्यै स्वाहा।
९७६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षयङ्कर्यै स्वाहा।
९७७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षयतत्क्षणदायै स्वाहा।
९७८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षत्यै स्वाहा।
९७९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षुरन्त्यै स्वाहा।
९८०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षुद्रिकायै स्वाहा।
९८१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षुद्रायै स्वाहा।
९८२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै क्षुत्क्षामायै स्वाहा।
९८३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अक्षरायै स्वाहा।

९८४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अक्षरपातकायै स्वाहा।
९८५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अङ्गस्थायै स्वाहा।
९८६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अङ्गनिवासिन्यै स्वाहा।
९८७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै अङ्गधारिण्यै स्वाहा।
९८८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुरनिवासिन्यै स्वाहा।
९८९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै पुरान्तकायै स्वाहा।
९९०.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै दारिद्र्यहरणायै स्वाहा।
९९१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रुनिशूदिन्यै स्वाहा।
९९२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रुमर्दिन्यै स्वाहा।
९९३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रुमदविनासिन्यै स्वाहा।
९९४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रुशोककर्यै स्वाहा।
९९५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महामाहेश्वर्यै स्वाहा।
९९६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महाकालप्रियायै स्वाहा।
९९७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महाकालनिरतायै स्वाहा।
९९८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महाकालमनोहरायै स्वाहा।
९९९.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महाकालाह्लादकर्यै स्वाहा।
१०००.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिवशक्त्यै स्वाहा।
१००१.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिवप्रियायै स्वाहा।
१००२.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शिवप्राणवल्लभायै स्वाहा।
१००३.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महेश्वराह्लादकर्यै स्वाहा।
१००४.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सर्वशोकहरायै स्वाहा।
१००५.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै भक्ताशोककर्यै स्वाहा।
१००६.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेणुनादकर्यै स्वाहा।
१००७.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेणुनादलहर्यै स्वाहा।
१००८.ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै वेणुनादप्रवाहिन्यै स्वाहा।

मूल मन्त्र से नवाहुति प्रदान कर आज्य त्याग करके किसी पात्र में दूध तथा जल मिला कर तर्पण कर आत्मा में इष्ट बुद्धि से मार्जन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरां तर्पयामि। अष्टोत्तरशत तर्पण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरां अभिषिञ्चामि। मार्जन करे।

ॐ भूः स्वाहा।

ॐ भुवः स्वाहा।

ॐ स्वः स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

व्याहृति त्रय से आहुति प्रदान कर मूर्ति में देवी का नियोजन करके संहार मुद्रा से अग्नि को विसर्जित करे, देवी की आचमनादि से पूजन कर चामरादि डुला कर स्तुतिपाठादि करके प्रदक्षिणा कर दण्डवत् प्रणाम करे।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणां पदे पदे॥

कर्म को अधोलिखित मन्त्र से आत्मसमर्पण करे।

ॐ इतः पूर्वं पापबुद्धिं देवधर्माधिकारतो जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा मां मदीयं च सकलं देव्यै ते समर्पये ॐ तत्सत्।

कर्म को ब्रह्म समर्पण करके प्राणायामादि करके पुष्पाक्षतादि से उत्तर पूजन कर क्षमापन करे।

क्षमाप्रार्थना

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
विपरीतं च तत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वरि॥१॥

हे परमेश्वरि! अज्ञानवश, विस्मृतिवश और भ्रान्तिवश जो कोई कार्य इस पुरश्चरण में कम या ज्यादा हो गया अथवा विपरीत हो गया उसके लिए हमें क्षमा कर दें॥१॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं सुरेश्वरि।
सम्पूजिता मया देवी तस्मात्त्वं वरदा भव॥२॥

हे देवताओं के ईश्वरि! मैंने मन्त्र, क्रिया तथा भक्ति से हीन जो भी पूजन किया है, वह हमारी पूजा आपकी कृपा से पूर्ण हो जाये॥२॥

आवाहनं च पूजां च त्वन्माहात्यं जपं तथा।
विसर्जनं न जानामि कालिके त्वं क्षमस्व मे॥३॥

हे परमेश्वरि! मैं आपके आवाहन, पूजा, जप, माहात्म्यश्रवणकीर्तन, तथा विसर्जन नहीं जानता, पूजा भी नहीं जानता हूँ, अत: हे कालिके! हमें क्षमा करें॥३॥

यदक्षरं पदभ्रष्टं स्वरव्यञ्जनवर्जितम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥४॥

हे परमेश्वरि! आपके पूजन में स्तुति पाठादि में यो कोई अक्षर तथा पद उच्चारण करने में भ्रष्ट हो गये हो तथा स्वरव्यञ्जन में त्रुटि हो गयी हो हे देवि! उन सबको क्षमा कर दें॥४॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति प्रसीद परमेश्वरि॥५॥

हे परमेश्वरि! आपके ध्यान, पूजा, तप, यज्ञादि क्रियाओं में तथा सहस्रनामादि स्तुति पाठ में जो कोई न्यूनता हो गयी हो हे देवि! वह आपकी कृपा से पूर्णता को प्राप्त हो जाये तथा आप हमारे ऊपर प्रसन्न हो जायें॥५॥

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां सर्वा प्रसीद परमेश्वरि॥६॥

हे समस्त कामनाओं को पूरा करनेवाली! हे सम्पूर्ण जगत् की माता! हे सच्चिदानन्द विग्रहस्वरूप! आप हमारी समस्त पूजा अर्चनाओं को ग्रहण करके प्रसन्न हो जायें॥६॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि॥७॥

हे परमेश्वरि! मैं आवाहन तथा विसर्जन नहीं जानता, पूजा भी नहीं जानता हूँ, अत: हमें क्षमा करें॥७॥

जपच्छिद्रं तप:च्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतु मेऽच्छिन्द्रं ब्राह्मणानां प्रसादत:॥८॥

हे परमेश्वरि! हमारे द्वारा किये गये जप, तप तथा शान्ति कर्म के जो कोई दोष रह गया हों वे सभी दोष ब्राह्मणों की कृपा से समाप्त हो जाये और हमारा कार्य पूर्ण हो जाये॥८॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥९॥

हे परमेश्वरि! मैंने आपके प्रति अहर्निश दिनरात सहस्रों अपराध किये है, आप अपना दास समझ करके हमें क्षमा कर दें॥९॥

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वर॥१०॥

हे परमेश्वरि! ज्ञान में अज्ञान में जो कुछ भी हमने आपके प्रति कम तथा अधिक कार्य किया हो, उस सभी को क्षमा करके हमारे ऊपर प्रसन्न हो जायें॥१०॥

कर्मणा मनसा वाचा पुनश्चर्या मया कृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरी॥११॥

कर्म से, मन से, वचन से हमने पुरश्चरण किया उससे सन्तुष्ट होकर हमारे ऊपर प्रसन्न हो जायें॥११॥

योनिमुद्रा से प्रणाम करे—

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।
पूजाराधनकालेऽपि पुनरागमनाय च॥

हे परमेश्वरि! आप हमारी पूजा को ग्रहण कर अपने धाम को पधारें तथा पुनः पूजा अर्चना के समय उपस्थित हो जायें।

मूल मन्त्र से आधान कर संहार मुद्रा से देवी को अग्नि में से अपने हृदय में स्थापित करके चण्डेश्वरी-चण्डेश्वर को उच्छिष्ट भाग समर्पण करे।

ॐ ह्रीँ चण्डेश्वर्यै नमः उच्छिष्टभागं तुभ्यं सम्प्रददे। ईशान कोण में चण्डेश्वरी को पूजन करके उच्छिष्ट नैवेद्यादि को उच्छिष्टचाण्डालिनी को प्रदान कर प्रार्थना करे।

प्रार्थना

चण्डेश्वरी महादेवी निर्माल्यैश्चन्दनादिभिः।
लेह्यचोष्यान्नपानादिनिर्माल्यस्रग्विलेपनैः ॥
निर्माल्यभोजनं तुभ्यं ददामि श्रीशिवाज्ञया॥

हे महादेवी चण्डेश्वरि! लेह्य, चोष्यान्नपानादि तथा अनुलेपनार्थ चन्दनादि जो कुछ निर्माल्य है सभी निर्माल्य भोजी आपको श्रीशिव की आज्ञा से अर्पित करता हूँ, ग्रहण करके प्रसन्न हो जायें॥

प्रार्थना के बाद कुमारियों तथा सुवासिनियों का पूजन करके भोजन कराकर ब्राह्मणों को भोजन कराकर सपरिवार स्वयं भोजन करे।

हवनप्रकरणं परिपूर्णम्

* * *

कुमारी सुवासिनी-पूजनम्

पूजागृह में सुवासिनी को लाकर प्रदक्षिणा करके, उद्वर्तनादि से स्नपन कराकर वस्त्रादि से अलंकृत करके पीठ पर समावेशित कर, अपने षडङ्गादि न्यास कर पूजनीया कुमारी का न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लाँ कुमारीकारिके हृदयाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीँ कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लूँ कुलकुमारिके शिखायै वषट्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लैँ कुलकुमारिके कवचाय हुम्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लौँ कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट्।

षडङ्ग न्यास के बाद कुमारी के तत्तत् अङ्गों पर मातृका न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः कुलकुमारिके शिरसि न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ नमः कुलकुमारिके मुखे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ नमः कुलकुमारिके वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ नमः कुलकुमारिके वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ नमः कुलकुमारिके वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऌँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ नमः कुलकुमारिके वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ नमः कुलकुमारिके अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ नमः कुलकुमारिके अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः कुलकुमारिके जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः नमः कुलकुमारिके कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ नमः कुलकुमारिके वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ नमः कुलकुमारिके वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ नमः कुलकुमारिके वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ नमः कुलकुमारिके दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ नमः कुलकुमारिके दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ नमः कुलकुमारिके दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ नमः कुलकुमारिके वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ नमः कुलकुमारिके वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ नमः कुलकुमारिके वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ नमः कुलकुमारिके दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ नमः कुलकुमारिके वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ नमः कुलकुमारिके पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ नमः कुलकुमारिके नाभौ न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ नमः कुलकुमारिके उदरे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ नमः कुलकुमारिके हृदये न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ नमः कुलकुमारिके दक्षांसे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ नमः कुलकुमारिके ककुदि न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ नमः कुलकुमारिके वामांसे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

ध्यानम्

शङ्खेन्दुधवलां दिव्यां द्विभुजां वरदाभयाम्।
चन्द्रमध्यमहामोजभावहावविराजिताम् ॥

शंख के समान धवल तथा इन्दू के समान कान्तिमति, दो भुजाओंवाली तथा दोनों भुजाओं में वर तथा अभय मुद्राओं को धारण करनेवाली, चन्द्र मण्डल के मध्य महा तेजस्विनी भावात्मक रूप से विराजमान आपको नमन करता हूँ।

ध्यान करके पूजन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदं पाद्यं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदमर्घ्यं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदमाचमनीयं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदमनुलेपनं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एते अक्षताः कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एतानि पुष्पाणि कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एष धूपं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एष दीपः कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदं नैवेद्यं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदं ताम्बूलं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदं फलं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एषा दक्षिणा कुलकुमारिकायै नमः।

पूजन के बाद प्रार्थना करे—

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि! जगन्मातर्नमोस्तु ते॥१॥

जगत्पूज्य, सम्पूर्ण जगत् में वन्द्य, सर्वशक्तिस्वरूपिणी, जगन्माता कौमारी पूजन ग्रहण करें, आपको नमस्कार है॥१॥

त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्॥२॥

त्रिपुरा देवी, सत्त्वरजतम तीन गुणोंवाली, सबको धारण करनेवाली, ज्ञानमार्गस्वरूप वाली, तीनों लोकों में वन्दित, त्रिमूर्ति रूपिणी का मैं पूजन करता हूँ॥२॥

कलात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥३॥

षोडश कलावाली, काल को भी भयभीत करनेवाली, करुणामयी, शिव के हृदय में रहनेवाली शिवा, करुणामयी जननी, हमेशा वर्तमान रहनेवाली, कल्याणी देवी की मैं पूजा करता हूँ॥३॥

अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम्।
शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥४॥

अणिमादि सिद्धियों को प्रदान करनेवाली, गुणों की खान, अकारादि स्वर रूपवाली, शक्ति की ही एक भेद रूप लक्ष्मी तथा रोहिणी देवी की मैं पूजा करता हूँ॥४॥

कलाधारां कलारूपां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम्॥५॥

षोडश कलाओं को धारण करनेवाली, कलाओं के रूपवाली, कालचक्र स्वरूपिणी, समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, सदैव करुणा की वर्षा करनेवाली, कामिनी देवी की मैं पूजा करता हूँ॥५॥

चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनासिनीम्।
प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्॥६॥

चण्डधारा, चण्डमायारूपिणी, चण्डमुण्ड का विनाश करनवाली, देवताओं की ईश्वरी चण्डिका देवी को मैं प्रणाम तथा पूजा करता हूँ॥६॥

सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवी शाङ्करीं प्रणमाम्यहम्॥७॥

सुख और आनन्द को देनेवाली, शान्त रूप में स्थित, समस्त देवताओं के द्वारा पूज्य, सभी भूतों में व्याप्त रहनेवाली, शाङ्करी देवी की पूजा करता हूँ॥७॥

दुर्गमे दुःस्तरे चैव दुःखत्रयविनासिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम्॥८॥

दुर्गम, दुस्तर, दु:ख त्रय (आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक) का विनाश करने वाली, दुर्गादेवी की मैं भक्ति पूर्वक पूजन करता हूँ, दुर्गा देवी को नमस्कार है।।८।।

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्।।९।।

सोने के रंग की आभा के सदृश सुन्दर, सुखसौभाग्य को देनेवाली, सुभद्र की जननी सुभद्रा देवी को मैं प्रणाम तथा पूजा करता हूँ।।९।।

ॐ ह्रीँ हंसः कुलकुमारिकाश्रीपादुकां पूजयामि। प्रार्थना के बाद तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान कर पीठ नायिकाओं का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सन्ध्यायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वत्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिमूर्त्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुभगायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उमायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुब्जिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालसङ्कर्षिण्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अपराजितायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भैरव्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पीठनायिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षेत्रज्ञायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चर्चिकायै नमः।

मूलमन्त्र से विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा देवी को पुष्पाञ्जलि प्रदान कर प्रदक्षिणापूर्वक प्रणाम कर कुमारीस्तोत्र का पाठ करे।

कुमारीपूजनं परिपूर्णम्

⁂

कुमारीस्तोत्रम्

जयकाली महाभीमे भीमरावे भयापहे।
संसारदावाग्निशिखे वृजिनार्णवतारिणि।।१।।

ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रभूतेशप्रभृत्यमरवन्दिते ।
सर्गपालनसंहारकारिण्याहितकारिणि ॥२॥
गुह्यकालि परानन्दरसपूरितविग्रहे।
परब्रह्मरसास्वादकैवल्यानन्ददायिनि ॥३॥
सुरतितेऽपि सगुणे महाकल्पान्तनर्तकि।
कुमारीरूपमास्थाय विज्ञे प्रज्ञास्वरूपिणि॥४॥
आगतोसि ममागारं शरद्यर्चासमाप्यते।
सांवत्सरिककल्याणसूचनाय तथैव च॥५॥
धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि सफलं जीविनं मम।
यस्मात् त्वमीदृशं कृत्वा कौमारं रूपमुत्तमम्॥६॥
गुह्यकाली समायाताब्दिकपूजाजिघृक्षया।
त्वेमेवेतेन रूपेण देवेभ्यः प्रार्थिता पुरा॥७॥
दत्तवत्यसि साम्राज्यं वरानपि समीहितान्।
मह्यमप्यद्य देवेशि वरं पुरा दत्तवत्यसि॥८॥
विष्णवे च त्वमेवादास्तथा पालनशक्तिताम्।
महारुद्राय संहारकर्तृत्वमददः शिवे॥९॥
देवेभ्यश्चापि दैत्यानां नाशने दक्षतामपि।
अन्तर्यामिन्यसीशानि त्रिलोकीवासिनामपि॥१०॥
अन्तार्यामि किं तेऽहं सर्वकर्मैकसाक्षिणी।
शत्रुनाशं राज्यलाभं शरीरारोग्यमेव च॥११॥
त्वत्पादाम्बुजयोर्भक्तिं याचेऽहं चतुरो वरान्।
नमस्ते भगवत्यम्ब नमस्ते भक्तवत्सले॥१२॥
नमस्ते जगदाधाररूपिणि त्राहि मां सदा।
मातर्न वेद्मि रूपं ते न शरीरं न वा गुणम्॥१३॥
भक्त्या हृत्स्थितया पूजां तव जानाम्यनन्यधीः।
त्वं माता त्वं पिता बन्धुस्त्वमेव जगदीश्वरि॥१४॥
त्वं गतिः शरणं त्वं च स्वर्गस्त्वं मोक्ष एव च।
विहाय त्वां जगन्मातार्नान्या जानामि देवताम्॥१५॥
नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमो नमः।
एभिः श्लोकैः स्तुतिं कुर्यात् कुमारीणां वरानने॥१६॥

पूजनविधिः

दद्यादाचमनीयं हि भोजनान्ते गतत्वरः।

ततः प्रदद्यात् ताम्बूलं मृगचन्द्राधिवासितम्॥१७॥
सह वाद्यादिभिस्तावदनुव्रज्य विसर्जयेत्।
कुमारीभोजनचेष्टाभ्यां शुभाशुभफलज्ञानम्॥१८॥

कुमारीस्तोत्रं परिपूर्णम्

शुभाशुभफलम्

शुभाशुभफलं वच्मि साम्प्रतं तव पार्वति।
तत्राप्यादौ शुभं वक्ष्ये विपरीतं ततोऽस्य च॥१९॥
तदुच्छिष्टं ततो दद्याज्जम्बुकेभ्योऽथ भूतले।
निखनेदप्सु वा देवि समालोड्य विसर्जयेत्॥२०॥
आदौ भक्ते करे दत्ते सुभिक्षं विषये भवेत्।
पायसे यजमानस्य पशुवृद्धिः प्रजायते॥२१॥
घृते स्यादायुराधिक्यं पूप ऐश्वर्यमद्ध्यते।
तथा मोदकशष्कुल्योः सन्ततिर्भूयसी भवेत्॥२२॥
मत्स्यजातिष्वर्थलाभः कृशरे यानसम्पदः।
मांसे तु पुत्रलाभः स्यात् तेमने कामिनी भवेत्॥२३॥
फलं मांसविशेषस्य भिन्नं भिन्नं ब्रुवे हि तत्।
अर्थलाभस्तु वाराहे खाड्गे तु विजयो भवेत्॥२४॥
माहिषेण तु मांसेन राज्याप्राप्तिर्भवेद् ध्रुवम्।
आरेग्यं हारिणेनाशु कार्ष्णसारेण वाग्मिता॥२५॥
शाशे मेधावितां गच्छेदाजेऽप्यजरतामपि।
आवये पलले देवि सर्वकल्याणमाप्नुयात्॥२६॥
कामङ्गे मेदिनीलाभो बह्वन्नत्वं च राङ्कवे।
वार्ध्रीनसे शत्रुनाशो हांसे मनुजवश्यता॥२७॥
कीर्तिस्तु महती दध्नि दुग्धे सम्पदनुत्तमा।
पिष्टके तनयावाप्तिः शाके च रिपुसङ्क्षयः॥२८॥
हालायांपुण्यवृद्धिः स्यात् चोष्ये संसस्तुवाग्मिता।
धनागमः फणिते तु कूर्चिकायां बलोन्नतिः॥२९॥
तुम्बीवृन्ताककूष्माण्डकारवेल्लपटोलकैः ।
घोषशूरणदीर्घाङ्घ्रिमूलकैस्तेमने कृते॥३०॥
विद्यालाभो भवेद्देवि तक्रे वाक्पटुतापि च।
गोधूमचूर्णघटितवस्तुनि प्रतिभावने॥३१॥

देव्यां दृष्टौ भवेन्मोक्षो मण्डपेऽप्युन्नतिर्भवेत्।
चामरछत्रयोस्तालवृन्तपर्यङ्कयोरपि ॥३२॥
घण्टादर्पणयोश्चापि दृग्दाने भूपतिर्महान्।
आकल्पालङ्करणयोः स्पर्शचालनदृष्टिषु॥३३॥
नानाविधानि सौख्यानि भवन्ति महितुः प्रिये।
एवंविधानि भूयांसि चेष्टितान्यशनानि च॥३४॥
शुभदेशीनि जायन्ते विपरीतान्यतः शृणु।
मुख्यभूता कुमारी चेद्धसति द्वित्रिवारकम्॥३५॥
दुर्भिक्षं जायतेऽवश्यं प्रजाः स्युः पीडिता अपि।
राजा विनाशमायाति कुमार्या रोदने कृते॥३६॥
उच्चारे तु महामारी पुरीषे पुरदाहनम्।
अभोजने शत्रुभयमापदो बहुभोजने॥३७॥
अप्भाषणे त्वामयाः स्युर्विपदा बहुभाषणे।
उपसर्गा बहुविधाश्चेष्टया करपादयोः॥३८॥
अतिलज्जा विनाशाय तथा निर्लज्जता शुचे।
नानोत्पातास्तु मौने स्युः स्वापे राज्ञो विनाशनम्॥३९॥
सर्वनाशस्तु भीतायां क्रुद्धायां मृत्युरेव च।
आवेशे तत्क्षणाद् राजा म्रियते नात्र संशयः॥४०॥
शङ्कितायां शत्रुशङ्का श्रान्तायामीतितो भयम्।
चिन्तायां तु विज्ञेयं तद्राष्ट्रस्यैव पातनम्॥४१॥
मोहे चित्तविनाशः स्याज्जाड्ये पूजा तु निष्फला।
चाञ्चल्ये चञ्चला लक्ष्मीः पूजकस्यैव जायते॥४२॥
विषादवत्यथ यदि कुमारी तत्र जायते।
सराजं सप्रजं राष्ट्रं तदा सीदति पार्वति॥४३॥
रोगेण म्रियते राजा यदि रुग्णा प्रजायते।
दुर्भिक्षमरकातङ्कामत्यश्रूणि विमुञ्चति॥४४॥
सर्वनाशो भवेत्तर्हि धुनोति यदि मस्तकम्।
त्रस्ताययां रिपुतस्त्रासस्तस्य राज्ञः प्रदिश्यते॥४५॥
कम्पे सति स्याद् विमुखी कालिका परमेश्वरी।
नीचैः शिरश्चेत् कुरुते असन्तुष्टा तदेश्वरी॥४६॥
हीनायुः स्यात्तदा पृथ्वीपतिश्चेद् गद्गदस्वना।
पूजकस्य भवेद्दैन्यं व्याकुला यदि जायते॥४७॥

मोहेन व्याकुलायां तु सर्वं नगरमाकुलम्।
व्रीडितायां भवेद्रोगः स्वेदे दारधनक्षयः॥४८॥
अधोवायुं त्यजति चेत् कुमारी दैवयोगतः।
पीडितं परचक्रेण तदा भवति पत्तनम्॥४९॥
गीतं गायति चेत्तत्र कुमारी रहिता क्रिया।
सप्रजाराष्ट्रतनयदारस्य नृपतेर्मृतिः॥५०॥
सहागताभिः कदाचिन्मुख्या विवदते यदि।
तदा समायात्यकस्मात् पदचक्रं सुदारुणम्॥५१॥
यया कयाचित् सार्द्धं वा येन केनचिदेव वा।
कुमारी भाषते वीतभयमन्दाक्षसाध्वसा॥५२॥
प्रजायन्ते तदा तस्य विषयेषु षडीतयः।
व्यत्यासं यदि भक्ष्यस्य कुर्वते करचालनैः॥५३॥
व्यस्तं समस्तं भवति मनसो वाञ्छितं प्रिये।
उपानीयकृतं यत्तद् द्रव्यं देव्यै तु मण्डपे॥५४॥
तच्चेत् कराभ्यां स्पृशति कान्दिशीको भवेन्नृपः।
निर्वापयति चेद् दीपं कुमारी मुखमारुतैः॥५५॥
बुद्धिभ्रंशो भवेत्तर्हि ज्ञानदीश्च नश्चति।
दैवयोगाद्धि नृत्यन्ति कुमार्यश्चेत् सुराकुलाः॥५६॥
सराजकः सविषयः श्मशानमिव जायते।
वासांस्युत्सृज्य नग्नाः स्युर्यदि तत्र कुमारिकाः॥५७॥
शत्रुभिर्म्रियते तर्हि राजा समरमूर्धनि।
यदि फूत्कृत्य कूर्दन्ते करो धृत्वा भ्रमन्ति च॥५८॥
भूतावेशः क्षितीशस्य जायते नात्र संशयः।
उच्चरिष्यामि हर्म्ये वा वदन्तीत्थं कुमारिकाः॥५९॥
भोजनावसरे तर्हि महामारीभयं भवेत्।
वामे वा दक्षिणे वापि चलत्तारकया दृशा॥६०॥
रक्तोग्रया घूर्णयते शिरः स्वस्य कुमारिका।
कुरुते वाट्टहासं सा येन त्रस्यन्ति मानवाः॥६१॥
भूतावेशो भवेत्तर्हि प्रेता नृत्यन्ति वा पुरे।
दन्तैर्दन्तान् पीडयित्वा कुर्यात् कटकटारवम्॥६२॥
प्रयाति सदनं मृत्यो सदारसुतबान्धवः।
दृशावनिमिषे कृत्वा सन्दश्योष्ठं रदेन च॥६३॥

सन्तर्जयति शीर्षं च कम्पयन्ती कुमारिका।
तदेव फलमुद्दिष्टं यः स्यात् कटकटारवे॥६४॥
आत्यन्तिकं भजेन्मौनं करेणान्नं स्पृशेन्न च।
शिरोऽत्यर्द्धं च नमयेदङ्गुष्ठेन लिखेद् भुवम्॥६५॥
विदध्यात् भूतले रेखां करजैनिष्प्रयोजनम्।
सहताभ्यां कराभ्यां च कण्डूयेदथवा शिरः॥६६॥
तृणान्यकारणं छिन्द्यादङ्गुलीस्फोटमाचरेत्।
पाणिभ्यां मुद्रयेन्नेत्रे द्वौ कर्णौ पिदधाति वा॥६७॥
कुर्वीत वा बाहुरिकां पाष्णिघृष्टि वा।
महान्तं ग्रासमादन्ते मुखं व्यादाय तिष्ठति॥६८॥
अन्नोपरि क्षुतं यत्ते जृम्भणं मुहुर्मुहुः।
गृहीत्वा पाणिना वान्नं चतुर्दिक्षु क्षिप्त्यपि॥६९॥
उत्थाय वा प्रचलति त्यक्त्वान्नं पूजनं तथा।
आयाति वमनं वास्याः स्यातां रोमाञ्चवेपथू॥७०॥
निर्गच्छतोऽथवा गात्रात् पूणस्त्रे हेतुमन्तरा।
आकस्मादेव कुरुते काकुं चेत् कारणं विना॥७१॥
अश्लीलं वल्गति तथा स्ववर्ग्यार्थे प्ररोदिति।
अमुक्तालङ्कृतीर्मुञ्चेद् गृहं यास्यामि वा वदेत्॥७२॥
यस्य कस्यापि कुर्याद् भर्त्सनं तत्स्थले स्थिता।
उपालभेत वा काञ्चित् सहैवास्या उपेयुषीम्॥७३॥
भिनत्ति वाऽनिदानं सा स्वहस्तवलयानि वा।
कृते मृतस्य कस्यापि बन्धोः शोचति तत्रगा॥७४॥
यत्किञ्चिद्वा प्रलपति निर्निमित्तं कुमारिका।
सर्वमेतदङ्गुल्यं विज्ञेयं त्रिदशार्चिते॥७५॥
दुर्भिक्षं धननाशश्च रोगो मारी भयं तथा।
पदे पदेऽत्र विपदः शोको व्याधी रिपून्नतिः॥७६॥
परचक्रागमोऽकस्मादग्निदाहः पुरे गृहे।
मृत्युस्त्रासश्च दारिद्र्यं विच्छेदो बन्धुभिः सह॥७७॥
भूतप्रेतपिशाचाभिर्निवेशोऽपि गृहे गृहे।
अष्टभिश्चमहारोगैः प्रजानां निधनं भवेत्॥७८॥
इतस्ततः प्रधावन्ति लोकाः भयनिपीडिताः।
किं बहुक्तेन देवेशि कल्प आकालिको भवेत्॥७९॥

इतरेषामणीयस्तु भयं राज्ञां महद्भवेद्।
कुमारीचेष्टितद्वारा ज्ञायते हि शुभाशुभम्॥८०॥
वार्षिकं च फलं राज्ञो जयो वाथ पराजयः।
मृत्युर्दुःखं धनं सौख्यं शत्रुभीतिर्बलोन्नतिः॥८१॥
राज्यवृद्धिः प्रजापीडा व्यङ्ग्यतानीकसङ्क्षयः।
कुमारीपूजनात् सर्वं जायते भोजनादपि॥८२॥
परीक्ष्यं यत्नतस्तस्माद् राज्ञा स्वस्य शुभाशुभम्।
अर्चातोऽपि विशेषेण भोजनेन सुरेश्वरि॥८३॥
जाते शुभे समीचीनं वृत्ते तदितरत्र हि।
काम्यार्चा बहुसम्भारैर्दोषं तज्जं निवारयेत्॥८४॥
निवृत्य स्वगृहं याता यदि रुग्णा कुमारिका।
तस्मिन्नेवाहनि भवेत् तथापि न शुभं फलम्॥८५॥
इत्यादि फलबाहुल्यं शुभस्याप्यशुभस्य च।
मया विविच्य कथितं ध्रियस्व हृदि यत्नतः॥८६॥
ततो निशीथसमये विधिवत् पूजनं पुनः।
पीठमूर्त्योः प्रकुर्वीत धूपदीपानुलेपनैः॥८७॥
नैवेद्यैरुपहारैश्च गीतवाद्यादिभिस्तथा।

शुभाशुभफलं परिपूर्णम्

⁂

छागादिबलिदानम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा। युग्म बलि को सिन्दूरादि से अलङ्कृत करके अर्घ्योदक जल से तीन बार सम्प्रोक्षण कर स्नान कराये।

ॐ वाराही यमुना गङ्गा करतोया सरस्वती।
कावेरी चन्द्रभागा च सिन्धु भैरव सागर॥१॥

हे वाराहि! हे यमुना! हे गङ्गा! हे सरस्वति! हे कावेरि! हे चन्द्रभागा! हे सिन्धु! हे सागर! तथा हे भैरव!॥१॥

पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च।
पराय परमेष्ठिने नमः हूँकारमूर्तये॥२॥

हेमकूट स्थित क्रोध मूर्ति परा-परमेष्ठी को पशुपाश-विनाश के लिए हे हूँकार मूर्ति! मैं नमस्कार करता हूँ॥२॥

गन्धोदक से तीन बार प्रोक्षण करके हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर मन्त्र पाठ कर समर्पित करे।

ॐ छागत्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थिताः।
प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम्॥१॥

छाग बलिरूप से कूष्माण्ड तुम महाभाग्य से उपस्थित हुए हो, कूष्माण्डरूपी बलि को मैं सदा भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ॥१॥

चण्डिका प्रीतिकामस्य दातुरापद्विनासिने।
चण्डिका बलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः॥२॥

समस्त आपत्तियों के विनाश तथा चण्डिका को प्रीति प्रदान करने के लिए, चण्डिका के बलि! तुम्हें नमस्कार है॥२॥

यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधो वधः॥३॥

यज्ञ के लिए स्वयम्भू ने पशुओं को निर्मित किया है, अतः यज्ञ में वध योग्य तुम्हारा घात करता हूँ॥३॥

पार्श्वपूजनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयन्त्यै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मङ्गलायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काल्यै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भद्रकाल्यै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मनस्तोकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विजयायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अपराजितायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनन्तायै नमः।

अङ्गपूजनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रुधिरवदनायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चण्डिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चन्द्रार्काभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बृहस्पतये नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वत्यै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उग्रदन्तिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महादन्तिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पृथिव्यै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धर्माय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ श्रीँ वरुणमण्डलाधिष्ठितविग्रहायै पशुरूपचण्डिकायै इमं पशुं प्रोक्षामि स्वाहा। प्रोक्षण करे।

सङ्कल्पः—**ॐ अद्यामुकमास्यामुकपक्षेऽमुकतिथिवारे अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा छागसमसंख्यकदशवर्षावच्छिन्नश्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतिकामोऽहं ऐतान् वह्निदैवतान् भगवत्यै श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तुभ्यं घातयिष्ये।**

ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्रं रक्तास्य नयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्॥

अतिशय उग्र, कालरात्रि स्वरूप तथा उग्र नयनवाली, रक्त माला धारण किये हुए, रक्त का अनुलेपन किये हुए, कृष्ण वर्णवाले, पिनाक धनुष धारण किये हुए॥१॥

रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिकम्।
पिबमानं च रुधिरं भुञ्जानं कव्यसंहतिम्॥

रक्त वस्त्र धारण किये हुए, हाथ में पाश धारण किये हुए, कुटुम्बियों के सहित, हे खड्ग! पीने योग्य रुधिर तथा भोज्य कव्य समर्पित है॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालि कालि वज्रेश्वरि लौहदण्डाय नमः। तीन बार संप्रोक्षण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रौं। सिन्दूर से मन्त्र को खड्ग के ऊपर लिखे तथा बलि के कर्ण में बलि गायत्री सुनाये।

बलि गायत्री

ॐ ह्रौं बलिरूपाय विद्महे देविप्रियाय धीमहि तन्न पशुः प्रचोदयात्।

खड्ग-प्रार्थना

ॐ असिर्विनासनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तुते॥१॥

तीक्ष्ण धार, दुरासद, विनाशक, दक्ष, असि, धर्मपाल, श्रीगर्भ तथा विजय नाम धारी खड्ग को नमस्कार है॥१॥

इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा।
नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः॥२॥

ब्रह्मा ने तुम्हारे इन आठ नामों को स्वयं रचा है, तुम्हारा नक्षत्र कृत्तिका तथा गुरु महेश्वर है॥२॥

रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः।
पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा॥३॥

रोहिणी, ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि देवता तुम्हारे द्वारा सदा हमारी रक्षा करें॥३॥

नीलजीमूतसङ्काशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः।
भावशुद्धोऽमर्शणश्च अर्जितास्तथैव च॥४॥

नील-जीमूत के समान, काले दाँतोंवाले, कृशोदर, भाव की शुद्धि, तथा अमर्षण के लिए तुम्हें अर्जित किया है॥४॥

इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः।
तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः॥५॥

इसी से महिषासुर का वध किया गया था, शुद्ध तीक्ष्ण धारवाले खड्ग! तुम्हें नमस्कार है॥५॥

चण्डिका के जिह्वा की बुद्धि से एक बार में ही घात करे—

ॐ पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि तन्नश्छागः प्रचोदयात्।

घात के बाद सम्पूर्ण रुधिर मुण्डादि देवी के आगे सम भाग करके दीपक जलाये—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रौं क्रौं नमो नमः।

प्रत्येक मुण्ड में दीप प्रज्वलित करके रुधिरादि से तर्पण करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चामुण्डां तर्पयामि नमः पूर्वे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं योगिनीं तर्पयामि नमः दक्षिणे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डाकिनीं तर्पयामि नमः उत्तरे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विदारिकां तर्पयामि नमः आग्नेय्याम्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पापराक्षसीं तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पूतनां तर्पयामि नमः वायव्ये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरां तर्पयामि नमः ईशाने।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अद्य दश वर्षावच्छिन्न श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरा प्रीतिकामिमं छाग रुधिरं समुण्डं विष्णु दैवतं भगवत्यै श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरायै तुभ्यमहं सम्प्रददे। हाथ में जल लेकर समर्पित करे।

नीराजनविधिः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फट्। दीपपात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नमः। दीपपात्र का अभ्यर्चन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ। द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ। वामहस्त तल को दक्षहस्त पृष्ट पर रख कर निवेशन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जय ध्वनि मातः स्वाहा। घण्टा का पूजन करे।

दीपज्योतिपूजनम्—

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पाति नो भीतिर्भद्रकाली नमोऽस्तु ते॥

भद्रकालि! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होनेवाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करनेवाला तुम्हारा त्रिशूल समस्त भयों से हमारी रक्षा करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

जले ज्वाला स्थले ज्वाला ज्वाला पर्वतमस्तके।
त्रैलोक्यव्यापिनी ज्वाला ज्वाला देवि नमोऽस्तु ते॥

जल में, स्थल में, पर्वत के ऊपर, तीनों लोकों में व्याप्त ज्वाला (ज्योति) स्वरूपिणी महाकालिका ज्वाला देवी को नमस्कार है।

मूल मन्त्र से पूजन कर एक बार नाभि प्रदेश तक, दो बार स्तन मण्डल तक, चार बार मुख मण्डल तक पुनः सात बार पूरे शरीर तक आरती घुमाये।

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि॥१॥

कर्पूर के समान गौर, करुणा के अवतार, भवानी के सहित शिव हमारे हृदय में वास करे उनकों नमस्कार है॥१॥

ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं च यत्।
आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण जगदीश्वरि॥२॥

कर्पूर से युक्त बत्ती को जलाकर दिव्य आरती करता हूँ, हे जगदीश्वरि! इसे ग्रहण करें॥२॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥३॥

केले के वृक्ष से उत्पन्न कर्पूर से आरती करता हूँ, हे महादेवि! कृपापूर्वक दृष्टि से देख कर वर प्रदान कर्त्ता बने॥३॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै आरार्तिक्यं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनि मुद्रा प्रदर्शित करके छत्र-चामर डुला कर पुनः पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

बुद्धिः शरासने क्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च।
मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता॥१॥
ध्वनयो गीतिरूपेण शब्दवाद्यप्रभेदतः।
छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो॥२॥
सुषुम्ना ध्वजरूपेण प्राणाद्या वा शरात्मना।
अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तोरथात्मना॥३॥
इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीन् रथवर्त्मना।
मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः॥४॥

सर्वमन्यं तवाक्लृप्तं तवोपकरणात्मना।

श्लोकोच्चार पूर्वक पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

नि उपसर्ग अस् धातु **(असु क्षेपणे दिवादि गण परस्मैपदी)** लट् उत्तम पुरुष एक वचन में न्यस्यामि बनेगा जिसका अर्थ स्थापित करना या जोड़ना होता है।

छागादिवलिदानं परिपूर्णम्

⁂

विपरीतप्रत्यङ्गिरायन्त्रस्थापनम्

विन्दुत्रिकोणसंयुक्तं षट्कोणसमन्वितम्।
कालीपीठे यजेद्देवीं त्रिपञ्चकोणाढ्यकर्णिके।।
अष्टपत्रे षोडशाब्जे वृत्तभूपुरसंयुते।
विपरीतासमाकाली प्रत्यङ्गिरातथोदिता।।

ताम्रपात्र पर जो एक वितस्त वर्गाकार परिपूर्ण मोटा हो उस पर अष्टगन्ध सिन्दूर कुंकुम रक्तचन्दन से प्रस्तुत यन्त्र उत्कीर्ण करना चाहिये, ताम्रपात्र के अभाव में भोजपत्र पर गन्धादि निर्मित यन्त्र को जलादि स्नान भावनात्मक करे। धातु अथवा रत्नादि के यन्त्र पर स्नाऩादि उपचार यथावत् करे। सर्वप्रथम अधोलिखित मन्त्र से यन्त्र भूपुर लिख कर उसके भीतर एक वृत्त इस प्रकार लिखे, जिसमें अन्दर की तरफ और बाहर की तरफ तीन अष्टदल बन जाय, उस अष्टदल के भीतर वृत्त लिखे, वृत्तों के भीतर नव त्रिकोणात्मक त्रिकोण लिख उसके भीतर पञ्चदश त्रिकोणात्मक त्रिकोण लिख पश्चात् षट्कोण लिखे तथा षट्कोण के भीतर एक त्रिकोण, उसमें एक बिन्दु लिखकर पञ्चगव्य से प्रच्छालित कर शुद्ध करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा आसुरेखे वज्ररेखे हुँ फट् स्वाहा। मन्त्र से यन्त्र लेखन करे।

यन्त्रप्रतिष्ठा

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः बिन्दुत्रिकोणषट्कोण-पञ्चदशत्रिकोणबहिरन्तरष्टदलपद्मान्वितवृत्तभूपुरमेकात्मकयन्त्रस्य सजीवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

यन्त्रेदेवीप्राणप्रतिष्ठा

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ पँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः बिन्दुत्रिकोणषट्कोण-पञ्चदशत्रिकोणबहिरन्तरष्टदलपद्मान्वितवृत्तभूपुरमेकात्मकयन्त्रे विपरीतप्रत्यङ्गिराया प्राणा इह प्राणाः।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः बिन्दुत्रिकोणषट्कोण-पञ्चदशत्रिकोणबहिरन्तरष्टदलपद्मान्वितवृत्तभूपुरमेकात्मकयन्त्रे विपरीतप्रत्यङ्गिराया जीव इह स्थितः।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ पँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः बिन्दुत्रिकोणषट्कोण-

पञ्चदशत्रिकोणबहिरन्तरष्टदलपद्मान्वितवृत्तभूपुरमेकात्मकयन्त्रे विपरीतप्रत्यङ्गिराया सजीवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

प्रतिष्ठा के बाद यन्त्र गायत्री का अष्टोत्तरशत जप करे।

ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धिमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।।

अष्टोत्तरशत जप कर मूल मन्त्र से दश बार पुष्पाञ्जलि प्रदान करके मूल मन्त्र से अष्टोत्तरशत आहुति प्रदान कर बचे हुए घृत को यन्त्र गायत्री से यन्त्र में ऊपर प्रक्षेप करके आवरण देवताओं का आवाहन स्थापन करे।

अपने दक्षिण बिन्दु में देवी के आवाहनार्थ गन्धाक्षत समर्पित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा विपरीतप्रत्यङ्गिरा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

अपने वाम बिन्दु में महाकाल के आवाहनार्थ गन्धाक्षत समर्पित करे।

ॐ क्रीँ हूँ ह्रीँ ह्रौँ क्ष्मीँ हूँ महाकालाय हौँ महादेवाय क्रीँ कालिकायै हौँ महाकालाय नमः महाकालशिव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

त्रिकोणे

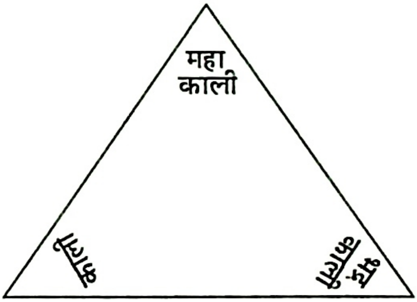

त्रिकोण में कालिकाओं की स्थापना करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काल्यै नमः काली इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भद्रकाल्यै नमः भद्रकाली इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकाल्यै नमः महाकाली इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

षट्कोणे

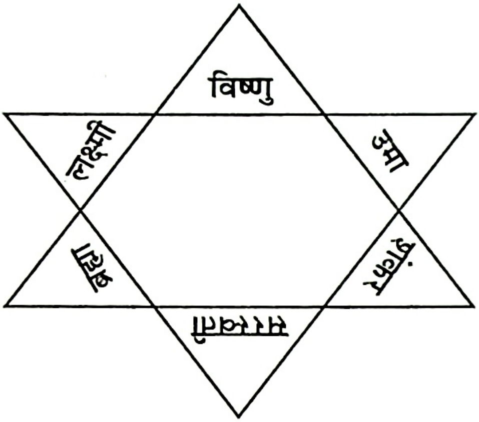

षट्कोणों में वामावर्त परिक्रमा क्रम से सपत्नी त्रिदेवों की स्थापना करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वत्यै नमः सरस्वती इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विष्णवे नमः विष्णु इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उमायै नमः उमा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शिवाय नमः शिव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

भूपुरेचतुश्कोणे

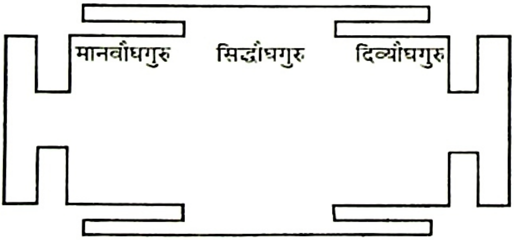

भूपुर के वायव्य कोण में मानवौघ, उत्तर में सिद्धौघ, ईशान में दिव्यौघ गुरुओं की स्थापना करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महादेव्यम्बायै नमः महादेव्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महादेवानन्दनाथाय नमः महादेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिपुरानन्दनाथाय नमः त्रिपुरानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भैरवानन्दनाथाय नमः भैरवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मानन्दनाथाय नमः ब्रह्मानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पूर्णदेवानन्दनाथाय नमः पूर्णदेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चलचित्तानन्दनाथाय नमः श्रीचलचित्तानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चलचलानन्दनाथाय नमः श्रीचलचलानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुमारानन्दनाथाय नमः श्रीकुमारानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरदानन्दनाथाय नमः श्रीवरदानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्मरदीपानन्दनाथाय नमः श्रीस्मरदीपानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मायाम्बायै नमः श्रीमायाम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मायावत्यम्बायै नमः श्रीमायावत्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विमलानन्दनाथाय नमः श्रीविमलानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुशलानन्दनाथाय नमः श्रीकुशलानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमत्सेनानन्दनाथाय नमः श्रीमत्सेनानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुधाकरानन्दनाथाय नमः श्रीसुधाकरानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रह्लादानन्दनाथाय नमः श्रीप्रह्लादानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सनकानन्दनाथाय नमः श्रीसनकानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वसिष्ठानन्दनाथाय नमः श्रीवसिष्ठानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बोधानन्दनाथाय नमः श्रीबोधानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मीनानन्दनाथाय नमः श्रीमीनानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गोरक्षनाथानन्दनाथाय नमः श्रीगोरक्षनाथानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भोजदेवानन्दनाथाय नमः श्रीभोजदेवानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्रजापत्यानन्दनाथाय नमः श्रीप्रजापत्यानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मूलदेवानन्दनाथाय नमः श्रीमूलदेवानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रन्तिदेवानन्दनाथाय नमः श्रीरन्तिदेवानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विघ्नेश्वरानन्दनाथाय नमः श्रीविघ्नेश्वरानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हुताशनानन्दनाथाय नमः श्रीहुताशनानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं समयानन्दनाथाय नमः श्रीसमयानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सन्तोषानन्दनाथाय नमः श्रीसन्तोषानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वगुरवानन्दनाथाय नमः श्रीस्वगुरवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

पञ्चदशत्रिकोणे

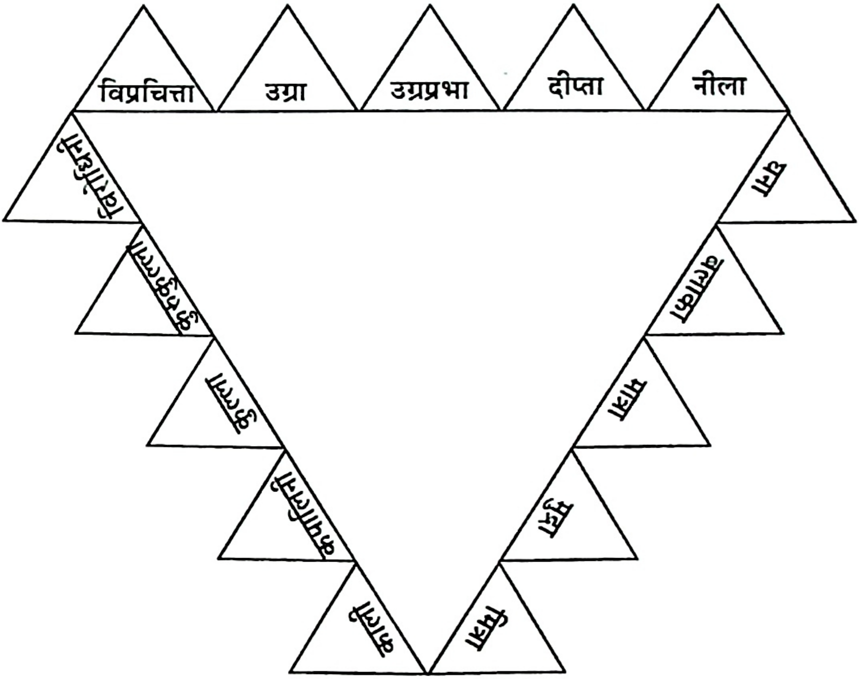

वामावर्त क्रम से पञ्चदश त्रिकोणों में रश्मि देवताओं की स्थापना करे—

प्रथम त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काल्यै नमः काली इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

द्वितीय त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कपालिन्यै नमः कपालिनी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

तृतीय त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुल्लायै नमः कुल्ला इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

चतुर्थ त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुरुकुल्लायै नमः कुरुकुल्ला इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

पञ्चम त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विरोधिन्यै नमः विरोधिनी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

षष्ठ त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विप्रचित्तायै नमः विप्रचित्ता इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

सप्तम त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उग्रायै नमः उग्रा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

अष्टम त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उग्रप्रभायै नमः उग्रप्रभा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

नवम त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दीप्तायै नमः दीप्ता इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

दशम त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नीलायै नमः नीला इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

एकादश त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घनायै नमः घना इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

द्वादश त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बलाकायै नमः बलाका इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

त्रयोदश त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मात्रायै नमः मात्रा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

चतुर्दश त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मुद्रायै नमः मुद्रा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

पञ्चदश त्रिकोणे—ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मित्रायै नमः मित्रा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

अष्टदले

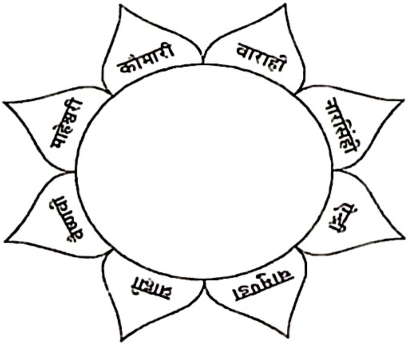

वामावर्त क्रम से अष्टदलों में अष्ट शक्तियों का आवाहन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वैष्णव्यै नमः वैष्णवी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कौमार्यै नमः कौमारी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अपराजितायै नमः अपराजिता इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाराह्यै नमः वाराही इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नारसिंह्यै नमः नारसिंही इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चामुण्डायै नमः चामुण्डा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

अन्तः अष्टकोणे

वामावर्त क्रम से अन्तः अष्ट कोणों पर अष्टभैरवों का आवाहन करे—

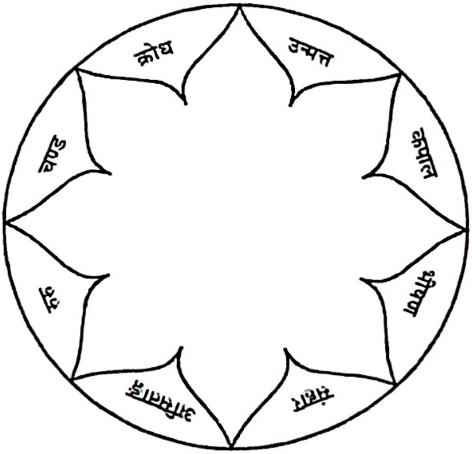

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठआवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कपालभैरवाय नमः कपालभैरव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं संहारभैरवाय नमः संहारभैरव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

षोडशपत्रोपरि

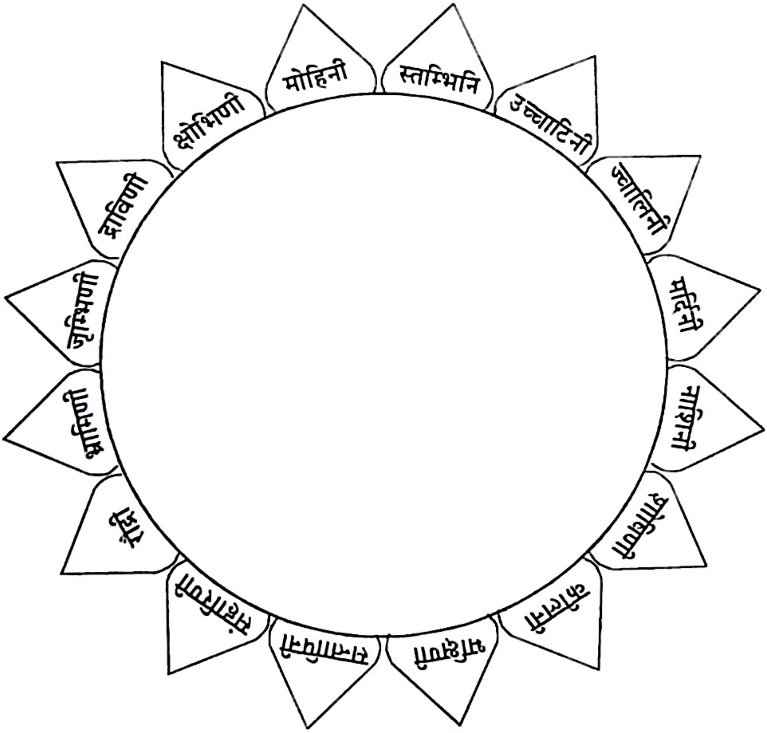
मोहिनी
स्तम्भिनि
उच्चाटिनी
ज्वालिनी
मर्दिनी
नाशिनी
शोषिणी
कीलनी
भक्षिणी
सन्तापिनी
संहारिणी
रौद्री
भ्रामिणी
जृम्भिणी
द्राविणी
क्षोभिणी

वामावर्त क्रम से षोडश पत्रों पर षोडश योगियों का आवाहन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीसन्तापिन्यै नमः श्रीसन्तापिनी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं संहारिण्यै नमः संहारिणी इहागच्छे, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रौद्र्यै नमः रौद्री इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भ्रामिण्यै नमः भ्रामणी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जृम्भिण्यै नमः जृम्भिणी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं द्राविण्यै नमः द्राविणी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षोभिण्यै नमः क्षोभिणी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मोहिन्यै नमः मोहिनी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्तम्भिन्यै नमः स्तम्भिनि इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उच्चाटिन्यै नमः उच्चाटिनी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मर्दिन्यै नमः मर्दिनी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नाशिन्यै नमः नाशिनी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शोषिण्यै नमः शोषिणी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कीलिन्यै नमः कीलनी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भक्षिण्यै नमः भक्षिणी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

भूपुरे

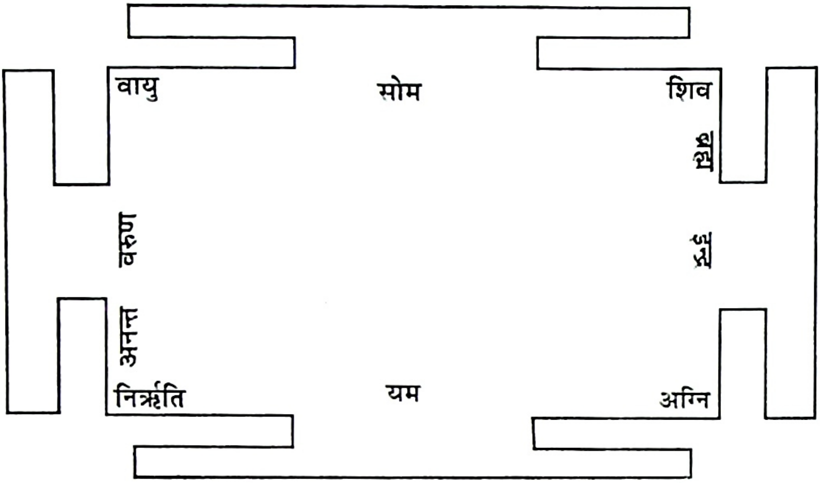

भूपुर के चारों ओर दश दिग्पालों का आवाहन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इन्द्राय नमः इन्द्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नये नमः अग्नि इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यमाय नमः यम इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं निर्ऋतये नमः निर्ऋति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरुणाय नमः वरुण इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वायवे नमः वायु इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सोमाय नमः सोम इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईशानाय नमः ईशान इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनन्ताय नमः अनन्त इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

भूपुरे

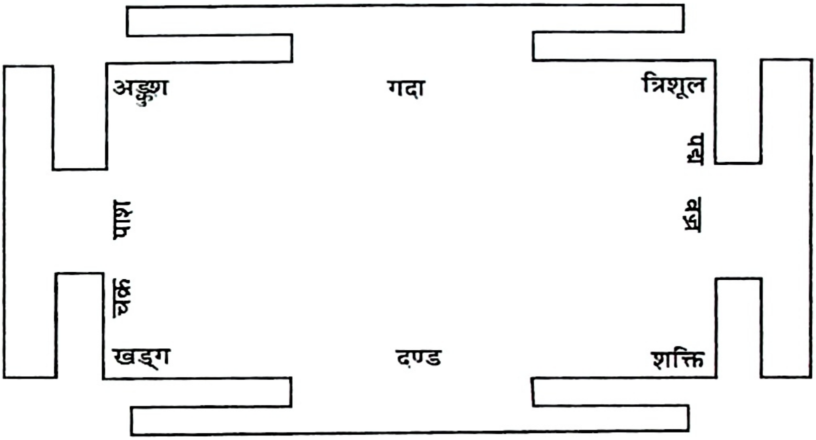

दिग्पालों के स्थान पर दिक्पालास्त्रों का आवाहन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रशक्तये नमः वज्रशक्ति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शक्तिशक्तये नमः शक्तिशक्ति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दण्डशक्तये नमः दण्डशक्ति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठइह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खड्गशक्तये नमः खड्गशक्ति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पाशशक्तये नमः पाशशक्ति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अङ्कुशशक्तये नमः अङ्कुशशक्ति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गदाशक्तये नमः गदाशक्ति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिशूलशक्तये नमः त्रिशूलशक्ति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पद्मशक्तये नमः पद्मशक्ति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चक्रशक्तये नमः चक्रशक्ति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

भूपुरे

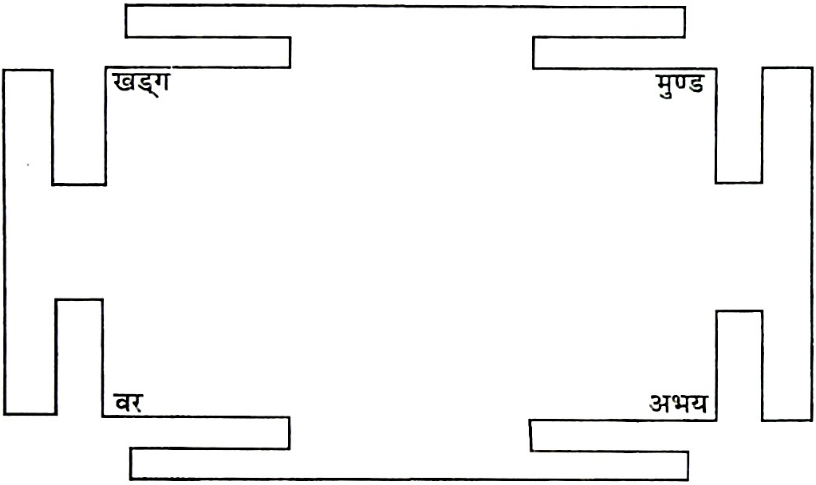

भूपुर के चारों कोनों में देव्यस्त्रों का आवाहन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खड्गाय नमः खड्ग इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मुण्डाय नमः मुण्ड इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अभयाय नमः अभय इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वराय नमः वर इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

भूपुरे

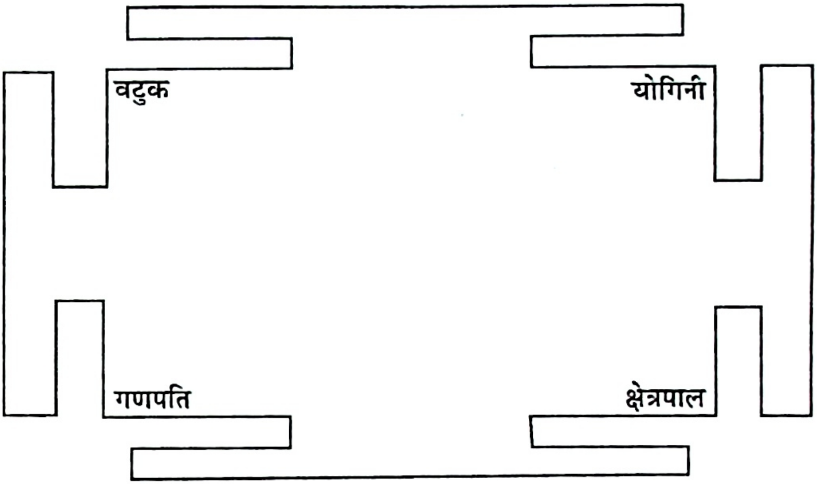

भूपुर के चारों कोनों पर वटुकादि का आवाहन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वटुकाय नमः वटुक इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं योगिन्यै नमः योगिनी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गणेशाय नमः गणेश इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपाल इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं राजराजेश्वराय नमः राजराजेश्वर इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः बिन्दुत्रिकोणषट्कोणपञ्चदशत्रिकोणबहिरन्तरष्टदलपद्मान्वितवृत्तभूपुरमेकात्मकयन्त्रे विपरीतप्रत्यङ्गिराया आवरणदेवताया प्राणा इह प्राणाः।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः बिन्दुत्रिकोणषट्कोणपञ्चदशत्रिकोणबहिरन्तरष्टदलपद्मान्वितवृत्तभूपुरमेकात्मकयन्त्रे विपरीतप्रत्यङ्गिराया आवरणदेवताया जीव इह स्थितः।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः बिन्दुत्रिकोणषट्कोणपञ्चदशत्रिकोणबहिरन्तरष्टदलपद्मान्वितवृत्तभूपुरमेकात्मकयन्त्रे विपरीतप्रत्यङ्गिराया आवारणदेवताया सजीवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यन्त्रस्थापनं परिपूर्णम्

❀

जपमालासंस्कारम्

एक समान सुन्दर रुद्राक्ष लाकर १०८ दाने को और एक दाना सुमेरु के लिए, समान सूत्र में माला को पिरो कर प्रत्येक मणि के बीच एक एक गांठ देते हुए तैयार करके फिर उसमें सुमेरु गुम्फित माला को परिपूर्ण करके, माला को पीपल के नव पत्रों पर अष्टपद्मवत् रख कर उस पर माला को स्थापित कर, पञ्चगव्यादि से प्रच्छालित करके, पञ्चामृत से स्नान करा कर, शुद्धोदक से अच्छी तरह धोकर संस्कार करे।

पञ्चगव्यसंस्कारम्

ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह॥ वृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिःशम्म्यन्तुत्त्वा॥ पञ्चगव्य से प्रच्छालित करे।

ॐ पयःपृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशःसन्तुमह्य्यम्॥ दूध से प्रच्छालित करे।

ॐ दधिक्क्राव्ण्णोऽअकारिषंजिष्ष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्राणऽआयूꣳषितारिषत्॥ दही से प्रच्छालित करे।

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंव्वृषभवक्षिहव्यम्॥ घृत से प्रच्छालित करे।

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥ मधु से प्रच्छालित करे।

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥अपाꣳरसस्ययोरसस्तंवोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्ट्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्ट्टतमम॥ शर्करा से प्रच्छालित करे।

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ पञ्चामृत से प्रच्छालित करे।

ॐ शुद्धवालःसर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरुपाःपार्ज्जन्याः॥ ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ स्वच्छ जल से प्रच्छालित करे।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।। भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।। जल से प्रच्छालित करे।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय ममो मनोन्मनाय नमः।। अष्टगन्धादि चन्दन लेपन करे।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। धूपादि से धूपित करे।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।। दीपक दिखा कर दीप्त करे।

ॐ ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानाम्।। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेऽस्तुसदाशिवोऽम्।। प्रत्येक मणियों मे १०८ बार अभिमन्त्रित कर मातृका विन्यास करे।

मातृकाविन्यासः

१.ॐ ह्रौँ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२.ॐ ह्रौँ आँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३.ॐ ह्रौँ इँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४.ॐ ह्रौँ ईँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५.ॐ ह्रौँ उँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६.ॐ ह्रौँ ऊँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७.ॐ ह्रौँ ऋँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८.ॐ ह्रौँ ॠँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९.ॐ ह्रौँ लृँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०. ॐ ह्रौँ लॄँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

११. ॐ ह्रौँ एँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१२. ॐ ह्रौँ ऐँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१३. ॐ ह्रौँ ओँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१४. ॐ ह्रौँ औँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१५. ॐ ह्रौँ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१६. ॐ ह्रौँ अः ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१७. ॐ ह्रौँ कँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१८. ॐ ह्रौँ खँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१९. ॐ ह्रौँ गँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२०. ॐ ह्रौँ घँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२१. ॐ ह्रौँ ङँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२२. ॐ ह्रौँ चँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२३. ॐ ह्रौँ छँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२४. ॐ ह्रौँ जँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२५. ॐ ह्रीँ झँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२६. ॐ ह्रीँ ञँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२७. ॐ ह्रीँ टँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२८. ॐ ह्रीँ ठँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२९. ॐ ह्रीँ डँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३०. ॐ ह्रीँ ढँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३१. ॐ ह्रीँ णँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३२. ॐ ह्रीँ तँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३३. ॐ ह्रीँ थँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३४. ॐ ह्रीँ दँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३५. ॐ ह्रीँ धँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३६. ॐ ह्रीँ नँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३७. ॐ ह्रीँ पँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३८. ॐ ह्रीँ फँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३९. ॐ ह्रीँ बँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४०. ॐ ह्रीँ भँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४१. ॐ ह्रीँ मँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४२. ॐ ह्रीँ यँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४३. ॐ ह्रीँ रँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४४. ॐ ह्रीँ लँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४५. ॐ ह्रीँ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४६. ॐ ह्रीँ शँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४७. ॐ ह्रीँ षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४८. ॐ ह्रीँ सँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४९. ॐ ह्रीँ ळँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५०. ॐ ह्रीँ हँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५१. ॐ ह्रीँ हँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५२. ॐ ह्रीँ ळँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५३. ॐ ह्रीँ सँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५४. ॐ ह्रीँ षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५५. ॐ ह्रीँ शँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५६. ॐ ह्रीँ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५७. ॐ ह्रीँ लँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५८. ॐ ह्रीँ रँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५९. ॐ ह्रीँ यँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६०. ॐ ह्रीँ मँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६१. ॐ ह्रीँ भँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६२. ॐ ह्रीँ बँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६३. ॐ ह्रीँ फँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६४. ॐ ह्रीँ पँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६५. ॐ ह्रीँ नँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६६. ॐ ह्रीँ धँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६७. ॐ ह्रीँ दँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६८. ॐ ह्रीँ थँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६९. ॐ ह्रीँ तँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७०. ॐ ह्रीँ णँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७१. ॐ ह्रीँ ढँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७२. ॐ ह्रीँ डँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७३. ॐ ह्रीँ ठँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७४. ॐ ह्रीँ टँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७५. ॐ ह्रीँ ञँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७६. ॐ ह्रीँ झँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७७. ॐ ह्रीँ जँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७८. ॐ ह्रीँ छँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७९. ॐ ह्रीँ चँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८०. ॐ ह्रीँ ङँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८१. ॐ ह्रीँ घँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८२. ॐ ह्रीँ गँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८३. ॐ ह्रीँ खँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८४. ॐ ह्रीँ कँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८५. ॐ ह्रीँ अः ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८६. ॐ ह्रीँ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८७. ॐ ह्रीँ औँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८८. ॐ ह्रीँ ओँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८९. ॐ ह्रीँ ऐँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९०. ॐ ह्रीँ एँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९१. ॐ ह्रीँ लॄँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९२. ॐ ह्रीँ लृँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९३. ॐ ह्रीँ ॠँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९४. ॐ ह्रीँ ऋँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९५. ॐ ह्रीँ ऊँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९६. ॐ ह्रीँ उँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९७. ॐ ह्रीँ ईँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९८. ॐ ह्रीँ इँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९९. ॐ ह्रीँ आँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१००.ॐ ह्रीँ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०१.ॐ ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०२.ॐ ह्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०३.ॐ ह्रीँ चँ छँ जँ झँ ञँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०४.ॐ ह्रीँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०५.ॐ ह्रीँ तँ थँ दँ धँ नँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०६.ॐ ह्रीँ पँ फँ बँ भँ मँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०७.ॐ ह्रीँ यँ रँ लँ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०८.ॐ ह्रीँ शँ षँ सँ हँ ळँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०९.ॐ ह्रीँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

माला में इष्टदेवता प्रतिष्ठामाला में इष्टदेवता प्रतिष्ठा

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि, प्राणशक्तिर्देवता प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋग्यजुस्सामानि छन्देभ्यो नमः मुखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं प्राणशक्तयै नमः हृदि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रौँ प्राणशक्त्यै नमः सर्वाङ्गे।

कराक्षरन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ खँ गँ घँ ङँ आकाशवाय्वाग्न्यपभूम्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ छँ जँ झँ ञँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ ठँ डँ ढँ णँ श्रोत्रत्वङ्नयनजिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ थँ दँ धँ नँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ फँ बँ भँ मँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ बुद्धिमनोहङ्कारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयाद्यक्षरन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ खँ गँ घँ ङँ आकाशवाय्वाग्न्यपभूम्यात्मने हृदयाय नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ छँ जँ झँ ञँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ ठँ डँ ढँ णँ श्रोत्रत्वक्नयनजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वौषट्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ थँ दँ धँ नँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हूम्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ फँ बँ भँ मँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ बुद्धिमनोहङ्कारचित्तात्मने अस्त्राय फट्।

व्यापकाक्षरन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ नाभ्यारभ्य पादान्तं न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीँ हृदयारभ्य नाभ्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्रौँ मस्तकारभ्य हृदयान्तं न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ त्वगात्मने नमः न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ असृगात्मने नमः न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ मांसात्मने नमः न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ मेदात्मने नमः न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ अस्थ्यात्मने नमः न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ मज्जात्मने नमः न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ शुक्रात्मने नमः न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हौँ ओजात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूँ प्राणात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ जीवात्मने नमः न्यस्यामि।

लेलिहान मुद्रा से हृदय पर न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि। माला के मणियों में न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तं पीठदेवताभ्यो नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयादिशक्तिभ्यो नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ पीठाय नमः।

ध्यानम्

ॐ पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषूञ्छूलैर्हस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिवत्पोत रक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥

ध्यान के बाद माला में देवता की प्रतिष्ठा करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् रुद्राक्षमालिकाया श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवताया प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् रुद्राक्षमालिकाया श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवताया जीव इह स्थितः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् रुद्राक्षमालिकाया श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवताया सर्वेन्द्रियाणि वाक्मनश्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वा-घ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अस्मिन् रुद्राक्षमालिकाया श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवताया गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

इसके बाद माला का षोडशोपचार पूजन करे।

मालासंस्कारं परिपूर्णम्

❀

मन्त्रसंस्कारम्

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमेतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदे मासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहं श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य छिन्नत्वादि पञ्चाशद्दोषपरिहारार्थं आराध्यकर्मणे विघ्नविच्छेदजनितप्रत्यवायपरिहारद्वारा श्रीष्ट-विपरीतप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थं जननादि संस्काराणि कर्म करिष्ये।

१.शापोद्धारम्—ताम्रपात्र पर चन्दन से स्वाहायुक्त मूल मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को हस्रौं बीज से सम्पुटित कर लिखे, विधिपूर्वक पूजन कर एक हजार जप करे।

हस्रौँ ॐ हस्रौँ, हस्रौँ हूं हस्रौँ, हस्रौँ ह्रीं हस्रौँ, हस्रौँ क्लीं हस्रौँ, हस्रौँ ऐं हस्रौँ, हस्रौँ वि हस्रौँ, हस्रौँ प हस्रौँ, हस्रौँ री हस्रौँ, हस्रौँ त हस्रौँ, हस्रौँ म हस्रौँ, हस्रौँ हा हस्रौँ, हस्रौँ प्र हस्रौँ, हस्रौँ त्य हस्रौँ, हस्रौँ ङ्गि हस्रौँ, हस्रौँ रा हस्रौँ, हस्रौँ यै हस्रौँ, हस्रौँ ऐं हस्रौँ, हस्रौँ क्लीं हस्रौँ, हस्रौँ ह्रीं हस्रौँ, हस्रौँ हूं हस्रौँ, हस्रौँ स्वा हस्रौँ, हस्रौँ हा हस्रौँ।

२.उत्कीलनम्—ताम्रपात्र पर मूलमन्त्र के प्रत्येक अक्षर को हस्क्लीँ बीज से सम्पुटित करके लिखे तथा विधिपूर्वक पूजन करके एक माला जप करे।

हस्क्लीँ ॐ हस्क्लीँ, हस्क्लीँ हूं हस्क्लीँ, हस्क्लीँ ह्रीं हस्क्लीँ, हस्क्लीँ क्लीं हस्क्लीँ, हस्क्लीँ ऐं हस्क्लीँ, हस्क्लीँ वि हस्क्लीँ, हस्क्लीँ प हस्क्लीँ, हस्क्लीँ री हस्क्लीँ, हस्क्लीँ त हस्क्लीँ, हस्क्लीँ म हस्क्लीँ, हस्क्लीँ हा हस्क्लीँ, हस्क्लीँ प्र हस्क्लीँ, हस्क्लीँ त्य हस्क्लीँ, हस्क्लीँ ङ्गि हस्क्लीँ, हस्क्लीँ रा हस्क्लीँ, हस्क्लीँ यै हस्क्लीँ, हस्क्लीँ ऐं हस्क्लीँ, हस्क्लीँ क्लीं हस्क्लीँ, हस्क्लीँ ह्रीं हस्क्लीँ, हस्क्लीँ हूं हस्क्लीँ, हस्क्लीँ स्वा हस्क्लीँ, हस्क्लीँ हा हस्क्लीँ।

३.चेतनीम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को ईँ ऐं आँ से सम्पुटित करके लिख कर विधिवत् पूजन करके एक माला जप करे।

ईँ ऐँ औँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा ईँ ऐँ औँ।

४.आह्लादनीम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को ॐ क्लीँ नमः से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ॐ क्लीँ नमः ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा ॐ क्लीँ नमः।

५.तेजोद्दीपनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को वद वद वाग्वादिनी से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

वद वद वाग्वादिनि ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा वद वद वाग्वादिनि।

६.मन्त्राभ्यजननम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मन्त्र को अनुलोमविलोम मातृका से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ लँ हँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा क्षँ हँ लँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अं औँ ओँ ऐँ एँ ॠँ ऋँ ॡँ ऌँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ।

७.सूतकनिवारणम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को वालामन्त्र ऐँ क्लीँ सौः से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ऐँ क्लीँ सौः ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा ऐँ क्लीँ सौः।

८.उभयसूतकत्यागम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र के प्रत्येक अक्षर को ॐ से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ॐ ॐ ॐ, ॐ हूं ॐ, ॐ ह्रीं ॐ, ॐ क्लीं ॐ, ॐ ऐं ॐ, ॐ वि ॐ, ॐ प ॐ, ॐ री ॐ, ॐ त ॐ, ॐ म ॐ, ॐ हा ॐ, ॐ प्र ॐ, ॐ त्य ॐ, ॐ ङ्गि ॐ, ॐ रा ॐ, ॐ यै ॐ, ॐ ऐं ॐ, ॐ क्लीं ॐ, ॐ ह्रीं ॐ, ॐ हूं ॐ, ॐ स्वा ॐ, ॐ हा ॐ।

९.मन्त्रप्रत्यक्षम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र के प्रत्येक अक्षर को श्रीँ से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

श्रीँ ॐ श्रीँ, श्रीँ हूं श्रीँ, श्रीँ ह्रीं श्रीँ, श्रीँ क्लीं श्रीँ, श्रीँ ऐं श्रीँ, श्रीँ वि श्रीँ, श्रीँ प श्रीँ, श्रीँ री श्रीँ, श्रीँ त श्रीँ, श्रीँ म श्रीँ, श्रीँ हा श्रीँ, श्रीँ प्र श्रीँ, श्रीँ त्य श्रीँ, श्रीँ ङ्गि

श्रीँ, श्रीँ रा श्रीँ, श्रीँ यै श्रीँ, श्रीँ ऐं श्रीँ, श्रीँ क्लीं श्रीँ, श्रीँ ह्रीं श्रीँ, श्रीँ हूं श्रीँ, श्रीँ स्वा श्रीँ, श्रीँ हा श्रीँ।

१०.प्राणस्थापनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र के प्रत्येक अक्षर को ऐं से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ऐँ ॐ ऐँ, ऐँ हूं ऐँ, ऐँ ह्रीं ऐँ, ऐँ क्लीं ऐँ, ऐँ ऐं ऐँ, ऐँ वि ऐँ, ऐँ प ऐँ, ऐँ री ऐँ, ऐँ त ऐँ, ऐँ म ऐँ, ऐँ हा ऐँ, ऐँ प्र ऐँ, ऐँ त्य ऐँ, ऐँ ङ्गि ऐँ, ऐँ रा ऐँ, ऐँ यै ऐँ, ऐँ ऐं ऐँ, ऐँ क्लीं ऐँ, ऐँ ह्रीं ऐँ, ऐँ हूं ऐँ, ऐँ स्वा ऐँ, ऐँ हा ऐँ।

११.मन्त्रस्पन्दनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को ॐ ह्रौं ॐ से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

ॐ ह्रौं ॐ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा ॐ ह्रौं ॐ।

१२.मन्त्रदीपनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र को हंसमन्त्र से सम्पुटित करके चित्रानुसार लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

सोऽहं हंसः ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा हंसः सोऽहं।

१३.मन्त्रताडनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को ॐ यँ फट् से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

ॐ यँ फट् ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा ॐ यँ फट्।

१४.मन्त्रनिबोधनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को हूँ से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

हूँ ॐ हूँ, हूँ हूं हूँ, हूँ ह्रीं हूँ, हूँ क्लीं हूँ, हूँ ऐं हूँ, हूँ वि हूँ, हूँ प हूँ, हूँ री हूँ, हूँ त हूँ, हूँ म हूँ, हूँ हा हूँ, हूँ प्र हूँ, हूँ त्य हूँ, हूँ ङ्गि हूँ, हूँ रा हूँ, हूँ यै हूँ, हूँ ऐं हूँ, हूँ क्लीं हूँ, हूँ ह्रीं हूँ, हूँ हूं हूँ, हूँ स्वा हूँ, हूँ हा हूँ।

१५.मन्त्राभिषेचनम्—ताम्रपात्र पर मूल मन्त्र लिख कर पूजन करके जल से एक हजार बार मार्जन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा अभिषिञ्चामि।

१६.मन्त्रदाहनम्—ताम्रपात्र पर चित्रानुसार मन्त्र को लिखे तथा पूजन करके एक माला जप करे।

रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ ॐ रँ, रँ हूं रँ, रँ ह्रीं रँ, रँ क्लीं रँ, रँ ऐं रँ, रँ वि रँ, रँ प रँ,
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ

रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ री रँ, रँ त रँ, रँ म रँ, रँ हा रँ, रँ प्र रँ, रँ त्य रँ, रँ ङ्गि रँ,
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ

रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ रा रँ, रँ यै रँ, रँ ऐं रँ, रँ क्लीं रँ, रँ ह्रीं रँ, रँ हूं रँ, रँ स्वा रँ, रँ हा रँ
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ

रँ ॐ रँ, रँ हूं रँ, रँ ह्रीं रँ, रँ क्लीं रँ, रँ ऐं रँ, रँ वि रँ, रँ प रँ, रँ री रँ, रँ त रँ, रँ म रँ, रँ हा रँ, रँ प्र रँ, रँ त्य रँ, रँ ङ्गि रँ, रँ रा रँ, रँ यै रँ, रँ ऐं रँ, रँ क्लीं रँ, रँ ह्रीं रँ, रँ हूं रँ, रँ स्वा रँ, रँ हा रँ।

१७.मन्त्रविमलीकरणम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र को ॐ ह्रौं वषट् से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

ॐ ह्रौं वषट् ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा ॐ ह्रौं वषट्।

१८.मन्त्रपुनर्जीवनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र को वषट् से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

वषट् ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा वषट्।

१९.मन्त्रप्रोक्षणम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र को **ॐ क्रौं** से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

ॐ क्रौं ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा क्रौ ॐ।

२०.मन्त्र आप्यायनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को ह्सौं से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ह्सौँ ॐ ह्सौँ, ह्सौँ हूं ह्सौँ, ह्सौँ ह्रीं ह्सौँ, ह्सौँ क्लीं ह्सौँ, ह्सौँ ऐं ह्सौँ, ह्सौँ वि ह्सौँ, ह्सौँ प ह्सौँ, ह्सौँ री ह्सौँ, ह्सौँ त ह्सौँ, ह्सौँ म ह्सौँ, ह्सौँ हा ह्सौँ, ह्सौँ प्र ह्सौँ, ह्सौँ त्य ह्सौँ, ह्सौँ ङ्गि ह्सौँ, ह्सौँ रा ह्सौँ, ह्सौँ यै ह्सौँ, ह्सौँ ऐं ह्सौँ, ह्सौँ क्लीं ह्सौँ, ह्सौँ ह्रीं ह्सौँ, ह्सौँ हूं ह्सौँ, ह्सौँ स्वा ह्सौँ, ह्सौँ हा ह्सौँ।

२१.तर्पणम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर अधोलिखित विधि से लिख कर पूजन करे तथा सहस्र बार तर्पण करे।

ॐ स्वधा विद्महे तत् प्रधानाय धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता तर्पयामि।

२२.पुनर्दीपनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को ॐ क्रीं श्रीं से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

ॐ क्रीँ श्रीँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा ॐ क्रीँ श्रीँ।

२३.गोपनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र के प्रत्येक अक्षर को क्रीं से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

क्रीँ ॐ क्रीँ, क्रीँ क्रीँ, क्रीँ हूं क्रीँ, क्रीँ ह्रीं क्रीँ, क्रीँ क्लीं क्रीँ, क्रीँ ऐं क्रीँ, क्रीँ वि क्रीँ, क्रीँ प क्रीँ, क्रीँ री क्रीँ, क्रीँ त क्रीँ, क्रीँ म क्रीँ, क्रीँ हा क्रीँ, क्रीँ प्र क्रीँ, क्रीँ त्य क्रीँ, क्रीँ ङ्गि क्रीँ, क्रीँ रा क्रीँ, क्रीँ यै क्रीँ, क्रीँ ऐं क्रीँ, क्रीँ क्लीं क्रीँ, क्रीँ ह्रीं क्रीँ, क्रीँ हूं क्रीँ, क्रीँ स्वा क्रीँ, क्रीँ हा क्रीँ।

उपर्युक्त प्रकार से संस्कार करके पुनः मूल मन्त्र का विधिवत् पुरश्चरण करने से सद्यः प्रत्यक्ष सिद्धि प्राप्त होती है इसी प्रकार से विपरीतप्रत्यङ्गिरा के अन्य मन्त्रों का संस्कार करे।

छिन्नत्वादिकदोषा ये पञ्चाशन्मन्त्रसंस्थिता।
तैर्दोषैः सकला व्याप्ता मनवः सप्तकोटयः॥

समस्त मन्त्रों के छिन्नत्वादि जो ५० दोष हैं, उनसे सातों कोटि मन्त्र व्याप्त है। अतः इन दोषों की शान्ति के लिए मन्त्रों का संस्कार करना चाहिये।

मन्त्रसंस्कारविधिं परिपूर्णम्

❀

आवश्यक निर्देश

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता की यह तान्त्रिक विधि उपासना केवल विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा के साधकों के लिए है। इसका अन्यों के लिए कभी प्रयोग नहीं करना चाहिये अन्यथा पुण्य की हानि हो जाती है। अतः सभी से निवेदन है कि इस विधि से यदि साधना करना हो, तो विधिपूर्वक दीक्षादि संस्कार से संस्कृत होकर और विधियों की क्रमिक क्रियाओं को पूर्णतः जान कर तथा पूर्ण रूप से अभ्यास करके ही साधना में प्रवृत्त हो। अन्य आर्त जनों के लिए विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा की उपासना कर्मकाण्डी आचार्गों को वैदिक विधि से ही करानी चाहिये। तान्त्रिक विधि का प्रयोग केवल साधनाओं के लिए ही करना चाहिये। तान्त्रिक विधि की उपासना में नियमों का अनुपालन अत्यधिक आवश्यक होता है जिसमें त्रुटि होने पर कर्ता की हानि होती है।

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा महाविद्या का प्रयोग प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन को सफल बनाने के लिए अवश्य ही करना चाहिये, इस घोर कलियुगीय वातावरण में यह महाविद्या लोगों की रक्षा कर उन्हें सुखी बनाती है। इस पुस्तक में उल्लिखित समस्त सामग्री शास्त्रों से विधियुक्त तथा प्रामाणिक है और इनका प्रयोग भी कई बार किया गया है, फिर भी बिना पूर्णरूप से विधियों को सीखे केवल पुस्तक के अधार पर ही कोई भी प्रयोग न करें, क्योंकि पुस्तकों में क्रियाओं के सैद्धान्तिक पक्ष ही उद्धृत होते हैं। क्रियात्मक पक्ष तो सामने बैठ कर सीखने से ही आता है, इसलिए किसी भी प्रयोग को पूर्णरूप से सीख करके ही प्रयोग करें। प्रयोगों को विधिपूर्वक सीखने के लिए इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क कर सकते हैं। शिवं भवतु

रामप्रिय पाण्डेय

।। श्रीः ।।

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या

वैदिकविधिः

सर्वप्रथम यजमान अपनी पत्नी के साथ शुभमुहूर्त में शुभासन पर बैठ करके तिलक करने के बाद शरीरशुद्ध्यर्थ तथा कर्माधिकारप्राप्त्यर्थ पञ्चगव्य का प्राशन अधोलिखित मन्त्र द्वारा करे। तीन बार केशव, नारायण और माधव इन तीनों नामों से अलग-अलग आचमन करे। शरीरशुद्ध्यर्थ तथा कर्माधिकारप्राप्त्यर्थ तिलक करने के बाद पञ्चगव्य का प्राशन अधोलिखित मन्त्र द्वारा करे।

स्वस्तितिलकधारणम्—अधोलिखित मन्त्र से तिलक धारण करे—

ॐ यु॒ञ्जन्ति॑ब्ब्र॒ध्नम॑रु॒षञ्चर॑न्त॒म्परि॑त॒स्थुष॑÷॥ रोच॑न्तेरोच॒नादि॒वि॥ यु॒ञ्जन्त्य॑स्य॒ काम्म्या॒हरी॒व्विप॑क्षसार॑थे॥ शोणा॑धृ॒ष्ण्णू॒नृ॒वाह॑सा॥

तिलक करने के बाद पञ्चगव्यप्राशन करे—

पञ्चगव्यप्राशनम्—अधोलिखित मन्त्र पाठ करते हुए पञ्चगव्य का प्राशन करे—

ॐ यत्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामकीम्।
प्राशनात्पञ्चगव्यस्य पिबेत्यग्निरिवेन्धनम्॥

जो त्वचा और अस्थि में रहनेवाले पाप हमारे शरीर में स्थित हैं, वे समस्त पाप जैसे इन्धन को अग्नि भस्म कर देता है, उसी प्रकार इस पञ्चगव्य के पीने से भस्म हो जायँ।

प्रार्थनापूर्वक पञ्चगव्यप्राशन के पश्चात् तीन बार आचमन करे—

त्रिराचमनम्—ॐ केशवाय नमः॥ ॐ नारायणाय नमः॥ ॐ माधवाय नमः॥

ॐ हृषीकेशाय नमः॥ मन्त्र बोलकर हाथ धोये।

पवित्रिधारणम्—अधोलिखित मन्त्र से पवित्री धारण करे—

ॐ प॒वित्रे॑स्थोव्वैष्ण॒व्व्यौ॒सवि॒तुर्व्व॑÷प्प्रस॒वऽउत्पु॑ना॒म्म्यच्छि॑द्द्रेणप॒वित्रे॑ण॒सूर्य्य॑स्य र॒श्मिभि॑÷॥ तस्य॑तेप॒वित्र॑पतेप॒वित्र॑पूतस्य॒यत्का॑म÷पुनेतच्छ॑केयम्॥

पवित्रिकरणम्—पवित्री धारण के पश्चात् तीन बार पुनः आचमन करे। आचमन करने के पश्चात् प्राणायाम करे तथा अधोलिखित मन्त्र से अपने ऊपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥ ॐ केशवः पुनातु॥ ॐ नारायणः पुनातु॥

यज्ञभूमिपूजनम्—हाथ में पुष्पाक्षत लेकर भूमि पूजन करे—

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

ॐ यज्ञभूम्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शिखास्पर्शनम्—हाथ से शिखास्पर्श करे—

ऊर्ध्वकेशे विरूपाक्षि मांस-शोणित-भोजने।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते॥

श्रीगुरुस्मरणम्—अपने श्रीगुरु का ध्यान करे—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

ॐ गुरुभ्यो नमः॥ ॐ परमगुरुभ्यो नमः॥ परात्परगुरुभ्यो नमः॥ ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः॥ ॐ मानवौघगुरुभ्यो नमः॥ ॐ सिद्धौघगुरुभ्यो नमः॥ ॐ दिव्यौघगुरुभ्यो नमः॥ सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि॥

हाथ में अक्षतपुष्प लेकर भद्रसूक्तमन्त्रों का पाठ करे।

स्वस्तिवाचनम्

यजमान हाथ में पुष्प लेकर स्वस्तिमन्त्रों का पाठ करे अथवा ब्राह्मणों के द्वारा कृत स्वस्तिमन्त्रों के पाठ को ध्यानपूर्वक सुने।

ॐ आनो॑भ॒द्राꣳक्रत॑वोयन्तु॒व्वि॒श्श्वतो॒ऽद॑ब्धासो॒ऽअप॑रीतास॒ऽउ॒द्भिद॑ः॥ दे॒वानो॒यथा॒सद॒मिद्वृ॒धेऽअस॒न्नप्प्रा॑युवोरक्षि॒तारो॑दि॒वेदि॑वे॥१॥ दे॒वाना॑म्भ॒द्रासु॑म॒तिर्ऋ॑जूय॒तान्दे॒वाना॑ꣳरा॒तिर॒भिनो॒निर्व॑र्तताम्॥ दे॒वाना॑ꣳस॒क्ख्यमुप॑सेदिमा॒व्व॒यन्दे॒वान॒ऽआयु॒ꣳप्प्रति॑रन्तुजी॒वसे॑॥२॥ तान्पूर्व्व॑यानि॒विदा॑हूमहे॒व्व॒यम्भग॑म्मि॒त्रमदि॑ति॒न्दक्ष॑म॒स्त्रिध॑म्॥ अ॒र्य्य॒मणं॒व्वरु॑ण॒ꣳसोम॑म॒श्श्विना॒सर॑स्वतीनꣳसु॒भगा॒मय॑स्करत्॥३॥ तन्नो॒व्वातो॑मयो॒भुव्वा॑तुभेष॒जन्तन्मा॒तापृ॑थि॒वीतत्पि॒ताद्यौः॥ तद्ग्रावा॑णःसोम॒सुतो॑मयो॒भुव॒स्तद॑श्श्विनाश्शृणुतन्धिष्ष्ण्यायु॒वम्॥४॥ तमीशा॑न॒ञ्जग॑तस्त॒स्थुष॒स्प्पति॑न्धियञ्जि॒न्न्वमव॑सेहूमहे॒व्व॒यम्॥ पू॒षानो॒यथा॒व्वेद॑सा॒मस॑द् धेर॑क्षि॒तापा॒युरद॑ब्धःस्व॒स्तये॑॥५॥ स्व॒स्तिन॒ऽइन्द्रो॑वृ॒द्धश्श्र॑वाꣳस्व॒स्तिनः॑पू॒षाव्वि॒श्श्ववे॑दाꣳ॥ स्व॒स्तिन॒स्तार्क्ष्यो॒ऽअरि॑ष्टनेमिꣳस्व॒स्तिनो॒बृह॒स्प्पति॑र्दधातु॥६॥ पृष॑दश्श्वाम॒रुत॒ꣳपृश्श्नि॑मातरꣳशु॒भं॒य्यावा॑नोव्वि॒दथे॑षु॒जग्म॑यꣳ॥ अ॒ग्ग्नि॒जि॒ह्वामन॑व॒ꣳसूर॑चक्षसो॒व्विश्श्वे॑नोदे॒वाऽअव॒सागम॑न्नि॒ह॥७॥ भ॒द्रङ्कर्ण्णे॑भिꣳश्शृणुयामदेवाभ॒द्रम्प॑श्येमा॒क्षभि॒र्य्यज॑त्राꣳ॥ स्त्थि॒रैरङ्गै॑स्तुष्टु॒वाꣳस॑स्त॒नूभि॒र्व्य्यशे॑महिदे॒वहि॑तं॒य्यदायु॑ः॥८॥ श॒तमिन्नु॒श॒रदो॒ऽअन्ति॑दे॒वा॒यत्रा॑नश्श्च॒क्राज॒रस॑न्त॒नूना॑म्॥ पु॒त्रासो॒यत्र॑पि॒तरो॒भव॑न्ति॒मानो॑-

मु॒द्ध्यारीरिषतायु॒र्ग्गन्तोः॥९॥ अदि॑तिर्द्यौरदि॑तिर॒न्तरि॑क्ष॒मदि॑तिर्म्मा॒तासपि॒तासपु॒त्रः॥ व्विश्श्वे॑दे॒वाऽअदि॑ति॒ꣳपञ्च॒जना॒ऽअदि॑तिर्ज्जा॒तमदि॑ति॒र्ज्जनि॑त्त्वम्॥१०॥ ॐ द्यौः शान्ति॑र॒न्तरि॑क्ष॒ꣳशान्ति॑ः पृथि॒वीशान्ति॒राप॒ꣳशान्ति॒रोष॑धय॒ꣳशान्ति॑ः॥ व्वन॒स्प्पत॑य॒ꣳशान्ति॒र्विश्श्वे॑दे॒वाः शान्ति॒र्ब्ब्रह्म॒शान्ति॒ꣳसर्व॒ꣳशान्ति॒ꣳशान्ति॑रे॒वशान्ति॒ꣳसामा॒शान्ति॑रेधि॥ यतो॑यतः स॒मीह॑सेततो॑नो॒ऽअभ॑यङ्कुरु॥ शन्न॑ः कुरु॒प्प्र॒जाभ्यो॒ऽभ॑यन्न॒ꣳप्प॒शुभ्य॑ः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः॥ उमामहेश्वराभ्यां नमः॥ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः॥ शचीपुरन्दराभ्यां नमः॥ मातापितृभ्यां नमः॥ इष्टदेवताभ्यो नमः॥ कुलदेवताभ्यो नमः॥ ग्रामदेवताभ्यो नमः॥ वास्तुदेवताभ्यो नमः॥ स्थानदेवताभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीङ्गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥१॥

विश्वेश (काशी विश्वनाथ), माधव (विष्णु), ढुण्ढि (ढुण्ढिराज गणेश), दण्डपाणि (दण्ड को हाथ में धारण करनेवाले महाकालभैरव), काशी, गुहागंगा, भवानी एवं मणिकर्णिका देवी की सदैव वन्दना करता हूँ॥१॥

वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥२॥

सूर्य के स्तर के समान प्रभावाले महाकाय वक्रतुण्ड महागणेश देवता सर्वदा हमारे सभी कार्यो को निर्विघ्न करे॥२॥ (कोटिः=श्रेणिः, यहाँ कोटि का अर्थ श्रेणी या स्तर से है, न कि करोड़ों संख्या से है, कोटिः यहाँ उपमा है।)

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥३॥

सुन्दर मुखवाले, एक दाँतवाले, कपिल वर्णवाले, हाथी के कान के समान कानवाले, लम्बे पेटवाले, विकट शरीरवाले, सभी विघ्नों के नाशक, विनायक गणेश हमारे समस्त विघ्नों का विनाश करें॥३॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥४॥

धूम्रकेत्वादि गणों के अध्यक्ष, ललाट पर चन्द्रमा धारण करनेवाले, हाथी के शिरवाले, गणेशजी के इन बारह नामों का जो पाठ करता है, अथवा सुनता है, उसके समस्त विघ्नों का विनाश हो जाता है॥४॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥५॥

विद्याध्ययन के समय, विवाह-कार्य के समय, गृहप्रवेश के समय तथा यात्रा प्रस्थान-काल में, संग्राम में, विकट संकट उपस्थित होने पर जो व्यक्ति गणेशजी के बारह नामों का पाठ करता है अथवा स्मरण करता है, उसके कार्य में विघ्न कभी नहीं होते हैं। उसका कार्य सरलतापूर्वक सम्पन्न हो जाता है॥५॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥६॥

सफेद वस्त्र धारण करनेवाले, चन्द्रमा के समान वर्णवाले, चार भुजाओंवाले, प्रसन्न मुखमुद्रावाले, महागणेश का सभी विघ्नों की उपशान्ति के लिए ध्यान करता हूँ॥६॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥७॥

अपने अभीष्ट कार्य की पूर्ति के लिए जिसको देवता तथा दानव दोनों पूजते हैं, उस महागणाधिपति का सभी विघ्नों के हरण के लिए नमस्कार है॥७॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥८॥

सभी प्रकार के विवाहादि मङ्गल कार्यों में मङ्गल के लिए सभी कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, शिव की पत्नी, शरण में आये हुए भक्तों की रक्षा करनेवाली, तीन नेत्रोंवाली महागौरी नारायणी को स्तुतिपूर्वक नमस्कार है॥८॥

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥९॥

जिसके स्मरण करने से सर्वदा सभी कार्यों में किसी भी प्रकार का अमङ्गल नहीं होता, उन मङ्गलशरीरवाले मङ्गलमूर्ति भगवान् श्रीहरि का सर्वत्र मङ्गल के लिए हृदय में सदैव स्मरण करता हूँ॥९॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि॥१०॥

जिनके स्मरण से कार्यारम्भ काल (लग्न) सुदिन (मनोनुकूल) हो जाता है, उसके समस्त नक्षत्रगण बलवान् हो जाते हैं तथा उसे चन्द्रबल प्राप्त हो जाता है, उसे विद्याबल तथा दैवबल प्राप्त हो जाता हैं, उन लक्ष्मीपति श्रीहरि का अपने समस्त शुभ के लिए अपने हृदय में सदैव स्मरण करता हूँ॥१०॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥११॥

जिसके स्मरण से सदैव लाभ तथा जय होता है, स्मरण करनेवाले भक्त की कभी पराजय नहीं होती, उन इन्दीवरश्यामल जनार्दन का हृदय में सदैव ध्यान करता हूँ॥११॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥१२॥

जहाँ योगेश्वर कृष्ण हों तथा धनुर्धर पार्थ (अर्जुन) हों वहीं विजयश्री होती है—यह हमारी ध्रुवनीति और दृढ़ मति (निश्चय=दृढ़, मति=बुद्धि) है, अर्थात् निश्चय ही विजय होती है॥१२॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥१३॥

जो भक्तजन अनन्य भाव से श्रीहरि को नित्य भजते हैं, उन भक्तों का योग-क्षेम का वहन श्रीहरि स्वयं करते हैं (ऐसा गीता में श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है)॥१३॥

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥१४॥

समस्त प्रकार के कल्याण (हित) के लिए जिनका स्मरण किया जाता है, जिनके स्मरण करने से समस्त प्रकार का हित होता है, उन अजन्मापुरुष श्रीहरि का अपने हृदय में नित्य ध्यान करता हूँ॥१४॥

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥१५॥

सभी कार्यों के आरम्भ काल में तीनों भुवन भूलोकभुवर्लोकस्वर्लोक के तीनों स्वामी ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर तथा दिशाओं के अधिपति के स्मरण करने से समस्त कार्यों की सदैव ही सद्यः सिद्धि होती है।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥

प्रधानसङ्कल्पः

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्निद्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे** (यदि वाराणसी में अनुष्ठान करना हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे**) **विक्रमशके बौद्धावतारे अमुक संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्य-**

दौर्भाग्यादिसकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्ठद्वादशस्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकल अशुभदृष्टिसमस्तदुःखञ्च निवृत्तिपूर्वकसकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादिपीड़ादिनां निवृत्तिपूर्वकत्रिविधतापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृत सर्वेषामन्यानां कृतयन्त्रमन्त्रतन्त्रदिकृतसमस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मद् गृहे वास्त्वादिदोषानां उपशान्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धिसमस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्तिपूर्वकसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं विपरीतप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीत्यर्थं वैदिकविधिना पुरश्चरणं ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये।

पुनः हाथ में जल लेकर—**तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं आचार्यादिवरणानि च करिष्ये।**

पुनः हाथ में जल लेकर—**तत्राऽऽदौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।**

सङ्कल्प करने के बाद गणेशाम्बिकापूजन करे, दो पात्रों में अक्षत भर कर अष्टदल कमल निर्मित करके उस पर गोमय मय लिङ्गरूप गौरी तथा फलमय लिङ्गरूप गणेश की स्थापना करके हाथ में पुष्प लेकर महागणपति का ध्यान करे।

गणेशाम्बिकापूजनम्

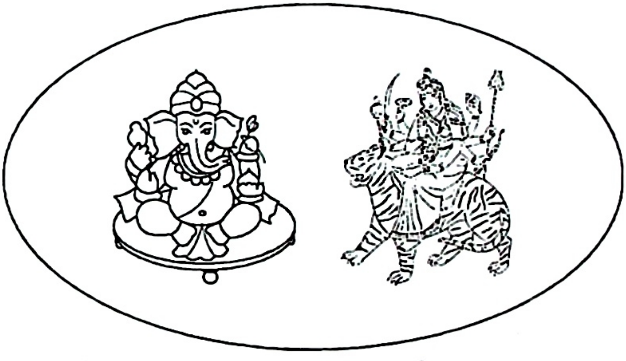

हाथ में अक्षत लेकर महागणपति का आवाहन करे—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नमः ऋद्धिसिद्धिसहितायमहागणाधिपतिं ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत्सिद्धिविनायकम्॥१॥

एक दाँतवाले, शूप के आकार के कानवाले, हाथी के सिर के समान सिरवाले, चार भुजाओं को धारण करनेवाले, पाश-अंकुश धारण करनेवाले, समस्त सिद्धियों को प्रदान करनेवाले सिद्धिविनायक श्रीगणेश का ध्यान करता हूँ॥१॥

ध्यायेत्गजाननं देवं तप्तकाञ्चनसन्निभम्।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम्॥२॥

हाथी के मुख के समान मुख वाले, तपे हुए सोने के समान आभावाले, चार भुजाओंवाले, महान् शरीरवाले, सभी आभूषणों से सुशोभित गजानन देवता का ध्यान करता हूँ॥२॥

हे हेरम्ब! त्वमेह्येहि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः॥३॥

हे हेरम्ब! अम्बिका और त्र्यम्बक के पुत्र, सिद्धि तथा बुद्धि के पति, तीन नेत्रोंवाले, समस्त लक्ष तथा लाभ के स्वामी महागणेश का ध्यान करता हूँ॥३॥

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरस्वधैः॥४॥

नाग के समान मुखवाले, नाग (नागसंज्ञक पवित्रक=यज्ञोपवीत) धारण करनेवाले, गणों के मालिक, चार भुजाओंवाले, दिव्य आयुधों से विभूषित, पाश तथा अंकुश को धारण किये हुए महागणेश का ध्यान करता हूँ॥४॥

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहाऽगत्य गृहाण त्वं पूजायागं च रक्ष मे॥५॥

हे देव! अपने यज्ञ की रक्षा के लिए तथा पूजा करने के लिए आवाहन करता हूँ, यहाँ आकर पूजा ग्रहण करें तथा हमारे यज्ञ की रक्षा करें॥५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नमः ऋद्धिसिद्धिसहितं महागणाधिपतिमावाहयामि, आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर महागौरी का ध्यान करे—

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन॥ ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः महागौरीं ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

ध्यानम्—हाथ में अक्षत लेकर महागौरी का आवाहन करे—

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

हिमालय की पुत्री, वर प्रदान करनेवाली शङ्कर की प्रिया (अर्द्धाङ्गिनी) देवी, लम्बोदर गणेश की जननी, भगवती महागौरी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवःस्वः महागौर्यै नमः महागौरीमावाहयामि, आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्स्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, मेरे लिए इससे इतर कुछ नहीं है।

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्॥

गणेशाम्बिका सुप्रतिष्ठित तथा वर प्रदान करनेवाले हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भवन्तु।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्॥ सभूमिꣳसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्व्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित!॥

विचित्र रत्नों से जटित तथा दिव्य कलाकृतियों से संयुक्त स्वर्णनिर्मित दिव्य रुचिकर सिंहासन देवताओं के द्वारा अग्रपूजित गणेश ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र ग्रहणकर समर्पित करे—

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्श्चपूरुषः॥ पादोऽस्यविश्श्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि॥

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
विघ्नराज गृहाणेदं भगवान् भक्तवत्सल!॥

हे भक्तवत्सल विघ्नराज भगवान् गणेश! सभी तीर्थों से लाये गये गन्धादि से युक्त पाद्य ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ त्रि॒पादू॒र्द्ध्वऽउदै॒त्पुरु॑षः॒पादो॑ऽस्ये॒हाभ॑व॒त्पुनः॑॥ ततो॒विष्व॒ङ्व्य॒क्रामत्साशनानश॒नेऽअ॒भि॥

गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

हे करुणाकर गणाध्यक्ष! गन्ध-माला-अक्षत से युक्त फल के सहित अर्घ्य को ग्रहण करें, आपको नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ततो॑वि॒राडजायतवि॒राजो॒ऽअधि॒पूरु॑षः॥ सजा॒तोऽअत्य॑रिच्च्यतप॒श्चाद्भूमि॒मथो॑पु॒रः॥

विनायकं नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

देवताओं से अभिवन्दित देवेश विनायक को नमस्कार है, हे प्रभु विनायक गणेश! आचमन करने के लिए गङ्गा का जल आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व्व॒हुत॒ः सम्भृ॑तम्पृषदा॒ज्ज्यम्॥ प॒शूँस्ताँश्च॑क्रेवा॒य॒व्या॒नार॒ण्या ग्रा॒म्म्याश्च॒ये॥

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के पापों को हरनेवाला, सभी प्रकार का शुभ करनेवाला, मन्दाकिनी का जल आपके सम्मुख कल्पित (समर्पित) है, हे देव! स्नान के लिए आप ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व्व॒हुत॒ऽऋचः॒ सामा॑निजज्ञिरे॑॥ छन्दा॑ᳬसिजज्ञिरे॒तस्मा॒द्यजु॒स्तस्मा॑दजायत॥

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वमलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्॥

सभी प्रकार के मल को पूर्ण नष्ट करने में जो गङ्गाजल समर्थ है, वह जल यहाँ पुन: आचमन करने के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पय:स्नानम्—दोनों हाथों से पय: पात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पय॑÷पृथि॒व्यांपय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः॥ पय॑स्वतीः॒प्प्र॒दिश॑÷सन्तु॒मह्य॑म्॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पय: स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गो से समुत्पन्न, सभी को परम जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ का कारक, परम पवित्र दूध हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: पय:स्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ द॒धि॒क्राव्णो॑ऽअकारिषंजि॒ष्णोरश्व॑स्यवा॒जिन॑÷॥ सु॒र॒भिनो॒मुखा॑कर॒त्प्रण॒ऽआयू॑ꣳषितारिषत्॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से समुत्पन्न (निर्मित) मीठा-अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही मेरे द्वारा आपके स्नान के लिए लाया गया है, हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृ॒तम्मि॑मिक्षेघृ॒तम॑स्य॒योनि॑र्घृ॒तेश्रि॒तोघृ॒तम्व॑स्य॒धाम॑॥ अ॒नु॒ष्व॒धमाव॑हमा॒दय॑स्व॒स्वाहा॑कृतंवृ॑षभवक्षिह॒व्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

नवनीत (मक्खन) से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी हे देव! आपको समर्पित करता हूँ, स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधु॒वाता॑ऽऋताय॒तेमधु॑क्षरन्ति॒सिन्ध॑वः॥ माध्वी॑र्न्नः स॒न्त्वोष॑धीः॥ मधु॒नक्त॑मु॒तोषसो॒मधु॑म॒त्पार्त्थि॑व॒ꣳरज॑÷॥ मधु॒द्यौर॑स्तुनः पि॒ता॥ मधु॑मान्नो॒वन॒स्प्पति॒र्म्मधु॑माँ॒ऽअस्तु॒सूर्य्य॑÷॥ माध्वी॒र्ग्गावो॑भवन्तुनः॥

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न, सुन्दर मधुर स्वादवाला, पुष्टि तथा दिव्य तेज प्रदान करनेवाला, शहद स्नान के लिए आपके सम्मुख समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अ॒पाꣳरस॒मुद्द्व॑यस॒ꣳसूर्य्ये॒सन्त॒ꣳस॒माहितम्॥ अ॒पाꣳरस॑स्य॒योर॑स॒स्तंवो॑ गृह्णाम्म्युत्त॒मम्मुपया॒मगृहीतो॒ऽसीन्द्राय॑त्त्वा॒जुष्ट॑ङ्गृह्णाम्म्ये॒षते॒योनि॒रिन्द्राय॑त्वा॒जुष्ट॑तमम्॥

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ईख के रस से निर्मित, सभी प्रकार के मल को नष्ट करनेवाला, शुभ और पुष्टि को प्रदान करनेवाला, दिव्यशर्करा आपके प्रति स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्च॑न॒द्युःसर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः॥ सर॑स्वती॒तुप॑ञ्च॒धासोदे॒शेभ॑वत्स॒रित्॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध-दही-घृत-मधु और शर्करा से निर्मित पञ्चामृत स्नान के लिए मैं लाया हूँ, हे देव! स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शु॒द्धवा॑लःस॒र्व्वशु॑द्धवालोमणि॒वाल॒स्तऽआ॑श्वि॒नाःश्येतः॑श्येता॒क्षो॒रु॒णस्ते॑रु॒द्राय॑ पशु॒पत॑येकर्ण्णा॒यामाऽअ॑विलि॒प्तारौ॒द्रानभो॑रूपाःपार्ज्ज॒न्याः॥

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों का दिव्य जल स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मा॒दश्श्वाऽअ॑जायन्त॒येके॑चोभ॒याद॑तः॥ गावो॑हजज्ञिरे॒तस्मा॒त्तस्मा॑ज्जा॒ताऽ अ॑जा॒वयः॑॥

ॐ युवासुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउत्श्रेयान्भवतिजायमानः।
तंधीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शीतल और उष्ण वायु के ताप और शैत्य से रक्षा के लिए तथा परमलज्जा के रक्षार्थ, शरीर को अलंकृत करने के लिए वस्त्र समर्पित है, हे देव! यह वस्त्र आपको प्रसन्न करे, आप हमें शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्चये॥ ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्नेविश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वविभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत पकड़कर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोर्वाची सुमतिर्ववृत्त्यादꣳहोश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदादित्त्येब्भ्यस्त्वा॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

पूर्वकाल में प्रजापति ब्रह्मा ने सहज ही परम पवित्र यज्ञोपवीत का निर्माण किया था, वह शुभ्र यज्ञोपवीत शरीर में बल, मन में तेज तथा ओज और सबसे पहले आयुष्य प्रदान करता है, वह यज्ञोपवीत हे देव! आपको प्रसन्नता के लिए समर्पित है।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण गणनायक॥

नवतन्तुओं से निर्मित, त्रिगुण (त्रिरावृत्तिवाला) देवतामय यज्ञ में पहने जानेवाला उपवीत मैं आपको समर्पित करता हूँ, हे गणनायक! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ॥ आपोजनयथाचनꣳ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

दिव्य सुमनोहर सुगन्धित श्रीखण्ड से युक्त चन्दन लेप आपके विलेपन के लिए है, यह आपके प्रसन्नता की लिए आपको समर्पित है, हे देवश्रेष्ठ! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठयामती योजान्विन्द्रतेहरी॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

कुङ्कुम से सुशोभित अक्षत आपको निवेदित करता हूँ, हे सुरश्रेष्ठ परमेश्वर गणेश! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधीꣳप्रतिमोदध्वंपुष्प्पवतीꣳप्रसूवरीꣳ॥ अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधः-पारयिष्ण्णवः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मालती आदि के सुगन्धित पुष्पों के द्वारा निर्मित माला आपकी पूजा के लिए लाया हूँ, हे देव! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्परि।। एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच।।

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

अमृतरूपी मङ्गल प्रदान करनेवाले सुन्दर हरे-हरे दूर्वा के अङ्कुर आपकी पूजा के लिए लाया हूँ, हे गणनायक देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहिरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंप्परिबाधमानः।। हस्तघ्नोविश्वावयुनानिविद्वान्पुमान्पुमाꣳसंपरिपातुविश्वतः।।

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देवमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।१।।
नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारुप्रगृह्यताम्।।२।।

शान्ति प्रदान करनेवाला अबीर-गुलाल चन्दनादि से निर्मित विभिन्न सुगन्धित द्रव्य नाना प्रकार के दिव्य द्रव्यों से निर्मित उत्तम अबीर नाम का सुगन्धित सुरुचिकर चूर्ण समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोवातप्रमियःपतयन्तियह्वाः। घृतस्यधाराऽअरुषोनवाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्वमानः।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

सर्व शोभायमान रक्तसिन्दूर, सभी सौभाग्य तथा सुख का वर्धन करनेवाला, सभी प्रकार के शुभ की कामना के लिए सिन्दूर समर्पित करता हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। धूपदीप जला करके नैवेद्य समर्पित करे।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः।। ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्याꣳशूद्रोऽअजायत।। ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तंय्योऽस्मान्धूर्वतितंधूर्वयंवयंधूर्वामः।। देवानामसिवह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमंजुष्टतमंदेवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न वनस्पतियों के रसों से निर्मित गन्धों में अत्युत्तम गन्धयुक्त धूप सभी देवताओं को सुगन्धि प्रदान करने के लिए है, हे देव! आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत॥ ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निःस्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिःसूर्य्यःस्वाहा॥ अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योवर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहा॥ ज्ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्योज्ज्योतिःस्वाहा॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥१॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥२॥

तीनों लोकों के अन्धकार को दूर करनेवाली, घृतयुक्त वर्तियों को अग्नि में प्रज्वलित किया है, हे देवेश! प्रसन्नता के लिए ग्रहण करें, भक्तिपूर्वक परमात्मदेव आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करके इस घोरतम अज्ञानान्धकार से हमारी रक्षा करें, दीपज्योति को नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपज्योतिः समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नाभ्भ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशःश्श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्प्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ प्रप्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥१॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥२॥

शर्कराखण्ड खाद्य दधि-दूध एवं घृत से युक्त भक्ष्य-भोज्य आहाररूपी नैवेद्य ग्रहण करके हमारी भक्ति को अचल करें और हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करें तथा अन्त में परमगति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा।

ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अ॒ꣳशुना॑तेअ॒ꣳशुः पृच्च्यतां॒परु॑षा॒परुः॥ ग॒न्धस्ते॒सोम॑मवतु॒मदा॑य॒रसो॒ऽअच्च्यु॑तः॥

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!॥

मलयाचल में उत्पन्न श्वेत चन्दन कस्तूरी इत्यादि गन्धों से युक्त हाथों को शुद्ध करने के लिए उद्वर्तन के रूप में ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरु॑षेणह॒विषा॑दे॒वाय॒ज्ञमत॑तन्वत॥ व॒स॒न्तो॒ऽस्यासी॒दाज्ज्यं॑ग्ग्री॒ष्मऽइ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

महादिव्य पूगीफल (सुपाड़ी) नागवल्लीदल (पान के पत्ते से) युक्त एलादिचूर्ण (इलाइची इत्यादि) से सम्पृक्त ताम्बूल ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादि-नागवल्लिदलयुक्तताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याः फ॒लिनी॒र्य्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्प्यायाश्च॑पु॒ष्प्पिणीः॥ बृह॒स्प्पति॑प्प्रसूता॒स्तानो॑ मुञ्च॒त्वꣳ हं॑सः॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

हे देव! हमने यह फल आपके सम्मुख स्थापित किया है, जिसे ग्रहण करके जन्म-जन्मान्तरों तक हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करें तथा हमें यज्ञफलवान् करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑भूतस्य॑जा॒तः पति॒रेक॑ऽआसीत्॥ सदा॑धारपृथि॒वीं द्यामु॒तेमां कस्म्मै॑दे॒वाय॑ह॒विषा॑विधेम॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

हिरण्यगर्भ से निकले हेमबीज के समान (सुवर्ण के सदृश) शोभायमान अनन्त पुण्य फल को प्रदान करनेवाली, शान्ति प्रदान करनेवाली, सुवर्णमयी दक्षिणा ग्रहणकर शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्रायिधामभिः॥ दिवः सदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽ आत्वेषंवर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविः प्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्रजासनिपशुसनिलोकसन्यभयसनिः॥ अग्निः प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नं पयोरेतोऽअस्मासुधत्त॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केला) के गर्भ से उत्पन्न (निर्मित) कर्पूर (जलता हुआ) से आरती करता हूँ, हमें कृपापूर्वक दृष्टि से देख करके वर प्रदानकर्ता बनें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!॥

अपने-अपने ऋतुओं में उत्पन्न नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों से युक्त पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वर! ग्रहणकर प्रसन्न हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों सें पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः॥ देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥१॥

जन्म-जन्मान्तर में किये हुए सभी प्रकार के पाप एक-एक कदम हे देव! प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते हैं॥१॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥२॥

पूजन करने के बाद एक-एक कदम जो यज्ञकर्ता देव की परिक्रमा करता है, वह निश्चय ही अश्वमेधादि यज्ञों का फल प्राप्त करता है। अतः अपने जन्म-जन्मान्तरकृत समस्त पापों के क्षय के लिए आपकी परिक्रमा करता हूँ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथों में विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥१॥

हे गणों के अध्यक्ष! रक्षा करें-रक्षा करें, हे त्रिलोकी के रक्षक! हमारी रक्षा करें, भक्तों को अभय प्रदान करनेवाले हमारे लिए इस भवसागर से त्राता हो जायें॥१॥

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥२॥

हे कृपासिन्धु, दो माताओं से उत्पन्न, हे छः माताओं वाले स्कन्द के अग्रज! वर प्रदान करनेवाले वरदाता! हमारी वांछित कामनाओं के लिए वांछित वर प्रदान करें॥२॥

अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।

इस प्रकार फल के सहित अर्घ्य ग्रहण करके कामनापूर्ति रूपी फलप्रदाता सदा हमारे लिए हो जायें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥१॥

हे विघ्नों को नष्ट करनेवाले विघ्नेश्वर श्रीगणेश! वरप्रदान करनेवाले वरदाता, देवताओं के प्रिय देवता, लम्बे पेटवाले लम्बोदर, समस्त जगत् का हित करनेवाले पार्वतीनन्दन, हाथी के आनन(सिर)वाले, श्रुतियों में वर्णित यज्ञवाले श्रुतियज्ञ(शब्दब्रह्म स्वरूप), विभिन्न शोभाओं से विभूषित, गौरी के पुत्र तथा समस्त गणों के स्वामी गणेश आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है॥१॥

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥२॥

भक्तों के आर्त (दीनता) को नाश करनेवाले, परब्रह्म गणेश्वर, सर्वेश्वर, समस्त शुभों के प्रदाता, देवताओं के ईश्वर, समस्त विद्याओं को धारण करनेवाले विद्याधर, विकट वामस्वरूप, भक्तों पर प्रसन्न रहनेवाले, वर प्रदान करनेवाले गणेश्वर आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।।२।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥३॥

हे गणेश्वर! आपको ब्रह्मरूप में नमस्कार है, विष्णुरूप में नमस्कार है, रुद्ररूप में नमस्कार है तथा हस्तिमुखरूप (हाथी के मुख के रूप) में नमस्कार है।।३।।

विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!॥४॥

विश्वरूप के स्वरूपवाले गणेश आपको नमस्कार, ब्रह्मचारी रूपवाले गणेश आपको नमस्कार, भक्तों का प्रिय करनेवाले देव, विनायक गणेश आपको नमस्कार है।।४।।

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥५॥

सदैव मोदकप्रिय (खाने में लड्डू से प्रेम करनेवाले) लम्बोदर गणेश नमस्कार है, आप सभी कार्यों में सर्वदा हमें निर्विघ्न करें।।५।।

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥६॥

हे गणेश! आप विघ्नों का विनाश करनेवाले हैं, शत्रुओं का दलन करनेवाले हैं, सुन्दरों में सुन्दर, भक्तों का प्रिय करनेवाले हैं, भक्तों को सदैव सुख प्रदान करनेवाले हैं, समस्त यज्ञफलों को प्रदान करनेवाले हैं, विद्या (ज्ञान) प्रदान करनेवाले हैं, समस्त अघों का हरण करनेवाले हैं, आपका जो स्तवन करते हैं, उनको नित्य ही वर प्रदान करनेवाले होते हैं।।६।।

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम॥७॥

गणेश के पूजन में जो कम अथवा अधिक कर्म किया गया हो, उन सभी कर्मों से सर्वात्मा गणेश हमारे ऊपर सदैव प्रसन्न हों।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि! चराचरस्य॥१॥

शरण में आये हुए भक्तों के पीड़ा का निवारण करनेवाली देवी हमारे ऊपर प्रसन्न होइये,

सम्पूर्ण जगत् की जननी हम पर प्रसन्न हो जाइये। हे विश्वेश्वरि! विश्व का त्राण करें। हे देवी! तुम्हीं चराचर विश्व की अधिष्ठात्री हो।।१।।

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्राऽरयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाऽब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥२॥

हे देवि! जहाँ दैत्य, भयंकर विषधर सर्प, शत्रुओं, लुटेरों के समुदाय और दावाग्नि हो, वहाँ तथा समुद्र के बीच में नित्य निरन्तर साथ रहकर निरन्तर कल्याण करती हो, वैसे ही हमारा कल्याण करो।।२।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।
स्फुरत्काञ्ची-शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी,
भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्॥३॥

मुख में ताम्बूल, दोनों आँखों में काजल धारण की हुई, गले में मौक्तिक मणि की माला धारण की हुई, सुवर्ण के समान साड़ी धारण की हुई, कमर में करधनी शोभित करती हुई, पर्वत की पुत्री महागौरी को सतत (बिना विराम किये) भजता हूँ।।३।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थनापूर्वकं स्तुतिपाठं समर्पयामि।

गणेशाथर्वशीर्षपाठः

ॐ लँ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षदात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानम्। अव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयः। त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयः। त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलोनभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा। त्वं विष्णुः। त्वं रुद्रः। त्वं इन्द्रः। त्वं अग्निः। त्वं वायुः। त्वं सूर्यः। त्वं चन्द्रमा। त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यं रूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्।

नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिः देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। अभयं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये। नमो गणपतये। नमः प्रमथपतये। नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनासिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः॥

ॐ लँ (पृथ्वीतत्त्व) स्वरूपवाले गणपति के लिए नमस्कार है, तुम्हीं प्रत्यक्ष तत्त्व स्वरूप हो, एक तुम्हीं संसार के कर्त्ता हो, एक तुम्हीं संसार के धर्ता हो, एक तुम्हीं संसार का संहार करनेवाले हो, एक तुम्हीं सभी में ब्रह्मरूप हो, एक तुम्हीं साक्षात् आत्मस्वरूप हो। एक तुम्हीं नित्य हो, ऋत कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, (अव धारणे अर्थ करने पर) तुम ही मुझमें हो, तुम ही वक्त्र में हो। तुम ही श्रोत्र में हो, तुम ही दाता हो, तुम ही धारण करते हो, तुम ही नीचें में हो, तुम ही शिष्य में हो, तुम ही बाद में हो, तुम ही चारो तरफ हो, तुम ही उत्तर दिशा में हो। तुम ही दक्षिण दिशा में हो, तुम ही ऊपर की तरफ हो, तुम ही आधार में हो, (अव रक्षणे अर्थ करने पर) (हमारी रक्षा करो, हमारे वक्त्र की रक्षा करो, हमारे श्रोत्र की रक्षा करो, हमारे दातृत्व की रक्षा करो, हमारे धारणत्व की रक्षा करो, हमें नीचे से रक्षा करो, हमारे शिष्य की रक्षा करो, बाद में रक्षा करो, चारो तरफ से रक्षा करो, उत्तर दिशा से रक्षा करो, दक्षिण दिशा से रक्षा करो, ऊपर से रक्षा करो, आधार में रक्षा करो) सर्वत्र सभी तरफ से हमारी रक्षा करो, पूर्णरूप से रक्षा करो, तुम ही वाणीरूप हो, तुम ही चिन्मयरूप हो, तुम ही आनन्दस्वरूप हो, तुम ही ब्रह्मस्वरूप हो, तुम ही अद्वितीय सच्चिदानन्द स्वरूप हो, तुम ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हो, तुम ही ज्ञानस्वरूप, विज्ञानस्वरूप हो, तुम से ही समस्त जगत् तत्त्वस्वरूप से उत्पन्न होता है, तुममें ही समस्त जगत् अवस्थित है, तुममें ही समस्त जगत् का लय होता है, समस्त जगत् तुममें ही प्रतीत होता है, तुम ही भूमि, जल, अग्नि, वायु तथा आकाशस्वरूप हो, तुम ही परा-पश्यन्ती-मध्यमा-वैखरी चार वाणी स्वरूप हो, तुम ही सत्त्व-रज-तम तीनों गुणों से अतीत (त्रिगुणों के पूर्व के) हो, तुम ही काल से भी (अतीत) पहले के हो, तुम ही तीनों शरीर (सूक्ष्म, कारण, स्थूल) से (अतीत) पहले के हो, तुम ही नित्य मूलाधार में स्थित हो, तुम ही तीन प्रकार की शक्तियाँ सत्त्व-रज-तमात्मक महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यात्मक तथा ओज, तेज, बलस्वरूप हो, तुम्हारा ही योगीजन नित्य ध्यान करते हैं, तुम ही ब्रह्मा हो, तुम ही विष्णु हो, तुम ही रुद्र हो, तुम ही इन्द्र हो, तुम ही अग्नि हो, तुम ही वायु हो, तुम ही सूर्य हो, तुम ही चन्द्रमा हो, तुम ही ब्रह्म भूर्भुवः स्वः हो, तुम ही गणों में पूर्व उच्चार्य हो,

वर्णों में सर्वप्रथम तुम्हारा ही उच्चारण होता है अर्थात् ॐकारस्वरूप हो, तुम ही अनुस्वार तथा अनुस्वार के बाद आनेवाले विसर्ग स्वरूप हो, तुम ही अर्धेन्दु से लसित (अर्धचन्द्र स्वरूप से युक्त अर्द्धचन्द्र अर्थात् सानुनासिकानुस्वार) हो, तुम ही तार (प्रणव) से रुद्ध (युक्त) हो, इस प्रकार तुम ही मनुष्य स्वरूप हो, गं बीज में तुम ही गकार वर्णरूपी पूर्व (आगे आनेवाले प्रथम वर्ण) स्वरूप हो, गं बीज में तुम ही अकारस्वरूप मध्यम वर्णरूप हो, गं बीज में अनुस्वार वर्णरूपी तुम ही अनुस्वारस्वरूप (अन्त्य में आनेवाला वर्ण) हो, तुम ही उत्तररूप बिन्दु स्वरूप हो, तुम ही नादस्वरूप सन्धानयोग्य हो, तुम ही संहिता में सन्धिस्वरूप हो, तुम ही वह इस प्रकार की गणेश विद्या हो, तुम ही गणकसंज्ञक ऋषि हो, तुम ही निचिद् गायत्री (गायत्री छन्द से पहले का छन्द) स्वरूप हो, तुम ही महागणपति देवता हो, तुम ही ॐ गं गणपतये मन्त्रस्वरूप हो, तुम ही एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् गायत्री मन्त्रस्वरूप हो, तुम ही एकदन्त (एक दाँत वाले), चतुर्हस्त (चार हाथों-वाले) हो, तुम ही चारों हाथों में पाश, अंकुश, अभय और वरद धारण करनेवाले हो, तुम ही मूषक ध्वजा से शोभायमान हो, तुम ही लाल, लम्बे उदरवाले, सूप जैसे कर्ण वाले और लाल वस्त्र धारण करने वाले हो, तुम ही अंगों में रक्त गन्ध का अनुलेपन करने-वाले हो, तुम ही रक्त पुष्पों से सुपूजित हो, तुम ही भक्तों पर अनुकम्पा करनेवाले हो, तुम ही जगत्कारणस्वरूप अच्युत देव हो, तुम ही सर्वप्रथम सृष्टि के आदि में आविर्भूत होकर प्रकृति-पुरुष स्वरूप हो, इस प्रकार जो योगी नित्य ध्यान करता है, वह योगी योगियों में वरण योग्य होता है, व्रतों (तपस्या के नियमों) के पति तुम्हें नमस्कार है, गणों के स्वामी तुम्हें नमस्कार है, प्रमथादि गणों के मालिक तुम्हें नमस्कार है, लम्बोदर को नमस्कार है, एकदन्त को नमस्कार है, हे विघ्नों के विनाशक शिव के पुत्र श्रीवरदमूर्ति नमस्कार है, पुन: नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है।

गणेशाथर्वशीर्षपाठमाहात्म्यम्

एतदथर्वशिरो योऽधीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वत: सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रात: प्रयुञ्जानो अपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थ-काम-मोक्षं च विन्दति। इद अथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान्भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान्भवति। इत्यथर्वणमहावाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति स मेधावान्भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। य: साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते।

अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद॥

इस प्रकार अथर्वशीर्ष का जो पाठ करता है, वह ब्रह्मत्व की कल्पना करके ब्रह्मरूप हो जाता है, उसे कोई भी विघ्न बाधा नहीं पहुँचाते, वह सर्वत्र ही सुख पाता है, वह पाँच प्रकार के महापातक (महापाप), पातक (पाप), उपपातक (उपपाप) से छूट जाता है, सायंकाल पाठ करने से दिन भर का किया हुआ पाप नष्ट हो जाता है, प्रात:काल पाठ करने से रात्रिकाल में किये गये पाप नष्ट हो जाते हैं, इस अर्थर्वशीर्ष का सायंप्रात: पाठ करने से पाठकर्ता अपाप (निष्पाप) हो जाता है, सदा सर्वत्र पाठ करनेवाला सभी विघ्नों से मुक्त हो जाता है और उसे धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चारों पुरुषार्थ प्राप्त होता है, इस अथर्वशीर्ष को अशिष्य को कभी नहीं देना चाहिए, यदि मोहवश कोई अशिष्य को देता है, तो वह पापी होता है, सहस्र आवृत्ति पाठ करने से जो-जो कामनाएँ होती हैं, उन-उन कामनाओं की पूर्ति होती है, इस प्रकार से जो महागणपति का अभिसिंचन करता है वह वाणी का पति हो जाता है, चतुर्थी तिथि को सूर्योदय से सूर्योदयपर्यन्त अनवरत जपने से जप करने वाला विद्यावान् (ज्ञानवान्) हो जाता है, इस अथर्वशीर्ष का महावाक्य ब्रह्मविद्या (ब्रह्मत्व प्राप्ति) आचरण की विद्या है, इसमें भेद कभी नहीं मानना चाहिये। जो दुर्वाङ्कुरों से अर्चन करते हैं वे वैश्रवणोपम होते हैं, जो लाजा (लावा) से अर्चन करता है वह यशोवान् होता है, वह मेधावान् होता है, जो सहस्र मोदक (लड्डूओं) से अर्चन करते हैं वे अपनी अभिलषित कामनाओं की पूर्ति करते हैं, जो घी के साथ समिधा से हवन करते हैं, वे सभी कुछ प्राप्त कर लेते हैं, आठ ब्राह्मणों को पूर्णरूपेण ग्रहण कराने से सूर्य के समान वर्चस्ववाला होता है, सूर्यग्रहण के समय में महानदी में (समुद्रगामिनी नदी में) प्रतिमा (मूर्ति) के सांनिध्य में जपने से मन्त्र सिद्ध होता है, वह महाविघ्नों से छूट जाता है, वह महापापों से भी छूट जाता है, वह महादोषों से छूट जाता है, वह सर्वज्ञ हो जाता है, यही परम महाज्ञान है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय नमः स्तुतिपाठं समर्पयामि।

समर्पण के बाद देव्याथर्वशीर्ष का पाठ करे।

देव्याथर्वशीर्षपाठः

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति॥१॥

सभी देवता देवी के समीप जाकर नम्रतापूर्वक पूछने लगे, हे महादेवि! तुम कौन हो?॥१॥

साब्रवीत्—अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च॥२॥

इस प्रश्न के उत्तर में महादेवी ने कहा—मैं ब्रह्मस्वरूपा हूँ, मुझसे प्रकृतिपुरुषरूप सद्रूप और असद्रूप जगत् उत्पन्न हुआ है॥२॥

अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्मा ब्रह्मणीवेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्॥३॥

मैं आनन्द और अनानन्दरूपा हूँ, मैं विज्ञान और अविज्ञानरूपा हूँ, अवश्य जानने योग्य ब्रह्म और अब्रह्म (ब्रह्म से भिन्न माया) भी मैं ही हूँ, मैं ही पञ्चमहाभूत तथा विश्व में व्याप्त पञ्चभूत हूँ, मैं ही सम्पूर्ण जगत् स्वरूप हूँ॥३॥

वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्॥४॥

वेद (ज्ञान) और अवेद (अज्ञान) मैं ही हूँ, विद्या (ब्रह्मज्ञान) और अविद्यारूप (माया) भी मैं ही हूँ। मैं अजा (जन्म न लेनेवाली मूलप्रकृति) और अनजा (जन्म लेनेवाली माया) भी हूँ, नीचे ऊपर तथा अगल-बगल भी मैं ही हूँ॥४॥

अहं रुद्रेभिः वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ॥५॥

मैं रुद्रों और वसुओं के रूप में सञ्चार करती हूँ, मैं आदित्यों और विश्वेदेवों के रूपों में विचरण करती हूँ, मैं मित्र और वरुण दोनों देवताओं का भरण-पोषण करती हूँ, मैं ही इन्द्र, अग्नि तथा दोनों अश्विनीकुमारों का भी भरण-पोषण करती हूँ॥५॥

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि॥६॥

मैं सोम, त्वष्टा, पूषा और भग देवता को भी धारण करती हूँ। त्रैलोक्य को आक्रान्त करनेवाले विस्तीर्ण पादप्रच्छेप करनेवाले विष्णु, ब्रह्मदेव और प्रजापति को मैं ही धारण करती हूँ॥६॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति॥७॥

मैं ही यजमान के द्वारा अग्नि में दिये गये विधिपूर्वक हवि को तथा सोमरस निकालने वाले यजमान के लिए धन को धारण करती हूँ, मैं ही सम्पूर्ण(राष्ट्र) जगत् स्वरूपा हूँ, वसुओं की कामनाओं से यजन करनेवालों को मैं ही धन प्रदान करती हूँ, मैं ही ब्रह्मरूप और यज्ञार्हों में मुख्य रूपा हूँ, मैं ही आत्मस्वरूप हूँ, मैं ही आकाशादि निर्माण करती हूँ, मेरा स्थान आत्मस्वरूप को धारण करनेवाली बुद्धिवृत्तियों(चित्त) में है, ऐसा इस प्रकार से जो मनुष्य जानता है, वह दैवी सम्पत्ति (समस्त सिद्धियों समस्त निधियों) को प्राप्त करता है॥७॥

ते देवा अब्रुवन्—तब उन देवताओं ने कहा—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥८॥

देवी को नमस्कार है, महादेवी को नमस्कार है, शिव की पराशक्ति शिवा को नमस्कार है, मूलप्रकृति देवी को नमस्कार है, सबका कल्याण करने वाली भद्रा देवी को नमस्कार है, नियति देवी (जगत् को नियन्त्रित करनेवाली) को नमस्कार है, सभी रूपोंवाली देवी को बारबार प्रणाम है। गुणसाम्यावस्थारूपिणी मङ्गलमयी देवी को नमस्कार है, नियमयुक्त होकर प्रणाम करते हैं॥८॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः॥९॥

उस अग्निवर्ण वाली, तपस्या से उद्दीप्तमान दीप्तिमती कर्मफल की कामना से यजन की जानेवाली दुर्गा देवी की हम शरण में हैं, असुरों का नाश करनेवाली देवी को नमस्कार है॥९॥

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु॥१०॥

जिस विश्वरूपा देवी के कारण देवता लोग वाणीवान् होते हैं अर्थात् जिसे वैखरीरूप से बोलते हैं, वह कामधेनुसदृश आनन्ददायक और अन्न तथा बल देनेवाली वांग्रूपिणी भगवती उत्तम स्तुति से सन्तुष्ट होकर हमारे समीप आकर दर्शन दे॥१०॥

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥११॥

काल का भी नाश करनवाली, वेदों द्वारा स्तुति की गयी विष्णुशक्ति, स्कन्दमाता (शिवशक्ति), सरस्वती (ब्रह्मशक्ति), देवमाता (अदिति) और दक्षकन्या (सती), पापनाशिनी कल्याणकारिणी भगवती को हम प्रणाम करते हैं॥११॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥१२॥

हम उस महालक्ष्मी को जानते हैं और उस सर्वशक्तिस्वरूपिणी का ही ध्यान करते हैं। वही देवी हमें उस विषय (ब्रह्मज्ञानादि ध्यान) में प्रवृत्त करे॥१२॥

अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबान्धवः॥१३॥

हे दक्ष! आपकी जो कन्या अदिति है, वे प्रसूता हुई और उनसे मृत्युरहित कल्याणमय देव उत्पन्न हुए हैं॥१३॥

कामोयोनिः कमला वज्रपाणिः गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्॥१४॥

काम (क), योनि (ए), कमला (ई), वज्रपाणि (ल), गुहा (ह्रीं) ह-स वर्ण, मातरिश्वा वायु (क), अभ्र (ह), इन्द्र (ल), पुनः गुहा (ह्रीं), स, क, ल, वर्ण और माया (ह्रीं) यह सर्वात्मिका जगन्माता की मूल विद्या है और वह ब्रह्मस्वरूपिणी है॥१४॥

एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्वाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति॥१५॥

इस प्रकार की यही आत्मशक्ति हैं, ये ही विश्वमोहिनी महामाया हैं, ये पाश, अंकुश, धनुष और बाण धारण करनेवाली हैं, ये ही श्रीसंज्ञक महाविद्या हैं, जो ऐसा जानता है, वह शोकों को पार कर जाता है॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः॥१६॥

हे भगवति! तुम्हें नमस्कार है, हे मातः! हम सभी की सभी प्रकार से सर्वत्र रक्षा करें॥१६॥

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरारक्षांसि पिशाचाः यक्षाः सिद्धाः। सैषा प्रजापतीन्द्र-मनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतीषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्॥१७॥

वे ही अष्टवसु हैं, वे ही एकादश रुद्र हैं, वे ही द्वादश आदित्य हैं, वे ही विश्वेदेव हैं, वे ही सोमरस पान करनेवाले देवता हैं, वे ही सोम रस का पान न करने वाले असुर हैं, वे ही यातुधानों, असुरों, पिशाचों, यक्षों और सिद्धों से रक्षा करती हैं, वे ही सत्त्व-रज-तम त्रिगुणरूप हैं, वे ही ब्रह्मा-विष्णु-रुद्ररूप हैं, वे ही प्रजापति, इन्द्र तथा मनु हैं, वे ही ग्रहनक्षत्रज्योतिस्वरूप हैं, वे ही कलाकाष्ठादियों में कालरूप हैं, उन सार्वभौम सर्वव्याप्त देवी को नित्य सदैव ही प्रणाम करता हूँ॥१७॥

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्॥१८॥

वे ही पाप से छुटकारा दिलानेवाली हैं, वे ही देवी भुक्ति और मुक्ति दोनों को प्रदान करती हैं, उन अन्तरहित, विजयाधिष्ठात्री, निर्दोष, शरण लेने योग्य, कल्याणदात्री और मङ्गलरूपिणी देवी को नित्य सदैव ही प्रणाम करता हूँ॥१८॥

वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्॥१९॥

वियत्-आकाश (ह) तथा (ई) कार से संयुक्त वीतिहोत्र-अग्नि (र) सहित, अर्धचन्द्र

(ँ) से अलंकृत जो देवी का बीज है, वह सब कामनाओं तथा मनोरथों को पूर्ण करनेवाला है॥१९॥

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः॥२०॥

इस प्रकार इस एकाक्षर (ह्रीं) स्वरूप का वे यतिमुनि साधक जन ध्यान करते हैं, जिनका चित्त शुद्ध है, जो निरतिशयानन्दपूर्ण और ज्ञान के सागर हैं। (यह मन्त्र देवी का प्रणव कहा जाता है। ॐकार के समान ही यह भी व्यापक है। संक्षेप में इसका अर्थ इच्छा-ज्ञान-क्रिया के आधार अद्वैत, अखण्ड, सच्चिदानन्द, समरसीभूत, शिवशक्त्यात्मक है)॥२०॥

वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्ताष्टात्तृतीयकः ॥२१॥
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः॥२२॥

वाणी (ऐं), माया (ह्रीं), ब्रह्मसू काम (क्लीं), इसके बाद छठवाँ व्यञ्जन अर्थात् (च) वर्ण, वही वक्त्र अर्थात् आकार से युक्त (चा), सूर्य (म), अवाम श्रोत्र अर्थात् दक्षिण कर्ण (उ), और बिन्दु अर्थात् (आ) से मिश्रित (डा), वायु (य) अधर अर्थात् (ऐं) से युक्त (यै) और विच्चे यह नवार्ण मन्त्र उपासकों को आनन्द और ब्रह्मसायुज्य देनेवाला है। (इस मन्त्र का अर्थ यह है कि हम चित्स्वरूपिणी महासरस्वती-सद्रूपिणी महालक्ष्मी-आनन्दरूपिणी महाकाली, ब्रह्मविद्या पाने के लिए सदैव समय ध्यान करते हैं। हे महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वरूपिणी चण्डिका देवि! तुम्हें नमस्कार है। अविद्यारूपी रज्जु की दृढ़ ग्रन्थि को खोलकर मुझे मुक्त करो)॥२१-२२॥

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्॥२३॥
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे।

हृत्कमल के मध्य में रहनेवाली, प्रातःकालीन सूर्य के समान प्रभावाली, पाश और अङ्कुश धारण करनेवाली, मनोहर रूपोंवाली, वरद और अभयमुद्रा धारण किये हुए हाथों वाली, तीन नेत्रों से युक्त, रक्त वस्त्र परिधान करनेवाली और कामधेनु के समान भक्तों के मनोरथ पूर्ण करनेवाली महादेवी को भजता हूँ॥२३॥

नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्॥२४॥
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।

हे महादेवि! महाभय का नाश करनेवाली, महासङ्कट को शान्त करनेवाली और महान् करुणा की साक्षात् मूर्ति को नमस्कार करते हैं॥२४॥

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोप लभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति॥२५॥

जिसका स्वरूप ब्रह्मादि नहीं जानते, इसलिए अज्ञेया कहते हैं, जिसका अन्त कभी नही होता, इसलिए जिसे अनन्ता कहते हैं, जिसका लक्ष्य दिख नहीं पाता, इसलिए अलक्ष्या कहते हैं, जिसका जनन नहीं होता हैं, इसलिये अजा कहते हैं, एक ही सर्वत्र उपस्थित है (एक ही रूप में), इसलिए एका कहते हैं, जो सर्वत्र अकेली ही विश्वरूप हैं, इसलिए नैका कहते हैं, वह इसीलिए अज्ञेया, अनन्ता, अलक्ष्या, अजा, एका और नैका कहलाती है॥२५॥

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी॥२६॥

जो महादेवी सभी मन्त्रों में मातृका रूप (मूलाक्षर) है, शब्दों में ज्ञान (अर्थ) रूप से जो व्याप्त है, ज्ञानों में जो चिन्मयातीता है, शून्यों में शून्यसाक्षिणी हैं॥२६॥

यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्॥२७॥
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।

जिनसे कुछ भी अन्य श्रेष्ठ नहीं है, वही दुर्गा नाम से प्रसिद्ध हैं, उस दुर्विज्ञेय (बहुत कठिनाई से जाना जाता है), दुराचारनाशक (अव्यवहारों को नष्ट करनेवाली), संसारसागर से तारनेवाली देवी को संसार से डरे हुए हम नमस्कार करते हैं॥२७॥

देव्याथर्वशीर्षपाठमाहात्म्यम्

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षंप्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति, शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः॥२८॥

इस अथर्वशीर्ष का जो अध्ययन तथा पाठ करता है, वह पाँचों अथर्वशीर्ष के पाठ-जपादि का फल प्राप्त करता है। इस अथर्वशीर्ष को बिना जाने जो अर्चनपूजनादि करता है, वह सैकड़ों, लाखों बार भी अर्चन-पूजन करता है, तो भी उसे सिद्धि नहीं मिलती है। एक सौ आठ बार पाठ करना ही इस अथर्वशीर्ष का पुरश्चरण कहा गया है॥२८॥

दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापं प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः॥२९॥

इस अथर्वशीर्ष का दश बार पाठ जो करता है, वह पूर्ण रूप से पापों से मुक्त हो जाता

है और महादेवी का कृपाप्रसाद प्राप्त करके महानतम दुर्गम कठिनाइयों को भी पार कर जाता है॥२९॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद॥२९॥

सायंकाल जो इस अथर्वशीर्ष का पाठ करता है, वह दिन भर के किये गये पापों से छूट जाता है। प्रात:काल जो इस अथर्वशीर्ष का पाठ करता हैं वह रात्रिकालीन किये गये पापों से छूट जाता है। जो इस अथर्वशीर्ष का सायंकाल तथा प्रात:काल पाठ करता है, वह पूर्णत: पापों से हीन होकर पुण्यवान् हो जाता है। निशाकाल में तुरीय सन्ध्या के समय (अर्धरात्रि के समय) जो इस अथर्वशीर्ष का पाठ करता है, उसके वाणी की सिद्धि हो जाती है, नूतन प्रतिमा में जो इस अथर्वशीर्ष का अष्टोत्तरशत पाठ करता है वह इष्ट देवता का सान्निध्य प्राप्त करता है, प्राण-प्रतिष्ठा के समय इस अथर्वशीर्ष का पाठ करने से प्राणों की प्रतिष्ठा होकर चैतन्यता आती है। भौमवार को अश्विनी नक्षत्र पड़ने पर जो लोग इस अथर्वशीर्ष का अष्टोत्तरशत पाठ करते हैं, वे महामृत्यु को भी पार कर जाते हैं, वह महामृत्यु को भी पार कर जाते हैं, यही वेद (शाश्वत ज्ञान) है, यही ज्ञान प्राप्त करना चाहिए॥२९॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पराम्बिकायै नमः स्तुतिपाठं समर्पयामि।

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण गणेशाम्बिकापूजनेन गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम॥

श्रीगणेशाम्बिकापूजनं परिपूर्णम्

❀

स्वस्तिकलशस्थापनम्

भूमिस्पर्श—ॐ महीद्यौःपृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्।। पिपृतानोभरीमभिः।।

सप्तधान्य बिखेरना—ॐ ओषधयःसमवदन्तसोमेनसहराज्ञा।। यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि।।

कलशस्थापन—ॐ आजिग्घ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्विन्दवः।। पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानःसहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः।।

कलश में जल भरना—ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।

कलश में गन्ध डाले—ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

कलश में सर्वौषधि डाले—ॐ याओषधीःपूर्व्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा।। मनैनुबब्भ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च।।

कलश में दूर्वा डाले—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि।। एवानोदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।

कलश में पञ्चपल्लव डाले—ॐ अश्वत्त्थेवोनिषदनंपर्ण्णेवोव्वसतिष्कृता।। गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्।।

कलश में कुश डाले—ॐ पवित्रेस्त्थोव्वैष्ण्णव्व्यौसवितुर्व्वःप्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पवित्रेणसूर्य्यस्यरश्म्मिभिः।। तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्।।

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी।। यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः।।

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः॒ फ॒लिनी॒र्य्या॑ऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्प्पायाश्श्च॑पु॒ष्प्पिणीः॑॥ बृह॒स्प्पति॑प्प्रसूता॒स्तानो॑मुञ्च॒त्वꣳह॑सः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परि॑वाजप॑तिः क॒विर॒ग्निर्ह॒व्यान्य॑क्रमीत्॥ दध॒द्रत्ना॑नि दा॒शुषे॑॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हि॒र॒ण्ण्य॒ग॒र्ब्भः सम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑भू॒तस्य॑जा॒तः पति॒रेक॑ऽआसीत्॥ सदा॑धारपृथि॒वीद्यामु॒तेमां अस्म्मै॑दे॒वाय॑ह॒विषा॑विधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सु॒जा॑तो॒ज्ज्योति॑षा स॒ह शर्म्म॒व्वरू॑थ॒मास॑द॒त्त्स्वः॑॥ व्वासो॑अग्ग्ने व्वि॒श्श्वरू॑प॒ꣳ संव्व्य॑यस्व व्विभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पू॒र्ण्णा द॑र्व्वि॒ परा॑पत॒ सुपू॑र्ण्णा॒ पुन॒रापत॥ व॒स्नेव॒ व्विक्क्री॑णावहा॒ऽ इष॒मूर्ज्ज॑ꣳ शतक्क्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याः॒ फ॒लिनी॒र्य्या॑ऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्प्पायाश्श्च॑पु॒ष्प्पिणीः॑॥ बृह॒स्प्पति॑प्प्रसूता॒स्तानो॑मुञ्च॒त्वꣳह॑सः॥**

वरुण का ध्यान, आवाहन, पञ्चोपचारपूजन—**ॐ तत्त्वा॑यामि॒ ब्ब्रह्म॑णा॒ व्वन्द॑मान॒स्तदा-शा॑स्ते॒ यज॑मानो ह॒विर्ब्भिः॑॥ अहे॑डमानो व्वरुणे॒ह बो॒ध्युरु॑श॒ꣳस॒ मा न॒ऽआयुः॒ प्प्रमो॑षीः॥**

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो॑ जू॒तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒ बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्ट्टं॒ य्य॒ज्ञꣳ समि॒मन्द॑धातु॥ व्विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒ह मा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। इस जल में वरुण अपने आयुधशक्तिपरिवार सहित आकर स्थित हों।

ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित होता है, उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षि (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकाएँ स्थित हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तद्वीप स्थित हैं। अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं॥३॥

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री, नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ हैं, पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं, वे सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्त दुरित के क्षयकारक हों तथा हमारे समस्त पापों को नष्ट करनेवाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग रूप से कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरित को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें, हमारे यज्ञ को पूर्णता प्रदान करें॥८॥

स्वस्तिकलशपूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर वरुणादि देवताओं का ध्यान करे—

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒पुरु॑षःसहस्रा॒क्षःस॒हस्र॑पात्॥ सभूमि॑ꣳस॒र्वत॑स्पृ॒त्वात्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर, आसन का ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ पुरु॑षऽए॒वेद॒ꣳ सर्व्वं॒य्यद्भू॒तंयच्च॒भाव्य॒म्॥ उ॒तामृ॑त॒त्वस्येशा॑नो॒यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ए॒तावा॑नस्यमहि॒माता॒ज्ज्यायाँ॑श्च॒पूरु॑षः॥ पादो॑ऽस्य॒विश्वा॑भू॒तानि॑त्रि॒पाद॑स्या॒मृत॑न्दि॒वि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ त्रि॒पादू॒र्द्ध्वऽउदै॒त्पुरु॑षः॒पादो॑ऽस्ये॒हाभ॑व॒त्पुनः॑॥ ततो॒विष्व॒ङ्व्य॑क्रामत्साशनानश॒नेऽअ॒भि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ततो॑वि॒राड॑जायतवि॒राजो॒ऽअधि॒पूरु॑षः॥ सजा॒तोऽअत्य॑रिच्च्यतप॒श्चाद्भूमि॒ मथो॑ पु॒रः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व्व॒हुतः॒सम्भृ॑तम्पृषदा॒ज्ज्यम्॥ प॒शूँस्ताँश्च॑क्क्रेवाय॒व्या॒नार॒ण्याग्रा॒म्म्याश्च॒ये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व्व॒हुत॒ऽऋचः॒सामा॑निजज्ञिरे॥ छन्दा॑ꣳसिजज्ञिरे॒तस्मा॒द्यजु॒स्तस्मा॑दजायत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयः पात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयः॑पृथि॒व्यांपय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः॥ पय॑स्वतीः॒प्र॒दिशः॑सन्तु॒मह्य॑म्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ द॒धि॒क्राव्णो॑ऽअकारिषंजि॒ष्णोरश्व॑स्यवा॒जिनः॑॥ सु॒र॒भिनो॒मुखा॑कर॒त्प्रण॒ऽआयू॑ꣳषितारिषत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृ॒तम्मि॑मिक्षेघृ॒तम॑स्य॒योनि॑र्घृ॒तेश्रि॒तोघृ॒तम्व॑स्य॒धाम॑॥ अ॒नु॒ष्व॒धमाव॑हमा॒दय॑स्व॒ स्वाहा॑कृतंवृषभवक्षिह॒व्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधु॒वाता॑ऽऋताय॒तेमधु॑क्षरन्ति॒सिन्ध॑वः॥ माद्ध्वी॑र्नः॒स॒न्त्वोष॑धीः॥ मधु॒नक्त॑मु॒तो-

षसोमधुमत्त्पार्त्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोवनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाꣳरसमुद्द्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तंवोगृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्द्रायपशुपतयेकर्ण्णायामाऽअविलिप्तारौद्द्रानभोरूपाःपार्ज्जन्याः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मादश्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्चये॥ ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ग्नेविश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वविभावसो॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिव मातरः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषंव्व्यदधुःकतिधाव्व्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोर्व्वाचीसुमतिर्व्व-

वृत्त्यादꣳहोश्श्रुद्यावरिवोवित्तरासदादित्त्येभ्यस्त्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ॥ आपोजनयथा च नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्माद्मुच्च्यत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधीःप्रतिमोदध्वंपुष्पवतीःप्रसूवरीः॥ अश्वाऽइवसजित्त्वरीर्वीरुधःपारयिष्णवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्परि॥ एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेण शतेन च॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहिरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंपरिबाधमानः॥ हस्तघ्नोविश्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳसंपरिपातुविश्वतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोवातप्रमियःपतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽअरुषोनवाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्वमानः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण के बाद नैवेद्य देवता के सामने रख करके धूपदीप प्रज्वलित करके धूप दिखाये।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्याꣳशूद्रोऽ

अजायत॥ ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंध्व्वोऽस्मान्धूर्व्वतितंधूर्व्वयंव्वयंधूर्व्वामः॥ देवानामसिव्वह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमंजुष्ट्टतमंदेवहूतमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्श्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्श्रोत्राद्वायुश्श्चप्राणश्श्चमुखादग्निरजायत॥ ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निःस्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिःसूर्य्यःस्वाहा॥ अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहा॥ ज्ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्योज्ज्योतिःस्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशःश्श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्प्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ पप्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुःपृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽअच्च्युतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत॥ व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंग्ग्रीष्मऽइध्मःशरद्धविः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्राणि पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिकञ्च समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फल लेकर समर्पित करे—

ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिरण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्म्मैदेवायहविषाविधेम॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरा॑त्रि॒पार्थि॑वꣳ॒रजः॑पि॒तुर॑प्प्रायि॒धाम॑भिः॥ दि॒वःसदा॑ꣳसिबृह॒तीवि॒तिष्ठ॑स॒ऽआत्त्वे॒षंब्ब॑र्त्तते॒तमः॑॥ ॐ इ॒दꣳह॒विःप्र॒जन॑नंमेऽअस्तु॒दश॑वी॒रꣳसर्व्व॑गणꣳस्व॒स्तये॑॥ आ॒त्म॒सनि॑प्र॒जा॒सनि॑पशु॒सनि॑लो॒क॒सन्न्य॑भय॒सनिः॑॥ अ॒ग्निःप्प्र॒जांब॑हु॒लांमे॑करो॒त्वन्नं॒पयो॒रेतो॑ऽअ॒स्म्मासु॑धत्त॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ य॒ज्ञेन॑य॒ज्ञम॑यजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्मा॑णिप्प्रथ॒मान्न्या॑सन्॥ तेह॒नाकं॑म्महि॒मानः॑सचन्त॒यत्र॒पूर्व्वे॑सा॒द्ध्याःसन्ति॑दे॒वाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ स॒प्तास्या॑सन्न्प॒रि॒धय॒स्त्रिःस॒प्तस॒मिधः॑कृ॒ताः॥ दे॒वायद्य॒ज्ञन्तन्न्वा॒नाऽअब॑ध्न॒न्पुरु॑षम्प॒शुम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

रक्ष रक्ष जलाध्यक्ष रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं पश्चिमाधीश! प्राणीनां जीवनं परम्॥१॥

हे जलाध्यक्ष! हमारी सभी प्रकार से रक्षा करें-रक्षा करें, हे जीवनदायक! हमारे जीवन की रक्षा करें। हे पश्चिम दिशा के स्वामि! प्राणियों को जीवन प्रदान करनेवाले! हमारी रक्षा करें॥१॥

विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतम्।
विशेषार्घ्यं प्रदाष्यामि सर्वदा रक्षणं कुरु॥२॥

चन्दन, रजनी पुष्प तथा विविध द्रव्यों से संयुक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ, हमारी सर्वदा रक्षा कीजिये॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

कलशप्रार्थना—

ॐ देवदानवंवादेत्र मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

हे कुम्भ! देवताओं और दानवों के बीच समुद्र-मन्थन हुआ तब तुम उत्पन्न हुए, तुम्हें स्वयं विष्णु ने धारण किया था॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

तुम्हारी जल में सभी तीर्थों की प्रतिष्ठा है, तुममें सभी देवताओं का वास है, तुमसे ही सभी प्राणी प्रतिष्ठित हैं, तुममें ही सभी के प्राण प्रतिष्ठित हैं॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

तुम ही सभी जीवों में प्रतिष्ठितं हो, जिससे समस्त कामनायें फलवान् होती हैं, हे जलोद्भव कुम्भ! तुम्हारे कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करने वाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सांनिध्य प्रदान करें॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दर श्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दरमङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले, हे जलाधिनाथ! आपको बार-बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

पाश को हाथ में धारण करनेवाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करनेवालों के नायक, जब तक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती तब तक सांनिध्य प्रदान करें॥७॥

प्रार्थनासमर्पणम्—हाथ में जल लेकर प्रार्थना समर्पण करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से जल लेकर पूजन समर्पित करे।

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावहितदेवताः प्रीयन्तां न मम॥

वरुण पूजन के बाद सभी ब्राह्मण मिलकर पुण्याहवाचन करे।

कलशपूजनं परिपूर्णम्

⁂

पुण्याहवाचनम्

अवनीकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशं अञ्जलिं शिरस्याधायाऽनन्तरं दक्षिणेन पाणिना कलशं धारयित्वा आशिषः प्रार्थयेत्। जानुमण्डल को नीचे जमीन में लगाकर दक्षिण हाथ को कमल के समान अञ्जलि बनाकर उसमें कलश लेकर शिर पर धारण करके आशीष-प्रार्थना करे।

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनाऽऽयुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु॥

अतिशय विस्तारित समुद्र तथा नद-नदियाँ-पर्वत तथा भगवान् विष्णु के आयु के प्रमाण का हो जाऊँ (चिरायु वाला हो जाऊँ) तथा शतवर्ष पर्यन्त तथा उनके आयु के प्रमाण से आयुवाला हो जाऊँ।

ब्राह्मण बोले—**अस्तु दीर्घमायुः॥** आपकी आयु दीर्घ हो जाये।

ॐ त्रीणिपदाव्विचक्रमेव्विष्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः॥ अतोधर्म्माणिधारयन्॥

यजमान बोले—**तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु दीर्घमायुः।** आपकी आयु दीर्घ हो जाये।

ॐ त्रीणिपदाव्विचक्रमेव्विष्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः॥ अतोधर्म्माणिधारयन्॥

यजमान बोले—**तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु दीर्घमायुः।** आपकी आयु दीर्घ हो जाये।

ॐ त्रीणिपदाव्विचक्रमेव्विष्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः॥ अतोधर्म्माणिधारयन्॥

कलश को भूमि पर रख करके ब्राह्मणों का हस्त पूजन करे।

यजमान बोले—

अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु मे॥

जल में समस्त देवताओं का वास है, सभी में जल ही प्रतिष्ठित है, ब्राह्मणों के हाथ में प्रदान करने पर यह जल हमारे लिये कल्याणकारी हो।

ॐ शिवा आपः सन्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में जल दे।

ब्राह्मण बोले—**सन्तु शिवा आपः।** जल कल्याणकारी हो।

यजमान बोले—

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तु नः॥

पुष्प (कमल) में लक्ष्मी का वास है, पुष्कर में भी लक्ष्मी बसती हैं, वे लक्ष्मी नित्य हमारे यहाँ वास करें और हमारे मन में वास करके सुन्दरता प्रदान करें।

ॐ सौमनस्यमस्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुष्प प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**अस्तु सौमनस्यम्।** पुष्प आपको सुन्दर मनवाला करे।

यजमान बोले—

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम॥

अक्षत हमारे लिए दीर्घायु-यश-बल तथा पुण्यकारी हो और हमारे लिए सदा लोक में श्रेयस्कर हो।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चाऽस्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में अक्षत प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**अस्त्वक्षतमरिष्टं च।** अक्षत अरिष्ट कारक हो।

यजमान बोले—

चन्दने महदारोग्यं गन्धाः प्रीति ते यदा।
ब्राह्मणानां करे न्यस्तु माङ्गल्यं चास्तु मे सदा॥

चन्दन से आरोग्यवृद्धि होती है, गन्ध से सभी की प्रीति होती है, ब्राह्मणों के हाथ में प्रदान करने से सदा हमारे लिए मङ्गलकारी हो।

ॐ गन्धाः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में चन्दन प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**सुमङ्गल्यं चास्तु।** गन्ध मङ्गलकरक हो।

यजमान बोले—

अक्षतं मे महत्पुण्यं अक्षयतृप्तिप्रदायकम्।
अक्षतं महदायुष्यं तस्मादायुष्य मे सदा॥

अक्षय तृप्ति प्रदान करनेवाला अक्षत हमारे लिए बहुत पुण्यवान् हो, अक्षत से आयु की वृद्धि होती है अतः हमें सदैव आयु प्रदान करे।

ॐ पुनरक्षताः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः अक्षत प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**आयुष्यमस्तु।** आपकी आयु दीर्घ हो जाये।

यजमान बोले—

पुष्पे भवतु सौगन्धं पुष्पं पुष्टिप्रदायकम्।
पुष्पे वसतु श्रीवृत्तिः श्रीश्रियमस्तु मे सदा॥

पुष्पों में सुगन्धि होती है, पुष्प पुष्टि प्रदान करते हैं, पुष्प में श्रीवृत्ति का वास होता है अतः हमारे लिये सदा ही श्रीलक्ष्मी प्राप्त हो।

ॐ पुनः पुष्पाणि पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः पुष्प प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**सौश्रियमस्तु**। आप श्रीमान हो जायें।

यजमान बोले—

ऐश्वर्यं सुफलं सन्तु देवाः प्रीति भवा यदा।
ब्राह्मणानां प्रसादश्च ऐश्वर्य मे सदाकरा॥

देवताओं में प्रीति होती है, तो ऐश्वर्य सुफल होता है, ब्राह्मणों के कृपाप्रसाद से देवताओं के प्रति हमारी प्रीति तथा ऐश्वर्य प्राप्त हो।

ॐ सफलताम्बूलानि पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में सुपाड़ी सहित पान प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**ऐश्वर्यमस्तु**। आप ऐश्वर्यवान हो जाये।

यजमान बोले—

यज्ञपुण्यस्य साफल्यं अनन्तफलदा भवा।
ब्राह्मणानां प्रसादेन दक्षिणा सफला सदा॥

ब्राह्मणों के कृपा प्रसाद से यज्ञ का पुण्य सफल होकर अनन्त फलवान् हो जाता है, वैसे ही हमारे द्वारा दी गयी दक्षिणा सदैव ही यज्ञफल को प्रदान करनेवाली हो।

ॐ दक्षिणाः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**बहुदेयं चाऽस्तु**। आपके पास देने के लिए बहुत हो।

यजमान बोले—

हरिः जले निवसन्ति जलं वरुणरूपिणम्।
वरुणाद्यर्चितो देवः(शिवः) तस्मात्स्वर्चित ते सदा॥

जल ही वरुणरूप है, जल में ही हरि का वास है, वरुणादि (जल) से शिव का अर्चन होता है, अतः ब्राह्मण भी सदा ही जल से अर्चित होकर प्रसन्न हों।

ॐ पुनरत्राऽपः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः जल प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**स्वर्चितमस्तु**। पूजित हुये।

यजमान बोले—**दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं पौत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चाऽस्तु**।

ब्राह्मण बोले—**तथास्तु**। जैसा चाहते है वैसा ही हो।

यजमान बोले—**यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते**

तं अहं ओङ्कारं आदिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिः अनुज्ञातः पुण्यं पुण्याऽहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण बोले—**वाच्यन्ताम्।** वाचन करता हूँ।

सभी ब्राह्मण मिलकर पुण्यकारक मन्त्रों का पाठ करे—

पुण्यकारकमन्त्रम्

करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः।
सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा॥१॥

आपका ब्रह्मा कल्याण करें, द्विजजाति मात्र आपका कल्याण करें, सरीसृपों में जो सर्वश्रेष्ठ सरीसृप हैं वे सभी आपका सदा सर्वदा कल्याण करें॥१॥

ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः।
तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः॥२॥

ययाति, नहुष, धुन्धुमार, भगीरथ इत्यादि राजर्षि भी आप पर कल्याण करनेवाले हों॥२॥

स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च।
स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा॥३॥

आपका द्विपाद कल्याण करे, चतुष्पाद कल्याण करें, अन्यान्य पादवान नित्य सर्वदा कल्याणकारी हों॥३॥

स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे॥४॥

स्वाहा, स्वधा, शची भी आपका सदा कल्याण करें, वेदादि भी नित्य कल्याण करनेवाले हों॥४॥

लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाङ्गिराः॥५॥

हे अनघ लक्ष्मी, अरुन्धती सदैव कल्याण करनेवाले हों, असित, देवल, विश्वामित्र तथा अङ्गिरादि महर्षि भी कल्याण करनेवाले हों॥५॥

वसिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः॥६॥

वसिष्ठ, कश्यपादि महर्षि सदैव कल्याण करनेवाले हों, धाता (विष्णु), विधाता (ब्रह्मा), लोकेश (ईश्वर), दिशाएँ सदैव ही कल्याणकारी हों॥६॥

स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्त्तिकेयश्च षण्मुखः।
विवस्वान् भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा॥७॥

षड्मुख कार्तिकेय सदैव ही कल्याणकारी हों, भगवान् विवस्वान् (सूर्य) सदैव ही कल्याणकारी हों।।७।।

दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः।
अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि यः॥८॥

चारों दिशाएँ तथा आकाश में विचरण करनेवाले समस्त ग्रह, भूमि तथा भूमि के नीचे रहनेवाले नागादि जो पृथ्वी को धारण करते हैं, सदैव ही आपका कल्याण करें।।८।।

शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिव्यैर्देवदानवराक्षसाः॥९॥

शेषादि समस्त श्रेष्ठ सर्प आपका सदैव ही सपरिवार कल्याण करें, अपने अपने दिव्य आयुधों से सभी देवता, सभी दानव, सभी राक्षसगण सदा रक्षा करें।।९।।

ॐ द्रविणोदाःपिपीषतिजुहोतप्रच्चतिष्ठत॥ नेष्ट्राद्दतुभिरिष्यत॥ सवितात्त्वासवानाꣳसुवतामग्ग्निर्गृहपतीनाꣳसोमोव्वनस्पतिनाम्॥ बृहस्प्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्ज्यैष्ठ्यायरुद्रःपशुब्भ्योमित्रःसत्त्योव्वरुणोधर्म्मपतीनाम्॥ नतद्रक्षाꣳसिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजःप्प्रथमजꣳह्येतत्॥ योबिभर्त्तिदाक्षायणꣳहिरण्ण्यꣳसदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुꣳसमनुष्ष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः॥ उच्चातेजातमन्धसोदिविसद्भूम्म्याददे॥ उग्रꣳशर्म्ममहिश्श्रवः॥ उपास्मैगायतानरःपवमानायेन्दवे॥ अभिदेवाँ२॥ऽइयक्षते॥

यजमान बोले—**व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।**

ब्राह्मण बोले—**समाहितमनसः स्मः**। मन में धारण किये।

यजमान बोले—**प्रसीदन्तु भवन्तः**। आप प्रसन्न हो जायें।

ब्राह्मण बोले—**प्रसन्ना स्मः**। हम सभी प्रसन्न हैं।

यजमान अधोलिखित मन्त्र बोलते हुए कलश के ऊपर अक्षत छोड़े तथा ब्राह्मण प्रत्युत्तर में अस्तु-आदि प्रतिवचन बोलें।

ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।

बहिः—द्वितीय पात्र में—

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं-रोगं-अशुभं-अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

अन्तः—कलश के ऊपर—

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरं अहरहमभि-

वृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरण-मुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा-पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरी पुरोगाः उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वा कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाइष्ट देवताः प्रीयन्ताम्।

बहिः—द्वितीय पात्र में—

ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शम्यन्तूपद्रवाः।

अन्तः—कलश के ऊपर—

ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा नद्यः सन्तु। ॐ शिवा गिरयः सन्तु। ॐ शिवा सागराः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ नि॒कामेनिकामेनः प॒र्जन्योवर्ष॑तु॒फलवत्योनु॒ऽओष॑धयः पच्यन्तांयोगक्षे॒मोनः कल्पताम्॥

ॐ शुक्राऽङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहितआदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

यजमान बोले—**एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

ब्राह्मण बोले—**वाच्यताम्।**

यजमान बोले—

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

ब्राह्मकर्म (यज्ञ) बहुत पुण्यकारक होते हैं, जो सृष्टि की उत्पत्ति में कारक हैं, ब्राह्मकर्म

से ही वेदवृक्षादि (वेद=ज्ञानरूपी वृक्ष) नित्य उत्पन्न होते हैं। उस पुण्यकारक वाक्य का हमारे लिए वाचन कीजिये।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्यम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्यम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्यम्।**

ॐ पुनन्तुमादेवजनाःपुनन्तुमनसाधियः॥ पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदःपुनीहिमा॥

यजमान बोले—

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

ऋषियों, सिद्धों, गन्धर्वों के द्वारा पृथ्वी के उद्धार के लिए पूर्वकाल में जो कर्म वाचन किया गया था, वही कर्म हमारे कल्याण के लिए वाचन करें।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

ॐ यथेमांवाचंकल्याणीमावदानिजनेभ्यः॥ ब्रह्मराजन्याभ्याꣳशूद्रायचार्य्याय-चस्वायचारणायचप्रियोदेवानांदक्षिणायैदातुरिहभूयासमयंमेकामःसमृद्ध्यतामुपमादोनमतु॥

यजमान बोले—

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः॥

जिस कर्म प्रभाव से सागर में से ऋद्धिसिद्धियुक्त महालक्ष्मी की उत्पत्ति हुई, उस सम्पूर्ण प्रभाववाले ऋद्धिप्रदाता वाक्यों का वाचन करें।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

ॐ स॒त्रस्य॒ऋद्धि॑र॒स्यग॑न्म॒ज्योति॑र॒मृता॑ऽअभूम॥ दिवं॑पृथि॒व्याऽअध्या॑रु॑हा॒मावि॑दाम दे॒वान्त्स्व॒र्ज्योति॑ः॥

यजमान बोले—

स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः॥

जिनसे दोषों का विनाश तथा नित्य भला होता है, उन पुण्य तथा कल्याण की वृद्धि करनेवाली, विनायक गणेश की नित्यप्रिया ऋद्धिसिद्धि को प्रदान करनेवाले स्वस्तिवाक्य का वाचन आप सभी विप्रवर्ग करे।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यकर्मणो स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

यजमान बोले—**अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

यजमान बोले—**अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ स्व॒स्तिन॒ऽइन्द्रो॑वृ॒द्धश्र॑वाः स्व॒स्तिन॑ःपू॒षावि॒श्ववे॑दाः॥ स्व॒स्तिनस्ता॒र्क्ष्यो॒ऽअरि॑ष्टनेमिः-स्व॒स्तिनो॒बृह॒स्पति॑र्दधातु॥

यजमान बोले—

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥

समुद्रमन्थन से उत्पन्न लक्ष्मी, जगत् में आनन्द करनेवाली लक्ष्मी, हरि की प्रिया और मङ्गल करनेवाली, श्रीः(लक्ष्मी) की वृद्धि हेतु, हमारे लिए लक्ष्मीवृद्धिकारक वाक्यों का वाचन करें।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यकर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

ॐ श्रीश्च॑तेल॒क्ष्मीश्च॒पत्न्या॑वहोरा॒त्रेपा॒र्श्वेनक्ष॑त्राणिरू॒पम॒श्विनौ॒व्यात्त॑म्॥ इ॒ष्णणं निषाणा॒मुंम॑ऽइषाणसर्व्वलो॒कंम॑ऽइषाण॥

यजमान बोले—

मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥

मृकण्ड ऋषि के पुत्र तथा ध्रुवलोमशादि ऋषियों को जिससे दीर्घायुष्य प्राप्त हुआ, वैसे ही आयुष्य के लिए जिससे शतवर्षान्त जीवन हो, उन वाक्यों को हमारे लिए वाचन करें।

ब्राह्मण बोले—**शतं जीवन्तु भवन्तः।**

ॐ श॒तमिन्नुश॒रदो॒अन्ति॑देवा॒यत्रा॑नश्च॒क्राज॒रसं॑त॒नूना॑म्॥ पु॒त्रासो॒यत्र॑पि॒तरो॒भव॑न्ति मानो॑म॒द्ध्यारी॑रिष॒तायु॒र्ग्गन्तो॑ः॥

यजमान बोले—

शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि॥

जिन वाक्यों का वाचन शिव-गौरी के विवाहादि मङ्गलकृत्यों में, श्रीराम के राज्याभिषेक में तथा धनवानों के घर में होता है, उनका हमारे घर में श्रीवृद्धिहेतु वाचन करें।

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

ॐ मन॑सु॒ःकाम॒माकू॑तिंवा॒चः स॒त्यम॑शीय॥ प॒शूनाᳬरू॒पमन्न॑स्य॒रसो॒यशः॒श्रीःश्र॑यतां॒- मयि॒स्वाहा॑॥

यजमान बोले—

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः॥

प्रजापति, लोकपाल, धाता(विष्णु), ब्रह्मा, देवराज इन्द्र तथा शाश्वत भगवान् शिव जिनसे नित्य हमारी रक्षा करें उन वाक्यों को हमारे लिए वाचन करें।

ब्राह्मण बोले—**ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।**

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्श्वारूपाणिपरिताबभूव॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुवयꣳस्यामपतयोरयिणाम्॥

यजमान बोले—

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥

जिन वाक्यों के वाचन से यजमान को आयुष्य और कल्याण होता है, वही वेदादि ज्ञान में पारङ्गत ऋत्विकादि ब्राह्मण हमारे लिए आशीर्वचन का वाचन करें, जिससे हमारे यहाँ सर्वविध कल्याण तथा आयुष्य की वृद्धि हो।

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ प्रतिपन्थामपद्महिस्वस्तिगामनेहसम्॥ येनविश्श्वाःपरिद्विषोवृणक्तिविन्दतेवसु॥

यजमान बोले—**ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु स्वस्तिवाचनसमृद्धिः।**

यजमान दक्षिणासंकल्प करे—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहं कृतस्यस्वस्तिवाचनकर्मणः-समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं स्वस्तिवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थितदक्षिणां-विभज्यदातुमहमुत्सृजे।**

पुण्याहवाचनं परिपूर्णम्

⁂

अभिषेकम्

वरुणकलश का जल लेकर चार अविधुर ब्राह्मण दर्भदूर्वादि से अभिषेक करें, अभिषेक के समय यजमानपत्नी वामभाग में बैठे।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥१॥

आपका ब्रह्माविष्णुमहेश्वरादि समस्त देवता अभिषिञ्चन करें, वासुदेव, जगन्नाथ, सङ्कर्षण भगवान् विभु अभिषिञ्चन करे॥१॥

प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥२॥

प्रद्युम्न, अनिरुद्ध हमारे विजय के लिए तथा अखण्ड, अग्नि, भगवान् विष्णु, यम और निर्ऋति सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥२॥

वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्राह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥३॥

वरुण, पवन, धनाध्यक्ष कुबेर तथा शिव समस्त ऋषियों के सहित दिग्पालादि सभी आपकी सदैव रक्षा तथा पालन करें॥३॥

कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥४॥

कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया, मति, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, कान्ति, तुष्ट्यादि मातृकाएँ सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥४॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमाभौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः॥५॥

उपर्युक्त सभी देवतादि अपनी पत्नियों के सहित रक्षार्थ आपका अभिषिञ्चन करें, आदित्यचन्द्रमाभौमबुधगुरुशुक्र तथा शनि समस्त ग्रह सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥५॥

ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥६॥

सभी ग्रह तृप्त होकर राहु, केतु के सहित आपका अभिषिञ्चन करें, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस तथा समस्त सर्प सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥६॥

ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः॥७॥

समस्त ऋषि, मुनि, गायें, समस्त देवमाताएँ, समस्त देवपत्नियाँ, वृक्ष, समस्त नाग, दैत्य, अप्सराएँ सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥७॥

अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥८॥

समस्त अस्त्र, समस्त शस्त्र, समस्त राजा, समस्त वाहन, समस्त औषधियाँ, समस्त रत्न, समस्त काल के अवयवादि सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥८॥

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये॥९॥

समस्त सरिताएँ, समस्त सागरादि, समस्त पर्वत, समस्त मेघादि, समस्त नद सभी धर्म कामना की सिद्धि के लिए आपका अभिषिञ्चन करें॥९॥

ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्येमनोयजुःप्रपद्येसामप्प्राणम्प्रपद्येचक्षुःश्श्रोत्रम्प्रपद्ये॥ व्वागोजः-
सहोजोमयिप्प्राणापानौ॥१॥ यन्मेछिद्रञ्चक्षुषोहृदयस्यमनसोव्वातितृण्णम्बृहस्पतिर्म्मे-
तद्दधातु॥ शन्नोभवतुभुवनस्ययस्पतिः॥२॥ भूर्भुवःस्वःतत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य-
धीमहि॥ धियोयोनःप्प्रचोदयात्॥३॥ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखा॥
कयाशचिष्ठयाव्वृता॥४॥ कस्त्वासत्योमदानाम्मꣳहिष्ठोमत्सदन्धसः॥ दृढाचिदारुजे-
व्वसु॥५॥ अभीषुणःसखीनामविताजरितॄणाम्॥ शतम्भवास्यूतिभिः॥६॥ कयात्वन्नऽ-
ऊत्त्यामिप्प्रमन्दसेव्वृषन्॥ कयास्तोतृब्भ्यऽआभर॥७॥ इन्द्रोव्विश्श्वस्यराजति॥ शन्नोऽ-
अस्तुद्विपदेशञ्चतुष्प्पदे॥८॥ शन्नोमित्रःशंव्वरुणःशन्नोभवत्वर्य्यमा॥ शन्नऽइन्द्रो-
बृहस्प्पतिःशन्नोव्विष्णुरुरुक्क्रमः॥९॥ शन्नोव्वातःपवताꣳशन्नस्तपतुसूर्य्यः॥
शन्नःकनिक्क्रदद्देवःपर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षतु॥१०॥ अहानिशम्भवन्तुनःशꣳरात्रीः-
प्प्रतिधीयताम्॥ शन्नऽइन्द्राग्ग्नीभवतामवोभिःशन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्व्या॥ शन्नऽइन्द्रा-
पूषणाव्वाजसातौशमिन्द्रासोमासुवितायशंय्योः॥११॥ शन्नोदेवीरभिष्ट्टयऽ-
आपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः॥१२॥ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥
यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः॥१३॥ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानाऽऊर्ज्जेदधातन॥ महेरणाय-
चक्षसे॥१४॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥१५॥ तस्माऽ-
अरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥१६॥ द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳ-
शान्तिःपृथिवीशान्तिरापꣳशान्तिरोषधयꣳशान्तिः॥ व्वनस्प्पतयꣳशान्तिर्व्विश्श्वेदेवाः-
शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिꣳसर्व्वꣳशान्तिꣳशान्तिरिवशान्तिꣳसामाशान्तिरिधि॥१७॥ दृते-
दृꣳहमामित्रस्यमाचक्षुषासर्वाणिभूतानिसमीक्षामहे॥१८॥ दृतेदृꣳहमाज्ज्योक्त्तेसन्दृशि-
जीव्यासञ्ज्योक्त्तेसन्दृशिजीव्यासम्॥१९॥ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे॥

अ॒न्याँस्ते॑ऽअ॒स्मत्त॑पन्तुहे॒तय॑ःपाव॒कोऽअ॒स्मभ्य॑ꣳशि॒वोभ॑व॥२०॥ नम॑स्तेऽअस्तुव्वि॒द्युते॒-नम॑स्तेस्तनयि॒त्नवे॑॥ नमस्तेभगवन्नस्तु॒यत॒ःस्व॒ःस॒मीह॑से॥२१॥ यतो॑यतःस॒मीह॑से॒ततो॑नो॒ऽअभ॑यङ्कुरु॥ शन्न॑ःकुरुप्प्र॒जाब्भ्योऽभ॑यन्नःप॒शुब्भ्य॑ः॥२२॥ सु॒मि॒त्रि॒यान॒ऽआप॒ओऽष॑धयः-सन्तुदु॒र्म्मित्रि॒यास्तस्मै॑सन्तु॒योऽस्मान्द्वेष्टि॒यञ्च॑व॒यन्द्वि॒ष्मः॥२३॥ तच्चक्षु॑र्दे॒वहि॑तम्पु॒रस्ता॑च्छु॒क्रमुच्च॑रत्॥ पश्ये॑मश॒रद॑ःश॒तञ्जीवे॑मश॒रद॑ःश॒तꣳशृणु॑यामश॒रद॑ःश॒तंप्रब्ब्र॑वामश॒रद॑ःश॒तमदी॑नाःस्यामश॒रद॑ःश॒तम्भूय॑श्च्चश॒रद॑ःश॒तात्॥२४॥

ॐ पय॑ःपृथि॒व्यांपय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः॥ पय॑स्वतीःप्र॒दिश॑ःसन्तु॒मह्य॑म्॥ ॐ पञ्च॑न॒द्यःसर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः॥ सर॑स्वती॒तुप॑ञ्च॒धासोदे॒शेभ॑वत्स॒रित्॥ ॐ व्वरु॑णस्यो॒त्तम्भ॑नमसि॒व्वरु॑णस्यस्कम्भ॒सर्ज्ज॑नीस्थो॒व्वरु॑णस्यऽऋ॒तसद॑न्न्यसि॒व्वरु॑णस्यऽऋ॒तसद॑नमसि॒व्वरु॑णस्यऽऋ॒तसद॑नमासीद॥ ॐ पु॒नन्तु॑मादेवज॒नाःपु॒नन्तु॒मन॑साधिय॑ः॥ पु॒नन्तु॒व्विश्वा॑भू॒तानि॒जात॑वेदःपुनी॒हिमा॑॥ ॐ दे॒वस्य॑त्वासवि॒तुःप्र॑स॒व्वेश्विनो॑र्ब्बा॒हुभ्या॑ंपू॒ष्णोहस्ता॑ब्भ्याम्॥ सर॑स्वत्यैव्वा॒चोय॒न्तुर्य॒न्त्रित॑येदधामि॒बृह॒स्प्पते॑ष्ट्वा॒साम्म्राज्येना॒भिषि॑ञ्चाम्यसौ॥ ॐ दे॒वस्य॑त्वासवि॒तुःप्र॑स॒व्वेश्विनो॑र्ब्बा॒हुभ्या॑ंपू॒ष्णोहस्ता॑ब्भ्याम्॥ सर॑स्वत्यैव्वा॒चोय॒न्तुर्य॒न्त्रेणा॒ग्ग्नेःसाम्म्राज्येना॒भिषि॑ञ्चामि॥ ॐ दे॒वस्य॑त्वासवि॒तुःप्र॑स॒व्वेश्विनो॑र्ब्बा॒हुभ्या॑ंपू॒ष्णोहस्ता॑ब्भ्याम्॥ अ॒श्विनो॒र्भैष॑ज्येन॒तेज॑सेब्रह्मवर्च॒साया॒भिषि॑ञ्चामि॥ सर॑स्वत्यैभैष॑ज्येनव्वी॒र्या॒न्नाद्या॑या॒भिषि॑ञ्चामीन्द्र॑स्येन्द्रि॒येण॒बला॑य॒श्रियै॒यश॑से॒ऽभिषि॑ञ्चामि॥ ॐ विश्वा॑निदेवसवितर्दुरि॒तानि॒परा॑सुव॥ यद्भ॒द्रंतन्न॒ऽआसु॑व॥ धा॒म॒च्छदु॒ग्ग्निरिन्द्रो॑ब्र॒ह्मादे॒वोबृह॒स्प्पति॑ः॥ सचे॑तसो॒व्विश्वे॑दे॒वाय॒ज्ञंप्राव॑न्तुनःशु॒भे॥ त्वंय्य॑विष्ठदा॒शुषो॒नॄःपा॑हिश्रृणु॒धीगिर॑ः॥ रक्षा॑तो॒कमु॒तत्मना॑॥ ॐ अन्न॑प॒तेऽन्न॑स्यनोदेह्यनमी॒वस्य॑शु॒ष्मिण॑ः॥ प्रप्र॑दा॒तार॑न्तारिष॒ऊर्ज॑न्नोधेहि॒द्विप॑दे॒चतु॑ष्पदे॥ ॐ द्यौःशान्ति॑र॒न्तरि॑क्षꣳ॒शान्ति॑ःपृथि॒वीशान्ति॒रापꣳ॒शान्ति॒रोष॑धय॒ꣳशान्ति॑ः॥ व्व॒नस्पत॑य॒ꣳशान्ति॒र्विश्वे॑दे॒वाःशान्ति॒र्ब्ब्रह्म॒शान्ति॒ꣳसर्व॑ꣳ॒शान्ति॒ꣳशान्ति॑रि॒वशान्ति॒ꣳसामा॒शान्ति॑रिधि॥ यतो॑यतःस॒मीह॑सेततो॑नो॒ऽअभ॑यङ्कुरु॥ शन्न॑ःकुरुप्प्र॒जाब्भ्योभय॑न्नꣳप्प॒शुब्भ्य॑ः॥ सुशान्ति॑र्भवतु॥

अभिषेक कर्म करने के बाद यजमान संकल्प करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दे।

यजमान दक्षिणासंकल्प करे—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्र:---प्रवर:---नामाऽहं कृतस्य अभिषेककर्मण: समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं अभिषेककर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थित मनसेप्सितां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।**

अभिषेककर्म परिपूर्णम्

षोडशमातृकापूजनम्

कुलदेवता	लोकमातृ	देवसेना	मेधा
तुष्टि	मातृ	जया	शची
पुष्टि	स्वाहा	विजया	पद्मा
धृति	स्वधा	सावित्री	गौरी गणेश

किसी पाटे पर कपड़ा बिछाकर उस पर चित्रानुसार सोलह समान खानों को बना करके प्रथम खाने का दो भाग करके उसमें गेहूँ भर करके उस पर सुपाड़ी रख करके उस सुपाड़ी के ऊपर गौरी-गणेश के सहित मातृका देवियों का आवाहन पूजन करे।

गणेशावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ गुणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ॥

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्॥

मातृवर्ग के समीप रहनेवाले सर्वदा सभी विघ्नों का हरण करनेवाले. तीनों लोकों में जिसकी सदैव वन्दना होती है, ऐसे गणेशजी की स्थापना हम करते हैं।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरंचप्प्रयन्त्स्वः॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

हिमाद्रि (हिमालय) की तनया (पुत्री), वर प्रदान करनेवाली, शङ्कर की प्रिया (शङ्कर की पत्नी), लम्बोदर गणेश की माता भगवती गौरी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

पद्मामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोविरोकऽउभाविन्द्राऽदिथःसूर्य्यश्श्च॥ आरोहतंवरुणमित्रगर्त्ततश्श्चक्षाथामदितिंदितिंचमित्रोऽसिवरुणोऽसि॥

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्॥

पद्म (कमल) की आभावाली, पद्मवदना (कमल के जैसे शरीरवाली), पद्म नाभि के ऊपर निवास करनेवाली, जगत् को प्रिय लगनेवाली, पद्म में वास करनेवाली पद्मादेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

शचीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ निवेशनःसङ्गमनोवसूनांविश्श्वारूपाभिचष्टेशचीभिः॥ देवऽइवसवितासत्त्यधर्म्मेन्द्रोनतस्त्थौसमरेपथीनाम्॥

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचिकुण्डलधारिणीम्।
रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम्॥

दिव्य रूपवाली, विशालाक्षी, पवित्र कुण्डल धारण करनेवाली, लालमुक्तामणि के अलङ्कारों से अलंकृत शचीदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि।

मेधामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ मेधांमेवरुणोददातुमेधामग्निःप्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्श्चवायुश्श्चमेधांधाताददातुमेस्वाहा॥

विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।
बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्॥

इस विश्व में सर्वाधिक वरप्रदान करनेवाली, जरा और निर्जरा से सेवित, बुद्धि का विस्तार करनेवाली, सौम्य (सरल) मेधादेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

सावित्रीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ स॒वि॒तात्त्वा॑स॒वाना॑ꣳसुवताम॒ग्निर्ग्गृ॒हप॑तिना॒ꣳसोमो॒व्वन॒स्प्पती॑नाम्॥ बृह॒स्प्पति॑र्व्वा॒चऽइन्द्रो॒ज्ज्यैष्ठ्या॑यरु॒द्रः प॒शुब्भ्यो॑मि॒त्रः स॒त्त्योव्वरु॑णो॒धर्म॑पतीनाम्॥

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्॥

जगत् में सृष्टि करनेवाली धात्रीदेवी जो प्रणव में मातृकारूपिणी हैं, वेद के भीतर रहने वाली यज्ञमयी सावित्रीदेवी की मैं स्थापना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

विजयामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ विज्ज्य॒न्धनुः॑कप॒र्दिनो॒व्विश॑ल्ल्यो॒बाण॑वाँ२॥उ॒त॥ अनै॑शन्नस्य॒याऽषवऽआ॒भुर॑स्य-निषङ्ग॒धिः॥

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम्।
सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम्॥

सभी अस्त्रों को धारण करनेवाली, सभी आभूषणों से सुसज्जित, सभी देवताओं से सदैव वन्दित, विजयादेवी की मैं स्थापना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि।

जयामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ व॒ह्वी॒नांपि॒ताब॒हुर॑स्यपु॒त्रश्चि॒श्श्चाकृ॑णोति॒सम॑नाव॒गत्त्य॑॥ इ॒षु॒धिः सङ्काः॒ पृत॑नाश्च॒-सर्व्वाः॑ पृ॒ष्ठेनिन॑द्धोजयति॒प्प्रसू॑तः॥

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।
त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम्॥

देवताओं के शत्रुओं का मन्थन करनेवाली, देवी जो देवताओं को अभय प्रदान करती हैं, जो तीनों लोकों में वन्दिता हैं, ऐसी शुभ्र जयादेवी की मैं स्थापना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि।

देवसेनामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ इन्द्र॑ऽआसान्ने॒ताबृह॒स्पति॒र्द्दक्षि॑णाय॒ज्ञः पु॒रऽए॑तु॒सोम॑ः॥ दे॒व॒सेना॑नामभिभञ्जजी॒नां-जय॑न्तीनांम॒रुतो॑य॒न्त्वग्ग्रम्॥

मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम्।
आवाहयेद् देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्॥

मयूर जिनका वाहन है, जो खड्गशक्ति तथा धनुष को धारण करती हैं, तारकासुर का मर्दन करनेवाली उन देवसेना देवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

स्वधामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ पि॒तृभ्य॑÷स्वधा॒यिभ्य॑÷स्व॒धानम॑÷पिता॒महेभ्य॑÷स्वधा॒यिभ्य॑÷स्व॒धानम॒ः-प्रति॑तामहेभ्य॒ःस्वधा॒यिभ्य॑÷स्व॒धानम॑÷॥ अक्ष॑न्पि॒तरो॒ऽमी॑मदन्तपि॒तरो॒ऽती॑तृपन्तपि॒तर॒ः-पित॑र॒ःशुन्ध॑द्ध्वम्॥

अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।
पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्॥

सभी देवताओं में सर्वप्रथम उत्पन्न होनेवाली, कव्य को धारण करनेवाली तथा पितरों को तृप्ति प्रदान करनेवाली, स्वधा देवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

स्वाहामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ स्वाहा॑प्प्रा॒णेभ्य॒ःसाधि॑पतिकेभ्य॒ः॥ पृ॒थि॒व्यैस्वाहा॒ग्ग्नये॒स्वाहा॒न्तरि॒क्षाय॒स्वाहा॑-व्वा॒यवे॒स्वाहा॑॥ दि॒वेस्वाहा॒सूर्य्या॑य॒स्वाहा॑॥

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्॥

हवि को ग्रहण करके देवताओं को प्रदान करनेवाली, दिव्यरूप धारण करनेवाली, वर प्रदान करनेवाली, स्वाहा देवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

मातृः-आवाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ आपो॑ऽअ॒स्म्मान्मा॒तर॑÷शुन्धयन्तुघृ॒तेन॑नोघृत॒प्प्व॒÷पुनन्तु॥ व्विश्श्व॒ꣳहि॒रि॒प्प्रंप्प्रवह॑न्ति-दे॒विरुदि॑दा॒भ्य॒ःशुचि॒रापू॒तऽए॑मि॥ दी॒क्षा॒त॒पसो॑स्त॒नूर॑सि॒तांत्वा॑शि॒वाꣳशग्ग्मांपरि॑दधे-भ॒द्रंव्वर्ण॒पुष्य॑न्॥

आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः।
सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः॥

सर्वकल्याणरूपी, दिव्यभूषणों से विभूषित, वर प्रदान करनेवाली, सम्पूर्ण लोक में पूजित माताओं (मातृशक्तियों) का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि स्थापयामि।

लोकमातृः आवाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ र॒यिश्श्च॑मे॒राय॑श्श्चमेपु॒ष्टंच॑मे॒पुष्टि॑श्च्चमेव्वि॒भुच॑मेप्र॒भुच॑मेपू॒र्ण्णंच॑मेपू॒र्ण्णत॑रंचमे-कु॒य॑वञ्चमेऽक्षि॑तञ्चमेऽन्नं॑च्चमेऽक्षुच्च॑मेय॒ज्ञेन॑कल्प्पन्ताम्॥

आवाहयेल्लोकमातृः जयन्तिप्रमुखाः शुभा।
नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः॥

विभिन्न अभीष्ट प्रदान करनेवाली, लोक में सभी का हित करनेवाली, जयन्त्यादि प्रमुख शुभ माताओं का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।

धृतिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्प्रजासु॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मंक्रियतेतन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्॥

सभी को हर्ष प्रदान करनेवाली देवी जो भक्तों को अभय प्रदान करनेवाली हैं, सदैव प्रसन्नता से प्रफुल्लित कमल पर निवास करनेवाली, धृतिदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

पुष्टिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ अङ्गान्न्यात्मन्भिषजातदश्श्विनात्मानमङ्गैः समधात्त्सरस्वती॥ इन्द्रस्यरूपꣳशतमानमायुश्च्चचन्द्रेणज्ज्योतिरमृतंदधानाः॥

पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः।
शाकैः फलैर्जलैर्रत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्॥

अपने शरीर से उत्पन्न शाक, फल, जल तथा रत्नादि से समस्त जगत् का पोषण करनेवाली पुष्टिदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

तुष्टिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः॥ सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्श्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम्।
प्रसादसुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्॥

देवताओं की आराधिता सदैव सन्तोष प्रदान करनेवाली, प्रसन्न मुखवाली तुष्टिदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

कुलदेवतामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ प्प्रा॒णाय॒स्वाहाऽपा॒नाय॒स्वाहा॒व्व्या॒नाय॒स्वाहा॒॥ चक्षु॑षे॒स्वाहा॒श्श्रोत्रा॑य॒स्वाहा॒व्वा॒चे स्वाहा॒मन॑से॒स्वाहा॑॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

पत्तन, नगर, गाँव, पर्वत तथा घर में नाना जाति, कुलों में व्याप्त दुर्गा देवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथों से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो॑जू॒तिर्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टं॒य्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु॥ व्विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ॒॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राणप्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह(संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवताद्यावाहितमातृभ्यो नमः आवाहिता प्रतिष्ठिता वरदा भव।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप सुवर्ण के समान पीतवर्णवाली, किञ्चित् हरितवर्णवाली, किञ्चित् हरिणी रूप धारण करनेवाली, सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करनेवाली, सुन्दर वर्णवाले चाँदी के समान श्वेतपुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, चन्द्रमा के समान सबको प्रसन्न करनेवाली, हिरण्यमयी रूपवाली एवं हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी का मेरे लिए आवाहन करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत् विख्यात एवं अनपगामिनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ, मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करने के लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नम: आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ हैं अथवा जिनके रथ के आगे घोड़े जुटे हुए हैं, ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली, दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ, दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी का अपने घर में सर्वदा निवास करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नम: पादयो: पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

जिनका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्दहास्ययुक्ता हैं, जो चारों ओर सुवर्ण से वेष्टित हैं एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं, अर्थात् जो लक्ष्मीजी दया से आर्द्र होते हुए तेज से देदीप्यमान हैं, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमल के सदृश गृह में निवास करने वाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नम: अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं से सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहने वाली, सबकी रक्षा करनेवाली, भक्तों को आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता रहूँ, हे लक्ष्मि! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अत: मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नम: आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गादि सभी तीर्थों से प्रार्थनापूर्वक मैं जल लाया हूँ, इस जल का स्पर्श सुख प्रदान करनेवाला है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूर के समान सुगन्धित, दूध के समान धवल, स्वाद में शीतल जल आचमन के लिए प्रस्तुत है, इस आचमनीय जल को हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पयःपात्र (दूध का बर्तन) लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गाय से उत्पन्न सभी को जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए अति पवित्र दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से उत्पन्न मधुर तथा अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही हे देव! हम आपके स्नान के लिए लाये हैं, इस दही को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मक्खन से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी आपको स्नान के लिए प्रदान करता हूँ, इस घृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न सुन्दर स्वादवाला मधुर शहद, तेज और पुष्टि को प्रदान करने वाला, दिव्य शहद स्नान के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुरस से उत्पन्न शर्करा शुभ पुष्टि प्रदान करनेवाली, सभी प्रकार के मल का अपहरण करनेवाली है, दिव्य स्नान के लिए इस शर्करा को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध, दही, घी, मधु और शर्करा से युक्त पञ्चामृत दिव्य स्नान के लिए आपको समर्पित है, इस पञ्चामृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों के दिव्य जल आपके स्नान के लिए समर्पित हैं, इस जल को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली देवि! आपके तेज से बिना पुष्प के फल देनेवाला वनस्पति विशेष एक वृक्ष उत्पन्न हुआ (आपके हाथ से बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ) उस बिल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर-वाहर की दरिद्रता को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

हे लक्ष्मि! देवसखा अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला के सदृश यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् कुबेर का धन और यश दोनों ही मुझे मिले, मैं इस सुन्दर राष्ट्र(शरीर) में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः हे कुबेरदेव! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥

भूख तथा प्यासरूपी मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मीजी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ, हे लक्ष्मि! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं, धन-धान्यादि से सदा परिपूर्ण, गौ-अश्वादि पशुओं की समृद्धि को देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

हे लक्ष्मि! तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, व्रीहि इत्यादि अन्नों के रूप अर्थात् भक्ष्य,

भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोज्यादि पदार्थों इन समस्त पदार्थों को प्राप्त करूँ, सम्पत्ति-यश मुझमें आश्रय लेकर रहे अर्थात् मैं धनवान् कीर्तिमान् बनूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई हैं। हे कर्दम! आप मुझमें अच्छी तरह वास करे। इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणमातृक!॥

हरे-हरे दूर्वाङ्कुर जो अमृतत्व तथा मङ्गल प्रदान करनेवाले हैं, आपके पूजा के लिए मैं लाया हूँ, आप प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

जिस प्रकार कर्दम ऋषि की सन्तति (ख्याति) से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से चौदह रत्नों के बाद लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ है। उसी प्रकार जल देवता स्निग्ध एवं मनोहर पदार्थो को उत्पन्न करें (पदार्थों की सुन्दरता लक्ष्मी ही है) लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत चार पुत्र हैं, जिसमें हे चिक्लीत! तुम मेरे गृह में निवास करो, केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयाभृता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

अरुणकालिक प्रकाश के समान आभावाला सिन्दूर तथा जवाकुसुम के सदृश वर्ण (रंग) वाले सिन्दूर से हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हो तथा पूजित हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद, देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित कर, धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित कर, सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे। दीप देवता को समर्पित किया जाता है, न कि चारो ओर घुमाया जाता है।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

दशाङ्ग, गुग्गुल, चन्दन तथा अगुरु जैसे गन्धों से युक्त धूप भक्तिपूर्वक हम समर्पित करते हैं, हे महादेवि! इस धूप को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के झुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्रशरीरवाली, पुष्टि को देनेवाली, पुष्टिस्वरूपा, रक्त और पीत वर्णवाली, कमल की माला धारणकर जगत् को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

चारों प्रकार का सुन्दर सुस्वादु षड्रसों से युक्त नैवेद्य हे देवि! भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ, ग्रहण करके अपने में हमारी भक्ति को अचल करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यञ्च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य चन्दन तथा रजनी पुष्प से युक्त करोद्वर्तन हम प्रदान करते हैं, गणेश सहित मातृकाएँ प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में भक्तों पर सर्वदा दयार्द्रचित्त, समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली, यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण स्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करनेवाली सूर्यज्वा अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है, उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालन-पोषण करती है, अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेला-लवङ्गादिसहित ताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फल लेकर समर्पित करे—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदली पनसाऽऽम्रं कपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! द्राक्षा (किसमिस), खर्जूर (खजूर), कदली (केला), पनस (कटहल), आम्र (आम), कपित्थ (कैथ), नारिकेल (नारियल), इक्षु (गन्ना), जम्बूफल (जामुन), फलों को आपके प्रसन्नता के लिए लाया हूँ, प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

पूजा के पूर्ण फल की समृद्धि के लिए स्वर्णमयी मुद्रा आपके सामने समर्पित भाव से स्थापित है, जिसे स्वीकार करके प्रसन्न मन होकर हमारे मनोरथ को पूर्ण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केले के वृक्ष के) गर्भ से उत्पन्न कर्पूर प्रदीपित करके आपकी आरती हम करते हैं, जिसे देखकर आप प्रसन्न हों तथा हमारी समस्त कामनापूर्ति के लिए वर प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे यहाँ उस जगत्विख्यात् लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कहीं न जानेवाली हों, उन लक्ष्मी को प्राप्त कराओ, जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े, और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ, अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

जो मनुष्य शुचिता को प्राप्तकर अर्थात् शुद्ध होकर लक्ष्मी की कामना से श्रद्धापूर्वक पवित्र मन और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम करे और उसके साथ लक्ष्मीसूक्त तथा श्रीसूक्त के पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन निरन्तर जप करता रहे।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथों से पुष्प संग्रहण कर प्रार्थना करे—

मेधाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा,
दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा॥१॥

हे देवि! जिनसे समस्त शास्त्रों के सार का ज्ञान होता है, वह मेधाशक्ति आप ही हैं, दुर्गम भवसागर से पार उतारने वाली नौकारूपी दुर्गादेवी भी आप ही हैं, कैटभ के शत्रु भगवान् विष्णु के हृदय की एकमात्र स्वामिनी लक्ष्मी और चन्द्रमा को सिर पर धारण करनेवाले भगवान् शङ्कर की प्रिया गौरी तुम्हीं हो॥१॥

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य॥२॥

हे देवि! आप हमपर प्रसन्न हों, परमात्मस्वरूपा आपके प्रसन्न होने पर जगत् का अभ्युदय होता है और क्रोध में भर जाने पर आप तत्काल ही कितने कुलों का नाश कर डालती हैं, यह बात अभी अनुभव में आयी है; क्योंकि महिषासुर की यह विशाल सेना क्षणभर में आपके कोप से नष्ट हो गयी है॥२॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥१॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश॥२॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपः॥३॥

हे मातायें! गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, मातृकाएँ, लोकमातृकाएँ, धृति, पुष्टि, तुष्टि तथा अपने कुल की कुलदेवी गणेश के सहित पूजित होकर हमारे घर हमें आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य सभी प्रदान करे तथा हमारे समस्त पूजन-अनुष्ठान को गणेश के सहित मातृकायें निर्विघ्न करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः स्तुतिप्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे—

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण यथाज्ञानेन यथापूजनेन गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवतान्तावहितषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम।

षोडशमातृकापूजनं परिपूर्णम्

❀

सप्तघृतमातृकापूजनम्

किसी पाटे पर कपड़ा बिछा करके उस पर अधोलिखित चक्र सिन्दूर से सप्तबिन्द्वात्मक (सबसे पहले नीचे सातबिन्दु बनाकर फिर उसके ऊपर छः बिन्दु, फिर उसके ऊपर पाँच बिन्दु, उसके ऊपर चार बिन्दु, उसके ऊपर तीन बिन्दु, उसके ऊपर दो बिन्दु, फिर उसके ऊपर एक बिन्दु चक्र) बनायें। नीचे के सात बिन्दुओं पर घृत धारा छोड़ कर गुड़ से एकीकरण करके उन पर आवाहन-स्थापन करके पूजन करे।

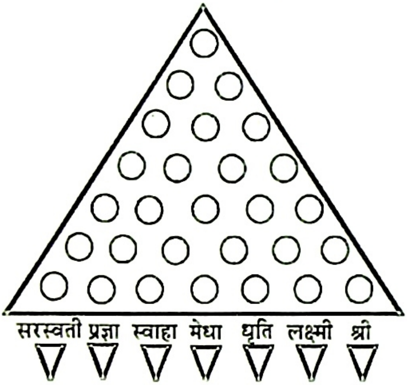

घृतधारा—घी से अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुए सप्तमातृका बिन्दुओं पर घृत धारा दें पश्चात् गुड़ से एकीकरण करके प्रत्येक धाराओं पर तत्तद् देवताओं का आवाहन करे।

ॐ व्वसोःपवित्रमसिशतधारंव्वसोःपवित्रमसिसहस्रधारम्॥ देवस्त्वासवितापुनातु व्वसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वा॥ ॐ कामधुक्षः॥

श्रियमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ मनसःकाममाकूतिंव्वाचःसत्त्यमशीय॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्यरसोयशःश्रीःश्श्रयतां-मयिस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।

लक्ष्मीमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ श्रीश्च्चतेलक्ष्मीश्च्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्श्विनौव्व्यात्तम्॥ इष्ण्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

धृतिमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः श्शृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

मेधामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ मेधांमेव्वरुणोददातुमेधामग्निः प्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्च्चव्वायुश्च्चमेधां धातार्ददातुमेस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

स्वाहामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्श्रोत्रायस्वाहा व्वाचेस्वाहामनसेस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

प्रज्ञामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ आयङ्गौःपृश्श्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरंचप्रयन्त्स्वः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

सरस्वतीमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ पावकानःसरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवतियज्ञंव्वष्टुधियावसुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथों से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमि मन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वर तत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से प्राणों का क्षरण होता है, इसी से अर्चना के लिए देवत्व होता है, मेरे लिए इससे इतर कुछ नहीं है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आवाहिताः प्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप सुवर्ण के समान पीतवर्णवाली, किञ्चित् हरितवर्णवाली, किञ्चित् हरिणी रूप धारण करनेवाली, सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करनेवाली, सुन्दर वर्णवाले चाँदी के समान श्वेत पुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, चन्द्रमा के समान सबको प्रसन्न करनेवाली, चञ्चलता हिरण्यमयी रूपवाली एवं हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी को मेरे लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत्-विख्यात एवं अनपगामिंनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ। मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करने के लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ हैं अथवा जिनके आगे घोड़े जुटे हुए हैं, ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ, दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी का अपने घर में सर्वदा निवास करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

जिनका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्द हास्ययुक्ता हैं, जो चारों ओर सुवर्ण से वेष्टित है एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं, अर्थात् जो लक्ष्मीजी दया से आर्द्र होते हुए तेज से देदीप्यमान हैं, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमल के सदृश गृह में निवास करनेवाली, उन जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं से सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहनेवाली, सबकी रक्षा करनेवाली, भक्तों को आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता रहूँ। हे लक्ष्मि! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अतः मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गादि सभी तीर्थों से प्रार्थनापूर्वक मैं जल लाया हूँ, यह जल का स्पर्श सुख प्रदान करनेवाला है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूर के समान सुगन्धित, दूध के समान धवल, स्वाद में शीतल जल आचमन के लिए प्रस्तुत है, इस आचमनीय जल को हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गाय से उत्पन्न सभी को जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए अति पवित्र दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मयादेवि! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से उत्पन्न मधुर तथा अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही हे देवि! हम आपके स्नान के लिए लाये हैं, इस दही को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मक्खन से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी आपको स्नान के लिए प्रदान करता हूँ, इस घृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न सुन्दर स्वादवाला मधुर शहद, तेज और पुष्टि को प्रदान करने वाला, दिव्य शहद स्नान के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुरस से उत्पन्न शर्करा शुभ पुष्टि प्रदान करनेवाली, सभी प्रकार के मल का अपहरण करनेवाली है, दिव्य स्नान के लिए इस शर्करा को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध, दही, घी, मधु और शर्करा से युक्त पञ्चामृत दिव्य स्नान के लिए आपको समर्पित है, इस पञ्चामृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों के दिव्य जल आपके स्नान के लिए समर्पित है, इस जल को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली देवि! आपके तेज से वनस्पति विशेष बिना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष उत्पन्न हुआ (आपके हाथ से बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ) उस बिल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर-बाहर की दरिद्रता को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

हे लक्ष्मि! देवसखा अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला के सदृश यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् कुबेर का धन और यश दोनों ही मुझे मिले, मैं इस सुन्दर राष्ट्र(शरीर) में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः हे कुबेरदेव! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥

भूख तथा प्यासरूपी मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मीजी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ, हे लक्ष्मि! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं, धन-धान्यादि से सदा परिपूर्ण, गौ-अश्वादि पशुओं की समृद्धि को देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

हे लक्ष्मि! तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप में अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, व्रीहि इत्यादि अन्नों के रूप में अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोज्यादि पदार्थों इन समस्त पदार्थों को प्राप्त करूँ। सम्पत्ति-यश मुझमें आश्रय लेकर रहे अर्थात् मैं धनवान् कीर्तिमान् बनूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई हैं। हे कर्दम! आप मुझमें अच्छी तरह वास करें। इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥

हरे-हरे दूर्वाङ्कुर जो अमृतत्व तथा मङ्गल प्रदान करनेवाले हैं, आपके पूजा के लिए मैं लाया हूँ, आप प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरवुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

जिस प्रकार कर्दम ऋषि की सन्तति (ख्याति) से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से चौदह रत्नों के बाद लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ है। उसी प्रकार जल देवता स्निग्ध एवं मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करे (पदार्थों की सुन्दरता लक्ष्मी ही है) लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत चार पुत्र हैं। जिसमें हे चिक्लीत! तुम मेरे गृह में निवास करो, केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयाभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

अरुणकालिक प्रकाश के समान आभावाला सिन्दूर तथा जवाकुसुम के सदृश वर्ण (रंग) वाले सिन्दूर से हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हो तथा पूजित हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित करने के बाद धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित करने के बाद सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

दशाङ्ग, गुग्गुल, चन्दन तथा अगुरु जैसे गन्धों से युक्त धूप भक्तिपूर्वक हम समर्पित करते हैं, हे महादेवि! इस धूप को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के झुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्रशरीरवाली, पुष्टि को देनेवाली, पुष्टिस्वरूपा, रक्त और पीत वर्णवाली, कमल की माला

धारणकर जगत् को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचला कुरु॥

चारोप्रकार का सुन्दर सुस्वादु षड्रसों से युक्त नैवेद्य हे देवि! भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ, ग्रहण करके अपने में हमारी भक्ति को अचल करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य चन्दन तथा रजनी पुष्प से युक्त करोद्वर्तन हम प्रदान करते हैं, गणेश सहित मातृकाएँ प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में भक्तों पर सर्वदा दयार्द्रचित्त, समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली, यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण स्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करनेवाली सूर्यज्वाला अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है, उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालन पोषण करती है, अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गनागबल्लिदलादिसहितताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फल लेकर समर्पित करे—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाऽऽम्रं कपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! द्राक्षा (किसमिस), खर्जूर (खजूर), कदली (केला), पनस (कटहल), आम्र

(आम), कपित्थ (कैथ), नारिकेल (नारियल), इक्षु (गन्ना), जम्बूफल (जामुन) आदि फलों को आपके प्रसन्नता के लिए लाया हूँ, प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

हे ईश्वरि! पूजा फल की समृद्धि के लिए स्वर्णमयी मुद्रा आपके सामने समर्पित भाव से स्थापित है, जिसे स्वीकार करके जिससे प्रसन्न मन होकर हमारे मनोरथ को पूर्ण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केले के वृक्ष के) गर्भ से उत्पन्न कर्पूर प्रदीपित करके आपकी आरती हम करते हैं, जिसे देखकर आप प्रसन्न हों तथा हमारी समस्त कामनापूर्ति के लिए वर प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों सें पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे यहाँ उस जगद् विख्यात् लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कहीं न जानेवाली हों, उन लक्ष्मी को प्राप्त कराओ, जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े, और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

जो मनुष्य शुचिता को प्राप्तकर अर्थात् शुद्ध होकर लक्ष्मी की कामना से श्रद्धापूर्वक पवित्र मन और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम करे और उसके साथ लक्ष्मीसूक्त तथा श्रीसूक्त के पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन निरन्तर जप करता रहे।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना समर्पण करे—

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

जो पुण्यात्माओं के घरों में लक्ष्मीरूप से, पापियों के घर में दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्त:करणवाले पुरुषों के हृदय में बुद्धिरूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से, तथा कुलीन मनुष्यों में लज्जारूप से निवास करती हैं, वे श्रीस्वरूपिणी महादेवी हमारा पालन करें।

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥१॥

श्री, लक्ष्मी, धृति, मेधा, स्वाहा, प्रज्ञा तथा सरस्वत्यादि समस्त सप्तघृत मातृकायें मङ्गल कार्यों में सदैव पूजित होती हैं॥१॥

यदङ्गत्वेन भो देव्या पूजितो विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥२॥

हे देवियों! अङ्ग के रूप में विधिपूर्वक पूजित होकर हमारे समस्त कार्यो को निर्विघ्न रूप से पूर्ण करानेवाली हो जाओ॥२॥

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण यथाज्ञानेन पूजनेन श्र्यादिसरस्वन्त्यन्तसप्तघृतमातरः प्रीयन्तां न मम।

सप्त घृतमातृकाओं के पूजन के बाद सभी ब्राह्मण मिलकर आयुष्यमन्त्र का पाठ करें, यजमान ध्यानपूर्वक सपरिवार सुने।

सप्तघृतमातृकापूजनं परिपूर्णम्

◆

आयुष्यमन्त्रम्

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम्॥१॥

जिससे लम्बी आयु प्राप्त करके देवता सप्तकल्प तक जीवित रहते हैं, उस आयुष्यकारक पुण्य को हमें प्रदान करें, जिससे हम सौ वर्ष की आयु प्राप्त करें॥१॥

दीर्घा नागा नगानद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्॥२॥

दीर्घ आयुष्य वाले समुद्रादि-पर्वतादि दिशायें अनन्त आयु प्राप्त करके जीवित रहते हैं, उन आयुष्य को प्राप्त करके सौ वर्ष पर्यन्त जीवन प्राप्त करे ॥२॥

सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च।
आविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्॥३॥

जिससे पञ्चभूत सत्य और विनाशरहित होते हैं, वैसे ही नष्ट न होनेवाली आयु प्राप्त करके हम सौ वर्ष तक जीवित रहें॥३॥

ॐ आयुष्यंव्वर्च्चस्यꣳरायस्प्पोषमौद्भिदम्॥ इदꣳहिरण्ण्यंव्वर्च्चस्वज्जैत्रायाविशतादुमाम्॥ ॐ नतद्रक्षाꣳसिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजःप्प्रथमजꣳह्येतत्॥ योबिभर्तिदाक्षायणꣳहिरण्यꣳसदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुꣳसमनुष्य्येषुकृणुतेदीर्घमायुः॥ ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्ण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः॥ तन्मऽआबध्नामिशतशारदायायुष्मान्जरदष्ट्टिर्य्यथासम्॥

आयुष्यमन्त्र का पाठ करते हुए यजमान को रक्षासूत्र बाँधे। आयुष्यमन्त्र के पाठ के बाद आचार्य यजमान को रक्षासूत्र बाँधे। आयुष्यमन्त्र का पाठ श्रवण करने के बाद यजमान दक्षिणा-संकल्प करके ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे।

दक्षिणासंकल्पः—**ॐ तत्सदद्यपूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य आयुष्यमन्त्रपाठकर्मणः समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं आयुष्यमन्त्रपाठकर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थितदक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।**

आयुष्यमन्त्रपाठः परिपूर्णम्

❁

साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धम्

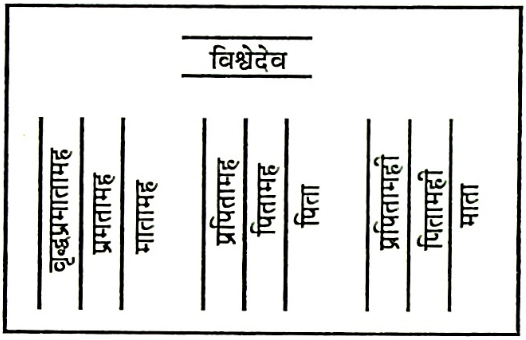

आयुष्यमन्त्र पाठ के बाद किसी पत्तल या पाटे पर आकृति के अनुसार रेखाओं को बना कर उस पर कुशनिर्मित मोटक रखकर पूजन करे, ऊर्ध्व की रेखाओं पर विश्वेदेव का तथा नीचे की दक्षिण की तीनो रेखाओं पर मातृ-पितामही-प्रपितामही का तथा मध्य तीनो रेखाओं पर पितृ-पितामह-प्रपितामह एवं वाम तीनों रेखाओं पर मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह का आवाहन पूजन करे, यह श्राद्ध सव्य हो कर ही किया जाता है, सर्वप्रथम विश्वेदेव के साथ पितरों का ध्यान करे, जिनके माता-पिता जीवित हों, वे माता पिता को छोड़कर ऊपर की पीढ़ी पितामहादि के लिए श्राद्ध करेंगे, विद्वान् कर्मकाण्डी तदनुसार ऊह करके श्राद्ध करायें।

विश्वेदेवावाहनम्—ऊपर के दोनो मोटकों पर आवाहन करे—

ॐ विश्श्वेदेवासऽआगतश्शृणुतामऽइमꣳहवम्।। एदम्बर्हिन्निषीदत।। उपयामगृहीतोसिविश्श्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यऽएषतेयोनिर्व्विश्श्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यः।। ॐ विश्श्वेदेवाऽअꣳशुषुन्न्युप्तोविष्ष्णुराप्प्रीतपाऽआप्प्याय्यमानोयमःसूयमानोविष्ष्णुःसम्भ्रियमाणोवायुःपूयमानःशुक्कःपूतःशुक्कःक्षीरश्श्रीर्म्मन्थीसक्तुश्श्रीर्व्विश्श्वेदेवाः।। ॐ विश्श्वेदेवाश्श्चमसेषून्नीतोसुर्होमायोद्यतोरुद्द्रोहूयमानोवातोब्भ्यावृत्तोनृचक्षाःप्प्रतिक्ख्यातोभक्षोभक्ष्यमाणःपितरोनाराशꣳसाःसन्नःसिन्धुः।। ॐ विश्श्वेदेवाःश्शृणुतेमꣳहवम्मेयेऽअन्तरिक्षेयऽउपद्यविष्ठ।। येऽअग्ग्निजिह्वाऽउतवायजत्त्राऽआसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम्।।

पितृणां ध्यानम्—पितरों का ध्यान करे—

ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तःसमिधीमहि॥ उशन्नुशतऽआवहपितॄन्हविषेऽअत्तवे॥ ॐ आयन्तुनःपितरःसोम्म्यासोऽग्निष्ष्वात्ताःपथिभिर्द्देवयानैः॥ अस्मिन्न्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्ब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान्॥

मातृपितामहिप्रपितामह्यावाहनम्—माता, दादी और वृद्धदादी का ध्यान करे—

ॐ अत्रपितरोमादयध्वँय्यथाभागमावृषायध्वम्॥ अमीमदन्तपितरोयथाभागमावृषायिषत॥ ॐ नमोवःपितरोरसायनमोवःपितरःशोषायनमोवःपितरोजीवायनमोवःपितरःस्वधायैनमोवःपितरोघोरायनमोवःपितरोमन्न्यवेनमोवःपितरःपितरोनमोवोगृहान्नःपितरोदत्तसतोवःपितरोदेष्म्मैतद्वःपितरोवास॥ आधत्तपितरोगर्ब्भङ्कुमारम्पुष्करस्रजम्॥ यथेहपुरुषोसत्॥ ऊर्ज्जंवहन्तीरमृतंघृतम्पयःकीलालम्परिस्रुतम्॥ स्वधास्त्थतर्प्पयतमेपितॄन्॥

पितृपितामहप्रपितमहानामावाहनम्—पिता, दादा और परदादा का ध्यान करे—

ॐ उदीरतामवरऽउत्त्परासऽउन्मद्ध्यमाःपितरःसोम्म्यासः॥ असुँय्यऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्त्तेनोवन्तुपितरोहवेषु॥ ॐ अङ्गिरसोनःपितरोनवग्ग्वाऽअथर्व्वाणोभृगवःसोम्म्यासः॥ तेषांव्वयꣳसुमतौयज्ञियानामपिभद्द्रेसौमनसेस्याम॥ ॐ आयन्तुनःपितरःसोम्म्याऽसोग्निष्ष्वात्ताःपथिभिर्द्देवयानैः॥ अस्मिन्न्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्ब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान्॥ ॐ ऊर्ज्जंवहन्तीरमृतंघृतम्पयःकीलालम्परिस्रुतम्॥ स्वधास्त्थतर्प्पयतमेपितॄन्॥ ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःप्रतितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः॥ अक्क्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्॥ ॐ येचेहपितरोयेचनेहयाँश्चविद्मयाँ२॥ऽउचनप्प्रविद्म॥ ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्क्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्नःसन्त्वोषधीः॥ ॐ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ ॐ मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानामावाहनम्—नाना, परनाना और वृद्धपरनाना का ध्यान करे—

ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःप्रतितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्॥

पाद्यसमर्पणम्—सभी के कुशाओं पर जल प्रदान करे—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। (ऊपर के दोनों कुशाओं पर जल प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।** (नीचे दहिने तरफ के तीनो कुशाओं पर आवाहन करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।** (नीचे मध्य के तीनो कुशाओं पर आवाहन करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।** (नीचे बाये तरफ के तीनो कुशाओं पर आवाहन करे।)

आसनदानम्—कुश का बना मोटक रूप आसन प्रदान करे—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः। (ऊपर के दोनों कुशाओं पर मोटक रूप आसन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।** (नीचे दहिने तरफ के तीनो कुशाओं पर मोटक रूप आसन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।** (मध्य के तीनो कुशाओं पर मोटक रूप आसन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।** (बाये तीनो कुशाओं पर मोटक रूप आसन प्रदान करे।)

षोडशोपचारपूजनम्—मौन होकर सामग्री चढ़ाकर गन्धादिदान का सङ्कल्प करे—

इदं स्नानीयं सुस्नानीयम्। स्नान के लिए जल प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं वस्त्रं सुवस्त्रम्। वस्त्र प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इमे यज्ञोपवीते सुयज्ञोपवीते। यज्ञोपवीत प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। यज्ञोपवीताङ्गाचमनीय जल प्रदान करे।

एष गन्धः सुगन्धः। चन्दन प्रदान करे।

इमे तिलाक्षताः सुतिलाक्षताः। अक्षत प्रदान करे।

इदं माल्यं सुमाल्यम्। पुष्पमाला प्रदानकर नैवेद्य स्थापित करे।

एष धूपः सुधूपः। धूप आघ्रापितकर प्रदान करे।

एष दीपः सुदीपः। दीप दिखाकर प्रदान करे।

हस्तप्रक्षालनम्। दोनों हाथ प्रक्षालित करे।

इदं नैवेद्यं सुनैवेद्यम्। नैवेद्य प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं ऋतुफलं सुफलम्। ऋतुफल प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम्। ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा सुदक्षिणा। दक्षिणा प्रदान करे।

इदं पुष्पाञ्जलि सुपुष्पाञ्जलि। पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

गन्धाद्यार्चनदानम्—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। (ऊपर के दोनों मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे बाये के तीनो मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

भोजननिष्क्रयदानम्—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। (ऊपर के दोनों मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे बाये के तीनो मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

सक्षीरयवमुदकदानम्—अर्घ्यपात्र में दूध-जौ-जल मिश्रित करके प्रदान करे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। (ऊपर के दोनों मोटकों पर दूधजौजल मिश्रण प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर दूधजौजल मिश्रण प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर दूधजौजल मिश्रण प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।** (नीचे बाये के तीनो मोटकों पर दूधजौजल मिश्रण प्रदान करे।)

उत्तरपूजनम्—चारों जगहों पर जल, पुष्प तथा अक्षत समर्पित करे—

शिवा आपः सन्तु। बोलकर जल प्रदान करे।

सौमनस्यमस्तु। बोलकर पुष्प प्रदान करे।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। बोलकर अक्षत प्रदान करे।

अघोरकरणम्—चारों जगहों पर पूर्वाग्र जलधारा प्रदान करे।

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

दक्षिणादानम्—सभी के लिए आसनों पर दक्षिणा प्रदान करे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा-

सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। (ऊपर के दोनों मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः कृतस्यनान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।** (नीचे बाये के तीनो मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

यजमान प्रार्थना करे—यजमान अपने पितरों से हाथ जोड़ कर प्रर्थना करे—

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु॥
अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्मकञ्चन॥

गोत्रन्नो वर्धतां (हमारा कुल बढ़े), **दातारो नोऽभिवर्धन्तां** (उस गोत्र में दाता और भी बढ़ें), **वेदाः सन्ततिरेव च** (हमारी सन्तति ज्ञानवान् हो), **श्रद्धा च नो मा व्यगमद्** (वे सभी श्रद्धावान् हों), **बहुदेयं च नोऽस्तु** (उनके पास दान देने के लिए बहुत धन-धान्यादि हो), **अन्नं च नो बहु भवेत्** (उनके पास अन्नादि बहुत हो), **अतिथींश्च लभेमहि** (उनके पास दान लेने के लिए बहुत अतिथि आयें), **याचितारश्च नः सन्तु** (दान लेने के लिए याचक भी आयें), **मा च याचिष्मकञ्चन** (हमारे कुल में कोई भी याचक न हो)। (हमारा कुल बढ़े, सभी दाता हों, वे अत्यधिक बढ़े, हमारे कुल की समस्त सन्तान ज्ञानवान् हों, सभी श्रद्धावान् तथा आदर करनेवाले हों, वे कभी किसी का निरादर न करें, उनके पास अतिथि तथा याचक आयें, जिन्हें दान देकर गौरव प्राप्त करें, हमारे कुल में कोई याचक न हो।)

यजमान ब्राह्मणों से कहे—**एताः सत्या आशिषः सन्तु॥**

ब्राह्मण बोलें—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।**

ॐ उपा॑स्मैगायतान॒रः॑पव॑माना॒येन्द॑वे॥ अ॒भिदे॒वाँ२ ॥इय॑क्षते॥ ॐ इडा॑मग्ने॒पुरु॒दꣳस॑ꣳस॒निंगोः॑शश्व॒त्त॒मꣳहव॑माना॒यसाध॥ स्यान्नः॑सू॒नुस्तन॑योवि॒जावाग्ने॒सातेसु॒म॒तिर्भू॒त्व॒स्मे॥

यजमान बोले—**नान्दीश्राद्धं सुसम्पन्नम्।**

ब्राह्मण बोलें—**सुसम्पन्नम्।**

विसर्जनम्—मातृ-पितामही-प्रपितामही, पिता-पितामह-प्रपितामह तथा सपत्नीक मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह के सहित आसन के ऊपर यवाक्षत छिड़ककर विसर्जन करे—

ॐ व्वाजे॑वाजेऽवतव्वाजिनोनो॒धने॑षुव्विप्प्राऽअमृताऽऋतज्ञाः॥ अ॒स्यमद्ध्व॑ःपिबत मा॒दय॑द्ध्वंतृ॒प्तायात्तप॒थिभि॑र्द्देव॒यानैः॥ ॐ आ मा॒ व्वाज॑स्यप्प्रस॒वोज॑गम्म्या॒देमे॒द्यावा॑ पृथि॒वीव्विश्श्वरू॑पे॥ आ मा॑ गन्तां पि॒तरा॑मा॒तरा॒ चा मा॒ सोमो॑ऽअमृत॒त्वेन॑ गम्म्यात्॥

विश्वेदेव का विसर्जन करे—**ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।**

यजमान बोले—**मयाऽऽचरिते साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणेशप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।**

ब्राह्मण बोलें—**अस्तु परिपूर्णः।**

समर्पणम्—**अनेन साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दिश्राद्धकृतेन पितृस्वरूपीमहाविष्णुः प्रीयतां न मम।**

साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं परिपूर्णम्

❖

आचार्यादिवरणम्

वरण सामग्री के पूजन के साथ सर्वप्रथम आचार्य का पूजन करके वरण के पश्चात् ब्रह्मादि का पूजन वरण करे।

ॐ वरणसामग्रीभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

एकतन्त्रेण आचार्यादिब्राह्मणानां वरणानि—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पुर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकामुकगोत्रोत्पन्नान् अमुकामुकप्रवरान्विंतां शुक्ल यजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनां अमुकामुकशर्मणां ब्राह्मणानां अस्मिन् विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन ब्रह्मात्वेन उपद्रष्टात्वेन गाणपत्यत्वेन सदस्यत्वेन ऋत्विक्त्वेन युष्मान् वृणे।**

आचार्यादि बोलें—**वृताः स्मः।**

आचार्यादिवरण शास्त्रानुसार अलग अलग ही करना चाहिए।

आचार्यवरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् विपरीतमहा-प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत!॥

जिस तरह से स्वर्ग में इन्द्रादि देवताओं के आचार्य बृहस्पति हैं, उसी तरह से आप मेरे इस यज्ञ के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हों।

आचार्य बोलें—**वृतोऽस्मि।**

ब्रह्मावरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पुर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-**

वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

यथा चतुर्मुखोब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्माभव द्विजोत्तम!॥

जैसे सभी लोक के पितामह चतुर्मुख ब्रह्मा है, उसी प्रकार मेरे इस यज्ञ के लिए हे द्विजोत्तम! आप ब्रह्मा के पद पर प्रतिष्ठित हों।

ब्रह्मा बोलें—**वृतोऽस्मि।**

उपद्रष्टावरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः उपद्रष्टात्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

भगवन् सर्व धर्मज्ञ सर्वधर्म परायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज!॥

हे सभी धर्म को जानने वाले द्विजोत्तम! सभी धर्म में परायण हमारे इस यज्ञ में उपद्रष्टा पद पर प्रतिष्ठित हों।

उपद्रष्टा बोलें—**वृतोऽस्मि।**

गाणपत्यवरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा पुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

वाञ्छितार्थफलावाप्त्यै पूजितोऽसि सुराऽसुरैः।
निर्विघ्नं क्रतुसंसिद्ध्यै त्वामऽहं गणपं वृणे॥

वाञ्छित कामना के निर्विघ्नतापूर्वक फल प्राप्ति के लिए देवता दानव सर्वप्रथम पूजा करते हैं, हे द्विजश्रेष्ठ! हम आपकी गणप पद पर वरण करते हैं।

गणप बोलें—**वृतोऽस्मि।**

सदस्यवरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् विपरीतमहा-प्रत्यङ्गिरा पुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् सदस्यो भव सुव्रत!॥

हे भगवन्! सभी धर्म को जाननेवाले द्विजोत्तम! सभी धर्म में परायण हमारे इस यज्ञ में सदस्य पद पर प्रतिष्ठित हों।

सदस्य बोलें—**वृतोऽस्मि।** अधिक सदस्य हों, तो **वृतास्मः** बोले।

ऋत्विक्वरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् विपरीतमहा-प्रत्यङ्गिरा पुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विक्त्वं मे मखे भव॥

हे भगवन्! सभी धर्म को जानने वाले द्विजोत्तम! सभी धर्म में परायण हमारे इस यज्ञ में ऋत्विक् पद पर प्रतिष्ठित हों।

ऋत्विक बोलें—**वृतोऽस्मि।**

नियमनिवेदनम्—यजमान हाथ जोड़ करके सभी ब्राह्मणों से निवेदन करे—

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा॥१॥

क्रोध का परित्याग करके, नित्य शुद्धता का आचरण करते हुए, हमेशा ब्रह्मचारी रह कर, ग्रहादि के ध्यान में सदैव रत रहते हुए, सदैव ही प्रसन्न मन रहने हुए॥१॥

अदुष्टभक्षणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि॥२॥

सदैव अपशब्द का परित्याग करके, सुन्दर मधुर भाषण करते हुए, दूसरों की निन्दादि

करने की आदत का परित्याग करके, कर्म में प्रवृत्त रहने के लिए जो हमारे लिए शास्त्रीय नियम है, वे सभी नियम आप सभी द्विजश्रेष्ठों के लिए भी हों॥२॥

ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः॥३॥

पूर्व में इन्द्रादि देवताओं के यज्ञ में ऋत्विकादि थे, वैसे ही इस यज्ञ में भी आप सभी ऋत्विक् हो॥३॥

अस्मिन् कर्मणि ये विप्राः वृता गुरुमुखादयः।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्॥४॥

इस कर्म में प्रवृत्त जो विप्रादि मेरे द्वारा नियुक्त हैं, वे जो कुछ अपने गुरुओं के मुख से सीखे जाने हैं, उसी के अनुसार अपने-अपने कर्म में प्रवृत्त रह कर इस यज्ञ का सम्पादन करे॥४॥

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्॥५॥

इस यज्ञ कर्म के लिए हमने आपकी नियुक्ति जो की है। उसे सुप्रसन्न मन से इस यज्ञ के कर्म को विधिपूर्वक सम्पादित करें॥५॥

यजमान बोले—**यथा विहितं कुरुध्वम्।**

सभी विप्र बोलें—**यथा ज्ञानं करवामः।**

आचार्यादिवरणं परिपूर्णम्

⁂

रक्षोघ्नकर्मम्

आचार्य आचमन-प्रणायाम करके सङ्कल्प पूर्वक दिगरक्षण करे—

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (यदि वाराणसी में अनुष्ठान कर रहे हो तो वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशि-स्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं अस्मिन् विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणे अमुकगोत्र नामधेय यजमानेन वृतोऽहम् आचार्य कर्म करिष्ये। आचार्य पीली सरसों से रक्षोघ्न कर्म करे।

ॐ र॒क्षो॒हणं॑व्वलग॒हनं॑व्वैष्ण॒वीमि॒दम॒हंतंव्वल॒गमुत्कि॑रामि॒यंमे॒निष्ट्यो॒यम॒मात्यो॑निच॒खाने॒दम॒हंतंव्वल॒गमुत्कि॑रामि॒यंमे॑समा॒नोयमस॑मानोनिच॒खाने॒दम॒हंतंव्वल॒गमुत्कि॑रामि॒यंमे॒सब॑न्धुर्य्य॒मस॑बन्धुर्निच॒खाने॒दम॒हंतंव्वल॒गमुत्कि॑रामि॒यम्मे॑सजा॒तोयमस॑जातोनिच॒खानोत्कृत्यांकि॑रामि॥१॥ आचार्य पूर्व दिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ र॒क्षो॒हणो॑वोव्वलग॒ह॒नः॒प्प्रोक्षामिव्वैष्ण॒वान्न्रक्षो॒हणो॑वोव्वलग॒हनोऽव॑नयामिव्वैष्ण॒वान्न्रक्षो॒हणो॑वोव्वलग॒हनोऽव॑स्तृणामिव्वैष्ण॒वान्न्रक्षो॒हणौ॑वांव्वलग॒हना॒ऽउप॑दधामिव्वैष्ण॒वीरक्षो॒हणौ॑ वां व्वलग॒हनौ॒पर्य्यू॑हामिव्वैष्ण॒वीव्वैष्ण॒वम॑सिव्वैष्ण॒वास्त्थ॥२॥ आचार्य दक्षिण दिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ रक्षसांभा॒गो॒ऽसि॒निर॑स्त॒ꣳरक्ष॑ऽइ॒दम॒हꣳरक्षो॒ऽभितिष्ठामी॒दम॒हꣳरक्षोऽव॑बाधऽइ॒दम॒ꣳरक्षो॑ऽध॒मन्तमो॑नयामि॥ घृतेनद्यावापृथिवी॒प्प्रोर्णुवाथां॒व्वायो॒व्वेस्तो॒कानाम॒ग्ग्निराज्ज्य॑स्यव्वेतु॒स्वाहा॒स्वाहा॑कृते॒ऽऊ॒र्ध्वनभसम्मारु॒तङ्गच्छ॒तम्॥३॥ आचार्य पश्चिम दिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ र॒क्क्षो॒हाव्वि॒श्श्वच॑र्षणिर॒भियोनि॒मयो॑हते॥ द्रोणे॑स॒धस्त्थ॒मास॑दत्॥४॥ आचार्य उत्तर दिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

जो भूत-प्रेतादि इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान का परित्याग करके इधर-उधर कहीं पर भी अन्यत्र चले जायें। अग्निकोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

जो भूत-प्रेतादि इस भूमि में स्थित हैं, वो सभी इस स्थान से कहीं पर भी अन्यत्र चले जायें, जो भूत-प्रेतादि विघ्न करनेवाले हैं, वे सभी भगवान् शिव की आज्ञा से अन्यत्र चले जाये; अन्यथा नष्ट हो जायें, नैर्ऋत्यकोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

इस स्थान की सभी दिशाओं में जो भूत-प्रेतादि पिशाचों का वास है, वे सभी बिना विरोध के इस स्थान का परित्याग करके चले जायें, हम पूजाकर्म का प्रारम्भ कर रहे हैं। वायव्यकोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पुरश्चरणं करोम्यहम्॥

जो कोई भूतगण, राक्षसगण इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान को छोड़कर अन्यत्र कहीं चले जायें, जिससे हम निर्विघ्न पुरश्चरण करें। ईशानकोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। ऊपर ऊर्ध्वदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। अधोदिशा भूमि पर नीचे पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

चारो तरफ क्रोधमयी दृष्टि डालकर चारो तरफ के विघ्नों का निस्सारण करे, तथा तीन बार पैर की एड़ी से भूमि पर प्रहार करके भूमिस्थित विघ्नकर्ताओं से रक्षार्थ विघ्नों का निस्सारण करें।

रक्षोघ्नकर्म परिपूर्णम्

❀

पञ्चगव्यकरणम्

ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह॥ ब्बृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिःशम्म्यन्तुत्त्वा॥ आचार्य इस मन्त्र से गोमूत्र स्थापित करें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ आचार्य इस मन्त्र से गोमय मिश्रित करें।

ॐ आप्प्यायस्वसमेतुतेव्विश्श्वतःसोमव्वृष्ण्ण्यम्॥ भवाव्वाजस्यसङ्गथे॥ आचार्य इस मन्त्र से गोदुग्ध मिश्रित करें।

ॐ दधिक्क्राव्ण्णोऽअकारिषञ्जिष्ष्णोरश्श्वस्यव्वाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्॥ आचार्य इस मन्त्र से दही मिश्रित करें।

ॐ तेजोऽसिशुक्क्रमस्यऽमृतमसिधामनामाऽसिप्प्रियंदेवानामनाधृष्ट्टन्देवयजनमसि॥ आचार्य इस मन्त्र से गोघृत मिश्रित करें।

ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्श्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ इस मन्त्र से कुशोदक मिश्रित करके यज्ञकाष्ठ से आलोडित करें।

ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥ तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥

पञ्चगव्य निर्माण के बाद अपवित्रः पवित्रोवा० मन्त्र से तीन बार यज्ञभूमि तथा यज्ञ-सामग्री का मार्जन प्रोक्षण करें फिर अञ्जलि बनाकर स्वस्त्यवाचन दो बार करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवाꣳस्वस्तिनःपूषाव्विश्श्ववेदाꣳ॥ स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिꣳस्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्द्दधातु॥ इस मन्त्र का दो बार पाठ करें।

देवाः आयान्तु॥ यातुधानाः अपयान्तु॥ विष्णोर्देव भूम्यमिमं रक्षस्व॥

पञ्चगव्यकरणं परिपूर्णम्

❀

सर्वतोभद्रपूजनम्

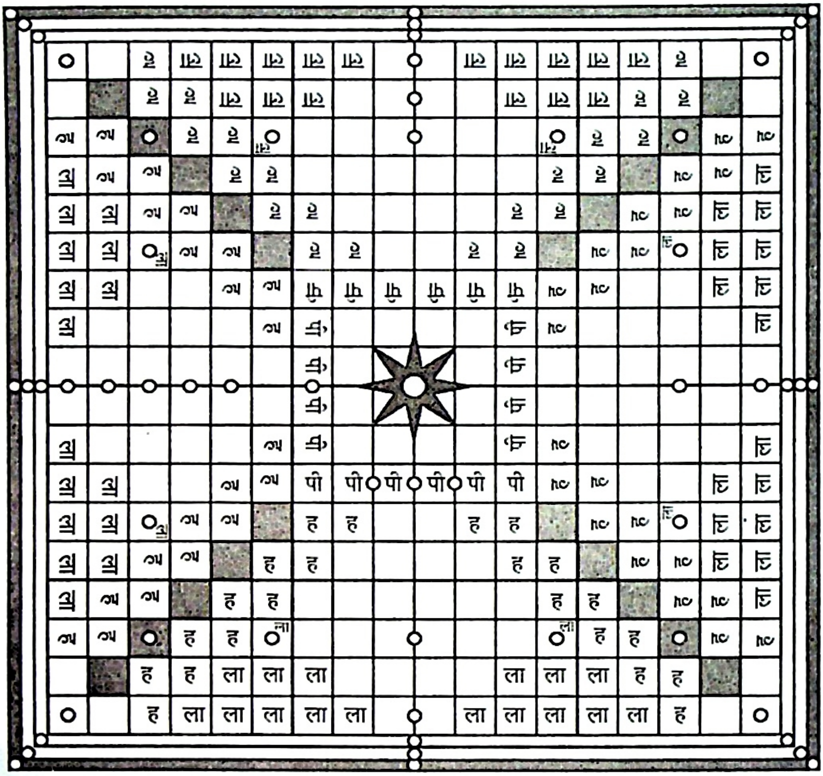

किसी चौकोर चौकी पर कपड़ा बिछाकर अष्टादश कोष्ठक बनाकर चित्रानुसार विभिन्न रंगों से रञ्जित चावलादि रखकर उस पर नियत स्थान पर सुपाड़ी रखकर सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं का आवाहन-पूजन करे।

सर्वतोभद्रदेवतानां स्थापनम्

ब्रह्मावाहनम्—**ॐ ब्रह्मजज्ज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतऽसुरुचोव्वेनऽआवः॥ सबुद्ध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाऽसतश्चयोनिमसतश्चविवः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

सोममावाहनम्—**ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतꣳ॥ प्रजावन्तꣳसचेमहि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

ईशानमावाहनम्—**ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्प्पतिंधियंजिन्वमवसेहूमहेव्वयम्॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद् धेरक्षितापायुरदब्धये॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रमावाहनम्—**ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्त्विन्द्रः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्न्यामावाहनम्—**ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चवन्द्य॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

यममावाहनम्—**ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मः-पित्रे।**

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

निर्ऋतिमावाहनम्—**ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्च्छस्तेनस्येत्यामन्न्विहितस्करस्य॥ अन्न्यमस्म्मदिच्च्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुब्भ्यमस्तु॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

वरुणमावाहनम्—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुꣳप्प्रमोषीꣳ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वायुमावाहनम्—**ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्॥ व्वायोऽअस्म्मिनत्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

अष्टवसूनामावाहनम्—**ॐ व्वसुब्भ्यस्त्वारुद्द्रेब्भ्यस्त्वाऽऽदित्येब्भ्यस्त्वासञ्जानाथां द्यावापृथिवीमित्रावरुणौत्वाव्वृष्ट्यावताम्॥ व्यन्तुव्वयोक्तꣳरिहाणामरुतांपृषतीर्ग्गच्छव्वशापृश्निर्ब्भूत्वादिवंगच्छततोनोव्वृष्टिमावह॥ चक्षुष्प्पाऽअग्नेऽसिचक्षुर्म्मेपाहि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुब्भ्यो नमः अष्टवसूनावाहयामि स्थापयामि।

एकादशरुद्रानामावाहनम्—**ॐ नमस्तेरुद्द्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि।

द्वादशादित्यनामावाहनम्—**ॐ य॒ज्ञोदे॒वानां॑प्रत्यै॑तिसु॒म्नमादि॑त्यासो॒भव॑तामृड॒यन्त॑ः॥ आवो॒ऽर्वाची॑सुम॒तिर्व्व॑वृत्याद॒ꣳहोश्चि॒द्याव्व॑रिवो॒वित्त॒रास॑त्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।

अश्विनीकुमार-आवाहनम्—**ॐ अ॒श्विना॒तेज॑सा॒चक्षु॑ःप्प्रा॒णेन॒सर॑स्वतीव्वी॒र्य्य॑म्॥ व्वा॒चेन्द्रो॒बले॒नेन्द्रा॑यदधुरिन्द्रि॒यम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

सपैतृकविश्वान्देवानावाहनम्—**ॐ विश्श्वे॑देवास॒ऽआग॑तश्रृणु॒ताम॑ऽइ॒मꣳहव॑म्॥ एदंब॒र्हिन्निषी॑दत॥ उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि॒व्विश्श्वे॑ब्भ्यस्त्वादे॒वेब्भ्य॑ऽए॒षते॒योनि॒र्व्विश्श्वे॑ब्भ्यस्त्वादे॒वेब्भ्य॑ः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः सपैतृकविश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि।

सप्तयक्षानावाहनम्—**ॐ अ॒भित्यंदे॒वꣳस॑वि॒तार॑मो॒ण्यो॒ःक॒विक्र॑तु॒मर्च्चा॑मिस॒त्त्यस॑वꣳरत्क॒धाम॒भिप्प्रि॒यंम॒तिंक॒विम्॥ ऊ॒र्द्ध्वायस्या॒ऽमति॒र्भाऽअदि॑द्युत॒त्सवी॑मनि॒हिर॑ण्यपाणिरमिमीतसु॒क्रतु॑ःकृ॒पास्व॑ः॥ प्र॒जाब्भ्य॑स्त्वाप्प्र॒जास्त्वा॑नु॒प्प्राण॑न्तुप्र॒जास्त्वम॑नु॒प्प्राणि॑हि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि।

सर्पानावाहनम्—**ॐ नमो॑स्तुस॒र्प्पेब्भ्यो॒येकेच॑पृथि॒वीमनु॥ येऽअ॒न्तरि॑क्षे॒येदि॒वितेब्भ्य॑ःस॒र्प्पेब्भ्यो॒नम॑ः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

गन्धर्वाऽप्सरसः-आवाहनम्—**ॐ ऋ॒ता॒षाडृ॒तधा॑मा॒ग्निर्ग्ग॑न्ध॒र्व्वस्तस्यौष॑धयोप्प्स॒रसो॒मुदो॒नाम॑॥ सन॑ऽइ॒दम्ब्रह्म॑क्ष॒त्रम्पा॑तु॒तस्मै॒स्वाहा॒वाट्ताब्भ्य॒ꣳस्वाहा॑॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दमावाहनम्—**ॐ यदक्क्र॑न्दःप्प्रथ॒मंजाय॑मानऽउ॒द्यन्त्स॑मु॒द्राद्दु॒तवा॒पुरी॑षात्॥ श्ये॒नस्य॑प॒क्षाह॑रि॒णस्य॑ बा॒हूऽउ॑प॒स्तुत्त्यंम॑हिजा॒तंते॑ऽअर्व्वन्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

वृषभमावाहनम्—**ॐ आ॒शुःशिशा॑नोव्वृष॒भोनभी॒मोघ॑नाघ॒नःक्षोभ॑णश्श्चर्षणी॒नाम्॥ स॒ङ्क्र॑न्दनेनाऽनिमि॒षऽए॑कवी॒रःश॒तꣳसेना॑ऽअजयत्त्सा॒कमिन्द्र॑ः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः वृषभमावाहयामि स्थापयामि।

शूलमावाहनम्—**ॐ कार्षि॑रसिसमुद्रस्य॒त्त्वाक्षि॑त्त्या॒ऽउन्न॑यामि॥ समापो॑ऽअ॒द्भिर॑ग्गमत॒समोष॑धीभि॒रोष॑धीः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः शूलमावाहयामि स्थापयामि।

महाकालमावाहनम्—**ॐ त्र्य॑म्बकंय्यजामहेसुग॒न्धिंपु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नम्॥ उ॒र्वा॑रु॒कमि॑व॒बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्मु॑क्षीय॒माऽमृता॑त्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि स्थापयामि।

दक्षादिसप्तगणानामावाहनम्—**ॐ शु॒क्रज्ज्यो॑तिश्श्च चि॒त्रज्ज्यो॑तिश्श्च स॒त्यज्ज्यो॑तिश्श्च॒ज्ज्योति॑ष्माँश्श्च॥ शु॒क्रश्श्च॑ऽऋत॒पाश्श्चात्य॑ꣳहाः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः दक्षादिसप्तगणानामावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गावाहनम्—**ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्व॒कः सु॒भ॑द्रिकाङ्काम्पी॒लवा॑सिनी॑म्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

विष्णुमावाहनम्—**ॐ इ॒दंवि॒ष्णु॒र्वि॒च॑क्रमेत्रे॒धानिद॑धेप॒दम्॥ समू॑ढमस्यपाꣳसु॒रे स्वाहा॑॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

स्वधामावाहनम्—**ॐ पि॒तृभ्य॑ः स्वधा॒यिभ्य॑ः स्व॒धानम॑ः पिताम॒हेभ्य॑ः स्वधा॒यिभ्य॑ः स्व॒धानम॒ः प्रपि॑तामहेभ्य॒ः स्वधा॒यिभ्य॑ः स्व॒धानम॑ः॥ अक्ष॑न्पि॒तरोऽमी॑मदन्तपि॒तरोऽती॑तृपन्तपि॒तर॒ः पित॑र॒ः शुन्ध॑ध्वम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

मृत्युरोगानावाहनम्—**ॐ परं॑मृत्योऽअनु॒परे॑हि॒पन्थां॒य्यस्ते॑ऽअ॒न्य॒ऽइत॑रोदेव॒याना॑त्॥ चक्षु॑ष्मतेश्शृण्व॒तेते॑ब्ब्रवीमि॒मान॑ः प्र॒जाꣳरी॑रिषो॒मोतव्वी॒रान्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि।

गणपतिमावाहनम्—**ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा॑निधि॒पति॑ꣳहवामहेव्वसोमम॥ आह॑मजानिगर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्ब्भ॒धम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

अपामावाहनम्—**ॐ अ॒प्प्स्व॒ग्ग्ने॒सधि॒ष्ट्टव॒सौष॑धी॒रनु॑रुध्यसे॥ गर्ब्भे॒सञ्जा॑यसे॒पुन॑ः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपामावाहयामि स्थापयामि।

मरुतावाहनम्—**ॐ मरु॑तो॒यस्य॒हिक्षये॑पा॒थादि॒वोव्वि॑कहसः॥ ससु॑गो॒पात॑मो॒जन॑ः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः मरुतामावाहयामि स्थापयामि।

पृथ्वीमावाहनम्—**ॐ स्यो॒नापृ॑थिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेशनी॥ यच्छा॑न॒ः शर्म्म॑स॒प्प्रथा॑ः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।

गङ्गादिनद्यावाहनम्—**ॐ पञ्च॑न॒द्यः सर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः॥ सर॑स्वती॒तुप॑ञ्च॒धासो॒दे॒शेभ॑वत्स॒रित्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः गङ्गादीमावाहयामि स्थापयामि।

सप्तसागरानावाहनम्—**ॐ स॒मु॒द्रो॒ऽसि॒नभ॑स्वा॒र्द्रदा॑नुः॥ श॒म्भूर्म्म॑यो॒भूर॒भिमा॑वाहि॒स्वाहा॑॥ मा॒रु॒तो॒ऽसिम॒रुतां॑ग॒णः श॒म्भूर्म्म॑यो॒भूर॒भिमा॑वाहि॒स्वाहा॑॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि।

मेरुमावाहनम्—**ॐ प्रपर्व॑तस्यवृष॒भस्य॑पृ॒ष्ठान्नाव॑श्चरन्तिस्व॒सिच॑ऽइया॒नाः॥ ताऽआव॑वृत्रन्नध॒रागुद॑क्ता॒अहि॑र्म्बुध्न्य॒मनु॒रीय॑माणाः॥ विष्ण्णो॒र्विक्क्रम॑णमसि॒विष्ण्णो॒र्विक्क्रान्त॑मसि॒विष्ण्णोः॒क्क्रा॒न्तम॑सि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

गदामावाहनम्—**ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहे निधी॒नान्त्वा॑निधि॒पति॑ꣳहवामहेव्वसोममआहम॑जानिगर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्ब्भ॒धम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः गदामावाहयामि स्थापयामि।

त्रिशूलमावाहनम्—**ॐ त्रि॒ꣳशद्धामा॒व्विरा॑जति॒व्वाक्प॑त॒ङ्गाय॑धीयते॥ प्रति॒वस्तो॒ रह॒द्युभिः॑॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

वज्रमावाहनम्—**ॐ म॒हाँ२॥इन्द्रो॒व्वज्र॑हस्तःषोड॒शीशर्म्म॑यच्छतु॥ हन्तु॑पा॒प्प्मानं॒यो॒ऽस्म्मान्द्वेष्टि॑॥ उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसिमहे॒न्द्राय॑त्त्वै॒षते॒योनि॑र्म्महे॒न्द्राय॑त्वा॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

शक्तिमावाहनम्—**ॐ व्वसु॑चमेव्वस॒तिश्च॑मेकर्म्म॑चमे॒शक्ति॑श्च॒मेऽर्थ॑श्चम॒एम॑श्चम इत्या॑चमे॒गति॑श्चमेय॒ज्ञेन॑कल्प्पन्ताम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

दण्डमावाहनम्—**ॐ इड॒ऽएह्यदि॑त॒ऽएहि॒काम्म्या॒ऽएत॑॥ मयि॑वः॒काम॒धर॑णंभूयात्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

खड्गमावाहनम्—**ॐ ख॒ड्गोव्वै॑श्वदे॒वः श्वाकृष्ण्णः क॒र्ण्णोगर्द॒भस्त॒रक्षुस्तेरक्ष॑सामिन्द्रा॑यसूक॒रः सि॒ꣳहोमा॑रु॒तः कृ॑कला॒सः पिप्प्प॑काश॒कुनि॒स्तेश॒र॒व्या॒यै॒व्विश्वे॑षांदे॒वानां॑ पृष॒तः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

पाशमावाहनम्—**ॐ उदु॑त्त॒मंव्व॑रुण॒पाश॑म॒स्म्मदवा॑ध॒मंव्विम॑ध्य॒मꣳश्र॑थायअथा॑व॒यमा॑दित्यव्व्र॒तेतवाना॑गसो॒ऽअदि॑तयेस्याम॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः पाशमावाहयामि स्थापयामि।

अङ्कुशमावाहनम्—**ॐ अ॒ꣳशुश्च॑मेर॒श्मिश्च॑मेऽदा॑भ्यश्च॒मेऽधि॑पतिश्चमऽउपा॒ꣳ-**

शुश्श्चमेऽन्तर्य्यामश्श्चमऽऐन्द्रवायवश्श्चमेमैत्रावरुणश्श्चमेऽआश्श्विनश्श्चमेप्प्रतिप्प्रस्थानश्श्चमेशुक्रश्श्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि।

गौतमावाहनम्—**ॐ आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः गौतममावाहयामि स्थापयामि।

भरद्वाजावाहनम्—**ॐ अयंदक्षिणाव्विश्श्वकर्म्मातस्यमनोव्वैश्श्वकर्म्मणंग्ग्रीष्मोमानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्म्मीत्रिष्टुब्भःस्वारꣳस्वारादन्तर्य्यामोऽन्तर्य्यामात्पञ्चदशःपञ्चदश हद्भरद्वाजऽऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयामनोगृह्णामिप्रजाब्भ्यः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।

विश्वामित्रावाहनम्—**ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्यश्श्रोत्त्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्य्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थीमन्थिनऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद्वैराजंव्विश्श्वामित्त्रऽऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाश्श्रोत्त्रंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।

कश्यपावाहनम्—**ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेःकश्यपस्यत्र्यायुषम्॥ यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नो अस्तुत्र्यायुषम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

जमदग्न्यावाहनम्—**ॐ अयंपश्श्चाद्विश्श्वव्यचास्तस्यचक्षुर्व्वैश्श्वव्यचसंव्वर्षाश्श्चाक्षुष्ष्योजगतीव्वार्षीजगत्त्याऽऋक्क्ससमृक्क्ससमाच्छुक्रःशुक्रात्सप्प्तदशःसप्प्तदशाद्वैरूपंजमदग्ग्निर्ऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाचक्षुर्ग्गृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

वसिष्ठावाहनम्—**ॐ अयंपुरोभुवस्तस्यप्प्राणोभौवनायनोव्वसन्तःप्प्राणायनोगायत्त्रीव्वासन्तीगायत्त्र्यैगायत्त्रंगायत्त्रादुपांꣳशुरुपांꣳशोस्त्रिवृत्त्रिवृतोरथान्तरंव्वसिष्ठऽऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्वयाप्प्राणंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

अत्र्यावाहनम्—**ॐ अत्रपितरोमादयद्ध्वंय्यथाभागमावृषायद्ध्वम्॥ अमिमदन्तपितरोयथाभागमावृषायिषत॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

अरुन्धत्यावाहनम्—**ॐ तंपत्निभिरनुगच्छेमदेवाःपुत्रैर्ब्भ्रातृभिरुतवाहिरण्ण्यैः॥ नाकंगृब्भ्णानाःसुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्टेऽअधिरोचनेदिवः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

ऐन्द्र्यावाहनम्—ॐ अदि॑त्यै॒रास्न्ना॑सीन्द्रा॒ण्ण्याऽउ॒ष्ष्णीषः॑॥ पू॒षासि॑घ॒र्म्मा॑यदीष्ष्व॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

कौमार्यावाहनम्—ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लि॒केनमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्च॒कः सुभ॑द्द्रिकाङ्का॒म्पील॑वा॒सिनी॑म्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै नमः कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

ब्राह्म्यावाहनम्—ॐ इन्द्राया॑हि॒धिये॒षि॒तोव्विप्प्र॑जूतꣳसु॒ताव॑तः॥ उप॒ब्ब्रह्मा॑णि॒व्वा॒ग्घतः॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

वाराह्यावाहनम्—ॐ इन्द्र॑स्यक्क्रो॒डोऽअदि॑त्यैपाज॒स्यं॑दि॒शांज॒त्रवोऽदि॑त्यैभ॒सज्जी॒मूता॑न्हृदयौप॒शेना॒न्तरि॑क्षंपुरी॒तता॒नभ॑ऽउद॒र्य्ये॑णचक्क्रवा॒कौमत॑स्नाब्भ्या॒न्दिवं॑व्वृ॒क्काब्भ्यां॑गि॒रीन्प्ला॒शिभि॒रुप॑लान्प्ली॒ह्नाव्वल्मी॒कान्क्लो॒मभि॑ग्ग्लौ॒भिर्ग्गुल्मा॑न्हि॒राभिः॒स्स्रव॑न्तीर्ह्र॒दान्कु॑क्षि॒भ्याꣳ समु॒द्द्रमु॒दरे॑णव्वैश्श्वान॒रंभस्म॑ना॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

चामुण्डाऽवाहनम्—ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लि॒केनमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्च॒कः सुभ॑द्द्रिकाङ्का॒म्पील॑वा॒सिनी॑म्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

वैष्णव्यावाहनम्—ॐ आप्प्या॑यस्व॒सम॑तुतेव्वि॒श्श्वतः॒सोम॒व्वृष्ण्य॑म्॥ भवा॒व्वाज॑स्यसङ्ग्थे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

माहेश्वर्यावाहनम्—ॐ यातै॑रुद्द्रशि॒वात॒नूरघो॒राऽपा॑पकाशिनी॥ तया॑नस्त॒न्न्वा॒शन्त॑मया॒गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

वैनायक्यावाहनम्—ॐ सम॑क्ख्येदे॒व्व्याधि॒यासन्दक्षि॑णयो॒रुच॑क्षसा॥ माम॒ऽआयुः॒प्प्रमो॑षी॒म्र्मोऽअ॒हंतव॑व्वी॒रंव्वि॑देय॒तव॑देविस॒न्दृशि॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—आवाहन करने के बाद हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो॑जू॒तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्ट्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु॥ व्विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइहमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण)

होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु॥

सर्वतोभद्रदेवतानां पूजनं परिपूर्णम्

❀

सर्वतोभद्रदेवतानां पूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

भद्रं कल्याणकर्तृत्वं पारिषदं सर्वदेवाः।
मोदनार्थञ्च जीवानां मण्डलं परिकल्पितम्॥

सभी देवताओं के परिषद् स्वरूप, सभी का कल्याण करनेवाला, सभी जीवों को प्रसन्नता प्रदान करनेवाले भद्रसंज्ञकमण्डल की परिकल्पना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन-ध्यान कर समर्पित करे–

विचित्र-रत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृहणीष्व सुरपूजित!॥

हे! देवताओं द्वारा पूजित, विचित्र रत्नों से जटित तथा दिव्य कलाकृतियों से संयुक्त स्वर्णनिर्मित दिव्य रुचिकर सिंहासन ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
त्रिगुणात्मगृहाणेदं भगवान् भक्तवत्सल!॥

सभी तीर्थों से लाये गये गन्धादि से युक्त इस पाद्य को भक्त वत्सल भगवान् त्रिगुणात्मा ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

त्रिगुणात्मन्नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

गन्ध, पुष्प, अक्षत, फलादि से युक्त अर्घ्य हे त्रिगुणात्मा करुणाकर! ग्रहण करें आपको नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

त्रिदेवञ्च नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

हे देवताओं से अभिवन्दित! त्रिदेव (ब्रह्माविष्णुमहेश) को नमस्कार है, हे प्रभु!आचमन करने के लिए गङ्गा का जल आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्फित करे—

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के पापों को हरनेवाला, सभी प्रकार का शुभ करनेवाला, मन्दाकिनी का जल आपके सम्मुख कल्पित (समर्पित) है, हे देव! स्नान के लिए आप ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वं मलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्॥

सभी प्रकार के मल को पूर्ण नष्ट करने में जो गङ्गाजल समर्थ है, वह जल यहाँ पुनः आचमन करने के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गो से समुत्पन्न सभी को परम जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए उत्पन्न, परम पवित्र दूध हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से समुत्पन्न (निर्मित) मीठा-अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही मेरे द्वारा आपके स्नान के लिए लाया गया है, हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है, ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

नवनीत (मक्खन) से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी हे देव! आपको समर्पित करता हूँ, स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न, सुन्दर मधुर स्वादवाला, पुष्टि तथा दिव्य तेज प्रदान करनेवाला, शहद स्नान के लिए आपके सम्मुख समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ईख के रस से निर्मित, सभी प्रकार के मल को नष्ट करनेवाली, शुभ और पुष्टि को प्रदान करनेवाली, इच्छुरसनिर्मित दिव्य शर्करा आपके प्रति स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध-दही-घृत-मधु और शर्करा से निर्मित पञ्चामृत स्नान के लिए मैं लाया हूँ, हे देव! स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा-सिन्धु-कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी आदि दिव्य नदियों का दिव्य जल स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शीतल और उष्ण वायु के ताप और शैत्य से रक्षा के लिए तथा परमलज्जा के रक्षार्थ, शरीर को अलंकृत करने के लिए वस्त्र समर्पित है, हे देव! यह वस्त्र आपको प्रसन्न करे तथा आप हमें शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण सुरपूजित॥

नव तन्तुओं से निर्मित त्रिगुण (त्रिरावृत्तिवाला) देवतामय यज्ञ में पहने जानेवाला उपवीत मैं आपको समर्पित करता हूँ, हे सुरपूजित! प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

दिव्य सुमनोहर सुगन्धित श्रीखण्ड से युक्त चन्दनलेप आपके विलेपन के लिए है, यह आपकी प्रसन्नता के लिए आपको समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

कुङ्कुम से सुशोभित अक्षत आपको निवेदित करता हूँ, हे सुरश्रेष्ठ परमेश्वर! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मालती आदि के पुष्पों के द्वारा निर्मित, सुगन्धित पुष्पों की माला आपके लिए लाया हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण सुरनायक!॥

हे सुरश्रेष्ठ! मङ्गल प्रदान करनेवाले, अमृतमय, सुन्दर दूब के हरे-हरे अङ्कुरों को मैं आपकी पूजा के लिये लाया हूँ, इन्हें ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देवामतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥
नानापरिमलैर्द्रव्यैं निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥२॥

शान्ति प्रदान करनेवाला अबीर-गुलाल चन्दनादि से निर्मित विभिन्न सुगन्धित द्रव्य नाना प्रकार के दिव्य द्रव्यों से निर्मित उत्तम अवीर नाम का सुगन्धित सुरुचिकर चूर्ण समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें और मुझे शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्व शोभायमान रक्तसिन्दूर, सभी सौभाग्य तथा सुख का वर्धन करनेवाला है, सभी प्रकार के शुभ की कामना के लिए सिन्दूर समर्पित करता हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न वनस्पतियों के रसों से निर्मित गन्धों में अत्युत्तम गन्धयुक्त धूप सभी देवताओं को सुगन्धि प्रदान करने के लिए है, हे देव! अपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

तीनों लोकों के अन्धकार को दूर करनेवाला, घृतयुक्त बत्तियों को अग्नि से प्रज्वलित किया है, हे देवेश! प्रसन्नता के लिए ग्रहण करें, भक्तिपूर्वक हे परमात्मादेव! आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करके इस घोरतम अज्ञानान्धकार से हमारी रक्षा करें, दीपज्योति को नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

शर्कराखण्ड खाद्य, दधि, दूध एवं घृत से युक्त भक्ष्य भोज्य आहाररूपी नैवेद्य ग्रहण करके हमारी भक्ति को अचल करे और हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करे तथा अन्त में परमगति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर!॥

मलयाचल में उत्पन्न श्वेत चन्दन तथा कस्तूरी इत्यादि गन्धों से युक्त, हाथों को शुद्ध करने के लिए उद्वर्तन के रूप में ग्रहण कर प्रसन्न हो।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

महादिव्य पूगीफल (सुपाड़ी) नागवल्लीदल (पान के पत्ते से) युक्त एलादिचूर्ण (इलाइची इत्यादि) से युक्त ताम्बूल ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पुंगीफलएला-लवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

हे देव! हमने यह फल आपके सम्मुख स्थापित किया है, जिसे ग्रहण करके जन्म-जन्मान्तरों तक हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करें तथा हमें यज्ञफलवान् करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

हिरण्यगर्भ से उत्पन्न हेमबीज (सुवर्ण के सदृश) के समान शोभायमान अनन्तपुण्यफल को प्रदान करके शान्ति प्रदान करनेवाली सुवर्णमय दक्षिणा ग्रहण कर शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केला) के गर्भ से उत्पन्न (निर्मित) कर्पूर (जलता हुआ) से आरती करता हूँ, हमें कृपापूर्वक दृष्टि से देख करके वर प्रदानकर्ता बनें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर!।।

अपने-अपने ऋतुओं में उत्पन्न नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों से युक्त पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वर! ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे।।१।।

किसी भी प्रकार के जन्मजन्मान्तर में किये हुए सभी पाप एक-एक कदम देव प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते हैं।।१।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।।२।।

पूजन करने के बाद एक-एक कदम जो यज्ञकर्ता देव की परिक्रमा करता है, वह निश्चय ही अश्वमेधादि यज्ञों का फल प्राप्त करता है, अतः जन्म-जन्मान्तरकृत समस्त पापों के क्षय के लिए आपकी परिक्रमा करता हूँ।।२।।

पूजनसमर्पणम्—दक्षिण हाथ में जल लेकर पूजनसमर्पण करे—

अनया पूजया सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्ताम्।

सर्वतोभद्रमण्डल के पूजन के बाद प्रधानदेवता का पूजन करे।

सर्वतोभद्रदेवतापूजनं परिपूर्णम्

❖

अन्तःपूजनम्

अन्त:पूजन में आचमन करके प्राणायाम करे तथा मूलाधार की कर्णिका में दीप कलिकाकार स्वयम्भू लिङ्गरूपी जीव को साढ़े तीन बार लपेटी हुई कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान कर मानसोपचार पूजन करे, क्रमश: सभी चक्रों में ले जाकर सहस्रार में महाकाल शिव के साथ स्थापन-पूजन कर, अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप कर समर्पित करे।

कुण्डलिनीध्यानम्

ध्यायेत्कुण्डलिनीं सूक्ष्मां मूलाधारनिवासिनीं,
प्रसुप्तभुजगाकारां विद्युत्पटलसन्निभाम्।
तामिष्टदेवतां रूपां सार्द्धत्रिवलयान्वितां,
कोटिसौदामिनीभासां स्वयम्भूलिङ्गवेष्टिनीम्॥

मूलाधार में निवास करनेवाली सूक्ष्म, सर्प की आकृतिवाली, सोई हुई, विद्युत् के समान प्रभावाली, साढ़े तीन वलयवाली, सौदामिनी के समान भासमान, स्वयंभू लिङ्ग को वेष्टित की हुई, इष्टदेवतारूपिणी कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

पैर से जानुपर्यन्त चतुष्कोण सुवर्ण के समान देदीप्यमान **‘ळँ’** बीजयुक्त पृथ्वीमण्डल का पादेन्द्रिय तथा गन्धसहित घ्राणेन्द्रिय की मोक्षकलायुक्त ब्रह्ममय तथा समानवायु का ध्यान करे, फिर जानु से नाभिपर्यन्त शरीर में अर्धचन्द्राकार श्वेतवर्ण वाले **‘वँ’** बीजयुक्त जलमण्डल की कल्पना कर ग्रहणक्रियायुक्त पाणीन्द्रिय तथा रसयुक्त रसनेन्द्रिय की प्रतिष्ठाकलायुक्त अकलमहाविष्णु तथा उदानवायु का ध्यान करे, फिर नाभि से हृदयपर्यन्त त्रिकोणाकृति वाले रक्तवर्ण **‘रँ’** बीजयुक्त स्वस्तिकाकार तेजोमण्डल पर विसर्गक्रियायुक्त रुद्रदेवता, उपस्थेन्द्रिय तथा अपानवायु का ध्यान करे, फिर हृदय से लेकर कण्ठपर्यन्त गोलाकार धूम्रवर्ण **‘यँ’** बीजयुक्त वायुमण्डल पर आनन्दक्रियायुक्त ईशानदेवता तथा अपानवायु का ध्यान करे, फिर कण्ठ से लेकर भ्रूमध्यपर्यन्त शरीर में गोलाकार स्वच्छ वर्ण वाले **‘हँ’** बीजयुक्त नभोमण्डल पर वचनक्रियासहित वागेन्द्रिय का तथा शब्दसहित सदाशिव एवं प्राणवायु का ध्यान करे, तदनन्तर भ्रूमध्य से ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्त मनोबुद्धिमय चैतन्य शिवशक्तिमय ब्रह्म **‘हँक्षँ’** वीज का ध्यानकर सहस्रारचक्र में शून्य सर्वचैतन्यमय परब्रह्म शिवरूप श्रीगुरु का ध्यान करने के बाद सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल को जल में, जलमण्डल को अग्नि में, अग्निमण्डल को वायु में, वायुमण्डल को आकाश में तथा आकाशमण्डल को अहंकार में, अहंकारमण्डल को महत्तत्त्व में, महत्तत्त्व को प्रकृति में,

प्रकृतितत्त्व को महाशिव में विलीन करे। '**सोऽहं हंसः**' मन्त्र से प्रसुप्त कुण्डलिनी को जगा करके मानसोपचार पूजन करके मूलाधार स्थित '**ळँ**' बीजयुक्त '**वँ शँ षँ सँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुनः स्वाधिष्ठान चक्र में ले जाकर स्थापित कर पूजन करके स्वाधिष्ठान स्थित '**वँ**' बीज के सहित '**बँ भँ मँ यँ रँ लँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुनः मणिपूर चक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर पूजन कर '**रँ**' बीज के सहित '**डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुनः तदूर्ध्व अनाहत चक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर पूजन कर '**यँ**' बीज के सहित '**कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुनः तदूर्ध्व विशुद्ध चक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर स्थापित कर पूजन करने के वाद '**हँ**' बीज के सहित '**अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये। पुनः तदूर्ध्व आज्ञाचक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर स्थापितकर पूजन करके '**हँ क्षँ**' वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुनः तदूर्ध्व आज्ञाचक्र में कुण्डलिनी शक्ति को स्थापितकर पूजनकर सहस्रार स्थित शिवरूप परब्रह्म में समस्त वर्णों के सहित जीव को '**हंसः सोऽहं**' के साथ विलीन करे तथा शिव-शिवा का मानस षोडशोपचार पूजन करके, मूल मन्त्र का मातृका वर्णों के सहित एक सहस्र जप करके महाकाल शिव-शिवारूपी श्रीगुरु को समर्पित करे, पुनः मूलाधार में लाकर ध्यानकर मानसोपचार पूजन करे।

शिवशिवाध्यानम्—

मेघाङ्गीं विगताम्बरां शिवशिवारावां त्रिनेत्रां परां,
कर्णालम्बितवालयुग्मऽभयदां मुण्डस्रजामालिनीम्।
वामाधोर्ध्वकराम्बुजे नरशिरः खड्गञ्च सव्येतरे,
दानाभीतिविमुक्तकेशनिचयां वन्दे सदाकालिकाम्॥१॥

मेघ के समान आभावाली, निरावरण (सर्वत्र पूर्ण रूप से व्याप्त), त्रिनेत्र धारण करनेवाली, शिवशिवा जो कानों में लटकते हुए एक जोड़ी बालों (वालशव) को धारण किये हुए अभय प्रदान करनेवाली, मुण्ड की मालाओं को धारण करनेवाली, बायें तरफ के ऊपर के हाथ में खड्ग तथा नीचे के हाथ में नर का शिर शोभित है, दाहिने तरफ के ऊपर के हाथ से वर तथा नीचे के हाथ से अभय प्रदान करती हुई, खुली हुई केश राशिवाली, शिव के सहित कालिका देवी की मैं सदा वन्दना करता हूँ॥१॥

षडाधारपङ्केरुहान्तर्विराजत्सुषुम्नान्तरालेऽतितेजोल्लसन्तीम् ।
सुधामण्डलं द्रावयन्तीं पिबन्तीं सुधामूर्तिमीडेऽहमानन्दरूपाम्॥२॥

षट्चक्र कमल को आधार बनाकर विराजमान सुषुम्ना के भीतर अतितेज से उल्लसित सुधामण्ड

को द्रवीभूत करती हुई अमृत मूर्ति स्वरूप ईश्वरी और आनन्द रूप ईश्वरी को नमन है॥२॥

कुण्डलिनिस्तुतिः

मूलोन्निद्रभुजङ्गराजसदृशीं यान्तीं सुषुम्नान्तरं,
भित्वाधारसमूहमाशु विलसत्सौदामिनीसन्निभम्।
व्योमाम्भोजगतेन्दुमण्डलगलद्दिव्यामृतौघैः पतिं,
सम्भाव्य स्वगृहागतां पुनरिमां सञ्चिन्तयेत् कुण्डलीम्॥१॥
हंसं नित्यमनन्तमद्वयगुणं स्वाधारतो निर्गता,
शक्तिः कुण्डलिनी समस्तजननी हस्ते गृहीत्वा च तम्।
याता शम्भुनिकेतनं परसुखं तेनानुभूय स्वयं,
यान्ती स्वाश्रममर्ककोटिरूचिरा ध्येया जगन्मोहिनी॥२॥
अव्यक्तं परबिम्बमञ्चितरुचिं नीत्वा शिवस्यालयं,
शक्तिः कुण्डलिनी गुणत्रयवपुर्विद्युल्लतासन्निभा।
आनन्दामृतकन्दगं पुरमिदं चन्द्रार्ककोटिप्रभं,
संवीक्ष्य स्वगृहं गता भगवती ध्येयाऽनवद्या गुणैः॥३॥
मध्ये वर्त्म समीरणद्वयमिथस्सङ्घट्टसङ्क्षोभजं,
शब्दस्तोममतीत्य तेजसि तड़ित्कोटिप्रभाभास्वराम्।
उद्यन्तीं समुपास्महे नवजपासिन्दूरसान्द्रारुणां,
सान्द्रानन्दसुधामयीं परशिवं प्राप्तां परां देवताम्॥४॥
गमनागमनेषु जाङ्घिकी सा,
तनुयाद्योगफलानि कुण्डली।
मुदिता कुलकामधेनुरेषा,
भजतां वाञ्छितकल्पवल्लरीम्॥५॥
आधारस्थितशक्तिबिन्दुनिलयां नीवारशूकोपमां,
नित्यानन्दमयीं गलत्परसुधावर्षैः प्रबोधप्रदैः।
सिक्त्वा षट्सरसीरुहाणि विधिवत्कोदण्डमध्योदितां,
ध्यायेद्भास्वरबन्धुजीवरूचिरां संविन्मयीं देवताम्॥६॥
हृतपङ्केरुहभानुबिम्बनिलयां विद्युल्लतामन्थरां,
बालार्कारुणतेजसा भगवतीं निर्भर्त्सयन्तीं तमः।
नादाख्यां परमर्धचन्द्रकुटिलां संविन्मयीं शास्वतीं,
यान्तीमक्षररूपिणीं विमलधीर्ध्यायेत् विभुं तेजसाम्॥७॥
भाले पूर्णनिशाकरप्रतिभटां नीहारहारत्विषा,
सिञ्चन्तीममृतेन देवममितेनानन्दयन्तीं तनुम्।

वर्णानां जननीं तदीयवपुषा संव्याप्य विश्वं स्थितां,
ध्यायेत्सम्यगनाकुलेन मनसा संविन्मयीमम्बिकाम्॥८॥
मूले भाले हृदि च विलसद्वर्णरूपा सवित्री,
पीनोत्तुङ्गस्तनभरनमन्मध्यदेशा महेशी।
चक्रे चक्रे गलितसुधया सिक्तगात्री प्रकामं,
दद्यादद्य श्रियमविकलां वाङ्मयीदेवता नः॥९॥
आधारबन्धप्रमुखक्रियाभिः ,
समुत्थिता कुण्डलिनी सुधाभिः।
त्रिधामबीजं शिवमर्चयन्ती,
शिवाङ्गना वः शिवमातनोतु॥१०॥
निजभवननिवासादुच्चलन्ती विलासैः,
पथि पथि कमलानां चारु हासं विधाय।
तरुणतपनकान्तिः कुण्डली देवता सा,
शिवसदनसुधाभिर्दीपयेदात्मतेजः ॥११॥
सिन्दूरपुञ्जनिभमिन्दुकलावतसं- ,
आनन्दपूर्णनयनत्रययशोभिवक्त्रम् ।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्रं ,
शम्भोः कलत्रममितां श्रियमातनोतु॥१२॥
वर्णैरर्णवषट्दिशारविकलाचक्षुर्विभक्तैः क्रमात्,
सान्तैरादिभिरावृतान् क्षहयुतैष्षट्चक्रमध्यानिमान्।
डाकिन्यादिभिराश्रितान् परिचितान् ब्रह्मादिभिर्दैवतैः,
भिन्दाना परदेवता त्रिजगतां चित्तेषु दत्तां मुदम्॥१३॥
आधाराद् गुणवृत्तशोभिततनुं निर्गत्वरीं सत्वरं,
भिन्दन्तीं कमलानि चिन्मयघनानन्दप्रबोधोद्धुराम्।
सङ्क्षुब्धं ध्रुवमण्डलामृतकरप्रस्यन्दमानामृत,
स्त्रोतः कन्दलिताममन्दतडिदाकारां शिवां भावये॥१४॥
मूलाधारे त्रिकोणे तरुणतरणिभाभास्वरे विभ्रमन्तं,
कामं बालार्ककालानलजरठकुरङ्गाङ्ककोटिप्रभाभम्।
विद्युन्मालासहस्रद्युतिरुचिरलसद्बन्धुजीवाभिरामं ,
त्रैगुण्याक्रान्तबिन्दुं जगदुदयलयैकान्तहेतुं विचिन्त्य॥१५॥
तस्योर्ध्वे विस्फुरन्तीं स्फुटारुचिरतडित्पुञ्जभाभास्वराङ्गी-
मुद्गच्छन्तीं सुषुम्नामनु सरणिशिखामाललाटेन्दुबिम्बम्।

चिन्मात्रां सूक्ष्मरूपां जगदुदयकरीं भावनामात्रगम्यां,
मूलं या सर्वधाम्नां स्फुरति निरुपमा हुँकृतोदञ्चितोरः॥१६॥
नीता सा शनकैरधोमुखसहस्त्रारारुणाब्जोदरे,
च्योतत्पूर्णशशाङ्कविम्बमधुनः पीयूषधारास्त्रुतिम्।
रक्तां मन्त्रमयीं निपीय च सुधानिःष्यन्दरूपा विशेद्,
भूयोऽप्यात्मनिकेतनं पुनरपि प्रोत्थाय पीत्वा विशेत्॥१७॥
योऽभ्यस्यत्यनुदिनमेवमात्मनोऽन्तः ,
बीजांशं दुरितजरापमृत्युरोगान्।
जित्वाऽसौ स्वयमिव मूर्तिमाननङ्गः,
सञ्जीवेच्चिरमतिनीलकेशजालः ॥१८॥

तत्तद् अभिष्ट मुद्राओं को प्रदर्शित कर अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप कर देवी को समर्पित करे।

अक्षमाला स्तुतिः

श्रीगायत्रीं त्रयीं विद्यां प्रणम्य परमेश्वरीम्।
अक्षमालास्तुतिं दिव्यां करोमि सुखदां सताम्॥१॥

सत्त्वात्मक, रजात्मक, तमात्मक तीनों रूपवाली परमेश्वरी श्रीगायत्री को प्रणाम करता हूँ, अक्षमाला की दिव्यस्तुति करता हूँ जो सदैव समस्त सुख प्रदान करनेवाली है॥१॥

अथाऽव्यक्ताऽऽदिशक्तिर्या महादेवीन्दिरेश्वरीम्।
उमोर्ध्वकेशी ऋग्वेदा ‘ऋ’रूपा ऋद्धिदायिनी॥२॥

व्यक्त, अव्यक्त इन्दिरेश्वरी शक्ति स्वरूपिणी महादेवी, उर्ध्वकेशी ऋग्वेद रूपी उमा समस्त ऋद्धि प्रदान करे॥२॥

ऌप्तधार्माऽस्ति ‘ऌ’नात्नी त्वेकाक्षरविहारिणी।
ऐन्द्रीह्योङ्काररूपा या चौपासनफलप्रदा॥३॥

ऌधर्म स्वरूपिणी ऌनामवाली, एकाक्षर में रहनेवाली, ओङ्कार रूपिणी ऐन्द्री की उपासना का फल प्रदान करे॥३॥

अण्डमध्यस्थिता देवी ‘अ:’कारमनुरूपिणी।
षोडशीं लोकपूज्यां तां सर्वदा संस्मराम्यहम्॥४॥

ब्रह्माण्ड मण्डल में स्थित रहनेवाली, मनुरूपिणी अ:कार, लोकपूज्या षोडशी देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥४॥

ततोव्यञ्जनवर्णस्थां कमलो खगवाहनाम्।
गङ्गां च धर्मदां देवीं ‘ङ’क्षरां प्रणमाम्यहम्॥५॥

समस्त व्यञ्जन वर्णों में रहनेवाली, खग जिसका वाहन है, धर्म को प्रदान करनेवाली, गङ्गा स्वरूपिणी ङकार रूपी कमला देवी को प्रणाम करता हूँ॥५॥

चण्डिकां सततं वन्दे देवीं छन्दोऽनुगां पराम्।
जयन्तीं क्षणनिर्घोषां 'ञ'रूप वृषवाहनाम्॥६॥

छन्द स्वरूपिणी, ञकार रूप, वृष जिसका वाहन है, प्रत्येक क्षण में घोष करनेवाली जयन्ती पराचण्डिका देवी की सतत वन्दन करता हूँ॥६॥

टङ्कवर्णान्वितां दिव्यां 'ठ-ठ'शब्दनिनादिनीम्।
डमरूभूषणां देवीं ढक्काहस्तां नमाम्यहम्॥७॥

टङ्क वर्ण रूपिणी, ङ्ख-ङ्ग शब्द का घोष करनेवाली, हाथों में ढक्का तथा डमरु धारण करनेवाली, दिव्य देवी को नमस्कार करता हूँ॥७॥

'ण'वर्णरूपिणीं दिव्यां तप्तकाञ्चनभूषणाम्।
थावरां सततं वन्दे दण्डकारण्यवासिनीम्॥८॥

तपे हुए सोने के समान दिव्य आभूषणों से सुसज्जित णवर्ण स्वरूपिणी, दण्डकारण्य में वास करनेवाली, स्थावर रूपी देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥८॥

धर्मशीलां नदीरूपां परब्रह्मात्मिकां तथा।
फलदां बहुनेत्रां च भवानीं प्रणतोऽस्म्यहम्॥९॥

नदी स्वरूपी, धर्मशीला, तीन नेत्रों, बहुनेत्रोंवाली, समस्त फल को प्रदान करनेवाली, परब्रह्मात्मिका भवानी देवी को सतत नमन करता हूँ॥९॥

मालिनीं तां महामायां पञ्चविशतिवर्णिकाम्।
नत्वा पुनः स्मराम्यत्र यक्षवर्णात्मिकाद्भुताम्॥१०॥

पञ्चविशति वर्णवाली, महामाया मालिनी देवी, अद्भुत् यकार क्षकार वर्णात्मिका, अक्षरस्वरूपिणी देवी का सतत ध्यान पूर्वक नमन करता हूँ॥१०॥

यक्षिणीं योगमायां तां रमां लक्ष्मीं सुखप्रदाम्।
वरदां शारदां दिव्यां षण्मुखीं च सरस्वतीम्॥११॥

यक्षिणी, योगमाया स्वरूपिणी रमा, लक्ष्मी, शारदा, षण्मुखी कार्तिकी, सरस्वती स्वरूपिणी वर प्रदान करनेवाली, अक्षमाला स्वरूपिणी देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥११॥

हरिरुद्रप्रियां देवीं क्षमाशीलां नवात्मिकाम्।
पञ्चाशद्वर्णरूपां तां स्मरामि सर्वदा शुभाम्॥१२॥

विष्णु तथा रुद्र की परम प्रिया क्षमाशीला नव अक्षरोंवाली, पञ्चाशत वर्ण रूपोंवाली, सर्वदा शुभ करनेवाली, अक्षमाला देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥१२॥

यस्यस्मरणमात्रेण प्रसन्नां वर्णमात्रिका।
सम्भूयात् सा सदा लोके सर्वमङ्गलकारिणी॥१३॥

जिसके स्मरण मात्र से वर्णमात्रिका प्रसन्न हो जाती है तथा लोक में सदा सभी प्रकार का मङ्गल प्रदान करनेवाली हो जाती है उन अक्षमाला देवी का सतत स्मरण करता हूँ॥१३॥

नेत्रद्वयखयुग्मेऽब्दे श्रीद्विजेन्द्रविनिर्मिता।
ज्येष्ठमासेऽत्र काश्यां वै प्रोद्गता साऽक्षमालिका॥१४॥

दो नेत्रोंवाली, युग्म खकार तथा अब्द स्वरूपिणी, शिव के द्वारा निर्मित अक्षमाला का ज्येष्ठ मास में काशी में जो इस अक्षमाला स्तोत्र का पाठ करता है॥१४॥

इति रत्नमयीं देवीं गायत्रीतुष्टिकारिणीम्।
स्तुतिं पठन्नरो नित्यं ब्रह्मसायुज्यमाप्नुयात्॥१५॥

और गायत्री को तुष्टि प्रदान करनेवाली, रत्नमयी अक्षमाला देवी का जो भक्त पाठ करता है वह ब्रह्मसायुज्य(ब्रह्मत्व) को प्राप्त करता है॥१५॥

अक्षमालाजपम्

जप के लिए अक्षमाला का ही प्रयोग किया जाता है, इसी माला का अन्त:पूजनादि, ध्यानादि क्रम में प्रयोग किया जाता है, इस माला का ज्ञान किसी भी परमात्म साधक के लिए अति अनिवार्य हैं, बिना अक्षमाला ज्ञान के मानसविधि में जप नहीं हो सकता है, बाह्यजपादि उन उपासकों के लिए है, जो साधक तन्त्रविधि से दीक्षा नहीं लेते हैं, उनको अक्षमालादि का ज्ञान नहीं होता है, उन सम्प्रदायों में अक्षमाला का प्रतीक रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करते हैं, जिसका समयी कृत्यों में प्रयोग नहीं किया जा सकता है, अत: यहाँ केवल अक्षमाला का ही प्रयोग होगा।

अकारादारभ्य क्षकारपर्यन्तमक्षमालाम्। अर्थात् अकार से प्रारम्भ करके क्षकार तक मातृकाओं से मन्त्र युक्त कर मन्त्र जपने को ही अक्षमाला से जप कहते हैं। सर्वप्रथम विशुद्ध चक्र के पत्रों पर स्थित अकार से अ:कार तक के **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ:** समस्त वर्णों का ध्यान करते हुए पुन: अनाहत में ककार से प्रारम्भ करके क्रमश: ठकार **कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ** तक फिर मणिपुर में डकार से फकार **डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ** तक स्वाधिष्ठान में बकार से लकार **बँ भँ मँ यँ रँ लँ** तक फिर मूलाधार में वकार से सकार **वँ शँ षँ सँ** तक जपने के पश्चात् मूलाधार के मध्य कर्णिका में **ळं** बीज, स्वाधिष्ठान में **वं** बीज, मणिपुर में **रं** बीज, अनाहत में **यं** बीज, विशुद्ध में **हं** बीज, जप करते हुए पुन: विपरीत क्रम से जप करते हुए आकाशतत्त्वात्मक **हँ** बीज वायुतत्त्वात्मक **यँ** बीज, अग्नितत्त्वात्मक **रँ** बीज, जल तत्त्वात्मक **वँ** बीज तथा

भूतत्त्वात्मक **ळँ** बीज से युक्त कर जप के पश्चात् मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, तथा विशुद्धचक्र के पत्रों पर स्थित वर्णों के साथ जप करते हुए, अकार तक आये तथा आज्ञा चक्रस्थित उसी दल के मध्यकर्णिका में स्थित हकारात्मक शिवयुक्त क्षकारात्मक इष्टदेवी विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता को जप समर्पण करे यथा आगे निर्देश किया गया है—

विशुद्ध चक्र के पत्रों पर अः प्रत्याहार के वर्ण

विशुद्धचक्र के पत्रों पर स्थित अकार से अःकार तक के **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः** समस्त वर्णों का ध्यान करते हुए जप करे।

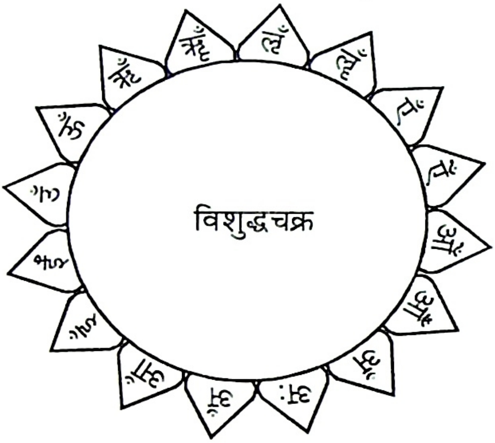

ॐ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ आँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ इँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ईँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ उँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऊँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऋँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ॠँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ लृँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ॡँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ एँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऐँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ औं ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ औँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ अ: ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

अनाहत चक्र के पत्रों पर कठ प्रत्याहार के वर्ण

अनाहतचक्र में ककार से प्रारम्भ करके क्रमश: ठकार **कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ** तक के वर्णों के साथ संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी के स्वरूप का ध्यान पूर्वक जप करे।

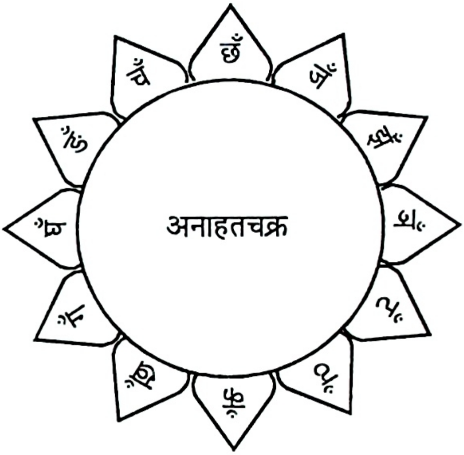

ॐ कँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ खँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ गँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ घँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ङँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ चँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ छँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ जँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ झँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ञँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ टँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ठँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मणिपूर चक्र के पत्रों पर डफ प्रत्याहार के वर्ण

मणिपुर में डकार से फकार **डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ** तक के वर्णो के साथ संयुक्त करके प्रत्येक वर्णों में देवी के स्वरूप का ध्यान पूर्वक जप करे।

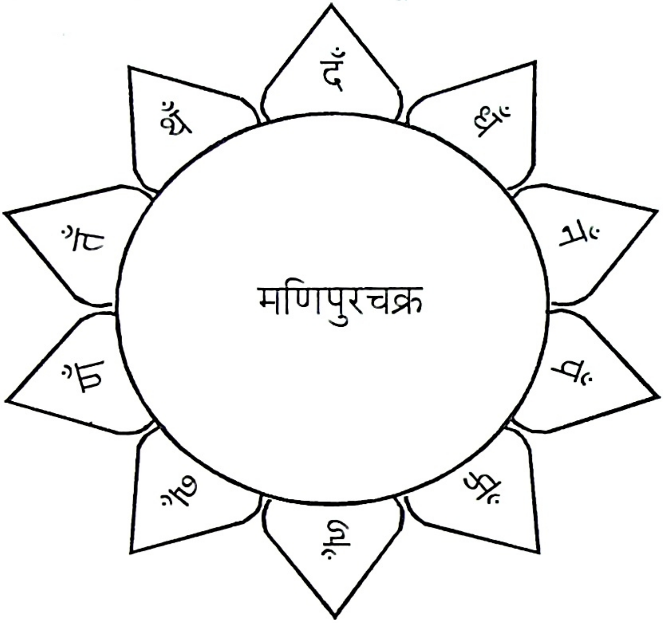

ॐ डँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ढँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ णँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ तँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ थँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ दँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ धँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ नँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ पँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ फँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

स्वाधिष्ठान चक्र के पत्रों पर बल प्रत्याहार के वर्ण

स्वाधिष्ठान में बकार से लकार **बँ भँ मँ यँ रँ लँ** तक के वर्णों के साथ संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी के स्वरूप का ध्यान पूर्वक जप करे।

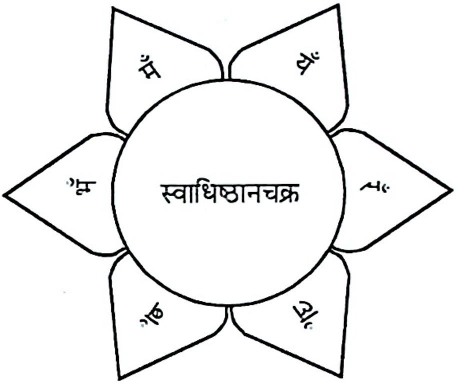

ॐ बँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ भँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ मँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ यँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ रँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ लँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मूलाधार चक्र के पत्रों पर वस प्रत्याहार के वर्ण

मूलाधार में वकार से लकार **वँ शँ षँ सँ** तक के वर्णों के साथ संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी के स्वरूप का ध्यान पूर्वक जप करे।

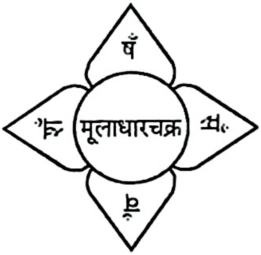

ॐ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ शँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ सँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मूलाधार की कर्णिका में लँ बीज

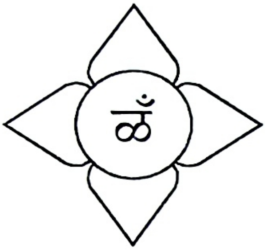

ॐ लँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

स्वाधिष्ठान की कर्णिका में वँ बीज

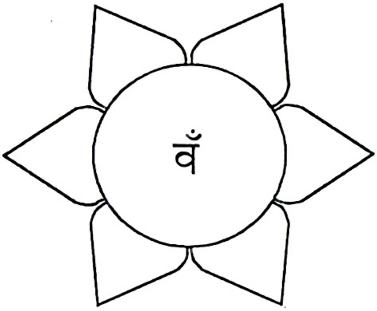

ॐ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मणिपूर की कर्णिका में रँ बीज

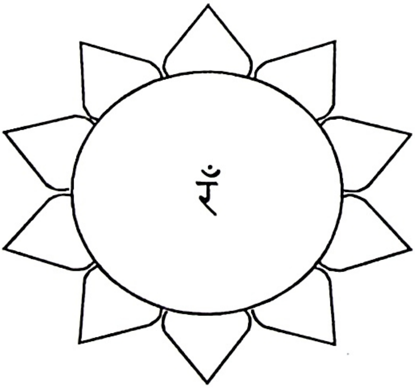

ॐ रँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

अनाहत की कर्णिका में यँ बीज

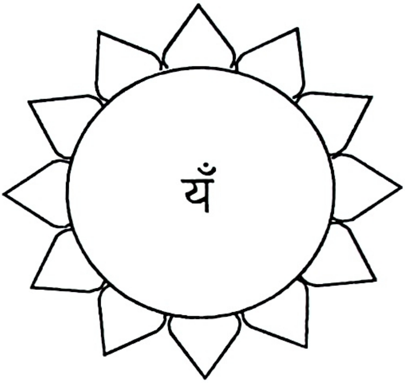

ॐ यँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

विशुद्ध की कर्णिका में हँ बीज

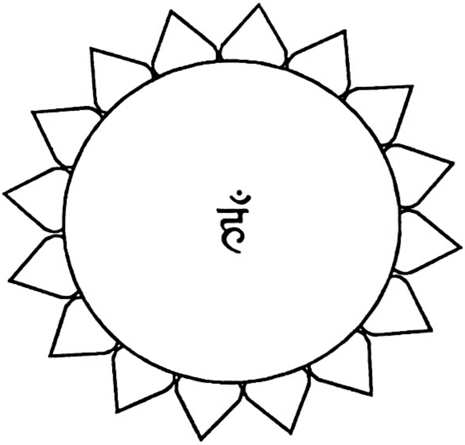

ॐ हँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

आज्ञाचक्र के पत्र पर हकार वर्ण

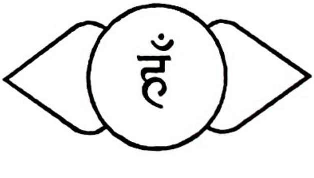

ॐ हँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

आज्ञाचक्र में हकार के साथ जप करके क्षकार सुमेरु की परिक्रमा करके पुनः विपरीत क्रम से जप करे।

पुनः आज्ञाचक्र के पत्र पर हकार वर्ण

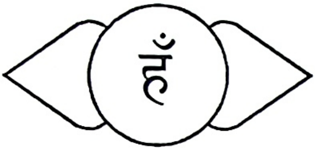

ॐ हँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

विशुद्ध की कर्णिका में हँ बीज

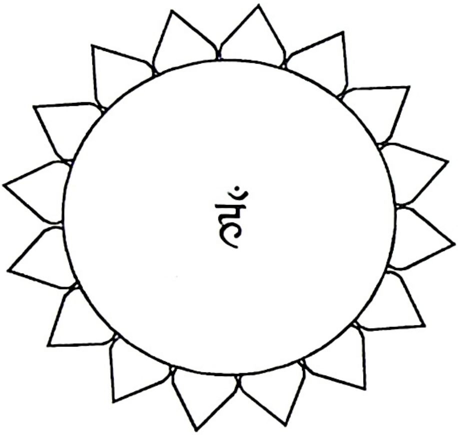

ॐ हँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

अनाहत की कर्णिका में यँ बीज

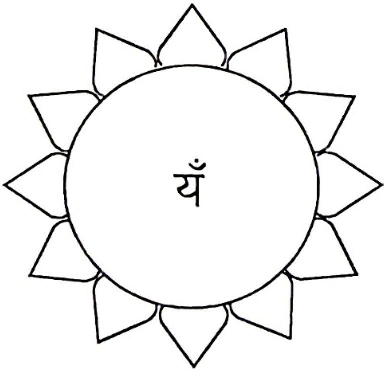

ॐ यँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मणिपूर की कर्णिका में रँ बीज

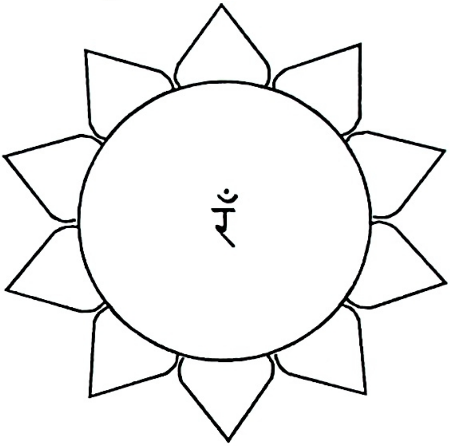

ॐ रँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

स्वाधिष्ठान की कर्णिका में वँ बीज

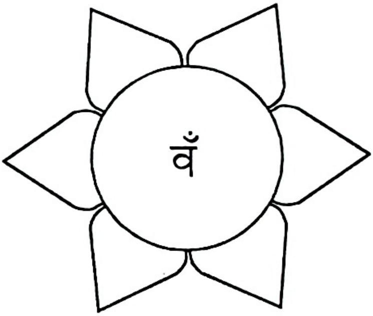

ॐ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

मूलाधार की कर्णिका में लँ बीज

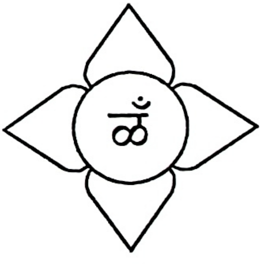

ॐ लँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

पुनः मूलाधार चक्र के पत्रों पर वस प्रत्याहार के वर्ण

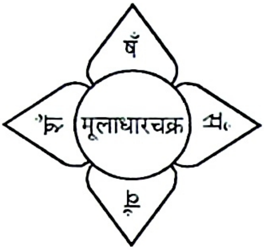

ॐ सँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ शँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ वँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

पुनः स्वाधिष्ठान चक्र के पत्रों पर बल प्रत्याहार के वर्ण

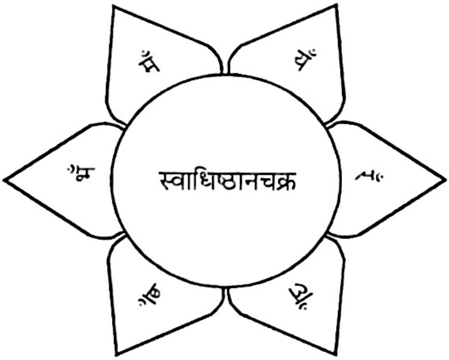

ॐ लँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ रँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ यँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ मँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ भँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ बँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

पुनः मणिपूर चक्र के पत्रों पर डफ प्रत्याहार के वर्ण

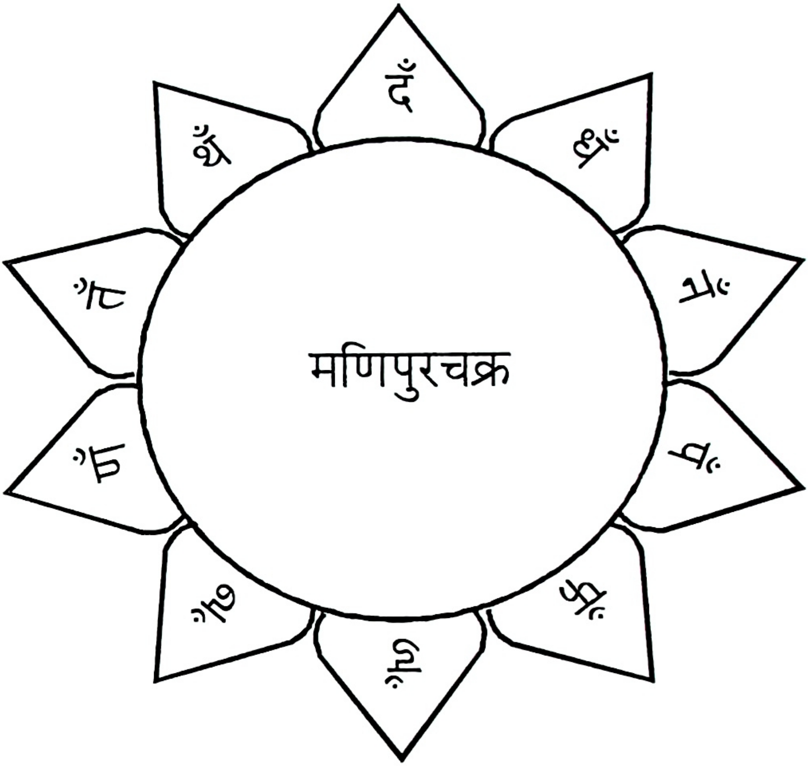

ॐ फँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ पँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ नँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ धँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ दँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ थँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ तँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ णँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ढँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ डँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

पुनः अनाहत चक्र के पत्रों पर कठप्रत्याहार के वर्ण

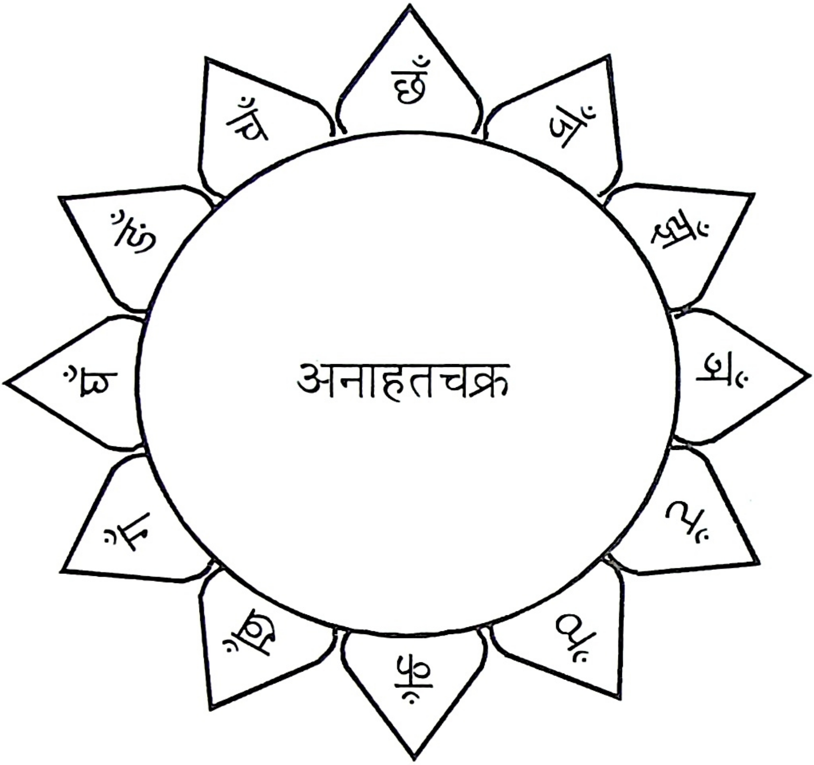

ॐ ठँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ टँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ञँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ झँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ जँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ छँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ चँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ङँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ घँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ गँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ खँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ कँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

पुनः विशुद्ध चक्र के पत्रों पर अः प्रत्याहार के वर्ण

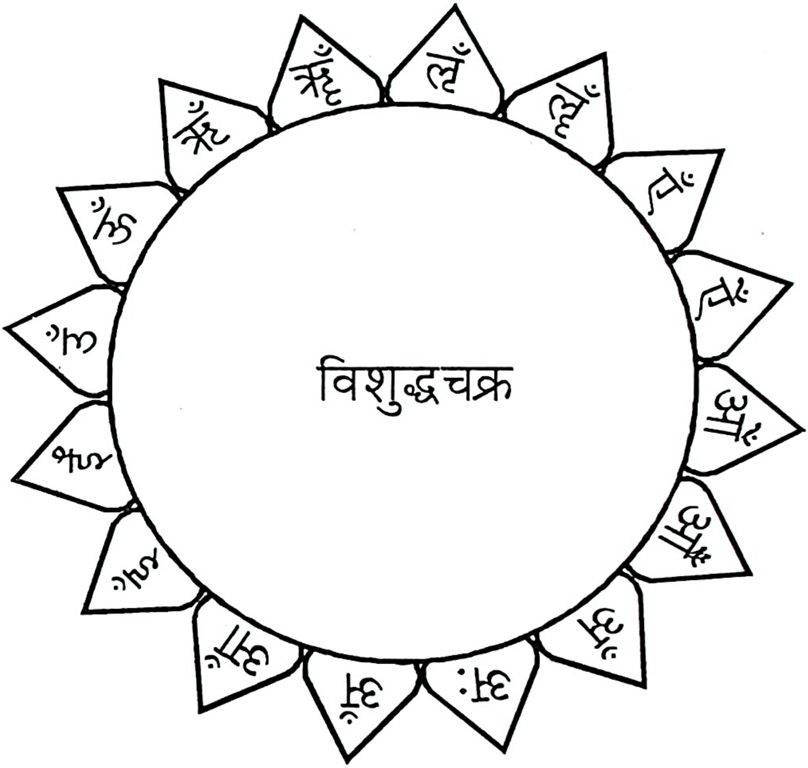

ॐ अः ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ औँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ ओँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ एँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ लॄँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ लृँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

ॐ ॠँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऋँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ऊँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ उँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ ईँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ इँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ आँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।
ॐ अँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा।

सम्पूर्ण जप आज्ञा चक्रस्थित क्षकारात्मक भगवती को समर्पण करे तथा पिण्ड में जप के पश्चात् इसी प्रकार सहस्रार स्थित पत्रों पर जप कर महादेवी को जप समर्पण करे।

ॐ स्वागतं देवदेवेशि सन्निधौ भव कालिके।
गृहाण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाषिताम्॥

हे ईश्वरि! मानसी पूजा ग्रहण कर हमें सान्निध्यत्त्व प्रदान कर यथार्थ का दर्शन करायें॥

अक्षमालाजपविधिं परिपूर्णम्

◆

पीठदेवतापूजनम्

अक्षमाला से जप के बाद पीठस्थ देवताओं को आवाहन स्थापन कर पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ मण्डूकाय नमः मण्डूकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कालाग्निरुद्राय नमः कालाग्निरुद्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कच्छपाय नमः कच्छपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आधारशक्तये नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ प्रकृतये नमः प्रकृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कूर्माय नमः कूर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अनन्ताय नमः अनन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ पृथिव्यै नमः पृथ्वीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षीरसमुद्राय नमः क्षीरसमुद्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ रत्नद्वीपाय नमः रत्नद्वीपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कल्पवृक्षाय नमः कल्पवृक्षशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ मणिमण्डपाय नमः मणिमण्डपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः स्वर्णसिंहासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ धर्माय नमः धर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्ञँ ज्ञानाय नमः ज्ञानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वैराग्याय नमः वैराग्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ ऐश्वर्याय नमः ऐश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अधर्माय नमः अधर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अज्ञानाय नमः अज्ञानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अवैराग्याय नमः अवैराग्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अनैश्वर्याय नमः अनैश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कल्पान्तकारायानन्ताय नमः कल्पान्तकारायानन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ पद्माय नमः पद्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आनन्दकन्दाय नमः आनन्दकन्दशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ संविन्नालाय नमः संविन्नालशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः विकारमयकेशरशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः प्रकृत्यात्मकपत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः पञ्चाशद्वर्णकर्णिकाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

पूजन करके दश कलाओं सहित वह्नि-अर्क-सोममण्डलों का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दशकलात्मने रँ अग्निमण्डलाय नमः अग्निमण्डलशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ धूम्रार्चिषे नमः धूम्रार्चिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ ऊष्मायै नमः ऊष्माशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ ज्वलिन्यै नमः ज्वलिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः विस्फुलिङ्गिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ सुश्रियै नमः सुश्रियाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ स्वरूपायै नमः स्वरूपाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ कपिलायै नमः कपिलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ळँ हव्यवाहनायै नमः हव्यवाहनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ कव्यवाहनायै नमः कव्यवाहनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं द्वादशकलात्मनेसूर्यमण्डलाय नमः मँ सूर्यमण्डलशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ भँ तपिन्यै नमः तपिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ बँ तापिन्यै नमः तापिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ फँ धूम्रायै नमः धूम्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ पँ मरीच्यै नमः मरीचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ धँ रुच्यै नमः रुचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ दँ सुषुम्णायै नमः सुषुम्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ थँ भोगदायै नमः भोगदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ तँ विश्वायै नमः विश्वाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ णँ बोधिन्यै नमः बोधिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ ढँ धारिण्यै नमः धारिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ डँ क्षमायै नमः क्षमाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः वँ सोममण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अमृतायै नमः अमृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ मानदायै नमः मानदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ पूषायै नमः पूषाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ रत्यै नमः रतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ शशिन्यै नमः शशिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ धृत्यै नमः धृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लृँ चन्द्रिकायै नमः चन्द्रिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॡँ कान्त्यै नमः कान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ ज्योत्स्नायै नमः ज्योत्स्नाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ श्रियै नमः श्रीयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ प्रीत्यै नमः प्रीतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ अङ्गदायै नमः अङ्गदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ पूर्णायै नमः पूर्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः पूर्णामृतायै नमः पूर्णामृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सत्त्वाय नमः सत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ रजसे नमः रजःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ तमसे नमः तमःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ आत्मने नमः आत्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ अन्तरात्मने नमः अन्तरात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ परमात्मने नमः परमात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ज्ञाँ ज्ञानात्मने नमः ज्ञानात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं माँ मायातत्त्वाय नमः मायातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ कलातत्त्वाय नमः कलातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विँ विद्यातत्त्वाय नमः विद्यातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ परतत्त्वाय नमः परतत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पीठशक्तिपूजनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ आधारशक्तिभ्यो नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ जयाशक्तिभ्यो नमः जयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ विजयाशक्तिभ्यो नमः विजयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ अजिताशक्तिभ्यो नमः अजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ अपराजिताशक्तिभ्यो नमः अपराजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ नित्याशक्तिभ्यो नमः नित्याशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ विलासिनीशक्तिभ्यो नमः विलासिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ दोग्ध्राशक्तिभ्यो नमः दोग्ध्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ अघोराशक्तिभ्यो नमः अघोराशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मङ्गलाशक्तिभ्यो नमः मङ्गलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ कालिकायोगपीठात्मने नमः कालिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः प्रेतासनाशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि।

ध्यानम्

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्,
शूलं कपालं दधतं कराब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्।
पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीपूच्छूलं हस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णाम्,
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥

रक्त महासागर में अरुणकालिक सूर्य के वर्ण के समान अरुण वर्णवाले कमल पर विराजमान हाथ में पाश-अंकुश-खड्ग-शर-बाण-शूल-कपाल धारण किये हुए तीन नेत्रवाली भगवती को प्रणाम करता हूँ। हाथों में पाशचापसृक्कपालशूल धारण किये हुए रक्त वर्णवाली रक्तवर्ण के कमल के आसन पर बैठी हुई प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥१॥

शरण्ये वरण्ये सुकारुण्यपूर्णे हिरण्योदराद्यैरगम्येऽतिपुण्ये।
भवारण्यभीतं च मां पाहि भद्रे नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि॥२॥

शरणागत होने, वरण करने पर सुकारुण्यपूर्ण, हिरण्यगर्भ से आदि, किसी भी उपाय से न जानी जानेवाली, पुण्यस्वरूपा, भवसागर के भय से भयभीत, हमारी कल्याणकर्ती रक्षा करो, हे भवानि! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है॥२॥

मानसोपचारपूजनम्—लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करते हुए तत्तद् भावनाओं का चिन्तन करते हुए मानस पूजन करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ वायवात्मकं धूपं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालिकायोगपीठात्मने नमः कालिकायोगशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः कमलासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पीठ शक्तियों का पूजन करने के बाद प्रधान कलश स्थापन करे।

पीठस्थापनं परिपूर्णम्

❀

इष्टदेवतापूजनम्

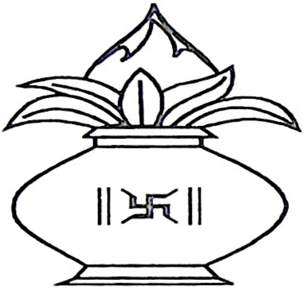

भूमिस्पर्श—ॐ म॒हीद्यौःपृ॒थि॒वीच॑नऽइ॒मंय्य॒ज्ञंमि॑मिक्षताम्।। पि॒पृ॒तानो॒भरी॑मभिः।।

सप्तधान्य विखेरना—ॐ ओष॑धय॒ःसम॑वदन्त॒सोमे॑नस॒हराज्ञा।। यस्म्मै॑कृ॒णोति॑ ब्राह्म॒णस्तꣳराजन्न्पारयामसि।।

कलशस्थापन—ॐ आजिग्घ्रक॒लशं॑म॒ह्यात्वाव्विश॒न्त्विन्द॑वः।। पुन॑रू॒र्ज्जानिव॑र्त्त स्व॒सान॑ःस॒हस्रंधुक्क्ष्वो॒रुधा॑रा॒पय॑स्वती॒पुन॒र्म्माविश॑ताद्र॒यिः।।

कलश में जल भरना—ॐ व्वरु॑णस्यो॒त्तम्भ॑नमसि॒व्वरु॑णस्यस्कम्भ॒सर्ज्जनी॑स्त्थो॒ व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑न्न्यसि॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमसि॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमासीद।

कलश में गन्ध डाले—ॐ त्वाङ्ग॑न्ध॒र्व्वाऽअ॑खन॒ँस्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पतिः॑।। त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजाव्वि॒द्वान्न्यक्ष्मा॑दमुच्च्यत।।

कलश में सर्वौषधी डाले—ॐ याओष॑धी॒ःपूर्व्वाजा॒तादे॒वेब्भ्य॑स्त्रियु॒गंपु॒रा।। मनै॒नुब॒ब्भ्रुणा॑म॒हꣳश॒तंधामा॑नि स॒प्त च।।

कलश में दूर्वा डाले—ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षःपरु॒षष्प्परि॑।। ए॒वानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नुस॒हस्रे॑ण श॒तेन॑ च।।

कलश में पञ्चपल्लव डाले—ॐ अ॒श्वत्त्थेवो॑नि॒षद॑नंप॒र्ण्णेवो॑व्वस॒तिष्कृ॒ता।। गो॒भाज॒ऽइत्किला॑सथ॒यत्स॒नव॑थ॒पूरु॑षम्।।

कलश में कुश डाले—ॐ प॒वित्त्रे॑स्त्थोव्वैष्ण॒व्व्यौ॑सवि॒तुर्व्वः॑प्प्रस॒वऽउत्पु॑ना॒म्म्यच्छि॑द्द्रेण प॒वित्त्रे॑ण॒सूर्य्य॑स्यर॒श्मिभिः॑।। तस्य॑तेप॒वित्त्रपतेप॒वित्त्र॑पूतस्य॒यत्का॑मःपु॒नेतच्छ॑केयम्।।

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—ॐ स्यो॒नापृ॑थिवि॒नोभवानृक्ष॒रानि॒वेश॑नी।। यच्छा॑नः॒शर्म्म॑स॒प्प्रथाः॑।।

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिःकविरग्ग्निर्हव्यान्यक्क्रमीत्॥ दधद्रत्नानि दाशुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमां अस्म्मैदेवायहविषाविधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ग्ने-व्विश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वव्विभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहाऽइष-मूर्ज्जꣳशतक्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

वरुणध्यानावाहनपञ्चोपचारपूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सवाहनं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—दक्षिण हाथ के स्पर्श से आवाहन करे—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों की प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित हुआ है, उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षि (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकाएँ होती हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनीगोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा सप्तद्वीप मेदिनी स्थित है, अजुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं॥३॥

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापीगोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री, नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

इसी से विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ उत्पन्न होती हैं। पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं, वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्त दुरित के क्षय-कारक हो, समस्त पापों को नष्ट करनेवाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग रूप से कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयन्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गङ्गादिभ्यः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरित को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें॥८॥

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो॒जू॒तिर्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टं॒य्य॒ज्ञꣳ समि॒मन्द॑धातु॥ व्विश्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

कलश-प्रार्थना—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

हे कुम्भ! देवताओं और दानवों के बीच समुद्र-मन्थन से तुम उत्पन्न हुए, तुम्हें स्वयं विष्णु ने धारण किया॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

जल से ही सभी तीर्थों की प्रतिष्ठा है, सभी तीर्थों के जल में देवताओं का वास है, जल ही सभी भूतों में प्रतिष्ठित है, जल ही सभी प्राणों में प्रतिष्ठित हो॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, रुद्र, वसु, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनाएँ फलवान् होती हैं, हे जलोद्भव! कुम्भ तुम्हारी कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करनेवाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सान्निध्य प्रदान करें॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दर श्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दर मङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले हे जलाधिनाथ! आपको बार-बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

पाश को हाथ में धारण करनेवाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करनेवालों के नायक, जबतक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती, तब तक सानिध्य प्रदान करो॥७॥

नमः आद्याय बीजाय ज्ञानविज्ञानमूर्तये।
प्राणेन्द्रियमनोबुद्धिर्विकारैर्व्यक्तिमीयुषे ॥८॥

आदिबीज ज्ञानविज्ञानमूर्ति प्राणइन्द्रियमनबुद्धि के विकारों को समाप्त करने के लिए आपको नमस्कार है॥८॥

प्रधानकलशस्थापनं परिपूर्णम्

❀

प्रधानदेवताप्रतिष्ठा

अग्न्युत्तारणविधिः—विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा की सुवर्णमयी प्रतिमा बना करके उसे अग्नि में तपा कर घृत लेपन करके उसपर अधोलिखित मन्त्र पाठपूर्वक जलधारा गिराये।

ॐ समुद्रस्यत्त्वावकयाग्ग्नेपरिंव्ययामसि॥ पावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव॥ ॐ हिमस्यत्वाजरायुणाग्ग्नेपरिंव्ययामसि॥ पावकोअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव॥ ॐ उपज्ज्मनुपवेतसेऽवतरनदीष्ष्वा॥ अग्ग्नेपित्तमपामसिमण्डूकिताभिरागहि सेमंनोयज्ञंपावकवर्ण्णꣳशिवंकृधि॥ ॐ अपामिदंन्ययनꣳसमुद्रस्यनिवेशनम्॥ अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव॥ ॐ अग्ग्नेपावकरोचिषामन्द्रयादेवजिह्व्वया॥ आदेवान्वक्षियक्षिच॥ ॐ सनःपावकदीदिवोऽग्ग्नेदेवाँ२॥ऽइहावह॥ उपयज्ञꣳहविश्श्चनः॥ ॐ पावकयायश्श्चितयन्त्याकृपाक्षामन्नुरुचऽउषसोनभानुना॥ तूर्व्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयोघणेनततृषाणोऽअजरः॥ ॐ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे॥ अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव॥ ॐ नृषदेवेडप्सुषदेवेड्बर्हिषदेवेड्वनसदेवेट्स्वर्व्विदेवेट्॥ ॐ येदेवादेवानांय्यज्ञियायज्ञियानाꣳसंवत्सरीणमुपभागमासते॥ अहुतादोहविषोयज्ञेऽअस्मिन्न्त्स्वयंपिबन्तुमधुनोघृतस्य॥ ॐ येदेवादेवेष्वधिदेवत्वमायन्न्येब्रह्मणःपुरऽएतारोऽअस्य॥ येब्भ्योनऋतेपवतेधामकिञ्चननतेदिवोनऽपृथिव्याऽअधिस्नुषु॥ ॐ प्राणदाऽअपानदाव्यानदावर्च्चोदावरिवोदाः॥ अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयपावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव॥

अग्न्युत्तारण के पश्चात् बीज मन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा करे।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः अस्यां विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्याः सुवर्ण प्रतिमायां प्राणाः इह प्राणाः॥

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः अस्यां विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्याः सुवर्ण प्रतिमायां जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः अस्यां विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्याः सुवर्ण प्रतिमायां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

इष्टदेवतापूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप सुवर्ण के समान पीतवर्णवाली, किञ्चित् हरितवर्णवाली, किञ्चित् हरिणी रूप धारण करनेवाली, सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करनेवाली, सुन्दर वर्णवाले चाँदी के समान श्वेतपुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, चन्द्रमा के समान सबको प्रसन्न करनेवाली, चञ्चलता हिरण्यमयी रूपवाली एवं हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी को मेरे लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ध्यायामि ध्यानोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि। ध्यान करके यन्त्र पर पुष्प चढ़ाये।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे–

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत्-विख्यात एवं अनपगामिनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ। मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करने के लिए उनका आवाहन करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा आसनं समर्पयामि, आसनार्थे पुष्पं निवेदयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ हैं अथवा जिनके आगे घोड़े जुटे हुए हैं, ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ, दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी को अपने घर में सर्वदा निवास करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

गन्ध, उसीर, गोरोचन, श्यामक, विष्णुकान्ता, कमल एवं दुर्वा युक्त जल अनामिका अङ्गुष्ठ मिलाकर यन्त्र स्थित भगवती के युगल चरणों में समर्पित करे।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

जिनका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्दहास्ययुक्ता हैं, जो चारों ओर सुवर्ण से वेष्टित हैं एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं, अर्थात् जो लक्ष्मीजी दया से आर्द्र होते हुए तेज से देदीप्यमान हैं, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमल के सदृश गृह में निवास करनेवाली, उन जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अर्घ्यं समर्पयामि। हाथ में अर्घ्य प्रदान करे।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं से सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहने वाली, सबकी रक्षा करनेवाली, भक्तों को आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता रहूँ, हे लक्ष्मि! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अत: मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मुखे आचमनीयं समर्पयामि। हीनोन्नत समस्ताङ्गुलियों से आचमन मुद्रा के द्वारा चन्दन, पुष्प, जाती, कर्पूर, कंकोल, लवङ्ग चूर्ण जल में मिलाकर मुख में आचमन निवेदन करे।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गादि सभी तीर्थों से प्रार्थनापूर्वक मैं जल लाया हूँ, इस जल का स्पर्श सुख प्रदान करनेवाला है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूर के समान सुगन्धित, दूध के समान धवल, स्वाद में शीतल जल आचमन के लिए प्रस्तुत है, इस आचमनीय जल को हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा स्नानाङ्गाचमनीयं जलं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गाय से उत्पन्न सभी को जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए अति पवित्र दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से उत्पन्न मधुर तथा अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही हे देव! हम आपके स्नान के लिए लाये हैं, इस दही को ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मक्खन से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी आपको स्नान के लिए प्रदान करता हूँ, इस घृत को स्नान हेतु ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्प कणों से उत्पन्न सुन्दर स्वादवाला मधुर शहद, तेज और पुष्टि को प्रदान करने वाला, दिव्य शहद स्नान के लिए आपको समर्पित है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुरस से उत्पन्न शर्करा शुभ पुष्टि प्रदान करनेवाली, सभी प्रकार के मल का अपहरण करनेवाली है, दिव्य स्नान के लिए इस शर्करा को ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा शर्करा स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध, दही, घी, मधु और शर्करा से युक्त पञ्चामृत दिव्य स्नान के लिए आपको समर्पित है, इस पञ्चामृत को ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतपरप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों के दिव्य जल आपके स्नान के लिए समर्पित है, इस जल को ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली देवि! आपके तेज से वनस्पति विशेष बिना पुष्प के फल देनेवाला एक वृक्ष उत्पन्न हुआ (आपके हाथ से बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ) उस बिल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर-बाहर की दरिद्रता को दूर करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

हे लक्ष्मि! देवसखा अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के

साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला के सदृश यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् कुबेर का धन और यश दोनों ही मुझे मिले, मैं इस सुन्दर राष्ट्र (शरीर) में उत्पन्न हुआ हूँ, अत: हे कुबेरदेव! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमत: शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शीतवायु से रक्षा के लिए, लज्जा की सतत रक्षा के लिए, शरीर पर अलङ्करण के लिए, सदैव शान्ति प्रदान करने के लिए वस्त्र समर्पित करता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥

भूख तथा प्यास रूपी मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मी जी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ। हे लक्ष्मि! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धि द्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं, धन-धान्यादि से सदा परिपूर्ण, गौ-अश्वादि पशुओं की समृद्धि को देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ मनस: काममाकूतिं वाच: सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री: श्रयतां यश:॥

हे लक्ष्मी! तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, व्रीहि इत्यादि अन्नों के रूप अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोज्यादि पदार्थों—इन समस्त पदार्थों को प्राप्त करूँ। सम्पत्ति-यश मुझमें आश्रय लेकर रहे अर्थात् मैं धनवान् कीर्तिमान् बनूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई है। हे कर्दम! आप मुझमें अच्छी तरह वास करे। इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास करायें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मङ्गल प्रदान्।
आनीतां स्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥

हरे-हरे दूर्वाङ्कुर जो अमृतत्व तथा मङ्गल प्रदान करनेवाले हैं, आपके पूजा के लिए लाया हूँ, आप प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

जिस प्रकार कर्दम ऋषि की सन्तति (ख्याति) से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से चौदह रत्नों के बाद लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ है। उसी प्रकार जल देवता स्निग्ध एवं मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करे (पदार्थों की सुन्दरता लक्ष्मी ही है) लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत चार पुत्र हैं, जिसमें हे चिक्लीत! तुम मेरे गृह में निवास करो, केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयाभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास करायें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

अरुणकालिक प्रकाश के समान आभावाला सिन्दूर तथा जवाकुसुम के सदृश वर्ण (रंग) वाले सिन्दूर से हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हो तथा पूजित हों।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित करने के बाद धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित करने के बाद सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

दशाङ्ग, गुग्गुल, चन्दन तथा अगुरु जैसे गन्धों से युक्त धूप भक्तिपूर्वक हम समर्पित करते हैं, हे महादेवि! इस धूप को ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के शुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्रशरीरवाली, पुष्टि को देनेवाली, पुष्टिस्वरूपा रक्त और पीत वर्णवाली, कमल की माला धारणकर जगत् को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

चारो प्रकार का सुन्दर सुस्वादु षड्रसों से युक्त नैवेद्य हे देवि! भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ, ग्रहण करके अपने में हमारी भक्ति को अचल करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य चन्दन तथा रजनी पुष्प से युक्त करोद्वर्तन हम प्रदान करते हैं, गणेश सहित मातृकायें प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में भक्तों पर सर्वदा दयार्द्रचित्त रहें, समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली, यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण स्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करनेवाली सूर्यज्वाला अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है, उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालन-पोषण करती है, अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादि-नागवल्लिदलसहितताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाऽऽम्रं कपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! द्राक्षा (किसमिस), खर्जूर (खजूर), कदली (केला), पनस (कटहल), आम्र (आम), कपित्थ (कैथ), नारिकेल (नारियल), इक्षु (गन्ना), जम्बूफल (जामुन) आदि फलों को आपके प्रसन्नता के लिए लाया हूँ, प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्॥

पूजा के पूर्ण फल की समृद्धि के लिए स्वर्णमयी मुद्रा आपके सामने समर्पित भाव से स्थापित है, जिसे स्वीकार तथा प्रसन्न मन होकर हमारे मनोरथों को पूर्ण करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केले के वृक्ष के) गर्भ से उत्पन्न कर्पूर प्रदीपित करके आपकी आरती हम करते हैं, जिसे देखकर आप प्रसन्न हों तथा हमारी समस्त कामनापूर्ति के लिए वर प्रदान करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा नीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे यहाँ उस जगद्‌विख्यात लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कहीं न जानेवाली हों, उन लक्ष्मी को प्राप्त करायें। जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े, और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ, अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

मनुष्य शुचिता को प्राप्तकर अर्थात् शुद्ध होकर लक्ष्मी की कामना से श्रद्धापूर्वक पवित्र मन और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम करे और उसके साथ लक्ष्मीसूक्त तथा श्रीसूक्त के पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन निरन्तर जप करता रहे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथ से पुष्प लेकर प्रार्थना करके समर्पित करे—

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशी फुल्लपद्मोपविष्टां,
वीणानागेन्द्रशंखाऽऽयुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशुनानामणियुतहृदयां सिन्धुपात्रं वहन्तीं,
वन्देऽभीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्॥

उदयकालिक चन्द्रमा के प्रकाश के समान खिले हुए कमल पर बैठी हुई, चारो हाथों में क्रमशः वीणा, नाग, शङ्ख, आयुध, परशु धारण की हुई, हृदय पर मुक्तामणि जटित हार धारण की हुई, अमृतपात्र को हाथ में धारण की हुई, प्रसन्न मन से मधुर-मधुर हास्य करती हुई, साधकों के मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाली भवानी की मैं वन्दना करता हूँ।

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बले सुविपुलं महिषासुरस्य॥२॥

हे देवि! हम पर प्रसन्न हों, परमात्मास्वरूपा आपके प्रसन्न होने पर जगत् का अभ्युदय

होता है और महिषासुर की यह विशाल सेना क्षणभर में आपके कोप से नष्ट हो गयी इससे स्पष्ट है कि क्रोध में भर जाने पर आप तत्काल सम्पूर्ण कुलों को नाश कर डालती हैं॥१॥

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से जल लेकर पूजन समर्पित करे—

अनेन पूजनेन विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करे। पुष्पाञ्जलि प्रदान कर देवी के सहस्रनामों से पुष्पादिकों से अर्चन करे।

प्रधानदेवतापूजनं परिपूर्णम्

❁

दैनिकबलिदानम्

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे** (यदि वाराणसी में कर्म कर रहे है तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे**) **विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रद मासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा-यथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीइष्टदेवताप्रीतये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणसिद्धये नारिकेलबलिदानं करिष्ये।**

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नारिकेलबलिमण्डलाय नमः। नारिकेलबलिमण्डल पर जल छोड़े।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नारिकेलबलिमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि **समर्पयामि।** नारिकेलबलिमण्डल पर गन्धाक्षतपुष्प छोड़े।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नारिकेलदेयबलये नमः। नारिकेलबलि को मण्डल पर स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नारिकेलदेयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि **समर्पयामि।** नारिकेलबलि पर गन्धाक्षतपुष्प छोड़े।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा नारिकेलदेयबलिं तुभ्यं समर्पयामि। हाथ में जल लेकर नारिकेलबलि समर्पित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हुं फट्। नारिकेलबलि पूजन के बाद वीरासन मुद्रा से एक हाथ से एक ही बार में बलि का स्फोटन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतपरब्रह्ममहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा प्रत्यङ्गिरां तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चरकीं तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विदारीं तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पूतनां तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पापराक्षसीं तर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा नारिकेलबलिं समर्पयामि।

बलिदानसमर्पणम्—दोनों हाथ से जल लेकर बलिदान समर्पित करे—

अनेन बलिदानेन विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

वटुकबलिदानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये वटुकायपायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

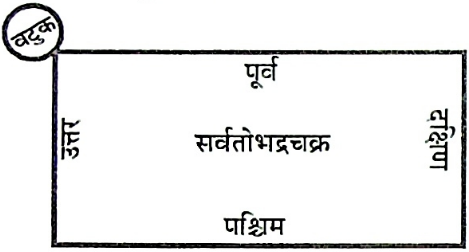

ईशानकोण में वटुक के लिए बलिप्रदान करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। ईशानकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वटुकबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वटुकबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एह्येहि देविपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ।

क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु:,
जयति वटुकनाथ: सिद्धिद: साधकानाम्॥१॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों में कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्थावाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालों वाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित, विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करने वाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ॥१॥

श्रीभैरवो रुद्रमहेश्वरो यो महामहाकाल अधीश्वरोऽथ।
यो जीवनाथोऽत्र विराजमान: श्रीभैरवं तं शरणं प्रपद्ये॥२॥

जो श्रीभैरव, महेश्वररुद्र, महामहाकाल, अधीश्वर, जीवों के स्वामी विराजमान हैं अपनी रक्षा के लिए हम उन श्रीभैरव की शरण में है॥२॥

पुष्पाञ्जलि:

बलिदानेन सन्तुष्टो बटुक: सर्वसिद्धिद:।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवित:॥

बलिदान से सभी सिद्धियों को देने वाले भूतवेतालों से सेवित बटुकभैरव प्रसन्न हों और सदैव शान्ति प्रदान करें।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन बटुक: प्रीयतां न मम।**

योगिनीबलिदानम्

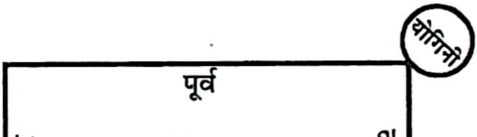

सङ्कल्प:—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्र: अमुकप्रवर: अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये योगिनीभ्य: पायसान्नद्रव्यै: पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यॉं योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नम:। मण्डल स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यॉं योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नम:। अग्निकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र को अग्नि कोण में रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं याँ योगिनीबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं याँ योगिनीबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं याँ सर्वेभ्यो योगिनीभ्यो फट् सर्ववर्णयोगिनीभ्यो नमः सर्वशक्तिभ्यः त्रिनेत्रसर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतोया दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोः यत्र कुत्र स्थितो वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठे दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः,
प्रीता देव्या सदा नः शुभविधिबलिभिः पातु वीरेन्द्रवन्द्या॥

ऊपर ब्रह्माण्ड में, द्युलोक में, आकाश में, भूतल पर, निष्कल अवस्था में, जल में, स्थल पर, पाताल में, अनल में, सुन्दर शीतल उपवन में जहाँ तहाँ रहनेवाली योगिनी वर्ग, क्षेत्र, पीठ, उपपीठ, दिशाओं में रहनेवाली, धूप-दीपादि के द्वारा पूजित होकर, प्रसन्न होकर, वीरों के द्वारा पूजित योगिनियाँ प्रसन्न हों और सभी प्रकार का हमें शुभता प्रदान करें।

पुष्पाञ्जलिः

योगिनीयोगमाया च योगिनां सिद्धिदायिनी।
षड्चक्रभेदिनी देवि सर्वविघ्नविनाशिनी॥१॥

योगमायायोगिनी, योगियों को सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करनेवाली, षड्चक्रों का भेदन करनेवाली, सभी विघ्नों का विनाश करनेवाली॥१॥

योगिनी योगमाया च सर्वभैरवमोहिनी।
सर्ववीर्यमहातेजाः सर्वत्र शुभदायिनी॥२॥

सभी भैरवों को मोहित करनेवाली योगमाया योगिनी, सभी प्रकार की बलशालिनी महानतम तेजवाली, सभी हमें शुभता प्रदान करें॥२॥

या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरा परात्परा।
द्यु-व्योम-भूमिचारिण्यः सर्वाः प्रीतास्तु मे सदा॥३॥

जो कोई योगिनी भी रौद्र, सौम्या, घोर, परात्परा, द्युव्योमभूमिचारी समस्त योगिनियाँ सभी प्रसन्न होकर हमें शुभता प्रदान करें॥३॥

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वयोगिन्यः प्रीयतां न मम।**

गणेशबलिदानम्

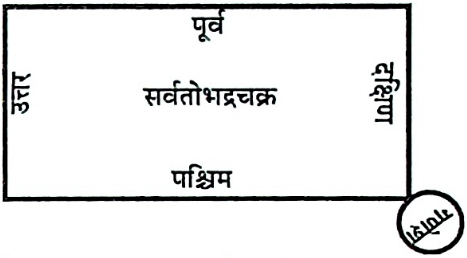

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये गणशायपायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। नैर्ऋत्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गणेशबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गणेशबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ गाँ गीँ गूँ गैँ गौँ गः गणेशाय नमः भो गणेश! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ॐ ॐकाररूपं त्र्यमिति च परं यत् स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेज-सिन्दूर-मूर्तिम्।
योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकलगुणमयं श्रीहरेन्द्रेण सङ्गं,
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति॥१॥

ओंकारत्रय रूप से परमतुरीय जो ब्रह्मरूप, सत्त्वरजतम तीनों गुणों से अतीत रूपोंवाले, मन से भी तेज, सिन्दूर के रूप(वर्ण)वाले, जिसकी मूर्तिमान्, योगियों के द्वारा वन्द्य, सकल

गुणों के खान, ब्रह्मरन्ध्र में रहनेवाले, श्रीहरि के साथ गं गं गं गं बीजरूपी गज मुखवाले व्यापक गणेश का ध्यान करता हूँ॥१॥

विदेहरूपं भवबन्धहारं सदा स्वनिष्ठं स्वसुखप्रदत्तम्।
अमेयसांख्येन च लक्ष्यमीशं गजाननं भक्तियुतं भजामः॥२॥

विदेह रूपवाले, भवसागर के बन्धन को समाप्त करनेवाले, सदा अपने (ब्रह्मभाव) में ही स्थित रहने वाले, आत्म सुख को प्रदान करनेवाले, मायाविहीन, सांख्य के द्वारा बोधगम्य, ईश्वर गजानन का भक्ति पूर्वक भजन करता हूँ॥२॥

कल्पद्रुमाधः स्थितं कामधेनुं चिन्तामणिं दक्षिणपाणिशुण्डम्।
विभ्राणमत्यद्भुतचित्तरूपं यः पूजयेत् तस्य समस्तसिद्धिः॥३॥

कल्पवृक्ष के समान, कामधेनु के सदृश, कामनाओं की पूर्ति करने में दक्ष, चित्त में अत्यद्भुत रूप से जो पूजन करता है, उसकी समस्त कामनायें सिद्धि होती है॥३॥

पुष्पाञ्जलिः

ॐ गजाननाय पूर्णाय सांख्यरूपमयाय ते।
विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः॥१॥

सांख्यरूपमय पूर्ण ब्रह्म गजानन बिना देह के निष्कल भाव से सर्वत्र संस्थित, हे गणेश! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है॥१॥

अमेयाय च हेरम्ब परशुधारकाय ते।
मूषकवाहनायैव विघ्नेशाय नमो नमः॥२॥

माया विहीन, परशु धारण करनेवाले, हेरम्व, मूषक जिसका वाहन है, सम्पूर्ण विश्व के मालिक आपको नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है॥२॥

अनन्तविभवायैव परेशां पररूपिणे।
शिवपुत्राय देवाय गुहाग्रजाय ते नमः॥३॥

अनन्तविभवों से युक्त, परईश्वर, परस्वरूपवाले, शिव के पुत्र, गुहाग्रज देवता के लिए नमस्कार है॥३॥

पार्वतीनन्दनायैव देवानां पालकाय ते।
सर्वेषां पूज्यदेहाय गणेशाय नमो नमः॥४॥

पार्वतीनन्दन, देवताओं के पालक, सभी शरीरधारियों में परमपूज्य श्रीगणेश को नमस्कार है॥४॥

विघ्नेशवीर्याणि विचित्रकाणि बन्दीजनैर्मागधकैः स्मृतानि।
श्रुत्वा समुत्तिष्ठ गजानन त्वं ब्राह्मैर्जगन्मङ्गलकं कुरुष्व॥५॥

हे विघ्नेश! आपके पराक्रम विचित्र है, बन्दीजन आपका अगाधरूप से स्मरण करते

हैं, जिसे सुन कर आप उठें और हे गजानन रूपी ब्रह्म! जगत् का मङ्गल करें।।५।।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।**

क्षेत्रपालबलिदानम्

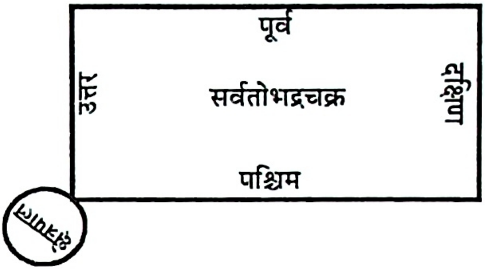

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये क्षेत्रपालायपायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। वायव्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करके समर्पित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय नमः भो स्थानक्षेत्रपाल सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणीनूपुराद्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥१॥

स्वच्छ स्फटिक के सदृश, कुण्डल से सुशोभित, दिव्यमणियों से बने हुए नूपूर और

किंकिणी से सुशोभित, प्रसन्न, शिव की भाँति पुलकित मुखवाले, कमलवत् करों में सदा शूल और तलवार धारण करनेवाले, बालस्वरूप क्षेत्रपाल का ध्यान करता हूँ॥१॥

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥२॥

उदयकालीन सूर्य के समान लाल कान्तिवाले, तीन नेत्रोंवाले, रक्त पुष्पमाला से युक्त, पुलकित मुखवाले, वरदाता, कपाली, निर्भय, हाथ में शूल धारण करनेवाले, नील ग्रीवावाले, आभूषणों से युक्त, खण्ड चन्द्रमा के समान उज्ज्वल मधूक पुष्प के समान लाल वस्त्र धारण किये हुए, भय को दूर भगानेवाले क्षेत्रपाल का ध्यान करता हूँ॥२॥

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्‌गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्य॥३॥

त्रिलोक के स्वामी, द्वितीया के चन्द्रकला को धारण करनेवाले, मुण्डमाला पहने हुए, महेश्वर, दिगम्बर, पीत केशवाले, हाथ में डमरु, शूल, खड्‌ग, पाश और अभय धारण करनेवाले तथा नाग, घण्टा, कपाल हाथ में सुशोभित, विशाल दाँतोंवाले, दिव्य आभूषणों से सुसज्जित, त्रिनेत्र तथा नाना मणियों से जटित किंकिणी और नूपूर धारण किये हुए क्षेत्रपाल का ध्यान करता हूँ॥३॥

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं संहारमूर्तिं शुभमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥४॥

यक्षरूप वदनवाले, दशों दिशाओं में भूमि को कम्पित करनेवाले, संहार के मूर्ति चन्द्रबिम्बवाले सुन्दर शुभ मुकुट को धारण करनेवाले, जटा जिसके सिर पर स्थित है, दीर्घशरीरवाले, विशाल नखमुखवाले, ऊपर की तरफ विकराल रोमोंवाले, समस्त पापों के स्मरण मात्र से नष्ट करनेवाले, क्षेत्रपाल को सतत प्रणाम करता हूँ॥४॥

पुष्पाञ्जलिः

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
क्षेत्रपाल नमस्तुभ्यं, अनुज्ञां दातुमर्हसि॥१॥

तीक्ष्ण दातों वाले, महाकाय, कल्पान्त में सृष्टि का संहार करनेवाले, क्षेत्रपाल को नमस्कार है, हे क्षेत्रपाल! हमें पूजन की अनुमति प्रदान करें तथा हमारी सर्वत्र सर्वदा रक्षा करें॥१॥

ॐ यस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे॥२॥

इस क्षेत्र के निवासी क्षेत्रपाल के सेवकगण हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलिदान से सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर हमारी सभी तरफ से रक्षा करें॥२॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।**

राजराजेश्वरबलिदानम्

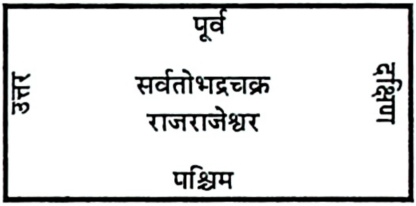

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये राजराजेश्वरायपायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हौं राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हौं राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। मध्य में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हौं राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हौं राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हौं राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हौं राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः ह्सौँ स्हौँ राजराजेश्वर! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥१॥

हे मस्तक की जटाओं में चन्द्रमा को धारण करनेवाले! हे कामदेव का दहन करनेवाले मदनान्तक! त्रिशूल धारण करनेवाले शूलपाणि! हे स्थाणु! हे पर्वतों के ईश्वर गिरीश! हे गिरिजा के पति गिरिजेश! हे महा ईश्वर! हे समस्त भूतों का कल्याण करनेवाले शम्भु! भूतगणों के मालिक भूतेश! समस्त भयों का नाश करनेवाले भयभीतसूदन! हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥१॥

हे पार्वतीहृदयवल्लभ चन्द्रमौले भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाय।
हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥२॥

हे पार्वती के हृदय में निवास करने वाले! हे चन्द्रमौलि! भूतों के अधिपति! प्रमथादि गणों के नाथ! हे गिरीश! हे वामदेव! हे भव! हे रुद्र! हे पिनाक धनुष को हाथ में धारण करनेवाले! हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥२॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥३॥

हे नीलकण्ठ! हे वृषभध्वज! हे पञ्चवक्त्र! हे लोकों के स्वामि! हे प्रलय काल में भी शेष रहने वाले! हे प्रमथादि गणों के ईश्वर! हे शर्व! हे धूर्जटि! हे पशुपति! हे गिरिजा के पति! हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥३॥

हे विश्वनाथ शिवशङ्कर देवदेव गङ्गाधर प्रमथनायक नन्दिकेश।
विश्वेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥४॥

हे विश्वनाथ! हे शिवशङ्कर! हे देवदेव! हे गङ्गाधर! हे नन्दिकेश! हे विश्वेश्वर! हे अन्धक के रिपु, हे हर! हे लोक के नाथ! हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥४॥

पुष्पाञ्जलिः

गौरीविलासभवनाय महेश्वराय पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥१॥

गौरी के साथ सम्पूर्ण भुवन में विलास करनेवाले, महेश्वर, पाँच मुखोंवाले, शरण में आनेवाले भक्तों की रक्षा करनेवाले, हे शर्व! समस्त जगत के अधिपति, मैं अपने दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार है॥१॥

भक्तिप्रियाय भय-रोग-भयापहाय उग्राय दुर्गभव-सागरतारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥२॥

भक्ति से प्रसन्न होनेवाले, भय-रोगादि को हटानेवाले, उग्रस्वरूप दुर्गम भवसागर से तरने के लिए, गुणों के द्वारा प्रसिद्धि पानेवाले ज्योतिमय, मैं अपने दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार है॥२॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्यदु:खदहनाय नम: शिवाय॥३॥

रघुकुलनाथ श्रीराम को परमप्रिय लगनेवाले तथा वरप्रदान करनेवाले, नाग से प्रेम करनेवाले तथा नरक रूपी महासमुद्र से तारनेवाले, देवताओं के द्वारा सदैव अर्चित, पुण्यों में परमपुण्य स्वरूप महेश्वर का अपने दु:खदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए हे शिव! आपकों नमस्कार है॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन श्रीराजराजेश्वर: प्रीयतां न मम।**

राजराजेश्वर को बलिदान प्रदान करने के बाद वेदी के उत्तर काल को बलिदान करे।

कालबलिदानम्

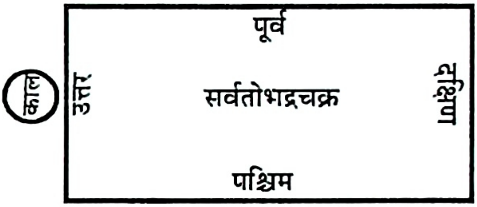

सङ्कल्प:—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्र: अमुकप्रवर: अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये कालायपायसान्नद्रव्यै: पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालबलिपात्राधारमण्डलाय नम:। कलश से उत्तरदिशा बलि-पात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालबलिपात्राधारमण्डलाय नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नम:। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालबलिपात्राय नम:। बलिपात्र रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालबलिपात्राय नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नम:। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालबलिद्रव्याय नम:। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालबलिद्रव्याय नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नम:। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काल! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय वरवरद

सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

एह्येहि दण्डायुधधर्मराज कालाञ्जनाभासविशालनेत्र।
विशालवक्ष:स्थलरुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

हे हाथों में दण्डरूपी आयुध धारण करनेवाले धर्मराज! काले-काले अञ्जन के समान विशाल नेत्रोंवाले, विशाल वक्ष:स्थलवाले और भयंकर रूपवाले आपको नमस्कार है, हमारी पूजा को ग्रहण करें।

पुष्पाञ्जलिः

कालाय कालरूपाय कालाञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं कालदेव नमोऽस्तु ते॥१॥

काल, कालरूप, काले अञ्जन के समान, प्रभु, दक्षिण दिशा में वास करनेवाले, कालरूपी देव आपको नमस्कार है।

यमो निहन्तापितृधर्मराजो वैवस्वतो दण्डधरश्च कालः।
प्रेताधिपो दत्तकृपानुसारी कृतान्त एतद्दशभिर्जपन्ति॥२॥

यम, निहन्ता, पितृ, धर्मराज, वैवस्वत, दण्डधारी, काल, प्रेताधिपति, कृपाकरने में उदार, अन्त करनेवाले नामों को धारण करनेवाले हमारे ऊपर कृपावान् हों तथा हम इस दीनदशा में आपका यजन करते हैं आप हमारे ऊपर कृपा करें।

धर्मराज महाबाहो दक्षिणाधिपतये नमः।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय॥३॥

हे महाबाहु धर्मराज! दक्षिण दिशा के अधिपति आपको नमस्कार है, आप इसी क्षण हमारी पीड़ाओं से निवारण कीजिए।

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीकालः प्रीयतां न मम।

मृत्युबलिदानम्

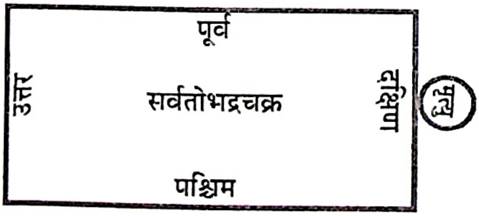

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये मृत्यवेपायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से दक्षिण दिशा में बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से दक्षिणदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मृत्योर्बलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मृत्योर्बलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मृत्यु! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समंविग्रह अन्तरूप।
अन्तविरूपे विनियोगकारी मृत्युस्वरूपाय नमो नमस्ते॥

हे अन्तरूप! इस अनन्त संसार रूपी महासमुद्र में फँसें हुए हमारी रक्षा कीजिए, हे अन्तरूप! हे विरूप! विनियोग करनेवाले, हे मृत्युस्वरूप! आपको नमस्कार है।

पुष्पाञ्जलिः

मृत्यवे मृत्युरूपाय अन्ताञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं मृत्युदेव नमोऽस्तुते॥

हे मृत्यु! हे मृत्युरूप! जीवन का अन्त करनेवाले, घोर अन्धकार के समान, प्रभु, दक्षिण दिशा में रहनेवाले मृत्युदेव आपको नमस्कार है।

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीमृत्युः प्रीयतां न मम।

पीठस्थदिग्पालादिबलिदानम्

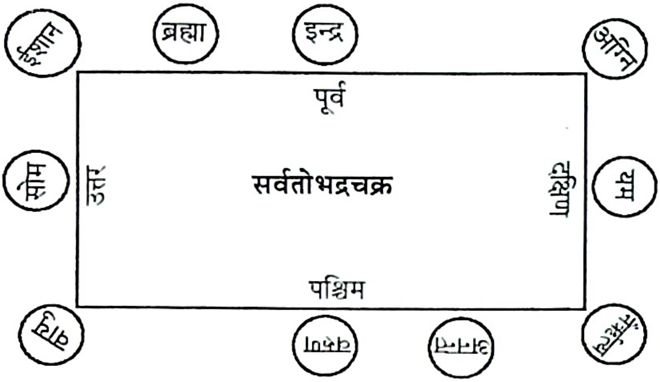

पुरश्चरण गृह अथवा मण्डप के बाहर चारो तरफ दिग्पालों को बलिदान प्रदान करे, पूर्व में इन्द्र, अग्निकोण में अग्नि, दक्षिण में यम, नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋति, पश्चिम में वरुण, वायुकोण में वायु, उत्तर में सोम, ईशानकोण में ईशान तथा पूर्व और ईशानकोण के बीच में ब्रह्मा तथा अन्त में नैर्ऋत्यकोण तथा पश्चिम के बीच में अनन्त के लिए बलि प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये दशदिग्पालेभ्यः पायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

ऐरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाभिधो देवस्तस्मादिन्द्राय ते नमः॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यो मे पूर्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्तं देवराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यो मे आग्नेयगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अग्निस्तं तेजराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यो मे दक्षिणगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा निर्ऋतिस्तं रक्षराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यो मे पश्चिमगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वरुणस्तं जलराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यो मे वायव्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वायुस्तं प्राणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यो मे उत्तरगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा सोमस्तं ताराराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यो मे ईशानगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ईशानस्तं गणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यो मे ऊर्ध्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ब्रह्मास्तं प्रजाराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यो मे अधोगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अनन्तस्तं नागराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

प्रार्थना

इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिः, वरुणवायुसोमेशाः।
ब्रह्मा-अनन्त-सहिताः, प्रसीदन्तु सदा मम॥१॥

इन्द्र-अग्नि-यम-निर्ऋति-वरुण-वायु-सोम-ईशान-ब्रह्मा तथा अनन्त सदा हमारे ऊपर प्रसन्न रहें॥१॥

पायसो-बलिदानेन सन्तुष्टः सर्वदा भवेत्।
तेषां बलिं प्रयच्छामि, भवन्तु प्रीतिः सर्वदा॥२॥

पायस के बलिदान से प्रसन्न होने वाले, सर्वदा सन्तुष्टि और प्रसन्नता के लिए बलि समर्पित करता हूँ, इस बलिदान से सदैव प्रसन्न होकर हमारी रक्षा करें॥२॥

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुःशशीभूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्चशुक्रः शनिराहुकेतवः,
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन दशदिग्पालाः प्रियन्तां न मम।**

भूतादिबलिदानम्

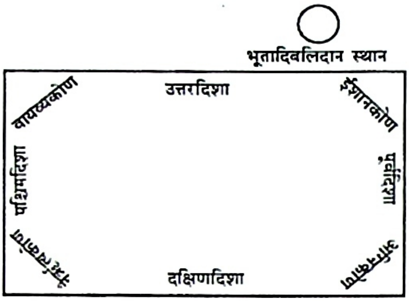

दशदिग्पालादि बलिदान के बाद घर के भवन के बाहर जाकर भूतादि बलिदान करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान कभी न करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान करने से दोष होता है।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये भूतेभ्यः पायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पीठ के बाहर मण्डल का पूजनकर बलिपात्र रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन कर वामाङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

भूता ये च विघ्नकर्तारः दिवि भूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थसंस्थाश्च शिवयोगेन भाविता॥१॥

जो भूतपिशाचादि विघ्न करने वाले द्युलोक-अन्तरिक्षलोक-भूलोक-पाताल में विचरण करनेवाले, सभी शिवयोग से भावित होकर (कल्याण की भावनावाले होकर)॥१॥

क्रूराद्याः शतसंख्यकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्यसंख्यांश्च इन्द्राद्याव्यवस्थिताः॥२॥

सैकड़ों क्रूर प्रकृतिवाले, पाखण्डादि में रत रहनेवाले, ध्रुवादि सैकड़ों की संख्यावाले, इन्द्रादि रूप में व्यवस्थित रहनेवाले॥२॥

तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम्।
नगरे वाऽथ संग्रामे अटव्यां वै सरित्तटे॥३॥

नगर या संग्राम-स्थल में पहाड़ों की ऊँचाइयों पर, नदियों के तट पर रहनेवाले, हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥३॥

वापीकूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे।
नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये॥४॥

वापी, कूप, तडाग, वृक्षादि, श्मशानादि, चौराहों पर रहनेवाले, नानारूप को धरकर रहनेवाले, बहुत रूपोंवाले हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥४॥

यत्र तत्र विचरन्ति भूतप्रेतादि सर्वदा।
ते सर्वे चैव सन्तुष्टाः बलिं गृह्णन्तु मे सदा॥५॥

हमेशा इधर-उधर विचरनेवाले भूत-पिशाचादि सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मनवाले हों॥५॥

ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः।
मातरोप्युग्रहरूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥६॥

जो रौद्र रूप धारण करके, रौद्र कर्म में लिप्त, रौद्र स्थान में निवास करनेवाले, जो पिशाचिनी मातायें उग्र रूपोंवाली, सेवकों के अधिपति, सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मनवाले हों॥६॥

भूचरा खेचराश्चैव तथा चैवान्त रक्षगा।
ते सर्वे प्रीतमनसाः प्रतिगृह्णत्विमं बलिम्॥७॥

भूमि पर विचरण करनेवाले भूचर, आकाश में रहनेवाले नभचर, सभी हमारी रक्षा करें, वे सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मनवाले होकर हमारी रक्षा करें॥७॥

पुष्पाञ्जलिः—प्रार्थना करने के बाद हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहित्वा विधिवत् प्रयुक्तम्।
सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे अन्यत्रवासं परिकल्पयन्तु॥

जो इस भूतल पर भूतपिशाचादि निवास करते हैं, वे विधिवत् प्रदान किये गये इस

बलि को ग्रहण करके सन्तोष के साथ, अन्यत्र अपना वास बनायें अर्थात् हमारे पूजन स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान में अपना निवास बनायें।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः प्रीयतां न मम।**

दैनिकबलिदानं परिपूर्णम्

⁂

वटुकादि बलिदान की आवश्यकता—साधनाओं में बहुत प्रकार की कमियाँ होती हैं, जिसके कारण उपासना में बहुत प्रकार के विघ्न उपस्थित होते रहते हैं ये बाधायें अधिदैविक अधिभौतिक तथा आध्यात्मिक मुख्य तीन प्रकार के होते हैं, जिससे उपसनायें सर्वत्र बाधित होती हैं और साधक को साधनाओं का लाभ नहीं मिल पाता है, विघ्नों के कारण साधकों को उनकी उपासनाओं का आत्यन्तिक फल देव प्रसन्नता नहीं प्राप्त होता, जिससे उसे कर्म की सिद्धि नहीं प्राप्त होती तथा साधकों द्वारा किये गये समस्त प्रयास विफल हो जाते हैं, उनका समस्त प्रयास ही दुःखदायी हो जाता है। साधक की उपासना में कोई विघ्न उपस्थित न हों तथा उनके उपासना का मार्ग अनवरत रूप से निर्विघ्न रूप से प्रसस्त होता रहे इसलिए वटुकादि को नियमित रूप से बलिदान करना चाहिये, तन्त्र विधि हो अथवा वैदिक विधि सभी में समान रूप से वटुक, योगिनी, गणेश, क्षेत्रपाल तथा राजराजेश्वर सदाशिव को पूजन पूर्वक बलि प्रदान करना चाहिये। साधना में किसी प्रकार का अरिष्ट उपस्थित न हो जायें इसके लिए काल और मृत्यु का भी पूजन करके बलि प्रदान करना चाहिये,कहा भी गया **कालं मृत्युं च सम्पूज्य सर्वारिष्ट प्रशान्तये।** ये सब अधिदैविक विघ्न होते है जो बलिदान से सन्तुष्ट होकर साधक के लिए पोषक हो जाते है तथा साधनाओं में सहयोग करते है। वटुक, योगिनी, गणेश, क्षेत्रपाल तथा भैरव के साथ साथ काल तथा मृत्यु को बलि प्रदान करने के बाद भूतप्रेतादि को भी गृह के बाहर जाकर बलिदान प्रदान करे, भूतप्रेतादि को बलि प्रदान करने से सभी साधक के प्रति सौहार्द्र भाव रखते है तथा साधक को विघ्न नहीं पहुचाते साथ साथ पोषक होकर सुरक्षा भी प्रदान करते है। अन्त में दिग्पालों को बलि प्रदान करे जिससे साधक की सुरक्षा होती है बलिदान प्राप्त करने के बाद दिग्पाल भी साधक के लिए पोषक होकर उसके कर्म को पूर्णता प्रदान करते हैं अतः दिग्पालों को नियमित बलि प्रदान करना चाहिये, बलि प्रदान करने के बाद अपने स्थान को कीलित कर सुरक्षित बनाने के लिए दिग्रक्षण कर्म करे।

अखण्डदीपपूजनम्

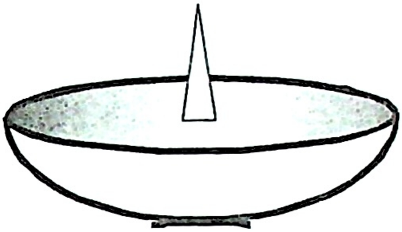

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये अखण्डदीपपूजनं करिष्ये।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ अ॒ग्निर्ज्ज्योति॒र्ज्ज्योति॑र॒ग्निः॑स्वाहा॒सूर्य्यो॒ज्ज्योति॒र्ज्ज्योतिः॒सूर्य्यः॒स्वाहा॑॥ अ॒ग्निर्व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॒सूर्य्यो॒व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॑॥ ज्ज्योतिः॒सूर्य्यः॒सूर्य्यो॒ज्ज्योतिः॒स्वाहा॑॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अखण्डदीपय नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

पाद्यार्घ्याचमनीयम्—दोनों हाथों से पाद्यार्घ्याचमनीय समर्पित करे—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अखण्डदीपय नमः पाद्यार्घ्याचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अखण्डदीपय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयजलपात्र लेकर समर्पित करे—

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अखण्डदीपय नमः शुद्धोदकस्नानीयजलं समर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्पसमर्पणम्—गन्धाक्षतपुष्प लेकर समर्पित करे—

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अखण्डदीपय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अखण्डदीपय नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

नैवेद्याङ्गदक्षिणासमर्पणम्—दक्षिणा समर्पित करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अखण्डदीपय नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

पूजनसमर्पणम्—जल लेकर समर्पित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनेन पूजनेन दीपस्थदेवताः नमः प्रीयन्तां न मम।

प्रार्थना

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

अखण्डदीपपूजनं परिपूर्णम्

* * *

पुस्तकपूजनम्

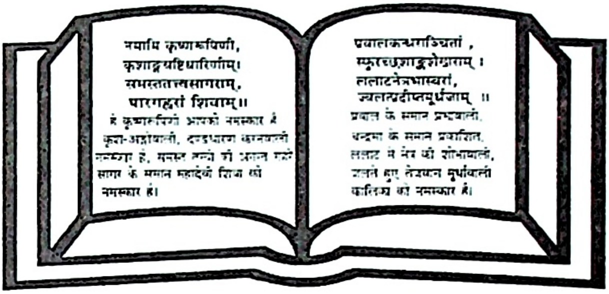
नमामि कृष्णरूपिणीं,
कृशाङ्गयष्टिधारिणीम्।
समस्ततत्त्वसागराम्,
पारगह्वरां शिवाम्॥
प्रवालकन्धराञ्चितां ,
स्फुरच्छशाङ्कशेखराम् ।
ललाटनेत्रभास्वरां,
ज्वलत्प्रदीप्तमूर्धजाम् ॥

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये वाङ्मयमूर्तिस्वरूपिणी पुस्तकपूजनं करिष्ये।**

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर पुस्तक में भगवती सरस्वती का ध्यान करे—

ॐ पावकानꣳसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती॥ यज्ञंव॒ष्टुधियावसुꣳ॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥१॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

पाद्यार्घ्याचमनीयम्—दोनों हाथों से पाद्यार्घ्याचमनीय समर्पित करे—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः पाद्यार्घ्याचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयजलपात्र लेकर समर्पित करे—

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः शुद्धोदकस्नानीयजलं समर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्पसमर्पणम्—गन्धाक्षतपुष्प लेकर समर्पित करे—

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

नैवेद्याङ्गदक्षिणासमर्पणम्—दक्षिणा समर्पित करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥१॥
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वाड्मयमूर्तिस्वरूपिणिसरस्वत्यै नमः स्तुतिप्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—जल लेकर पूजन समर्पित करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनेन पूजनेन दीपस्थदेवताः नमः प्रीयन्तां न मम।

पुस्तकपुजनं परिपूर्णम्

⁂

मूलमन्त्रजपम्

विनियोगः—**अस्य श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरान्यासमहामन्त्रस्य त्रिपुरारी महामहेश्वरऋषिः, जगतीछन्दः, श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता, हूंबीजं, ह्रींशक्तिः, क्लींकीलकं समस्तकामना-संसिद्ध्यर्थे न्यासे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिपुरारीमहामहेश्वरऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जगतिछन्दसे नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदये। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूंबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रींशक्तये नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लींकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूं तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतप्रत्यङ्गिरायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूं शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं कवचाय हूम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतप्रत्यङ्गिरायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। चारो तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

श्रीष्टध्यानम्

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥

मूलमन्त्रप्राणायामम्—पूरक, कुम्भक, रेचक विधि से प्राणायाम करे—

मन्त्र कुल्लुका

ॐ क्रीँ हूँ स्त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ फट्। सिर पर दस बार जप करे—

मन्त्रसेतु

ॐ । ॐकार का हृदय पर दस बार न्यास करे—

मन्त्रमहासेतु

क्रीँ। कालिका मूलबीज का कण्ठस्थित विशुद्ध चक्र पर दस बार न्यास करे—

मन्त्रनिर्वाणम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्सौँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ। दस बार सिर पर न्यास करे—

मुखशोधनम्

क्रीँ क्रीँ क्रीँ ॐ क्रीँ क्रीँ क्रीँ। बोल कर दस बार जप करे—

प्राणयोगम्

ह्री ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ह्रीँ। श्वास-प्रश्वास के साथ दस बार जप करे—

उद्दीपनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा ॐ। हृदय पर दस बार जप करे—

मूलमन्त्रम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै ऐं क्लीं ह्रीं हूं स्वाहा। मूल मन्त्र जप करे—

मूलमन्त्रार्थम्

ॐ (तार)—दीर्घऊकार—सदाशिव, ँ—(नाद) लोकनायक पापघातक। **भावार्थ**—सदाशिव हमारे पापों को नष्ट करें।

हूं (क्रोधबीज)—**ह**—आकाशतत्त्वात्मक सर्वव्यापक सदाशिव, **र**—अनन्ततेजोमय ब्रह्म, **ऊ**—उमेश महाकालभैरव, —(अनुस्वार) व्यापक। **भावार्थ**—अनन्ततेजोमय सर्वव्यापक परमेश्वर महाकालभैरव हमारे दु:खों का विनाश करें।

ह्रीं (भुवनेश्वरीबीज)—**ह**—सर्वव्यापक, **र**—अनन्ततेजोमयी, ं—(अनुस्वार)—स्थूलब्रह्मस्वरूपिणी, **ई**—(दीर्घ ईकार)—महामाया। **भावार्थ**—अनन्ततेजोमयी सर्वव्यापक स्थूलब्रह्मस्वरूपिणी महामाया हमारे पापों को नष्ट करें।

क्लीं (कामबीज)—**क**—महाकाल की कलना शक्ति, **ल**—सर्वस्थूल, **ई**—महामाया, —(अनुस्वार) व्यापक। **भावार्थ**—परमतेजोमयी सदाशिव की सर्वव्याप्त स्थूलाशक्ति हमारे समस्त कामनाओं की पूर्ति करें।

ऐं(वाग्भवबीज)—**ऐ**—वाग् बीज, —अनुस्वार—स्थूल व्यापक। **भावार्थ**—सर्वस्थूल व्यापक वाणी की अधीश्वरी हमारे दु:खों को समाप्त करें।

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै—सम्बोधन—नामरूप। **भावार्थ**—स्थूलरूप से समस्त अंङ्गों में व्याप्त विपरीत रतातुरा भद्रकाली महाप्रत्यङ्गिरा।

स्वाहा(पल्लव)—देवी तृप्ती प्रदायक।

भावार्थ—ॐकार स्वरूपी सदाशिव हमारे पापों को नष्ट करें, अनन्ततेजोमय सर्वव्यापक परमेश्वर महाकालभैरव हमारे दु:खों का विनाश करें, अनन्ततेजोमयी सर्वव्यापक स्थूलब्रह्मस्वरूपिणी महामाया हमारे पापों को नष्ट करें, परमतेजोमयी सर्वव्याप्त स्थूलशक्ति समस्त कामनाओं की पूर्ति करें, सर्वस्थूल व्याप्त वाणी की अधीश्वरी हमारे दु:खों को समाप्त करें, सर्व स्वरूपिणी विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा स्थूलरूप से समस्त अंङ्गों में व्याप्त हो कर हमारी रक्षा करें।

मालाप्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥

सर्व शक्ति स्वरूपिणी महामाया माला चतुवर्ग की सिद्धि के लिए न्यास करता हूँ हमारे लिए सिद्धि प्रदायी हो जाओ॥१॥

ॐ अविघ्नं कुरु मालेत्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥२॥

हे माला! हमारे जप को निर्विघ्न करें, दक्षिण हाथ में ग्रहण करता हूँ, जप काल में हमारे ऊपर प्रसन्न होकर सिद्धि प्रदान करें॥२॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अक्षमालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

माला का यथोपचार पूजन करके दक्षिण हाथ मध्यमा अङ्गुलि के मध्य पर्व पर स्थापित कर, हाथ को हृदय प्रदेश में स्थापित करके, प्रत्येक गुटिका को सरकाते हुए, सुमेरु अलङ्घनपूर्वक, हृत्पद्म में विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा देवता का तथा सहस्रार में श्रीगुरु का ध्यान करते हुए, जिह्वा में मन्त्र को दीपशिखावत भावना करते हुए, सहस्रार से अमृतस्राव पूर्वक अमृत पान करते हुए न्यूनतम एक सहस्र अथवा विहित सङ्ख्या जप करे।

जप के पश्चात् माला को सिर पर रखकर माला की प्रार्थनापूर्वक विसर्जन करे।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा॥

हे माले! तुम सभी देवताओं को प्रसन्नता और शुभता प्रदान करनेवाली हो, हे भद्रे हमारा कल्याण करें तथा हमें यश और बल प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः। सिर से माला को हाथ में लेकर।

माला का पुनः पूजन करके मालाधार पर माला को स्थापित करके मूल मन्त्र से पूरक, कुम्भक, रेचनपूर्वक प्राणायाम के बाद ऋष्यादि न्यास करके देवी के वाम कर में जप को समर्पित करे।

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

गुह्य से भी अतिगुह्य, गोप्य से भी गोप्य, हे देवि! हमारे जप को ग्रहण कर हमारे कार्य सिद्धि रूपी कृपाप्रसाद प्रदान करें।

जप के बाद अपने बाँये चतुरस्र मण्डल बनाकर किसी पात्र में माषान्न, शाक, आज्य, पायस अपूपादि पदार्थ रख कर देवी को महानिशा काल में बलि प्रदान करे।

बलिपदार्थसंस्कारम्

ॐ यँ। षोडश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ फट्। चक्रमुद्रा से अभिरक्षण करे।

ॐ फट्। बलिपदार्थ का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ नमः। बलिपदार्थ का अभ्यर्चन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा। आठ बार जप कर अभिमन्त्रण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतप्रत्यङ्गिरा एष बलिर्न मम। नैर्ऋत्य दिशा में बलि प्रदान करे।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ पद्मे पद्मे महापद्मे पद्मावति महायक्षाधिपतये मयानीतमिमं बलिं गृह्ण गृह्ण सर्वदुष्टान् ग्रस ग्रस मम सर्वशान्तिं कुरु कुरु परविद्यां चाकृष्याकृष्य मम विघ्नान् छिन्धि छिन्धि हुँ फट् स्वाहा। काम्य प्रयोगों में अर्धरात्रि को बलि प्रदान करे।

मूलमन्त्रजपं परिपूर्णम्

⁂

विपरीतप्रत्यङ्गिरास्तोत्रम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीमहाविपरीतप्रत्यङ्गिरास्तोत्रमहामन्त्रस्य महाकालभैरवऋषिः स्त्रिष्टुप्छन्दः श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता हूंबीजं ह्रींशक्तिः क्लींकीलकं मम सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालभैरवऋषये नमः शिरसि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूंबीजाय नमः गुह्ये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रींशक्तये नमः पादयोः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लींकीलकाय नमः नाभौ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हृदयाय नमः।

ॐ हूं शिरसे स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं शिखायै वषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं कवचाय हुम्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अस्त्राय फट्।

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥

ध्यान करने के बाद स्तोत्र का पाठ करे—

महेश्वर उवाच

श्रृणुदेंवी! महाविद्यां सर्वसिद्धि प्रदायकम्।
यस्यविज्ञानमात्रेण शत्रुवर्गा लयं गताः॥१॥
विपरीत महाकाली सर्वभूत भयंकरी।
यस्याः प्रसादमात्रेण कम्पते च जगत्रयम्॥२॥
न च शान्तिप्रदः कोऽपि परमेशो नचैवहि।
देवताः प्रलयं यान्ति किं पुनर्मानवादयः॥३॥
पठनाद्धारणाद्देवि! सृष्टि संहारको भवेत्।
अभिचारादिकाः सर्वा या या साध्यतमाः क्रियाः॥४॥
स्मरणेन महाकाल्या नाशंजग्मुः सुरेश्वरि।
सिद्धविद्या महाकाली यत्रेवेह च मोदते॥५॥
सप्तलक्ष महाविद्या गोपिता परमेश्वरि।
महाकाली महादेवि! शङ्कर श्रेष्ठदेवता॥६॥
यस्या प्रसाद मात्रेण परब्रह्म महेश्वरः।
कृतिमादिविषघ्नीषा प्रलयादि निवर्तिका॥७॥

त्वदङ्घ्रि दर्शनादेव कम्पमानो महेश्वरः।
यस्यनिग्रह मात्रेण पृथिवी प्रलयं गता॥८॥
दशविद्या यदाज्ञाता दशद्वार समाश्रिता।
प्राचीद्वारे भुवनेशी दक्षिणेकालिका तथा॥९॥
नाक्षत्री पश्चिमे च उत्तरे भैरवी तथा।
ऐशान्यां सततं देवि! प्रचण्डचण्डिका तथा॥१०॥
आग्नेयां बगला देवी रक्षः कोणे मातङ्गिनी।
धूमावती च वायव्ये अधश्चोर्ध्वे च सुन्दरी॥११॥
सम्मुखे षोडशी देवी जाग्रत्स्वप्नस्वरूपिणी।
वामभागे च देवेशी महात्रिपुरसुन्दरी॥१२॥
अंशरूपेण देवेशी सर्वादेव्याः प्रतिष्ठिताः।
महाप्रत्यङ्गिरा चैव प्रत्यङ्गिरा तथोदिता॥१३॥
महाविष्णु यदाज्ञाता भुवनानां महेश्वरि।
कर्तापाता च संहर्ता सत्यं सत्यं वदामिते॥१४॥
भुक्तिमुक्तिप्रदादेवि महाकाली सुनिश्चितम्।
वेदाशास्त्रप्रगुप्ता सा नन्दस्यच दैवतैरपि॥१५॥
अनन्तकोटिसूर्याभा सर्वजन्तु भयङ्करी।
ध्यानज्ञानविहिना सा वेदान्तामृत वर्षिणी॥१६॥
सर्वमन्त्रमयी काली निगमाऽगम कारिणी।
निगमाऽगमकारी सा महाप्रलयकारिणी॥१७॥
यस्याङ्गधर्मलवा च सा गङ्गापरमोदिता।
महाकाली नगेऽनुस्था विपरीता महोदया॥१८।
विपरीता प्रत्यङ्गिरा तत्र काली प्रतिष्ठिता।
साधकस्मरणमात्रेण शत्रूणां निगमाऽगमाः॥१९॥
नाशं जग्मुः नशीं जग्मुः सत्यं सत्यवदामि ते।
परब्रह्ममहादेवी पूजनैरीश्वरी भवेत्॥२०॥
शिवकोटि समोयोगी विष्णुकोटिसमः स्थिरः।
सर्वैराराधितासावै भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी॥२१॥
गुरु मन्त्रं शतं जप्त्वा श्वेत सर्षपमानयेत्।
आत्मरक्षा शत्रुनाशं सा करोति तक्षणात्॥२२॥
ऋषिः न्यासादिकं कृत्वा सर्षसपैर्मारणं चरेत्।
सन्तपिनी संहारिणी रौद्री च भ्रामिणि तथा॥२३॥

जृम्भिणी द्राविणी चैव क्षोभिणी मोहिनी ततः।
स्तम्भिनी चांऽश रूपस्ताः शत्रुपक्षे नियोजिता॥२४॥
प्रेरिताः साधकेद्रेण दुष्टशत्रुप्रमर्दिकाः।
वृणोति य इमां विद्यां शृणोति च सदाऽर्पिताम्॥२५॥
यावत्कृत्यादि शत्रूणां तत्क्षणादेवनश्यति।
मारणं शत्रूवर्गाणां रक्षणाय चात्मपरम्॥२६॥
आयुर्वृद्धियशो वृद्धिस्तेजो वृद्धिस्तथैव च।
कुबेर इव वित्ताढ्यः सर्वसौख्यमवाप्नुयात्॥२७॥
वाय्यवादिनामुपसमनं विषमज्वरनाशनम्।
परवित्तहरा सा वै परप्राणहरा तथा॥२८॥
पर क्षोभादिककरा तथा सम्पत्करा शुभा।
स्मृति मात्रेण देवेशि! शत्रुवर्गाः लयं गताः॥२९॥
इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यं दुर्लभा दैवतैरपि।
शठाय परशिष्याय न प्रकाश्या कदाचन॥३०॥
पुत्राय भक्तियुक्ताय स्वशिष्याय तपस्विने।
प्रदातव्या महाविद्या चतुर्वर्गप्रदा यतः॥३१॥
विनाध्यानैर्विनाजापैर्विनापूजा विधानतः।
विनाषोढा विनाज्ञानैर्मोक्षसिद्धिः प्रजायते॥३२॥
पर नारि हरा विद्या पर रूप हरा तथा।
वायुश्चद्रः स्तम्भकरा मैथुनानन्दसंयुता॥३३॥
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेत्भक्तितः सदा।
मम कोटिसमो देवि! मम कोटिसमो भवेत्॥३४॥
क्रोधादेव गणाः सर्वेलयं यास्यन्ति निश्चितम्।
किं पुनर्मानवा देवि! भूतप्रेतादयो मृता॥३५॥
विपरीता समाविद्या न भूता न भविष्यति।
पठनान्ते परब्रह्म विद्या स भास्करा तथा॥३६॥
मातृका पुटितं देवि! दशधा प्रजपेत्सुधीः।
वेदादि पुटिता देवि! मातृकानन्तरूपिणी॥३७॥
तथा हि पुटितां विद्यां प्रजपेत्साधकोत्तमः।
मनोजित्वा जपेल्लोकं भोगं रोगं तथा यजेत्॥३८॥
दीनतां हीनतां जित्वा कामिनीं निर्वाण पद्धतिम्।

प्रयोगार्थमन्त्रम्

ॐ हूं स्फारय स्फारय मारय मारय शत्रुवर्गान्नाशयन्नाशय स्वाहा॥

मूलमन्त्रम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा॥

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरास्तोत्रमहामन्त्रस्य महाकालभैरवऋषिः स्त्रिष्टुप्छन्दः श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता हूंबीजं ह्रींशक्तिः क्लींकीलकं मम सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालभैरवऋषये नमः शिरसि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं स्त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूंबीजाय नमः गुह्ये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रींशक्तये नमः पादयोः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लींकीलकाय नमः नाभौ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हृदयाय नमः।

ॐ हूं शिरसे स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं शिखायै वषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं कवचाय हुम्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥

सहस्त्राक्षरीमहामन्त्रम्

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमो विपरीत महाप्रत्यङ्गिरायै सहस्त्रानेककार्य लोचनायै कोटिविद्युज्जिह्वायै महाव्यापिन्यै संहाररूपायै जन्म शान्ति सफल कारिण्यै ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रादि परिवारास्य भाविभूतभवच्छत्रुन्दारापत्यान् संहारय संहारय महाप्रभावं दर्शय दर्शय हिलि हिलि किलि किलि मिलि मिलि चिलि चिलि भूरि भूरि विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ध्वंसय ध्वंसय प्रध्वंसय प्रध्वंसय ग्रासय ग्रासय पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय वित्रासय वित्रासय मारय मारय विमारय विमारय भ्रामय भ्रामय विभ्रामय विभ्रामय द्रावय द्रावय विद्रावय विद्रावय हूँ हूँ फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे हूँ लँ ह्रीँ लँ क्लीँ लँ ॐ लँ फट् फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवाराय यावच्छत्रून्देवता पितृ-पिशाच-नाग-गरुण-किन्नर-नरलोक-पातालान्समान्त्रान्सौषधान्सायुधान्स सहायान्पाणौ छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि निकृन्तय निकृन्तय छेदय छेदय उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय तेषां साहंकारादि धर्मान्कीलय कीलय घातय घातय नाशय नाशय विपरीत प्रत्यङ्गिरे स्फ्रैँ स्फैँत्कारिणी ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्र परिवारकस्य शत्रूणां सर्व विद्याः कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय मुखं कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय नेत्राणि कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय दन्तान्कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय जिह्वां कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय पादौ कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय गुह्यं कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय सकुटुम्बानां कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्नानं कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय सं प्राणान्कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! सपत्नी ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वतो रक्षां कुरु कुरु फट् फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! ममात्मनः सपत्नी पुत्रपौत्र सपरिवारस्य भूतभविष्यवर्तमान शत्रूणामुच्चाटनमुच्चाटनं कुरु कुरु फट् फट् स्वाहा। ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ वँ वँ वँ वँ वँ वँ वँ लँ लँ लँ लँ लँ लँ लँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ यँ यँ यँ यँ यँ यँ यँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमो भगवति विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! दुष्ट चाण्डालिनी त्रिशूलवज्रांकुश शक्ति शूल धनुः शरपाश धारिणी शत्रु रुधिर चर्म मेदो मांसाऽस्थि मज्जा शुक्र मेहन वसा वाक् प्राण मस्तक हेत्वादि भक्षिणी परब्रह्मशिवेज्वालादायिनी मालिनी शत्रूच्चाटन मारण क्षोभण स्तम्भन मोहन द्रावण जृम्भण भ्रामण रौद्रण सन्तापन यन्त्रमन्त्रतन्त्रार्याग पुरश्चरण भूतशुद्धि पूजाफल परमनिर्वाण हारण कारिणी कपाल खट्वाङ्ग परशुधारिणी मामत्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य भूत भविष्य वर्तमान शत्रून्ससहायान् सवाहनान् हन हन रण रण दह दह दम दम धम धम पच पच मथ मथ लङ्घय लङ्घय खादय खादय चर्वय चर्वय व्यथय व्यथय ज्वारय ज्वारय मूकं कुरु कुरु ज्ञानं हर हर हूँ हूँ फट् फट् स्वहा। हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! फट् फट् स्वाहा। ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य शत्रूणां कृत मन्त्रयन्त्रतन्त्रहवन कृतौषध विषचूर्ण शस्त्राद्यभिचार सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते करिष्यति वा तान् सर्वान् हन हन स्फारय स्फारय सर्वतो रक्षां कुरु कुरु हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा। हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्र सपरिवास्य शत्रवः अभिचाराः कुर्वन्ति करिष्यन्ति शत्रुश्च कारयामास कारयन्ति कारयिष्यन्ति याऽन्यां कृत्यान्तैः सा धर्मं तास्तां विपरीतां कुरु कुरु नाशय नाशय मारय मारय श्मशान स्थानं कृत्यादिकां क्रियां भाविभूतभवशत्रूणां शवत्कृत्यादिकां क्रियां विपरीतां कुरु कुरु तान् डाकिनी मुखे हारय हारय भीषय भीषय त्राशय त्राशय परमशमनरूपेण हन हन धर्मावच्छिन्नं निर्वाणं हर हर तेषामिष्टदेवानां शासय शासय क्षोभय क्षोभय

प्राणादि मनोबुद्ध्यहंकार क्षुत्तृषाकर्षण लयन आवागमन मारणादिकं नाशय नाशय हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ फट् फट् स्वाहा। ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्र सपरिवास्य शत्रूणां कृत समस्ताभिचारं तेषां इष्ट सहितं नाशय नाशय मारय मारय खादय खादय ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ फट् फट् स्वाहा।

अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ ङँ घँ गँ खँ कँ ञँ झँ जँ छँ चँ णँ ढँ डँ ठँ टँ नँ धँ दँ थँ तँ मँ भँ बँ फँ पँ क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य स्थाने समस्त शत्रूणां कृत्यान् विपरीतान् कुरु कुरु तेषां मन्त्रयन्त्रतन्त्रार्चन श्मशानारोहणभूमिस्थापन भस्मप्रक्षेपण पुरश्चरण होमाभिषेकादिकान् कृत्यान् दूरी कुरु कुरु हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! सपत्नी ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वतः सर्वेभ्यो रक्ष रक्ष हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! फट् फट् स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ

ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! सपत्नी ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य शत्रूणां विपरीत क्रियां नाशय नाशय त्रुटिं कुरु कुरु तेषामिष्टदेवतादि विनाशं कुरु कुरु तेषां सिद्धिमपनयोपनय विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! शत्रुमर्दिनी भयङ्करी शत्रूणां नानाकृत्या मर्दिनि ज्वालिनी महाघोरतरे त्रिभूवन भयङ्करी सपत्नी ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य चक्षुः श्रोत्राणि पादौ सर्वतः सर्वेभ्यः सर्वदा सर्वत्र रक्षां कुरु कुरु हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ वसुन्धरे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य स्थानं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ महालक्ष्मि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य पादौ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ चण्डिके ममात्मनः सपत्नी पुत्रपौत्रपरिवारस्य जङ्घे रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ प्रचण्ड चण्डिका ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य जानुं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ चामुण्डे ममात्मनः सपत्नी पुत्रपौत्र परिवारस्य गुह्यं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ इन्द्राणि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य नाभीं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नारसिंहि ममात्मनः सपत्नी पुत्रपौत्र-परिवारस्य बाहुं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ वाराहि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य हृदयं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ वैष्णवि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य कण्ठं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ कौमारि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य वक्त्रं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ माहेश्वरि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य शिरो रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ब्रह्माणि ममात्मनः सपत्नी पुत्रपौत्र-परिवारस्य मानसं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य छिद्रं सर्व गात्राणि रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

ॐ सन्तापिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् सन्तापय सन्तापय हूँ फट् स्वाहा। ॐ संहारिणि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् संहारय संहारय हूँ फट् स्वाहा। ॐ रौद्रि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् रौद्रय रौद्रय हूँ फट् स्वाहा। ॐ भ्रामिणि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् भ्रामय भ्रामय हूँ फट् स्वाहा। ॐ जृम्भिणि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् जृम्भय जृम्भय हूँ फट् स्वाहा। ॐ द्राविणि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् द्रावय द्रावय हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्षोभिणि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् क्षोभय क्षोभय हूँ फट् स्वाहा। ॐ मोहिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् मोहय मोहय हूँ फट् स्वाहा। ॐ स्तम्भिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय हूँ फट् स्वाहा। ॐ उच्चाटिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् उच्चाटयोच्चाटय हूँ फट् स्वाहा। ॐ ज्वालिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् ज्वालयोज्वालय हूँ फट् स्वाहा। ॐ मर्दिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् मर्दय मर्दय हूँ फट् स्वाहा। ॐ नाशिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् नाशय नाशय हूँ फट् स्वाहा। ॐ शोषिणि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् शोषय शोषय हूँ फट् स्वाहा। ॐ कीलनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा। ॐ भक्षिणि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वान् शत्रून् भक्षय भक्षय हूँ फट् स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥१॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥२॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥३॥ अँ आँ

इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥४॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥५॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥६॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥७॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥८॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥९॥ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॥१०॥

हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ

लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ ॥१॥ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ ॥२॥ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ ॥३॥ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ ॥४॥ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वेभ्यः सर्वतः सर्वदा रक्षां कुरु कुरु। मरण भयापनय पापापनय त्रिजगतां पररूपवित्तायुर्मे देहि देहि दापय दापय साधकत्वं प्रभुत्वं च सततं देहि देहि विश्व रूपे धनं पुत्रान्देहि देहि मां परिवारस्य पश्येत् मां देहिनः सर्वे हिंसकाः प्रलयं यान्तु सपरिवारस्य मम शत्रूणां बल बुद्धि हानिं कुरु कुरु तान् स सहायकान् तेषामिष्ट देवतान् संहारय संहारय तस्य उपचारं अपनयो अपनयो ब्रह्मास्त्रादिनि व्यर्थी कुरु कुरु ॐ हूँ हूँ स्फ्रैं स्फ्रैं ठः ठः फट् फट् स्वाहा।

पाठसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन पाठाख्येन विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालभैरवऋषये नमः शिरसि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हूंबीजाय नमः गुह्ये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रींशक्तये नमः पादयोः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लींकीलकाय नमः नाभौ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ हृदयाय नमः।

ॐ हूं शिरसे स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं शिखायै वषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं कवचाय हुम्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥

मालामहामन्त्रं परिपूर्णम्

✲

अग्निस्थापनम्

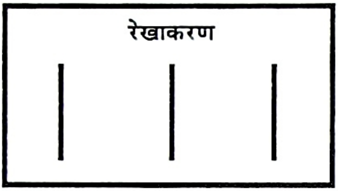

सङ्कल्पः—**ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं अस्मिन् विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि पञ्चभूः संस्कारपूर्वकं अग्निस्थापनं करिष्ये।**

पञ्चभूः संस्कार—चतुरस्र वेदी का निर्माण करके पञ्चभूः संस्कार करे।

कुशैः परिसमुह्य। कुशाओं से भूमि को झाड़ दे।

तान् कुशान् ऐशान्यां परित्यज्य। उन कुशाओं को ईशान कोण में फेंक दे।

गोमयोदकेनोपलिप्य। गाय के गोबर और जल से लेपन करे।

स्रुवमूलेन त्रिःउल्लिख्य। स्रुवा के मूल से तीन रेखा खीचे।

अनामिकाङ्गुष्ठेन मृदमुधृत्य। अनामिका और अङ्गुष्ठ से रेखा के उपर की मिट्टी को हाथ में ग्रहण कर ईशानकोण में फेंक दे।

जलेनाऽभ्युक्ष्य। जल से सिंचन करे।

पञ्चभूःसंस्कार के बाद अग्निस्थापन कर अग्नि का संस्कार करे।

अग्निसंस्कारम्

ॐ अग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे॥ देवाँ२॥आसादयादिह॥ ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वरदानामाग्नये नमः स्थापयामि ।

अग्निस्थापन करने के बाद अग्नि का पञ्चदश संस्कार करने के पश्चात् ग्रहमण्डल का निर्माण करके ग्रहमण्डलस्थदेवताओं का स्थापन पूजन करे।

अग्निसंस्कार—अधोलिखित मन्त्र बोलते हुए अक्षत प्रक्षेपपूर्वक संस्कार करे। संस्कार मे सर्वत्र आज्य से आठ आहुति प्रदान करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः गर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः पुंसवनं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः सीमन्तोन्नयनं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः जातकर्म सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः नालच्छेदनं सम्पादयामि स्वाहा।

मन्त्र से आज्यसम्लुत पञ्चसमिधा का हवन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः सूतकं शोधयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः त्वं वरदनामासि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः नामकरणं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः निष्क्रमणं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः अन्नप्राशनं सम्पादयामि स्वाहा।

साकल्य की आहुति प्रदान करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः चूडाकरणं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः उपनयनं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः महानाग्न्यव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः महाव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः उपनिषद्व्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः गोदानव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः समावर्तनं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अग्नेः विवाहं सम्पादयामि स्वाहा।

प्रतिष्ठा—अग्नि में इष्ट देवता की प्रतिष्ठा करे—

ध्यानम्

ॐ पाशाश्चापासृक्कपालेऋणीषूञ्छूलहस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां, देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥

हाथों में पाश-चाप-सृक्-कपाल-शूलादि धारण किये हुए, रक्त वर्णवाली, रक्त समुद्र में रक्त पोत के समान कमल के ऊपर रक्त सिंहासन पर आसीन तीन नेत्रवाली प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥१॥

ज्वलत्कोटिबालार्कभासारुणाङ्गीं सुलावण्यशृङ्गारशोभाभिरामाम्।
महापद्मकिञ्जल्कमध्ये विराजत्त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्रीभवानीम्॥२॥

बाल सूर्य के समान, अरुण प्रकाश जैसे अङ्गों वाले, सुन्दर लावण्य शृङ्गार से

शोभायमान, महापद्म सहस्रार के मध्य कर्णिका स्थित त्रिकोण में उल्लसित श्रीभवानी का ध्यान करता हूँ॥२॥

क्वणत्किङ्किणीनूपुरोद्भासिरत्नां प्रभालीढलाक्षार्द्रपादारविन्दाम्।
अजेशाच्युताद्यैःसुरैःसेव्यमानां महादेवि मन्मूर्ध्नि ते भावयाम॥३॥

रत्नजटित कङ्कण तथा नुपूर से शोभायमान, लाक्षा के समान प्रभावान् युगलचरण कमल, ब्रह्मा, विष्णु तथा महेशादि देवताओं से सेव्यमान, हमारे अघों का नाश करनेवाली महादेवी का ध्यान करता हूँ॥३॥

सुशोणाम्बराबद्धनीवीविराजन् महारत्नकाञ्चीकलापं नितम्बम्।
स्फुरद्दक्षिणावर्तनाभिं च तिस्रो बली रम्यते रोमराजीं भजेऽहम्॥४॥

सुन्दर सुवर्ण की करधनी कमर में धारण की हुई, महानतम रत्नों से युक्त काञ्ची नितम्ब पर शोभायमान, नाभि प्रदेश पर दक्षिणावर्त तीन बलयों से शोभायमान महादेवी का ध्यान करता हूँ॥४॥

ध्यान के बाद अग्नि में देवता की प्रतिष्ठा करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नौ श्रीमद्विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराया प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नौ श्रीमद्विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराया जीव इह स्थितः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नौ श्रीमद्विपरीतमहाप्रत्यङ्गिराया सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अस्मिन् अग्नौ श्रीमद्विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवताया गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भव।

अग्निस्थापनं परिपूर्णम्

❀

ग्रहाणां पूजनम्

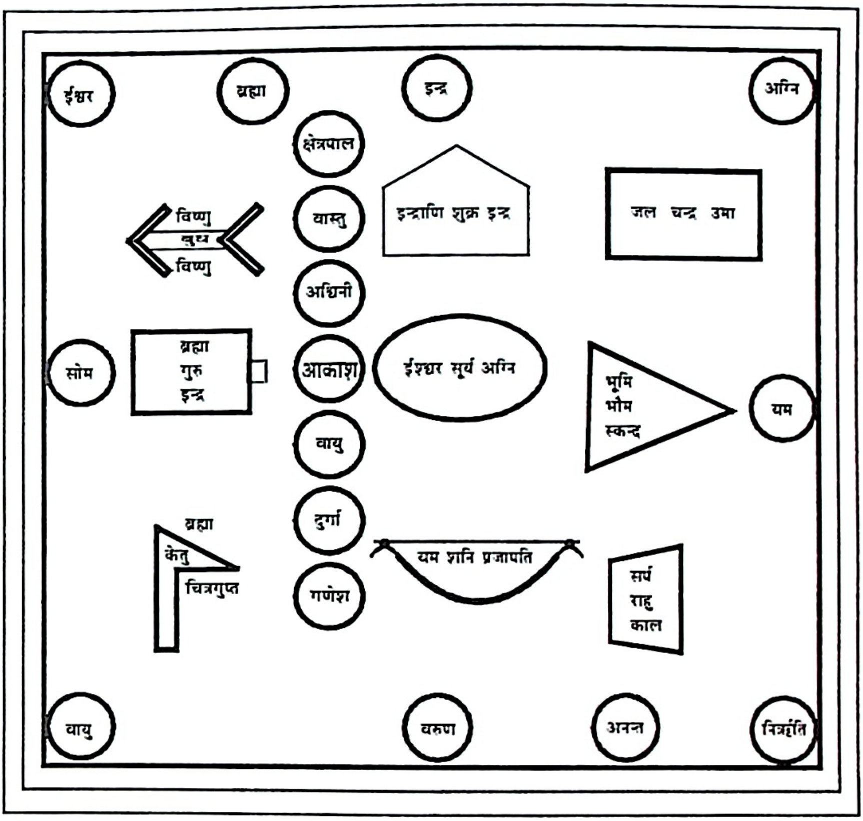
ईश्वर
ब्रह्मा
इन्द्र
अग्नि
क्षेत्रपाल
वास्तु
अश्विनी
आकाश
वायु
दुर्गा
गणेश
विष्णु
बुध
विष्णु
इन्द्राणि शुक्र इन्द्र
जल चन्द्र उमा
सोम
ब्रह्मा
गुरु
इन्द्र
ईश्वर सूर्य अग्नि
भूमि
भौम
स्कन्द
यम
ब्रह्मा
केतु
चित्रगुप्त
यम शनि प्रजापति
सर्प
राहु
काल
वायु
वरुण
अनन्त
निर्ऋति

अग्नि-स्थापन करने के बाद एक चौकी पर सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर रोली से नौ खाना बनाकर चित्रानुसार नवों खानों के बीच के खाने में सूर्य के लिए लाल चावल से गोल आकृति, चन्द्र के लिए अग्नि कोण में सफेद चावल से चौकोर आकृति, भौम के लिए दक्षिण दिशा के खाने में लाल चावल से त्रिकोण आकृति, बुध के लिए ईशान कोण के खाने में हरे चावल से बाण के सदृश आकृति, गुरु के लिए उत्तर दिशा के खाने में पीले चावल से पट्टिशाकार आकृति, शुक्र के लिए पूर्व के खाने में पञ्चकोण की सफेद चावल से आकृति, शनि के लिए पश्चिम दिशा के खाने में काले रंग के चावल से धनुष के आकार की आकृति, राहु के लिए नैर्ऋत्य कोण के खाने में काले चावल से सूर्पाकृति

तथा केतु के लिए काले चावल से पताका की आकृति चित्रानुसार बनाकर उस पर तत्तत् स्थानों पर सुपाड़ी रखकर उस पर समस्त देवताओं का आवाहन करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ------गोत्रः -----प्रवरः------नामाऽहं अस्मिन् प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि ग्रहाणां अधिदेवता-प्रत्यधिदेवतापञ्चलोकपालानाञ्च स्थापनपूजनञ्च करिष्ये।**

सूर्यावाहनम्—सूर्यपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आकृ॒ष्णेन॒रज॑सा॒वर्त॑मानोनिवे॒शय॑न्न॒मृतं॒मर्त्त्यं॑च॥ हि॒रण्यये॑नसवि॒तारथे॒नादे॒वो याति॒भुव॑नानि॒पश्य॑न्॥

जवाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥

जवाकुसुम के समान लाल वर्णवाले, कश्यप गोत्र, महाप्रकाशमान, अन्धकार का नाश करनेवाले, सभी पापों का नाश करनेवाले सूर्य का आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

सोमावाहनम्—चन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ इ॒मंदे॒वा॑ऽअसप॒त्नꣳसु॑वद्धं॑मह॒तेक्ष॒त्राय॑मह॒तेज्ज्यैष्ठ्या॑यमह॒तेजान॑राज्ज्या॒स्येन्द्रि॒याय॑॥ इ॒मम॒मुष्य॑पु॒त्रम॒मुष्यै॑पु॒त्रम॒स्यैवि॒शऽए॒षवो॑ऽमीराजा॒सोमो॒ऽस्माकं॒ब्ब्रा॒ह्मणाना॒ᳪ-राजा॑॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥

दही तथा शङ्ख के समान श्वेत वर्णवाले, क्षीर समुद्र से उत्पन्न, ज्योत्स्ना के पति, रात्रि के स्वामी, सोम (चन्द्र) का आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वंः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ, इह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

भौमावाहनम्—भौमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अ॒ग्निर्म्मू॒र्द्धादि॒वः॑क॒कुत्पतिः॑पृथि॒व्याऽअयम्॥ अ॒पाᳪरेता॑ᳪसिजिन्वति॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यम्॥

पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न, विद्युत् के समान तेजवाले, शक्ति हाथ में लिए हुए कुमार भौम का आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुव: स्व: अवन्तिकादेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ, इह तिष्ठ भौमाय नम: भौममावाहयामि स्थापयामि।

बुधामावाहनम्—बुधपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ उद्बु॑ध्यस्वाग्ने॒प्रति॑जागृहि॒त्वमि॑ष्टापू॒र्त्तेस॒ꣳसृ॑जेथाम॒यञ्च॑॥ अ॒स्मिन्त्स॒धस्थे॒ऽअध्युत्त॑रस्मि॒न्विश्श्वे॑देवा॒यज॑मानश्चसीदत॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

प्रियंगु की कलियों के समान आभावाले, अप्रतिम रूपवाले, सौम्य स्वभाव तथा सौम्य गुणोंवाले बुध का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुव: स्व: मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छ, इह तिष्ठ बुधाय नम: बुधमावाहयामि स्थापयामि।

बृहस्पत्यावाहनम्—बृहस्पतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ बृह॑स्पते॒ऽअति॒द॒र्य्योऽअर्हा॑द्द्युमद्विभाति॒क्रतु॑म॒ज्जने॑षु॥ यद्दीद॒यच्छव॑सऽऋत प्प्रजापत॒तद॒स्म्मासु॒द्द्रवि॑णंधेहिचि॒त्रम्॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥

सुवर्ण के वर्ण के समान पीले रंगवाले, देवताओं तथा मुनियों के गुरु, त्रिलोक में वन्दित गुरु का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुव: स्व: सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ, इह तिष्ठ बृहस्पतये नम: बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

शुक्रमावाहनम्—शुक्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अन्ना॑त्परि॒स्रुतो॒रसं॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्व्य॑पिबत्क्ष॒त्त्रंपय॒ꣳसोमं॑प्प्र॒जाप॑तिः॥ ऋ॒तेन॑स॒त्त्यमि॑न्द्रि॒यं व्वि॒पान॒ꣳशु॒क्रमन्ध॑स॒ऽइन्द्र॑स्येन्द्रि॒यमि॒दंपयो॒ऽमृतं॒मधु॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥

हिमकुन्द मृणाल की आभावाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के प्रवक्ता, शुक्र का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुव: स्व: भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ, इह तिष्ठ शुक्राय नम: शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।

शन्यावाहनम्—शनिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ शंन्नो॑दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ऽआपो॑भवन्तुपी॒तये॑॥ शंय्योर॒भिस्र॑वन्तुनः॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

नीलकमल के समान आभावाले, रवि के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता, छायामार्तण्ड सम्भूत शनि का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ, इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि।

राह्वावाहनम्—राहुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ कया॑नश्चि॒त्रऽआभु॑वदू॒तीस॒दावृ॑ध॒ःसखा॑॥ कया॒शचि॑ष्ठया॒ऽवृ॒ता॥

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्॥

महापराक्रमी, आधे शरीरवाले, चन्द्र तथा सूर्य का विमर्दन करनेवाले, सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न राहु का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः वैराठिनपुरोदेशोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहु! इहागच्छ, इह तिष्ठ राहवे नमः राहुमावाहयामि स्थापयामि।

केत्वावाहनम्—केतुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ के॒तुंकृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒पेशो॑मर्य्याऽअपे॒शसे॑॥ समु॒षद्भि॑रजायथाः॥

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥

पलाश के धूम के समान, तारका ग्रह के मस्तक, भयंकर आकृतिवाले केतु का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ, इह तिष्ठ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि।

ग्रहाणां दक्षिणपार्श्वे अधिदेवतास्थापनम्

शङ्करावाहनम्—शङ्करपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ त्र्य॑म्बकंय्यजामहेसुग॒न्धिंपु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नम्॥ उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्मु॑क्षीय माऽमृतात्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो ईश्वर! इहागच्छ, इह तिष्ठ ईश्वराय नमः ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

उमा-आवाहनम्—उमापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ श्रीश्च॑तेल॒क्ष्मीश्च॒पत्न्या॑वहोरा॒त्रेपा॒र्श्वेनक्ष॑त्राणिरू॒पम॒श्विनौ॒व्या॑त्तम्॥ इष्णण

न्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो उमे! इहागच्छ इह तिष्ठ उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दावाहनम्—स्कन्दपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यदक्क्रन्दःप्प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्सर्मुद्रादुतवापुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमीहजातंतेऽअर्व्वन्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो स्कन्द! इहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः स्कन्दमा-वाहयामि स्थापयामि।

विष्ण्वावाहनम्—विष्णुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ इदंविष्ष्णुर्व्विचक्क्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाᳬसुरेस्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णो! इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मावाहनम्—ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आब्ब्रह्मन्ब्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्न्यःशूरऽइषव्व्योतिव्व्याधीमहारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्व्वोढानड्वानाशुःसप्प्तिःपुरन्धिर्य्योषाजिष्णूरथेष्ट्ठाःसभेयोयुवास्ययजमानस्यावीरोजायतान्निकामेनिकामेनःपर्ज्जन्न्योवर्षतुफलवत्त्योनओऽषधयः पच्च्यन्तांय्योगक्षेमोनःकल्प्पताम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मा! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिःसोमंपिबवृत्रहाशूरविद्वान्॥ जहिशत्रूँ२॥रपमृधोनुदस्वाथाभयंकृणुहिव्विश्श्वतोनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्र! इहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

यममावाहनम्—यमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो यम! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

कालावाहनम्—कालपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्त्वाऽक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो काल! इहागच्छ इह तिष्ठ कालाय नमः कालमावाहयामि स्थापयामि।

चित्रगुप्तावाहनम्—चित्रगुप्तपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो चित्रगुप्त! इहागच्छ इह तिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।

ग्रहाणां वामपार्श्वे प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

अग्न्यावाहनम्—अग्निपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अग्ग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे॥ देवाँ२॥आसादयादिह॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो अग्ने! इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

अपावाहनम्—अपपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो! अप इहागच्छ इह तिष्ठ अद्भ्यो नमः अप-आवाहयामि स्थापयामि।

पृथिव्यावाहनम्—पृथिवीपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यक्षानःशर्म्मसप्प्रथाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो पृथ्वी! इहागच्छ इह तिष्ठ पृथिव्यै नमः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

विष्णवावाहनम्—विष्णुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ व्विष्ण्णोरराटमसिव्विष्ण्णोःश्नप्त्रेस्त्थोव्विष्ण्णोःस्यूरसिव्विष्ण्णोर्द्ध्रुवोसि॥ व्वैष्ण्णवमसिव्विष्ण्णवेत्त्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णो! इहागच्छ इहतिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ इन्द्रऽआसांनेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञःपुरऽएतुसोम÷॥ देवसेनानामभि भञ्जतीनांजयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्राय! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्राण्यावाहनम्—इन्द्राणीपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आदित्त्यैरास्स्नासीन्द्राण्ण्याऽउष्ण्णीष÷॥ पूषासिघर्म्मायदीष्ष्व॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्राणि! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रजापत्यावाहनम्—प्रजापतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्न्यन्न्योव्विश्श्वारूपाणिपरिताबभूव॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुव्वयꣳस्यामपतयोरयीणाम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो प्रजापते! इहागच्छ इह तिष्ठ प्रजापतये नमः प्रजापति-मावाहयामि स्थापयामि।

सर्पानामावाहनम्—सर्पपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ नमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्य÷सर्प्पेब्भ्यो नम÷॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो सर्पान्! इहागच्छ इह तिष्ठ सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मा-आवाहनम्—ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोवेनआवः॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चविर्वः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मन्! इहागच्छ, इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

पञ्चलोकपालादिस्थापनम्

गणेशावाहनम्—गणेशपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेवसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो गणपतये! इहागच्छ, इह तिष्ठ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गा-आवाहनम्—दुर्गापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन॥ ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो दुर्गे! इहागच्छ, इह तिष्ठ दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—वायुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि॥ नियुत्त्वान्त्सोमपीतये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो! वायो इहागच्छ, इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

आकाशावाहनम्—आकाशपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ घृतंघृतपावानःपिबतवसांवसापावानःपिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशःप्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो आकाश! इहागच्छ, इह तिष्ठ आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि स्थापयामि।

अश्विनीकुमारावाहनम्—अश्विनीकुमारपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यावांकशामधुमत्याश्विनासूनृतावती॥ तयायज्ञंमिमिक्षतम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो अश्विनौ! इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

वास्तोस्पत्यावाहनम्—वास्तोस्पतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशंनोभवद्विपदेशंचतुष्पदे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो वास्तोष्पते! इहागच्छ, इह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

क्षेत्रपालावाहनम्—क्षेत्रपालपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्त्यंवैश्वानरंक्षैत्रजित्त्यायदेवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो क्षेत्राधिपते! इहागच्छ, इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दशदिक्पालानां स्थापनम्

इन्द्रावाहनम्—पूर्व में इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्र! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्न्यावाहनम्—अग्निकोण में अग्निपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चवन्द्य॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्रते॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो अग्ने! इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

यममावाहनम्—दक्षिणदिशा में यमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमते स्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो यम! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

निर्ऋत्यावाहनम्—नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्न्विहितस्करस्य॥ अन्न्यमस्म्मदिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो निर्ऋति! इहागच्छ इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

वरुणावाहनम्—पश्चिमदिशा में वरुणपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—वायुकोण में वायुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्॥ व्वायोऽअस्म्मिन त्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो वायो! इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

सोमावाहनम्—उत्तरदिशा में सोमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः॥ प्रजावन्तꣳसचेमहि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

ईशानावाहनम्—ईशानकोण में ईशानपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियञ्जिन्न्वमवसेहूमहेव्वयम्॥ पूषानोयथाव्वेदसाम सद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो! ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मावाहनम्—ईशानपूर्व के मध्य ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अस्मेरुद्द्रामेहनापर्व्वतासोव्वृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः॥ यश्शꣳसंतेस्तुवतेधायिपज्ज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्म्माँ२॥ऽअवन्तुदेवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मन्! इहागच्छ, इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

अनन्तावाहनम्—नैर्ऋत्यपश्चिम के मध्य में अनन्तपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो अनन्त! इहागच्छ, इह तिष्ठ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

सूर्याद्यनन्तादेवताः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिता स्थापिताः वरदाः भवन्तु॥

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन का ध्यानकर समर्पित करे–

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्श्चपूरुषः॥ पादोऽस्यव्विश्श्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोऽस्येहाभवत्पुनः॥ ततोव्विष्ष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्यरिच्च्यतपश्श्चाद्भूमिमथोपुरः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्चक्क्रेवायव्व्यानारण्याग्राम्म्याश्च्चये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतऽऋचःसामानिजज्ञिरे॥ छन्दाꣳसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयःपृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशःसन्तु मह्य्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दधिक्क्राव्व्णोऽअकारिषंजिष्ष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंव्वृषभव्वक्षिहव्व्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तंव्वो गृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्च॑न॒द्यः॑सर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः॥ सर॑स्वती॒तु॒प॑ञ्च॒धासो॑दे॒शेभ॑वत्स॒रित्॥ ॐ भूर्भुव: स्व: आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शु॒द्धवा॑लःस॒र्वशु॑द्धवालोमणि॒वा॒लस्त॑ऽआश्वि॒नाः॑श्येत॑ःश्येता॒क्षो॒रु॒णस्ते॑रु॒द्राय॑ पशु॒पत॑येक॒र्ण्णा॒या॒माऽअ॑विलि॒प्तारौ॒द्रानभो॑रूपाःपार्ज्ज॒न्न्याः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मा॒दश्श्वा॑ऽअजायन्त॒येके॑चो॑भ॒याद॑तः॥ गावो॑हजज्ञि॒रे॒तस्म्मा॒त्तस्म्मा॑ज्जा॒ताऽ अ॑जा॒वय॑ः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आपो॒हिष्ठाम॑यो॒भु॒व॒स्तान॑ऽऊ॒र्जेद॑धातन॥ म॒हेरणा॑य॒चक्ष॑से॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तंय्य॒ज्ञम्ब॒र्हिषि॒प्प्रौक्ष॒न्पुरु॑षञ्जा॒तम॑ग्र॒तः॥ तेन॑दे॒वाऽअ॑यजन्तसा॒ध्याऽऋष॑यश्श्च॒ये॥ ॐ सुजा॑तो॒ज्ज्यो॒तिषा॑स॒हशर्म्म॒व्वरू॑थ॒मास॑द॒त्स्व॒ः॥ व्वासो॑अग्ग्नेव्वि॒श्श्वरू॑प॒ꣳ संव्य॑यस्वव्विभावसो॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योव॑ःशि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑भाजयते॒हन॑ः॥ उ॒श॒तीरि॑वमा॒तर॑ः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरु॑षं॒व्यद॑धुःकति॒धाव्य॑कल्पयन्॥ मुख॒ङ्किम॑स्यासी॒त्किम्बा॒हूकिमू॒रूपादा॑ऽ उच्च्येते॥ ॐ य॒ज्ञोदे॒वाना॒म्प्रत्त्यै॑तिसु॒म्म्नमादि॑त्त्यासो॒भव॑तामृड॒यन्त॑ः॥ आवो॒र्व्वाची॑ सुम॒तिर्व्ववृत्त्याद॒ꣳहोश्चि॒द्याव॑रिवो॒वित्त॒रास॑दादि॒त्त्येभ्य॑स्त्त्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मा॒ऽअर॑ङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑य॒जिन्व॑थ॥ आपो॑ज॒नय॑था च नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गन्ध॒र्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पति॑ः॥ त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॒वि॒द्वान्यक्ष्मा॑दमुच्च्यत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ह्यव॑प्प्रि॒याऽअ॑धूषत॥ अस्तो॑षत॒स्वभा॑नवो॒विप्प्रा॒नवि॑ष्ठयाम॒तीयो॒जा॒न्न्वि॒न्द्रते॒हरी॑॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओष॑धी॒ःप्प्रति॑मोदद्ध्वं॒पुष्प्प॑वतीःप्प्र॒सूव॑रीः॥ अश्श्वा॑ऽइवस॒जित्त्व॑रीर्व्वी॒रुधः॑पारयि॒ष्ण्णवः॑॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षःपरुष॒स्प्परि॑॥ एवानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नुस॒हस्रे॑णश॒तेन॑च॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहि॑रिवभो॒गैःपर्य्ये॑तिबा॒हुंज्याया॑हे॒तिंप्परि॒बाध॑मानः॥ ह॒स्त॒घ्नोविश्श्वा॑व्व॒युना॑नि वि॒द्द्वान्पुमा॒न्पुमा॑ꣳसं॒परि॑पातुवि॒श्श्वतः॑॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धो॑रिवप्प्राद्ध्व॒नेशू॒घ॒नासो॒व्वात॑प्प्रमियःपतय॑न्तिय॒ह्वाः॥ घृ॒तस्य॒धारा॑ऽअरु॒षोनव्वा॒जीकाष्ट्ठा॑भि॒न्दन्नू॒र्म्मिभि॒ःपिन्व॑मानः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ब्रा॒ह्म॒णो॒ऽस्य॒मुख॑मासीद्बा॒हूरा॑ज॒न्न्यः॒कृतः॥ ऊ॒रूतद॑स्य॒यद्वैश्य॑ःप॒द्भ्याꣳशू॒द्रोऽअ॑जायत॥ ॐ धूर॑सि॒धूर्व्व॒धूर्व्व॑न्तं॒य्योऽस्मान्धूर्व्व॑ति॒तंधूर्व्व॒यंव्व॒यंधूर्व्वा॑मः॥ दे॒वाना॑मसि॒वह्नि॑तम॒ꣳसस्नि॑तमं॒पप्रि॑तमं॒जुष्ट॑तमंदेव॒हूत॑मम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखा दग्निरजायत॥ ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा॥ अग्निर्वर्च्चोज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहासूर्य्योवर्च्चोज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्ज्योतिः स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्प्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ पप्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुः पृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽअच्च्युतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्वूल लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंग्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चत्वꣳहसः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवः सदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविः प्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तये॥

आत्क्मसनिंप्प्रजासनिंपशुसनिंलोकसन्न्यंभयसनिं॥ अग्ग्निःप्प्रजांबहुलांमेंकरोत्वन्नं पयोरेतोंऽअस्म्मासुधत्त॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानःस-चन्तयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थ-देवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ सप्प्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिःसप्प्तसमिधःकृताः॥ देवायद्यज्ञन्तन्न्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्प्पशुम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि सभी द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

रक्ष रक्ष ग्रहा सर्वे अधिप्रत्यधि देवता।
दिग्पालाश्च युता देवाः लोकपालास्तथैव च॥१॥

दिग्पाल, लोकपाल तथा अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता के साथ समस्त ग्रह रक्षा करे, हमारी सदैव रक्षा करें॥१॥

कुर्वन्तु सर्वकार्याणि मङ्गलानि पदे पदे।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं सर्वदा मया॥२॥

सभी कार्यों में पद पद पर हमारा मङ्गल करें, हमें सर्वदा आयु-आरोग्य तथा ऐश्वर्य प्रदान करें॥२॥

मोदनार्थाय दाष्यामि समर्थं सग्रहाधिपाः।
विविधद्रव्यसंयुक्तं विशेषार्घ्यं समर्पितम्॥३॥

ग्रहों के प्रसन्नता के लिए विविध द्रव्यों से युक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे।

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे रविः॥१॥

ग्रहों में सर्वप्रथम रहनेवाले आदित्य, संसार की रक्षा के हेतु, हे सूर्य! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥१॥

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे विधुः॥२॥

रोहिणी के पति, अमृतमूर्ति, अमृत शरीरवाले तथा निरन्तर अमृत का पान करनेवाले हे चन्द्र! जन्म के विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥२॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतोभयकृत्सदा।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां दहतु मे कुजः॥३॥

भूमि के पुत्र महान् तेजस्वी, संसार को सदैव अभय प्रदान करनेवाले भद्र करनेवाले, भद्रा को नष्ट करनेवाले हे भौम! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥३॥

उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥४॥

संसार में उत्पात रूपवाले, महान् प्रकाशवाले चन्द्र के पुत्र, सूर्य का प्रिय करनेवाले हे बुध! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥४॥

देवमन्त्री विशालाक्षो सदा लोकहिते रतः।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां दहतु मे गुरुः॥५॥

विशाल नेत्रों वाले देवताओं के मन्त्री, सदैव लोकहित में संलग्न, अनेकों शिष्यों से परिपूर्ण हे गुरु! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥५॥

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्रणवश्च महाद्युतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां दहतु मे भृगुः॥६॥

दैत्यदानवों के मन्त्री तथा गुरु, प्रणव के समान महाप्रकाशवान्, ताराओं के स्वामी, हे शुक्र! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥६॥

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु मे शनिः॥७॥

सूर्य के पुत्र, विशाल शरीर वाले, विशाल नेत्रों वाले, शिव के प्रिय, मन्द-मन्द गमन करनेवाले, हे शनि! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥७॥

महाशीर्षो महावक्त्रो महादंष्ट्रो महायशः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां दहतु मे तमः॥८॥

महान् शिरवाले, महान् वक्त्रवाले, महान् दाँतोंवाले, महान् यशवाले, शरीरविहीन, ऊर्ध्वकेश हे राहु! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥८॥

अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः।
उत्पातरूपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिखी॥९॥

सैकड़ों-हजारों अनेकानेक रूपों वाले धूमकेतु के समान भयंकर हे केतु! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥९॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो॒व्यन्तो॒विप्प्रायमतिम्॥ तेषांविशिप्प्रियाणांवो॒ऽहमिषमूर्ज्जꣳ॒ समग्ग्रभमुपयामगृहीतो॒ऽसीन्द्रायत्त्वा॒जुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनि॒रिन्द्रायत्त्वा॒जुष्टतमम्॥

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहा शान्तिकरा भवन्तु॥

ब्रह्मा-विष्णु-महेश-सूर्य-चन्द्र-भौम-बुध-गुरु-शुक्र-शनि-राहु तथा केतु सभी ग्रह तथा देवता हमारे लिए शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

अनया पूजया आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्तां न मम्॥

ग्रहमण्डलस्थदेवानां पूजनं परिपूर्णम्

⁂

असंख्यात रुद्रपूजनम्

असङ्ख्यातरुद्रकलशस्थापनम्—विधिपूर्वक कलश-स्थापन करे—

ग्रहमण्डलस्थ देवताओं के आवाहन-स्थापन-पूजन के पश्चात् सर्वप्रथम ग्रहवेदी के मध्य में अक्षत रखकर उस अक्षत के मध्य में रोली से अष्टदल निर्मित कर उसके ऊपर कलश स्थापित करके, असंख्यातरुद्र के लिए नारियल स्थापित कर कलशपूजन करने के बाद उस पर असंख्यातरुद्र के लिए प्रतिमा पर अग्न्युत्तारण विधि से प्रतिष्ठाकर पूजन करे अथवा ईशान कोण की दिशा में भूमि पर अथवा अन्य वेदी पर असंख्यातरुद्र के लिए कलश रखकर वरुणादि स्थापना के पश्चात् उसके ऊपर नारियल अथवा मूर्ति रखकर पूजन करे—

भूमिस्पर्श—**ॐ महीद्यौःपृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्॥ पिपृतानोभरीमभिः॥**

सप्तधान्यविखेरना—**ॐ ओषधयःसमवदन्तसोमेनसहराज्ञा॥ यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि॥**

कलशस्थापन—**ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्विन्दवः॥ पुनरूर्ज्जानिवर्त स्वसानःसहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः॥**

कलश में जल भरना—**ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिवरुणस्यऽऋतसदनमसिवरुणस्यऽऋतसदनमासीद।**

कलश में गन्ध डाले—**ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥**

कलश में सर्वौषधि डाले—**ॐ याओषधीःपूर्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा॥ मनैनु बब्भ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च॥**

कलश में दूर्वा डाले—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्प्परि॥ एवानो दूर्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥**

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अश्वत्त्थेवोनिषदनंपर्ण्णेवोवसतिष्कृता॥ गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्॥**

कलश में कुश डाले—**ॐ पवित्रेस्त्थोव्वैष्ण्णव्यौसवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पवित्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः॥**

कलश में पूगीफल डाले—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वꣳहसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिःकविरग्ग्निर्हव्यान्यक्क्रमीत्॥ दधद्रत्नानि दाशुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भःसमवर्त्ततागग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्म्मैदेवायहविषाविधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्त्स्वः॥ व्वासोअग्ने व्विश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वव्विभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्क्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वꣳहसः॥**

वरुण का ध्यान, आवाहन और पञ्चोपचारपूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्प्रमोषीः॥**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सवाहनं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। कलशे वरुणाद्यावाहितविष्णवादि देवताः प्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। ॐ अपांपतये वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके यह निर्मित होता है, इसी लिए उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख़ में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षि (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकाएँ स्थित हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तद्वीप स्थित हैं, अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं॥३॥

कावेरी कृष्ण वेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री, नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ हैं, पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं, वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होंकर समस्त दुरित के क्षयकारक हों समस्त पापों को नष्ट करनेवाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्गरूप से कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरित को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें, हमारे यज्ञ को पूर्णता प्रदान करें॥८॥

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम॥

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोर्जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३ँम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

पञ्चोपचार पूजनकर प्रार्थना करे—

कलशप्रार्थना—

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

देवताओं और दानवों के बीच समुद्र-मन्थन से कुम्भ उत्पन्न हुआ, जिसे स्वयं विष्णु धारण किये थे॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

तुम्हारे जल में सभी तीर्थों की प्रतिष्ठा है, सभी तीर्थों के जल में देवताओं का वास है, जल ही सभी भूतों में प्रतिष्ठित है, सभी प्राणों में प्रतिष्ठित हो॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, रुद्र, वसु, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनाएँ फलवान् होती हैं, हे जलोद्भव कुम्भ! तुम्हारी कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायक।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करनेवाले! आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सान्निध्य प्रदान करे॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दरश्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दरमङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले जलाधिनाथ आपको बार-बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

हे पाश को हाथ में धारण करनेवाले! आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करने-वालों के नायक, जब तक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती, तब तक सान्निध्य प्रदान करें॥७॥

कलश के ऊपर नारियल रखकर उस पर असंख्यातरुद्रों की प्रतिष्ठा करे।

असंङ्ख्यातरुद्रावाहनम्—**ॐ अस॑ङ्ख्याता॒सहस्रा॑णि॒येरु॒द्राऽअधिभूम्म्या॑म्॥ तेषां॑सहस्र योज॒नेऽव॒धन्न्वा॑नितन्न्मसि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः असंख्यातरुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो॑जूतिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टं॒य्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु॥ व्विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइहमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ॥

अस्यैः प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यैः प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यैः देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु॥

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ नम॑स्तेरुद्द्रम॒न्न्यव॑ऽउ॒तोत॒ऽअष॑वे॒नमः॑॥ बा॒हुब्भ्या॑मु॒तते॒नमः॑॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन का ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ याते॑रुद्द्रशि॒वातनू॒रघो॒रापा॑पकाशिनी॥ तया॑नस्त॒न्न्वा॒शन्त॑मया॒गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ यामिषु॑ङ्गिरिशन्त॒हस्ते॑बि॒भर्ष्य्यस्त॑वे॥ शि॒वाङ्गि॑रित्र॒ताङ्कु॑रु॒माहि॑ꣳसीः॒पुरु॑ष॒ञ्जग॑त्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शि॒वेन॒व्वच॑सात्त्वा॒गिरि॒शाच्छा॑व्वदामसि॥ यथा॑नः॒सर्व॒मिज्जग॑दय॒क्ष्मꣳसु॒मना॒ऽअसत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर आचमनीय जल समर्पित करे—

ॐ अद्ध्य॑वोचदधिव॒क्क्ताप्प्र॑थ॒मोदैव्व्यो॑भि॒षक्॥ अहीँ॑श्च॒सर्व्वा॑ञ्ज॒म्भय॒न्त्सर्व्वा॑श्च यातुधा॒न्न्यो॒धरा॒चीः॒परा॑सुव॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर स्नानीय जल समर्पित करे—

ॐ असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुःसुमङ्गलः॥ येचैनꣳरुद्द्राऽअभितोदिक्षुश्श्रिताःसहस्रशोवैषाꣳहेडऽईमहे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोविलोहितः॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे जलं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयःपृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशःसन्तुमह्य्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दधिक्क्राव्णोऽअकारिषंजिष्ष्णोरश्श्वस्यव्वाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्म्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंव्वृषभवक्षिहव्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाꣳरसमुद्द्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तंव्वोगृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्ष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शु॒द्धवा॑लः स॒र्वशु॑द्धवालोमणि॒वाल॒स्तऽआ॑श्वि॒नाःश्येत॑÷श्येता॒क्षो॒रु॒णस्ते॑रु॒द्राय॑ पशु॒पत॑येकर्ण्णा॒या॒माऽअ॑विलि॒प्तारौ॒द्द्रानभो॑रूपाःपार्ज्ज॒न्न्याः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नमो॑स्तु॒नील॑ग्ग्रीवायसहस्राक्षाय॑मी॒ढुषे॑॥ अथो॒येऽअ॑स्य॒सत्त्वा॑नो॒हन्ते॑ब्भ्यो॑ क॒रन्नम॑÷॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ आपो॒हिष्ठाम॑यो॒भुव॒स्तान॑ऽऊ॒र्जेद॑धातन॥ म॒हेरणा॑य॒चक्ष॑से॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ प्रमु॑ञ्च॒धन्व॑न॒स्त्वमु॒भयो॒रात्न्यो॒र्ज्ज्याम्॥ याश्च॑ते॒हस्त॒ऽइष॑व॒ःपरा॒ताभ॑गवोवप॥ ॐ सुजा॑तो॒ज्ज्यो॒तिषा॒सहशर्म्म॒वरू॑थ॒मास॑द॒त्त्स्व॒÷॥ वासो॑अग्ने॒विश्व॑रूप॒ꣳसंव्य॑यस्वविभावसो॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योव॑÷शि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑भाजयते॒हन॑÷॥ उ॒श॒तीरि॑वमा॒तर॑÷॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ विज्ज्य॒न्धनु॑÷कप॒र्द्दिनो॒विश॑ल्ल्यो॒बाण॑वाँ२॥ऽउ॒त॥ अने॑शन्नस्य॒याऽइष॑वऽइष॑वऽआ॒भुर॑स्यनिषङ्ग॒धिः॥ ॐ य॒ज्ञोदे॒वाना॒म्प्रत्त्ये॑तिसु॒म्नमादि॑त्त्यासो॒भव॑तामृ॒डय॑न्त॑÷॥ आवो॒र्व्वाची॑सुम॒तिर्व्व॑वृत्त्याद॒ꣳहोश्चि॒द्यावरि॑वो॒वित्त॒रास॑दादि॒त्त्येब्भ्य॑स्त्त्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—आचमनीय जल समर्पित करे—

ॐ तस्मा॒ऽअर॑ङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑य॒जिन्व॑थ॥ आपो॑ज॒नय॑थाचनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्ग॑न्ध॒र्व्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पति॑÷॥ त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॑वि॒द्द्वान्न्यक्ष्मा॑दमुच्च्यत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ह्यव॑प्प्रि॒याऽअ॑धूषत॥ अस्तो॑षत॒स्वभा॑नवो॒विप्प्रा॒नवि॑ष्ठयाम॒ती

योजा॒न्वि॒न्द्र॒ते॒हरी॑॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओष॑धीः॒प्प्रति॑मोदद्ध्वं॒पुष्प॑वतीः॒प्र॒सूव॑रीः॥ अश्श्वा॑ऽइवस॒जित्त्व॑रीर्व्वी॒रुधः॑ पारयि॒ष्ण्वः॑॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षःपरुष॒ष्प्परि॑॥ ए॒वानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नुस॒हस्रे॑णश॒तेन॑च॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहि॑रिवभो॒गैः॒पर्य्ये॑तिबा॒हुंज्याया॑हे॒तिंप्प॑रि॒बाध॑मानः॥ ह॒स्त॒घ्नोविश्श्वा॑व॒युना॑नि वि॒द्द्वान्पुमा॒न्पुमा॑ꣳसं॒परि॑पातुवि॒श्श्वतः॑॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धो॑रिवप्प्राद्ध्व॒नेशू॒घ॒नासो॒वात॑प्प्रमियः॒पतयन्तिय॒ह्वाः॥ घृ॒तस्य॒धारा॑ऽअरु॒षोनवा॒जीकाष्ठा॑भि॒न्दन्नू॒र्म्मिभिः॒पिन्व॑मानः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याते॑हे॒तिर्म्मी॑ढुष्टम॒हस्ते॑बभूव॒ते॒धनुः॑॥ तया॒स्म्मान्वि॒श्श्वत॒स्त्वम॑य॒क्ष्मया॒परि॑ भुज॥ ॐ धूर॑सि॒धूर्व्व॒धूर्व्व॑न्तं॒ध्वो॑ऽस्मान्धूर्व्व॑ति॒तंधूर्व्व॒यंव॒यंधूर्व्वा॑मः॥ दे॒वाना॑मसि॒वह्नि॑तम॒ꣳसस्नि॑तमं॒पप्प्रि॑तमं॒जुष्ट॑तमंदेव॒हूत॑मम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ परि॑ते॒धन्व॑नोहे॒तिर॒स्म्मान्वृ॑मक्तुवि॒श्श्वतः॑॥ अथो॒यऽइ॑षु॒धिस्तवा॒रेऽअ॒स्म्मन्निधे॑हि॒तम्॥ ॐ अ॒ग्निर्ज्ज्योति॒र्ज्ज्योति॑र॒ग्निःस्वाहा॒सूर्य्यो॒ज्ज्योति॒र्ज्ज्योतिः॒ सूर्य्यः॒स्वाहा॑॥ अ॒ग्निर्व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॒सूर्य्यो॒वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॑॥ ज्ज्योतिः॒सूर्य्यः॒ सूर्य्यो॒ज्ज्योतिः॒स्वाहा॑॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अ॒व॒तत्त्य॒धनु॒ष्ट्वꣳसह॑स्राक्ष॒शते॑षुधे॥ नि॒शीर्य्य॑श॒ल्ल्याना॒म्मुखा॑शि॒वोनः॑ सु॒मना॑भव॥ ॐ अन्न॑प॒तेऽन्न॑स्यनोदेह्यनमी॒वस्य॑शु॒ष्म्मिणः॑॥ प्रप्र॑दा॒तारं॑तारिष॒ऊर्ज्जन्नो

धेहिद्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुःपृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसो-अच्च्युतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ नमस्त्तऽआयुधायानाततायधृष्णवे॥ उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गिफलमेलालवङ्ग-नागवल्लिदलयुतंताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानो मुञ्चत्वꣳहसः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाव्विधेम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्त्थिवꣳरजःपितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवःसदाꣳसिबृहतीव्वितिष्ठसऽआत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि॥ अग्ग्निःप्प्रजांबहुलांमेकरोत्त्वन्नंपयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ मानस्त्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः॥ मानोव्वीरान्न्रुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्म्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ मानोमहान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्क्षन्तमुतमानऽउक्क्षितम्॥ मानोव्वधीः

पि॒तरम्मो॒तमा॒तर॒म्मानः॑प्प्रि॒यास्त्त॒न्न्वो॒रुद्द्रीरिषः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

करचरणकृतं वाकायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करके समर्पण करे—

गङ्गोत्तमाङ्गकलितं ललितं विशालं,
ते मङ्गलं गरलनीलगलं ललामम्।
श्रीमुण्डमाल्य-वलयोज्वल-मञ्जुलीलं ,
लक्ष्मीश्वरार्चित-पदाम्बुजमाभजामः ॥१॥
दारिद्र्यदुखःदहनं कमनं सुराणां,
दीनार्त्तिदावदहनं दमनं रिपूणाम्।
दानं श्रियां प्रणमनं भुवनाधिपानां,
मानं सतां वृषभवाहनमामनामः॥२॥
वन्दीविमुक्तिमधिगच्छति तूर्णमेति,
स्वास्थ्यं रुजार्दित उपैति गृहं प्रवासी।
विद्या यशो विजय इष्ट-समस्त-लाभः,
सम्पद्यतेऽस्य सेवनात् शङ्करस्य सर्वम्॥३॥
न तापस्त्रिविधस्तेषां न शोको न रुजादयः।
ग्रहगोचरपीडां च तेषां क्वाऽपि न विद्यते॥४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे—

अनया पूजया असंख्यातरुद्रदेवताः प्रीयन्तां न मम् ॥

असंख्यातरुद्राणां पूजनं परिपूर्णम्

❀

कुशकण्डिकाविधिः

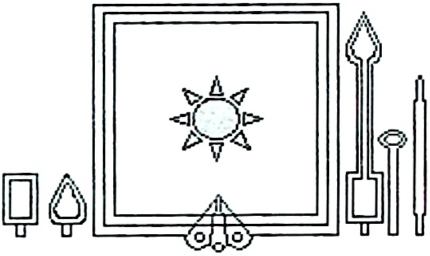

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मणः स्थापनार्थं ब्रह्मासनम्। अग्नि के दक्षिण ब्रह्मा के लिए आसन रखे।

अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। अग्नि के उत्तर प्रणीता प्रोक्षणी के लिए दो आसन रखे।

ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। ब्रह्मासन पर ब्रह्मा को स्थापित करे।

यजमान बोले—**यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव।**

ब्रह्मा पद पर वृणीत ब्रह्मा बोले—**भवामि।**

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्। ब्रह्मा के आदेश से प्रणीताप्रणयन करे।

तद्यथा—प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, द्वितीयासने निदध्यात्।

प्रणीतापात्र में जल भर करके, कुशाओं से ढक करके, पहले प्रथम आसन पर रख कर, ब्रह्मा का मुख देख करके, दूसरे आसन पर रखे।

ईशानादिपूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। ईशानकोण तथा पूर्व की तरफ कुश का अग्रभाग करके कुण्ड के चारो तरफ परिस्तरण करे।

तद्यथा—ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय। आग्नेयादीशानान्तम्, उदगग्रैर्वा। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः, इतरथा वृत्तिः।

जैसे—बर्हिमात्र कुशा का चतुर्थ भाग लेकर पूर्व दिशा में आग्नेयकोण से ईशानकोण तक उत्तराग्र कुश बिछाये, उत्तरदिशा में अग्निकोण से प्रणीतापात्र के बीच में पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाये, पश्चिम दिशा में नैर्ऋत्यकोण से वायव्यकोण तक उत्तराग्र कुशा बिछाये, दक्षिण

में नैर्ऋत्यकोण से ब्रह्मा के बीच पूर्वाग्र तथा ब्रह्मा से अग्निकोण तक पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाये इसी प्रकार पुनः दूसरी आवृत्ति से परिस्तरण करे।

पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशा पञ्च। उपयमनकुशा सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानि वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

पात्रासादन—पवित्री बनाने के लिए तीन कुशा तथा दो कुशा रखे, प्रोक्षणीपात्र, घृतपात्र, चरुपात्र, सम्मार्जन के लिए पाँच कुशा, उपयमन के लिए सात कुशा, तीन सीधी वितस्त मात्र समिधा, स्रुक्, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्णपात्र, कल्पित बैल का मूल्य, अन्य हवनीय पदार्थ सभी क्रम से रखे।

पवित्रच्छेदनाति—द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्वौ मेलेन प्रदक्षिणीकृत्य, सर्वान् युगपदनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा। त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः। प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्णं, पवित्राभ्यामुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोद्दिङ्गनम्।

पवित्रीछेदन—दो कुशा पर तीन कुशा को रखकर, दो कुशा को मिला कर प्रदक्षिणा क्रम से घुमाकर सभी को अनामिका, अङ्गुष्ठ से पकड़कर तीन कुशा का छेदन कर,तीन कुशा का त्याग कर,दो कुशा का ग्रहण कर पवित्री बना कर पवित्री से प्रणीता के पात्र से प्रोक्षणीपात्र का तीन बार सिंचन कर जल भर कर उसमें पवित्री रख दें। प्रोक्षणीपात्र को वायें हाथ में रख कर दाहिने हाथ से ढककर यथास्थान रखे।

ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधानां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणी निधाय।

प्रणीता के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण कर, प्रोक्षणीपात्र में प्रणितापात्र से जल ग्रहण कर प्रोक्षणीपात्र के जल से पवित्री के द्वारा घृतपात्र, चरुस्थाली, सम्मार्जन कुशा, उपयमन कुशा, समिधा, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्णपात्र, तथा अन्य सभी सामग्रियों का प्रोक्षण करके प्रोक्षणीपात्र को यथास्थान रखे।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकात्सेचनपूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणोदक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोस्पर्शः। अर्धश्रिते चरौ, अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतो

मूलैर्बाह्यतः स्रुवस्य समृज्य। प्रणीतोदकेनाऽभ्युक्षणम्। सम्मार्जन-कुशानामग्नौ प्रक्षेपः।

घृतपात्र में घृत निकाल लें, चरुस्थाली को प्रणीता के जल से सिंचन करके उसमें खीर वनाने के लिए चावल निकालें, व्रह्मा के दक्षिण से लाकर घृत को अग्नि के दक्षिण में रखें, चरु को पकने के लिए अग्नि पर रखें, जलती हुई लकड़ी लेकर ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशान पर्यन्त घुमाकर पुनः विपरीत क्रम से घुमाकर अग्नि में डाल दें, आधे पके चरु को चलाये, स्रुवा को नीचे की तरफ मुख करके तपाकर, आधे पके चरु को चलाये, सम्मार्जन कुशा के द्वारा प्रणीता के जल से ऊर्ध्वमुख स्रुवा का मार्जन कर, स्रुवा के अग्रभाग को कुशाग्र से तथा स्रुवमूल का कुशमूल से मर्दन कर प्रणीता के जल से अभ्युक्षण कर फिर से तपा कर अग्नि व्रह्मा के मध्य रखे तथा सम्मार्जन कुशा का अग्नि में प्रक्षेप करे।

पुनः प्रतपनं, दक्षिणदेशे निधानम्। आज्यस्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य, आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्।

घृत को लाकर अग्नि के उत्तर में रखें, चरु को अग्नि से उतार कर अग्नि की प्रदक्षिणा करते हुए दक्षिण में रखे तथा घृत को भी प्रदक्षिणा क्रम से लाकर चरु के उत्तर में रखे।

आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षुण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशानादाय। उत्तिष्ठन् समिधोभ्यादाय, घृताक्ताः समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम्। इतरथावृतिः। पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिणं जान्वाच्य, ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः। समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्यहोमः।

घृतपात्र में घृत निकाले तथा निरीक्षण कर अपद्रव्य निकाले, पुनः प्रोक्षणी के जल से सिंचन करे। बायें हाथ में उपयमन कुशा लेकर, खड़े होकर तीन समिधाओं को घृत में बोर कर मौन ही अग्नि में प्रक्षेप करे, पवित्री के सहित प्रोक्षणी को लेकर जल गिराते हुए ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशानपर्यन्त घुमाकर पुनः विपरीत क्रम से घुमाकर यथा स्थान रखे, पवित्री को प्रणीता में रखे, दक्षिण जानु को भूमि पर रख कर, व्रह्मा को कुशाओं से स्पर्श कर स्रुवा से घृत आहुति प्रदान करे।

अग्नेरुत्तरभागे—अग्नि के उत्तरभाग में आहुति प्रदान करे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा।

इदं प्रजापतये न मम। हुतशेष एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

अग्नेर्दक्षिणभागे—अग्नि के दक्षिणभाग में आहुति प्रदान करे।

ॐ इन्द्राय स्वाहा।

इदं इन्द्राय न मम। हुतशेष एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

समिद्धतमे—अग्नि के मध्य समिधा में आहुति प्रदान करे।

ॐ अग्नये स्वाहा।

इदमग्न्ग्रये न मम। हुतशेष एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ सोमाय स्वाहा।

इदं सोमाय न मम। हुतशेष एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ततः सूर्यादिग्रहाणां तथा च अधिदेवताप्रत्याधिदेवतापञ्चलोकपालवास्तोष्पति-क्षेत्रपालदेवतानां इन्द्रादिदशदिक्पालदेवतानां प्रधानदेवतां तथा च आवाहितदेवतानां प्रत्येकं सम्मिलिततिलादिद्रव्यैः जुहुयात्। कुशकण्डिका करने के बाद सूर्यादि ग्रहों तथा अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, पञ्चलोकपाल, वास्तोष्पति, क्षेत्रपालादि देवताओं के साथ प्रधान देवता के लिए तिलादिमिश्रित द्रव्य से हवन करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारित ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकनामाहं अस्मिन् विपरीतप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम।**

यजमान बोले—**यथा दैवतानि सन्तु।**

कुशकण्डिकाकर्म परिपूर्णम्

* * *

हवनप्रकरणम्

वाराहुतिः—सर्व प्रथम गणेश तथा महागौरी को घी से आहुति प्रदान करे—

ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा॑ नि॒धिप॑तिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आह॑म॑जानिगर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्ब्भ॒धम्॥ स्वाहा॥

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्व॒कःसुभ॑द्द्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्॥ स्वाहा॥

सूर्यादिग्रहानांहवनम्

ॐ आकृ॒ष्णेन॒रज॑सा॒व्वर्त्त॑मानोनिवे॒शय॑न्न॒मृतं॒मर्त्त्यं॑च॥ हि॒रण्यये॑नसवि॒तार॑थे॒नादे॒वोया॑ति॒भुव॑नानि॒पश्य॑न्॥ सूर्याय स्वाहा॥

ॐ इ॒मंदे॑वाऽअसप॒त्नꣳसु॑वद्ध्वंमह॒तेक्ष॒त्राय॑मह॒तेज्ज्यैष्ठ्या॑यमह॒तेजान॑राज्ज्या॒येन्द्रि॒याय॑॥ इ॒मम॒मुष्य॑पु॒त्रम॒मुष्यै॑पु॒त्रम॒स्यैव्वि॒शऽए॒षवो॑ऽमीराजा॒सोमो॒ऽस्माकं॑ब्ब्राह्म॒णाना॒ꣳराजा॑॥ सोमाय स्वाहा॥

ॐ अ॒ग्निर्म्मू॒र्द्धादि॒वःक॒कुत्पतिः॑पृथि॒व्याऽअयम्॥ अ॒पाꣳरेता॑ꣳसिजिन्वति॥ भौमाय स्वाहा॥

ॐ उद्बु॑ध्यस्वाग्ने॒प्रति॑जागृहि॒त्वमि॑ष्टापू॒र्त्तेसꣳसृ॑जेथाम॒यञ्च॑॥ अ॒स्मिन्त्स॒धस्थे॒ऽअध्युत्त॑रस्मि॒न्विश्श्वे॑देवा॒यज॑मानश्श्चसीदत॥ बुधाय स्वाहा॥

ॐ बृह॑स्पते॒ऽअति॒द॒र्य्यो॑ऽअर्हा॑द्द्युमद्विभाति॒क्क्रतु॑म॒ज्जने॑षु॥ यद्दि॒दय॒च्छव॑सऽऋतप्प्रजात॒तद॒स्म्मासु॒द्द्रवि॑णंधेहिचि॒त्रम्॥ बृहस्पतये स्वाहा॥

ॐ अन्ना॑त्परि॒स्रुतो॒रसं॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्व्य॒पिबत्क्ष॒त्रंपय॑ःसोमं॑प्प्र॒जाप॑तिः॥ ऋ॒तेन॑स॒त्त्यमि॑न्द्रि॒यंव्वि॒पान॑ꣳशु॒क्रमन्ध॑स॒ऽइन्द्र॑स्येन्द्रि॒यमि॒दंपयो॒ऽमृतं॒मधु॥ शुक्राय स्वाहा।

ॐ शंन्नो॑दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ऽआपो॑भवन्तुपी॒तये॑॥ शंय्योर॒भिस्र॑वन्तुनः॥ शनैश्चराय स्वाहा॥

ॐ कया॑नश्श्चि॒त्रऽआभु॑वदू॒तीस॒दावृ॑धः॒सखा॑॥ कया॒शचि॑ष्ठयाऽवृ॒ता॥ राह्वे स्वाहा॥

ॐ के॒तुंकृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒पेशो॑मर्य्याऽअपे॒शसे॑॥ समु॒पद्भि॑रजायथाः॥ केतवे स्वाहा॥

ॐ त्र्यम्ब॑कंय्यजामहेसु॒गन्धिं॑पुष्टि॒वर्द्ध॑नम्॥ उ॒र्व्वा॒रु॒कमि॑व॒बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्मु॑क्षीय॒माऽमृता॑त्॥ ईश्वराय स्वाहा॥

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्॥ इष्ण्णन्निषाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वलोकम्मंऽइषाण॥ उमायै स्वाहा॥

ॐ यदक्रन्दःप्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमीहजातंतेऽअर्व्वन्॥ स्कन्दाय स्वाहा॥

ॐ इदंविष्ष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ॐ आब्ब्रह्मन्ब्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्न्यꣳशूरऽइषव्व्योतिव्व्याधीमहारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्व्वोढानड्वानाशुःसप्प्तिꣳपुरन्धिर्य्योषाजिष्ष्णूरथेष्ठाःसभेयोयुवास्ययजमानस्यवीरोजायतान्निकामेनिकामेनःपर्ज्जन्न्योवर्षतुफलवत्त्योनओऽषधयꣳपच्च्यन्तांय्योगक्षेमोनःकल्प्पताम्॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिःसोमंपिबवृत्रहाशूरविद्वान्॥ जहिशत्रूँ२॥रपमृधोनुदस्वाथाभयंकृणुहिविश्श्वतोनः॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे॥ यमाय स्वाहा॥

ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्त्वाऽक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥ कालाय स्वाहा॥

ॐ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय॥ चित्रगुप्ताय स्वाहा॥

.ॐ अग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे॥देवाँ२॥ आसादयादिह॥ अग्नये स्वाहा॥

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ अद्भ्यः स्वाहा॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यक्षानःशर्म्मसप्रथाꣳ॥ पृथिव्यै स्वाहा॥

ॐ विष्ष्णोरराटमसिविष्ष्णोःश्नप्त्रेस्त्थोविष्ष्णोःस्यूरसिविष्ष्णोर्ध्रुवोसि॥ वैष्ष्णवमसिविष्ष्णवेत्त्वा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ॐ इन्द्रऽआसांनेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञःपुरऽएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनांजयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ अदित्त्यैरास्स्नासीन्द्राण्ण्याऽउष्ष्णीषः॥ पूषासिघर्म्मायदीष्ष्व॥ इन्द्राण्यै स्वाहा॥

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्न्यन्न्योविश्श्वारूपाणिपरिताबभूव॥ यत्कामास्तजुहुमस्तन्नोऽअस्तुवयꣳस्यामपतयोरयिणाम्॥ प्रजापतये स्वाहा॥

ॐ नमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यःसर्प्पेब्भ्यो नमः॥ सर्पेभ्यः स्वाहा॥

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोवेनआवः॥ सबुध्न्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गणपतये स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ दुर्गायै स्वाहा॥

ॐ व्वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि॥ नियुत्त्वान्त्सोमपीतये ॥ वायवे स्वाहा॥

ॐ घृतंघृतपावानःपिबतव्वसांव्वसापावानःपिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशःप्प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्ग्भ्यःस्वाहा॥ आकाशाय स्वाहा॥

ॐ यावांकशामधुमत्याश्श्विनासूनृतावती॥ तयायज्ञंमिमिक्षतम्॥ अश्विभ्यां स्वाहा॥

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशंनोभवद्विपदेशंचतुष्पदे॥ वास्तोष्पतये स्वाहा॥

ॐ नहिस्प्पशमविदन्नन्न्यमस्म्माद्वैश्श्वानरात्पुरऽएतारमग्ग्नेः॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्त्यंव्वैश्श्वानरंक्षैत्रजित्त्यायदेवाः॥ क्षेत्राधिपतये स्वाहा॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्त्विन्द्रः॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ त्वन्नोऽअग्ग्नेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चवन्द्य॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्य निमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते॥ अग्नये स्वाहा॥

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे॥ यमाय स्वाहा॥

ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्च्छस्तेनस्येत्यामन्न्विहितस्करस्य॥ अन्न्यमस्म्मदिच्च्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु॥ निर्ऋतये स्वाहा॥

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहैडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥ वरुणाय स्वाहा॥

ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्॥ व्वायोऽअस्म्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः॥ वायवे स्वाहा॥

ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्त्तनूषुबिब्भ्रतः॥ प्रजावन्तःसचेमहि॥ सोमाय स्वाहा॥

ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषप्पतिंधियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम्॥ पूषानोयथाव्वेदसामस धेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये॥ ईशानाय स्वाहा॥

ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्व्वतासोव्वृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः॥ यःशꣳसतेस्तुवतेधायिपज्ज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्म्माँ२॥ऽअवन्तुदेवाः॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यक्षानःशर्म्मसप्प्रथाः॥ अनन्ताय स्वाहा॥

अनेन हवानाख्येन सूर्याद्यनन्तान्तदेवताः प्रीयन्तां न मम।

हाथ में जल लेकर मन्त्र बोलकर गिरायें।

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।
तथा दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिणा॥

सूर्याद्यनन्तान्तहवनं परिपूर्णम्

असंख्यातरुद्रायहवनम्

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्र-रूपेभ्यः स्वाहा॥ १०८ आहुति हवन करे।

असंख्यातरुद्र के लिए हवन के पश्चात् प्रधान देवता के लिए अहुतियाँ प्रदान करे।

अनेन हवानाख्येन असंख्यातरुद्राः प्रीयन्तां न मम।

हाथ में जल लेकर मन्त्र बोलकर गिरायें।

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।
तथा दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिणा॥

असंख्यातरुद्रायहवनं परिपूर्णम्

प्रधानदेवतानां हवनम्

प्रयोगार्थमन्त्रम्—**ॐ हूं स्फारय स्फारय मारय मारय शत्रुवर्गान्नाशयन्नाशय हुं फट् स्वाहा।** मन्त्र से एक हजार आहुति प्रदान करे।

मूलमन्त्रम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्वाहा। मन्त्र से एक हजार आहुति प्रदान करने के बाद अधोलिखित मन्त्रों से आहुति प्रदान करे।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै सहस्रानेककार्यलोचनायै कोटिविद्युज्जिह्वायै महाव्यापिन्यै संहाररूपायै जन्म शान्ति सफल कारिण्यै ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रादि परिवारास्य भाविभूतभवच्छत्रुन् संहारय संहारय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै महाप्रभावं दर्शय दर्शय हिलि हिलि किलि किलि मिलि मिलि चिलि चिलि भूरि भूरि विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ध्वंसय ध्वंसय प्रध्वंसय प्रध्वंसय ग्रासय ग्रासय पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय वित्रासय वित्रासय मारय मारय विमारय विमारय भ्रामय भ्रामय विभ्रामय विभ्रामय द्रावय द्रावय विद्रावय विद्रावय हूँ हूँ फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे हूँ लँ ह्रीँ लँ क्लीँ लँ ॐ लँ फट् फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवाराय यावच्छत्रून् देवता पितृपिशाचनागगरुणकिन्नरनरलोकपातालान् समन्त्रान् सौषधान् सायुधान् ससहायान् पाणौ छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि निकृन्तय निकृन्तय छेदय छेदय उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तेषां साहंकारादि धर्मान्कीलय कीलय घातय घातय नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै स्फ्रैँ स्फैँत्कारिणी ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ जँ ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ॐॐ ठः ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्र परिवारकस्य शत्रूणां सर्व विद्याः कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रूणां मुखं कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रूणां नेत्रान् कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रूणां दन्तान् कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रूणां जिह्वां कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रूणां पादौ कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रूणां गुह्यं कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रूणां सकुटुम्बानां कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रूणां स्थानं कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रूणां सप्राणान्कीलय कीलय स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! सपत्नी ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वतो रक्षां कुरु कुरु फट् फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! ममात्मनः सपत्नी पुत्रपौत्र सपरिवारस्य भूतभविष्यवर्तमान शत्रूणामुच्चाटनमुच्चाटनं कुरु कुरु फट् फट् स्वाहा।

ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ वँ वँ वँ वँ वँ वँ वँ लँ लँ लँ लँ लँ लँ लँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ यँ यँ यँ यँ यँ यँ यँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमो भगवति विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! दुष्ट चाण्डालिनी त्रिशूलवज्रांकुश शक्ति शूल धनुः शरपाश धारिणी शत्रु रुधिर चर्म मेदो मांसाऽस्थि मज्जा शुक्र मेहन वसा वाक् प्राण मस्तक हेत्वादि भक्षिणी स्वाहा।

परब्रह्मशिवे ज्वालादायिनी मालिनी शत्रूच्चाटन मारण क्षोभण स्तम्भन मोहन द्रावण जृम्भण भ्रामण रौद्रण सन्तापन यन्त्रमन्त्रतन्त्रार्याग पुरश्चरण भूतशुद्धि पूजाफल परमनिर्वाण हारण कारिणी कपाल खट्वाङ्ग परशुधारिणी मामत्मनः सपत्नीपुत्रपौत्र-परिवारस्य भूत भविष्य वर्तमान शत्रून्ससहायान् सवाहनान् हन हन रण रण दह दह दम दम धम धम पच पच मथ मथ लङ्घय लङ्घय खादय खादय चर्वय चर्वय व्यथय व्यथय ज्वारय ज्वारय मूकं कुरु कुरु ज्ञानं हर हर हूँ हूँ फट् फट् स्वहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! फट् फट् स्वाहा।

ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य शत्रूणां कृत मन्त्रयन्त्रतन्त्रहवन कृतौषध विषचूर्ण शस्त्राद्यभिचार सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते करिष्यति वा तान् सर्वान् हन हन स्फारय स्फारय सर्वतो रक्षां कुरु कुरु हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा। हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्र सपरिवास्य शत्रवः अभिचाराः कुर्वन्ति करिष्यन्ति शत्रुश्च कारयामास कारयन्ति कारयिष्यन्ति याऽन्यां कृत्यान्तैः सा धर्म तास्तां विपरीतां कुरु कुरु नाशय नाशय मारय मारय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रूणां श्मशान स्थानं कृत्यादिकां क्रियां भाविभूत-भवशत्रूणां शवत्कृत्यादिकां क्रियां विपरीतां कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै शत्रून् डाकिनी मुखे हारय हारय भीषय भीषय त्राशय त्राशय परमशमनरूपेण हन हन धर्मावच्छिन्नं निर्वाणं हर हर तेषामिष्टदेवानां शासय शासय क्षोभय क्षोभय प्राणादि मनोबुद्ध्यहंकार क्षुत्तृषाकर्षण लयन आवागमन मारणादिकं नाशय नाशय हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अ: अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अ: अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ फट् फट् स्वाहा।

ममात्मन: सपत्नीपुत्रपौत्र सपरिवास्य शत्रूणां कृत समस्ताभिचारं तेषां इष्ट सहितं नाशय नाशय मारय मारय खादय खादय ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अ: अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अ: अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ फट् फट् स्वाहा।

अ: अँ औँ ओँ ऐँ एँ लॄँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ ङँ घँ गँ खँ कँ ञँ झँ जँ छँ चँ णँ ढँ डँ ठँ टँ नँ धँ दँ थँ तँ मँ भँ बँ फँ पँ क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ममात्मन: सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य स्थाने समस्त शत्रूणां कृत्यान् विपरीतान् कुरु कुरु तेषां मन्त्रयन्त्रतन्त्रार्चन श्मशानारोहणभूमिस्थापन भस्मप्रक्षेपण पुरश्चरण होमाभिषेकादिकान् कृत्यान् दूरी कुरु कुरु हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! सपत्नी ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वतः सर्वेभ्यो रक्ष रक्ष हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! फट् फट् स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ महाविपरीतप्रत्यङ्गिरे! हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महाविपरीत प्रत्यङ्गिरे! सपत्नी ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य शत्रूणां विपरीत क्रियां नाशय नाशय त्रुटिं कुरु कुरु तेषामिष्टदेवतादि विनाशं कुरु कुरु तेषां सिद्धिमपनयोपनय विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! शत्रुमर्दिनी भयङ्करी शत्रूणां नानाकृत्या मर्दिनि ज्वालिनी महाघोरतरे त्रिभूवन भयङ्करी सपत्नी ममात्मनः पुत्रपौत्रपरिवारस्य चक्षुः श्रोत्राणि पादौ सर्वतः सर्वेभ्यः सर्वदा सर्वत्र रक्षां कुरु कुरु हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ऐँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ वसुन्धरे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य स्थानं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ महालक्ष्मि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य पादौ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ चण्डिके ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य जङ्घे रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ प्रचण्डचण्डिका ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य जानुं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ चामुण्डे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य गुह्यं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ इन्द्राणि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य नाभीं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नारसिंहि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य बाहुं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ वाराहि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य हृदयं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ वैष्णवि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य कण्ठं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ कौमारि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य वक्त्रं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ माहेश्वरि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य शिरो रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ब्रह्माणि ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य मानसं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

हूँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य छिद्रं सर्व गात्राणि रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

ॐ सन्तापिनि स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् सन्तापय सन्तापय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ संहारिणि स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् संहारय संहारय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ रौद्रि स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् रौद्रय रौद्रय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ भ्रामिणि स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् भ्रामय भ्रामय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ जृम्भिणि स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् जृम्भय जृम्भय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ द्राविणि स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् द्रावय द्रावय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ क्षोभिणि स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् क्षोभय क्षोभय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ मोहिनि स्फ्रेँ स्फ्रेँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् मोहय मोहय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ स्तम्भिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ उच्चाटिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् उच्चाटय उच्चाटय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ ज्वालिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् ज्वालय उज्वालय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ मर्दिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् मर्दय मर्दय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ नाशिनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् नाशय नाशय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ शोषिणि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्निपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् शोषय शोषय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ कीलनि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ भक्षिणि स्फ्रैँ स्फ्रैँ ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वं शत्रून् भक्षय भक्षय हूँ फट् स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ स्वाहा।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं

ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ स्वाहा।

हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ स्वाहा।

हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ स्वाहा।

हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतपरप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ स्वाहा।

हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे! हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे ममात्मनः सपत्नीपुत्रपौत्रपरिवारस्य सर्वेभ्यः सर्वतः सर्वदा रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे मरणभयापनय पापापनय त्रिजगतां पररूपवित्तायुर्मे देहि देहि दापय दापय स्वाहा।

ॐ नमो विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरे साधकत्वं प्रभुत्वं च सततं देहि देहि विश्व रूपे धनं पुत्रान्देहि देहि मां परिवारस्य पश्येत् मां देहिनः सर्वे हिंसकाः प्रलयं यान्तु सपरिवारस्य मम शत्रूणां बल बुद्धि हानिं कुरु कुरु तान् स सहायकान् तेषामिष्ट देवतान् संहारय संहारय तस्य उपचारं अपनयो अपनयो ब्रह्मोस्त्रादिनि व्यर्थी कुरु कुरु ॐ हूँ हूँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ठः ठः फट् फट् स्वाहा।

प्रधानदेवताहवनं परिपूर्णम्

* * *

आवाहितदेवानां होमम्

गणेशाम्बिकावरुणषोडषमातृकासप्तघृतमातृकासर्वतोभद्रदेवानां हवनम्—

गणेशहवनम्—गणेश के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गणपतये स्वाहा।

अम्बिकाहवनम्—महागौरी के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ अम्बिकायै स्वाहा ॥

वरुणहवनम्—वरुण के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥ वरुणाय स्वाहा॥

गणेशसहितषोडशमातृकाहवनम्—मातृकाओं के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गणेशाय स्वाहा॥

ॐ आयङ्गौःपृश्निरक्क्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरंचप्प्रयन्त्स्वः॥ गौर्यै स्वाहा॥

ॐ हिरण्ण्यरूपाऽउषसोव्विरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथःसूर्य्यश्श्च॥ आरोहतंव्वरुणमित्रगर्त्तंततश्श्चक्षाथामदितिंदितिंचमित्रोऽसिव्वरुणोऽसि॥ पद्मायै स्वाहा॥

ॐ निवेशनःसङ्गमनोव्वसूनांव्विश्श्वारूपाभिचष्टेशचीभिः॥ देवऽइवसवितासत्त्यधर्म्मेन्द्रोनतस्त्थौसमरेपथीनाम् ॥ शच्यै स्वाहा॥

ॐ मेधांमेव्वरुणोददातुमेधामग्ग्निःप्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्श्चव्वायुश्श्चमेधांधाता ददातुमेस्वाहा॥ मेधायै स्वाहा॥

ॐ सवितात्त्वासवानाꣳसुवतामग्ग्निर्ग्गृहपतिनाꣳसोमोव्वनस्प्पतीनाम्॥ बृहस्प्पतिर्व्वाचधर्मपतीनाम्॥ सावित्र्यै स्वाहा॥

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनोव्विशल्योबाणवाँ२॥उत॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽ आभुरस्यनिषङ्गधिः॥ विजयायै स्वाहा॥

ॐ वह्वीनांपिताबहुरस्यपुत्रश्श्चिश्श्चाकृणोतिसमनावगत्त्य॥ इषुधिःसङ्काःपृतनाश्श्चसर्व्वाःपृष्ठेनिनद्धोजयतिप्प्रसूतः॥ जयायै स्वाहा॥

ॐ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञःपुरएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥ देवसेनायै स्वाहा॥

ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः पितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः

प्प्रतितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धदद्ध्वम्॥ स्वधायै स्वाहा॥

ॐ स्वाहाप्प्राणेब्भ्यःसाधिपतिकेब्भ्यः॥ पृथिव्यैस्वाहाग्ग्नयेस्वाहान्तरिक्षाय स्वाहाव्वायवेस्वाहा॥ दिवेस्वाहासूर्य्यायस्वाहा॥ स्वाहायै स्वाहा॥

ॐ आपोऽअस्म्मान्मातरःशुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्प्वःपुनन्तु॥ व्विश्श्वꣳहिरिप्प्रंप्रवहन्तिदेविरुदिदाब्भ्यःशुचिरापूतऽएमि॥ दीक्षातपसोस्तनूरसितांत्वाशिवाꣳशग्ग्मांपरिदधेभद्द्रंव्वर्णपुष्य्यन्॥ मातृभ्यो स्वाहा॥

ॐ रयिश्श्चमेरायश्श्चमेपुष्टंचमेपुष्टिश्श्चमेव्विभुचमेप्रभुचमेपूर्ण्णंचमेपूर्ण्णतरञ्चमे कुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नंचचमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ लोकमातृभ्यः स्वाहा॥

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्श्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्प्रजासु॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मक्क्रियतेतन्न्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु॥ धृत्यै स्वाहा॥

ॐ अङ्गान्न्यात्मभिषजातदश्श्विनात्मानमङ्गैःसमधात्तसरस्वती॥ इन्द्रस्यरूपꣳशतमानमायुश्श्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतंदधानाः॥ पुष्ट्यै स्वाहा॥

ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः॥ सनःपर्षदतिदुर्गाणिविश्श्वानावेवसिन्धुंदुरितात्यग्ग्निः॥ तुष्ट्यै स्वाहा॥

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्श्रोत्रायस्वाहाव्वाचे स्वाहामनसेस्वाहा॥ आत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा॥

सप्तघृतमातृकाहवनम्—सप्तघृतमातृकाओं के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ मनसःकाममाकूतिंव्वाचःसत्त्यमशीय॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्यरसोयशःश्रीःश्रयतांमयिस्वाहा॥ श्रियै स्वाहा॥

ॐ श्रीश्श्चतेलक्ष्मीश्श्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्श्विनौव्यात्तम्॥ इष्णं निषाणामुंमऽइषाणसर्व्वलोकंमऽइषाण॥ लक्ष्म्यै स्वाहा॥

ॐ भद्द्रङ्कर्ण्णेभिःश्श्रृणुयामदेवाभद्द्रम्प्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः॥ धृत्यै स्वाहा॥

ॐ मेधांमेव्वरुणोददातुमेधामग्ग्निःप्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्श्चव्वायुश्श्चव्वायुश्श्चमेधां धाताददातुमेस्वाहा॥ मेधायै स्वाहा॥

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्श्रोत्रायस्वाहाव्वाचे स्वाहामनसेस्वाहा॥ स्वाहायै स्वाहा॥

ॐ आयंगौःपृश्श्निरक्क्रमीदसदन्न्मातरं पुरः॥ पितरंचप्प्रयन्त्स्वः॥ प्रज्ञायै स्वाहा॥

ॐ पावमानःसरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवतियज्ञंव्वष्टुधियावसुः॥ सरस्वत्यै स्वाहा॥

सर्वतोभद्रदेवतानांहवनम्—सर्वतोभद्रदेवता के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ ब्रह्म॑जज्ञा॒नम्प्र॑थ॒मम्पु॒रस्ता॒द्विसी॑म॒तः॒सु॒रुचो॑व्वे॒नआ॑वꣳ ॥ सबु॒द्ध्न्या॒ऽउप॒माऽअ॑स्यव्वि॒ष्ठाः॒स॒तश्च॒योनि॒मस॑तश्च॒व्विवः॑ ॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ व्व॒यꣳसोम॑व्व्रतेतव॒मन॑स्त॒नूषु॒बिब्भ्र॑तꣳ ॥ प्र॒जाव॑न्तꣳसचेमहि॥ सोमाय स्वाहा॥

ॐ तमीशा॑नं॒जग॑तस्त॒स्स्थुष॒स्स्पतिं॑धियंजि॒न्न्वम॑वसेहूमहेव्व॒यम्॥ पू॒षानो॒यथा॒व्वेद॑साम॑सद्वृ॒धेर॑क्षि॒तापा॒युरद॑ब्ध्यये॑॥ ईशानाय स्वाहा॥

ॐ त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्र॒ꣳहवे॑हवेसु॒हव॒ꣳशूर॒मिन्द्र॑म्॥ ह्वया॑मिश॒क्रंपु॑रुहू॒तमिन्द्र॑ꣳस्व॒स्तिनो॑म॒घवा॑धा॒त्त्विन्द्रः॑॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ त्वन्नो॑ऽअग्ग्ने॒तव॑पा॒युभि॑र्म्म॒घोनो॑रक्षत॒न्न्व॒श्श्चव्वन्द्य॥ त्रा॒ता॒तो॒कस्य॒तन॑ये॒गवा॑म॒स्यनिमे॑ष॒ꣳरक्ष॑माण॒स्तव॑व्व्रते॥ अग्नये स्वाहा॥

ॐ य॒माय॒त्त्वाङ्गि॑रस्वतेपितृ॒मते॒स्वाहा॑॥ स्वाहा॑घ॒र्म्माय॒स्वाहा॑घ॒र्म्मः॑पि॒त्रे॥ यमाय स्वाहा॥

ॐ असु॑न्न्व॒न्त॒मय॑जमानमिच्च्छस्ते॒नस्ये॒त्यामन्न्वि॑हि॒तस्क॑रस्य॥ अ॒न्न्यम॒स्म्मदि॑च्च्छ॒सात॑ऽइ॒त्यानमो॑देविनिर्ऋते॒तुब्भ्य॑मस्तु॥ निर्ऋतये स्वाहा॥

ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्भिः॑॥ अहे॑डमानोव्वरुणेह॒बो॒द्ध्युरु॑शꣳस॒मान॒ऽआयु॒ꣳप्प्रमो॑षीꣳ ॥ वरुणाय स्वाहा॥

ॐ आनो॑नि॒युद्भिः॑श॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳसह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहिय॒ज्ञम्॥ व्वायो॑ऽअ॒स्म्मिनत्सव॑नेमादयस्वयू॒यंपा॑त स्वस्तिभिः सदा नः॥ वायवे स्वाहा॥

ॐ व्वसु॑ब्भ्यस्त्वारु॒द्द्रेब्भ्य॑स्त्वाऽऽदि॒त्येब्भ्य॑स्त्वा॒सञ्जा॑नाथांद्यावापृथिवीमि॒त्त्रावरु॑णौत्वा॒व्वृष्ट्या॑वताम्॥ व्यन्तु॒व्वयो॒क्तꣳरिहा॑णाम॒रुतां॒पृष॑तीर्ग्गच्छ॒व्वशापृश्नि॑र्ब्भू॒त्वादिवं॑गच्छ॒तनो॒व्वृष्टि॒मावह॥ च॒क्षु॒ष्प्पाऽअ॑ग्ग्नेऽसि॒चक्षु॑र्म्मेपाहि॥ अष्टवसुभ्यः स्वाहा॥

ॐ नम॑स्तेरुद्द्रम॒न्न्यव॑ऽउ॒तोत॒ऽइष॑वे॒नमः॑॥ बा॒हुब्भ्या॑मु॒तते॒नमः॑॥ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा॥

ॐ य॒ज्ञोदे॒वानां॒प्रत्ये॑तिसु॒म्म्नमादि॑त्यासो॒भव॑तामृड॒यन्तः॑॥ आवो॒ऽर्व्वाची॑सुम॒तिर्व्ववृ॑त्त्याद॒ꣳहोश्श्चि॒द्याव॑रिवो॒वि॒त्त॒रास॑त्॥ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा॥

ॐ अ॒श्श्विना॒तेज॑सा॒चक्षुः॒प्प्राणे॒नसर॑स्वतीव्वी॒र्य्य॑म् ॥ व्वा॒चेन्द्रो॒बले॒नेन्द्रा॑यदधुरिन्द्रि॒यम्॥ अश्विभ्यां स्वाहा॥

ॐ विश्श्वे॑देवास॒ऽआग॑तश्शृणु॒ताम॑ऽइ॒मꣳहव॑म्॥ एदंब॒र्हिर्न्नि॑षीदत॥ उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसिव्विश्श्वे॑ब्भ्यस्त्वादे॒वेब्भ्य॑ऽएषते॒योनि॒र्व्विश्श्वेब्भ्य॑स्त्वादे॒वेब्भ्यः॑॥ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा॥

ॐ अ॒भित्यंदे॒वꣳस॑वि॒तार॑मो॒ण्योः॒क॒विक्र॑तु॒मर्च्चा॑मिस॒त्त्यस॑वꣳरत्न॒धाम॒भिप्प्रियं-

मतिंकविम्॥ ऊर्द्ध्वायस्याऽमतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीतसुक्रतुः कृपास्वः॥ प्रजाब्भ्यस्त्वाप्प्रजास्त्वानुप्प्राणन्तुप्रजास्त्वमनुप्प्राणिहि॥ सप्तयक्षेभ्यःस्वाहा॥

ॐ नमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यःसर्प्पेब्भ्योनमः॥ अष्टकुलनागेभ्यः स्वाहा॥

ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोप्प्सरसोमुदोनाम॥ सनःऽइदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातुतस्मैस्वाहा वाट्ताब्भ्युꣳस्वाहा॥ गन्धर्वाऽप्सरोभ्यः स्वाहा॥

ॐ यदक्रन्दःप्प्रथमं जायमानऽउद्यन्तसमुद्राद्दुत वा पुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमीहजातंतेऽअर्व्वन्॥ स्कन्दाय स्वाहा॥

ॐ आशुःशिशानोवृषभोनभीमोघनाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम्॥ सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरःशतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः॥ नन्दीश्वराय स्वाहा॥

ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्त्वाक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥ शूलाय स्वाहा॥

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्॥ महाकालाय स्वाहा॥

ॐ शुक्रज्ज्योतिश्श्चचित्रज्ज्योतिश्श्चसत्यज्ज्योतिश्श्चज्ज्योतिष्माँश्श्च॥ शुक्रश्श्चऽऋतपाश्श्चात्यꣳहाः॥ दक्षादिसप्तप्रजापतिभ्यः स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ दुर्गायै स्वाहा॥

ॐ इदंव्विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःप्रपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्॥ स्वधासहितपितृभ्यः स्वाहा॥

ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थांय्यस्तेऽअन्न्यऽइतरोदेवयानात्॥ चक्षुष्मतेश्शृण्वतेतेब्ब्रवीमिमानःप्प्रजाꣳरीरिषोमोतवीरान्॥ मृत्युरोगाभ्यां स्वाहा॥

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गणपतये स्वाहा॥

ॐ अप्प्स्वग्गनेसधिष्ट्वसौषधीरनुरुध्यसे॥ गर्ब्भेसञ्जायसेपुनः॥ अद्भ्यः स्वाहा॥

ॐ मरुतोयस्यहिक्षयेपाथादिवोव्विकहसः॥ ससुगोपातमोजनः॥ मरुद्भ्यः स्वाहा॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः॥ पृथिव्यै स्वाहा॥

ॐ पञ्चनद्द्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा॥

ॐ समुद्रोऽसिनमभस्वार्द्रदानुꣳ॥ शम्भूर्म्मयोभूरभिमावाहिस्वाहा॥ मारुतोऽसिमरुतांगणःशम्भूर्म्मयोभूरभिमावाहि॥ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा॥

ॐ प्रपर्व्वतस्यवृषभस्यपृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानाꣳ॥ ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताअहिम्बुध्न्यमनुरीयमाणाꣳ॥ विष्णोर्व्विक्रमणमसिविष्णोर्व्विक्रान्तमसिविष्णोꣳक्क्रान्तमसि॥ मेरवे स्वाहा॥

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गदायै स्वाहा॥

ॐ त्रिꣳशद्धामव्विराजतिव्वाक्पतङ्गायधीयते॥ प्रतिवस्तोरहद्युभिः॥ त्रिशूलायस्वाहा॥

ॐ महाँ२॥इन्द्रोव्वज्रहस्तꣳषोडशीशर्म्मयच्छतु॥ हन्तुपाप्प्मानंय्योऽस्म्मानद्द्वेष्टि॥ उपयामगृहीतोऽसिमहेन्द्रायत्त्वैषतेय्योनिर्म्महेन्द्रायत्वा॥ वज्राय स्वाहा॥

ॐ व्वसुचमेव्वसतिश्श्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्श्चमेऽर्थश्श्चमएमश्श्चमइत्याचमेगतिश्श्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥ शक्तये स्वाहा॥

ॐ इडऽएह्यदितऽएहिकाम्म्याऽएत॥ मयिवꣳकामधरणंभूयात्॥ दण्डाय स्वाहा॥

ॐ खडगोव्वैश्श्वदेवःश्श्वाकृष्ष्णःकर्णोगर्द्दभस्तरक्षुस्तेरक्षसामिन्द्रायसूकरःसिꣳहोमारुतःकृकलासःपिप्प्पकाशकुनिस्तेशरव्यायैविश्श्वेषांदेवानांपृषतः॥ खड्गाय स्वाहा॥

ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्म्मदवाधमंव्विमध्यमꣳश्रथायअथाव्वयमादित्यव्व्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम॥ पाशाय स्वाहा॥

ॐ अꣳशुश्श्चमेरश्मिश्श्चमेऽदाब्भ्यश्श्चमेऽधिपतिश्श्चमऽउपाꣳशुश्श्चमेऽन्तर्य्यामश्श्चमऽऐन्द्रवायवश्श्चमेमैत्रावरुणश्श्चमेऽआश्श्विनश्श्चमेप्प्रतिप्प्रस्थानश्श्चमेशुक्रश्श्चमे मन्थीचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ अङ्कुशाय स्वाहा॥

ॐ आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्म्मातरंपुरः॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः॥ गौतमाय स्वाहा॥

ॐ अयंदक्षिणाव्विश्श्वकर्म्मातस्यमनोव्वैश्श्वकर्म्मणंग्रीष्ष्मोमानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मीत्रिष्टुब्भः स्वारꣳस्वारादन्तर्य्यामोऽन्तर्य्यामात्पञ्चदशःपञ्चदश हब्दरद्वाजऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयामनोगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ भरद्वाजाय स्वाहा॥

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्यश्रोत्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थीमन्थिनऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद्वैराजंव्विश्श्वामित्रऽऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाश्रोत्रंगृह्णामि प्प्रजाब्भ्यः॥ विश्वामित्राय स्वाहा॥

ॐ त्र्यायुषंजमदग्ग्नेःकश्यपस्यत्र्यायुषम्॥ यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नोअस्तुत्र्यायुषम्॥ कश्यपाय स्वाहा॥

ॐ अयंपश्श्चाद्विश्श्वव्यचास्तस्यचक्षुर्व्वैश्श्वव्यचसंव्वर्षाश्श्चाक्षुष्ष्योजगतीव्वार्षी

जगत्याऽऋक्क्स्समृक्क्स्समाच्छुक्रःशुक्रात्सप्प्तदशःसप्प्तदशाद्वैरूपंजमदग्निर्ऋषिः प्प्रजापतिगृहीतयात्वयाचक्षुर्गृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ जमदग्नये स्वाहा॥

ॐ अयंपुरोभुवस्तस्यप्प्राणोभौवायनोव्वसन्तःप्प्राणयनोगायत्रीव्वासन्तीगायत्र्यै गायत्रंगायत्रादुपाᳫँशुरुपाᳫँशोस्त्रिवृत्त्रिवृतोरथान्तरंव्वसिष्ठऽऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्वया प्प्राणंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ वसिष्ठाय स्वाहा॥

ॐ अत्रपितरोमादयद्ध्वंय्यथाभागमावृषायद्ध्वम्॥ अमीमदन्तपितरोय्यथाभागमावृषायिषत॥ अत्रये स्वाहा॥

ॐ तंपत्नीभिरनुगच्छेमदेवाःपुत्रैर्ब्भ्रातृभिरुतवाहिरण्ण्यैः॥ नाकंगृब्भ्णानाःसुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्टेऽअधिरोचनेदिवः॥ अरुन्धत्यै स्वाहा॥

ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्ण्याऽउष्ण्णीषः॥ पूषासिघर्म्मायदीष्ष्व॥ ऐन्द्र्यै स्वाहा॥

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ कौमार्यै स्वाहा॥

ॐ इन्द्रायाहिधियेषितोव्विप्प्रजूतःसुतावतः॥ उपब्ब्रह्माणिव्वाघतः॥ ब्राह्म्यै स्वाहा॥

ॐ इन्द्रस्यक्क्रोडोऽअदित्यैपाजस्यंदिशांजत्रवोऽदित्यैभसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षंपुरीततानभऽउदर्य्येणचक्रवाकौमतस्नाब्भ्यांदिवंव्वृक्काब्भ्यांगिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्नाव्वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्म्मान्हिराभिःस्रवन्तीर्हृदान्कुक्षिब्भ्याᳫँसमुद्रमुदरेणव्वैश्श्वनरंभस्मना॥ वाराह्यै स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ चामुण्डायै स्वाहा॥

ॐ आप्यायस्वसमेतुतेव्विश्श्वतःसोमव्वृष्ण्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्यसङ्गथे॥ वैष्णव्यै स्वाहा॥

ॐ यतेरुद्रशिवातनूरघोराऽपापकाशिनी॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ माहेश्वर्यै स्वाहा॥

ॐ समक्ख्येदेव्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा॥ मामऽआयुःप्प्रमोषीर्म्मोऽअहंतवव्वीरंव्विदेयतवदेविसन्दृशि॥ वैनायक्यै स्वाहा॥

आवाहितदेवतानां हवनं परिपूर्णम्

⁂

अग्निपूजनम्

संकल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः ----प्रवरः---नामाऽहं कृतस्य हवनफलसाफल्यतासिद्ध्यर्थं स्वाहास्वधायुताय श्रीइष्टदेवतासहिताय अग्निपूजनं करिष्ये।

श्रीइष्टदेवताध्यानम्—हाथ में अक्षतपुष्प लेकर अग्नि में इष्ट का ध्यान करे—

ॐ पाशाश्चापासृक्कपालेऽऋणीषूञ्छूलहस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां, देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥
ज्वलत्कोटिबालार्कभासारुणाङ्गीं सुलावण्यशृङ्गारशोभाभिरामाम्।
महापद्मकिञ्जल्कमध्ये विराजत्त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्रीभवानीम्॥२॥
कणत्किंकिणीनूपुरोद्भासिरत्ना, प्रभालीढलाक्षार्द्रपादारविन्दाम्।
अजेशाच्युताद्यैः सुरैः सेव्यमानां महादेवि मन्मूर्ध्नि ते भावयाम॥३॥
सुशोणाम्बराबद्धनीवीविराजन् महारत्नकाञ्चीकलापं नितम्बम्।
स्फुरद्दक्षिणावर्तनाभिं च तिस्रो बली रम्यते रोमराजीं भजेहम्॥४॥
इष्टशक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैः दोर्धैदोर्भिर्धारयन्तं जपाभम्।
हेमा कल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः॥५॥
स्मर्त्तव्याखिललोकवर्त्ति सततं यज्जङ्गमस्थावरं,
व्याप्तं येन च यत्प्रपञ्चविहितं मुक्तिश्च यत् सिद्ध्यति।
यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यद् गीयते,
तद्वस्तुस्थिति-सिद्धयेऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः॥६॥

ॐ अग्ग्नेनयसुपथारायेऽअस्म्मान्विश्श्वानिदेववयुनानिविद्वान्॥ युयोद्ध्यस्म्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठांतेनमउक्तिंविधेम॥ ॐ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय वह्नये वौषट्।

ॐ स्वाहास्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि॥

अग्निपूजनं परिपूर्णम्

❁

स्विष्टकृद्धोमः

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥

स्विष्टकृत् हवन के पश्चात् भूरादि नवाहुति प्रदान करे—

स्विष्टकृद्धहवनं परिपूर्णम्

❁

भूरादिनवाहुतिः

ॐ भूः स्वाहा॥ इदमग्नये न मम॥१॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ भुवः स्वाहा॥ इदं वायवे न मम॥२॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ स्वः स्वाहा॥ इदं सूर्याय न मम॥३॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ त्वन्नोऽअग्नेवरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाꣳ॥ यजिष्ठोवह्नितमꣳ शोशुचानोविश्वाद्वेषाꣳसिप्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥४॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ सत्त्वन्नोऽअग्नेऽवमोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ॥ अवयक्ष्वनो वरुणꣳरराणोवीहिमृडीकꣳ सुहवोनऽएधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥५॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्त्वमयाऽअसि॥ अयानोयज्ञंवहास्ययानोधेहिभेषजꣳ स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥६॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ येतेशतंवरुणयेसहस्रंयज्ञियाःपाशाविततामहान्तः॥ तेभिर्न्नोऽअद्यसवितोतविष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतःस्वर्क्काः॥ स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥७॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमꣳ श्रथाय॥ अथावयमादित्यव्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम॥ स्वाहा इदं वरुणायादित्यायादितये च न मम॥८॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम॥९॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

नवाहुतिः परिपूर्णम्

⁂

कुमारीसुवासिनीपूजनम्

पूजागृह में सुवासिनी को लाकर प्रदक्षिणा करके, उद्वर्तनादि से स्नपन कराकर वस्त्रादि से अलंकृत करके पीठ पर समावेशित कर, अपना षडङ्गादिन्यास कर पूजनीया कुमारी का न्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लाँ कुलकुमारिके हृदयाय नमः।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीँ कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लूँ कुलकुमारिके शिखायै वषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लैँ कुलकुमारिके कवचाय हुम्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लौँ कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट्।

षडङ्गन्यास के बाद कुमारी के तत्तद अङ्गों पर मातृकान्यास करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः कुलकुमारिके शिरसि न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं आँ नमः कुलकुमारिके मुखे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ईँ नमः कुलकुमारिके वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऊँ नमः कुलकुमारिके वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऋँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ॠँ नमः कुलकुमारिके वामनासापुटे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लृँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकपोले न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लॄँ नमः कुलकुमारिके वामकपोले न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ऐँ नमः कुलकुमारिके अधरोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ओँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं औँ नमः कुलकुमारिके अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अँ नमः कुलकुमारिके जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अः नमः कुलकुमारिके कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं खँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं गँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं घँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ङँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चँ नमः कुलकुमारिके वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं छँ नमः कुलकुमारिके वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जँ नमः कुलकुमारिके वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं झँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ञँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं टँ नमः कुलकुमारिके दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ठँ नमः कुलकुमारिके दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डँ नमः कुलकुमारिके दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ढँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं णँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं तँ नमः कुलकुमारिके वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं थँ नमः कुलकुमारिके वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं दँ नमः कुलकुमारिके वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पँ नमः कुलकुमारिके दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फँ नमः कुलकुमारिके वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बँ नमः कुलकुमारिके पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भँ नमः कुलकुमारिके नाभौ न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मँ नमः कुलकुमारिके उदरे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ नमः कुलकुमारिके हृदये न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ नमः कुलकुमारिके दक्षांशे न्यस्यामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ नमः कुलकुमारिके ककुदि न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ नमः कुलकुमारिके वामांशे न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं शँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं षँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं हँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ळँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

ध्यानम्—

शङ्खेन्दुं धवलां दिव्यां द्विभुजां वरदाभयाम्।
चन्द्रमध्यमहामोजभावाभावविराजिताम् ॥

शंख तथा इन्दु के समान धवल, दिव्य, दो भुजाओंवाली, वर तथा अभय प्रदान करनेवाली, चन्द्र के मध्य, महा ओजवान्, भाव और अभावयुक्त देवी का ध्यान करता हूँ।

पूजनम्

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदं पाद्यं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदं मधुपर्कं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदमाचमनीयं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदमनुलेपनं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एते अक्षताः कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एतानि पुष्पाणि कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एष धूपं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एष दीपं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदं नैवेद्यं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदं ताम्बूलं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं इदं फलं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं एषा दक्षिणा कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि! जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥१॥

जगत्पूज्य, सम्पूर्ण जगत् में वन्द्य, सर्वशक्तिस्वरूपिणी, जगन्माता कौमारी पूजन ग्रहण करें, आपको नमस्कार है।।१।।

त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।।२।।

त्रिपुरा देवी, सत्त्वरजतम तीन गुणोंवाली, सबको धारण करनेवाली, ज्ञानमार्ग स्वरूपवाली, तीनों लोकों में वन्दित, त्रिमूर्ति रूपिणी का मैं पूजन करता हूँ।।२।।

कलात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।३।।

षोडश कलावाली, काल को भी भयभीत करनेवाली, करुणामयी, शिव के हृदय में रहनेवाली शिवा, करुणामयी जननी, हमेशा वर्तमान रहनेवाली कल्याणी देवी की मैं पूजा करता हूँ।।३।।

अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम्।
शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।४।।

अणिमादि सिद्धियों को प्रदान करनेवाली, गुणों की खान, अकारादि स्वर रूपवाली, शक्ति की ही एक भेद रूप लक्ष्मी तथा रोहिणी देवी की मैं पूजा करता हूँ।।४।।

कलाधारां कलारूपां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम्।।५।।

षोडश कलाओं को धारण करनेवाली, कलाओं के रूपवाली, कालचक्र स्वरूपिणी, समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, सदैव करुणा की वर्षा करनेवाली, कामिनी देवी की मैं पूजा करता हूँ।।५।।

चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम्।
प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्।।६।।

चण्डधारा, चण्डमायारूपिणी, चण्डमुण्ड का विनाश करनेवाली, देवताओं की ईश्वरी चण्डिका देवी को मैं प्रणाम तथा पूजा करता हूँ।।६।।

सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवी शाङ्करीं प्रणमाम्यऽहम्।।७।।

सुख और आनन्द को देनेवाली, शान्त रूप में स्थित, समस्त देवताओं के द्वारा पूज्य, सभी भूतों में व्याप्त रहनेवाली, शाङ्करी देवी की पूजा करता हूँ।।७।।

दुर्गमे दुःस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गा दुर्गे नमाम्यहम्।।८।।

दुर्गम, दुस्तर, दुःख त्रय (आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक) का विनाश करनेवाली, दुर्गादेवी की मैं भक्ति पूर्वक पूजन करता हूँ, दुर्गा देवी को नमस्कार है।।८।।

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्॥९॥

सोने के रंग की आभा के सदृश सुन्दर, सुखसौभाग्य को देनेवाली, सुभद्र की जननी सुभद्रा देवी को मैं प्रणाम तथा पूजा करता हूँ॥९॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रौं हंसः कुलकुमारिकां श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सन्ध्यायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं त्रिमूर्त्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सुभगायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उमायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुब्जिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालसङ्कर्षिण्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अपराजितायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भैरव्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्म्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पीठनायिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं क्षेत्रज्ञायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चर्चिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्—मूलमन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदानकर प्रदक्षिणा पूर्वक प्रणाम करे—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥९॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कुलकुमारिकायै नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

पुजनसमर्पणम्—अनेन कुमारीसुवासिनीपूजनेन विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयन्तां न मम।

कुमारीसुवासिर्नीपूजनं परिपूर्णम्

⁂

छागादिबलिदानम्

छागादि (कूष्माण्ड) बलिदानम्—युग्म बलि को सिन्दूरादि से अलंकृत करके अर्घ्योदक जल से तीन बार सम्प्रोक्षण कर स्नान कराये—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालिके काली रक्षिणी स्वाहा।

ॐ वाराही यमुना गङ्गा करतोया सरस्वती।
कावेरी चन्द्रभागा च सिन्धु भैरव सागर॥१॥
पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च।
पराय परमेष्ठिने नमः हूँकारमूर्तये॥२॥

वाराही, यमुना, गङ्गा, सरस्वती, कावेरी, चन्द्रभागा, सिन्धु सागर तथा भैरव, हेमकूट स्थित क्रोध मूर्ति परा-परमेष्ठी को पशुपाश-विनाश के लिए मैं नमस्कार करता हूँ॥२॥

गन्धोदक से तीन बार प्रोक्षण करके हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर मन्त्रपाठ कर समर्पित करे—

ॐ कूष्माण्ड त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थिताः।
प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम्॥१॥

बलिरूप से कूष्माण्ड तुम महाभाग्य से उपस्थित हुए हो, कूष्माण्डरूपी बलि को मैं सदा भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ॥१॥

चण्डिकाप्रीतिकामस्य दातुरापद्विनाशिने।
चण्डिकाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः॥२॥

समस्त आपत्तियों के विनाश तथा चण्डिका को प्रीति प्रदान करने के लिए, चण्डिका के बलि! तुम्हें नमस्कार है॥२॥

यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधो वधः॥३॥

यज्ञ के लिए स्वयम्भू ने पशुओं को निर्मित किया है, अतः यज्ञ में वध योग्य तुम्हारा घात करता हूँ॥३॥

पार्श्वपूजनम्—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जयन्त्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मङ्गलायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं काल्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं भद्रकाल्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं मानस्तोकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विजयायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अपराजितायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं अनन्तायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अङ्गपूजनम्—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रुधिरवदनायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चण्डिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चन्द्रार्काभ्यां नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं बृहस्पतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं उग्रदन्तिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महादन्तिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पृथिव्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं धर्माय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

लौहखड्गपूजनम्—

ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्॥१॥
रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिकम्।
पिबमानं च रुधिरं भुञ्जानं कव्यसंहतिम्॥२॥

अतिशय उग्र तथा उग्र नयन, रक्त माला धारण किये हुए, रक्त का अनुलेपन किये हुए, कृष्ण वर्ण वाले, पिनाक धनुष धारण किये हुए, रक्त वस्त्र धारण किये हुए, हाथ में पान पात्र धारण किये हुए, हे खड्ग! पीने योग्य रुधिर तथा भोज्य कव्य समर्पित है।

ॐ कालिका काली वज्रेश्वेरी लौहदण्डाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। तीन बार बलि का संप्रोक्षण करे।

ॐ ह्रीँ। सिन्दूर से मन्त्र को खड्ग के ऊपर लिख बलि के कर्ण में बलि गायत्री सुनाये।

बलिगायत्री—

ॐ ह्रीँ बलिरूपाय विद्महे देवप्रियाय धीमहि तन्नो पशुः प्रचोदयात्।

खड्गप्रार्थना—

ॐ असिर्विनासनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते॥१॥

तीक्ष्ण धार, दुरासद, विनाशक, दक्ष, असि, धर्मपाल, श्रीगर्भ तथा विजय को नमस्कार है॥१॥

इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा।
नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः॥२॥

ब्रह्मा ने तुम्हारे इन आठ नामों को स्वयं रचा है, तुम्हारा कृत्तिका नक्षत्र तथा गुरु महेश्वर है॥२॥

रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः।
पितापितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा॥३॥

रोहिणी, ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि देवता सदा हमारी रक्षा करें॥३॥

नीलजीमूतसङ्काशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः।
भावशुद्धोऽमर्षणश्च अर्जितास्तथैव च॥४॥

नील-जीमूत के समान, काले दाँतोंवाले, कृशोदर, भाव की शुद्धि, तथा अमर्षण के लिए तुम्हें अर्जित किया है॥४॥

इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः।
तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः॥५॥

इसी से महिषासुर का वध किया गया था, शुद्ध तीक्ष्ण धारवाले खड्ग! तुम्हें नमस्कार है॥५॥

श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा के जिह्वा की बुद्धि से एक बार में ही घात करे।

ॐ पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि तन्नश्छागः प्रचोदयात्।

घात के बाद सम्पूर्ण रुधिर मुण्डादि देवी के आगे बराबर भाग करके दीपक जलाये।

ॐ क्रौँ क्रौँ नमो नमः।

प्रत्येक मुण्ड में दीप प्रज्वलित करके रुधिरादि से तर्पण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं चामुण्डां तर्पयामि नमः पूर्वे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं योगिनीं तर्पयामि नमः दक्षिणे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं डाकिनीं तर्पयामि नमः उत्तरे

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विदारिकां तर्पयामि नमः आग्नेयाम्।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पापराक्षसीं तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं पूतनां तर्पयामि नमः वायव्ये।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालिकां तर्पयामि नमः ईशाने।

ॐ अद्य दशवर्षावच्छिन्नां श्रीविपरीतमहाप्रत्यङ्गिराप्रीतिकामिमं छागरुधिरं समुण्डं विष्णुदैवतं भगवत्यै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै तुभ्यमहं सम्प्रददे। हाथ में जल लेकर समर्पित करे।

भगवती प्रत्यङ्गिरा देवी को कुष्माण्ड बलिदान प्रदान करने के बाद विधिपूर्वक पात्रादि संस्कार करके यजमान सपरिवार नीराजन करे।

नीराजनविधिः—

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं फट्। दीपपात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं नमः। दीपपात्र का अभ्यर्चन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं यँ। द्वादशबार जप कर संशोषण करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं रँ। षोडशबार जप कर संदहन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं लँ। वामहस्ततल को दक्षहस्तपृष्ठ पर रखकर निवेशन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं वँ। षोडशबार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

घण्टापूजनम्—गन्धाक्षत से घण्टा का पूजन करे।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं जय ध्वनि मातः स्वाहा। घण्टा का पूजन करे–

दीपज्योतिपूजनम्—

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पाति नो भीतिर्भद्रकाली नमोऽस्तु ते।।

भद्रकालि! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होनेवाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करनेवाला तुम्हारा त्रिशूल भयों से हमारी रक्षा करें।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं कालिकायै ज्वालामालिन्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

जले ज्वाला स्थले ज्वाला ज्वाला पर्वतमस्तके।
त्रैलोक्यव्यापिनी ज्वाला ज्वाला देवि नमोऽस्तु ते।।

जल में, स्थल में, पर्वत के ऊपर, तीनो लोकों में व्याप्त ज्वाला (ज्योति) स्वरूपिणी महाकालिका ज्वाला देवी को नमस्कार है।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं महाकालिकायै ह्रीँ रत्नेश्वर्यै ज्वालायै नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मूल मन्त्र से पूजनकर एक बार नाभि प्रदेश तक, दो बार स्तन मण्डल तक, चार बार मुखमण्डल तक पुनः सात बार पूरे शरीर तक कुल चौदह बार आरती घुमाये।

नीराजनम् (आरती)—**ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजःपितुरप्रायिधामभिः॥ दिवःसदाꣳसिबृहतीव्वितिष्ठसऽआत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि॥ अग्निःप्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्मासुधत्त॥**

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि॥१॥

कर्पूर के समान गौर, करुणा के अवतार, भवानी के सहित शिव हमारे हृदय में वास करे, नमस्कार है॥१॥

ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं च यत्।
आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण जगदीश्वरि॥२॥

कर्पूर से युक्त वत्ती को जलाकर दिव्य आरती करता हूँ, हे जगदीश्वरि! इसे ग्रहण करें॥२॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥३॥

केले के वृक्ष से उत्पन्न कर्पूर से आरती करता हूँ, हे महादेवि! कृपापूर्वक दृष्टि से देख कर वर प्रदान कर्त्ता बने॥३॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मूल मन्त्र से पूजन कर एक बार नाभिप्रदेश तक, दो बार स्तनमण्डल तक, चार बार मुखमण्डल तक पुनः सात बार पूरे शरीर तक आरती घूमाये।

जलेन शीतलीकरणम्—शङ्खपात्र में जल लेकर देवता के चारों तरफ घुमाये—

पात्रमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं देवतोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां सर्वपापं व्यपोहतु॥

पात्र के मध्य में जल रखकर देवता के ऊपर भ्रामित करके मनुष्यों के अङ्ग लगने पर सभी पापों से मुक्त कर देता है।

पुष्पैः देवाभिवन्दनम्, आरार्तिक्यग्रहणम्, हस्तौ प्रच्छालनम्, पुष्पसंग्रहणम्, मन्त्रपुष्पाञ्जलिः। पुष्प से देवताओं का अभिनन्दन करके आरती ग्रहण करने के बाद दोनों

हाथ धोकर दोनों हाथों में फूल लेकर पुष्पाञ्जलि बोलकर भगवती को तथा सभी देवताओं को समर्पित करे—

पुष्पाञ्जलिविधिः—दोनों हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

ॐ य॒ज्ञेनय॒ज्ञमयजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्माणिप्प्रथ॒मान्न्यासन्।। तेहु॒नाकम्महि॒मानःसचन्त॒यत्र॒पूर्व्वेसा॒ध्याःसन्तिदे॒वाः ।। ॐ राजाधिराजायप्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणायकुर्महि समेकामान् कामकामायमह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।। कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्तिसाम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां तदपरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति।। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे।। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरी।।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि।

तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनि मुद्रा प्रदर्शित करके छत्रचामर डुला कर पुनः पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

बुद्धिः शरासने क्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च।
मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता।।१।।
ध्वनयो गीतिरूपेण शब्दवाद्यप्रभेदतः।
छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो।।२।।
सुषुम्नाध्वजरूपेण प्राणाद्यावाशरात्मना।
अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तोरथात्मना।।३।।
इन्द्रियाण्यश्व रूपाणि शब्दादीन् रथवर्त्मना।
मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः।।४।।
सर्वमन्य तवाक्लृप्तं तवोपकरणात्मना।।

प्रार्थना—

नमोऽस्तु ते सरस्वति त्रिशूल-चक्र-धारिणि,
सिताम्बरावृते शुभे मृगेन्द्रपीठसंस्थिते।
सुवर्णबन्धुराधरे सुझल्लरीशिरोरुहे,
सुवर्णपद्मभूषिते नमोऽस्तु ते महेश्वरि।।

कुमारीसुवासिनीपूजनं परिपूर्णम्

❀

हवनाङ्गबलिदानम्

दिग्पालों, समस्त ग्रहमण्डलस्थ देवताओं को दधि(दही), मास(उर्द) तथा भक्त (चावल को उबाल कर) मिश्रित कर उसपर दीपक जला कर बलि प्रदान करे।

एकतन्त्रेण दिग्पालादिबलिदानम्—एक साथ सभी दिग्पालों को सबको बलि प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च दिग्पालानां प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ दि॒विपृ॒ष्टोऽअ॑रोचता॒ग्निर्वै॑श्वान॒रोबृहन्।। क्ष्मया॑वृधा॒नऽओज॑सा॒चनो॑हितो॒ज्ज्योति॑षाबाधते॒नम॑ः।।

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः दिग्पालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः दिग्पालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

दिग्पालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिन् समर्पयामि।

प्रार्थना—**भो दिग्पालाः! ऐषु सदीपदधिमाषभक्तबलिषु गृह्णन्तु स्वां स्वां दिशं रक्षन्तु बलिं भक्षन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदाः भवन्तु।**

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन दिग्पालाः प्रीयन्तां न मम।

इन्द्राय बलिदानम्—इन्द्र के लिए बलिदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः**

साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इन्द्रदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्र॒ꣳहवे॑हवेसु॒हव॒ꣳशूर॒मिन्द्र॑म्॥ ह्वया॑मिश॒क्रंपु॑रुहू॒तमिन्द्र॑ꣳ-स्व॒स्तिनो॑म॒घवा॑धा॒त्त्विन्द्रः॑॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो इन्द्र! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां न मम।

अग्नये बलिदाम्—अग्नि के लिए बलि प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अग्निदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ त्वन्नो॑ऽअग्ग्रे॒तव॑पा॒युभि॒र्म्म॒घोनो॑रक्षत॒न्न्व॒श्श्चवन्द्य॥ त्रा॒ता॒तो॒कस्य॒तन॑ये॒गवा॑मस्य निमे॑ष॒ꣳरक्ष॑माण॒स्तव॑व्व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अग्नि! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयतां न मम।

यमाय बलिदानम्—यम के लिए बलि प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यमदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ य॒माय॒त्त्वाङ्गि॑रस्वतेपितृ॒मते॒स्वाहा॑॥ स्वाहा॑घ॒र्म्माय॒स्वाहा॑घ॒र्म्मः॑पि॒त्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो यम! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन यमः प्रीयतां न मम।

निर्ऋतये बलिदाम्—निर्ऋति के लिए बलि प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च निर्ऋतिदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ असु॑न्न्वन्त॒मय॑जमानमिच्च्छ॒स्ते॒नस्ये॒त्यामन्न्वि॑हि॒तस्क॑रस्य॥ अ॒न्न्यम॒स्म्मदि॑च्चछ॒सात॑ऽइ॒त्यानमो॑देविनिर्ऋ॒ते॒तुब्भ्य॑मस्तु॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो निर्ऋति! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयतां न मम।

वरुणाय बलिदानम्—वरुण के लिए बलि प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वरुणदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्ब्भिः॑॥ अहे॑डमानोव्वरुणेह॒बोद्ध्युरु॑शꣳस॒मान॒ऽआयु॒ꣳप्प्रमो॑षीꣳ॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो वरुण! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममसकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयतां न मम।

वायवे बलिदानम्—वायु के लिए बलि प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वायुदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ आनो॑नि॒युद्भिः॑श॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳस॑ह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहिय॒ज्ञम्॥ वायो॑ऽअ॒स्मिनत्सवने॑मादयस्वयू॒यंपा॑तस्व॒स्तिभिः॒सदा॑नः॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि **समर्पयामि।**

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो वायु! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयतां न मम।

सोमाय बलिदानम्—सोम के लिए बलि प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च सोमदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ व॒यꣳसो॑मव्र॒तेत॒वमन॑स्त॒नूषु॒बिभ्र॑तः॥ प्र॒जाव॑न्तꣳसचेमहि॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि **समर्पयामि।**

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि **समर्पयामि।**

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो सोम! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममसकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयतां न मम।

ईशानाय बलिदानम्—ईशान के लिए बलि प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च ईश्वरप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ तमीशा॑नञ्जग॑तस्त॒स्थुष॒स्पतिं॑धियञ्जि॒न्न्वमव॑सेहूमहेव॒यम्।। पूषानो॒यथा॒वेद॑सा॒म सं धेरक्षि॒तापा॒युरद॑ब्धःस्व॒स्तये॑।।

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो ईशान! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन ईश्वरः प्रीयतां न मम।

ब्रह्मणे बलिदानम्—ब्रह्मा के लिए बलि प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च ब्रह्माप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ अ॒स्मेरु॒द्रामे॒हना॒पर्व्वतासोवृत्र॒हत्ये॒भरहूतौस॒जोषाः॥ यःशꣳसंतेस्तुवतेधायिपज्ज्र ऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअ॒स्म्माँ२॥ऽअ॒वन्तुदे॒वाः॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो ब्रह्मा! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयतां न मम।

अनन्ताय बलिदानम्—अनन्त के लिए बलि प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अनन्तप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ स्यो॒नापृथिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेशनी॥ यक्षा॒नःशर्म्मस॒प्प्रथाः॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो अनन्त! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम।

नवग्रहाणां बलिदानम्

एकतन्त्रेण ग्रहादिबलिदानम्—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च ग्रहाणां प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो॒व्यन्तो॒विप्प्रायमतिम्॥ तेषांविशिप्प्रियाणांवो॒ऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्ग्रभमुपयामगृहीतो॒ऽसीन्द्रायत्त्वा॒जुष्टंगृह्णाम्म्ये॒षतेयोनि॒रिन्द्रायत्त्वा॒जुष्टतमम्॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहेभ्यः देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

ग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवताप्रत्यधि-देवता सहितेभ्यः इमां सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहेभ्यः! ऐषु बलीन् गृह्णन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदाः भवन्तु।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहाः प्रीयन्तां न मम।

सूर्याय बलिदानम्—सूर्य के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-**

----प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च सूर्यप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ आकृ॒ष्णेन॒रजसाव्वर्तमानोनिवे॒शयन्न॒मृतं॒मर्त्त्यँच॥ हि॒रण्यैनसवि॒तारथे॒नादे॒वो यांति॒भुवनानि॒पश्यन्॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्याय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्य! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्यः प्रीयन्तां न मम।

चन्द्रमसे बलिदानम्—चन्द्रमा के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च चन्द्रप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ इ॒मंदेवाऽअसप॒त्नꣳसुवद्ध्वंमह॒तेक्ष॒त्रायमह॒तेज्यैष्ठ्यायमह॒तेजानराज्ज्या॒येन्द्र॒यार्य॥ इ॒मम॒मुष्ष्यपु॒त्रम॒मुष्ष्यैपु॒त्रम॒स्यैवि॒शऽएषवोऽमीराजा॒सोमो॒ऽस्माकंब्ब्रा॒ह्मणाना॒ꣳराजा॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय चन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय चन्द्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

चन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय चन्द्र! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सोमः प्रीयतां न मम।

भौमाय बलिदानम्—भौम के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च भौमप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ अ॒ग्निर्म्मू॒र्द्धादि॒वःक॒कुत्पतिः॑पृथि॒व्याऽअयम्॥ अ॒पाᳬंरेताᳬंसिजिन्वति॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

भौमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय स्कन्दभूमिरूपाधिदेवता प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौम! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमः प्रीयतां न मम।

बुधाय बलिदानम्—बुध के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च बुधप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्त्तेसꣳसृजेथामयञ्च॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवायजमानश्चसीदत॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुधाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुधाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुध! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुधः प्रीयतां न मम।

बृहस्पतये बलिदानम्—बृहस्पति के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-**

----प्रवर:-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मण: साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च बृहस्पतिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ बृहस्पते॒ऽअति॒दु॒र्य्यो॑ऽअर्हा॑द्द्यु॒मद्विभाति॒क्क्रतु॑म॒ज्जने॑षु॥ यद्दिदय॒च्छव॑सऽऋत प्प्रजात॒तद॒स्म्मासु॒द्द्रविणंधेहिचित्रम्।

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुव: स्व: ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पतये नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुव: स्व: ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पतये देयबलये नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

बृहस्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पति! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पति: प्रीयतां न मम।

शुक्राय बलिदानम्—शुक्र के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्प:—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्र:-----प्रवर:-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मण: साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च शुक्रप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ अन्ना॑त्परि॒स्रुतो॒रसं॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्य॑पिबत्क्ष॒त्रंपय॑ꣳसोमं॑प्प्र॒जाप॑तिꣳ॥ ऋ॒तेनस॒त्त्यमि॑न्द्रि॒यं व्विपान॑ꣳशुक्रमन्ध॑स॒ऽइन्द्र॑स्येन्द्रि॒यमि॒दंपयो॒ऽमृत॒म्मधु॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुव: स्व: इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्राय नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्र! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्रः प्रीयतां न मम।

शनैश्चराय बलिदानम्—शनि के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च शनिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ शन्नो॑दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ऽआपो॑भवन्तुपी॒तये॑॥ शंय्यो॒र॒भिस्र॑वन्तुनः॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चराय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो यम प्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चर! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चरः प्रीयतां न मम।

राह्वे बलिदानम्—राहु के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च राहुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखा।। कयाशचिष्ठयाऽवृता।।

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

राह्वे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहुः प्रीयतां न मम।

केतवे बलिदानम्—केतु के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च केतुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे।। समुषद्भिरजायथाः।।

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतुः प्रीयतां न मम।

केतु के बलिदान के बाद पञ्चलोकपालों के लिए पूर्व के ही समान विधिपूर्वक बलिदान प्रदान करे।

पञ्चलोकपालादिबलिदानम्

एकतन्त्रेण पञ्चलोकपालानां बलिदानम्—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पञ्चलोकपालानां प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्भधमात्त्वमजासिगर्भधम्॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन॥ ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ व्वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि॥ नियुत्वान्त्सोमपीतये॥ ॐ घृतंघृतपावानःपिबतव्वसांव्वसापावानःपिबतान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशःप्प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा॥ ॐ यावांकशामधुमत्याश्विनासूनृतावती॥ तयायज्ञंमिमिक्षताम्॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिपञ्चलोकपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिपञ्चलोकपालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

गणेशादिपञ्चलोकपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो पञ्चलोकपालाः! इमं बलिं गृह्णन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदाः भवन्तु।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन गणेशादिपञ्चलोकपालाः प्रीयन्तां न मम।

गणेशाय बलिदानम्—गणेश के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च गणेशप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

गणेशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो गणेश! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।

दुर्गायै बलिदानम्—दुर्गा के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च दुर्गाप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्व॒कः सु॒भ॑द्रिकाङ्का॒म्पील॑वा॒सिनी॑म्॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

दुर्गायै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो दुर्गे! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री वरदा भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन दुर्गा प्रीयतां न मम।

वायवे बलिदानम्—वायु के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वायुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ व्वायो॒येते॑सह॒स्रिणो॒रथा॑स॒स्तेभि॒राग॑हि॥ नि॒युत्त्वा॒न्त्सोम॑पीतये॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो वायु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयतां न मम।

आकाशाय बलिदानम्—आकाश के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आकाशप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ घृतंघृतपावानःपिबतवसांवसापावानःपिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशः प्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

आकाशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो आकाश! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन आकाशः प्रीयतां न मम।

अश्विनीकुमारौ बलिदानम्—अश्विनीकुमारों के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अश्विनौ प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ यावांकशामधुमत्याश्विनासूनृतावती।। तयायज्ञंमिमिक्षताम्।।

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनीभ्यां नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनीभ्यां देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

अश्विनीभ्यां साङ्गाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकाभ्यां इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो अश्विनीकुमारौ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारौ क्षेमकर्तारौ शान्तिकर्तारौ पुष्टिकर्तारौ तुष्टिकर्तारौ वरदो भवतम्।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन अश्विनीकुमारौ प्रीयतां न मम।

वास्तोस्पतये बलिदानम्—वास्तुदेवता के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वास्तोस्पतिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः।। यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्वशन्नोभवद्विपदेशंचतुष्पदे।।

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोस्पतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोस्पतये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

वास्तोस्पते साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो वास्तोस्पति! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन वास्तोस्पते प्रीयतां न मम।

क्षेत्रपालाय बलिदानम्—एक पत्तल पर दधिमाषभक्त रखकर उसपर दीपक जला कर क्षेत्रपाल के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च क्षेत्रपालप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ध्यानम्—पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ न॒हिस्प्पश॒मविदन्न॒न्यम॒स्माद्वैश्श्वानु॒रात्पुरऽएतारम॒ग्नेः॥ एमैनमवृधन्नमृता॒ऽ-अमर्त्त्यंवैश्श्वनु॒रंक्षैत्रजित्त्यायदेवाः॥

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजां-बलिं-गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा॥१॥

भूतप्रेत गणों के साथ क्षेत्रपाल आपको नमस्कार है, इस पूजा तथा बलि को ग्रहण करके सदा के लिए सौम्य तथा प्रसन्न हो जायें॥१॥

पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा॥२॥

हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करके हमें पुत्र, धन, आरोग्यता प्रदान करें तथा सदा सर्वदा निर्विघ्न करें॥२॥

पूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बलिपूजनम्—गन्धाक्षतपुष्प से बलि पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

समर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करे—

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूतप्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-ब्रह्मराक्षस-गण-सहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

भो क्षेत्रपाल! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

कर्मसमर्पणम्—जल से कर्मसमर्पण करे—

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।

प्रार्थना—हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्यावसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः ॥१॥

आदित्य, अष्टवसु, मरुतादि गण,अश्विनी कुमार, रुद्र, सुवर्ण, पन्नग, खग सभी इस बलि को ग्रहण करें॥१॥

असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेतालाः योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥२॥

असुर, यातुधान, पिशाच, राक्षसादि, शाकिनी, यक्ष, वेताल, योगिनी, पूतनादि, शिवायें इस बलि को ग्रहण करें॥२॥

जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः॥३॥

जृम्भक, सिद्ध, गन्धर्वादि, सौम्य, विद्याधर, दिग्पाल, लोकपाल तथा जो हमारे जीवन में विघ्न करने वाले है सभी इस प्रदत्त बलि को ग्रहण करें॥३॥

जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥४॥

शान्ति प्रदान करने वाले ब्रह्मा तथा ऋषि-महर्षि हमारे जीवन में विघ्न न करें, हमारे पापों का शमन करें, हमें पापमार्ग में न जाने दें॥४॥

सौम्याः भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।
बलिं गृह्णन्तु ते सत्यं पालयन्ति सदा मम॥५॥

इस बलि को सभी भूतप्रेतादि सौम्य होकर ग्रहण कर नित्य सदा सर्वदा हमारा पालन तथा रक्षा करें॥५॥

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले,
बलिं गृहित्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु,
रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र॥६॥

इस भूतल पर वास करनेवाले जो भूतप्रेतादि गण हैं, हमारे द्वारा विधिवत् प्रदत्त पूजा तथा बलि को ग्रहण करके अपना वास स्थान कहीं अन्यत्र बना लें तथा हमारा जीवन निर्विघ्न करें॥६॥

अब्राह्मण नापितादि कोई यजमान के मस्तक पर वामावर्त घुमाकर घर के बाहर चौराहे पर ले जाकर रख दे तथा आचार्यादि यजमान के मस्तक पर अधोलिखित मन्त्र से जल छिड़के।

ॐ हिङ्काराय॒स्वाहाहिंकृ॑तायस्वाहाक्रन्द॑तेस्वाहा॑ऽवक्रन्दायस्वाहाप्प्रोथ॑तेस्वाहा॑-प्रप्पोथायस्वाहा॑गन्धायस्वाहा॑घ्रातायनिवि॑ष्ट्टायस्वाहोप॑विष्ट्टायस्वाहासन्दि॑तायस्वाहा-वल्ग॑तेस्वाहाऽसी॑नायस्वाहाशया॑नायस्वाहास्वप॑तेस्वाहाजाग्र॑तेस्वाहाकूज॑ते॒स्वाहा-प्प्रबु॒द्धायस्वाहा॑व्विजृम्भ॑माणाय॒स्वाहा॑व्विचृ॑त्तायस्वाहासꣳहा॑नायस्वाहोप॑स्थिताय-स्वाहाऽय॑नायस्वाहाप्प्राय॑णायस्वाहा॑॥

हवनाङ्गबलिदानं परिपूर्णम्

⁂

पूर्णाहुतिहवनम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वरदनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि।।

ॐ पूर्णादर्व्वि परापतसुपूर्ण्णापुनरापत।। व्वस्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳसतक्रतोः।।
ॐ पुर्णाहुत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ समुद्राद्दूर्म्मिर्म्मधुमाँ२।।ऽउदारदुपाꣳशुनासममृतत्त्वमानट्घृतस्यनामगुह्यं यदस्तिजिह्वादेवानामृतस्यनाभिः।। व्वयंनामप्रव्वामाघृतस्यास्मिन्यज्ञेधारयामानमोभिः।। उपब्रह्माश्श्रृमवच्छस्यमानंचतुःश्रृङ्गोऽवमीद्गौरऽएतत्।। चत्त्वारिश्श्रृङ्गास्त्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षेसप्तहस्तासोऽअस्य।। त्रिधाबद्धोव्वृषभोरोरवीतिमहोदेवोमर्त्त्याँ२।।ऽआविवेश।। त्रिधाहितंपणिभिर्गुह्यमानंगविदेवासोघृतमन्वविन्दन्।। इन्द्रऽएकꣳसूर्य्यऽएकञ्जजानव्वेनादेकꣳस्वधयानिष्टतक्षुः।। एताऽअर्षन्तिहृद्यात्समुद्राच्छतव्रजारिपुणानाव चक्षे।। घृतस्यधाराऽअभिचाकशीमिहिरण्ययोव्वेतसोमध्ध्यऽआसाम्।। सम्म्यक्स्रवन्ति सरितानधेनाऽअन्तर्हृदामनसापूयमानाः।। एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयोघृतस्यमृगाऽइवक्षिपणोरीषमाणः।। सिन्धोरिवप्प्राध्ध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः।। घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्वमानः।। अभिप्प्रवन्तसमनेवयोषाःकल्ल्याण्ण्यःस्म्मयमानासोऽअग्निम्।। घृतस्यधाराःसमिधोनसन्त ताजुषाणोहर्य्यति जातवेदाः।। कन्याऽइवव्वहतुमेतवाऽउऽअञ्ज्यञ्जानाऽअभिचाकशीमि।। यत्रसोमःसूयतेयत्रयज्ञोघृतस्यधाराऽअभितत्पवन्ते।। अभ्यर्षतसुष्टुतिंगव्यमाजिमस्म्मासुभद्राद्रविणानिधत्त।। इमंयज्ञंनयतदेवतानोघृतस्यधारामधुमत्पवन्ते।। धामन्तेव्विश्श्वंभुवनमधिश्श्रितमन्तःसमुद्रेहृद्यन्तरायुषि।। अपामनीकेसमिथेयऽआभृतस्तमश्यामममधुमन्तंतऽऊर्म्मिम्।। पुनस्त्वाऽऽदित्यारुद्रावसवःसमिन्धतांपुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः।। घृतेनत्वंतन्न्वंव्वर्द्धयस्वसत्त्याःसन्तुयजमानस्यकामाः।। मूर्द्धानंदिवोऽअरतिंपृथिव्या व्वैश्श्वानरमृतऽआजातमग्निम्।। कविꣳ सम्म्राजमतिथिंजनानामासन्नापात्रंजनयन्तदेवाः।। पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत।। व्वस्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्रतोःस्वाहा।।

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नयेऽद्भ्यश्च न मम।।

पूर्णाहुतिहोमः परिपूर्णम्

* * *

वसोर्द्धाराहवनम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ------गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वसोर्द्धारा होष्यामि॥

कुण्ड के ऊपर वसोर्द्धारा पूर्व दिशा की तरफ करके उसके ऊपर घृतपात्र रखकर नीचे यव मात्र छिद्र रखकर अग्नि के ऊपर स्रुक् के मुख में सुवर्णनिर्मित जिह्वा बाँधकर वसोर्द्धारा छोड़े।

ॐ सप्ततेऽअग्ग्नेसमिधः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्तधामप्प्रियाणि॥ सप्तहोत्राः सप्तधात्त्वायजन्तिसप्तयोनीरापृणस्वघृतेनस्वाहा॥ शुक्रज्ज्योतिश्श्चचित्रज्ज्योतिश्श्च सत्यज्ज्योतिश्श्चज्ज्योतिष्माँश्श्च॥ शुक्रश्श्चऋतपाश्श्चात्यᳫहाः॥ ईदृङ्प्रतिसदृङ्॥ मितश्श्चसम्मितश्श्चसभराः॥ ऋतश्श्चसत्यश्श्चध्रुवश्श्चवरुणश्श्च॥ धर्त्ताचविधर्त्ताचविधारयः॥ ऋतजिच्चसत्यजिच्चसेनजिच्चसुषेणश्श्च॥ अन्तिमित्रश्श्चदूरेऽअमित्रश्श्चगणः॥ ईदृक्षासऽएतादृक्षासऊपुणः सदृक्षासः प्प्रतिसदृक्षासऽएतन॥ मितासश्श्चसम्मितासोनोऽअद्यसभरसोमरुतोयज्ञेऽअस्मिन्॥ स्वतवाँश्श्चप्रघासीचसान्तपनश्श्चगृहमेधीच॥ क्रीडीचशाकीच्चोज्जेषी॥ इन्द्रंदैवीर्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानोगऽभवन्यथेन्द्रंदैवीर्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानोगऽभवन्॥ एवमिमंयजमानंदैवीश्श्चविशोमानुषीश्श्चानुवर्त्मानोभवन्तु॥ इमᳫंस्तनमूर्ज्जस्वन्तंधयापांप्प्रपीनमग्ग्नेसरिरस्यमद्ध्ये॥ उत्संजुषस्वमधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियᳫंसदनमाविशस्व॥ घृतंमिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्श्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥ ॐ वसोःपवित्रमसिशतधारंवसोःपवित्रमसिसहस्रधारम्॥ देवस्त्वासवितापुनातुवसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वा॥ ॐ कामधुक्षः स्वाहा॥

इदमग्नये वैश्वानराय न मम॥

अग्निप्रदक्षिणा—हाथ जोड़कर अपने परिवार तथा अपने शुभेक्षुओं के साथ सपत्नी यजमान अग्नि की प्रदक्षिणा करे—

ॐ अग्ग्नेनयसुपथारायेऽअस्म्मान्विश्श्वानिदेववयुनानिविद्वान्॥ युयोद्ध्यस्म्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठांतेनमऽउक्तिंविधेम॥

हवनकर्म परिपूर्णम्

✿

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्

आचार्य कुण्ड के ईशानकोण से भस्म लेकर पहले आचार्य के सहित समस्त ब्राह्मण फिर यजमान के शरीर में भस्म लेपन करे।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः। मन्त्र से ललाट पर भस्म लगाये।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्। मन्त्र से ग्रीवा पर भस्म लगाये।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्। मन्त्र से दक्षिणबाहुमूल पर भस्म लगाये।

ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्। मन्त्र से हृदय पर भस्म लगाये।

संस्रवप्राशनम्। प्रोक्षणीपात्र जल का यजमान को प्राशन अथवा घ्राण कराये।

आचमनम्। पश्चात् आचमन कराये।

पवित्राभ्याम् मार्जनम्। प्रणितापात्रस्थित पवित्री से मार्जन करे।

अग्नैपवित्रप्रतिपत्तिः। पवित्री को अग्नि मे प्रक्षेप करे।

हवनीयकुण्डभस्मधारणं परिपूर्णम्

* * *

विभिन्नदानादिसङ्कल्पः

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

ब्रह्मा पूर्णपात्र ग्रहण कर बोले—**ॐ द्यौस्त्वाददातु पृथिवीस्त्वा प्रतिगृह्णातु।**

प्रणीतापात्र के जल से ब्रह्मा यजमान के ऊपर उपयमनकुशा से अभिषेक करे।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

उपयमनकुशा का अग्नि में प्रक्षेप कर ब्रह्म ग्रन्थि को खोल दें।

यजमानाय श्रेयोदानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयो दानं करिष्ये।**

सौमनस्य मस्तु। पुष्प प्रदान करे।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। अक्षत प्रदान करे।

भवन्नियोगेन मया अस्मिन् विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं एभिर्ब्रह्मगाणपत्यसदस्योपद्रष्टाजापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह जपहवनादिकर्मणञ्च यत्कृतं तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव।

यजमान बोले—**भवामि।**

श्रेयोदान के बाद आचार्यादि ब्राह्मणों को यज्ञकर्मदक्षिणा (मुख्य दक्षिण) तुरन्त अवश्य दे देना चाहिए, विलम्ब करने से प्रायश्चित्त होता है।

आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिंष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये॥**

आचार्याय गोदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्रप्रवराय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

ब्रह्मणेवृषभदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं वृषभनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकगोत्राय प्रवराय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

गाणपत्ये अश्वदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं अश्वनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय प्रवराय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय गाणपत्ये तुभ्यमहं सम्प्रददे।

उपद्रष्टाय गन्त्रीदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं गन्त्रीनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे उपद्रष्टत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।

सदस्याणां सुवर्णदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं सुवर्णनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकामुकगोत्रेभ्यः अमुकामुकप्रवरेभ्यः अमुकामुकशर्मणेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः सम्प्रददे।

भूयसीदक्षिणदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहार्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं निष्क्रयभूतं

द्रव्यं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो नटनर्तकगायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्तिभूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे॥

सङ्कल्प करके ब्रह्मणों तथा अन्य बहनों तथा गरीब लोगों को भूयसी दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मणभोजनम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासंख्यकान् ब्राह्मणान् नानाविधिपक्वान्नेन भोजयिष्ये।**

दानादिसङ्कल्पं परिपूर्णम्

* * *

आवाहितदेवतानामुत्तरपूजनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सद्यपूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ---गोत्रः---प्रवरः---नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं चावाहितमहागणपत्यादिदेवानामुत्तरपूजनं करिष्ये॥

सङ्कल्प करके आवाहित देवताओं का यथोपचार उत्तर पूजन के पश्चात् प्रधान पीठ सहित समस्त पीठों को दक्षिणा के सहित आचार्य को प्रदान करे।

महागणपतिपूजनम्

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नमः ध्यायामि, उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

महागौरीपूजनम्

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ सर्सस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

स्वस्तिकलशस्थदेवतानां पूजनम्

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अपांपतये वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

षोडशमातृकानां पूजनम्

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥१॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश॥२॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवतान्त आवहितषोडश-मातृभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सप्तघृतमातृकानां पूजनम्

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥१॥
यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतुद्भभम्॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वन्त्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवानां पूजनम्

ॐ ब्रह्म॑जज्ञा॒नम्प्र॑थ॒मम्पु॒रस्ता॒द्विसी॑म॒तꣳसु॒रुचो॑व्वे॒नऽआ॑वः॥ सबु॒ध्न्या॒ऽउप॒माऽ अ॑स्यव्वि॒ष्ठाꣳस॒तश्च॒योनि॒मस॑तश्च॒व्विवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्माद्यावाहितसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रधानकलशस्थदेवानां पूजनम्

ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्भिः॥ अहे॑डमानोव्वरुणे॒ह बो॒ध्युरु॑शꣳस॒मान॒ऽआयुः॒प्रमो॑षीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः अर्घ्यं समर्पसरमि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसाज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादुशीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथविल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्चवाह्या अलक्ष्मीः॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिदेव्यै नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः सुगन्ध्युक्त अबीरकुंकुमादिनानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यञ्च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलपत्रं पूङ्गीफलं एलालवङ्गादिकं समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदली पनसाऽऽम्रंकपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः निराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर परिक्रमा कर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ऐं साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

अनेन पूजनेन विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयन्तां न मम।

ग्रहमण्डलस्थदेवानामुत्तरपूजनम्

ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयोव्व्यन्तोव्विप्रायमतिम्॥ तेषांव्विशिप्प्रियाणांव्वोऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्ग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्त्वाजुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याद्यनन्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

असंख्यातरुद्राणामुत्तरपूजनम्

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

नीराजनम् (आरती)—दोनों हाथों से आरती देवता के सम्मुख घुमाये—

ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्प्रजासनि पशुसनिलोकसन्न्यभयसनि॥ अग्निःप्प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त॥ ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजःपितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवःसदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः॥

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
मैया तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव जी॥१॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
मैया टीको मृगमद को।
उज्वल से दोऊ नयना,
निर्मल से दोऊ नयना, चन्द्रवदन नीको॥२॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे।
मैया रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला,
लाल पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे॥३॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
मैया खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत,
ऋषि जन मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी॥४॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
मैया नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर,
अगणित सूर्य प्रभाकर, राजत सम ज्योति॥५॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
मैया महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना,
मधुर विलोचन नैना, निशदिन मदमाती॥६॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मैया शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोऊ मारे,
मधु कैटभ संहारे, सुर भयहीन करे॥७॥

ॐ जय अम्बे गौरी।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
मैया तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी,
वेद पुराण बखानी, तुम शिव पटरानी॥८॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों।
मैया नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदङ्गा,
बाजत ढोल मृदङ्गा, अरु बाजत डमरू॥९॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
मैया तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता,
सन्तन की सुख करता, सुख सम्पति करता॥१०॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मैया वरद अभय धारी।
मन वाच्छित फल पावत,
मन इच्छित फल पावत, सेवत नर नारी॥११॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
मैया धूप दीप बाती।
श्रीमाल केतु में राजत,
विन्ध्याचल में विराजत, कोटि रतन ज्योति॥१२॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
ये अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावें।
मैया जो कोई नर गावें।
कहत शिवानन्द स्वामी,
भजत हरिहर स्वामी, सुख सम्पति पावे॥१३॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।

तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव जी।
मैया हरि ब्रह्मा शिव जी।
कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामि॥
कदलीगर्भसम्भूतं, कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे, पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि॥

जलेन शीतलीकरणम्—

पात्रमध्ये स्थितं तोयं, भ्रामितं देवतोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां, सर्वं पापं व्यपोहतु॥

पुष्पैः देवाभिवन्दनम्, आरार्तिक्यग्रहणम्, हस्तौ प्रच्छालनम्, पुष्पसंग्रहणम्, मन्त्रपुष्पाञ्जलिः। पुष्प से देवताओं का अभिनन्दन कर, आरती ग्रहण करने के बाद, दोनों हाथ धोकर, दोनों हाथों में फूल लेकर, पुष्पाञ्जलि बोलकर भगवती की तथा सभी देवताओं को समर्पित करे।

पुष्पाञ्जलिः—दोनों हाथों में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानःसचन्त-यत्रपूर्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः॥ ॐ राजाधिराजायप्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणायकुर्महि समेकामान् कामकामायमह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्तिसाम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां तदपरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे॥ आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वरि!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मण्डपस्थआवाहितदेवतासहितायै साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरायै नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि प्रदान करने के बाद स्तुत्यादि पाठ करे।

आवाहितदेवतानांविसर्जनम्

स्तुत्यादि पाठ करने के बाद देवी के सहित समस्त देवताओं को अपने अपने लोक में पधारने के लिए प्रार्थना कर ब्रह्मणों, कुमारियों तथा सुवासिनियों को भोजन कराकर दक्षिणादि से सन्तुष्ट कर आशीर्वाद ग्रहण करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रप्रवरः नामाऽहं कृतस्य विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरण कर्माङ्गत्वेन आवाहितदेवतानां उत्थापनं विसर्जनं करिष्ये॥**

सानुनय अग्नि तथा आवाहित समस्त देवताओं का यथोपचार पुष्पाक्षतादि से पूजन कर गणेश तथा महागौरी को छोड़कर अन्य समस्त देवताओं तथा अग्नि को स्वस्वलोक गमनार्थ विदा करने के बाद समस्त पीठों का आचार्य को दान करके यज्ञकर्म का विसर्जन करे।

ॐ उत्तिष्ठब्ब्रह्मणस्पतेदेवययन्तस्त्वेमहे॥ उपप्प्रयन्तुमरुतःसुदानवऽइन्द्रप्प्राशूर्ब्भवा स चा॥ ॐ यज्ञंगच्छयज्ञपतिंगच्छस्वांयोनिंगच्छस्वाहा॥ एषतेयज्ञोयज्ञपतेसहसूक्तवाकःसर्व्ववीरस्तंजुषस्वस्वाहा॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥१॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन॥२॥

प्रार्थना—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥१॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्युनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥२॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः॥३॥
यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादपि।
न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥४॥

ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥ ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥

अनेन यथाशक्तिकृतेन विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणा श्रीमहापापहा महाविष्णुः प्रीयतां न मम।

आचार्याय प्रधानपीठादिदानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य सग्रहमखविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थञ्च इमानि सोपष्करसहितानि**

प्रधानपीठादीनि अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकनामाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

सपरिवारयजमानस्य अभिषेकम्

समस्त ब्राह्मणों के सहित आचार्य सपरिवार यजमान का रुद्रकलश तथा प्रधानकलश के जल को एकत्र कर अभिषेक करे।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥ १॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥ २॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥ ३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धाक्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥ ४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः॥ ५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वाः यक्षराक्षसपन्नगाः॥ ६॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः॥ ७॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥ ८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये॥ ९॥

ॐ पयःपृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्रदिशःसन्तुमह्यम्॥ ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥ ॐ पुनन्तुमादेवजनाःपुनन्तुमनसाधियः॥ पुनन्तुव्विश्वाभूतानिजातवेदःपुनीहिमा॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यांपूष्णोहस्ताब्भ्याम्॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्यन्त्रितयेदधामिबृहस्प्पतेष्ट्वासाम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यांपूष्णोहस्ताब्भ्याम्॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्यन्त्रेणाग्नेःसाम्म्राज्येनाभिषिञ्चामि॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यांपूष्णोहस्ताब्भ्याम्॥ अश्विनोभैषज्ज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि॥ सरस्वत्यैभैषज्ज्येनव्वीर्यान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण-

बलायश्रियैयशसेऽभिषिञ्चामि॥ ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव॥ धामच्छदग्निरिन्द्रोब्ब्रह्मादेवोबृहस्प्पतिः॥ सचेतसोव्विश्वेदेवायज्ञंप्रावन्तनःशुभे॥ त्वंय्यविष्ठदाशुषोनॄःपाहिश्रृणुधीगिरः॥ रक्षातोकमुतत्मना॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ प्रप्रदातारंतारिषऊर्जंनोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिःपृथिवीशान्तिरापꣳशान्तिरोषधयꣳशान्तिः॥ व्वनस्प्पतयꣳशान्तिर्व्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्ब्रह्म शान्तिꣳसर्व्वꣳशान्तिꣳशान्तिरेवशान्तिꣳसामाशान्तिरेधि॥ यतोयतःसमीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नःकुरुप्प्रजाभ्योभयन्नꣳप्पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशीः भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

छायापात्रदानम्

कांस्यपात्र में घृत भरकर उसमें द्रव्य डालकर मुख अवलोकन का संकल्प करे।

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य सग्रहमखविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं चाज्यावेक्षणं करिष्ये॥

ॐ रूपेणवोरूपमभ्यागांतुथोवोव्विश्ववेदाव्विभजतु॥ ऋतस्यपथाप्प्रेतचन्द्रदक्षिणाव्विस्वःपश्श्यव्व्युन्तरिक्षंयतस्वसदस्यैः॥

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य सग्रहमखविपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदमवलोकितं कांस्यपात्रस्थितमाज्यं सदक्षिणां मृत्युञ्जयदैवतं मृत्युञ्जयदेवताप्रीतये सर्वारिष्टविनाशार्थञ्च अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

संकल्प करके यजमान ब्राह्मण को आज्यपात्र दे दे। ब्राह्मण आज्यपात्र ग्रहणकर **स्वस्ति वाढय** बोलकर यजमान को आशीर्वाद प्रदान करे।

अपराधक्षमापनम्

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥१॥

हे परमेश्वर! मैं आवाहन तथा विसर्जन नहीं जानता, पूजा भी नही जानता हूँ, अतः हमें क्षमा करें॥१॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे॥२॥

हे देवताओं के ईश्वर! मैं मन्त्र, क्रिया तथा भक्ति से हीन जो भी पूजन किया है, वह हमारी पूजा आपकी कृपा से पूर्ण हो जाये॥२॥

जपच्छिद्रं तप:च्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतु मेऽच्छिन्द्रं ब्राह्मणानां प्रसादत:॥३॥

हे परमेश्वर! हमारे द्वारा किये गये जप, तप तथा शान्ति कर्म के जो कोई दोष हों सभी दोष ब्राह्मणों की कृपा से समाप्त हो जाये और हमारा कार्य पूर्ण हो जाये॥३॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वर॥४॥

हे परमेश्वर! मै आपका अहर्निश दिनरात सहस्रों अपराध किया है, आप अपना दास समझ करके हमें क्षमा कर दें॥४॥

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥५॥

हे परमेश्वर! ज्ञान में अज्ञान में जो कुछ भी हमने आपके प्रति कम तथा अधिक कार्य किया हो, उस सभी को क्षमा करके हमारे ऊपर प्रसन्न हो जायें॥५॥

कर्मणा मनसा वाचा प्रत्यङ्गिरा मया कृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरी॥६॥

कर्म से, मन से, वचन से हमने प्रत्यङ्गिरापुरश्चरण किया उससे सन्तुष्ट होकर हमारे ऊपर प्रसन्न हो जाओ॥६॥

यजमानरक्षाबन्धनम्—आचार्य यजमान को दाहिने हाथ में रक्षा बाधें—

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः॥ तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदट्टिर्यथासम्॥

यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम्—आचार्य यजमान पत्नी को रक्षा बाधें—

ॐ तंपत्नीभिरनुगच्छेमदेवाःपुत्रैर्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः॥ नाकंगृभ्णानाः सुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्ठेऽअधिरोचनेदिवः॥

यजमानतिलकम्—आचार्य सपरिवार यजमान को तिलक करे—

ॐ स्वस्त्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाःस्वस्त्तिनःपूषाविश्श्ववेदाः॥ स्वस्त्तिनस्ताक्ष्र्योऽ अरिष्टनेमिःस्वस्त्तिनोबृहस्प्पतिर्दधातु॥

यजमान-आशीर्वादम्—आचार्य यजमान को आशीर्वाद स्वरूप फलादि प्रदान करे—

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्त्यारुद्द्रावसवः समिन्धतांपुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः॥ घृतेनत्वंतन्वं वर्द्धयस्वसत्त्याःसन्तुयजमानस्यकामाः॥

श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥१॥
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा।
ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः॥२॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥३॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥४॥

यजमानपत्नी आशीर्वादम्—आचार्य यजमानपत्नी को आशीर्वादस्वरूप फलादि प्रदान करे—

ॐ अनाधृष्ट्टपुरस्तादग्ग्नेराधिपत्यऽआयुर्म्मेदाः पुत्रवतीदक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्त्ये प्प्रजांमेदाःसुषदापश्चाद्देवस्यसवितुराधिपत्त्येचक्षुर्म्मेदाऽआश्श्रुतिरुत्तरतोधातुराधिपत्त्ये रायस्पोषंमेदाः॥विधृतिरुपरिष्ट्टाद्बृहस्पतेराधिपत्त्यऽओजोमेदाविश्श्वाब्भ्योमानाष्ट्टाब्भ्यस्प्पाहि मनोरश्श्वासि॥

विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्यायाः वैदिकविधिः परिपूर्णः

❀

देवीपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम्

ध्यानम्

सदावृन्दारकोद्वृन्दऽऽनन्दसन्दोहदायकम् ।
अमन्दमङ्गलागारं वन्दे शङ्कर नन्दनम्॥१॥
किं कार्यं कठिनं कुतः परिभवः कुत्रापवादाद्भयं,
किं मित्रं न हि किन्नु राजसदनं गम्यं न विद्या च का।
किं वाऽन्यज्जगतितले प्रवद यत्तेषामसम्भावितं,
येषां हृत्कमले सदा वसति सा तोषाप्रदा सङ्कटा॥२॥

स्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते,
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१॥

हे पर्वतराज की पुत्री! पृथ्वी को आनन्दित करनेवाली, संसार को सुखी बनानेवाली, नन्दिगण से नमस्कार की जानेवाली, पर्वतों में सब जगह श्रेष्ठ विन्ध्याचल की चोटियों पर रहनेवाली, विष्णु भगवान् को प्रसन्न रखनेवाली, इन्द्र से प्रणाम की जानेवाली भगवती, शङ्कर भगवान् की गृहणी, विशाल कुटुम्बवाली, ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥१॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते,
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥२॥

हे इन्द्र को समृद्ध बनानेवाली, दुर्धर और दुमुख नाम के दैत्यों का संहार करनेवाली, सदा प्रसन्न रहनेवाली, तीनों लोकों का पालन करनेवाली, शङ्कर भगवान् को सन्तुष्ट रखनेवाली, पापों से मुक्ति दिलानेवाली, पगर्जना करनेवाली, मानदैत्यों पर क्रोध करनेवाली, अभिमान को नष्ट करनेवाली, ढोंगी तपस्वियों पर क्रोध करनेवाली, हे शैलपुत्री, शङ्कर की

प्रिय पत्नी पार्वती, समुद्रकन्या, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तुम्हारा जय जयकार हो।।२।।

अयि जगदम्ब! कदम्बवनप्रियवासिनि तोषिणि हासरते,
शिखरिशिरोमणितुङ्गहिमालयशृङ्गनिजालयमध्यगते ।
मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि महिषविदारिणि रासरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।३।।

हे जगज्जननि, कदम्बवृक्ष के जङ्गल मे वास करनेवाली, सन्तोष देनेवाली, सदैव हँसमुख रहनेवाली, पर्वतो में श्रेष्ठ, ऊँचें हिमालय की चोटी पर अपने मन्दिर में रहनेवाली, मधुपान से सुन्दर दिखाई पड़नेवाली, मधु, कैटभ और महिष नाम के दैत्यों को विदीर्ण करनेवाली, रासक्रीडा मे मग्न रहनेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पंत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो।।३।।

अयि निजहुंकृतिमात्रनिराकृत धूम्रविलोचन-धूम्रशते,
समरविशोषितरोषितशोणित बीजसमुद्भव बीजलते।
शिव शिव शुम्भनिशुम्भमहाहवतर्पितभूतपिशाचरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।४।।

हे धुम्रलोचन नामक दैत्य को हुंकार मात्र से भस्म करनेवाली, धूमावती दुर्गे, रणभूमि में क्रूद्ध रक्तबीज दैत्य से उत्पन्न अनेक रक्तबीजों के खून को पी जानेवाली, शुम्भनिशुम्भ नामक दैत्यों महायुद्ध से तृप्त किये हुए, कल्याणकारी शङ्कर के भूतपिशाचों पर अनुग्रह करनेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो।।४।।

अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते,
निजभुजदण्ड निपातितचण्ड विपाटितमुण्ड भटाधिपते।
रिपुगजगण्डविदारणचण्ड पराक्रमशौण्ड मृगाधिपते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।५।।

हे गजाधिपति के बिना सूँड़ के धड़ को सौ टुकड़े करनेवाली, योद्धाओं में श्रेष्ठ चण्ड और मुण्ड नाम के दैत्यों को अपनी भुजाओं से नष्ट भ्रष्ट करनेवाली, शत्रु के हाथी के गण्डस्थल को चीरने में उत्कृष्ट पराक्रमशाली, सिंह को रखनेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो।।५।।

धनुरनुषङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्ग नटत्कटते,
कनकपिशङ्ग पृषत्कनिषङ्ग रसद्भटशृङ्गहताबटुके।
हतचतुरङ्ग बलत्क्षितिरङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।६।।

हे रणोत्सव में धनुष लेकर अपने शरीर को केवल हिलाने मात्र से सम्पूर्ण शत्रुसैन्य में कँपकँपी पैदा करनेवाली, सोने के पीले तीर और तरकस युक्त, गर्जनेवाले बड़े बड़े योद्धाओं की गर्दन काटनेवाली, हाथी-घोड़ा, रथ और पैदल चारो प्रकार की सेनाओं को मार कर रण भूमि में अनेक प्रकार के शब्द करनेवाले, बटुकों को उत्पन्न करनेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥६॥

अयि रणदुर्मद शत्रुवधाद्धुर दुर्धरनिर्भर शक्तिवृते,
चतुरविचार धुरीणमहाशय दूतकृतप्रमथाधिपते।
दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति-दानवदूत-दुरन्तगते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥७॥

हे रणभूमि में खूँखार शत्रुओं के वध से बढ़ी हुई अदम्य और पूर्ण शक्ति को रखनेवाली, चतुराई के विचारों में श्रेष्ठ और गम्भीर कल्पनावाले प्रमथाधिपति, शङ्कर भगवान को दूत बनानेवाली, पापी, बुरी भावना तथा बुरे विचारवाले मूर्ख दैत्यों के दूत से न जानी जा सकने लायक महिमावाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥७॥

अयि शरणागत-वैरिवधू-जनवीरवराभव-दायिकरे,
त्रिभुवनमस्तक-शूलविरोधि-शिरोधिकृतामल-शूलकरे।
दुमिदुमितामर-दुन्दुभिनाद-मुहुर्मुखरीकृत-दिङ्गनिकरे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥८॥

हे शरण में आये हुए शत्रुओं की स्त्रियों के वीर पतियों को अभय प्रदान करनेवाले हाथीवाली, तीनों भुवनों के प्राणियों को पीड़ा देनेवाले दैत्यशत्रुओं के मस्तकों पर प्रहार करने के योग्य तेज शूल को हाथ में धारण करनेवाली, देवताओं के दुम्-दुम् ऐसे दुन्दुभि के शब्दों से दसों दिशाओं को गुञ्जायमान करनेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥८॥

सुरललना-ततथेयितथेयितथाभिनयोत्तर-नृत्त्यरते,
कृतकुकुथा-कुकुथोदि-डदाडिक-तालकूतुहल-गानरते।
धुधुकुट-धूधुट-धिन्धिमितध्वनि-धीरमृदङ्ग-निनादरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥९॥

हे अप्सराओं के था, थै-थै, थक् आदि शब्दों से युक्त भावपूर्ण नाच में मगन हरनेवाली, अनेक भिन्न भिन्न मात्राओं के तालों से गाये जानेवाले आश्चर्य जनक गायन सुननेवाली, धा, किट् धुम् किट् तिर् किट् आदि पखावज की गम्भीर ध्वनि को सुननेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥९॥

जय जय जाप्यजये जयशब्द-परस्तुति-तत्पर विश्वनुते,
झणझण-झिंझिम-झिंकृत-नूपुर-शिञ्जित-मोहित-भूतपते ।
नटितनटार्ध-नटीनटनायक-नाटननाटित-नाट्यरते ,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१०॥

हे जपमन्त्र की जयशक्ति, तेरा विजय हो, हे जय जयकार के सहित स्तुति करनेवाले समस्त संसार के लोगों से प्रणाम की जानेवाली, अपने पैजब के झन् झन् झिन् झिन् शब्दों से शङ्कर भगवान् को मोहित करनेवाली, प्रसिद्ध नट अर्धनारिश्वर, नटों में श्रेष्ठ भगवान् शङ्कर के ताण्डव नृत्य से सुशोभित नाटक देखने में मगन रहनेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥१०॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरम कान्तियुते,
श्रितरजनी-रजनी-रजनी-रजनी-रजनीकर-वक्त्रभृते ।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराधिपते ,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥११॥

हे प्रसन्न चित्त और सन्तुष्ट देवों द्वारा चढ़ायें हुए फलों से मनोहर शोभा को धारण करनेवाली, हे राक्षसों को वरदान देनेवाले महादेव की भार्या, रात्रिसूक्त के पाठ से प्रसन्न होनेवाली तथा चन्द्रमा के समान प्रकाशित मुखवाली, हे कस्तुरी मृगों में घबड़ाहट उत्पन्न करनेवाले वीर भैरवों से तथा भ्रम को दूर करनेवाले ज्ञानियों के अनुसरण की जानेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥११॥

महित-महाहव-मल्लमतल्लिक-वल्लित-रल्लित-भल्लिरते,
विरचितवल्लिकपालिक-पल्लिक-झिल्लितभिल्लिकवर्गवृते।
श्रुतकृतफुल्ल-समुल्ल-सितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते,
जय जंय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१२॥

हे प्रशंसनीय महायुद्ध के वीर-श्रेष्ठों के दाहिने-बाँयें पैतरों से चलाये हुए भालों के निरीक्षण में चित्त लगानेवाली, हे कृत्रिम लतागृह को पालन करनेवाली, स्त्रियों की बस्ती में वाद्यविशेष बजानेवाली, भिल्लिनियों के समूह से आराधित, हे कान पर रखे हुए विकसित, सुन्दर तथा रक्तवर्ण, कोमल किसलय से सुशोभित होनवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥१२॥

अयि सुदतीजन लालस-मानस-मोहन-मन्थर-राजसुते,
अविरलगण्डगलन्मदनेदुरमत्तमतङ्गजराजगते ।

त्रिभुवनभूषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधिराजसुते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१३॥

हे सुन्दर दाँतोंवाली, स्त्रियों के उत्कण्ठित मनों को मोह लेनेवाली कामदेव को उत्पन्न करनेवाली, सतत मद से भरे हुए गण्डस्थल से युक्त, मदोन्मत्त गजराज के समान मन्द मन्द गमन करनेवाली, तीनों लोकों को विभूषित करनेवाले, चन्द्रमा के समान कान्तिवाली, महासागर की कन्या, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥१३॥

कमलदलामल-कोमलकान्ति-कलाकलितामल-भालतले ,
सकलविलास-कलानिलय-क्रमकेलि-चलत्कलहंसकुले ।
अलिकुलसङ्कुल-कुन्तलमण्डल-मौलिमिलद्-बकुलालिकुले ,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१४॥

हे कमल के पत्ते के समान टेढ़े, कोमल और स्वच्छ कान्तिवाले, एक कला के चन्द्रमा से सुशोभित ललाटवाली, विलासिता के सम्पूर्ण गुणों की स्थानभूत, अपनी सहज गति से हंसों की चाल सिखानेवाली, भैरव के समान काले और घनें बालों की चोटि पर मौलश्री की सुगन्ध से भ्रमरों को आकर्षित करनेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥१४॥

करमुरलीरव-वर्जित-कूजित-लज्जितकोकिल-मञ्जुमते ,
मिलित-मिलिन्द-मनोहर-गुञ्जित-रञ्जित-शैलनिकुञ्जगते।
निजगणभूत-महाशबरीगण-रङ्गणसम्भृत-केलिरते ,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१५॥

हे अपने हाथ की बंशी के मधुर शब्द को सुनकर बोलना बन्द करके लज्जित हुई कोकिल पर प्रेम की बुद्धि रखनेवाली, भौंरों के झुण्ड से गुजाये हुए और सुशोभित पर्वत प्रदेश के कुञ्जों में विहार करनेवाली, अपने भिल्लिनी-किरातिनी आदि गणों की नर्तनयुक्त विचित्र क्रीडाओं को देखकर प्रसन्न होनेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥१५॥

कटितटपीतदुकूलविचित्रमयूखतिरस्कृतचण्डरुचे ,
जितकनकाचलमौलिमदोर्जितगर्जितकुञ्जरकुम्भकुचे ।
प्रणतसुराऽसुरमौलि-मणिस्फुरदंशु-लसन्नखचन्द्ररुचे ,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१६॥

हे अपनी कमर पर पहनी हुई पीले रङ्ग की साड़ी की विचित्र चमक से सूर्य की चमक को नीचा दिखानेवाली, सुमेरु पर्वत की सोने की चोटियों पर मदोन्मत्त गर्जना करनेवाले हाथयों के गण्डस्थल के समान शोभायमान स्तनमण्डलवाली, प्रणाम करनेवाले देव और

दैत्यों के मस्तकों के मणियों की चमक से चमकनेवाले नखों से चन्द्रमा के समान चरण-नखोंवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥१६॥

विजितसहस्रकरैकसहस्रकरैकसहस्रकरैकनुते ,
कृतसुरतारकसङ्गरतारकसङ्गरतारकसूनुनुते ।
सुरथसमाधि-समानसमाधि-समानसमाधि-सुजाप्यरते ,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१७॥

हे हस्त नक्षत्रसमूह के एक सहस्र को जीतनेवाले सहस्रों किरणोंवाले सूर्य की एकमात्र नमस्करणीय, हे देवताओं के उद्धार के लिए युद्ध लड़नेवाले, तारकासुर से संग्राम करनेवाले तथा भवसागर से तारनेवाले श्रीमहादेवजी के पुत्र कार्तिकेय से नमस्कार की जानेवाली, हे राजा सुरथ और समाधि नामक वैश्य की सविकल्पक समाधि के समान समाधियों में जपे जानेवाले मन्त्रों से प्रेम रखनेवाली, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥१७॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे ,
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीललयो मम किं न शिवे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१८॥

हे दयामयि शिवे! तेरे चरण कमलों की जो प्रतिदिन सेवा करता है, हे कमल में रहनेवाली महालक्ष्मी! उनके घर में लक्ष्मी का वास क्यों न होगा? अर्थात् अवश्य ही होगा, हे गिरिजे! तेरा चरणकमल ही मेरा परम पुरुषार्थ मोक्ष है, ऐसी दृढ़ भावना रखनेवाले मुझको किस बात की कमी हो सकती है अर्थात् किसी बात की कमी नहीं रह सकती है, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥१८॥

कनकलसत्कलशीकजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवम्,
भजति स किं न शचीकुचकुम्भनटीपरिरम्भसुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१९॥

सोने के समान चमकनेवाले घड़ों के जल से जो तुम्हारे मन्दिर के आँगन को धोकर साफ करता है, क्या वह इन्द्राणी के समान बड़े बड़े स्तनवाली सुन्दरी को आलिङ्गन करने के सुख का अनुभव नहीं करता है अर्थात् अवश्य ही करता है, हे सरस्वति तेरे चरण को ही मैं अपनी शरण बनाऊँ, हे माता! मुझे कल्याण दायक रास्ता दिखायें, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥१९॥

तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते,
किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥२०॥

हे माता! तेरे स्वच्छ चन्द्रमा के समान शोभावाले मुखचन्द्र की जो सतत सेवा करके अपने अनुकूल वना लेता है, क्या उसको इन्द्र देव के अमरावती नगरी की रहनेवाली चन्द्रवदनी अप्सरायें कभी भी निराश कर सकती हैं अर्थात् कभी नही करती, हे शङ्कर भगवान् के सम्मान को अपना सर्वस्व समझनेवाली मेरा तो यह दृढ विश्वास है कि तुम्हारी कृपा से ऐसा कोई कार्य नहीं है जो सिद्ध न हो सके, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥२०॥

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे,
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥२१॥

हे उमे! तू सदैव दीनों पर दया करनेवाली है, इसलिए हमारे ऊपर भी तुम सदा कृपा ही करना, हे महालक्ष्मी! तुम संसार के सभी जीवों की माँ है, इसलिए मेरी भी तू माँ है, ऐसा मैं समझता हूँ, जो तुमकों उचित लगे तो मुझे भी अपने मणिद्विप नगर का निवासी बना, हे शाम्भवि देवि! मेरे ऊपर दया कर, हे शैलपुत्री!, शङ्कर की प्रिय पत्नी, पार्वती, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली महालक्ष्मी! तेरा जय जयकार हो॥२१॥

स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्॥२२॥

जो मनुष्य इस स्तोत्र का ध्यानपूर्वक एकाग्रचित्त से ब्रह्मचर्य, दया, शान्ति, दान, सत्य, अपरिग्रह, अहिंसा, अस्तेय, माधुर्य और दम इन व्रतों को पालन करते हुए नियम से प्रतिदिन पाठ करेगा, उसके पास सदैव विपुल धन होगा और अपने और पराये भी उसे चाहेगें अर्थात् सबका चहेता होगा।

देव्यापुष्पाञ्जलीस्तोत्रं परिपूर्णम्

⁂

।। श्रीः।।

पूजनोपयोगीसामग्रीम्

रोली—१०० ग्रा०

मौली—१ वण्डल बड़ारील

अबीर—१०० ग्रा०

बुक्का—१० ग्रा०

कपूर—१०० ग्रा०

लवङ्ग—२५ ग्रा०

इलायची—२५ ग्रा०

चावल खड़ा—५ कि०ग्रा०

रङ्ग (लाल, हरा, पीला, काला—१० ग्रा० प्रत्येक)

दियासलाई—१बण्डल

धूपबत्ती—५ बण्डल

यज्ञोपवीत—४० पीस

घी—३ कि०ग्रा०

शहद—१०० ग्रा०

चीनी—१०० ग्रा०

रुई—५० ग्रा०

इत्र—१० मि०ग्रा०

गुलाब जल—१०० मि०ग्रा०

पीली सरसों—१० ग्रा०

पञ्चरत्न—८ पुड़िया

सप्तमृत्तिका—८ पुड़िया

सर्वौषधी—८ पुड़िया

जौं—१०० ग्रा०

शतावरी—५० ग्रा०

सुपाड़ीबड़ी—१.५ कि०ग्रा०

पञ्चमेवा—५०० ग्रा०

गरिगोला—१ नग

नारियल—१२ नग

मेंहदी—१०० ग्रा०

हल्दी—१०० ग्रा०

कालीमिर्च—१०० ग्रा०

पाँच रङ्ग का ध्वजा—१ नग

लाल रङ्ग का ध्वजा—२ नग

हरे रङ्ग का ध्वजा—२ नग

काले रङ्ग का ध्वजा—२ नग

पीले रङ्ग का ध्वजा—२ नग

पलास का पत्तल—१० नग

कालाउर्द—५०० ग्रा०

तिल का तेल—५०० ग्रा०

सफेद कपड़ा—५ मी०

लाल कपड़ा—१ मी०

धोती सूती—१ नग

गमछा—१० नग

साड़ी-साया-ब्लाउज—१ सेट
सुहाग पिटारी—१ नग
कलश वड़ा मिट्टी का ढ़क्कन सहित—१ नग
कलश छोटा मिट्टी का ढ़क्कन सहित—७ नग
कसोरा—२५ नग
दीया—१०० नग
दोना—१०० नग
पूर्णपात्र—१ नग
चरुपात्र—१ नग
चौकी—२ नग
पाटा—३ नग
दूध—१०० ग्रा०
दही—१०० ग्रा०
पान का पत्ता—२५ पीस प्रतिदिन
फल—१ कि०ग्रा०
मीठा—१ कि०ग्रा०
माला—२५ नग
फूल—५०० ग्रा०
दूर्वा—१ मुट्ठा
तुलसी—१० नग
विल्वपत्र—५० नग
आम्रपल्लव—१० नग
कुशा—१०० ग्रा०
गोबर—१०० ग्रा०
गोमुत्र—१०० ग्रा०
हवन सामग्री—
काला तिल—५ कि०ग्रा०
सफेद तिल—१ कि०ग्रा०
पीला सरसों—१ कि०ग्रा०
राई—१ कि०ग्रा०
कमलगट्टा—१ कि०ग्रा०
गुगुल—१०० ग्रा०
लोहबान—१०० ग्रा०
सुगन्धबाला—१०० ग्रा०
लाल चन्दन का चूरा—१०० ग्रा०
सफेद चन्दन का चूरा—१०० ग्रा०
सेंधा नमक चूरा—५०० ग्रा०
धान का लावा—१०० ग्रा०
पञ्चमेवा—१०० ग्रा०
धत्तुर फल का बीज—१०० ग्रा०
मदार का पत्ता—१०० नग
मदार की लकड़ी—१०८ नग
आम की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
बेर की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
लाल चिचिडी की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
पीपल की लकड़ी—५ कि०ग्रा०
गाय की गोहरी—१०० नग
गुलर की लकड़ी—१००८ नग
पलास की लकड़ी—१००८ नग
वट की लकड़ी—१००८ नग

तन्त्रशास्त्र-ग्रन्थ

(हिन्दी टीका सहित)

श्री एस.एन. खण्डेलवाल द्वारा अनुदित
- सर्वोल्लासतन्त्र
- सिद्धनागार्जुनतन्त्र
- अन्नदाकल्पतन्त्र
- राधातन्त्र
- कालीतन्त्र-रुद्रचण्डीतन्त्र
- तोडलतन्त्र-निर्वाणतन्त्र
- आगमतत्त्वविलास (1-4 भाग सम्पूर्ण)
- श्रीसाम्बपुराण
- देवीपुराण
- शाबरमन्त्रसागर [illegible]
- नीलसरस्वती([illegible]
- सौभाग्यलक्ष्मी [illegible]

श्रीश्यामाकान्त [illegible] लिखित
- श्रीविद्या-साध [illegible] सम्पूर्ण)
- भारतीय श [illegible]
- ब्रह्मास्त्रविद्या [illegible]मुखी-साधना
- काश्मीर शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र
- मुद्राविज्ञान एवं साधना
- कामकलाविलास
- वरिवस्यारहस्य
- स्पन्दकारिका
- शिवसूत्र
- शक्तितत्त्व एवं शाक्त साधना

श्री कपिलदेवनारायण द्वारा अनुदित
- लक्ष्मीतन्त्र (1-2 भाग)
- तन्त्रराजतन्त्र (1-2 भाग)
- श्रीविद्यार्णवतन्त्र (1-5 भाग)
- देवीरहस्य : (रुद्रयामलतन्त्रोक्त) (1-2 भाग)
- महानिर्वाणतन्त्र
- रेणुकातन्त्र-प्रचण्डचण्डिकातन्त्र
- बृहत्तन्त्रसार (1-2 भाग)
- तन्त्रालोक (1-5 भाग)

श्री राधेश्याम चतुर्वेदी द्वारा अनुदित
- स्वच्छन्दतन्त्र (1-2 भाग)
- नेत्रतन्त्र
- कामाख्यातन्त्र
- महाकालसंहिता (कामकला-कालीखण्ड)
- महाकालसंहिता (गुह्यकाली-खण्ड) (1-5 भाग)
- शक्तिसङ्गमतन्त्र (काली-तारा-सुन्दरी-छिन्नमस्ताखंड [illegible]
- तारिणीपारि [illegible]
- वामकेश्वरी [illegible]
- श्रीकृष्णयाम [illegible]

श्रीजगदीशचन्द्र [illegible] अनुदित
- त्रिपुरारहस्य [illegible]ड एवं माहात्म्यखण्ड)
- त्रिपुरार्णवतन्त्र

श्रीपरमहंस [illegible] अनुदित
- तन्त्रसार (1- [illegible]
- कुलार्णवतन्त्र
- नित्योत्सव (श्रीविद्याविमर्शकसद्ग्रन्थ)

श्री रामप्रिय पाण्डेय द्वारा लिखित
- श्रीदक्षिणकालिका-सपर्यापद्धति
- श्रीमहाविद्यापुरश्चरणपद्धति
- सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरण
- कालसर्पयोग-शान्तिप्रयोग
- श्रीप्रत्यंगिरा-पुनश्चर्या
- श्रीविपरीतप्रत्यंगिरा-पुनश्चर्या
- कामकलाकालीसपर्यापद्धति
- वटुकभैरवसपर्या
- (आपद् उद्धारक) श्रीविनायकशान्तिप्रयोग

श्री सुधाकर मालवीय द्वारा अनुदित
- रुद्रयामल (1-2 भाग)
- शारदातिलक (1-2 भाग)
- मन्त्रमहोदधि
- सौन्दर्यलहरी

ISBN : 978-93-85005-31-2

9 789385 005312

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी